

भू-प्रदक्षिणा

अर्थात्

बाबू चन्द्रशेखर सेन बैरिस्टर-एट-ला

की

इसी नाम की बँगला-पुस्तक का अनुवाद ।

अनुवादक

रूपनारायण पाण्डेय

प्रकारक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

१९२५

Printed and published by K. Mitra, at THE INDIAN PRESS LTD.
Allahabad

विषय सूची ।

विषय	
१ यात्रा	
२ लन्दन	
३ फ्रान्स	
४ इटली	
५ नार्वे	
६ स्वीडेन	
७ रूस	
८ जर्मनी	
९ आस्ट्रिया-हंगरी	
१० सर्बिया	
११ बल्गेरिया	
१२ टर्की	
१३ ग्रीस	...
१४ स्वीजर्लेण्ड	
१५ बेलजियम	..
१६ हालेण्ड	
१७ डेन्मार्क	
१८ स्काटलेण्ड	
१९ इंग्लेण्ड	
२० लन्दन	
२१ स्पेन	

	पृष्ठ
मुर्त्तगाल	६६३
मरको	७०२
अमेरिका	७०७
पाश्चात्य जगत् से विदाई	७४७
जापान	७६५
चीन	७८१
प्रणाली-उपनिवेश	७८५

श्रोगणेशाय नमः ।

भू-प्रदक्षिण ।

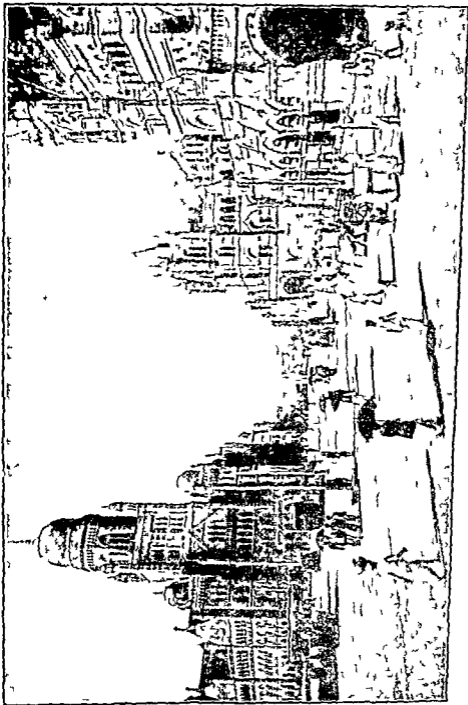
यात्रा ।



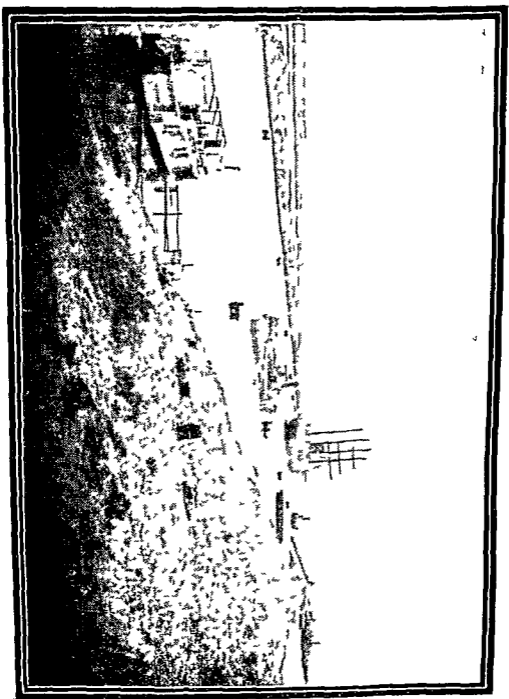
ने बहुविस्तृत एशिया-खण्ड के अनेक देशों में भ्रमण किया है । एशियाखण्ड के एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त तक—ओर से छोर तक—पर्यटन करके भी मैंने भिन्न भिन्न देशों के समाजों में एक भाव के सिवा दूसरा भाव नहीं देखा । आसाम की अन्तिम सीमा 'डिहिग' नदी के दूसरे किनारे से कच्छ द्वीप तक और हिमालय के तीर से सेतुबन्ध रामेश्वर तक, जिन जिन स्थानों को मैंने देखा, सब जगह, वही एक तरह के ब्राह्मण, चत्रिय, वैश्य और शूद्र हैं, वही एक तरह के शिया, सुन्नी, मुन्ना और हेदाती हैं, वही एक तरह के मठ, मन्दिर, शिव और गणेश हैं, वही एक तरह के दरगाह, मसजिद, पीर और पैगम्बर हैं । अतएव, यद्यपि भारतवर्ष में पर्यटन करने से यह लाभ है कि पूर्वी ढग से लोक-चरित्र का ज्ञान होता है और अनेक अवस्थाओं में पढने से जानकारी बढ़ती है, तथापि घूमने वाले एतद्देशीय मनुष्य की आंखों के आगे ऐसी कोई नई सामग्री नहीं

उपस्थित होती जिसे देखने का उसे अभ्यास ही न हो अथवा जिसे देखने के लिए वह विल्कुल तैयार ही न हो । इसी कारण अनुमन्धान की इच्छा रखने वाले हिन्दुस्तानी के मन में, यूरोपखण्ड की सैर करने की—पश्चिमी जनसमाज की रीति-नीति और रंग-ढंग देख कर नेत्रों को और मन को तृप्त करने की—वासना आप ही जग उठती है । बहुत दिनों से मेरी इच्छा थी कि एक दफा पश्चिमी भूमिखण्ड में कुछ दिन रह आऊँ । मगर अनेक कारणों से कुछ दिनों तक मेरी यह इच्छा पूरी नहीं हो सकी । अन्त को विधाता की विशेष कृपा से सन् १८८६ ईसवी के आरम्भ में मैंने अपने शरीर को भी लदन में पहुँचा दिया, क्योंकि मन तो बहुत दिन पहले ही से यूरोपखण्ड के चक्कर लगाया करता था । राह का हाल सुनने के लिए बहुत लोग उत्सुक होंगे । इस लिए मैं वहीं से आरम्भ करता हूँ ।

सन्ध्या के उपरान्त हवडा स्टेशन में मैं रेल पर चढा । राह में, रेल पर ही, ६१ घटे का सफ़र करके चौथे दिन सवेरे मैं बम्बई पहुँचा । गाडी में केवल दो अँगरेजों के साथ मेरी जान पहचान, और बातचीत हुई । वे दोनों सज्जन थे मेथोडिस्ट चर्च (Methodist Church) के अध्यक्ष विख्यात पादरी थोबरन (Revd Dr Thoburn) और बॉम्बे पाइलट सर्विस (Bombay Pilot Service) के मिस्टर यूरिज (Mr Uridge) पादरी थोबरन के साथ ब्राह्मसमाज के सम्बन्ध में मेरी बहुत सी बातें हुई । प्रताप बाबू के “प्राच्य ख्रीष्ट” (Oriental Christ) नामक ग्रन्थ का उल्लेख करके उन्होंने कहा—
 “Mr. Mozoomdar has taken a wrong view of Christ”
 अर्थात् मिस्टर प्रतापचन्द्र मजूमदार ने ख्रीष्ट के सम्बन्ध में भ्रान्त मत प्रहय कर लिया है । फिर उन्होंने कहा—“Christ lives among us as a reality, but the other saints and great men do



वस्वई—पृ० २



not"—अर्थात् द्रोष्ट यद्यार्थ सत्ता के रूप से हम लोगों में अवस्थित हैं, अन्यान्य साधु-महात्मागण नहीं। उनके इस कथन के उत्तर में मैंने कहा—“मैं तो साहब यह समझता हूँ कि जिस जगह पिता है उस जगह पुत्र की बड़ी जरूरत है। नहीं तो ‘पिता’ कह कर पिता को पुकारेगा कौन ? जब पिता नित्य है तब पुत्र का नित्य होना अनिवार्य है”। मेरे यों कहने पर साहब ने हँस कर कहा—“ठोकर है, अच्छा यह भाव तुमने कहाँ से पाया ?”। मैंने कहा—“मुझे याद नहीं पड़ता कि मैं किस व्यक्ति या ग्रन्थ से इस भाव को पाया है। जान पड़ता है, यह मेरा अपना ही भाव है”। घोवरन साहब एक महा पण्डित थे। किन्तु साम्प्रदायिकता का पचपात वह भी नहीं छोड़ सके थे। उनकी बातचीत से स्पष्ट जान पड़ा कि वह नसरिन ईसा को मनुष्यदेहधारी ईश्वर मानते थे। उनका यह दृढ विश्वास था। पालास्टिन प्रदेश के बढई यूसुफ के पुत्र ईसा के शरीर में केवल तीन साल के लिए किसी बहुत ऊँचे दर्जे की आत्मा का आविर्भाव हुआ था—इस बात को स्वीकार करने या समझने के लिए वह तैयार नहीं थे। उनके मन में यह विश्वास भी जमा हुआ था कि एक ईसा ही केवल ईश्वर के औरस पुत्र (The only begotten son of God) थे, और कोई वैसा नहीं हुआ और न अब होही सकता है। यही कारण था कि वह ऊपर लिखे हुए मेरे वाक्य को अपने मत के अनुकूल समझ कर खूब खुश हुए।

बम्बई में एक रात रह कर दूसरे दिन चार बजे इटली के स्टोमर पर चढ़ कर मैंने सिगापुर की यात्रा की। कलकत्ते में जब मैंने कुफ कम्पनी के आफिस से लन्दन तक का टिकट खरीदा था तब यह अनुरोध कर दिया था कि एक आदमी के गुजर लायक एक कैबिन (Cabin) मेरे लिए ठीक कर दिया जाय। किन्तु मेरी

प्रार्थना के अनुसार काम नहीं हो सका । क्योंकि हर एक कैबिन में दो या इससे भी अधिक आदमियों के लिए स्थान निर्दिष्ट रहता है । बन्दरगाह से नाव पर चढ़ कर जहाज के ऊपर जाने के समय मैं बहुत ही उत्कण्ठित हुआ कि किस तरह एक कैबिन में यूरोपियन यात्री के साथ रहूँगा । परमेश्वर की कृपा से जहाज पर जाकर मैंने देखा कि पहले दर्जे में केवल दस बारह यात्री हैं, और दूसरे दर्जे में केवल मैं अकेला हूँ । मैं एक पूरे कैबिन की चिन्ता में था, पर यहाँ तो सारा दूसरा दर्जा ही मेरे लिए रिजर्व (Reserved) था । उसी दिन पी. एण्ड ओ. कम्पनी का 'मेल' छूटा था । इस कारण विलायत के बहुत से यात्रियों ने उसी पर यात्रा की थी और इसी से यह जहाज खाली था । जहाज के सब कर्मचारी इटलियन थे । एक अफसर (Officer) के सिवा कोई अँगरेजी नहीं जानता था । बड़ी मुश्किल में पडा । मेरा कहना कोई नहीं समझता था और उनकी बातचीत मेरी समझ में नहीं आती थी । उस अफसर के साथ थोड़ी देर तक तो बातचीत होती रही, उसके बाद वह अपने काम पर चला गया । डेक-यात्री (Deck passenger) आठ थे । आठों हिन्दुस्तानी थे । उनमें से छः तो काठियावाड के वैष्णव और जैन बनिये थे और एक श्रोहट्ट का बूढा खलासी और एक उसके लडके की स्त्री थी । ये ही उस समय मेरे अपने देश के साथी हुए । साढे चार बजे जहाज छूटा । हवा भी धीरे धीरे जोर पकडने लगी । अन्त को भोजन वं समय ऐसे जोर का तूफान आया कि मैं कुछ भी भोजन न कर सका कैबिन के दरवाजे पर डेक के ऊपर एक कुरसी डाल कर मैं बैठ गया स्टुवार्ड (Steward) ने एक रोटी और कई केले ला दिये । मैंने यह भोजन किया । डेक के ऊपर लहरें आकर यात्रियों का सब सामान भिगोने लगीं । यात्रियों के कष्ट को देख कर बडा दुःख हुआ । किन्तु

कोई उपाय न था। हमारे सैलून (Saloon) में बहुत सी जगह होने पर भी मैं उनको आश्रय नहीं दे सकता था। रात को आठ बजे बिन में जाकर मैं सो रहा।

दूसरे दिन सवेरे छ बजे उठ कर मैंने देखा, जल स्थिर था, जैसे ह—कल का—समुद्र ही न था। 'काफी' पीकर सामने के ऊपरी डेक पर जाकर बैठा। चारों ओर अपार जल देख कर चित्त पुलकित हो गया। घड़ो भर तक मेरी आंखों से आंसुओं की झड़ी लग गई। वे आंसू दुःख के नहीं, 'भाव' के वेग के थे। जब कुछ हृदय शान्त हुआ तब मैं प्रसन्न मन से धीरे धीरे एक गान गाने लगा।

सातवें दिन सन्ध्या से कुछ पहले ही मेरा जहाज अदन बन्दर पहुँचा। इस जीवन में मैंने कभी घास-फूस और पेड़ों व लताओं से जिन पहाड़ नहीं देखा था। अदन बन्दर में प्रवेश करने के समय इस पहाड़ का ऊसर पहाड़ देख कर हृदय में एक प्रकार के भयानक—अनसान उदास—भाव का अनुभव होने लगा। पहाड़ तो मैंने बहुत से देखे थे, फिर यह पहाड़ देखकर हृदय में हाहाकार क्यों होने लगा? कुछ दिनों तक तो इसका कारण मैं कुछ भी नहीं समझ सका। अन्त को, बहुत दिनों बाद, जान पड़ा कि ऐसा रूखा और सूखा पहाड़ यही पहले पहल अपने को मिला है, इसी से यो हो रहा है। मैंने जिस समय बम्बई छोड़ी थी उस समय वहाँ हैजा शुरू हो गया था। इसी कारण हमारा जहाज क्वारन्टाइन (Quarantine) में अवीन था। अर्थात् यात्रियों को अपनी इच्छा के अनुसार किसी बन्दरगाह में उतरने का अधिकार नहीं था। कोई यात्री जहाज से उतरते ही किसी स्थान में नहीं जा सकता था। कुछ निर्दिष्ट समय तक घाट में जहाज पर ठहरना पड़ता था। इसी कारण हमारे जहाज के बन्दर पर पहुँचते ही कोई नाव उसके पास नहीं आई। जो लोग वहाँ उतरने वाले थे उन्हें सवेरे तक

जहाज पर ठहरना पडा । वहाँ पर उतरने वाले सब हिन्दुस्तानी थे । जब वे सब चले गये तब मेरे मन में एक तरह की उदामी सी छा गई । यहाँ पर उतरने वाले हिन्दुस्तानी लाल-सागर (Red Sea) के पश्चिमी तट पर स्थित, इटली के उपनिवेश, मसावा-प्रदेश में रोज-गार के लिए जा रहे थे । यहाँ से दूसरे जहाज पर बैठ कर उन्हें जाना होगा । उनसे मालूम हुआ कि बहुत से गुजराती वनिये उक्त प्रदेश में दूकानें किये हुए हैं और उन्हें अच्छी आमदनी होती है । काठियावाड और कच्छ आदि देशों के बहुत से हिन्दुस्तानी, जहाज के रास्ते से, भारत-समुद्र के दूसरे किनारे पर स्थित जजिवार टापू तरु हमेशा जाया-आया करते हैं । ये लोग जिन जहाजों पर यात्रा करते हैं वे 'बान' कहलाते हैं । उन पर के भल्लाह और सलासी सभी हिन्दुस्तानी होते हैं । देश की प्राकृतिक अवस्था वहाँ के रहनेवालों के मन के सगठन में विशेष काम करती है—इस बात का यह बहुत अच्छा प्रमाण है । समुद्र के किनारे रहने वाले होने के कारण इन लोगों को समुद्र-यात्रा बहुत जरूरी जान पडती है, और ये लोग हम लोगों की तरह समुद्र-यात्रा में किसी प्रकार की विभीषिका या घुराई नहीं देखते । कच्छ-द्वीप के माण्डवी-वन्दर में इन जहाजों के बनाने और मरम्मत करने का प्रधान स्थान है । इन कई दिनों में, लैटिन-भाषा की सहायता से, मैं इटलियन लोगों की बातचीत कुछ कुछ समझने और उन लोगों से दो एक बातें बोलने भी लगा । मतलब यह कि एक दिन के लिए भी मुझे रती भर कष्ट नहीं हुआ । भगवान् की कृपा से पहले ही से मैं अपना काम चला लेने लगा ।

सबसे उठ कर मैंने देखा, जहाज पर माल लादा जा रहा है । किनारे पर से डोंगियो पर बैठे हुए नाटे नाटे काले काले हवशी लोग जहाज के पास आये । वे गोतेखोर थे । चवन्नी, दुयन्नी समुद्र में आप

रु दीजिए, वे चट गोता लगा कर, अपने मुँह में, चबन्नी, दुअन्नी
दि निकाल लावेंगे ।

अदन से सफ़ोनी-नामक एक इटलियन नौजवान जेनोवा जाने के
ए जहाज पर चढा । वह भी सेकिड हास का यात्री था । अब सेकिड
स में हम दो यात्री हो गये । आठ बजे वहाँ से जहाज रवाना
प्रा । साढे तीन बजे हमारे जहाज ने वायू-दरवाजा (वावेल माण्डेव
र) में प्रवेश किया । यह लाल-सागर में प्रवेश करने का द्वार है ।
नहर के दोनो किनारो पर प्रबल प्रतापी अँगरेजो के दो अड्डे हैं ।
ई ओर पेरिस-टापू में एक क़िला भी है । दोनो किनारों के अड्डों
से भूडे के द्वारा प्रश्न किये गये । हमारे जहाज के कप्तान ने चार
च भण्डों के द्वारा उन प्रश्नो का पूरा पूरा उत्तर—अपने जहाज का
परिचय—दिया । देखो, राह कैसी सुरक्षित है । किसी ओर धोखा
कर निकल जाने की गुजाइश नहीं है । जितने जहाज लाल-सागर
प्रवेश करेंगे या उधर से इधर आवेंगे उनको अपना परिचय देना
गा । परिचय पाने पर अदन के रजिडट के पास तार से उसकी खबर
जायगी । यूरोप से भारत में आने के सब फाटको की कुजियाँ
अँगरेजो के हाथ में हैं । छिप कर कोई भी नहीं निकल जा सकता ।
रेम एक छोटा सा उजाड टापू है । सुना कि वहाँ बहुत से बम्बई के
गारी रोजगार करते हैं । वहाँ पाँच छ सौ लोग रहते हैं । नहर के
दो नो किनारों का दृश्य अत्यन्त भयानक है, उसमें भयानक उदास भाव
पडता है ।

दूसरे दिन सबेरे सात बजे उठ कर लाल-सागर में स्थित “सात-
ई का पहाड” देखा । यूरोपियन लोग उसे “द्वादश-प्रेरित”(Twelve
postles) कहते हैं । लेकिन अरब लोग जिस नाम से उसे पुकारते हैं
का अर्थ है सात भाई । हमारी राह से कुछ दूर पर, दक्षिण ओर,

छोटे-बड़े सब मिला कर तेरह पहाड समुद्र के भीतर से ऊपर निकले हुए थे । लाल-सागर मे इस तरह के बहुत से पहाड देखे जाते हैं । बहुत से चोर-पहाड (पानी के भीतर छिपे हुए पहाड) भी हैं । इस समय तो जहाज के जाने लायक रस्ता बहुत कुछ जान लिया गया है, लेकिन पहले बहुत से जहाज ऐसे चोर-पहाडो से फट कर डूब चुके हैं ।

किताबो मे पढा था कि लाल रंग के कीटाणुओं की अधिकता से अनेक समय लाल-सागर का जल खूब लाल हो जाता है । मगर मुझे कही पर यह दृश्य देखना नसीब नहीं हुआ । केवल किसी किसी जगह साधारण गुलाबी रंग की भल्लक दिखाई दी ।

नव बजे के समय हमारा जहाज जल के भीतर स्थित एक पहाड के बहुत ही पास होकर निकला । उस पहाड पर हरियाली के नाम एक तिनका तक न था । तथापि एक विशेष प्रकार की निर्जनता होने के कारण वह पहाड एक तरह से मन को रमानेवाला ही था । कौए से कुछ बड़े एक तरह के समुद्र पक्षी (Sea-gull) झुड के झुड आकर जहाज पर मडराने लगे । शायद वे पहाड पर रहते और समुद्र की मछलियो का शिकार करके उन्हीं को खाते हैं ।

दिन को दोपहर के समय डेक के ऊपर बडी गरमी जान पडने लगी । इस ओर अरब देश और उस ओर आफ्रिका देश था । दोनो ओर की तप रही बालू के ढेरों पर से आनेवाली हवा गरम के सिवा और क्या होगी ? इसी समय तीन इटलियनो के साथ धर्म के सम्बन्ध मे बातचात होने लगी । वे लोग रोमन कैथलिक (Roman Catholic) धर्म और 'पोप' पर बहुत नाराज थे । नफ़रत इतनी बढी हुई थी कि वे लोग साक्रामेन्टो (Sacramento = ईश्वर), जेसूक्रिस्टो (Jesu Christo = ईसा) और स्पिरिटोसान्टो (Spirito Santo = पवित्रात्मा) इत्यादि नामों

तक को सुनना नहीं चाहते थे। तरह तरह से मेरे समझाने की चेष्टा करने पर किसी तरह उन्होंने धर्म और ईश्वर को तो स्वीकार कर लिया, लेकिन “पेपा” (Papa = पोप) का विरोध वे करते ही रहे। “पीप” की जलन और “फादर” “मादर” आदि के अत्याचार से रोमन-कैथलिक लोग बेचैन हो चुके हैं। ऊपर गरमी असह्य हो उठी। मुझे लाचार कैबिन में जाना पडा।

इसी दिन रात को आठ बजे हमारे जहाज से लगभग चार मील के फासले पर एक बहुत भारी विजली की रोशनी दिखाई पडी। सन् १८८५—८६ ईसवी में इसी जगह एक चौर-पहाड से टकरा कर “पी एन्ड ओ” कम्पनी के तीन डक ले जानेवाले जहाज नष्ट हो गये थे। आगे जिस में किसी को ऐसी विपत्ति का सामना न करना पडे, इस लिए उक्त कम्पनी ने पास के एक बहुत ऊँचे पहाड पर एक घर बनवा दिया है। उस जगह दस बारह मर्द और औरते पारी पारी से तीन तीन महीने रहते हैं और रोज बराबर रोशनी किया करते हैं। उस रोशनीघर का नाम है पी एन्ड ओ कम्पनी का फनेल (Funnel)।

दूसरे दिन ग्यारह बजे के समय आफ्रिका का अट्लास (Atlas) पहाड दिखाई पडा। उसके बाद दिन के छ बजे स्वेज-नहर मिली। किनारे पर से थोडी ही दूर पर जहाज का लगर डाला गया, इससे बन्दरगाह का सारा दृश्य बहुत अच्छी तरह देखने को मिला। फ्रान्स की स्वेज-नहर-कम्पनी ने उस स्थान को बहुत ही मनोहर बना रक्खा है। स्ट्रान्ड (Strand) डेक (Deck) और गिर्जा आदि का दृश्य बहुत ही सुन्दर था, एक सुन्दर चित्र सा जान पडता था। असल स्वेज किनारे पर से कुछ ही माइल के फासले पर है। जहाज पर से वहाँ का दृश्य स्पष्ट दिखाई पडता है, क्योंकि बीच में केवल ऊसर मैदान है। मैंने

इसी जगह पर पहले पहल यह तमाशा देखा कि मनुष्य गधे पर भी घोड़े की तरह सवारी लेता है। घोर काले रंग के गधे भी मैंने पहले कभी नहीं देखे थे। क्वारन्टाइन के लिए सुलतान के दो कर्मचारी हमारे जहाज पर चढ़ कर सईद बन्दर (Port Said) तक गये।

बारह बजे के समय हमारे जहाज ने स्वेज-नहर में प्रवेश किया। दो बजे के समय दूसरी ओर से आ रहे दो जहाजों को राह देने के लिए हमारे जहाज को किनारे हट कर खड़ा होना पडा। नहर की चौड़ाई कम है। केवल एक ही जहाज आ-जा सकता है। एक सुन्दर स्टेशन के सामने हमारे जहाज को बहुत देर तक राह साफ होने की प्रतीक्षा करनी पडी। धन्य है फ्रांसी इञ्जीनियर लेसेप्स (Ferdinand Lesseppe), जिसने यह नहर बनाई। नहीं तो किसकी सामर्थ्य थी जो इस अपार मरुभूमि के भीतर नहर निकालता। जब तक चन्द्रमा और सूर्य रहेंगे तब तक उसकी यह कीर्ति बनी रहेगी। यह नहर फ्रान्स वालो की विद्या और बुद्धि-बल की साक्षी है। नहर की व्यवस्था बहुत ही अच्छी है। दोनों किनारों पर बडी बडी तोपे लगी हुई हैं। फासला जानने के लिए दो दो रशी (एक प्रकार की फ्रान्स की माप) पर एक एक चिह्न बना हुआ है। हर एक घंटे के बाद एक एक स्टेशन मिलता है। जल को हमेशा साफ और ठीक रखने के लिए बहुत से कीचड निकालने वाले जहाज हैं, और, और भी तरह तरह के बन्दोबस्त हैं। बीच बीच में इञ्जीनियरो के बँगले बने हुए हैं। उनमें वे सपरिवार रहते हैं। जगह जगह पर मिसर के, अरब के और आफ्रिका के हवशी मजदूर मिट्टी काट रहे हैं, ऊँटों पर मिट्टी लाद रहे हैं। कम्पनी के छोटे, बडे और मँभोले जहाज इधर उधर जाँच करते हुए घूम रहे हैं। कहां तक कहे, प्रबन्ध में किसी तरह की कमी नहीं है।

तीन बजे के समय जहाज ऐसी जगह पहुँचा जहाँ पर नहर एक भारी भील से मिल गई थी। इधर कई दिनों तक सूर्यदेव समुद्र ही में भ्रमल हुआ करते थे, आज उनको मैं असीम 'सहारा'—मरुभूमि में छोड़ गया।

दूसरे दिन तीन बजे के समय भील के किनारे इस्मालिया नगर के पास पहुँचा। एक तो मरुभूमि के भीतर भारी भील, और फिर उसके किनारे एक छोटा सा सुन्दर नगर बसा हुआ—यह कुछ कम मजे की बात न थी। पाँच बजे के समय, दूसरी ओर से आरहा और वातानिया की ओर जा रहा एक ओलन्दाजी जहाज मिला। उस पर सब फौजी सिपाहीसवार थे। आज ही शाम को हमारा जहाज सईदवन्दर में पहुँच जाता, मगर कारन्टाइन के कारण उसे बन्दरगाह से दो मील के फासले पर ठहरने के लिए लाचार होना पडा।

सबेरे हमारा जहाज सईद-वन्दर के नीचे जा लगा। मैंने ऊपर डेक पर चढ़ कर देखा, समने भूमध्य-सागर था, बाईं ओर सुन्दर बन्दरगाह था। देखते ही आनन्द से हृदय नाच उठा। मैंने ऊँचे स्वर से, आनन्द के आवेश में, कहा—“भगवन्, यह कैसा सुन्दर और अद्भुत दृश्य दिखलाया। इस कगाल पर इतनी कृपा। तुम्हारी इस छोटी सी पृथ्वी पर जब ऐसे बड़े बड़े कारखाने भरे पडे हुए हैं तब सारे विशाल ब्रह्माण्ड में न जानें कैसी कैसी अपूर्व लीलायें भरी पडी होगी।” मेरा कलेजा भर आया। मुझसे न रहा गया। कैबिन में उतर कर मैं जी भर कर रोया। ठडक सी पड गई।

भोजन के बाद फिर डेक के ऊपर चढा। मेरा जहाज यहाँ कोयला लेने के लिए ७। ८ घंटे ठहरा। बन्दरगाह में कितने ही देशों के तरह तरह के जहाज थे। फ्रान्स के बोट, ओलन्दाजी बोट, टर्की के मनावार बोट—तरह तरह के बोट खडे थे। उन पर अनेक देशों के

लोग थे । उनके पहनावे और रूप-रंग जुदे जुदे थे । स्ट्रान्ड (Strand) की विचित्र इमारतें सिर उठाये गर्व के साथ खड़ी थीं । इन सब चीजों की विचित्र शोभा से वह स्थान स्वर्ग के समान जान पड़ता था । यूरोप, तुम धन्य हो । तुमने इस मुसलमान-साम्राज्य की कैसी उन्नति कर डाली है । सुलतान-रूम सी वरसों में भी जितनी उन्नति न कर पाते उतनी उन्नति अंगरेज सौदागरों ने अत्यन्त सहज में इतनी जल्दी कर दी है ।

सुलतान की ओर से कारन्टाइन डाकूर जब हमारे जहाज की जांच कर गया तब स्वेज से जो दो कर्मचारी हमारे जहाज पर आये थे वे उतर गये ।

दो बजे वहाँ से जहाज चला । कैबिन में बैठे बैठे, आँखों में आंसू भरे हुए मैं एशिया से विदा हुआ । जैसा यूरोपखण्ड है वैसा ही उसका सागर है । भूमध्यसागर में जब से हमारे जहाज ने प्रवेश किया तभी से आँधी-पानी का आरम्भ हुआ ।

एक बजे रात से भयानक तूफान शुरू हो गया । सबेरे जहाज ने लौट कर काण्डिया-द्वीप (Candia or Crete) के सामने आकर आश्रय-ग्रहण किया । ग्यारह बजे के समय और भी चार जहाज आ कर पास ही पास रुके हुए । ट्रियेस्ट (Trieste) से आये हुए एक आस्ट्रियन जहाज का एब्जिन विगड गया था । उसके कप्तान ने झुका दिखा कर अपनी अवस्था की सूचना दी और हमारे जहाज को आगे बढ़ने से रोका । धीरे धीरे तूफान बढ़ने लगा । मैंने मन में कहा—अब यह क्या आफत आई ! मगर मेरी चिन्ता व्यर्थ थी, भगवान् की इच्छा को कौन टाल सकता है । केशवचन्द्र सेन की “प्रार्थना” और “एमरसन” (Emerson) पढ़ कर वह दिन मैंने बिताया । बोच बोच से जहाज धरधरा उठता था, लहरें लोहे के मुद्गर की तरह आ आकर

धक्के मारती थीं । लगभग ४५ घंटे के बराबर तूफान रहा । शाम के वक्त तूफान कुछ रुका । जहाज के लगेर उठा लिये गये । क्रमशः आकाश और समुद्र दोनों ऐसे शान्त हो गये कि मानो तूफान था ही नहीं । सागर एक तालाब के समान स्थिर था । मुझे ऐसा तूफान और उसके बाद ऐसी शान्ति देखने का यह पहला ही मौका पडा ।

दूसरे दिन सबेरे, सूर्योदय के पहले, उठ कर पूर्व की ओर सामने के डेक के ऊपर बैठ कर मैं एक गीत गाने लगा ।

उसके दूसरे दिन सबेरे उठ कर मैंने देखा, दक्षिण की ओर इटली (कालाब्रिया Calabria प्रदेश) है, बाईं ओर सिसिली-द्वीप है । धीरे धीरे हमारे जहाज ने मेसिना (Messina) प्रणाली में प्रवेश किया । यहाँ से इटली टोक वूट की तली की तरह दिखाई पडती है । प्रणाली के जिस किनारे इटली है वहाँ सिला (Scylla) का पत्थर का स्तूप है । और जिस किनारे सिसिली है वहाँ सिसिली के किनारे पर कारिब्डिस (Charybdis) का भयानक भारी 'चक्कर' है । इधर से जाइए तो जल का ऐसा तौड है कि पहाड से टकरा कर जहाज चूर चूर हो जायगा और दूसरी ओर जाओ तो उस पानी के 'चक्कर' में डूब मरो । इसी अर्थ में उभय-सङ्कट के अवसर पर, अंगरेजी भाषा में कहा जाता है कि "सिला और कारिब्डिस के बीच में" जैसे हमारे यहाँ कहते हैं "भइ गति साँप-छडूँदर करी" । लैटिन भाषा के प्रसिद्ध दोनो कवि—होमर (Homer) और वर्जिल (Virgil) अपने अपने काव्य के नायकों को इसी उभय-सङ्कट के बीच से ले गये हैं । पन्द्रहवीं शताब्दी में एक प्रसिद्ध गोतेरयोर ने दो बार इस जगह पर गोते लगाये और ऊपर आकर वहाँ के समुद्र के भीतरी भाग के सम्बन्ध में तरह तरह की अद्भुत बातें सुनाई । तीसरी बार राजा ने उसे लालच दिया । राजा ने एक सोने का पात्र इसी स्थान पर छोडा ।

उस गोतेखोर ने उस पात्र के लालच में तीसरी बार ग़ोता लगाया और उसी में उसकी जान गई । मेसिना के नीचे नहर की चौड़ाई (पाट) चार मील की है । प्रवाह में बड़ा प्रबल वेग है ।

सात वजे हमारा जहाज मेसिना-बन्दर में पहुँचा । वहाँ के डाक्टर ने जहाज पर आकर यात्रियों की गिनती की । मुझे देख कर उसने पूछा—आप किस देश के हैं ? मैंने उत्तर दिया—हिन्दुस्तानी । मेसिना के पहाड़ के ऊपर तह के तह, सीढियों की तरह, जलपाई के पेड़ हैं । पहाड़ के ऊपर ड्यूक-महल (Duke's castle) है । शहर की बस्तो कुछ पहाड़ के ऊपर है और कुछ नीचे । शहर तीन-चार हजार फुट ऊँची अर्द्धचन्द्राकार पर्वत-श्रेणी से घिरा हुआ है । यहाँ से एटना पर्वत (Mount Jctna) पच्चीस कोस है, अच्छी तरह देखा पड़ता है । सईद-बन्दर से आये हुए यात्रियों से बातचीत आज हुई । ये सब औरत मर्द मिला कर १२ आदमी थे । ये लोग दक्षिण अमेरिका के बुन्जायरा (Buenos Ayres) को जा रहे थे । ये सब एक ही देश के नहीं थे । इनमें छ आस्ट्रियन, तीन ग्रीक, दो जर्मन और एक रूसी था । हमारा जहाज जब बन्दर पर पहुँचा तब कुछ औरतों नावों पर फल-मूल लेकर बेचने के लिए आईं । जहाज के खलासी लोग घर की चिट्ठियाँ पाकर आनन्द से पढ़ने लगे । बहुतों के इष्ट-मित्र स्वजन आदि ने जहाज पर आकर उनसे मुलाकात की ।

मैं अपने साथी सक्कोनी साहब के साथ एक बोट पर बैठ कर किनारे गया । घाट पर चढ़ते ही मछली, मास और तरकारी का एक भारी बाजार और लम्बा-चौड़ा म्यूनिसिपल आफिस देखा पड़ा । सबके और छोटी गलियाँ बहुत साफ-सुधरी थीं, पत्थर जड़े हुए थे । प्रधान सड़को को वहाँ टरेन्टी (Torrente) कहते हैं, जिसका अर्थ है 'सोता' । इस नामकरण का कारण यह है कि पहले पीछे के

पहाड से जल का प्रवाह जो आता था वह इन्हीं मार्गों से होकर समुद्र में गिरता था । समय पा कर जब जल का आना बन्द होगया तब वे ही मार्ग सडके बन गये । सडको के किनारे जगह जगह पर 'मिरी' और ईसा की पत्थर की मूर्तियां देख पडें । राह चलने वालों में से अनेक ही इन मूर्तियों के आगे आकर सिर झुकाते हैं । वहाँ के आदमी बहुत ही सुन्दर और कोमल स्वभाव के, किन्तु साथ ही घोर पैतृ-लिक—प्रतिमापूजक—और कुसत्कारों से आच्छन्न देख पडे । शहर में जहाँ देखो वहाँ प्रतिमा-पूजन की बूम है । शहर समुद्र के किनारे लम्बा लम्बा बसा हुआ है । दो लाख के लगभग आदमी उसमें बसते हैं ।

मेसिना नगर प्रायः ढाई हजार बरस का पुराना है । विदेशियों की चढाइयों से और भू-डोल से बारम्बार विध्वंस हो जाने के बाद सन् १७३८ ईसवी में यह फिर से बनाया और बसाया गया । हैजा आदि बीमारियों का उपद्रव भी यहाँ कुछ कम नहीं हुआ । क्रमशः बहुत दिनों तक भिन्न भिन्न विदेशी जातियों के अधीन रहने के कारण नगर के प्रधान गिर्जे में तरह तरह के—भिन्न भिन्न जातियों के भाव मौजूद हैं । सुना जाता है कि इस गिर्जे में ईसा की माता मेरी के हाथ की लिखावट मौजूद है । और एक छोटे गिर्जे के दर्वाजे पर अरबी का लेख आज तक बना हुआ है, उसकी छते भी मुसलमानी ढंग की हैं । मुसलमानों के राज्य-काल में यह गिर्जा नहीं, मसजिद थी । इसमें कोई सन्देह नहीं । सन् ८३१ से सन् १०६१ तक सिसिली-द्वीप मुसलमानों के अधिकार में रह चुका है । प्रधान गिर्जे से थोड़ी ही दूर पर प्रधान-विश्वविद्यालय है । विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में दो लाख ग्रन्थों का सग्रह है । वहाँ स्थानीय चित्रकार अन्टोनेलो (Antonello di Messina) के हाथ के बने हुए कई एक उत्तम

चित्र भी सुरक्षित हैं । इस चित्रकार को इटलियन चित्र-विद्या का गुरु कहा जा सकता है । इसने विख्यात चित्रकार एईक (John Van Eyck) के तैल-चित्र के आविष्कार की बात सुन कर फ्लण्डर्स (Flanders)—वर्तमान समय के बेलजियम—की यात्रा करके यह विद्या सीखी और वहाँ से लौट कर अपने देश को चला आया । उसके बाद वेनिस (Venice) नगर में जाकर यह इटलियन चित्रकारों को चित्रकला की शिक्षा देने लगा ।

मेसिना नगर महात्मा गेरीवाल्डी (Garibaldi) का लीलाक्षेत्र है । उन्होंने सन् १८६० में सिसिली द्वीप, जो नेपल्स के राजा के अधिकार में था, जीता और इटली के राजा विक्रम एमानुएल (Victor Emmanuel = इटली की भाषा में Vittorio Emanuele) को दे दिया । गेरीवाल्डी ने इसी जगह पर समुद्र पार हो कर नेपल्स की ओर युद्ध-यात्रा की थी । पहले जमाने में, इस नगर में, बहुत से अनेक श्रेणी के धी-शक्ति-सम्पन्न विद्वान् पैदा हो चुके हैं । महाकवि शेक्सपियर ने अपने एक नाटक में मेसिना नगर का दृश्य, वर्णन करके, दिखलाया है । बहुत दिनों तक यहाँ के लोगों का विश्वास था कि एटना पर्वत के ऊपर अपना सिंहासन स्थापित करके यहाँ—इस द्वीप में—जुपिटर (Jupiter) देव राज्य करते हैं । उन्होंने अपने आसन के नीचे एक राक्षस (Enceladus) को समाधि दे रखी है । वह राक्षस जब अपनी अग्निमय साँस छोड़ता है तब ज्वालामुखी पर्वतों से आग निकलने लगती है । और, जब वह राक्षस करबट बदलता है तब भू-डोल आता है । यद्यपि इस समय यह विश्वास वहाँ के शिक्षित लोगों में नहीं है, तथापि अपढ मूर्खश्रेणी के लोग अभी तक ऐसा ही समझते हैं ।

मेसिना के लोग मुझे बहुत ही सरल और बालको की तरह

खेल-तमाशा पसन्द करने वाले जान पड़े। सड़क और दूकानों पर के लोगों में से बहुत से लोग आश्चर्य की दृष्टि से मुझे ताकने लगे। मेरे साथी सकोनी ने मुझसे कहा—“आप जानते हैं, ये सब लोग आपकी तरफ इस तरह आंखें फाड़ फाड़ कर क्यों ताक रहे हैं ? इन्होंने गोरे आदमी भी देखे हैं और काले आदमी भी, मगर आपका ऐसा आधा काला और आधा गोरा (Half black, half white) आदमी नहीं देखा। इसी से इस तरह ताक रहे हैं”।

मेसिना के बन्दरगाह में, साल भर में, औसत के हिसाब से, प्राय १३०० स्टीमर और ६००० पाल वाले जहाज लगर डाला करते हैं। लेकिन यहाँ का स्थानीय (Local) वाणिज्य-व्यवसाय सब अंगरेज, फरासी, जर्मन और उत्तरीय इटलियन लोगों के हाथ में है। बन्दरगाह खूब लम्बा चौड़ा है। वह सुन्दर और सुरक्षित भी है। सिसिली-द्वीप के आदमी, हमारी ही ऐसी, एक उद्यमहीन जाति हैं, नहीं तो ऐसे उपजाऊ देश में रह कर, इतने सुभीते रहने पर भी, अपने देश का व्यापार दूसरों के हाथ में क्यों जानें देते ? “*Ora et abora*” (मुख से भगवान् के निकट प्रार्थना करो और हाथ से परिश्रम करो) इस महावाक्य का महत्त्व शीत-प्रधान उत्तर-यूरोप के आदमी ही खूब समझते हैं। हमारे देशों की तरह मेसिना की सड़कों पर भी बहुत से सन्यासी भिक्षु (Mendicants) घूमा करते हैं। जिस देश में दो-चार पैसे की एक मोटी रोटी और कई एक जलपाई मिलती हैं, जिनसे दिन भर का आहार मजे में हो जाता है, और जहाँ सूर्यदेव गरम कपड़े का काम चला देते हैं वहाँ तो आलस्य को आश्रय मिलेगा ही। इसी से “*आर्किमिडिस*” (Archimedes, the Great Geometician of antiquity) और “*धिओका-*

चित्र भी सुरक्षित हैं । इस चित्रकार को इटलियन चित्र-विद्या का गुरु कहा जा सकता है । इसने विख्यात चित्रकार एईक (John Van Eyck) के तैल-चित्र के आविष्कार की बात सुन कर फ्लण्डर्स (Flanders)—वर्तमान समय के बेलजियम—की यात्रा करके यह विद्या सीखी और वहाँ से लौट कर अपने देश को चला आया । उसके बाद वेनिस (Venice) नगर में जाकर यह इटलियन चित्रकारों को चित्रकला की शिक्षा देने लगा ।

मेसिना नगर महात्मा गेरीवाल्डी (Garibaldi) का लीलाक्षेत्र है । उन्होंने सन् १८६० में सिसिली द्वीप, जो नेपल्स के राजा के अधिकार में था, जीता और इटली के राजा विक्रम एमानुएल (Victor Emmanuel = इटली की भाषा में Vittorio Emanuele) को दे दिया । गेरीवाल्डी ने इसी जगह पर समुद्र पार हो कर नेपल्स की ओर युद्ध-यात्रा की थी । पहले ज़माने में, इस नगर में, बहुत से अनेक श्रेणी के धी-शक्ति-सम्पन्न विद्वान् पैदा हो चुके हैं । महाकवि शेक्सपियर ने अपने एक नाटक में मेसिना नगर का दृश्य, वर्णन करके, दिखलाया है । बहुत दिनों तक यहाँ के लोगो का विश्वास था कि एट्ना पर्वत के ऊपर अपना सिंहासन स्थापित करके यहाँ—इस द्वीप में—जुपिटर (Jupiter) देव राज्य करते हैं । उन्होंने अपने आसन के नीचे एक राक्षस (Enceladus) को समाधि दे रखी है । वह राक्षस जब अपनी अधिमय सांस छोड़ता है तब ज्वालामुखी पर्वतों से आग निकलने लगती है । और, जब वह राक्षस करवट बदलता है तब भू-डोल आता है । यद्यपि इस समय यह विश्वास वहाँ के शिक्षित लोगो में नहीं है, तथापि अपढ़ मूर्खश्रेणी के लोग अभी तक ऐसा ही समझते हैं ।

मेसिना के लोग मुझे बहुत ही सरल और बालको की तरह

रहा था । इसका नाम स्ट्रम्बोली (Strambouli) है । यह समुद्र के भीतर एक पहाड़ है । जिस तरफ ज्वालामुखी से निकल निकल कर गली हुई धातुएँ बरसती हैं उसकी दूसरी ओर एक छोटा सा मछुओं का गाँव है । उसमें ढाई हजार के लगभग आदमी बसते हैं । मछलियों के सिवा और सब जरूरी सामान हफ्ते में एक दफे मेसिना से वहाँ आता है । ऐसी जगह पर, ऐसी विपत्ति के पास, अगर ये लोग न बसते तो क्या इनका काम न चलता ? यह प्रश्न आप ही आप मन में उठता है । मगर नहीं, इनके यहाँ बसने का अवश्य कोई कारण है । हमारे जहाज का एक खलासी इसी गाँव का आदमी था ।

सत्रह घंटे के बाद, रात के ११ बजे, हमारा जहाज नेपल्स नाम (Naples, इटलियन भाषा में Napoli) में पहुँचा । पास ही विस्सू-वियस (Vesuvius, इटलियन भाषा में Vesuvio) नामक ज्वालामुखी से बराबर धुआँ और आग की लपटें निकल रही थीं । बीच-बीच में उसकी अग्नि-शिरा प्रबल वेग से धक-धक करके जल उठती थी । कैसा भयानक दृश्य था ।

सवरे भोजन के बाद नगर देखने निकला । 'नेपल्स' को इटलियन लोग 'नेपोली' कहते हैं । अँगरेज लोग जैसे अन्य देशों के नामों को मनमाने ढंग से सच्चित कर लेते हैं वैसे ही इटलियन लोगों ने अँगरेजों के देश इंग्लैंड के छोटे नाम को खींच कर "इंगिलटेरा" (Inghilterra) बना डाला है ।

नेपोली का गिर्जा बहुत बड़ा है और अपेरा-हाउस (एक प्रकार का नाटक-घर) भी बुरा नहीं है । मैंने गिर्जे के भीतर जाकर देखा कि वहाँ के बृद्ध पादरी ने धूप-दीप फूल नैवेद्य आदि से पूजा शुरू कर दी है । नेपोली बहुत बड़ा शहर है । उसमें सात लाख आदमी बसते हैं । चन्द्ररगाह भी बहुत बड़ा है । नेपोली के निकट ही विस्सूवियस की

इट्स" (Theocritus, the prince of pastoral poets) के देश की यह अवस्था होती ।

रात को दो नवागत इटलियन युवकों के साथ मैंने भोजन किया । ये दोनो युवक बड़े ही सुशील और सज्जन थे । इनके साथ भारत और अँगरेजों के सम्बन्ध में बहुत सी बातें हुई । एक युवक ने विशेष दुःख के साथ कहा—“तुम्हारे देश में क्या अब भी कोई गेरीवाल्डी या मेज़िनी (Mazzini) नहीं पैदा होगा ?” । जर्मनी के भूतपूर्व सम्राट् फ्रेडरिक की चिकित्सा और सर मोरेल मेकेञ्जी के सम्बन्ध में बहुत सी बातें चलीं । एक युवक ने हिन्दू और वैद्यों के सम्बन्ध में बहुत सी बातें कीं ।

दूसरे दिन सवेरे मेसिना को छोड़ कर हमारा जहाज आगे बढ़ा । क्रमशः सन-जुआन (San Juan) नगर नाँव कर हमारा जहाज इटली के दूसरे किनारे पर पहुँचा । कलात्रिया-प्रदेश की दशा सुन कर बड़ा दुःख हुआ । सुना कि वहाँ के लोग प्रायः उजड़, और उनमें से अधिकांश डकैत और सूनी हैं । इटली के भले आदमी हम लोगों से बहुत मिलते-जुलते हुए हैं । वे हमारा ही तरह गपशप उड़ाना और खेल-तमाशा बहुत पसन्द करते हैं । उनकी आदत होती है कि वे थूकते बहुत हैं और दूसरे के बदन में टहोका मार मार कर बात चीत करने में मजबूत हुआ करते हैं । उनमें बहुत से तो ऐसे देख पड़े कि अगर वे अपनी पोशाक उतार कर हमारे कपड़े पहन लें तो उनके व्यवहार से कोई यह नहीं कह सकता कि वे बंगाली या हिन्दुस्तानी नहीं हैं ।

इटली के पश्चिमी किनारे के समुद्र के भीतर तीन-चार ज्वालामुखी पहाड़ देख पड़े । एक बजे के समय हमारा जहाज एक ज्वालामुखी के विलकुल पास से निकला । उससे सूब धुआँ निकल

रहा था । इसका नाम स्ट्रम्बोली (Strambouli) है । यह समुद्र के भीतर एक पहाड़ है । जिस तरफ ज्वालामुखी से निकल निकल कर गली हुई धातुएँ बरसती हैं उसकी दूसरी ओर एक छोटा सा मछुओं का गाँव है । उसमें ढाई हजार के लगभग आदमी बसते हैं । मछलियों के सिवा और सब जरूरी सामान हफ्ते में एक दफे मेसिना से वहाँ आता है । ऐसी जगह पर, ऐसी विपत्ति के पास, अगर ये लोग न बसते तो क्या इनका काम न चलता ? यह प्रश्न आप ही आप मन में उठता है । मगर नहीं, इनके यहाँ बसने का अवश्य कोई कारण है । हमारे जहाज का एक खलासी इसी गाँव का आदमी था ।

सत्रह घंटे के बाद, रात के ११ बजे, हमारा जहाज नेपल्स नाम (Naples, इटलियन भाषा में Napoli) में पहुँचा । पास ही विस्वूवियस (Vesuvius, इटलियन भाषा में Vesuvio) नामक ज्वालामुखी से बराबर धुआँ और आग की लपटें निकल रही थी । बीच बीच में उसकी अभि-शिरा प्रबल वेग से धक-धक करके जल उठती थी । कैसा भयानक दृश्य था ।

सवेरे भोजन के बाद नगर देखने निकला । 'नेपल्स' को इटलियन लोग 'नपोली' कहते हैं । अंगरेज लोग जैसे अन्य देशों के नामों को मनमाने ढंग से सच्चित कर लेते हैं वैसे ही इटलियन लोगों ने अंगरेजों के देश इंग्लैंड के छोटे नाम को खींच कर "इंगिलटेरा" (Inghilterra) बना डाला है ।

नपोली का गिरजा बहुत बड़ा है और अपेरा-हाउस (एक प्रकार का नाटक-घर) भी बुरा नहीं है । मैंने गिरजे के भीतर जाकर देखा कि वहाँ के वृद्ध पादरी ने धूप-दीप फूल नैवेद्य आदि से पूजा शुरू कर दी है । नपोली बहुत बड़ा शहर है । उसमें सात लाख आदमी बसते हैं । वन्दरगाह भी बहुत बड़ा है । नपोली के निकट ही विस्वूवियस की

ज्वालामुखी के उत्पात से विध्वंस को प्राप्त पपी (Pompeii) नगर का ध्वसावशेष एक महातीर्थ के रूप से विराजमान है। इटली के स्वाधीन होने के पहले बहुत से विदेशी राजे यहाँ राज्य कर चुके हैं। उनकी अनेक कीर्तियाँ अभी यहाँ मौजूद हैं। इस दफे में नेपल्स में दो दिन रहा। इसके बाद और भी दो दफे मैं यहाँ आया हूँ। इस देश का पूरा हाल अन्यत्र वर्णन किया जायगा।

यहाँ से जहाज चला। ३३ घटे के बाद हमारा जहाज जिनोआ (Genoa), स्थानीय नाम (Genova) के बन्दरगाह में पहुँचा। जहाज ने जिस समय लगर डाला उस समय सवेरे के ४ बजे थे। उस समय भी सूब अँधेरा था। जहाज बहुत दिनों के बाद अपने देश में पहुँचा। जहाज के सभी कर्मचारी बहुत खुश थे। किन्तु मेरे सिर पर जैसे गाज गिर पड़ी। सवेरे आठ बजे के समय कोबिन में बैठ कर उपासना और प्रार्थना करने के बाद रोता हुआ मैं जहाज से विदा हुआ। इस समय की बात मैं कभी नहीं भूलने का। २५ दिन मैं जहाज पर रहा। जहाज पर अपने घर की ऐसी ममता मुझे होगई थी। मैं ऐसी कमजोर तबियत का आदमी हूँ कि जहाज छोड़ने में भी मुझे बड़ा कष्ट हुआ। आँखें पोंछते पोंछते मैं जहाज के कर्मचारियों से विदा हुआ। एक इटलियन खलासी को साथ लेकर मैं जहाज से उतरा। चीज-वस्तु सब परमिट (Custom House) में पास कराना पड़ता है। इस कारण मुझे पहले वहीं जाना पड़ा। वहाँ से छुट्टी मिलने पर मैं सीधा रेल्वे-स्टेशन की ओर खाना हुआ। स्टेशन के सामने सुप्रसिद्ध जहाजी अमेरिका का पता लगाने वाले कोलम्बस की सफेद पत्थर का एक बड़ी भारी मूर्ति देख पड़ी। स्टेशन पर पहुँच कर देखा कि मेल ट्रेन के छूटने में सिर्फ दस मिनट की देर है। कुछ खाना-पीना नहीं हो सका। वैसे ही गाड़ी पर चढ़ कर बैठ गया। जिनोआ से लन्दन

यात्रा ।


तरु के लिए मेरे पास फर्स्ट क्लास का टिकट था। केवल (luggage) करने में जल्दी करनी पड़ी। गाड़ी पर चढ़ कर मैंने कि दो जवान और एक बुढ़िया उस पर बैठी थी। ये लोग रोम में महात्मा पोप के चरण-स्पर्श के लिए गये थे। डेढ़ बजे टूरिन (Turin, असल नाम Torino) स्टेशन पर पहुँच कर मैंने सोते जाने की गाड़ी का टिकट खरीदा। इस गाड़ी का टिकट बेचने साहब कुछ दिनों कलकत्ते और बम्बई में रह चुके थे। उनसे सो बातें मुझे मालूम हुईं। यद्यपि कुरु-कम्पनी, जो यहाँ विलायत टिकट बेचती है, उसके आदमियों से वहाँ सहायता मिलनी चाँहि मगर उसके आदमियों का वहाँ कहीं पता न था। यहाँ स्लीपिंग (Sleeping car) के सिवा और किसी गाड़ी में पेशाब करने पाखाने जाने का प्रबन्ध नहीं है। प्रथम श्रेणी की गाड़ियों में पैर रखने के लिए ताँबे के चिपटे चोगे रहते हैं, जिनके भीतर गरम जल रहता है। स्लीपिंग-गाड़ियाँ बहुत ही आराम की चीज हैं।

टूरिन से दो बजे गाड़ी छूटी। धीरे धीरे बरफ से ढका हुआ बहुत ही ऊँचा आल्प्स (Alps) पहाड़ देखा पड़ा। गाड़ी पहाड़ों के ऊपर चढ़ कर चलने लगी। नीचे—बहुत नीचे—गाँव दिखाई पड़ते थे। हमारे दोनों ओर और भी ऊँचे पहाड़ी सिलसिले थे। कैसा भयानक दृश्य था। इसी जगह कवि पोप का स्मरण आया। हमारे यहाँ जमालपुर के पास जैसे पहाड़ तोड़ कर रेल की राह बनी है वैसे टनेल (Tunnel) न-जाने कितने नाँघने पड़े। दिन भर गाड़ी रोशनी रही। बीच बीच में पहाड़ पर अगूर के खेत और सुन्दर माँघ देखा पड़ते थे। मोडान (Modane) स्टेशन के आगे का टनेल नाँघने में १५ मिनट लग गये। रात के ११ बजे तक गाड़ी में मैं अकेला ही था। उसके बाद एक स्वीस (Swiss) बुढ़ा गाड़ी पर सवार हुआ। सबे

पेरिस में पहुँच कर गाड़ी बदलनी पड़ी । तीन बजे के समय कैल (Calais) बन्दर में जहाज पर चढ़ कर चार बजे डोवर (Dover) में पहुँचा । वहाँ से फिर रेल पर सवार हुआ । थोड़ी ही देर में गाड़ी छूटी । गाड़ी बीच में किसी स्टेशन पर नहीं ठहरी । एक घंटे में सीधे लन्दन पहुँच गई । गाड़ी घंटे में ६० मील की तेज चाल से चली थी ।

पाँच बजे के समय में लन्दन में पहुँचा । अँगरेजों का देश—अँगरेजों का खाम शहर इंग्लैण्ड है । मुझ सरीखे साधारण आदमियों के द्वारा इंग्लैण्ड के वृत्तान्त का पूरा पूरा वर्णन होना सर्वथा असम्भव ही समझिए । सारी पृथ्वी में जो वात नहीं देख पड़ती—यहाँ तक कि यूरोप के भी और प्रदेशों में जो वात नहीं देख पड़ती वही वात अँगरेजों के देश इंग्लैण्ड में देखने को मिलती है । भारत-प्रवासी अँगरेजों और यहाँ के अँगरेजों में आकाश और पाताल का अन्तर है । असल बात यह है कि अँगरेजों के ऐसे अच्छे गुण यूरोप की और किसी जाति में नहीं देखे जाते । इंग्लैण्ड किसी भी सभ्य देश से किसी वात में छोटा नहीं है । ऐसे देश की राजधानी, पृथ्वी भर के सब से प्रधान नगर, लन्दन का वर्णन मैं क्या कर सकता हूँ ? तथापि अपनी शक्ति के अनुसार इंग्लैण्ड और लन्दन के सम्बन्ध में कुछ कहने की चेष्टा करना हूँ ।

लन्दन ।


 गलैंड की राजधानी लन्दन की भीडभाड मे पड कर मैं तो
 इ जैसे अपने को भूल ही गया । मुझ सरीखे मुक्तकच्छ
 अहमक तो साधारण भीडभाड मे ही भटक जाते हैं,
 फिर लन्दन की ऐसी भारी भीड । चारों ओर रूप और गुण का बाजार
 लगा हुआ था । मैं इसी को अपना परम सौभाग्य समझता हूँ कि उस
 शक्ति के मेलेमे—विद्या, बुद्धि और सभ्यता के मैदान में—मेरा व्यक्तित्व
 एकदम मिट ही नहीं गया । कभी कभी जान पडता था कि मेरा
 पुनर्जन्म हुआ है । यह देश जैसे दूसरा ही जगत् है ।

मुझ सरीखे अल्पबुद्धि को ऐसी आशा करना नहीं सोहता कि
 लन्दन का हाल लिखकर मैं अपने पाठको को वृत्त कर सकूँगा । बहुत
 से बडे बडे आदमी जब इस चेष्टा मे सफलता नहीं प्राप्त कर सके
 तब मैं किस गिनती मे हूँ । सुप्रसिद्ध वक्ता महात्मा जान ब्राइट
 (John Bright) ने एक दफे एक जगह अपनी वक्त्रता मे कहा था
 कि “तुममे से अनेक लोगों ने लन्दन देखा है, परन्तु तुम उसका कुछ
 भी हाल नहीं जानते । मैं प्राय चालीस बरस तक, साल मे छ महीने
 के लगभग, लन्दन मे रहा हूँ । मगर मैं भी उसका कुछ हाल नहीं
 जानता” ।* एक जर्मन विद्वान् ने लन्दन को पृथ्वी भर मे सबसे बड

* A great many of you have been to London, but you know nothing about it. I have spent six months there every year for nearly forty years, and I know nothing about it. I do not believe there is a man in it who is fairly acquainted with all the parts and districts of the vast city. You have our four millions of people there —John Bright

कर विचित्र दृश्य बतलाया है। लन्दन के सम्बन्ध में भिन्न भिन्न लेखकों के लिखे इतने ग्रन्थ हैं कि केवल उनसे ही एक अच्छी लाइब्रेरी सज जा सकती है। जो कुछ हो, लन्दन में जाकर वहाँ जो कुछ मैंने देखा सुना और सोचा-विचारा है वही यथाशक्ति पाठकों को कुछ कुछ बतलाने की चेष्टा करता हूँ। लन्दन के लोगो का चरित्र देख व जितना मैं मोहित हुआ उतना वहाँ के कल-कारखाने मुझे नहीं मुग्ध कर सके। लन्दन नगर में जब से मैंने पैर रक्खा तब से जैसे एक कल के बीच में पड़ कर बराबर घूमता ही रहा, दम लेने की भी छुट्टी नहीं थी। सभी कामों और बातों में कठोर नियम जैसे लोहदण्ड हाथ में लिये हर घड़ी सिर पर सवार है। जरा भी असावधान हुए तो खोपड़ी पर नियम का वह लोह-दण्ड पड़ा।

शाम के पहले मैं विक्टोरिया-स्टेशन में पहुँचा। यह कुछ भी निश्चय न था कि कहाँ जाऊँगा, कहाँ रात बिताऊँगा। मैं पहले कहे चुका हूँ कि यूरोप की रेलगाड़ी में मुझे एक खीस बुढ़ा मिला था उसका नाम ग्रेजिया था। उसने मुझे लन्दन के मेट्रोपोल होटल (Hotel Metropole) का पता बता दिया था। उसी बुढ़े के उपदेशानुसार मैंने उक्त होटल में ही जाना ठीक किया और वहाँ जाने के लिए एक रेलगाड़ी भाड़े पर की। शराब, तम्बाकू, चाय, वारुद-बन्दूक आदि किसी तरह की कोई निषिद्ध चीज साथ लेकर नगर में कोई प्रवेश नहीं कर सकता। मुझे भी जाँच के लिए अपना असबाब स्टेशन के पास के परमिट (चुगीघर) में ले जाना पड़ा। वहाँ जाँच हो जाने पर मैं

† I have seen the greatest wonder the world can show to the astonished spirit. I have seen it and am still astonished for ever will there remain fixed indelibly on my memory the stone forest of houses, amid which flows the rushing stream of faces of living men with all their varied passions, and all their terrible impulses of love, of hunger, and of hatred.

गाड़ी पर सवार हुआ । असवाब इस तरह उथला पुथला हुआ था कि उसे उतारना-चढाना जी का जजाल ही था । असवाब की यह हालत थी, उसके ऊपर अपनी पोशाक भी बहुत ही बढ़िया थी । मुझे तो यह डर मालूम पडा कि होटल मे उतरने से कहीं वे लोग मुझे पशुशाला में पकड कर न बन्द कर दें । होटल का जैसा भारी और साफ घर था वैसा ही अच्छा काम काज और वैसा ही उत्तम प्रबन्ध था । लिख कर उसका पूरा वर्णन करना बहुत ही कठिन है । मैं यहाँ सक्षेप में उसका वर्णन करूँगा ।

होटल को दरवाजे पर मेरी गाडी रुकते ही दरवान आकर हाजिर हुआ । उसका चेहरा और साफ-सुधरी पोशाक देख कर मुझे होश हुआ कि “मैं लन्दन मे हूँ” । लन्दनर (Londoner) अर्थात् लन्दन के लोग परदेशी का विशेष सम्मान करते हैं । इसी से मुझे कभी किसी बात की तकलीफ या असुविधा नहीं हुई । नियमानुसार दूसरे खण्ड में एक कमरा जब मुझे मिल गया तब मैं कल पर बिठला कर उसी खण्ड में, उसी कमरे के पास, पहुँचा दिया गया । होटल का दूसरा देखने लायक दृश्य था वहाँ की दासी (Chamber-maid) । जैसे मैं अपने कमरे मे पहुँचा वैसा ही ४, ५ मिनट के बाद एक साफ सुधरी नौजवान सुन्दरी लो, सुन्दर पोशाक पहने हुए, मेरे सामने आकर मौजूद हुई । उस हँसमुख लोने आकर कोमल और मधुर वाणी से पूछा कि मुझे किस चीज की जरूरत है । मैंने कहा कि मुझे पहले गरमी की जरूरत है । वस, वह चटपट बैठ कर आग बनाने लगी । इस समय मेरे मन मे कितने और कैसे भाव उठने लगे सो यहाँ पर लिखना कठिन है । मैं अपने मन मे सोचने लगा कि हमारे देश की लडाकी, आधे शरीर से नगी, असभ्य, टाँय टाँय करने वाली, कभी सन्तुष्ट न रहने वाली दासी और ये चतुर, सभ्य, सन्तुष्ट, मीठी वाणी से प्रसन्न

कर देने वाली, अच्छी पोशाक पहनने वाली “चेम्बरमेड” एक ही चीज हैं, किन्तु देश-भेद के अनुसार इन में और उनमें कैसा आकाश और पाताल का अन्तर है ॥ यूरोप की सभ्यता, तू धन्य है। धन्य है। तूने साधारण मनुष्यों को भी कितना उन्नत बना दिया है। इसी जगह मेरी समझ में आया कि निर्दय-प्रकृति के कोई कोई अंगरेज एकाएक हमारे देश में उपस्थित हो कर क्यों गरीब नेटिवों पर इतना अत्याचार करते हैं। आत्मा का आदर-सम्मान करना जिन्होंने नहीं सीखा, केवल बाहरी लच्छणों को देखकर ही जो लोग सभ्य असभ्य का विचार करते हैं, वे अपने देश के आदमियों के मुकाबले आत्म-मर्यादा-हीन, सुशामदी, असभ्य, गन्दे, निकृष्ट नेटिवों को ठीक पशु-सरीखा समझते और इसी से नेटिव की हत्या और पशु की हत्या को एक दृष्टि से देखते हैं। कहां तक कहूँ, इच्छा होती थी कि अपने देश के बत्तीस करोड़ आदमियों को यहाँ लाकर दिखलाऊँ कि मनुष्यत्व क्या चीज है। लोग कहावत के तौर पर कहा करते हैं कि “पूर्व और पश्चिम का ऐसा अन्तर”। यहाँ कार्यत वही अन्तर मुझे देख पड़ा। पूर्व और पश्चिम में जितना फर्क है उतना ही फर्क भारत और इंग्लैंड की हर एक बात में है। सब काल की महिमा है। काल की महिमा से ही ससार में सब उलटफेर हुआ करते हैं। जिस भारतवर्ष ने किसी समय ‘षट्दर्शन’ के समान अमूल्य रत्न ससार को दिये थे आज उसी भारत की कैसी हृदय-विदारक, भयकर, शोचनीय हीन अवस्था है। इस के विरुद्ध जिस देश में एक समय बाघ और भालुओं के साथी असभ्य जगली रहते थे उस देश को देखो। आज वह पृथ्वी भर का गिरोमणि होकर मनुष्यत्व के गौरव से परिपूर्ण हो रहा है। हम लोग नरक के भी नीचे चले गये हैं और अंगरेज लोग स्वर्ग के ऊँचे सिंहासन पर विराजमान हैं। अपने इस अध पात का खयाल करने

से सचमुच हृदय फटने लगता है। हमारी—हमारे देश की—क्यों ऐसे दुर्दशा है ? किस प्रकार हमारे इस दुर्दिन का अन्त होगा ? क्या हम एक भारतवासी को इन प्रश्नों पर मन लगा कर विचार न करने चाहिए ? दल-बन्दी, घराऊ लडाई-भगडे, छुटप्पन और बडप्पन के लिए वाद-विवाद, विदेशियों के गुणो की ओर दृष्टि न डालना, पराये गुणो को छोटा करने की चेष्टा, मिथ्या कलक लगा कर महात्माओं की निन्दा करना, तरह तरह की व्यर्थ की कचकचाहट, भगडा-बरेडा, द्वेष-हिंसा, निःकृष्ट स्वार्थपरता—यहाँ तक कि खेल-तमाशा खाना पीना सोना तक—छोड कर हम लोगों में से हर एक को यही सोचना चाहिए कि हम किस तरह दस, बीस, पचास, या सौ, दो सौ बरस में यूरोप के समकक्ष हो सकेंगे। कपट छोड देने से ही हर एक काम आधा कठिन रह जाता है। इच्छा में सरलता, बात चीत में सरलता और कामकाज में भी सरलता का व्यवहार सीखने से उन्नति की राह भी सरल और सहज हो जाती है। हमारे देश में सोचते कुछ ह, कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं। सोचने, कहने और करने में इस तरह आकाश-पाताल का अन्तर होने से हमारी बुरी स्थिति और भी भयानक होती जाती है। असल बात यह है कि यद्यार्थ में सत्-इच्छा अगर हृदय में नहीं होती तो हर एक काम नष्ट होजाता है—विगड जाता है। जहाँ जिसने जो काम वेगार के तौर पर किया है अथवा स्वार्थ सिद्ध करने के लिए किया है वहाँ उसके उस काम का नतीजा बहुत ही खराब हुआ है। और, सरल भाव से, अच्छे इरादे से, असहाय अवस्था में भी, महात्माओं ने जितने बडे बडे कामों में हाथ डाला है उनको अन्त को उन सब कामों में सफलता प्राप्त हुई है और बहुत ही अच्छा फल प्राप्त हुआ है। हम लोगों का इन पर ध्यान ही नहीं है कि 'काल' हमारे सारे कपट का भडा फोड कर

कर देने वाली, अच्छी पोशाक पहनने वाली “चेम्बरमेड” एक ही चीज हैं, किन्तु देश-भेद के अनुसार इन में और उनमें कैसा आकाश और पाताल का अन्तर है ।।। यूरोप की सभ्यता, तू धन्य है । धन्य है ! तूने साधारण मनुष्यों को भी कितना उन्नत बना दिया है । इसी जगह मेरी समझ में आगया कि निर्दय-प्रकृति के कोई कोई अँगरेज एकाएक हमारे देश में उपस्थित हो कर क्यों गरीब नेटिवों पर इतना अत्याचार करते हैं । आत्मा का आदर-सम्मान करना जिन्होंने नहीं सीखा, केवल बाहरी लक्षणों को देखकर ही जो लोग सभ्य असभ्य का विचार करते हैं, वे अपने देश के आदमियों के मुकाबले आत्म-भर्यादा-हीन, खुशामदी, असभ्य, गन्दे, निकृष्ट नेटिवों को ठीक पशु-सरीखा समझते और इसी से नेटिव की हत्या और पशु की हत्या को एक दृष्टि से देखते हैं । कहां तक कहूँ, इच्छा होती थी कि अपने देश के बत्तीस करोड़ आदमियों को यहाँ लाकर दिखलाऊँ कि मनुष्यत्व क्या चीज है । लोग कहावत के तौर पर कहा करते हैं कि “पूर्व और पश्चिम का ऐसा अन्तर” । यहाँ कार्यत वही अन्तर मुझे देख पडा । पूर्व और पश्चिम में जितना फर्क है उतना ही फर्क भारत और इंग्लैंड की हर एक बात में है । सब काल की महिमा है । काल की महिमा से ही संसार में सब उलटफेर हुआ करते हैं । जिस भारतवर्ष ने किसी समय ‘षट्दर्शन’ के समान अमूल्य रत्न संसार को दिये थे आज उसी भारत की कैसी हृदय-विदारक, भयकर, शोचनीय हीन अवस्था है । इस के विरुद्ध जिस देश में एक समय बाघ और भालुओं के साथी असभ्य जंगली रहते थे उस देश को देखो । आज वह पृथ्वी भर का गिरोमणि होकर मनुष्यत्व के गौरव से परिपूर्ण हो रहा है । हम लोग नरक में भी नीचे चले गये हैं और अँगरेज लोग स्वर्ग के ऊँचे सिंहासन पर विराजमान हैं । अपने इम अध पात का खयाल करने

से सचमुच हृदय फटने लगता है। हमारी—हमारे देश की—क्यों ऐसी दुर्दशा है ? किस प्रकार हमारे इस दुर्दिन का अन्त होगा ? क्या हर एक भारतवासी को इन प्रश्नों पर मन लगा कर विचार न करना चाहिए ? दल-बन्दो, घराऊ लडाई-भगडे, छुटप्पन और बडप्पन के लिए वाद-विवाद, विदेशियों के गुणों की ओर दृष्टि न डालना, पराये गुण को छोटा करने की चेष्टा, मिथ्या कलक लगा कर महात्माओं की निन्दा करना, तरह तरह की व्यर्थ की कचकचाहट, भगडा-बखेडा, द्वेष-हिंसा, निकृष्ट स्वार्थपरता—यहाँ तबू कि खेल-तमाशा खाना पीना सोना तबू—छोड कर हम लोगों में से हर एक को यही सोचना चाहिए कि हम किस तरह दस, बीस, पचास, या सौ, दो सौ घरस में यूरोप के समकक्ष हो सकेंगे। कपट छोड देने से ही हर एक काम आधा कठिन रह जाता है। इच्छा में सरलता, बात चीत में सरलता और कामकाज में भी सरलता का व्यवहार सीखने से उन्नति की राह भी सरल और सहज हो जाती है। हमारे देश में सोचते कुछ हैं, कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं। सोचने, कहने और करने में इस तरह आकाश-पाताल का अन्तर होने से हमारी दुरी स्थिति और भी भयानक होती जाती है। असल बात यह है कि यथार्थ में सत्-इच्छा अगर हृदय में नहीं होती तो हर एक काम नष्ट होजाता है—विगड जाता है। जहाँ जिसने जो काम बेगार के तौर पर किया है अथवा स्वार्थ सिद्ध करने के लिए किया है वहाँ उसके उस काम का नतीजा बहुत ही खराब हुआ है। और, सरल भाव से, अच्छे इरादे से, असहाय अवस्था में भी, महात्माओं ने जितने बडे बडे कामों में हाथ डाला है उनको अन्त को उन सब कामों में सफलता प्राप्त हुई है और बहुत ही अच्छा फल प्राप्त हुआ है। हम लोगों का इस पर ध्यान ही नहीं है कि 'काल' हमारे सारे कपट का भडा फोड कर

हमारे हृदय का हाल सब पर प्रकट करदेगा । हम इस तरह 'वर्तमान' की आँखों में धूल भोक कर अपनी असली छिपाना ही बड़ी होशियारी या बहादुरी समझते हैं । लेकिन को धोखा नहीं दिया जा सकता—उससे ठग विद्या नहीं चढ़ाता का ऐसा कौशल है कि सत्य को कोई छिपा नहीं किसी न किसी समय अवश्य ही प्रकट होगा । 'सत्य' के प्रसन्न सन्मान और 'भूठ' के प्रति आन्तरिक घृणा हुए विना प्राप्त होता । "मैं मनुष्य ईश्वर की सन्तान हूँ । नीचता मुझे नहीं सोहती"—यही जीवन का मूल-मन्त्र हुए मर्यादा की स्थापना सर्वथा असम्भव ही है । गभीर भाव होकर, यही सोचने की इस समय हमको अत्यन्त आवश्यक

पश्चिम (यूरोप) के भयानक शीत में वह लोग सिरतोड परिश्रम में लगे हुए हैं । सब को यही चिन्ता हम किस तरह अपने देश को उन्नति के शिखर पर चढ़ाएँ । पूर्व (एशिया) के लोग वसन्त की मृदु मन्द वायु में गंगा में मग्न हैं । उन को यही चिन्ता है कि किस तरह विना चाबूगीरी के साथ आराम से पैर के ऊपर पैर रख कर

कर पेट्रिसियन (Pitieren) लोगो ने ऊपर उठने की चेष्टा की थी और उनकी इस चेष्टा से रोम का सत्यानाश हो गया । ऐसे ही, इसी कारण, ग्रीक लोग विदेशियों को “घार वेवियन” कह कर घृणा की दृष्टि से देखने लगे और वैसे ही उन की अधोगति का आरम्भ हो गया । पृथ्वी पर सब जगह एक ही नियम है । इतिहास इस का प्रधान साक्षी है । हमारे घर में उस का प्रत्यक्ष प्रमाण मौजूद है । तब भी हमको होश नहीं है । इस समय भी हम आपस में छुटाई-बडाई का भेद भाव बनाये रखने की चेष्टा में लगे हुए हैं ।

भारत के लोग स्वभाव से ही हगामा पसन्द करते हैं, एक सकुचित घेरे में, या पगडडी पर, चलना उन को रुचता है । केवल अपठ अशिचित्त किसान या देहाती ही नहीं, किन्तु बहुत से अर्धशिचित्त या किसी तरह अपना नाम लिख ले सकने वाले नगर-निवासी भी सुभीता देख कर “जैसी बहै बयार पीठ तत्र तैसी दीजै” वाली नीति के अनुगामी बन जाते हैं । कोई ऊँचे पद पर स्थित या रईस बडा आदमी अगर किसी कुराह पर पैर रखता है तो बहुत लोग न्याय अन्याय का विचार न करके उसका विरोध करना तो दूर रहा और उसके ऐब को छिपाने की कोशिश करने लगते हैं । ससार में जो सब बडो से बडा (परमेश्वर) है उसे भूल जाते या उसकी पर्वा नहीं करते । यथार्थ ‘शिच्चा’ के बिना यह रोग नहीं दूर हो सकता । जिस के द्वारा मनुष्य अपने सम्वन्ध में आप अच्छी तरह विचार करने में समर्थ होता है—पृथ्वी के, सौर जगत् के और क्रमशः सारे विश्व के गूढ रहस्यों का ज्ञान प्राप्त कर ईश्वर-पद-लाभ के अधिकारी होने की राह में उपस्थित होने को समर्थ होता है—वही यथार्थ शिच्चा है । भारत में आज कल शिच्चा का अर्थ ठोकर इस के विपरीत है । किसी तरह दो चार संस्कृत श्लोक कठ कर लेना या सौ पचास अँगरेजी के शब्द बोल लेना

ही यहाँ यथेष्ट शिक्षा समझी जाने लगी है। बहुत लोगों को मालूम ही नहीं कि स्वतन्त्र चिन्ता या स्वतन्त्र विचार कहते किसे हैं। फल यह होता है कि 'सनातनता' की दुहाई देकर बहुत सी, समयानुसार अनावश्यक, रीतियों को आश्रय दिया जाता है और बहुत से नासमझ जीव अनायास ही भ्रमपूर्ण और हानि-कारक मार्ग में खिँच आते हैं। देश के साधारण लोगों को दृढ विश्वास है कि दुनिया के बाजार में जिन्होंने कुछ अधिक नाम कमा लिया है उनकी सभी बातें भ्रांति-रहित हैं—वे जो कुछ करते हैं, सब ठीक है। कम से कम इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं कि लोग उनका कहना खूब मानते हैं। भारत के जीव यह सुनना ही नहीं चाहते कि मनुष्य की बुद्धि सब ओर समान भाव से विकास को नहीं प्राप्त हो सकती। वे नहीं जानते कि प्रसिद्ध दार्शनिक डार्विन सरीखे वैज्ञानिक पण्डित को काव्य और गाना विलकुल नहीं रुचता था। जो लोग यह जानते या समझते हैं कि "प्रबल भाव" (Dominant idea)—वह चाहे अच्छा हो, चाहे बुरा और चाहे सच हो, चाहे भूठ—मानसिक जगत् में भयानक सामर्थ्य रखता है, उनकी बात मैं नहीं कहता। मैं यह कहता हूँ कि जो लोग मनोराज्य के नियम (Mental Physiology) आदि की कुछ भी खबर नहीं रखते वे लोग, बड़े लोगों को अगर गद्दा में डूबते देखते हैं तो उनके साथ आप भी, गद्दा में डूबने का साहस कैसे करते हैं। मन के चोभ से मैं असल विषय को छोड़ कर इधर बहुत बड़ आया, इसके लिए, आशा है, पाठकगण मुझे क्षमा प्रदान करेंगे।

मेट्रोपोल होटल लन्दन का एक प्रधान होटल है। अन्दाजन उसमें सात आठ सौ कमरे होंगे। वहाँ का प्रबन्ध जैसा अच्छा है वैसा ही वहाँ रहने का खर्च भी है। मुझे प्राय १५) ६० रोज

देने पडते थे । परन्तु इससे कम मे भी वहाँ रहा जा सकता है । पहली रात को मैं वहाँ बड़ी ही मुशकिल मे पड गया था । उस समय मुझे दिन-चढे सो कर उठने का अभ्यास नहीं हुआ था । सवरे चार बजे आँख खुलते ही मैं भटपट टट्टी जाने के लिए अपने कमरे से बाहर निकला । बाहर से कमरे का दरवाजा बन्द करने पर जान पडा कि वह एकदम बन्द हो गया, अब चाभी के बिना नहीं खुल सकता । टट्टी से लौट कर देखा कि जो सोचा था वही हुआ । बिलकुल उजियाला होने मे उस समय भी दो-तीन घटे की देरी थी । अब क्या करूँ, बड़ी मुशकिल हुई । इसी समय होटल का चौकीदार रौद मे घूमता घूमता वहाँ आ पहुँचा । उससे कहते ही उसने बहुत ही नम्रता के साथ मेरे कमरे का नंबर पूछा और नंबर बतलाने पर वह उसी दम एक चाभी ले आया । चाभी देकर वह बड़ी ही नम्रता के साथ विदा होकर अपने काम पर चला गया । कमरे मे जाकर मैंने सोचा कि यहाँ के साधारण नौकर चाकर तक कैसे सभ्य, नम्र और होशियार हैं । हमारे देश के किसी होटल मे अगर ऐसी घटना होती तो वहाँ का चपरासी चाहे और कुछ न कहता, मगर गँवार समझ कर कुछ मधुर उपदेश दिये बिना कभी न छोडता । किन्तु इस यूरोप के चपरासी ने इस तरह विनीत भाव से सब काम किया जैसे उसीसे कुछ चूक हो गई है । पहले पहल यूरोप मे मैंने यह शिक्का पाई ।

तीन दिन होटल मे रहने के बाद एक दूसरा स्थान (Boarding House) मैंने रहने के लिए ठीक किया और वहीं उठ आया । उस स्थान का भी सब प्रबन्ध नियमानुसार ही होता है । जो समय जिस काम के लिए नियत था उसी समय वह काम होता था । अपनी इच्छा के अनुसार, जब चाहे तब, कोई काम करने की

विलकुल गुजाइश नहीं थी। अँगरेज, स्काच, आयरिश, स्वीस, जर्मन और मैं (भारतीय) सब एक साथ बैठ कर भोजन करते थे। भोजन अच्छा ही होता था। खाना पकता भी अच्छा था और पच भी जाता था। लन्दन में जैसा भयानक जाड़ा पड़ता है उसी के अनुकूल वैज्ञानिक आहार (Physiological diet) था। वह दुरा नहीं था, स्वादिष्ट होता था। वहाँ बीच बीच में मसूर की दाल (Lentil soup), भात और तरकारी भी मिलती है। मगर उससे तबियत ठीक नहीं रहती। यह भोजन वहाँ के जलवायु के उपयुक्त नहीं है। मैं जहाँ ठहरा था वहाँ की मालकिन (Landlady) और उस घर के सब आदमी बड़े ही भले आदमी और सीधे थे। भारत के साहब लोगों से और यहाँ के इंग्लिशमैनो से आकाश-पाताल का अन्तर है। दोनों जैसे भिन्न भिन्न प्रकृति के भिन्न भिन्न देश के लोग हैं। यहाँ सब देश के सब मनुष्य समान हैं, कोई अन्तर नहीं है। चाहे जिस देश का आदमी हो, इंगलैंड उसका सब के समान ही आदर करेगा। एक भद्र पुरुष के साथ बातचीत करते करते एक दिन मैं कह उठा कि हम लोग तो विदेशी (Foreigner) हैं। वह जैसे चौंक पड़े और उन्होंने मेरी बात का प्रतिवाद करके कहा कि “यह क्या, आप विदेशी कैसे हैं? आप लोग हमारे ही समान (Fellow-citizen) हैं”। फ्रांस के लोग जर्मन लोगों को “फरेनर” कहते हैं, किन्तु हम लोगों को एक भारत-सम्राट् की प्रजा (Subjects of the same Kaiser-i-Hind) कहते हैं। यहाँ किसी की भी मजाल नहीं कि वह “डैम-निगार” कहकर हम लोगों से घृणा करे। यहाँ सब स्वाधीन हैं। कोई किसी को कुछ कह नहीं सकता। स्वाधीनता की जन्मभूमि इंगलैंड। इस बात के लिए तुम्हारे चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम। “इंगलैंड में” क्रीत दास का होना असम्भव है। यहाँ की जमीन को छूते ही उसके

बन्धन तुल जाते हैं" (No slave can breathe in England, no sooner does he touch the land than his shackles fall)—इस महावाक्य को पहले फेवल कानों से सुना ही था, किन्तु तुम्हारे हृदय (लन्दन) में उसे जीता जागता, प्रत्यक्ष, देस कर में कृतार्थ हो गया । नहीं जानता, हृदय के महान् उद्वास से किस जगत् में पहुँच गया हूँ । "मैं इंग्लैंड में हूँ" इस भाव के साथ साथ कैसी निर्मल, सब बन्धनों से छुड़ाने वाली, पवित्र, और गौरवमयी स्वाधीनता की हवा हृदय को स्पर्श करती है—यह बात उस आदमी को, जिसने खुद इंग्लैंड में जाकर उसका अनुभव नहीं किया, समझाना कठिन ही है । स्वाधीनता ही जीव की प्रधान सम्पत्ति है । उसी स्वाधीनता का उद्धार करने के लिए, परमेश्वर के प्रतिनिधि-रूप से, जगद्ग्यापी अपरिमित उद्यम और उत्साह के साथ, इंग्लैंड ने जैसी उन्नत और वीरोचित चेष्टा की है और अब भी कर रहा है उसके शताश क्या, लक्षाश का भी वर्णन मुझसे नहीं हो सकता । इस बारे में सारी पृथ्वी उसके निरूढ श्रेणी है, और उसका यह श्रेण कभी चुकाया नहीं जा सकता । स्वेच्छाचार के अत्याचार से जहाँ जो पददलित हुआ उसी ने निराश्रय के लिए आश्रय-स्वरूप इंग्लैंड को मुँह की ओर ताका । अपने देश के लोगो के अत्याचार से जान बचाकर भागे हुए अनेक देशों के अनेक वीरो को इंग्लैंड ने आश्रय दिया और उनके प्राण बचाये हैं । इंग्लैंड का यह प्रशसनीय काम अभी तक जारी है । फ्रांस के सेनापति महावीर बुलांजे (Boulangier) इंग्लैंड की ही गोद में आश्रय पाकर वेसटके सुर की नींद सो सके थे । युद्ध में हारने के कारण विगडी हुई प्रजा के भय से कम्पायमान अन्तिम फ्रांस-सम्राट् तीसरे नेपोलियन ने हाँफते हाँफते इंग्लैंड के जहाज तक पहुँच कर, उसी पर इंग्लैंड में आकर, अपनी जान बचाई थी । ससार में डके की चोट

“शरणागत-रक्षा” की घोषणा करके इंग्लैंड कह रहा है कि “आओ भाई आओ । स्वैच्छाचारी के अन्याय-प्रत्याचार से कहां कौन सताया जा रहा है ? आओ । मैं उसे अपने हृदय में जगह दूँगा । किसी तरह समुद्र पार हो कर मेरी मिट्टी पर पैर रख दो, फिर तुमको कोई खटका नहीं है । मैं हर तरह तुम्हारी रक्षा करूँगा । किसकी मजाल है जो तुम्हारा बाल बाँका कर सके !” ऐसा उदार धीरभाव, ऐसी गहरी सहानुभूति, ऐसा मनुष्यत्व का सम्मान, किसने कब कहां दिखलाया है ।।। “मनुष्य-जीवन उपेक्षा की चीज नहीं है, ज्वलन्त सत्य है” (Life is earnest, life is real)—यह पहले पुस्तकगत भाव मात्र था । इंग्लैंड ने, अनेक तरह के उज्ज्वल रत्नों से अलंकृत कर, इसे अपने देश में प्रत्यक्ष स्थापित कर रक्खा है । इंग्लैंड, तू धन्य है । और, तेरी महिमा धन्य है ।

इंग्लैंड की ऐसी प्रशंसा सुन कर बहुतों के हृदय में ईर्ष्या की आग जल उठती है । जब मैं इंग्लैंड में था तब इसी तरह की दो-एक चिट्ठियाँ भी मुझे मिली थीं । ऐसे आदमियों से मेरा केवल इतना ही अनुरोध है कि भाई, यदि मनुष्यत्व के ऊँचे, उदार, शान्त, गम्भीर और जीतेजागते भाव को देख कर कुछ सीखना चाहते हो तो समुद्र-पार होकर इंग्लैंड में जाकर कुछ दिन निवास करो—इंग्लैंड से कुछ दिन व्यवहार करो, तुम सच्चे द्विज होकर लौटोगे । जिसके हृदय में सद्गुणों के बीज हो, वह पृथ्वी के चाहे जिस स्थान में पैदा हुआ हो, उससे मैं अनुरोध करता हूँ कि वह इंग्लैंड में अवश्य कुछ दिन रह आवे । वह वहाँ देखेगा कि जल-वायु के गुण से मिट्टी में दबे हुए बीज किस तरह फूलों और फलों से सुशोभित होकर, बड़े बड़े पेड़ बन कर, ससार-पथ के कितने ही थके हुए पथिकों की आँखों को और मन को तृप्त, आत्मा को प्रसन्न और पुष्ट करते हैं । देश के बहुत

से आदमियों के मन में, मेरी ये बातें सुन कर, अवश्य इस प्रकार का प्रश्न उठ सकता है कि “इंग्लैंड अगर ऐसा उदार और महान् है तो फिर वह हमारे दुःखों की सुनाई क्यों नहीं करता—उन्हें दूर क्यों नहीं करता ?” मगर मेरा कहना यह है कि ऐसा प्रश्न जिनके मन में उठे वे लोग जरा अपने पक्षपात को छोड़ कर सोचे-विचारे तो आप सब समझ में आजायगा । सच बात तो यह है कि आत्म-मर्यादा की रक्षा करके चलना न जानने से जो दुःख उपस्थित होते हैं वे अनिवार्य हैं, स्वयं ब्रह्मा भी उनको दूर नहीं कर सकते । अपने ही बीच भयानक भेदभाव (उच्च-नीच भाव) बनाये रखने का सर्वदा यत्न करते रह कर विजातीय शासक के निकट बराबरी के व्यवहार की आशा करना अत्यन्त हीन स्वार्थपर जीव के पागलपन के सिवा और कुछ नहीं है । जहाँ के प्रबल नियम के अनुसार मनुष्य यहाँ तक घृणित हो सकता है कि उसकी छाया तक छूने में परहेज किया जाता हो, जहाँ दुर्बल के ऊपर सबल का अत्याचार, नीच जाति के ऊपर उच्च-जाति का अनादर, गरीब के ऊपर अमीर का विजातीय का ऐसा घृणित और बुरा वर्तव्य धर्म समझा जाता हो, वहाँ, प्रबल प्रताप-शाली राजा की जाति के विरुद्ध कोई नालिश नहीं चल सकती । आज अगर हम लोग कुछ एक कुसस्कारों और कुरीतियों की गुलामी से छूट कर स्वदेशी भाइयों को समान-दृष्टि और सरल भाव से प्यार करना सीखें, मनुष्यमात्र को भाई कह कर पुकार सकें, और मनुष्य-जीवन का कर्तव्य पालने के लिए मन-वाणी-काया से यत्न करते हुए मनुष्यत्व के परम श्रेष्ठ गौरव की रक्षा करना ही जीव का यथार्थ धर्म है—ऐसा विश्वास कर सकें, तो देखें कौन हमको दुःख दे सकता है ! उस समय उन्नत चरित्र के रूप से स्वयं ईश्वर हम में विद्यमान रह कर जीवन में ऐसा बल ला देंगे कि उस अप्रतिहत शक्ति के आगे, इंग्लैंड

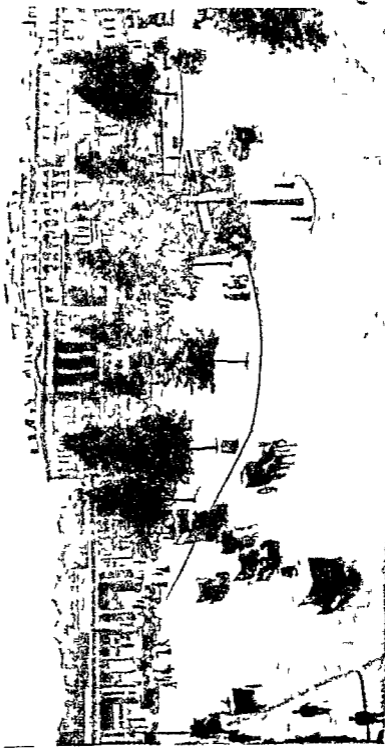
“शरणागत-रक्षा” की घोषणा करके इंग्लेड कह रहा है कि “आओ भाई आओ ! स्वच्छाचारी के अन्याय-अत्याचार से कहां कौन सताया जा रहा है ? आओ ! मैं उम्मे अपने हृदय में जगह दूँगा । किसी तरह समुद्र पार हो कर मेरी मिट्टी पर पैर रख दो, फिर तुमको कोई खटका नहीं है । मैं हर तरह तुम्हारी रक्षा करूँगा । किसकी मजाल है जो तुम्हारा बाल बाँका कर सके !” ऐसा उदार धीरभाव, ऐसी गहरी सहानुभूति, ऐसा मनुष्यत्व का सम्मान, किमने कब कहाँ दिखलाया है ।।। “मनुष्य-जीवन उपेक्षा की चीज नहीं है, ज्वलन्त सत्य है” (Life is earnest, life is real)—यह पहले पुस्तकगत भाव मात्र था । इंग्लेड ने, अनेक तरह के उज्ज्वल रत्नों से अलंकृत कर, इसे अपने देश में प्रत्यक्ष स्थापित कर रक्खा है । इंग्लेड, तू धन्य है । और, तेरी महिमा धन्य है ।

इंग्लेड की ऐसी प्रशंसा सुन कर बहुतों के हृदय में ईर्ष्या की आग जल उठती है । जब मैं इंग्लेड में था तब इसी तरह की दो-एक चिट्ठियाँ भी मुझे मिली थीं । ऐसे आदमियों से मेरा केवल इतना ही अनुरोध है कि भाई, यदि मनुष्यत्व के ऊँचे, उदार, शान्त, गम्भीर और जीतेजागते भाव को देख कर कुछ सीखना चाहते हो तो समुद्र-पार होकर इंग्लेड में जाकर कुछ दिन निवास करो—इंग्लेड से कुछ दिन व्यवहार करो, तुम सच्चे द्विज होकर लौटोगे । जिसके हृदय में सद्गुणों के बीज हो, वह पृथ्वी के चाहे जिस स्थान में पैदा हुआ हो, उससे मैं अनुरोध करता हूँ कि वह इंग्लेड में अवश्य कुछ दिन रह आवे । वह वहाँ देखेगा कि जल-वायु के गुण से मिट्टी में दबे हुए बीज किम तरह फूलों और फलों से सुशोभित होकर, बड़े बड़े पेड़ बन कर, संसार-पथ के कितने ही थके हुए पथिकों की आँसों को और मन को वृत्त, आत्मा को प्रसन्न और पुष्ट करते हैं । देश के वृत्त

का फल यह हुआ है कि यहाँ के पहनावे आदि का कोई खास नियम नहीं है और यहाँ के लोगों में एटिकेट (कायदे) की प्रबलता नहीं देख पड़ती । बृहस्पति ने चार्वाक (नास्तिक) दर्शन की रचना की है, तथापि हम उन्हें देवगुरु मान कर उनका यथेष्ट आदर करते हैं । बुद्धदेव ने ईश्वर-विमुख होकर धर्म का प्रचार किया है, तथापि हम उन्हें विष्णु का अवतार मान कर उनकी पूजा करते हैं । किन्तु यूरोप में सर्वसाधारण के मत के विरुद्ध अपने विशेष विचार प्रकट करने के कारण कितने ही स्वाधीनचेता साधु-महात्मा मार डाले गये हैं । पहले जो हो गया उसे जाने दीजिए, वर्तमान समय में, जान ब्राइट क्वेकर (Quaker) थे इस कारण, हजार हजार चेष्टा होने पर भी उनकी लाश को वेस्टमिनिस्टर एबी (Westminster Abbey) में स्थान नहीं मिला । हमारे यहाँ कपड़े-लत्ते पहनने का, मिलने-जुलने का कोई बँधा हुआ नियम नहीं है । परन्तु यूरोप में ये सब नियम बँधे हुए हैं । खैर जो कुछ हो, देश की दशा और जलवायु के अनुसार पोशाक-पहनावे के, और सभ्यता की रक्षा के लिए मिलने-जुलने आदि के, विशेष नियमों का होना, हमें अस्विकार करने पर भी, अनुचित नहीं कहा जा सकता । किन्तु जान ब्राइट वाले उदाहरण का भाव वास्तव में औचित्य की सीमा से बाहर है । उसे अंगरेजों के चरित्र-चन्द्र में कलङ्क कहना ही पड़ेगा । किन्तु, वर्तमान समय में, यूरोप में—खास कर इंग्लैंड में—स्वाधीन विचारों का अप्रतिहत प्रवाह प्रबल वेग से बह रहा है । उससे पूर्ण आशा की जा सकती है कि शीघ्र ही इस सम्बन्ध में वहाँ युगान्तर उपस्थित हो जायगा । आज कल इंग्लैंड और यूरोप-अमेरिका के अनेक देशों के बहुत से शिक्षित लोग उदार धर्म-मत का पोषण करते हुए पृथिवी के सम्पूर्ण साधु-महात्मा लोगों का आदर करते हैं । और, वे उन सज्जनों

को तो कोई गिनती ही नहीं, सारे ससार के लोग सिर भुकावेंगे। हम लोग इस समय जैसे पद-दलित होकर दिन बिता रहे हैं सो सब हमारे ही कर्मों का फल है। विधाता सो नहीं रहे हैं, वह कभी अन्याय नहीं कर सकते। ढाल नहीं है, तरवार नहीं है, पर तीममारसां वनेगे, ऐसा कभी हो नहीं सकता। जिसमें चरित्र का बल नहीं है उसमें मनुष्यत्व नहीं है, और, जिसमें मनुष्यत्व नहीं है उसमें आत्ममर्यादा भी नहीं हो सकती। जिसमें आत्ममर्यादा नहीं है उसके कुछ भी नहीं है। वह अकिञ्चन है, मिट्टी के बराबर है। बिना माल-मसाले के, केवल गलेबाजी से ही, इमारत नहीं तैयार होती। पहले अपना घर सँभालो, पीछे सब ठीक हो जायगा। जब तक घर के आदमियों में ही विगाड है—प्रेम का व्यवहार नहीं है—तब तक बाहर के आदमियों से मोहञ्चत या मुरब्बत की आशा करना सरासर भूल है—अपने को हँमाना है। अस्तु।

लन्दन में, विलायती कायदा सीखने में—यूरोप के ढंग से समय की पाबन्दी करने में—मुझे कुछ भी देर नहीं लगी। किन्तु मन में एक प्रकार का कष्ट अवश्य जान पडा। इसका कारण यही था कि यूरोप-सरीखे सभ्य जगत् में जो अमल-दस्तूर—जरा जरा सी बात में कायदे की पाबन्दी—है उसका मुझे बिलकुल ही अभ्यास न था। यही नियम-सम्बन्धी पराधीनता मुझको अरुचरती थी। हमारा भारत बहुत सी बातों में पराधीन है। परन्तु चिरकाल से एक प्रकार की व्यक्तिगत स्वाधीनता उसकी वैसे ही बनी हुई है। भारत विचार और व्यवहार में सदा स्वतन्त्र रहा है और अब भी है। विचार की स्वतन्त्रता के फल से भारत में कल्पना की लम्बी दौड और परस्पर-विरोधी भावों से भरे तरह तरह के धर्ममते और दर्शन-शास्त्रों की उत्पत्ति हुई है। ऐसे ही समाज के सब लोगों को व्यवहार में स्वतन्त्रता होने



हाइड पार्क का एक छोर—२०२६

के प्रचारित मत विश्वासो पर विचार करते हुए उन्हें ग्रहण भी करने लगे हैं ।

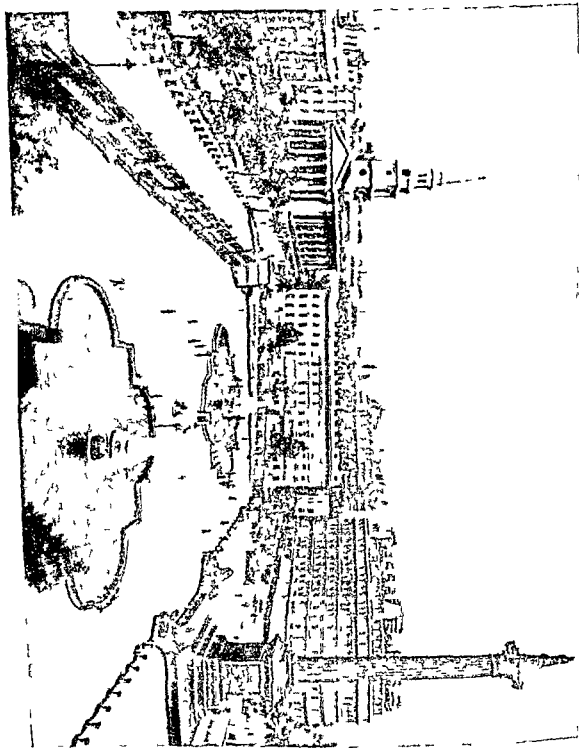
खास लन्दन ।

अलबर्ट मेमोरियल (Albert Memorial) । यह स्वर्गीया महारानी विक्रोरिया के स्वामी अलबर्ट महाशय का स्मारक चिह्न है । उक्त महोदय ने इंग्लेड की प्रजा का हित करने की चेष्टा में ही अपना जीवन बिताया । इसी से महारानी विक्रोरिया और इंग्लेड की प्रजा ने श्रद्धा के साथ उनके नाम पर यह भारी मकान बनवाया है । मकान के ऊपर लिखा है कि “महारानी विक्रोरिया और उनकी प्रजा के द्वारा महात्मा प्रिन्स कन्सर्ट अलबर्ट के स्मरणार्थ बनवाया गया ।” यह मकान बीस बरस में बना है और इसके बनने में डेढ़ लाख पाँड (१ पाँड १५) ६० का होता है) के लग भग खर्च पडा है । चारों ओर के चारो कोनो के चवूतरो पर चार भारी भारी, एशिया यूरोप-अफ्रिका-अमरीका की, मूर्तियाँ हैं । एशिया की मूर्ति—पूर्वी स्त्री, हाथी की पीठ पर बैठी हुई, पूर्वदेशीय सहचर और साज-सरजाम से सयुक्त है । यूरोप की मूर्ति—विलायती साज और साधियों से संपन्न, बैल पर सवार है । अफ्रिका की मूर्ति—‘मिसर’ के साज और मिसरी अनुचरो के साथ ऊँट पर सवार है । अमरीका की मूर्ति—अमरीकन जगली भैंसे (Bison) पर सवार है, असभ्य लोग उसके सहचर हैं । बीच में एक संगमरमर की वेदी है । उसके चारो ओर, पृथ्वी भर के साहित्य और विज्ञान के ज्ञानी पण्डित और शिल्पियों की, दो सौ के लगभग, मूर्तियाँ हैं । वेदी के ऊपर चारों कोनो में वाणिज्य, शिल्प, खेती और इन्जिनियरी की साङ्गोपाङ्ग मूर्तियाँ हैं । बीचोबीच में एक राजासन (State chair) पर, गार्टर श्रेणी के

नाइट को पहनावे से वैठी हुई, अलवर्ट की बड़ी भारी धातुमयी मूर्ति है। उस पर मुलम्मा किया हुआ है। चोटी-समेत उस मकान की उँचाई १७५ फुट है। यह स्मारक-भवन केन्सिंगटन-नामक बाग (Kensington Gardens) में बना हुआ है।

इस भवन के सामने ही, सडक के उस पार, अलवर्ट-हाल है। यह बड़ा भारी गोल आकार का एक भवन है। यह काच के गुम्बज से छाया हुआ है। इस में १०००० आदमियों के बैठने की जगह है। दो लाख पौड खर्च कर के यह बनवाया गया है और तीन साल में बना है। यहाँ पर प्रदर्शिनी, नाच, गाना, बजाना आदि हुआ करता है।

हाइड पार्क (Hyde Park) । लन्दन में ऐसे २१ पार्क या रमणीय बागोचे हैं। उन सब में यद्यपि इस पार्क का, घेरे में, दूसरा नम्बर है तथापि बहुत सी और बातों में यही प्रधान है। यह बाग १२०० बीघे में है। इसकी स्थापना राजा अष्टम हेनरी ने की थी। किन्तु इसकी वर्तमान उन्नति का आरम्भ सन् १८३० ईसवी से हुआ है। इसमें ८ फाटक हैं। उत्तर-पूर्व कोने का फाटक सब की अपेक्षा सुन्दर है। उसका नाम है Marble Arch । राजा चौथे जार्ज ने एक लाख पौड के लगभग खर्च करके उसे बनवाया था। इस पार्क में अनेक विस्तृत भूमिखण्ड हैं, जिन पर हरी घास लगी हुई है। इस पार्क के भीतर एक सर्पाकार टेढ़ो-मेढ़ी कृत्रिम नदी (The Serpentine) बहती है। जगह जगह पर दो तीन सौ बरस के पुराने जीर्ण वृक्ष खड़े हुए हैं। इन पार्कों में दिन भर के परिश्रम से थके हुए बहुत से लोग आकर आराम करते हैं। हाइड-पार्क के एक कोने में कवि वायरन और आकिलेस (Achilles) की मूर्तियाँ हैं। स्नान करके जीती हुई तोपे गला कर आकिलेस की मूर्ति



नाइट को पदनावे से बैठी हुई, अलवर्ट की बड़ी भारी धातुमयी मूर्ति है। उस पर मुलम्मा किया हुआ है। चौड़ी-समेत उस मकान का ऊँचाई १७५ फुट है। यह स्मारक-भवन केन्सिंगटन-नामक बाग (Kensington Gardens) में बना हुआ है।

इस भवन को सामने ही, सडक के उस पार, अलवर्ट-हाल है। यह बड़ा भारी गोल आकार का एक भवन है। यह काच के गुम्बज से छाया हुआ है। इस में १०००० आदमियों को बैठने की जगह है। दो लाख पौंड खर्च कर के यह बनवाया गया है और तीन साल में बना है। यहाँ पर प्रदर्शनी, नाच, गाना, बजाना आदि हुआ करता है।

हाइड पार्क (Hyde Park) । लन्दन में ऐसे २१ पार्क या रमणीय जागोचे हैं। उन सब में यद्यपि इस पार्क का, घेरे में, दूसरा नम्बर है तथापि बहुत सी और बातों में यही प्रधान है। यह बाग १२०० बाँधों में है। इसकी स्थापना राजा अष्टम हेनरी ने की थी। किन्तु इसकी वर्तमान उन्नति का आरम्भ सन् १८३० ईसवी से हुआ है। इसमें ६ फाटक हैं। उत्तर-पूर्व कोने का फाटक सब की अपेक्षा सुन्दर है। उसका नाम है Marble Arch । राजा चौथे जार्ज ने एक लाख पौंड के लगभग खर्च करके उसे बनवाया था। इस पार्क में अनेक विस्तृत भूमिरण्ड हैं, जिन पर हरी घास लगी हुई है। इस पार्क के भीतर एक सर्पाकार टेढ़ी-मेढ़ी कृत्रिम नदी (The Serpentine) बहती है। जगह जगह पर दो तीन सौ बरस के पुराने जीर्ण वृक्ष खड़े हुए हैं। इन पार्कों में दिन भर के परिश्रम से थके हुए बहुत से लोग आकर आराम करते हैं। हाइड-पार्क के एक कोने में कवि वायरन (Lord Byron) और आकिलेस (Achilles) की मूर्तियाँ हैं। स्पेन और वाटर्लू के युद्ध में जीती हुई तोपे गला कर आकिलेस की मूर्ति

ढाली गई है । महावीर वेलिंगटन और उनके सहचरों के स्मरणार्थ स्त्रियों ने इस मूर्ति की स्थापना की है ।

1. ब्रिटिश म्यूजियम (British Museum) । यह लन्दन का पुराना म्यूजियम या अजायब घर है । सन् १७५३ ईसवी में यह स्थापित हुआ था । लन्दन में सब मिला कर ६ म्यूजियम हैं, उनमें अनेक बातों में, यही प्रधान है । इसके सम्बन्ध में यात्रियों का मत है कि पृथ्वी में यह अतुलनीय (unequaled in the world) है । वास्तव में यहाँ कैसा भारी सग्रह है । देखने से होश उड़ जाते हैं । भिन्न भिन्न विभागों में छपी हुई पुस्तकें, यूरोप की हस्तलिपियाँ, एशिया की हस्तलिपियाँ, जीव-जन्तु (स्थानाभाव के कारण यह विभाग अलग एक स्थान में है), एशिया की प्राचीन कीर्तियों के चिह्न, ग्रीस और रोम की प्राचीन कीर्तियों के चिह्न, सिके और तमगों, ब्रिटिश और यूरोप के मध्यकाल (Mediaeval) की कीर्तियों के चिह्न, पृथ्वी की मारी जातियों के व्यवहार में आनेवाली चीजे, चित्र और मुहरे रक्खी हुई हैं । इस म्यूजियम में प्रवेश करते ही दक्षिण ओर एक भारी पुस्तकालय देख पड़ता है । अलमारियों में ठसाठस भरे हुए ग्रन्थ रक्खे हैं । यहाँ पुस्तकों का बड़ा भारी सग्रह है । इस घर के भीतर होकर दूसरे 'हाल' में जाने से काच से ढके हुए डेस्को में बहुत लोगों के हस्ताक्षर सजाये हुए रक्खे देख पड़ते हैं ।

१—इंग्लैंड और विदेशों के प्रसिद्ध लोगों के हस्ताक्षर (Autographs of English and Foreign eminent men) । मार्टिन लूथर (Martin Luther), जान कालविन (John Calvin), सर वाल्टर रैले (Sir Walter Raleigh), सर फिलिप सिडनी (Sir Philip Sidney), गैलीलियो (Galileo), सर आइजक न्यूटन (Sir Isaac Newton), कवि पोप (Alexander Pope), एडीसन (Joseph

Addison), कवि ड्राइडन (John Dryden), स्विफ्ट (Swift), अमेरिका का उद्धार करने वाले वाशिंगटन (George Washington), फ्रान्स के दार्शनिक वाल्टेयर (François Marie Aironet de Voltaire), महावीर नेपोलियन (Napoleon I), आदि २८ प्रसिद्ध पुरुषों के हाथ के लिखे कागज-पत्र यहाँ बड़े यत्न से सुरक्षित हैं ।

यहाँ पर महामति वाल्टेयर के पत्र की नकल देना उचित समझ कर उसकी नकल नीचे दी जाती है । इसके द्वारा अँगरेज जाति के सन्वन्ध में एक दार्शनिक पण्डित का मत हमारे पाठकों को मालूम हो जायगा । उक्त विद्वान् को इंग्लैंड के स्वाधीन भाव और युद्ध-वीर तथा पण्डित मनुष्यों पर आन्तरिक श्रद्धा थी । उसने इस पत्र में मुक्त-रूप से इस बात को स्वीकार किया है ।

AUX DELICES,

18th January 1760

* * * * *

Had I not fix'd the seat of my retreat in the free corner of Geneva, I would certainly live in the free kingdom of England, for tho' I do not like the monstrous irregularities of Shakespear, tho' I admire but some lively and masterly strol'es in his performances, yet I am confident nobody in the world looks with a greater veneration on your good philosophers, on the crowd of yr good authors, and I am these thirty years the disciple of yr way of thinking Yr nation is at once a people of warriors and of philosophers You are now at the pitch of glory in regard to publick affairs But I know not whether you have preserv'd the reputation yr island enjoy'd in point of literature when Addison, Congreve, Pope, Swift, were alive

François Marie Aironet de Voltaire

George Keete, Esq, F R S"

(पाठकगण, इस पत्र मे जो स्पेलिङ्ग की भूलें हैं वे, खुद वाल्टेय की हैं । मेरी नहीं हैं ।)

२—इंग्लैंड के राजों और रानियों के हस्ताक्षर (Autograph of English Sovereigns) । इस डेस्क मे इंग्लैंड के २६ राजा रानियों के हस्ताक्षर हैं । महारानी विक्टोरिया के, चार वर्ष की अवस्था के, पेन्सिल के, हस्ताक्षर देखने लायक चीज हैं । राज्याभिषेक करने को उपस्थित होने के लिए पुगेहित को जो महारानी विक्टोरिया ने पत्र लिखा था वह भी यहाँ सुरक्षित हैं । उसमे महारानी की लिखावट पक्की है । उस पत्र की नक़ल नीचे दी जाती है ।

VICTORIA RG

Right Reverend Father in God, we greet you well

Whereas the Twenty-Eighth day of June next is appointed for the Solemnity of Our Royal Coronation, These are to Will and Command you (all excuse set apart) to make your personal attendance on us at the time above mentioned, furnished and appointed as to your Rank and Quality appertaineth, there to do and perform all such services as shall be required and belong unto you

Whereof you are not to fail,

And so

We bid you most hearty farewell given at our Court at St James's, the ninth day of May 1838, in the first year of Our Reign

TO SAMUEL,

LORD BISHOP OF LIGHTFELD,

By Her Majesty's Command,

Norfolk, E M

३—ब्रिटिश राजमन्त्री और सेनापतियों के हस्ताक्षर (Autographs of British Statesmen and Commanders) । हैम-डेन (John Hampden), मार्लबरो (D. Marlborough)

वालपोल (Sir Robert Walpole), लार्ड चाथम (Earl of Chatham), क्लाइव (Robert Clive), हेस्टिंग्स (Warren Hastings), वेलिंगटन (Duke of Wellington), खार्तूम के प्रसिद्ध गार्डन (General C George Gordon) इत्यादि बीस आदमियों के पत्र आदि यहाँ सुरक्षित हैं । उनमें से कासिम बाजार की कोठी के वारेन हेस्टिंग्स के नाम लार्ड क्लाइव के हाथ के लिखे पत्र की नकल नीचे दी जाती है ।

Sir,

I have wrote to the Nabab desiring he would advance a lack of Rupees for the payment of the Troops, you will therefore wait on him in order to receive it' and you must insist upon the demand being complied with whatever objections he may chance to make

The Forces began their march yesterday morning, and I shall set out from hence myself on Thursday at furthest

I am

SIR,

CALCUTTA, }
27th February, 1759 } Your most obed and humble servant,
ROBERT OLIVE

लार्ड क्लाइव हेस्टिंग्स को लिखते हैं कि उन्होंने मुर्शिदाबाद के नवाब, अर्थात् भीरजाफर, को फौज की तनख्वाह के लिए एक लाख रुपया पेशगी देने के वास्ते पत्र लिखा है । हेस्टिंग्स साहब इस रुपये के लिए नवाब से मुलाकात करे और नवाब अगर कुछ उन्न या हीला-हवाला भी करें तो उसे न सुन कर रुपये के लिए विशेष रूप से तकाजा करे ।

इस पत्र को पढ़ कर मेरे मन में जैसे जैसे भाव उठे उनका वर्णन करना सहज नहीं है । यह सन् १७५६ ईसवी की २७ वीं मई का पत्र, पलासी-युद्ध के एक बरस आठ महीने के उपरान्त की बात, है । एक दिन वह घा और एक दिन यह है । इन एक सौ बीस

वरसों मे, भारत मे, सब प्रकार से दूसरा ही युग उपस्थित हो गया है। वगाल के नवाब के खजाने से एक लाख रुपये अगौड़ी पाने के लिए छाइव की कैसी व्यग्रता, उतावली और चेष्टा इस पत्र से झलकती है। उस समय ऐसी ही अवस्था थी। और आज जो छाइव के स्थानापन्न हैं वह सागर और द्वीप सहित भारत-भूमि भर के हर्ता-कर्ता-विधाता हैं। इस समय ऐसी ही अवस्था है। काल। तुम सब कर सकते हो। तुमको विधाता ने अपने श्रेष्ठ कर्मचारी, अर्थात् प्रतिनिधि, के रूप से इस ससार में स्थापित किया है। अंगरेजों ने एक ही शताब्दी मे जैसी भारत की हालत बदल दी है वैसा परिवर्तन हजारों वर्षों में भी दूसरी जाति के किये नहीं हो सका। पलासी का युद्ध जब से हुआ तब से भारतवर्ष में नवीन युग का आरम्भ हो गया। यह कहना अनुचित न होगा। अस्तु।

इस स्थान में सर्वसाधारण की शिक्षा और आगे होने वाले वशधरो की जानकारी के लिए जिस तरह यत्नपूर्वक ये पत्र सुरक्षित हैं उसकी एक मुख से बढ़ाई नहीं हो सकती। केवल इसी घर मे शिक्षा प्राप्त करते करते जिन्दगी गुजर जा सकती है।

४—ऐतिहासिक हस्तलिपि (Historical Autographs), इसमें लेडी जेन ग्रे (Lady Jane Grey), रानी मेरी (Queen Mary), रानी एलिजाबेथ (Queen Elizabeth), राजा प्रथम चार्ल्स (बन्दी की अवस्था में) (Charles I [when prisoner]), और क्राम्वेल (Oliver Cromwell) आदि ३३ लोगों के पत्र आदि रक्खे हैं।

५—६—साहित्य ससार के सुप्रसिद्ध ८० पण्डितों के हाथ की लिखावट और उनके ग्रन्थ आदि की उन्हीं की लिखी कापियाँ इन डेस्कों में सुरक्षित हैं। उनमें हैं—गोल्डस्मिथ (Oliver Goldsmith), जानसन (Dr Samuel Johnston), बासवेल (James Boswell),

गैरिक (David Garrick), ग्रे (उनकी एलिजी) (Thomas Gray [a fair copy of the 'Elegy written in a country church-yard']), बर्न्स (Robert Burns), कीट्स (John Keats), शेली (Percy Bysshe Shelley), सदी (Robert Southey), वर्ड्सवर्थ (William Wordsworth), कार्लाइल (Thomas Carlyle), स्मिथ (Sydney Smith), डिकेन्स (Charles Dickens), बीथोवन (Ludwig Van Beethoven), गोथे (Johann Wolfgang Von Goethe), शीलर (Johann Christoph Friedrich Von Schiller), बेन जानसन (Ben Johnston), मिल्टन (John Milton), रूसो (Jean Jacques Rousseau), हार्वी (William Harvey) लक (John Locke), पोप (Alexander Pope), डिफो (Daniel Defoe), स्काट (Sir Walter Scott), बायरन (Lord Byron) मैकाले (Lord Macaulay) आदि हैं । किन्तु दु स और आश्चर्य की बात है कि इस सग्रह में 'एडोसन' का कुछ भी देखने को नहीं मिला ।

हाथ के लिखे प्राचीन ग्रन्थ आदि (Manuscripts) । A डेस्क में ग्रीक भाषा की २२ पुस्तकें हैं । उनमें एक कविवर होमर (Homer) का इलियड (Iliad) काव्य है । उसकी यह प्रति मिसर के एक 'पिरामिड' में मिली थी । यह भोजपत्र (Papyrus) पर एक प्रकार के गोल आकार के अक्षरों (Uncial characters) में लिखी हुई है । B और C डेस्क में लैटिन और अन्यान्य यूरोपियन भाषाओं की ७४ पुस्तकें रक्खी हुई हैं ।

D डेस्क में केवल अँगरेजी की हस्तलिपियाँ हैं ।

E डेस्क में पूर्वी १३ पुस्तकें हैं । इनमें सिरीय भाषा में लिखी

हुई दसवीं शताब्दी की एक वाइविल, मगरवी अरबी में लिखा हुआ चारहवीं शताब्दी का एक कुरान, आठवीं और नवीं शताब्दी के लिखे हुए दो कुरान के अश-विशेष, दसवीं शताब्दी के किसी प्रसिद्ध अरब चिकित्सक का बनाया हुआ एक शरीर-तत्त्व का ग्रन्थ और फारसी भाषा में लिखा हुआ सुलतान महम्मद गजनी का एक जीवन-चरित रक्खा हुआ है ।

I' डेस्क में ३३ पुस्तकों का संग्रह है । उसमें अनेक मूल्यवान् चीजें हैं । उनमें से कुछ ये हैं—अभिधम्मपिट्ठकम्—नामक बौद्ध शास्त्र के पठनप्पकरणम्—नामक सातवें अध्याय का बुद्धघोस कृत भाष्य, जो पाली भाषा में काम्बोज देशीय अक्षरों में लिखा हुआ है, यव-द्वीप के अक्षरों में तालपत्र पर लिखा हुआ एक ग्रन्थ, पाली भाषा में सिंहली अक्षरों में लिखा हुआ वम्मशकप्पट्टन सूत्त—अर्थात् बुद्धदेव का काशी-धाम (सारनाथ) में प्रचारित प्रथम उपदेश, पाली भाषा में लिखे हुए अनेक बौद्धग्रन्थ, बहुत छोटे छोटे अरबी अक्षरों में बहुत पतले कागज पर लिखा हुआ एक कुरान, फिरदौसी की फारसी कविता 'यूसुफ-जुलेखा' और दिल्ली के प्रसिद्ध कवि मीर खुसरो की फारसी कविता 'खिजर खाँ', फारसी के कवि हाफिज का दीवान (ये दोनो पुस्तकें सुनहले काम के कागज पर लिखी हुई हैं), अवध के अन्तिम नवाब वाजिदअली शाह की एक उर्दू कविता, पतले सोने के पत्र पर खुदा हुआ यवद्वीप के किसी राजा का एक पत्र, एक पतले कागज पर लिखी हुई संस्कृत सचित्र भगवद्गीता, इसी तरह के ६५ फुट से भी कुछ अधिक चौड़े सुनहले काम के कागज पर सुन्दर अक्षरों में लिखी हुई एक संस्कृत श्रीमद्भागवत की पुस्तक, बहुत छोटे अक्षरों में पतले कागज पर लिखी हुई एक संस्कृत दुर्गा की पुस्तक, तीन, एक में सटे हुए, भोजपत्रों पर लिखी हुई और एक गीता की पुस्तक, सुवर्णाक्षरों में लिखी हुई और

एक दुर्गा की पुस्तक और एक काले रंग के कागज पर रुपहले अक्षरों में लिखा हुआ एक शिवकवच ।

सनदों (Charters) वाले डेस्क में राजा अल्फ्रेड (Alfred the Great) की ८५७ ई० सन् की पुरानी एक सनद है । उसमें सन् १२१५ ई० की, राजा जान (King John) की, जगत्प्रसिद्ध मैग्नाचार्टा (Magna Charta) और रोम के पोप (Pope Eugene IV) का, सन् १४४५ ई० का एक अनुज्ञापत्र (Bull) भी अन्यान्य बहुत से कागज-पत्रों के साथ यत्र से सुरक्षित है ।

एक डेस्क में ब्रिटिश राजगण की सील-मोहरे और अन्यान्य डेस्कों में और और बड़े आदमियों के नाम की मोहरे भी इस कमरे में रक्खी हुई हैं ।

दूसरे एक हाल में सुनहली स्याही से लिखी हुई (Illuminated) हस्त-लिपियाँ और तरह तरह के पुराने ग्रन्थ आदि डेस्को और अलमारियों में अच्छी तरह सजाये हुए रक्खे हैं ।

यह राज-पुस्तक-समूह (King's Library) राजा तीसरे जार्ज की सम्पत्ति था । उनके कुलपावन वंशधर चौथे जार्ज अपनी घोर फिजूलखर्ची के कारण जब बहुत अधिक ऋणी हो गये तब उन्होंने इस अमूल्य ज्ञान-भाण्डार को बहुत छोड़े दामों में न्यूजियम के वर्तमान सञ्चालकों के हाथ बेच डाला । हमारे देश में शायद 'एक राजा का ऋण चुकाने के लिए पुस्तकें बेच डालने का व्यापार बहुत लोगों की समझ में ही न आवेगा ।'

असीरिया-समूह (Assyrian Gallery) । यहाँ प्राचीन असीरिया राज्य की जितनी चीजें हैं उनका वर्णन कैसा, उनकी गिनती करना भी कठिन है । असुर बेष्ठीपाल, नेबुकादनेजर, सेनेकारिव आदि राजों की अनेकानेक कीर्तियाँ यहाँ सुरक्षित हैं । सब से बड़ कर अद्भुत

चीज एक टूटा हुआ पत्थर का टुकड़ा (Tablet) है। यह टुकड़ा सृष्टि के बाद जो भारी बहिया, सारे ससार में, आई थी उस समय का कहा जाता है। पत्थर के टुकड़े कई हैं और वे, बहुत दिन हुए, असीरिया-प्रदेश के खँडहरो से उठा कर लाये गये हैं। किन्तु उन सब का ठीक और पूरे विवरण का पता कोई नहीं लगा सका। इस म्यूजियम के एक कर्मचारी स्मिथ साहब (George Smith) पुरातत्व के अच्छे जानकार थे। उन्होने एक दिन पुराने पत्थरो की जाँच करते करते एक टुकड़े पर कुछ लिखा हुआ देखा। उसमें लिखा था—“जहाज निजी पर्वत पर टकराया था” “नूह ने कबूतर भेजा था” इस जानकारी से उत्साहित हो कर उक्त साहब ने और टुकड़ों की भी जाँच की। और तीन टुकड़ों में भी ऐसी ही लिपियाँ मिलीं। सब को इकट्ठा कर, यथाशक्ति उनका अनुवाद करके, उक्त साहब ने वाइविल-पुरातत्व सम्बन्धिनी सभा (Biblical Archaeological Society) में महात्मा ग्लाइडम्टन आदि श्रोतागण के सामने एक वक्तृता दी। उसमें उन्होने अपनी जाँच का सब वृत्तान्त वर्णन किया। दूसरे दिन एक दैनिक समाचारपत्र (Daily Telegraph) में पत्थरो की लिपि का सारा अनुवाद प्रकाशित हुआ, और, उस पत्र के सञ्चालको ने पण्डित-प्रवर स्मिथ साहब को असीरिया-प्रदेश में जाकर जाँच करने के लिए १००० गिनी देने का वादा किया। म्यूजियम से पूरी तनग्याह पर छुट्टी पाकर स्मिथ साहब एशियाई टर्की में जाकर कुछ दिन रहे। वह बहुत कुछ जाँच करके वाविलन, निनेवा आदि नगरों के खँडहरों से स्थानीय पुरातत्व के सम्बन्ध में विशेष प्रमाणों के साथ बहुत सी जानकारी हासिल कर आये हैं। उन पत्थरो की कई लिपियाँ और वाइविल के कुछ अश विलकुल मिलते हैं। ऐसी लिपियों का अनुवाद और उससे मिलते हुए वाइविल के अश आगे उद्धृत किये जाते हैं। * प्राच्य-पुरातत्व

के पण्डित आक्सफोर्ड के प्रोफेसर सेईस (Professor Sayce) ब्रिटिश म्यूजियम के प्राच्य-पुरातत्त्व की खोज करने वाले मिस्टर स्मिथ और पिन्चेस (Mr Pinches), इन तीन पण्डितों ने पत्थर के टुकड़ों की लिपियों का अनुवाद किया है । लन्दन के अन्तर्गत हाईवरी न्यूपार्क कॉलेज के प्रिन्सिपल प्रवीण भूतत्त्ववेत्ता बन्धुवर डाक्टर किन्स महोदय (Revd Dr Samuel Kinus, Ph D, F R S, &c, Principal, Highbury Newpark College) ने नीचे के नमूने को तैयार किया और मुझे अनुग्रह-पूर्वक अपनी पुस्तक में प्रकाशित करने को दिया है । पत्थर के टुकड़ों में जो वृत्तान्त है वह नूह का निज का वर्णन है ।

पत्थर की लिपि का अनुवाद	वाइविल की बात ।
* (क) “घरों को तोड़ डालो, जहाज बनाओ” ।	(क) “तुम गोफर-काठ का एक जहाज तैयार करो” । (जेनिसिस ६—१४)
* (ख) “रात को मैं आकाश से भयानक वृष्टि भेजूंगा” ।	(ख) “देखो, मैं पृथ्वी के ऊपर बहिया लाऊँगा, सब जीवों का नाश करने के लिए” । (जेनिसिस ६—१७)
(ग) पृथ्वी डूब गई ।	(ग) पृथ्वी जलमय हो गई, जल क्रमशः बढ़ने लगा । (जेनिसिस ७—१८)
(घ) समुद्र सूखने लगा । तूफान और बहिया मिट गई ।	(घ) समुद्र का फुहारा और आकाश का झरोखा बंद हुआ, वर्षा बंद गई । (जेनिसिस ८—२)

* ये नूह के प्रति भगवान् की आज्ञाएँ हैं ।

पत्थर की लिपि का अनुवाद	वाइविल की बात
* (ड) खिड़की खोली, मुग़ में प्रकाश लगा ।	(ड) चालीस दिन बाद नूह ने जहाज की खिड़की खोली । (जेनिसिस ८—१)
* (च) कबूतर भेजा, कबूतर गया, मगर लौट आया । उसे आश्रय नहीं मिला, इस लिए लौट आया ।	(च) नूह ने कबूतर भेजा, यह देखने के लिए कि कहीं जगह के सूखने से मिट्टी बाहर निकली है कि नहीं । कबूतर ने पैर रखने की जगह नहीं पाई, इसीसे जहाज में लौट आया । (जेनिसिस ८—६)
* (छ) पहाड़ की चोटी पर मैंने एक वेदी बनाई ।	(छ) नूह ने प्रभु के लिए वेदी बनाई और वहाँ दूध का नैवेद्य लगाया । (जेनिसिस ८—२०)

देखो अँगरेजों की मुस्तैदी । ज्ञान की बढ़ती के लिए, रुपया तो कोई चीज ही नहीं, वे अपना खून और जान तक देने को तैयार हैं । हमारे देश के महापुरुष लोग रुपये की धाती को छाती से लगाये अथाह निद्रा में डूबे पड़े हैं, और, अँगरेजों लोंग वैपार के लिए, ज्ञान के लिए, अपनी जाति के लिए, लोक-हित के लिए दोनों हाथों से चारों ओर रुपये लुटा रहे हैं । इस तरह जी रोल कर अच्छे कामों में—लाभ के कामों में—रुपये लुटाने से उन की सम्पत्ति बढ़ने के सिवा घटती नहीं है । वे जितना रच करते हैं उस का दस गुना धन अनेक उपायों

से उनके घर में आता है । विधाता का नियम ही यह है कि “जो एक देता है वह हजार पाता है” । दुःख की बात है कि हमारी सहानुभूति, उद्यम, उत्साह, सद्ब्यय आदि सब कुछ अपने घर की दीवार के घेरे में ही टुट्टा करता है । हाय ! अब हम लोग सङ्कोच, सङ्कीर्णता, भयानक प्रबल कुसस्कार आदि के अत्याचारों से छुटकारा पाकर पृथ्वी भर को अपना घर और मनुष्यमात्र को अपना भाई समझ सकेंगे— शुद्ध सरल हृदय से उन्हें गले लगा सकेंगे ।

इस म्यूजियम के एक हिस्से में मिसर देश की बहुत सी ममी (Mummy)—रोगन की हुई लाशें—रक्खी हैं । उन में कोई कोई तीन हजार बरस की पुरानी है ।

एशिया-भवन (Asiatic Saloon) में कुछ हिन्दुओं के देव-देवियों की मूर्तियाँ रक्खी हैं । वे वातुओं की और पत्थर की बनी हैं । प्रयाग के निरुट, यमुना के किनारे, मिली हुई एक भारी कछुए की मूर्ति इस घर में रक्खी हुई है । यह एक मूल्यवान् पत्थर की बनी है ।

अनेक देशों की तरह तरह की चीजों का घर (Ethnological Gallery) । इस गैलरी के उस अंश में, जो भारत-सम्बन्धी है, बहुत सी भारत की चीजें हैं । उनमें पाँच तरह तरह की मुँहनाले, दो जोड़ा बड़ाऊँ, चमरौधा जूता, एक भारी नारियल का हुक्का और तबला एक है ।

मिसर, ग्रीस, रोम आदि बहुत स्थानों के खुदाई, नकाशों और पर्वतगिरी की कारीगरी के अनेको नमूने यहाँ रक्खे हुए हैं । वे इतने हैं कि उनकी गिनती करना ही कठिन है । इनके सिवा एक ‘हाल’ में पार्चीन बहुमूल्य रत्नों का इतना सग्रह है कि उस के दाम आंकना सर्वथा असम्भव है ।

ब्रिटिश म्यूजियम का पूरा वृत्तान्त बतला सकना तो मनुष्य की शक्ति से परे है । लन्दन में आकर यदि कोई केवल इस म्यूजियम की ही सैर करके अपने देश को लौट जाय तो भी उसके हृदय में सदा अँगरेज-जाति का अतुल गौरव अंकित रहेगा । एक पुस्तकालय (Library) ही उसे आश्चर्य से अभिभूत करदेगा । इस पुस्तकालय की सार्वभौमिकता—सर्वव्यापकता—अतुलनीय है । उसका पता इतने ही से लगजायगा कि जो जिस देश की भाषा है उस देश के सिवा, उस भाषा के, उतने ग्रन्थ और कहीं नहीं मिलेंगे जितने कि इस पुस्तकालय में हैं ।

ब्रिटिश-म्यूजियम का पुस्तकालय और पाठ-भवन (British Museum Library and Reading Room) । इस पवित्र ज्ञान-मन्दिर में प्रवेश करने के लिए मजूरी लेनी पड़ती है । टिकिट मिलने पर, दिखलाने के लिए नियुक्त एक कर्मचारी अपने साथ भीतर ले जाता है । इस पाठ-भवन में प्रवेश करते ही मैं तो एकदम भौचक सा रह गया । परिचालक पडे ने इस पुण्य-तीर्थ का कुछ माहात्म्य वर्णन किया । कई दिन बाद टिकिट पा लेने पर मैं भी इस लाइब्रेरी का पाठक होगया । कई वर्षों तक बराबर लन्दन में रह कर और नित्य इम लाइब्रेरी में आकर मैंने जो कुछ इस पुण्य-धाम के सम्बन्ध में अभिज्ञता प्राप्त की है उसे नीचे लिखता हूँ ।

इस गोल घर का घेरा ३०० हाथ है और इसका गुम्बद ७० हाथ के लगभग ऊँचा है । रोम के गोल-मन्दिर पन्थियन (Pantheon) को छोड़ कर पृथ्वी पर इतना ऊँचा गुम्बद दूसरा नहीं है । सन् १७५६ में यह पाठागार स्थापित हुआ था । किन्तु यह नवीन लम्बा चौड़ा मकान सन् १८५७ ई० में डेढ़ लाख पौण्ड रुपया खर्च करके बनवाया गया है । पहले (सन् १७५६ में) प्रसिद्ध कवि ग्रे (Poet

Gley) और अन्ध चार सज्जन केवल इसके नियमित पाठक थे । किन्तु वर्तमान समय में नित्य के नियमित पाठको की औसत संख्या ६०० से अधिक है । इन नियमित पाठको में बहुत से पंडित, ज्ञानी और ग्रन्थकार हैं । ग्लाडस्टन, डिजरेले आदि देश (इंग्लैंड) के सब बड़े आदमी इस लाइब्रेरी के नियमित पाठक थे । लिवरल वृद्ध राज-मन्त्री गण इस समय भी बीच बीच में आकर पुस्तकावलोकन करते हैं । ऐसा गभीर दृश्य पृथ्वी के और किसी स्थान में देख पड़ता है या नहीं—इसमें सन्देह है ।

२० लाख से भी अधिक पुस्तको की दीवार से घिरे हुए घर के भीतर न्यूनाधिक ५०० आदमी (पाठक और कर्मचारी) मन लगाये अपना अपना काम कर रहे हैं । जरा सा भी शब्द नहीं होता—मेजों पर खर की चादर बिछी हुई है । बिना मूल्य के ज्ञान वांटने के लिए ऐसा सुभीता और आराम की जगह पृथ्वी भर पर और नहीं है । इसमें विजली की रोशनी और गर्मी पहुँचाने का बहुत ही अच्छा बन्दोबस्त है । बहुत से कर्मचारी घर के नौकर की तरह पाठको के लिए पुस्तके निकाल निकाल कर, ला ला कर, दे रहे हैं । लिपने पढ़ने के लिए स्याही, क्लम, ब्लाटिंग—कागज, टेबिल, गद्दोदार कुर्सी, पढ़ने की पुस्तक सामने खोल कर—रखकर—आराम के साथ पढ़ने के लिए एक प्रकार का आधार (Lectern), अन्यान्य ग्रन्थ रखने के विशेष स्थान (Shelf) आदि का बहुत अच्छा प्रबन्ध है । यद्यपि पुस्तको की संख्या में, पृथ्वी भर में, इस पुस्तकालय का दूसरा नंबर है—पेरिस का प्रधान पुस्तकालय सर्वोत्तम है—तथापि प्रबन्ध के सम्बन्ध में यह उससे भी अच्छा है । प्राय ५००० छपी हुई पुस्तक-सूची (Catalogue) ढग से सजाई हुई रखी हैं । उनसे छांट कर, पुस्तक का नाम लिख कर टिकिट देते ही दस मिनट के बाद वह

पुस्तक पाठक के सामने आजाती है । पेरिस के पुस्तकालय में कोई कोई ग्रन्थ दिन भर खोजने से भी नहीं मिलता । इसका कारण यही है कि फ्रान्स और इटली आदि अन्यान्य देशों की यूरोपियन जातियों के लोग बहुत कुछ हमारे ही समान गप्पी और गोलमालानन्द होते हैं । और अँगरेज एक अद्भुत जीव हैं । ये एकता में सबसे बड़े हुए, धीरे, स्थिर, शान्त, एकान्त, कर्मनिष्ठ—‘कल’ की पुतली की तरह हमेशा हर घड़ी ठीक हिसाब से चलने और काम करने वाले हैं । ये लोग बाल भर भी नियम का उल्लङ्घन करना नहीं जानते । ये मनुष्य इस छोटे से टापू में ही देखने को मिलते हैं । पृथ्वी के अन्य स्थान में इनके दर्शन दुर्लभ हैं । मिट्टी के असर से, ये कलियुगी भू-देव, लन्दन की सीमा पार करके, जहाँ बाहर निकले वहाँ इनकी प्रकृति बदल गई । अस्तु ।

इस पुस्तकालय का प्रबन्ध सब तरह से ऐसा उत्तम है कि बहुत लोग कहते हैं—बड़े बड़े आदमियों की रास लाइब्रेरियो में भी ऐसा आराम और सर्वाङ्ग-सुन्दर व्यवस्था नहीं है । इस पुस्तकालय के संग्रह में १५००० हिन्दी भाषा की पुस्तकें, ७००० चीनी भाषा के ग्रन्थ, १५००० साधारणतः पूर्वी भाषाओं के ग्रन्थ, १२००० स्वर-सङ्गीत-विषयक पुस्तकें, ७००० वाजो के सुर से सम्बन्ध रखने वाली पुस्तकें, १२०००० मान-चित्र (नक्शे), ५०००० यूरोप की हस्तलिपियाँ, १०००० एशिया की हस्तलिपियाँ और ७५००० सनद आदि (Charters and Rolls) हैं । अँगरेजी ग्रन्थों के सम्बन्ध में तो केवल इतने ही से अनुमान कर लिया जा सकता है कि एक स्मिथ-नाम के २५०० ग्रन्थकारों की पुस्तकें यहाँ जमा की गई हैं । हर साल २५००० से ऊपर नई पुस्तकों का यहाँ संग्रह किया जाता है । केवल ब्रिटिश-द्वीप में ही साल में ६००० के लगभग नये ग्रन्थ प्रकाशित होते हैं

या पुराने ग्रन्थों के नवीन संस्करण निकलते हैं । दो हजार से ऊपर अक्षरों भी निकलते हैं । यहाँ के आईन के अनुसार सबकी एक एक कापी इस पुस्तकालय में अवश्य आती है । इसके सिवा दाम देकर देश-विदेश से नई और पुरानी किताबें भी खरीदी जाती हैं । कर्म-चारियों की तनखाह, घर की मरम्मत और सफाई आदि का खर्च और पाठकों के आराम के प्रबन्ध का खर्च है । इसके सिवा जिल्द बंधवाने का सालाना खर्च ६०००) से १००००) के भीतर है । हर-साल १००००) की नई पुस्तकें खरीदी जाती हैं । हस्त-लिपियों के संग्रह करने में हर साल १००००) ४० खर्च किया जाता है । हर साल टिकिट, सूचीपत्र आदि छपवाने में ३००० पाँउड की लागत आती है ।

जब तक २१ बरस की अवस्था नहीं होती तब तक इसका कोई नियमित पाठक नहीं हो सकता । लन्दन के किसी निज के घर वाले या जाने-पहचाने भले आदमी की सिफारिश का पत्र दिखाने से पाठक को प्रवेश-पत्र मिल जाता है । खोज के प्रेमी पंडित-गण अनेक देशों से इस पुस्तकालय में पढ़ने आते हैं । सच्चे विद्यार्थी के लिए यह स्थान स्वर्ग से भी बढ कर रमणीय है । बहुत से लोग यहाँ केवल गर्म होने, हवा खाने या दिल बहलाने के लिए ही आते हैं । यहाँ बहुत से स्त्री-पुरुषों की पहली भेंट से लेकर व्याह तक हो गये हैं । यह मेरी आँखों देखी बात है । कितने ही लोग यहाँ पुस्तक-प्रणयन करते हुए अपने अध्ययन का फल समाचार-पत्रों और मासिक पत्रों में लेखरूप से प्रकाशित कर भजे में अपनी जीविका चला लेते हैं । इसके सम्बन्ध में अब मैं केवल एक अंगरेज पंडित का मन्तव्य नीचे उद्धृत करके अपने वक्तव्य को समाप्त करता हूँ । उक्त विद्वान् पहले इसे "Central home of English culture," "a veritable

earthly paradise to the serious student" आदि नाम देकर अन्त में कहते हैं—

"There is no end to all that might be written of the strange people who congregate here, of the little stories enacted every day. Friendships are begun, and sometimes ripened into love, under this solemn room. Lives earnest as well as frivolous are spent here, and the conclusion of the whole matter is that the great outside world is not of such infinite variety as we had supposed. All its greatnesses, its weaknesses, its affections, its insincerities, and its pathos—all may be seen and studied in the persons of those who read books or make them, at the British Museum."

जो कुछ हो, इस ज्ञान-मन्दिर का पाठक होना—इस महातीर्थ का यात्री होना—सौभाग्य की बात है, इसमें सन्देह नहीं। धन्य-धन्य। बलिहारी-बलिहारी। आदि साधारण किन्तु आन्तरिक शब्दों से ही मैं इस म्यूजियम का वर्णन समाप्त करता हूँ।

मुसलमान-साम्राज्य के अन्त में अंगरेज-राज्य के अभ्युदय की बात इस समय के पाठकों के लिए अवश्य रोचक और कौतूहल तथा आदर की चीज होगी—यह जान कर, यहाँ पर, मैं म्यूजियम के पुस्तकालय में रक्खे हुए दो सन्धिपत्रों की नकल नीचे दी जाती है। इनमें एक तो वह फरमान है, जिससे ईस्ट-इंडिया कम्पनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसे की दीवानी मिली, और दूसरा वह सन्धिपत्र है जो इसके बाद दिल्ली के बादशाह, बंगाल के नवाब नाजिम, अवध के नवाब—बजीर और ईस्ट-इंडिया कम्पनी के बीच लिखा गया था। समय के फेर से कहाँ गये वे बादशाह और नवाब, और कहाँ गया वह सन्धिपत्र !!! सभी इतिहास के सपने की सी घटनाये हो गई। विधाता, तेरी लीला अपरम्पार है।

पहला पत्र ।

Copy of the General Farman from the Emperor Shah Alum granting the Company the Dewanee of Bengal, Behar and Orissa Dated the 12th August 1765

At this happy our Royal Firman, indispensably requiring obedience, is issued, that whereas, in consideration of the attachments and services of the high and mighty, the noblest of exalted nobles, the chief of illustrious warriors, our faithful servants and sincere well-wishers, worthy of our royal favours, the East India Company, we have granted them the Dewanee of the provinces of Bengal, Behar and Orissa from the beginning of the Fussul Rubby of the Bengal year 1172, as a gift and ultumgoh without the association of any other person, and with an exemption of the payment of the customs of the Dewanee which used to be paid to the court, it is requisite that the Company engage to be security for the sum of 26 lacs of rupees a year, for our royal revenue which sum has been appointed from the Nawab Najum ul Dowlah Bahadur, and regularly remit the same to the royal Sircar, and in this case, as the said Company are obliged to keep up a large army for the protection of the provinces of Bengal, Behar and Orissa, we have granted to them whatsoever may remain out of the revenues of the said provinces after remitting the sum of 26 lacs to the royal Sircar, and providing for the expenses of the Nizamut, it is requisite that our royal descendants, the Viziers the bestowers of dignity, the Omrahs high in rank, the great officers the Mutsaddes of the Dewanee the managers of the business of the Sultanat, the Jagbirdars and Croories, as well as the future as the present, using their constant endeavours for the establishment of this our royal command, leave the said office in possession of the said Company, from generation to generation, for ever and ever, looking upon them to be insured from dismissal or removal, they must on no account whatsoever give them any interruption, and they must regard them as excused and exempted from the payment of all the customs of the Dewanee, and royal demands Knowing our orders on the subject to be most strict and positive, let them not deviate therefrom

Written the 24th of Sophar, of the 6th year of the Juloos

दूसरा पत्र ।

Copy of the new agreement, or treaty jointly entered into between the Nawab Najum-ul-Dowlah the Nawab Shujah ul-Dowlah, the Emperor Shah Alum, and Lord Clive and the Secret Committee of Calcutta, upon the letters revoking all former treaties and now modelling the affairs of the Company by assuming the Dewanee
Dated the 16th August 1765

(SEALLED AND APPROVED BY THE EMPEROR)

'Whereas the Right Honourable Robert Clive, Baron Clive of Plassey, Knight Companion of the Most Honourable Order of the Bath, Major General and Commander of the Forces, President of the Council, and Governor of Fort William, and of all settlements belonging to the United Company of Merchants of England trading to the East Indies, in the provinces of Bengal, Behar and Orissa, and John Carnac, Esq, Brigadier-General Colonel in the service of the said Company, and Commanding Officer of their Forces upon the Bengal establishment, are invested with full and ample powers, on the behalf of His Excellency The Nawab Najum-ul-Dowlah, Subahdar of Bengal Behar and Orissa, and likewise on behalf of the United Company of Merchants of England trading to the East Indies, to negotiate, settle, and finally to conclude a firm and lasting peace with His Highness The Nawab Sujah-ul-Dowlah, Vizier of the Empire. Be it known to all those to whom it may or shall in any manner belong that the abovesaid plenipotentiaries have agreed upon the following articles with His Highness

I—A perpetual and universal peace, sincere friendship and firm union shall be established between H H Sujah ul-Dowlah, and his heirs, on the one part, H E Najum ul-Dowlah, and the English East India Company on the other, so that the said contracting powers shall give the greatest attention to maintain between themselves, their dominions, and their subjects, this reciprocal friendship, without permitting, on either side, any kind of hostilities to be committed henceforth from any cause, or under any pretence whatsoever, and everything shall be carefully avoided, which might hereafter prejudice the union so happily established

II—In case the dominions of H H Sujah ul-Dowlah shall at any time hereafter be attacked, H E Najum-ul-Dowlah and the East India Company shall assist him with a part or the whole of their forces, according to the exigencies of his affairs, and so far as may be consistent with their own security, and if the dominions of H, E Najum-ul-Dowlah or the East India Company shall be attacked, H H Sujah-ul-Dowlah shall in like manner assist them with a part or whole of his forces, in the case of the East India Company's forces being employed in H H Sujah-ul-Dowlah's service, the extraordinary expense of the same is to be defrayed by him

III—H H Sujah ul-Dowlah solemnly engages never to entertain or receive Cassimally Khawn, the late Subahdar of Bengal and Sumroo,

the assassin of the English, nor any of the European deserters within his dominions nor to give the least countenance, support or protection to them. He likewise solemnly engages to deliver up to the English whatever Europeans may in future desert from them into his country.

IV —The King Shah Alum, shall remain in full possession of Korah and such part of the province of Illahabad as he now possesses which are ceded to His Majesty as a royal demesne for the support of his dignity and expenses.

V —H H Sujah ul Dowlah engages in the most solemn manner to continue Bulwant Singh in the zamindaries of Banaras Ghazipore and all those districts he possessed at the time he came over to the late Nawab Jaffer Ally Khawn and the English on condition of his paying the same revenue as heretofore.

VI —In consideration of the great expense incurred by the East India Company in carrying on the late war, H H Sujah ul Dowlah agrees to pay them fifty lacs of rupees in the following manner viz, 12 lacs in money, and a deposit of jewels to the amount of 8 lacs upon the signing of this treaty, 5 lacs one month after and the remaining 25 lacs by monthly payments so that the whole amount may be discharged in thirteen months from the date hereof.

VII —It being firmly resolved to restore H H Sujah ul Dowlah the country of Banaras, and the other districts now rented by Bulwant Singh, notwithstanding the grant of the same from the King to the East India Company, it is therefore agreed that they shall be ceded to H H Sujah ul-Dowlah in the following manner, viz, they shall remain in the hands of the English Company with their revenues till the expiration of the agreement between the Rajah Bulwant Singh and the Company, being on the 22nd November next, after which H H Sujah ul Dowlah shall enter into possession, the Fort of Chunar excepted, which is not to be evacuated until the sixth article of this treaty be fully complied with.

VIII —H H Sujah ul-Dowlah shall allow the English Company to carry on trade duty free, throughout the whole of his dominions.

IX —All the relations and subjects of H H Sujah ul Dowlah who in any manner assisted the English during the course of the late war, shall be forgiven and no ways molested for the same.

X —As soon as this treaty is executed the English forces shall be withdrawn from the dominions of H H Sujah-ul-Dowlah excepting such as may be necessary for the garrison of Chunar or for the

defence and protection of the King in the city of Allahabad, if His Majesty should require a force for that purpose

XI—H H Nawab Sujah-ul-Dowlah, H E Nawab Nijum-ul-Dowlah and the East India Company promise to observe sincerely and strictly all the articles contained and settled in the present treaty, and they will not suffer the same to be infringed, directly or indirectly, by their respective subjects, and the said contracting powers generally and reciprocally guarantee to each other all the stipulations of the present treaty

Clive (L S)	Mirza Cossim Khawn
John Carnac (L S)	Rajah Shetabroy
Sujah ul-Dowlah (L S)	Moor Misha Allah

Signed, sealed, and solemnly sworn to, according to their respective faiths, by the contracting parties at Allahabad, this 16th day of August in the year of our Lord 1765, in the presence of us,

Edmund Maskelyne
Archibald Swinton
George Vansittart

दीवानी मिलने के चार दिन बाद क्लाइव ने इस सन्धि-पत्र के द्वारा साम्राज्य का नया बन्दोबस्त करके ईस्ट-इण्डिया-कम्पनी को एक प्रकार से हर्ता-कर्ता—सब का मालिक—बना लिया । बेचारे दिल्ली के बादशाह पहले ही से कुछ करते धरते न थे । इस समय कुछ थोड़ा सा साधारण अधिकार उनके हाथ में रख कर अधिकांश अधिकार और साम्राज्य अन्य पक्ष के लोगो ने आपस में बाँट लिया ।

इंग्लैंड बैंक (Bank of England) । पाठकगण अब प्रधान ज्ञान-भाण्डार (म्यूजियम और पुस्तकालय) से इंग्लैंड को रखाने में चलिए । क्योंकि ज्ञान के बाद धन का ही दर्जा है । बल्कि साधारणतः देखा जाता है कि हम मनुष्य-गण ज्ञान की अपेक्षा धन को ही अधिक चाहते हैं । ६ बीघे जमीन के ऊपर इस बैंक की इमारत है । केवल जमीन के भाडे का हिसाब लगाओ तो वह सालाना ५०००० पौण्ड

होता है । लन्दन के इस अंश की जमीन के दाम सुन कर पाठको को बड़ा अचरज होगा । कभी कभी ३०००० पौड से भी ऊपर एक बिल्वा जमीन बिक्री होती है । बैंक के बुलियन सड (Bullion Yard) का जो प्रवेश-द्वार है उस पर टेम्स (The Thames) और गंगा नदी की मूर्तियाँ हैं । बुलियन आफिस (Bullion Office) में सोना तौलने के लिए सात फुट ऊँचा और ५६ मन भारी एक तराजू है । वह काच के घेरे के भीतर रक्खा हुआ है । यह तराजू इतना बड़ा और भारी होने पर भी ऐसा सच्चा है कि ५०० तोले तरु की कमीवेशी तरु सहज ही इसमें मालूम पड जाती है । एक डाक-टिकिट के बोझ से ऊपर का कांटा ६ इंच नीचे झुक जाता है । पृथ्वी भर पर इसके समान दूसरा कांटा नहीं है । इसके बनने में २००० पौड की लागत आई थी । इसका नाम है—लार्ड चीफ जस्टिस (Lord Chief Justice) । चाँदी तौलने के लिए और एक कांटा है । उसमें इसका इतना सूक्ष्म अन्तर नहीं जान पडता । उसका नाम है—लार्ड हाई चान्सलर (Lord High Chancellor) ।

इस बैंक से, राज ५०००० कित्ता से अधिक नोट जारी होते हैं और ५ । ६ दिनों में फिर इसी बैंक में लौट आते हैं । केवल एक नोट ऐसा है जो जारी होने के बाद १११ बरस तक बराबर बाहर ही बाहर घूमता रहा और तब अपने जन्मस्थान को लौट कर आया । पाँच पौड से कम का नोट नहीं जारी होता । एक बार, सन् १८२८ ईसवी में, भूल से एक पेनी, अर्थात् १०) के एक पौड के हिसाब से, तीन पैसे से भी कुछ कम दाम का एक नोट जारी हो गया था । वह नोट बराबर ५० बरस के लगभग बाहर रह कर बैंक में आया और उसका नीलाम भी हो गया । प्राचीन दुर्लभ चीज समझ कर एक साहब ने ५ पौड देकर उसे खरीद लिया ।

२४ हाथ ऊँची वेदी है । वेदी के चारो ओर, उसके पहलो मे, नील (Nile), सेन्ट विन्सेन्ट (St Vincent), कोपेन हेगेन Copenhagen और ट्राफलगर—इन चार महायुद्धों के चित्र अंकित हैं । हर एक युद्ध मे हारे हुए शत्रुओं से छीन ली गई तोपे गला कर ये मूर्तियाँ ढाली गई हैं । इस वेदी के ऊपर ११६ हाथ ऊँचा एक स्तम्भ है और उसकी चोटी पर पराक्रमी महावीर नेल्सन की धातु की मूर्ति खड़ी हुई है ।

स्तम्भ के निकट उपस्थित होकर, उस वेदी के पहलो मे बनी हुई मूर्तियों को—जो जीती जागती जान पडती थी—देख कर, मुझ से आंसुओं की धारा बहाये बिना नहीं रहा गया । हृदय जैसे उद्वलने लगा और आनन्द के आंसुओं की झडो लग गई । उस समय, उस स्तम्भ को देख कर, मेरे मन मे जो भाव उठे उनका अनुभव करके ही विशेष सुख भोग किया जा सकता है, वे भाव—वह सुख शब्दों से प्रकट करना असम्भव ही है । जान पडता है, उन भावों को प्रकट करने लायक शब्द और शक्ति समार मे न होने के कारण कहीं उन सुकोमल भावों की वेइज्जती न हो, इसीलिए विधाता वैसे हृदय के धन को हृदय के गहरे से गहरे स्थान मे—साधारण आँखों की आड मे विरलावस्था मे रक्षना चाहता है । जो लोग इम ससार में उस जगह पहुँचने मे समर्थ हैं वे अच्छी तरह समझ सकेंगे, किन्तु साधारण लोगों के आगे उस हृदय के धन को—उन सुन्दर भावों के सुख को—प्रकट करना निपट असम्भव है । वे भाव इतने सुकुमार हैं कि वाहर की ठडी हवा को वे जरा भी नहीं सह सकते । मतलब यह कि अँगरेजों की वीरता, नेल्सन की शूरता-वीरता, धैर्य, महान् उच्च हृदय और सब से प्रधान कठोर कर्त्तव्य-परायणता, तथा गुणी के गुण का मान करने में अँगरेजों की उदारता और तत्परता ने एक साथ मेरे हृदयाकाश को छा लिया ।

किन्तु जब मैंने अपने उन हृदय के भावों पर पूर्ण रूप से दृष्टि डाली तो मुझे स्पष्ट देख पडा कि मेरे हृदय के भीतर उन भावों का एक अक्रुर भी नहीं है । दूसरे व्यक्ति में उन भावों का भारी विकास देख कर भी, सतृष्ण-विस्मय का अनुभव तो दूर रहा, मैं उनसे उसी तरह उदासीन रहता हूँ जैसे अन्धा आदमी अपने सामने के सुन्दर दृश्य से, देखने की शक्ति न होने के कारण, उदासीन रहता है । मेरे मन पर उन में से एक की भी, जरा सी भी छाप नहीं पडती । यह ठीक भी था । एक विचित्र चित्र को देख कर चित्रकार को जैसी प्रशंसा-पूर्ण प्रसन्नता प्राप्त होगी वैसी प्रसन्नता—वैसा आनन्द—क्या सब लोगो को मिल सकता है ? कभी नहीं । सब को वैसा अधिकार ही कहाँ है ? हो सकता है कि ज्योतिष के अद्वितीय पण्डित भास्कराचार्य ने और रामू मोची ने किसी रात्रिको एक ही समय आकाश की ओर देखा हो, किन्तु उस ग्रह-नक्षत्र-मण्डित आकाश-मण्डल को देख कर दोनों के मन में जिन भावों का उदय हुआ होगा उनमें आकाश और पाताल का अन्तर है । ऐसे ही सब बातों में समझ लीजिए ।

किन्तु जो भाव हम में सोया हुआ है, उसकी जीती जागती मूर्ति अगर कहीं देख पडती है—अपने मन के मनुष्य की प्रभापूर्ण सत्ता के सामने हम जब उपस्थित होते हैं, अथवा सोलहो आने अपने मन का काम कर्हा देख पाते हैं, तब हृदय उछल पडता है, उतनी देर के लिए वह जैसे पूर्ण हो जाता है । जान पडता है, जैसे कुछ गँवा दिया था, कोई बहुत प्यारी चीज रोगई थी, सो वह एकाएक जैसे किसी दैवी शक्ति से फिर हाथ लग गई । उस समय स-प्रेम-विस्मय (Admiration), जिस की जगह साधारणतः 'प्रशंसा' शब्द का व्यवहार करते हैं, शरीर और मन को पुलकित कर देता है, मुखमण्डल पर प्रफुल्लित ज्योति भलका देता है, और हृदय के हर परदे से "वाह वाह, बलिहारी बलिहारी"

कहला देता है। ऊँचे स्वर से, सौ सौ बार, हजार हजार बार, “धन्य धन्य” कहने पर भी सन्तोष नहीं होता। जी मे यही आता है कि फिर भी कहे ही जायँ, अभी उसकी पूर्ण प्रतिष्ठा नहीं हुई—यथोचित सम्मान नहीं दिखाया गया।

प्रेम विस्मय का अनुगामी है। विस्मय को आगे किये बिना प्रेम कभी नहीं आता। हम मे जो बात थोड़ी सी है, पर हम चाहते हैं कि वह बहुत सी हो, उस बात को हम जहाँ या जिस मे यथेष्ट अधिक देख पावेंगे तो भीतर ही भीतर विस्मित होंगे। हमारा हृदय उस ओर बिना किसी सकोच के आपही आकृष्ट होगा। यथार्थ ‘चाहना’ यही है। ऐसी ही जगह पर हृदय का आर्कषण होता है। जी खोल कर जिसके गुण हम गा नहीं सकते उस को पाने का हमें अधिकार ही क्या है ? हमें जिसकी उपलब्धि नहीं हो सकती, अथवा यां कहो कि हम जिसका अनुभव नहीं कर सकते उस पर हमारा हक जमाना अत्यन्त असम्भव है। भाव-राज्य का यही कठिन नियम है। और एक बात है। प्रेममय जगदीश्वर के राज्य मे प्रेम के सिवा या प्रेम से बढ कर ऐसी कौन शक्ति हो सकती है जिसके द्वारा मनुष्य देवतो के समान उन्नति कर सकता है ? एक प्रेम मे ऐसी शक्ति है कि वह अन्य शक्तियों को परास्त कर देता है—बाधा-बन्धनो को दूर हटा देता है। प्रेम का ऐसा ही बल है—प्रेम का ऐसा ही प्रभाव है। ऐसा परम तेजस्वी प्रेम भी ‘विस्मय’ का अनुगामी या वशवर्त्ती है। इस स्वर्गीय वृत्ति का और एक नाम है ‘श्रौदार्य’, क्योंकि असल मे केवल इसी के द्वारा हृदय की सङ्कीर्णता दूर होकर विचार ऊँचे या उदार होते हैं। जो लोग विशुद्ध ज्ञान की प्रत्याशा में, यथार्थ विद्यार्थी के भाव से, अपने ही हृदय के भीतर प्रवेश—अर्थात् मनोनिवेश—करते हुए, न्याय के वशवर्त्ती हो कर, अपने हृदय की वृत्तियों का विश्लेषण करने की चेष्टा

करते हैं वेही विवेक को द्वारा अनुमोदित उद्गिरित वातो की सचाई समझ कर उन्नति को अधिकारी बनते हैं ।

सब प्रकार से हृदय को उन्नत बनाने वालों सप्रेम-विस्मय-वृत्ति (Feeling of admiration) को जजसे हमने गँवा दिया तभी से हमारी यह दुर्दशा हुई । यह तो ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता कि किस समय हमने उसे गँवाया, लेकिन यह बात निश्चित रूप से कहा जा सकती है कि अपने आर्य पितृपुरुषों के प्राचीन ज्ञान, धर्म, आचार-व्यवहार, नियम आदि को छोड़ कर वर्त्तमान प्रथा के अनुसार अनेक कुरीतियों के फेर में पड़ने के बहुत पहले ही से इस अमूल्य वृत्ति को गँवा कर हम आदर्श-हीन जीवन बिता रहे हैं । इस समय हम किस अवस्था में आपड़े हैं, सो सभी जानते हैं, अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है । “शत्रोरपि गुणा वाच्या दोषा वाच्या गुरोरपि ।” या “दूध और पानी को अलग करने वाले हस की तरह सब जगह से केवल गुण-ग्रहण करना चाहिए ।” आदि उच्च श्रेणी की नीतियाँ न-जाने किस कूड़े-करकट के ढेर के नीचे दबी पड़ी हैं । दो-चार शताब्दियों में भी उनके फिर पाने की कोई आशा नहीं है । इस समय तो हम लोगो में परस्पर जैसे इसी बात की होड लगी हुई है कि पराये दोषों को छाँट छाँट कर ग्रहण करने में और दूसरों की वुराइयाँ खोजने में कौन कहाँ तक नीचे गिर सकता है । हम लोगो में जैसे इसी बात की लाग डाल चल रही है कि अपनी भूठी बड़ाई और दूसरों के गुणों की ओर से आँस फेर कर उनकी भूठी निन्दा करके अपने सर्वनाश की राह को कौन कितना साफ कर सकता है । व्यक्तिगत सासारिक नीच स्वार्थपरता को चरितार्थ करने के उद्देश्य से, जो जितना ही गलेवाजी के जोर से मतमतान्तरो और कुरीतियों का प्रचार करता हुआ आपस में दारुण भेदभाव को दृढ़ करके घृणा, द्वेष

और डाह फैलाने में सफलता प्राप्त करता है वह उतना ही श्रेष्ठ समझा जाता है ! निरुद्ध दुष्टता के द्वारा जो जितनी जल्दी 'विश्व-निन्दक' की उपाधि प्राप्त कर सकता है वह उतना ही बहादुर समझा जाता है । हाय, जिस स्वार्थपरता या सुदगरजी को आर्य ऋषिगण अत्यन्त निन्दित और नीचे का काम बता गये हैं वही इस समय 'भारत' के बाजार में खूब काम की चीज समझी जा रही है—उसकी खपत भी बहुत है । "गुणी गुण वेत्ति न वेत्ति निर्गुणः" इसी वाक्य का प्रतिपादन अगर वर्तमान भारत करता तो भी वैसे आक्षेप की कोई बात न थी । किन्तु यहाँ तो और ही मामला है । अवनति के अनिवार्य और जोरदार प्रवाह के आगे कहीं भी रुके होकर ज़रा दम लेने का उपाय नहीं है । उस प्रबल प्रवाह ने इतने नीचे— इतने गहरे अन्धकार में—हमें ले जा कर पटक है कि हमारी हिये-कपार की आँखें बेकाम हो गई हैं, कुछ नहीं सूझता । वर्तमान भारत को गुणों की निन्दा, अवगुणों की प्रशंसा, सत्य के सिर पर लात मारने और असत्य का सब तरह से आदर करने का ऐसा अभ्यास हो गया है कि इन बातों को बहुत से लोग हिन्दुस्तानियों का जातीय स्वभाव कहने लगे हैं । मुझे नहीं मालूम कि मनुष्य की इससे अधिक और क्या अधोगति हो सकती है । देश की इस हृदय-विदारक शोचनीय अवस्था पर विचार करने से अवश्य ही सहृदय मनुष्य को आगे निराशा का घोर अन्धकार छा जायगा और दुःख के मारे हृदय फटने लगेगा । पृथ्वी भर के पैरों के नीचे पड़ कर इस घृणित लाञ्छित जीवन की रक्षा करने से, अपना या देश का, क्या लाभ है ? अब तो यह देश की दुर्दशा—दुराचार का दौरात्म्य—नहीं देगा जाता । पृथ्वी भर के और लोग फुर्ती और प्रसन्नता के साथ हँसते हैं, खेलते हैं, केवल हम ही शोकाभिभूत और उदास हैं । फिर भी मजा यह कि हम

अपने इस दुःख को दूर करने की, यहां तक कि अपनी दुर्दशा को समझने की भी, चेष्टा नहीं करते । विलकुल ही मुरदां के समान अचेत हो रहे हैं ।

हे भगवन् ! कृपा करके हमारा मोह दूर करिए । केवल आप ही का आसरा या सहारा है । आप के दयामय नाम पर विश्वास और सत्य-स्वरूप की और लक्ष्य स्थिर करने के सिवा हमारे उद्धार का और कोई उपाय नहीं है । मैं भारत की माताओं के चरणों पर सिर रख कर उनसे यही प्रार्थना करता हूँ कि वे अपने पुत्रों को राज दूध पिलाते समय उनके कानों में इस शोक-समाचार की खबर कर दे, वर्तमान विपत्ति से उद्धार के लिए उन के हृदयों में सत्यानुराग भर दें । पाठरूगण, हार्दिक शोकोच्छ्वास के कारण मैं इधर बहुत बढ आया । इसके लिए मैं आपसे क्षमाप्रार्थी हूँ ।

यह स्तम्भ जिन महापुरुष की अक्षय कीर्ति की घोषणा कर रहा है उनका वृत्तान्त बहुत लोगों को मालूम है । मैं यहां पर उनके जीवन की दो एक बातें और मरने के समय का हाल लिख कर यही स्मरण कराने की चेष्टा करूँगा कि किन किन सद्गुणों के कारण वह एक श्रेष्ठ अंगरेज थे । महाशय नेल्सन लडरूपन से ही पूर्ण कर्तव्य-परायण थे । भय को तो वे जानते ही न थे कि कैसा होता है । लडरूपन से एक दिन नेल्सन ने अपनी नानी से पूछा था—“नानीजी, मैंने भय को कभी नहीं देखा, भय किसे कहते हैं ?” नेल्सन का शरीर दुर्बल, काम न करने लायक और अस्वस्थ रहने पर भी उन्होंने हठ करके अपने मामा की मातृहती में जगी जहाज में नौकरी कर ली । समुद्र ही उनकी शिक्का का स्थान, उनके कार्य का क्षेत्र और गौरव की लीला-भूमि हुआ । अन्त को ट्राफलगर के महायुद्ध में, समुद्र के बीच, कर्तव्य का पालन करते करते महान् वीर के योग्य महत्त्व को प्रकट करने के

उपरान्त उन्होंने उज्ज्वल कीर्ति के प्रकाश में, दीप्तिमान् यश के दिव्य आलोक में, सुस्थ सवल और शान्त चित्त से प्राण-त्याग किया । नेल्सन हमारे सगे नहीं थे, हमारे परिवार के नहीं थे । मगर इम जीवन में मैंने जब उनके मरने के समय के वाक्यों को पढ़ा है तब अपने आंसुओं को नहीं रोक सका । उनकी वे वाते ऐसे ही ऊँचे दर्जे की और ऐसी ही हृदय पर असर डालने वाली हैं । नेल्सन के मरने के समय का वृत्तान्त, सच्चेप में, नीचे लिखा जाता है ।

सन् १८०५ ईसवी के अक्तूबर महीने की २१ वीं तारीख को स्पेन के दक्षिण-पश्चिम किनारे पर ट्राफलगर अन्तरीप के सामने स्पेन-राज्य के बेड़े (Fleet) के साथ सम्मिलित नेपोलियन का भेजा हुआ फ़्रांस का बेड़ा नेल्सन के द्वारा छिन्न-विच्छिन्न होकर हार गया । इससे पहले काल्वी (Calvi) के युद्ध में नेल्सन की एक आँख नष्ट हो गई थी । टेनेरिफ (Teneriffe) के युद्ध में उनका दाहना हाथ भी बेकाम हो चुका था । अब की बार सुप्रसिद्ध ट्राफलगर के युद्ध में ब्रिटिश-गौरव की रक्षा करते हुए महावीर नेल्सन ने समुद्र के भीतर अपने प्राण भी दे दिये । घोर युद्ध हो रहा था । सेनापति नेल्सन क्वार्टर डेक (Quarter deck) के ऊपर टहल रहे थे । एकाएक शत्रुओं के जहाज से एक गोली आकर उनकी पीठ में घुस गई । उस समय १ बज कर १५ मिनट हुए थे । उनके असिस्टेन्ट कप्तान हार्डी (Captain Hardy) ने पीछे फिर कर देखा कि घायल होकर गिरे हुए वीर नेल्सन को तीन जने पकड़ कर उठा रहे हैं । हार्डी साहब झटपट झपट कर उनके पास आ गये ।

हार्डी—मैं आशा करता हूँ कि आप के गहरी चोट नहीं लगी होगी ।

नेल्सन—चोट गहरी नहीं है हार्डी ।

हार्डी—नहीं, चोट तो गहरी ही जान पडती है ।

नेल्सन—गोली मेरी पीठ की हड्डी तोड कर भीतर घुस गई है ।

नेल्सन के हृदय में ऐसा अमानुषिक बल था कि उस समय भी वह जहाज की व्यवस्था के सम्बन्ध में कर्मचारियों को आज्ञा देते रहे । आज्ञा देने के बाद जब से रुमाल निकाल कर उन्होंने मुँह पर डाल लिया, जिसमें युद्ध में लगे हुए योद्धा लोग उन्हें न पहचान सकें, शायद उनकी यह अवस्था देख कर शोक से उनका उत्साह कम न हो जाय । कई अफसर और ४० सिपाही उसी समय घायल हुए और नीचे लाये गये । डाकूर बेटी (Surgeon Betty) उस समय उनकी देखरेख में उलझे हुए थे । उसी समय उन घायलों में से अधिकांश लोग चिल्ला कर कहने लगे कि “डाकूर साहब ! हमको क्या देख रहे हो ? लार्ड नेल्सन यहाँ घायल पड़े हैं !”, “डाकूर साहब ! सेनापति घायल हो गये हैं !” । डाकूर साहब झटपट नेल्सन के पास आये ।

नेल्सन—“आ मिस्टर बेटी मुझे बारी से देखना । और तुम देख कर ही क्या करोगे ? मैं तो कुछ ही घड़ियों का और मेहमान हूँ । गोली मेरी पीठ छेद गई है ।”

डा० बेटी—“मैं आशा करता हूँ, आप जैसा सोच रहे हैं वैसी चोट नहीं होगी । आशा है, आप इस महाविजय का गौरव भोगने के लिए अभी बहुत दिनों तक जीते रहेंगे ।”

इसी समय शोकविह्वल पादरी डाकूर स्काट (Rev'd Dr Scott) के पास आने पर नेल्सन ने कहा—“डाकूर, मैं तो तुम से पहले ही कह चुका हूँ । डाकूर, बस अब मेरा अन्तकाल निकट है ।”

घाव की जगह की जाँच हो जाने के बाद डाकूर के प्रश्न के उत्तर में नेल्सन ने कहा—“हर साँस पर हृदय के भीतर जैसे रह रह कर खून उछलता है । फमर के नीचे का हिस्सा सुन सा हो गया है ।

सि लेने और छोड़ने में कष्ट जान पड़ता है और रीढ़ के भीतरी हिस्से में भारी जलन और पीड़ा है ।”

इन लक्षणों से डाक्टर को निश्चय हो गया कि हालत अच्छी नहीं है ।

शत्रुपक्ष का एक एक जहाज नष्ट होता जाता था और नेल्सन के जहाज “विजया” (‘Victory’) के सिपाही और मांभी उच्च स्वर आनन्द-ध्वनि करते जाते थे । एक बार ऐसी आनन्द-ध्वनि के मन्थ में नेल्सन ने पूछा । हाल मालूम होने पर मरने की घड़ी देखते ही वीर नेल्सन के प्रशान्त मुखमण्डल पर खुशी की लाली दौड़ गई । धीरे धीरे प्यास और जलन बढ़ने लगी । केवल ‘जल, जल’ और ‘वा, हवा’ की रट लग गई ।

इस विपम जलन और पीड़ा की हालत में ही एक फौजी कर्मचारी बूक (Buike) ने आकर खबर दी कि “प्रभो ! (My Lord) शत्रुपक्ष पूर्ण रूप से परास्त होगया । मैं आशा करता हूँ कि आप जीते जायेंगे । कर स्वयं यह सुख का समाचार देशवासियों को सुनावेंगे” ।

इसके उत्तर में नेल्सन ने कहा—“तुम्हारी यह आशा पागलपन है । मेरे इस समय बड़ी जलन और पीड़ा ही रही है । मगर बहुत जल्द सब समाप्त हो जायगा” ।

पा० डा० स्काट—‘आप निराश न हों । मुझे आशा है कि जलन और एक बार आपको अपने देश और देशवन्धुओं के साथ लावेगे’ ।

नेल्सन—“डाक्टर, सब समाप्त ! सबसमाप्त !”

इसके बाद प्रिय कप्तान हार्डी को देखने के लिए व्यस्त होकर आकुलता के साथ नेल्सन ने कहा—“कोई क्या हार्डी को मेरे पास लावेगा ? जान पड़ता है, वह मारा गया” । उसी समय खबर

आई कि हार्डी युद्ध में ऐसे व्यस्त हैं कि उन्हें दम लेने की भी फुरसत नहीं है । जहाँ तक जल्द हो सकेगा, आवेंगे ।”

वास्तव में उस समय हार्डी के सिर पर बड़ी भारी जिम्मेदारी थी । एक घंटे दस मिनट के बाद हार्डी नीचे आये और अपने परमबन्धु और पिता के समान मुख्तियार सेनापति नेल्सन की मृत्युशय्या के निकट पहुँच सके । स्नेहपूर्वक हाथ मिलाने के बाद दोनों में इस तरह बातचीत होने लगी ।

नेल्सन—“युद्ध की खबर क्या है ? हमारे पक्ष की जीत होगी या हार ?” (पाठकगण, देखिए, कैसा धैर्य है !)

हार्डी—“बहुत अच्छी खबर है । प्रभो, शत्रुपक्ष के १२ जहाज हमारे हाथ लगे हैं ” ।

नेल्सन—“जान पड़ता है, हमारा कोई जहाज नष्ट नहीं हुआ” ।

हार्डी—“नहीं, प्रभो, इसकी आप चिन्ता न करें ” ।

नेल्सन—“अब मैं मरा हार्डी, बहुत फुर्ती से मेरी जीवनी शक्ति का चयन हो रहा है, शीघ्र ही सब समाप्त हो जायगा । और भी पास आओ हार्डी ” ।

हार्डी—“जान पड़ता है, आपके जीवन के सम्बन्ध में डाक्टर बेटी एक दम निराश नहीं हुए हैं” ।

नेल्सन—“अरे नहीं हार्डी, मेरा जीवन असम्भव है । मेरी पीठ की हड्डी टूट गई है । डाक्टर से तुमको सब हाल मालूम होगा” ।

इतनी बातचीत करके हार्डी अपने स्थान (Post) पर चले गये । नेल्सन को निश्चय हो गया कि अब उनके जीने की कोई आशा नहीं है । उन्होंने वारम्बार विशेष अनुरोध करके जबरदस्ती डाक्टर बेटी को अपने पास से अन्यान्य घायलों की सेवा के लिए भेज दिया । किन्तु वैसे ही फिर बुलवाया ।

नेल्सन ने डाक्टर से कहा—“मि० वेटी, तुमसे मैं एक बात कहना भूल गया था, इसी से जुलाया है। छाती के नीचे अब किसी तरह की आहत का पता नहीं है। इसी से मुझे जान पड़ता है कि अब अधिक विलम्ब नहीं है”।

डा० वेटी—“प्रभो, यह बात तो आपने पहले ही कही थी”।

हाथ-पैर एक दम ठंडे पड़ गये कि नहीं, यह देखने की इच्छा डाक्टर ने जाहिर की। इस पर नेल्सन ने कहा—“मि० वेटी, मैं तुमसे निश्चित रूप से कहता हूँ कि अब मेरा अन्त समय निकट है। मि० स्काट और मि० बर्क अच्छी तरह जांच कर गये हैं”।

तब डाक्टर से नहीं रहा गया, उनकी आंखों में आंसू भर आये। उन्होंने गद्गद वाणी से कहा—“प्रभो, हमारे देश का यह विशेष दुर्भाग्य है कि आपको बचाने के लिए कुछ भी उपाय नहीं किया जा सका”।

इतना कह कर, शोक के वेग को न सँभाल सकने के कारण उन्होंने मुँह फेर लिया। ऐसे कठिन समय में नेल्सन ने कहा—“मेरे हृदय से प्राण जैसे ठेले जा रहे हैं डाक्टर। वस, अब कुछ देर नहीं है”।

इसके बाद उल्लास के मारे नेल्सन ऊँचे स्वर से कह उठे—“जगदीश्वर धन्य है। यह तेरी ही कृपा है कि मैं मरते दम तक अपनी कर्तव्य का पालन करता रहा”।

युद्ध के आरम्भ में जब नेल्सन का यह उत्तेजक महावाक्य (Signal) बड़े भर में प्रचारित हुआ कि “इंग्लैंड को आशा है कि कोई भी आदमी अपने कर्तव्य के पालन में कमी नहीं करेगा” (‘England expects every man will do his duty’) और सारी सेना ने बड़े हुए उत्साह के साथ हुंकार-शब्द करके समुद्र के हृदय को

कॅपा दिया तब नेल्सन ने प्रसन्न होकर कहा कि “मेरे द्वारा इससे अधिक होना असम्भव है । अब सब के स्वामी भगवान् के ऊपर और अपने पक्ष की न्यायनिष्ठा पर निर्भर होकर रहना ही हमारा कर्त्तव्य है । परमेश्वर ने मुझे अपने कर्त्तव्य के पालन का मौका दिया इसके लिए उन्हें अनेकानेक धन्यवाद हैं” ।

नेल्सन स्वयं अपने इष्टदेव ‘कर्त्तव्य’ का स्मरण करके और अपने अर्धान-स्थ कर्मचारियों को स्मरण कराकर अमरत्व-लाभ की आशा से युद्ध के मैदान में आये । वह यहाँ अपनी विजय वैजयन्ती उडा कर स्वर्ग में, देवमण्डली में मिलने, जाने की घड़ी तक षोडशोपचार से अपने मनोमन्दिर की अधिष्ठात्री देवता कर्त्तव्य की पूजा कर सके, इसलिए उन्होंने वारम्बार विधाता को धन्यवाद दिया । जिसको ऐसा कर्त्तव्य का ज्ञान और ध्यान था उन्हें देवता न कह कर पृथ्वी का जीव कहने में निस्सन्देह जिह्वा को महापाप होता है ।

डाकूर ने नेल्सन से जब पीडा के बारे में पूछा तब उन्होंने कहा— “असह्य पीडा हो रही है, अब मौत ही मुझे चाहिए” । इसके साथ ही धीरे से उन्होंने कहा— “किन्तु और भी थोड़ी देर अभी जीते रहने की इच्छा है” ।

अब की बार सन्तान तुल्य कप्तान हार्डी के साथ नेल्सन की आरुढ़ी वातचीत हुई । पहली भेंट के बीस मिनट बाद कप्तान हार्डी अपने गुरु-तुल्य महावीर नेल्सन के निरुट अन्तिम साक्षात् करने के लिए आये । उन्होंने कहा— “आज आप की जीत का झुंडा सागर के बाच जब तरु चन्द्र-सूर्य रहेंगे तब तक के लिए गड गया । हम लोगों की पूर्ण रूप से जीत हुई है । १४ या १५ शत्रुओं के जहाजों ने आत्म-समर्पण कर दिया है” ।

नेल्सन—“ठीक है । मैंने आशा की थी कि शत्रुओं के जीस के लगभग जहाज हाथ लगेंगे ”।

इसके बाद नेल्सन ने ऊँचे स्वर से कहा—“लगर करो हार्डी ”।

हार्डी—“प्रभो, जान पड़ता है, अब एडमिरल कलिंगवुड (Admiral Collingwood) अध्यक्षता ग्रहण करेंगे” ।

नेल्सन—“जब तक मैं हूँ तब तक नहीं । (इस समय हृदय में इतना जोश आगया था कि उन्होंने उठने की चेष्टा की थी) लगर करो हार्डी ” ।

हार्डी “तो इशारा (Signal) करूँ ?”

नेल्सन—“हाँ । क्योंकि अगर मैं जीता रहा तो निश्चय लगर करूँगा” ।

इस बात को विशेष तेज के साथ ऊँचे स्वर से कहने के बाद थोड़ी देर चुप रह कर नेल्सन ने कहा—“मुझे अच्छी तरह जान पड़ता है कि बस दो चार मिनट में ही सब समाप्त हो जायगा । (धीरे से) मुझे समुद्र में न फेंक जाना हार्डी ” ।

हार्डी—“नहीं नहीं, कभी नहीं ” ।

नेल्सन—“क्या करना होगा सो तुम सब जानते हो । मुझे चूम कर विदाई दो हार्डी ” ।

हार्डी ने दोनों घुटने टेक कर नेल्सन का मुख चूमा । तब नेल्सन ने कहा—“अब मैं प्रसन्न हुआ । ईश्वर को धन्यवाद है कि, अब तक मैं अपने कर्त्तव्य का पालन कर सका” ।

हार्डी ने फिर मुख-चुम्बन किया तब उन्हें नेल्सन ने आशीर्वाद दिया । इसके पहले नेल्सन के पास पड़े हुए एक घायल सिपाही के पास से जाते समय एक कर्मचारी के पैर की ठोकर उस घायल के लग गई थी । उच्च-हृदय महावीर को मरते समय भी कर्त्तव्य का पूरा

ध्यान था । उन्होंने उस अपराधी कर्मचारी को लक्ष्य करके कहा—
“सावधान भैया, जीवो पर जरा अधिक दया करना आवश्यक है ” ।

धन्य कर्तव्यपरायता ।

हार्डी के चले जाने पर नेल्सन ने पीदरी स्काट से कहा—
“मैंने महापाप कोई नहीं किया डाक्टर । कन्या हेरेशिया (Horatia)
और लेडी हैमिल्टन (Lady Hamilton) को देश के हाथ में सौंपे
जाता हूँ ।”

धीरे धीरे प्यास और जलन बढ़ने पर स्वर धीमा पड़ गया ।
परन्तु उस समय भी अत्यन्त धीमे स्वर से नेल्सन कहते ही गये कि
“जगदीश्वर को धन्यवाद है कि मैं अन्त समय तक कर्तव्य का
पालन करता रहा । परमेश्वर ! मेरे देश !” । इसके बाद कुछ नहीं कहा ।
साढ़े चार बजे महावीर नेल्सन का आत्मा शान्त एकाग्र भाव से इस
पञ्चतत्त्वरचित शरीर को छोड़ कर ज्योतिर्मय शरीर से स्वर्गलोक को
चला गया ।

(नेल्सन के अन्त समय की इन बातों से उनके स्मारक-चिह्न की
व्याख्या अच्छी तरह हो सकेगी, यही समझ कर यह अंश कुछ
विस्तार से लिखा गया है, आशा है, पाठकगण क्षमा करेंगे ।)

ट्राफल्गर महायुद्ध में जय-लाभ के साथ ही नेल्सन ऐसे अमूल्य
रत्न को गँवा कर इंग्लैंड को बड़ा ही शोक हुआ । जिस युद्ध में जय
प्राप्त करने से विश्वप्राप्ति नेपोलियन की शक्ति तीन हिस्से तोड़ दी गई
उसकी एगर कैसे आनन्द का समाचार होगा—उस बात का पाठक-
गण स्वयं अनुमान कर सकते हैं । किन्तु उसके साथ ही नेल्सन के
स्वर्ग सिंधारने के समाचार से इंग्लैंड को घोर दुःख हुआ । परन्तु
विधाता की इच्छा में किसी का क्या जोर ! अनेक प्रकार से शोक-
मिले आनन्द को प्रकाशित करने के बाद यथोचित सम्मान और रूप

से कोई फल नहीं है । जन्म भर मृत्यु के सम्बन्ध में विचार न करने से अन्त को उस भयङ्कर दिन में मृत्यु की भयानक मूर्ति और भी भयानक जान पड़ती है । अतएव भगवान् के निकट हमारी यही प्रार्थना है कि उस अन्तिम समय को सदा हम अपनी आँखों के आगे रख सकें । नहीं जानते, मृत्यु के समय भय से हमारी कैसी शोचनीय अवस्था होगी । जो हावलक की तरह ज्ञान और धर्म के बल से बराबर अपने जीवन को ठीक राह पर चला सका है उसके लिए मृत्यु सचमुच ही स्वर्ग की सीढ़ी है । और हमारे लिए तो वह यथार्थ ही नरक का द्वार है । अन्त-समय सभी छोड़ देते हैं । केवल ज्ञान और धर्म ही सहायक होते हैं । वे ही इस लोक और परलोक के बीच में सेतु निर्माण करके बिना किसी बाधा-विघ्न-विपत्ति के आराम के साथ प्रसन्न हृदय से भव-सागर के पार कर देते हैं ।

हावलक के मरने के बाद ब्रिटिश द्वीप में कुछ दिनों तक घर धर हावलक की पूजा चली थी । गुणी के गुण की मर्यादा करना—इज्जत करना—अगर कोई जानता है तो वह ब्रिटिश जाति है । और हम लोग दिन रात इसी चेष्टा में लगे रहते हैं कि किस तरह यशस्वी लोगों के दोष खोज कर उन्हें अपने दल में घसीट लावें । वाह ! कैसी गुणप्राही जाति है ! आश्चर्य तो यही है कि ये मव जीव इसी शरीर से स्वर्ग को क्यों नहीं जाते ।

पादरी स्पियर्स साहब (Unitarian Revd Speers) । इन महात्मा के निकट बहुत से हिन्दुस्तानी आदमी हमेशा सब तरह की सहायता पाते रहते हैं । लन्दन पहुँचने के कुछ ही दिनों बाद इन महाशय के दर्शन मुझे मिले । यह स्वर्गीय केशवचन्द्र सेन के परम बन्धु थे । इंग्लैड में रहने के समय उन्हें इन में खूब आदर मिला था । इन्होंने सेन महाशय की सेवा और सहायता पूर्ण रूप से

की थी। साहब के साथ, उनके आफिस में, जान-पहचान और बात-चीत होने के दूसरे ही दिन अपने सम्प्रदाय के एक नये गिरजे की प्रतिष्ठा के उत्सव में साहब मुझे अपने साथ ले गये। उस समय में मैं कोरा बगाली था, अंगरेजी ढंग मुझे बिलकुल ही मालूम न था। मेरे जीवन में यह पहला ही अवसर था कि दो सौ से अधिक श्वेताङ्ग नर-नारियों के बीच में काला आदमी बैठा था। मैं तो अपनी जान एक बिलकुल नये जगत् में पहुँच गया। इस अवस्था में मेरे मन में जो जो भाव उठे उन्हें शब्दों से प्रकट करना बहुत ही कठिन है। वहाँ के साहब और मेम, सभी, मानो परस्पर होड कर के, एक दूसरे से अधिक आदर और आग्रह से—जिसकी कि मुझे स्वप्न में भी आशा नहीं थी—मुझे चाय और मिठाई आदि देने लगे। वे लोग मीठी बातचीत से मुझे प्रसन्न करने की चेष्टा में भी कुछ कसर नहीं कर रहे थे। यह देख कर मैं तो सन्नाटे में आगया। क्योंकि पहले मैं स्वप्न में भी यह विश्वास नहीं कर सकता था कि एक काले आदमी की, चाहे वह हजार बड़ा आदमी हो, गोरे लोग और खास कर उनकी बियाँ, ऐसी सेवा और ऐसा आदर कर सकती हैं। यही पर मुझे यह मालूम हुआ कि विलायत में पैर रखते ही हमारे देश के कच्ची समझ के नौजवानों का सिर क्यों फिर जाता है। भारत के आईन के अनुसार जिन काले आदमियों से नफरत करने वाली, घमड में चूर मेम साहबों की छाँह से भी हजार हाथ हट कर हाथ जोड कर फिनारे खड़ा होना पड़ता है उन्हींसे वहाँ, लन्दन में, इसतरह मिलना-जुलना, इतना हेल-मेल, जब देखो तब “हा-डू-डू” कह कर हाथ मिलाने का अधिकार ॥ सचमुच ही मेरे लिए यह कम आश्चर्य की बात नहीं थी। पठकगण, आप क्या कहते हैं ? कहीं तो नरक के गहरे अन्धकार में डूबना और कहीं एक दम स्वर्ग के दिव्य प्रकाश में पहुँच जाना। ये सब इसी

घात के सजीव प्रमाण हैं कि हम क्रमशः मनुष्य-नाग के भी योग्य नहीं रहगये हैं ।

इस के बाद साहब के निमन्त्रण को पाकर मैं उनके हाईगेट के मकान में गया । जैसा वह बुढ़्ढा था वैसे ही सब उस के परिवार के लोग थे । सभी जैसे साँचे में ढली स्वर्गीय सोने की पुतली थे । जिस घर में यह परिवार रहता है उस का नाम है अरेन्डल-हाउस (Arundel House) यह लार्ड अरेन्डल की सम्पत्ति है । इसी घर में लार्ड बेकन (Lord Bacon) मरे थे ।

महात्मा स्पियर्स के गुणों का बखान एक मुख से नहीं किया जा सकता । उनकी गुणवती भार्या उनसे भी अधिक थी । उस बुढ़िया ने अत्यन्त यत्न के साथ रक्खी हुई सारी सम्पत्ति की सैर कराई । उस में पृथ्वी भर के अनेक स्थानों के अनेक बड़े आदमियों के पत्र और चित्र ही अधिक थे । उन में भारतेश्वरी विक्रोरिया की कन्या एलिस, ग्लाडस्टन, डाकूर मार्टिनी और केशवचन्द्र के कई पत्र मैंने मन लगा कर पढ़े । स्पियर्स साहब और केशव बाबू में परस्पर कैसा प्रेम का नाता था, स्पियर्स साहब केशवबाबू के कैसे प्रिय बन्धु थे, यह जताने के लिए नीचे उनके एक पत्र की नकल दी जाती है ।

ON BOARD THE "AUSTRALIA"
21st September, 1870

MY DEAR MR SPEARS,

The Captain of our vessel has kindly made arrangements to send off a mail bag to-morrow morning from Gibraltar I, therefore, take this opportunity to transmit a hasty message assuring you and all our English friends of our best regards and warmest thanks Above all, to you I owe an immense debt of gratitude which no words of mine can sufficiently describe You have always been to me a kind and sympathizing friend, ever ready to meet my wishes and supply my wants ever did you allow me to feel that I was in a foreign country It was chiefly

with your aid that I found brothers and sisters in England and forgot to a great extent the pains of separation from family and friends. May it was you who arranged for feeding and clothing me and meeting my daily requirements. How can I repay your kindness? I feel ashamed when I think how much trouble and vexation and anxiety I have caused you, and how you overworked yourself for my sake and sacrificed only to render me happy. If I have on any occasion taken advantage of your kindness, forgive me. I can assure you that I will never forget your unfeigned brotherly love, but will always be grateful to you and Mrs Spears for your kindness and hospitality. Give her my love and say she had my best wishes for the welfare of the family. Dear Margaret and sweet little John have an abiding hold on my affection. May the God of mercy shower His blessings on you and your excellent family, and give you all peace everlasting. Give my love to Mr and Mrs Keating, Miss Florence, Miss Calphan, Miss Watrill, Mr and Mrs Taylor and other friends at and near Camberwell. Miss Calphan's affectionate services I can never forget. Remember me to Mr Roy and also to Dr Roy, with my kindest regards.

Please inform Miss Collet that I have posted this day the lecture on Christ and Christianity, duly revised and corrected, to her address. Request her to write to Mr Strahan, asking him to send 200 copies of the new edition of my lecture to Calcutta. The first copy I received has been forwarded to Her Majesty.

It is needless to say that I look forward to the pleasure of receiving kind and affectionate messages from all my English friends. Any newspaper or periodical containing notice of the Brahma Samaj or my movements will be thankfully received.

BELIEVE ME,

Yours affectionately

KESHUB CHANDER SEN

(१) यह एक स्वाधोन रमणी सदा दासी की तरह केशवचन्द्र सेन की सेवा करती थीं । यह श्रीमती इस समय सेन बाबू का नाम देने से रोने लगती हैं । केशव बाबू की कन्या, कूचबिहार की रानी, जब विजायत में गई थीं तब इस पत्र में जिन महिलाओं का उल्लेख है वे सब उन्हें, देखने के लिए विशेष उत्सुक रहने पर भी, नहीं देख सकीं । इस लिए रानी साहब को बड़ा दुःख हुआ । जिन उच्चपदस्थ लोगों के साथ, संगति में, धूमधाम के बीच रानी साहबा थीं वहाँ वे स्त्रियाँ पहुँच नहीं सकीं । यही उनका मनोरथ पूरा न होने का प्रधान कारण था ।

पाठकगण, देखिए, एक और कैसा स्वर्गीय प्रेम है ! और, दूसरी और कैसी सरल कृतज्ञता है ! सेन बाबू लिखते हैं कि “सबसे बढ कर तुम्हारे निकट मैं जैसे भारी कृतज्ञता के ऋण में बँधा हुआ हूँ उसका वर्णन शब्दों से नहीं हो सकता । तुमने मुझे खिलाया-पिलाया है, मेरी सब तरह की जरूरतों को पूरा करने के लिए विरोध यत्न किया है । मुझे सुखी करने के लिए समय समय पर कितनी हानि उठाई है कितने कष्ट मझे हैं । तुमने मुझे कभी विदेश का छेश या बन्धु-बान्धवों के विछोह की वेदना के अनुभव का अवसर ही नहीं दिया । तुम्हारी चेष्टा ही से मैंने इंग्लेड में भाई और बहनो को पाया है । नहीं जानता, किसतरह तुम्हारी इस दया के ऋण को चुका सकूँगा । यदि कभी किसी तरह मैंने तुम्हे विरक्त किया हो अथवा तुम्हारी दया का अनुचित फल भोगने की चेष्टा की हो तो उसे माफ़ करना । तुम्हारे शुद्ध भ्रातृ-स्नेह और तुम्हारी पत्नी की दया और मेहमानदारी को मैं कभी नहीं भूलूँगा, उसके लिए मैं चिर कृतज्ञ रहूँगा । बालिका मार्गरेट और बालक जान (स्पेयर्स साहब की कन्या और पुत्र Margaret and John) मेरे हृदय में बसे हुए हैं । मिस छैपहैन ने जो प्रीति के साथ मेरी सेवा की है उसे मैं कभी नहीं भूलूँगा” ।

महापुरुष का कैसा गभीर प्रेम है ।

सन्ध्या के बाद स्पियर्स साहब ने मुझे अपनी मण्डली में लेजाकर सबसे जान पहचान करादी । वहाँ पर प्राय ५०० भले आदमियों ने मुझ पर जैसी दया दिखाई उसका पूरा हाल सन् १८८६ ई० २७ वीं मार्च को एक स्थानीय साप्ताहिक समाचार पत्र (The Christian life) में प्रकाशित हुआ था । उसका वह अंश नीचे उद्धृत किया जाता है ।

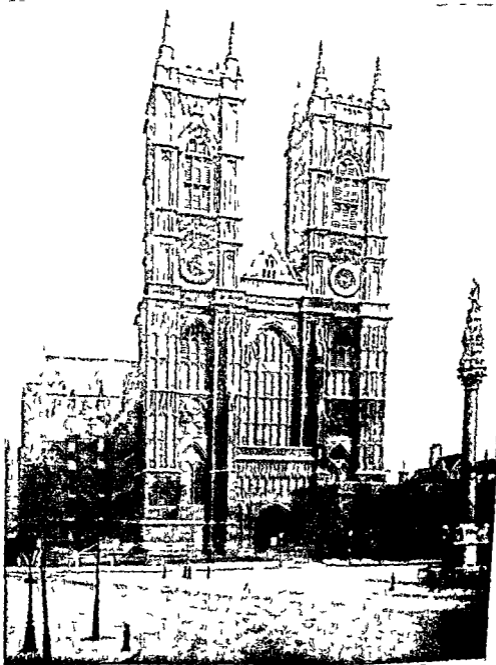
A welcome — Mr — received on the 17th instant a hearty welcome at the Unitarian Church, Highgate Hill, London, Mr Spears said, for more

than twenty years, he has been interested—as nearly all Christians were—in the remarkable movement in India called the Brahmo Samaj. They all understood that we were, to a large extent, the rulers of some two hundred and fifty millions of the people in that great empire, and therefore a native movement to uproot idoltry caste vice, ignorance, and to bring the millions of the people to worship the one true and living God could not fail to have their best wishes. Although the Brahmos did not call themselves Christians, they had an intense reverence and admiration for Christ and faithfully endeavoured to place before the people of India the character of Christ as a religious leader and teacher from God. There was present that evening, one of the leaders of this important religious movement, and he in the name of the congregation welcomed him into their midst. This welcome was heartily responded to by the congregation. Mr—ascended the pulpit, and said he profoundly felt the kindness they had shown in the way they had responded to their minister, and it was all true what Mr Spears had said. They were endeavouring to make a great reformation of the religious life of their empire and, though not calling themselves Christians, their admiration for Christ and their reverence for him were deep and sincere. In India he had on Sundays conducted religious services and was pleased to meet such a welcome from religious men and women. He had only been in London a few days, and had seen nothing but kindness. After a few more words he concluded an interesting address. He is from Calcutta, and intends to stay in London for a few years—' 'The Christian Life, 23rd March, 1899

इंग्लेड-प्रवास के समय प्रायः स्पियर्स साहब के घर मेरा जाना-आना हुआ करता था। घर के लडके वाले तरु ऐसे धीरे और शान्त तथा धीरे धीरे सहूलियत से बातचीत करने वाले थे कि हमारे यहाँ के बहुत से बुद्धे भी वैसे न होंगे। खास कर लडकियाँ सुघर, सुन्दर, शान्त और मृदुभाषिणी थीं। उनकी अवस्था ६।१० वरस से अधिक न होगी, मगर बातचीत में जैसे पुरखिन थीं। उनके माता-पिता की अनुपस्थिति के समय घर में जाने से वे बड़े आदर से बिठाती और जब तरु माता-पिता नहीं आते थे तब तरु आगन्तुक को सन्तुष्ट रखने

के लिए विशेष चेष्टा करती थीं। केवल स्पियर्स साहब के घर के ही बाल-बच्चे ऐसा व्यवहार करने में प्रवीण नहीं, अंगरेज गृहस्थ-मात्र के बाल-बच्चे ऐसे ही होशियार होते हैं। उनके यहाँ बालकों को बचपन से ही शिष्टाचार की शिक्षा मिलती है। वह शिक्षा जबानी नहीं दी जाती। लड़की-लड़के घर में माता-पिता और परिवार के आचरणों को देख कर उनसे ही ऐसा व्यवहार सीखते हैं। इंग्लैंड—लन्दन—में भले आदमियों के लड़की-लड़के तो ऐसे भव्य शिष्ट शान्त व्यवहार के द्वारा लोगों को मोहित किया ही करते हैं, किन्तु उस देश की आव-हवा ही ऐसी है कि सड़को पर मारे मारे फिरने वाले नीच श्रेणी के लड़की-लड़के भी बातचीत और व्यवहार में अत्यन्त नम्र और विनीत हैं। वे हम लोगों को भी “मास्टर” कह कर पुकारते और पूछे हुए प्रश्न का उत्तर पाने पर धन्यवाद दिये बिना नहीं जाते।

पार्लियामेंट महासभा-भवन (Houses of Parliament) । सन् १८३४ ई० में १६ अक्तूबर को आग लग जाने से पार्लियामेंट का पुराना घर नष्ट हो गया तब सन् १८४० में २७ अप्रैल के दिन इस नये घर की नींव पड़ी और सन् १८५६ में, ३० लाख पाँड की लागत से, यह बन कर तैयार हो गया। सन् १८८० में यह भवन सर्वाङ्ग-सम्पन्न हुआ। इस बार यह इमारत ऐसे ढङ्ग से और ऐसे माल-मसाले से बनाई गई है कि सहसा कोई दैवी आपत्ति उसका कुछ बना नहीं सकती। सारी इमारत को एक छोटा सा गाँव ही कहना चाहिए। २७ बीघे जमीन में इमारत का घेरा है। यह इमारत टेम्स नदी के किनारे, ८४० फुट लम्बी, है। इसका टाक-टावर (Clock-Tower) ३२० फुट ऊँचा है। जिस समय पार्लियामेंट की कोई बैठक होती है उस समय इसी टावर में एक बिजली की रोशनी



वेस्ट मिन्सटर एबी—पृ० १०६

जला करती है । इस टाक-टावर में जो गिनट की सुई है वह साठ ग्यारह फुट लम्बी है । इसका घटा वजन मे ३८० मन का है । सायकाल के सत्राटे मे सारे लन्दन के लोगो को उसका शब्द सुन पडता है । उस भारी घटे का नाम है “विग-बेन” (Big-Ben) । वजने वाली साधारण घडियों में जैसे दो चाभी दी जाती हैं वैसे ही इसमे भी दो चाभी दी जाती हैं । अन्तर केवल इतना ही है कि इसकी एक चाभी देने में दस मिनट और दूसरी चाभी देने मे पांच घटे का समय लगता है । इस प्रकार एक सप्ताह मे केवल दो बार चाभी देने की—कूकने की—जरूरत पडती है । इसका समय इतना ठीक रहता है कि दिन-रात में तीन या चार सेकंड से अधिक अन्तर कभी नहीं पडता । कभी कभी तो एक सेकंड से भी कम अन्तर पडता है । इसकी सब से ऊँची चोटी का नाम है विक्रोरिया-टावर (Victoria Tower) । उसका घेरा ७५ वर्ग-फुट और उँचाई ३४० फुट है । इस लम्बे-चौडे भवन में लार्डस्-सभामंडप (House of Lords) और कामन्स सभामण्डप (House of Commons), मध्य-हाल (Central Hall) राज-प्रकोष्ठ (Royal State Apartment) के सिवा ग्यारह चौक (Open Quadrangular Courts), पांच सौ प्रकोष्ठ (Apartments) और अट्टारह महल (Official residences) हैं । इनके सिवा सुसज्जित और सुप्रशस्त बत्तीस कमेटी-घर, पुस्तकालय, आफिस, भोजन-भवन आदि न-जाने कितने स्थान हैं । सुविशाल ब्रिटिश-साम्राज्य के शासन-कार्य के उपयुक्त ही यह सभागृह है, इसमे कोई सन्देह नहीं । इस इमारत मे प्रवेश करने के उपरान्त पहले हाल के दोनों ओर हैम्पडेन (Hampden) और फाक्स (Fox) आदि नौ राज-मन्त्रियो की मूर्तियाँ देखने को मिलती हैं । इसके बाद ८० फुट उँचा अष्टकोण सेन्ट्रल हाल है । इसी के बाईं ओर से कामन्स

सभा में और दाहिनी ओर से लार्ड-सभा में जाना होता है। सभा-सदों की आंखों को जिसमें आराम हो इसलिए सभामण्डप के ऊपर काँच की छत पर रोशनी होती है। इस सभा के किसी एक सभासद की सिफारिश से इस सभामण्डप में प्रवेश करने का टिकट मिल सकता है। मैं कई दिन इस सभामण्डप में उपस्थित हुआ। उन दिनों में किसी विशेष बात पर आलोचना नहीं हुई। कामन्स-सभा के ६७० सभासद हैं। किन्तु सभा-भवन में कुल ४७६ सभासदों के बैठने की सीटें हैं। रास रास मौकों पर, (जैसे ग्लाडस्टन के होमरूल-बिल (Gladstone's Home-Rule Bill) के समय), अधिक कुर्सियाँ रख दी जाती हैं।

इस विराट्-भवन में नर्मन-राजा विजयी विलियम (William the Conqueror) से लेकर सब राजों की मूर्तियाँ, अपने अपने राज-चिह्नो के साथ, स्थापित हैं। इस भवन में न-जानें कितनी बातों और मामलों की आलोचनाएँ और निश्चय हो चुके हैं और अब भी होते हैं। उन सब का वर्णन सम्भव नहीं। अतएव कवि की कुछ पक्तियाँ लिख कर इसका वृत्तान्त समाप्त किया जाता है।

“ The echoes of its vaults are eloquent,
The stones have voices, and the walls do live,
It is the house of memory ”—Maturin

कालेज की बोट-दौड़ (The University Boat-race)। सन् १८८६ ई० में ३० मार्च को यह जगत्प्रसिद्ध बोट-दौड़ हुई थी जिसका वर्णन किया जाता है। सन् १८२६ से यह बोट-दौड़ प्रचलित हुई है।

चारों ओर वसन्त की हवा डोल रही थी। पृथ्वी के नर-नारी, पशु-पक्षी, यहाँ तक कि चेतना-रहित जड़-जगत् (वृक्षादि) तक के

आनन्द से रोमाञ्च हो आया था । स्फूर्ति की हवा शीत-पीडित ससार (यूरोप) में नवीन जीवन का सञ्चार करती हुई अभिनव सुन्दर दृश्यों के द्वारा सब जीवों को प्रसन्न और प्रफुल्ल बना रही थी । किन्तु पाठकगण, उस देश में हमारे यहाँ के वसन्त की कोई बात नहीं देखी जाती । ऋतुराज का वह आधिपत्य वहाँ नहीं है । ब्रिटिश-राज्य के वायु-बल के प्रताप के आगे सार-जगत् के हर्ता-कर्ता-विधाता प्रचण्ड सूर्यदेव भी वहाँ भय से सकुचे से रहते हैं, वसन्त किस गिनती में है । हमारे यहाँ के वे तमाल-तरु के नये पत्ते, खिले हुए टेसू के फूल, सुगन्धित नींबू के फूल, अपनी भीनी भीनी महक से सब दिशाओं को दूर दूर तरु सुगन्धित बना देने वाली आम की मञ्जरियाँ, चटकीली चांदनी, चन्दन-सुगन्धित मलयाचल का मन्द पवन, कोमल हरे पत्तों से सुशोभित पेड़ों पर कल्लोले कर रही कोकिलाओं का हृदय और मन को विह्वल बना डालने वाला सुमधुर कुहुरव यूरोप में असम्भव है । वहाँ शरीर और मन को शिथिल कर देने वाला कवि-वर जयदेव का वसन्त-राग का यह गीत नहीं सुन पड़ता—

“ललितलवङ्गलतापरिशीलनकोमलमलयसमीरे ।
मधुकरनिकरकरम्बितकोकिलकूजितकुञ्जकुटीरे ॥
विहरति हरिरिह सरसवसन्ते ।
नृत्यति युवतिजनेन सम सखि विरहिजनस्य दुरन्ते ॥”

जिस वसन्त ऋतु के आने पर भारत में क्रीड़ा करने को निकुञ्ज-वन में कृष्ण के पास शीघ्र जाने के लिए सखियाँ राधिका को—

“रतिसुखसारे गतमभिसारे मदनमनोहरवेशम् ।
न कुरु नितम्बिनि गमनविलम्बनमनुसर तं हृदयेशम् ॥

धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली ।

पीनपयोधरपरिसरमर्दनचञ्चलकरयुगशाली” ॥

—कह कर उत्तेजित करती हैं, उस समय पृथ्वी के प्रधान नगर लन्दन के लोग कवि बर्जिल के साथ “Cuncti adsint, meritæque expectent præmia palmæ” (आओ, सब उपस्थित हों और उपयुक्त पुरस्कार की आशा करें) यह गीत गाते गाते कालेज-बोट-दौड़ के लिए विशेष उद्योग करते देख पड़ते थे। इंग्लैंड के नेत्र-स्वरूप आक्सफोर्ड (Oxford) और केम्ब्रिज (Cambridge) विश्वविद्यालयों के चुने हुए सोलह बलिष्ठ नौजवान (उनमें एक लार्ड एम्पथिल [Lord Amptill] भी थे) डांड चलाने में शक्ति और होशियारी दिखला कर अपनी वीरता का परिचय देंगे। इसी के लिए एक महीने से तरह तरह की तैयारियाँ हो रही थीं। मानसिक उत्कर्ष के साथ शारीरिक बल-विक्रम आदि के विकास पर जिनका ऐसा ध्यान है उनकी जाति की उन्नति कैसे न हो? केवल शरीर या मन की उन्नति से यथार्थ उन्नति का लाभ असम्भव है। एक साथ दोनों की पुष्टि करना हर एक विद्वान (समझदार) जाति का कर्तव्य है। आर्यलोगों के अभ्युदय-समय में उनकी हठ-योग के अभ्यास पर विशेष दृष्टि थी। प्राचीन ग्रीक लोग इस बात में यूरोप के लिए आदर्श थे। वर्तमान समय में यूरोप और अमेरिका, खासकर इंग्लैंड, इस बात को बहुत अच्छी तरह समझते हैं।

आक्सफोर्ड का चिह्न हलका, नीला और केम्ब्रिज का चिह्न घने नीले रंग का है। लड़के, जवान, बूढ़े नर-नारी दूकानदार, पसारी, गाडीवान, कुली-मजदूर, गरीब दीन-दुखी सन्तान (Children of the gutter) तक—सब दो में से एक तरह का फीता (Ribbon), नेकटाई (Necktie) या फूल (Rosette) लगाये हुए थे। यहाँ

तक कि जिन्हे यह भी नहीं मालूम कि आक्सफोर्ड या केंब्रिज कहाँ है, या विश्वविद्यालय किसे कहते हैं*, जो नाव पर कभी चढ़े नहीं, जिन्होंने वोट-दौड़ कभी देखी तक नहीं, उन्होंने भी एक-न-एक पत्र ग्रहण करके भक्ति-सूचक उस पत्र का चिह्न धारण किया था। कितने ही लोगो ने केंब्रिज की ओर से और कितने ही लोगो ने आक्सफोर्ड की ओर से ढेर के ढेर रुपयो की बाजी लगाई थी † ।

अनेक ओर से अनेक रंग के लोग अनेक प्रकार की सवारियों पर और पैदल सरेरे वोट-दौड़ की जगह को जाने लगे। दस बजे तक पटनी (Putney) से मोरलेक (Mortlake) तक, साढ़े चार मील तक, नदी के दोनों ओर सचाखच भर गये। वोट-दौड़ के आरम्भ होने के तीन घंटे पहले ही वेस्टमिनिस्टर-पुल (Westminster Bridge) से मोरलेक तक, पाँच कोस तक टेम्स नदी का जल अनेक ढग के, अनेक तरह की पोशाके पहने बुड्ढे-जुडिया, युवक-युवती और बालक-बालिकाओं से परिपूर्ण था। विजली और भाफ से चलने वाले बोटों

* Grand daughter—Grand-ma, What they by these light and dark blue ?

Grand-mother,—Eton and Harrow are going to row a cricket match

बालिका पौत्री—दादी, यह सत्र हलके नीले और घने नीले के माने क्या है ?

बूढ़ी दादी—ईटन और हारो (लन्दन के निरुत्सव दो प्रधान स्कूल) क्रिकेटमैच (गेंद का खेल) खेलेंगे ।

कालेज—वोट-दौड़ के सम्बन्ध में बहुत से लोगों को ऐसा ही ज्ञात है ।

† यहाँ के लोग बाजी लगाने में बड़े बहादुर हैं। इसी दौड़ में न्यूनाधिक एक करोड पौण्ड का जुआ हो गया। मैं जिस होटल में ठहरा था उसके सब लोगों ने एक-न-एक पत्र लिया था। केवल मैं ही तटस्थ था। उन में से २।६ आदमियो ने बाजी भी लगाई थी। यहाँ घोट-दौड़, वोट दौड़ और पार्लियामेंट के मेम्बरो के चुनाव में खूब बाजियो की धूम होती है।

से लेकर गधा-बोट तक अनेक तरह के जलयान देख पडते थे । उन जलयानों में एक कम्बिज का, एक आक्सफोर्ड का, एक अम्पायर (Umpire) का और एक एक समाचारपत्र का बोट विशेष गभीरता के साथ धीरे धीरे मोरलेक की ओर जा रहे थे । व्यवसायी लोग अपने विज्ञापन-प्रचार के लिए अनेक तरह के बोटों को अनेक तरह से सजाकर लोगों का ध्यान खींचने के लिए विशेष यत्न किये हुए थे । किनारे सात आठ जगह प्राय २०००० दर्शकों के खडे होने और बैठने की व्यवस्था की गई थी । देखते ही देखते सब स्थान भर गये । टिकिट तीन रुपये से लेकर एक गिन्नी तक के थे ।

नियत समय पर, चार बजे, सुन्दर सुस्थ सबल सोलह जवानों ने बहुत साफ-सुथरी दो छोटी डोंगियां 'पटनी' से छोड़ीं । दस ही मिनट में वे हमारे सामने आकर उपस्थित हो गये । जैसे शान्त और एकाग्र भाव से, गौरव और मर्यादा के साथ, आसन जमाये हुए वे डाँड चला रहे थे उसे देखने से यह नहीं जान पडता था कि इन लोगों में किसी तरह की लाग-डाँट है । हमारे देश में ऐसी दौड होती तो बार बार उछल कूद कर, डाँड से पानी उथल-पुथल कर, चिल्लाकर, गोलमाल किये बिना पराक्रम प्रकाशित न होता । असल बात तो यह है कि जिस देश पर विधाता की कृपा होती है वहाँ नीम भी मीठी हो जाती है ।

थोड़ी ही देर में यह खबर फैल गई कि कम्बिज ने दस हाथ आगे बढ़कर आक्सफोर्ड को जीत लिया । पटनी से मोरलेक तक पहुँचने में बीस मिनट चौदह सेक्रेड समय लगा था । जैसे फल प्रकाशित हुआ वैसे ही मैं डेरे को लौट पडा । राह में देखा, दौड की सारी खबर सहित अनेक अखबार विक रहे हैं । देखो, अँगरेजों की फुर्ती और उद्योग ।

यहाँ जल और स्थल में पाँच लाख लोगों का उत्साह, उद्योग और निर्मल प्रफुल्लता देख कर मुझे बड़ा ही आनन्द मिला । इस प्रकार की भारी भीड़ के ऐसे आमोद और आह्लाद प्रकाशित करने से देश के नवयुवकों को शारीरिक कसरत आदि के सम्बन्ध में जैसा उत्साह दिया गया उसका फल निस्सन्देह बहुत ही अच्छा हुआ होगा । ऐसा उत्साह हजारों पुस्तकों और उपदेशों से कभी नहीं हो सकता । और भी एक बहुत ही सुखदायक भाव इस समय मेरे मन में उठा था । मैंने सुना था कि जगन्नाथ जी के मन्दिर में पड़ा लोगों के बालक जगन्नाथ जी के सामने हाथ जोड़ कर प्रार्थना करते हैं कि “भगवन्, ससार को सुखी करो” । सचमुच इससे बढ कर मनुष्य की उच्च कामना हो ही नहीं सकती । पहले मुझे विश्वास ही नहीं था कि व्यक्तिगत स्वार्थपरता-प्रधान देश के देवमन्दिर में—“धन दीजिए, पुत्र दीजिए” के स्थान में—ऐसी उदार उन्नत प्रार्थना की जा सकती है । इसी से उल्लिखित समाचार सुनते ही हृदय में एक अभिनव आनन्द की विजली सी दौड़ गई थी । “भगवन्, ससार को सुखी करो” यह बात ऐसी मीठी मालूम पड़ी कि जब तब याद आने से और जी भरकर कहने से मुझे अद्भुत सुख और शान्ति मिलती है । इस भारी भीड़ का समारोह मैं समझ सका । यह भी मुझे मालूम पडा कि इतने लोगों को एकत्र पवित्र सुख का भोग करते देखने से अपने को कैसा अतुल और अनिर्वचनीय सुख मिलता है । यदि ससार इसी तरह चिरकाल के लिए सुखी हो तो मेरी समझ में इस मनुष्य-लोक के निकट स्वर्गलोक भी अत्यन्त तुच्छ है ।

शीश-महल (Cystal Palace) । यह ख़ास लन्दन से जरा बाहर हट कर सिडेनहम नामक उपनगर में है । सन् १८५१ की महा-प्रदर्शनी के भवन के माल-मसाले से यह भवन बनाया गया है ।

यहाँ की घड़ी भी एक देखने की चीज है। यह पार्लियामेंट महासभा की घड़ी बनाने वाले कारीगर के हाथ की बनी हुई है। इस का डायल (Dial) पार्लियामेंट की घड़ी के डायल से भी बड़ा है। बहुत लोगो का कहना है कि घड़ी का इतना बड़ा डायल और कहीं नहीं है। डायल का घेरा ४० फुट है। दोनों सुइयों का वजन साढ़े सात मन है। घड़ी सुई १-६ फुट लम्बी है और हर दफा आध इंच के हिसाब से सरकती है। यह घड़ी भी खूब ठीक चलती है— दो दिनों में केवल एक सेकिड का अन्तर पडता है।

इस शोशमहल से संयुक्त एक शिल्प, विज्ञान और साहित्य का विद्यालय भी बहुत दिनों से अच्छे प्रबन्ध के साथ चल रहा है।

बाहर के भारी कुड में तीन नकली ट्रोप (टापू) बने हुए हैं। उनमें से दो में पुराकाल (Early Geological periods) के बहुत से विशाल-काय जीव-जन्तुओं की, सजीव-सी जान पडने वाली, मूर्तियाँ इस ढंग से रक्खी गई हैं कि जान पडता है, चलने ही चाहती हैं। इसके पास ही एक जगह, भूतत्व के प्रमाणानुसार सारी पृथ्वी की तहें अच्छी तरह दिखलाई गई हैं। इन्हें देख कर बालक भी इस दुरूह विद्या के मौलिक तत्त्वों को अनायास ही समझ ले सकता है। दो एक जन्तुओं के नाम और माप का उल्लेख करने ही से पाठकगण इसका रहस्य कुछ कुछ समझ सकेंगे।

इक्थियोसोरस (Ichthyosaurus)—सत्य-मगर। जिस समय का यह जीव है उस समय का जल गँदला था। उस जल में अनायास अपना शिकार देख लेने के लिए विधाता ने इसकी आँखें भी बहुत बड़ी बनाई हैं। यह जन्तु ३५ फुट लम्बा है।

मेगालोसोरस (Megalosaurus) अतिकाय मासभोजी कीड़ा। यह

३६ फुट लम्बा है । इसके शरीर का घेरा साढ़े वाईस फुट है । शरीर के देरते इसका सिर बहुत ही बड़ा है ।

इगुमनोडन (Iguanodon)—घास फूस खाने वाला दन्तहीन कीड़ा । यह यद्यपि मेगालोसरस की अपेक्षा छोटा है, पर उससे कम नहीं है । टिलगेट जंगल (Tilgate Forest) में, सन् १८५३ में, जब इसका ढाचा पाया गया था तब २१ वैज्ञानिक पण्डितों ने इसके पेट में बैठ कर खाना खाया था । यहाँ उसका नकली शरीर बनाने में ६५० बुशेल नकली पत्थर, १०० फुट लोहे का पत्तर, ६०० ईंटें, २० फुट इन्धवार आदि सामान लगा था ।

इसी तरह की बहुत सी चीजें देखने में आईं । कुण्ड के जल में बहुत से प्राचीन सीपी शम्बूक (mollusca) आदि की भी नकलें हैं । मन-बहलाव के साथ विज्ञान-शिक्षा देने वाला स्थान इससे बढ कर और कहीं नहीं है । धन्य अँगरेजों की उद्योगशीलता ।

चारों ओर ६०० बीघे जमीन के ऊपर बागोचा, तालाब, फुहारा, मैदान आदि सब है । ८०००० आदमी अनायास मजे में—यहाँ विचर सकते हैं । यहा निशानेबाजी, क्रिकेट, फुटबाल, लन्देनिस, बाइसिकिल चलाना, नाव चलाना, स्विच-बैक रेल (Switch back Railway) आदि सब तरह की कसरतों का सुन्दर प्रबन्ध है । गर्मी के दिनों में फुहारे के खेल और रात को आतशबाजी के द्वारा दर्शकों का मनोरञ्जन किया जाता है ।

दुख की बात है कि कल के द्वारा शतरज का खेल यहाँ नहीं देख पडा । जान पडता है, कारीगरी प्रकाशित हो जाने से वह इस स्थान से हटा दिया गया है । एक बड़ा आइना यहाँ था, जिसमें देखने से अपना चेहरा बन्दर और भालू का ऐसा देख पडता था, वह भी अब यहाँ नहीं है । यहाँ एक छोटी सी नाव भी थी जिस

पर एक आदमी एक कुरो के साथ अटलान्टिक महासागर को हुआ था । वह भी नहीं देखने को मिली ।

लन्दन टावर (The Tower of London) । हमारे यहाँ कल में जैसे भारी क़िला है और उसमें फौज तोप गोला बारूद आदि का सामान जमा रहता है वैसा क़िला या उतना सामान—कुछ भी लन्दन में नहीं है । क्योंकि समुद्र ही इंग्लैंड का क़िला है । क जाता है कि रोमन सम्राट् जूलियस सीजर (Julius Caesar) इंग्लैण्ड पर अधिकार कर लेने के बाद, इसी जगह पर नदी के किन एक क़िला बनाया था । किन्तु इस वर्त्तमान भारी प्रबन्ध की नर्मनराज-विजयो विलियम ने ही डाली । बहुत दिनों तक नगर रक्षा के लिए यह टावर किले के काम में लाया जा चुका है । इस सिवा यहाँ सुलह लडाई आदि के लिए राज-सभा भी लगती थी राजविद्रोही भी यहाँ कैद रहते थे । सारे इंग्लैंड की टकसाल भी य थी । इसके भीतर बहुत से राजघराने के आदमियों और प्रतिष्ठि पुरुषों को प्राणदण्ड भी दिया जा चुका है । किन्तु इस समय य स्थान प्राचीन अस्त्र-शस्त्र, कवच आदि और राजकीय मुकुट, आभूषण बहुमूल्य रत्न आदि रखने के काम में ही लाया जाता है । इस ऐतिहासिक स्थान का वर्णन करना एक कठिन काम है । इंग्लैंड के इतिहास को जिन्होंने पढा है वे यहाँ के माहात्म्य को बहुत अच्छी तरह जानते हैं । इस किले के पहरेदार लोग आज तक वैसी ही पोशाक पहनते हैं जैसी पोशाक पहले के पहरेदार पहनते थे । ये 'गोसादक' नाम से प्रसिद्ध हैं । अंगरेजी 'बुफेटियर' शब्द बिगड कर 'बीफ-इटर' [Beef-eaters (Buffetiers) or Yeomen of the Guard] बन गया है ।

लन्दन-टावर अनेक विभागों में बँटा हुआ है । जैसे—

Tower Hill Middle Tower, Byward Tower Bell Tower, Traitors Gate, Wakefield Tower, Regatta, White Tower, St John's Chapel St Peter's and Vinclur Chapel, Banqueting Hall, State floor, Council Chamber, Armoury, Parade, Tower Green, Beauchamp Tower, Wellington Barricks &c

यह ७८ बीघे जमीन पर बना हुआ है । पहले चारो ओर जो किले की लाई थी वह इस समय सूखी पडी है । सडक से टावर हिल में प्रवेश करते ही बाईं ओर प्राणदण्ड का स्थान था । यह स्थान इस समय रेल-गाडी के द्वारा घिरा हुआ है । जिस काठ के टुकडे पर सिर काटा जाता था वह, सिर काटने का शस्त्र और जल्लाद का टोप आदि चोरे टावर में, प्राचीन वस्तुओं में, रक्खी हुई हैं ।

वोचाम्प-टावर में कैदी लोग रक्खे जाते थे । इसकी दीवारों में बहुत से कैदियों के हाथों की लिखावटें मौजूद हैं । कैदियों ने हृदय का शोक या दुःख प्रकाशित करने के लिए जो कुछ लिखा या अंकित किया है उसे देख कर मन में एक साथ ही अनेक भावों का आविर्भाव होता है ।

जिस घर में युद्ध का सामान रक्खा है उसमें, पहले समय में काम में लाये जाने वाले युद्ध-कुठारों से लेकर वाटलू के युद्ध में जीती हुई तोपें और भारतवर्ष के युद्ध और एशिया-खंड के अस्त्र-शस्त्र तक रक्खे हुए हैं । अवध की नवाबी अमलदारी की जह्नादी तरवारे और नेपोलियन का नर-बलि करनेवाला खड्ग भी यहाँ देख पडा । यहाँ विजयी विलियम से लेकर दूसरे जार्ज तक, ईंगलैंड के राजाओं की सुसज्जित घुडसवार मूर्तियाँ मौजूद हैं ।

टावर में राजा की आज्ञा से मारे गये व्यक्तियों में से सन् १५५४ में मारे गये सफोक के ड्यूक (Henry Grey, Duke of Suffolk) का सिर लन्दन के मिनेोरिस गिरजे (Church Minories) में एक

काच के घेरे मे रक्खा देखने में आया । वह सिर किस तरह पहुँचा, इस धारे में वहाँ कोई कुछ नहीं बता सका । वहाँ के पाने गिरजे की अस्थावर-सम्पत्ति की प्राचीन सूची (List) में उस उल्लेख दिखलाया ।

लन्दन-टावर में प्रधान देखने की चीज़ है शाही रत्नागार । इस सुवर्ण-रचित बहु-मूल्य मणि-मुक्ता-जटित अनेक राजमुकुट और रादण्ड हिफाजत के साथ यत्नपूर्वक सुरक्षित हैं । हमारे यहाँ के प्राचीन कोहनूर हीरे की नकल भर यहाँ है । असल हीरा विण्डसर के राजमहल (Windsor Castle) में है । बहुत लोग इसी को असल समझते हैं, पर यह उनकी भूल है । यहाँ पर कोहनूर का इतिहास लिख देना ठीक समझ कर उसका भी संक्षिप्त वर्णन नीचे दिया जाता है ।

पञ्जाब-केसरी महाराज रणजीतसिंह के हाथ लगने के पहले भारत में कभी कोहनूर था कि नहीं, इसका कोई प्रमाण नहीं है । मध्य-एशिया के किसी मुसलमान राजा को जीत कर उससे यह हीरा रत्न रणजीतसिंह ने पाया था । यह हीरा सदा उनके सहित हाथ में बाजू में विराजमान रहता था । एक समय किसी ने इसकी कीमत के बारे में पूछा तो राजा साहब ने उसके उत्तर में कहा—“पाँच जूते” । अर्थात् उन्होंने एक आदमी को पाँच जूते मार कर—उसको परास्त कर—यह हीरा छीन लिया । यदि कोई और अधिक शक्तिशाली होगा तो वह उनके पाँच जूते मार कर इसे छीन लेगा । मूल्य तो इसका कुछ है ही नहीं, यह अमूल्य है । पञ्जाब पर अधिकार कर लेने के बाद वह हीरा ईस्ट-इण्डिया-कम्पनी के हाथ लगा । और, वह प्रसिद्ध राजपुरुष जान लारेंस (John Lawrence) के पास जमा रहा । असावधानी के कारण लारेंस उसकी डिविया बेल्ट-कोट (Waist-coat) की जेब में रख कर भूल गये । इसको डेढ़ महीने बाद

लार्ड डलहौसी (Lord Dalhousie) के खोजने से, बहुत घबराहट और कष्ट के उपरान्त हीरे की डिविया का पता लगा । बात यह हुई कि लारेंस साहब का जो सर्दार वैरा था उसने उसे मामूली कांच का टुकड़ा समझ कर, वेस्ट-कोट की जेब से निकाल कर, उसे एक टोन के बक्स में डाल दिया । सन्तोषपूर्वक खोज करने के समय लारेंस को यह आई कि उन्होंने उस हीरे की डिविया को वेस्ट-कोट की जेब में रख लिया था । उन्होंने अपने वैरा से पूछा तो उसने खोज कर उस हीरे को निकाल दिया । मूर्ख वैरा नहीं जानता था कि उस डिविया में ऐसा अमूल्य रत्न रक्खा हुआ है । जो कुछ हो । उसके फिर मिल जाने से महात्मा लारेंस की इज्जत बच गई । इसी से उन्होंने अपने प्रहोभाग्य समझे । जिस कोहनूर को पाने के लिए राजे में परस्पर कतने ही युद्ध तरु हो गये हैं, जिसके लिए एक आदमी ने दूसरे आदमी की आंखें तक निकाल लीं, उसी हीरे को हस्तगत करके लारेंस यो भूल गये, यह कम आश्चर्य की बात नहीं । वास्तव में प्रसन्न वैराग्य या सन्तोष का यह एक विशेष लक्षण है । एक मामूली चांदी की चवत्रो को भी कहीं रख कर हम इस तरह नहीं भूल जाते, और लारेंस साहब ऐसी अमूल्य निधि को रख कर लारेंस को कुछ भी उसका ध्यान नहीं रहा । वास्तव में वह एक श्रेष्ठ विरक्त थे ।

इसके बाद सन् १८५० में वह हीरा महारानी विक्टोरिया के पहल से पहुँचाया गया । रत्न-तत्त्व के पूर्ण ज्ञाता ब्रुस्टर (Sir David Brewster) की सम्मति के अनुसार विक्टोरिया को स्वामी प्रिन्स अलबर्ट ने उसे फिर से कटवाया । उसका एक ऐव साफ करने में बहुत मेहनत करनी पड़ी थी । छेदकचक्र (Cutting Wheel) का चक्कर एक मिनट में तीन हजार बार की तादाद से घुमाने पर भी उसे बिलकुल वे-ऐव बनाने में लगातार ३८ दिन लगे थे । पहले इसका

वजन १८६ $\frac{1}{4}$ करात था । इस काट-पीट में यह ८० करात कम होकर १०६ $\frac{1}{4}$ करात रह गया है । ८६ $\frac{1}{4}$ करात का एक तोला होता है । इसके तरशवाने में आठ हजार पौंड की लागत आई थी । पहले वजन में इसकी कीमत एक लाख चालीस हजार पौंड कूती गई थी ।

जो कुछ हो, महात्मा लारेन्स के हाथों कोहनूर का अच्छा इस्तेमाल हुआ । उन्होंने यह अच्छी तरह दिखा दिया कि जवाहरात का वास्तव में कुछ मूल्य नहीं है । विधाता ने लारेन्स के हाथों उस हीरे को उसके योग्य स्थान में पहुँचा कर हमको यह शिक्षा दी है कि जड़ वस्तुओं को अत्यन्त अधिक आदर देना केवल अपने महत्त्व या गौरव को कम करना है । जड़ वस्तु को, चाहे वह अत्यन्त ही दुर्लभ क्यों न हो, जड़ के योग्य ही सम्मान या महत्त्व देना उचित है । खास कर जो जड़ चीज लोगों को कोई लाभ नहीं पहुँचाती, उनके किसी काम नहीं आती, उसकी इज्जत कैसी ? फिर मनुष्य के अहंकार को ही केवल बढ़ा देना जिसका काम है उस वस्तु को ज्ञानी लोग, दोष की खान समझ कर, घृणा की दृष्टि से ही देखते हैं ।

विण्डसर-महल (Windsor Castle) । विण्डसर एक छोटा सा क़स्बा है । यहाँ का राजमहल अत्यन्त प्राचीन है । पहले ठीक इसी जगह पर विजयो विलियम राजा ने एक इमारत बनवाई थी । उसके बाद तीसरे एडवर्ड (Edward III) के शासन-काल में यह महल बना । चौथे जार्ज के समय में और उसके बाद दस लाख पौण्ड खर्च करके इसकी विशेष उन्नति की गई है । यहाँ के एक कमरे में मार्लबरो, नेल्सन और वेलिंगटन, इन तीनों वीरों के अनेक स्मारक-चिह्न इस समय भी मौजूद हैं । अन्य एक कमरे में वाटर्लू-युद्ध के वीरों के चित्र सुशोभित हैं । एक कमरे में एक सजा हुआ

हिन्दुस्तानी इफा देख पडा। महल के आंगन में एक फुहारा है। राजा तीसरे जार्ज के समय में उनकी प्यारी लाल मछलियाँ इस फुहारे के पानी में क्रीडा किया करती थीं। प्रसिद्ध है कि उक्त राजा एक दिन तीसरे पहर इन मछलियों की क्रीडा देख रहे थे, इसी समय प्रधान मन्त्री पिट पार्लियामेंट मे एक बिल पेश करने के लिए राजा की आज्ञा लेने को वहाँ उपस्थित हुए। उनकी सूचना पाकर राजा ने कहा कि “अगर मेरी प्यारी लाल मछलियों की बात पहले उठा कर बिल पेश करो तो मैं तुमको अनुमति दे सकता हूँ, अन्यथा नहीं”। मन्त्री ने और कोई उपाय न देख कर लाचार यही स्वीकार कर लिया और पार्लियामेंट महा-सभा में बिल पढने के पहले “लाल मछली” उच्चारण किया। सभा में उपस्थित कोई भी सभ्य इस रहस्य को उस समय नहीं समझ सका। पीछे बहुत दिनों के बाद असल बात जाहिर हो पडने पर लोगो में खूब हँसी-दिखगी हुई।

इसी स्थान के अन्तर्गत, महल से कुछ दूर पर, एक नकली कुण्ड और फुहारा (Virgin Water and Falls) है। कुण्ड में एक छोटे जगी जहाज की नकल (Miniature Man of War) रक्खी हुई है। यह कुण्ड $1\frac{1}{2}$ मील लंबा और $\frac{1}{4}$ मील चौड़ा है। इस पार से उस पार जाने के लिए बीच बीच में कई पुल बने हुए हैं।

क्यू-बाग (Royal Botanic Gardens, Kew)। क्यू पहले एक गाँव था। अब उसकी गिनती लन्दन के उपनगरों में है। यहाँ का बोटानिक गार्डन (उद्भिदुद्यान) पृथ्वी भर में सर्वश्रेष्ठ है। और कहीं भी वृक्षों आदि का ऐसा समूह मैंने नहीं देखा। अँगरेजों के सभी काम ऐसे ही हैं। यह भारी बाग ७५० बीघे जमीन में है। इस का शीशे का बना हुआ उष्ण गृह (Hot-house) इतना ऊँचा है कि उस में ६६ फुट ऊँचे ताड के पेड रखे हैं। उन के सिवा केला,

नारियल, काफ़ी, कपास, अदरक, जायफल और जावा द्वीप के 'उपास' वृक्ष तक अच्छी तरह बढ़ कर शोभायमान हैं। एक पानी के कुण्ड में कमल, कोकावेली तक के फूल खिल रहे हैं।

इसी के अन्तर्गत कई भवनों में उद्भिद्विद्या की शिक्षा के लिए अनेक चीजों की नकलें मौजूद हैं। नकली फूल-फल आदि देखने में ठीक असली के ही भाँफिक हैं। वैज्ञानिक खोज आदि के लिए और भी बहुत सी सामग्री यहाँ रक्खी हुई है। इस बाग में एक ऊँचा पगोडा है, उसका नाम है सूर्य-मन्दिर (Temple of the Sun) सन् १८६१ में लगाई गई एक ध्वजा (Flagstaff) यहाँ देखने में आती है। वह ब्रिटिश-कोलम्बिया देश के डगलस फर वृक्ष (Douglas Fir of British Columbia) की १५६ फुट लम्बी एक लकड़ी है। यहाँ एक मान-मन्दिर (Observatory) भी स्थापित है।

हैमटन-कोर्ट महल (Hampton Court Palace)। क्यू से थोड़ी ही दूर पर यह विशाल राज-महल है। सन् १५१५ में कार्डिनल ओल्जी ने इसको बनवाया और पीछे उन्होंने ही राजा अष्टम हेनरी (Henry VIII) को इसे दे डाला। मेरी समय में, राजा को प्रजा की दी हुई, इससे कीमती चीज पृथ्वी पर और न होगी। महल के ठीक सामने, ३००० बीघे जमीन में, एक उपवन (Bushey Park) विराजमान है। महल के चारों ओर भी फलों और फूलों से शोभित वृक्ष-पूर्ण चमन १३२ बीघे जमीन को घेरे हुए है। इंग्लैंड के राज महलों में यही महल सब की अपेक्षा बड़ा है। महल के भीतर का बड़ा हाल १०६ फुट लम्बा, ४० फुट चौड़ा और ६० फुट ऊँचा है। यहाँ के भिन्न भिन्न भवनों में हजारों से भी अधिक चित्र-पट शोभायमान हैं। उनमें भूतपूर्व राजों के दरबार की अनेक सुन्दरी स्त्रियों के

चित्र भी हैं। इस महल के इतिहास की दो तीन पुस्तके हैं। इस महल की अस्थावर सम्पत्ति की सूची एक सौ से भी अधिक पृष्ठों की पुस्तक है। यह महल टेम्स नदी के किनारे पर होने के कारण इसकी शोभा और भी बढ़ गई है। अष्टम हेनरी की एक रानों को यहाँ से विचारालय में जाना पडा था और उसे वहाँ प्राणदण्ड दिया गया था। इसी आधार पर लोगो की धारणा है कि उसको रहने के घर में भूतो का उत्पात हुआ करता है। यहाँ की ज्योतिषी घडी (Astronomical Clock) के सम्बन्ध में भी एक विचित्र बात सुनी जाती है। सन् १५४० में अष्टम हेनरी के लिए किसी जर्मन ज्योतिषी ने यह घडी बनाई थी। इस घडी में तिथि, राशिचक्र आदि अनेक बातें देखी जा सकती हैं। उस समय के भ्रान्त मत के अनुसार इसमें सूर्यदेव को पृथ्वी के चारों ओर घूमते दिखाया गया है। कहा जाता है कि पहले जेम्स की रानी की मृत्यु के समय, सन् १६१६ के मार्च महिने की दूसरा तारीख को चार बजे, यह घडी बन्द हो गई थी। तब से जब जिस किसी ने यहाँ अधिक दिन रह कर शरीर-त्याग किया तभी, उसी घडी, यह घडी बन्द हो गई। महल में और भी एक अद्भुत चीज है। वह है सन् १७६८ में लगाई गई एक अगूर की वेल। यह पृथ्वी भर में, सब अगूरी वेलो से बडी बतलाई जाती है। बाग की भूलभुलइयाँ भी बडे मजे की चीज है। उस के भीतर जाकर बाहर निकलना सहज काम नहीं है।

सुनीति-सरचिणी सभा (Vigilance Society)। एक दिन रात को ६ बजे के समय थियेटरो की ओर होकर सडक पर मैं चला आता था। सहसा एक आदमी एक लीघो का छपा हुआ पत्र मेरे हाथ में देकर फुर्ती से चला गया। पास की रोशनी के निकट जाकर देखा,

वह पत्र अँगरेजी में इस तरह लिखा था और उसके नीचे "एक स्त्री और एक माता" के हस्ताक्षर थे ।

DEAR FRIEND,

I live in London, so probably do you. But perhaps like me you have not always lived there, but have I know a pure home in the country to which you look back now sometimes with longing and regret.

I often have occasion to pass through the gaily lighted thoroughfares of London at night, and at first sight the streets look so cheerful that one is inclined to think "What a fine city ours is, what a grand place to live in!"

But the longer one looks the less cheerful one feels it, and now I cannot see these gay streets and think of them without real anguish of heart.

Who are these degraded women and girls of the pavement? For whose benefit do they come out so gaily dressed? Whose money pays their wretched wages? Through whose complicity, through whose temptation have they fallen so low that the world calls them outcasts, and feeling themselves so, they ever more recklessly throw body and soul away?

Have you any responsibility in this? Have you in your selfishness and unrestrained passions given yourself over to the vile sin which defiles the body given you for the noblest purposes, and runs the soul created lower depths than those with whom you consort, you are forging for yourself chains of a slavery which before long not even a desire to reform will enable you to break.

Let me entreat you by all that is manly in you, by the remembrance, it may be of a good mother, of a pure home, by the terror of the certain consequences to your body here, and to your soul here and hereafter. Let me constrain you by the love of Christ who gave himself to save you from this awful slavery of sin, to flee with horror from the accursed thing, to shut the door of your mind from the unlawful thought and desire which prompt such vile action, to repent in dust and ashes and turn to Him who can save to the uttermost.

Bitter tears come to my eyes as I think what you men might be, and what you are. Now you might help and protect weak women from temptation, while, in fact, you push them down to hell.

I ask myself are these who call themselves men lower than the beasts of the field? Is there no nobility of heart, no humanity left? I cannot believe it. You and I will probably never meet in this world, but

on that day when the secret of all hearts shall be open, may you be able to date from the day you receive this letter the putting away of the sins of the flesh and the resurrection to the life of the spirit, which is indeed Life Eternal I have spoken these words to you, dear friend

A WIFE AND A MOTHER

अर्थात्—“प्रियबन्धु,

मैं लन्दन में रहती हूँ । शायद आप भी यहीं रहते हैं । किन्तु मेरी समझ में आप मेरी तरह जन्म से ही यहाँ के निवासी नहीं हैं । किसी देहात में आप का पवित्र निवास था, जिसके अभाव का, समय समय पर, उत्कण्ठा के साथ, आप अनुभव किया करते हैं ।

मुझे रात को इन अच्छी तरह प्रकाश-पूर्ण लन्दन की सड़को से हो कर अक्सर आना जाना पड़ता है । एकाएक देखने से ये सब सड़के ऐसी प्रसन्नता देने वाली जान पड़ती हैं कि जान पड़ता है “हमारा यह नगर कैसा सुन्दर है । यहाँ रहने में कितना आराम है ।” मगर जितना ही अधिक दिन रह कर देखा जाता है उतना ही वह खुशी—वह प्रसन्नता—कम होती जाती है । आज कल मैं जब इन सड़को की ओर देखती हूँ तब मेरा हृदय दुःख और शोक के भार से पीड़ित हुए विना नहीं रहता ।

आप जानते हैं, ये फुटपाथ पर टहलनेवाली हीनावस्था की स्त्रियाँ कौन हैं ? किसके लिए ये इस तरह सज धज कर टहल रही हैं ? किसके धन से ये पलती हैं ? किन्हीं सोहबत और लुभाने में ये इतना नीचे गिर गई हैं कि ससार इनको “समाज-भ्रष्टा” के नाम से पुकारता है और ये भी अपने को वैसा ही समझ कर अपने देह और आत्मा को मिटाने में लगी हुई हैं ?

आप क्या इसमें किसी तरह की अपनी भी ज़िम्मेदारी समझते हैं ? आप भी क्या स्वार्थपरता और इन्द्रिय-रूप शत्रुओं के वश में

आकर इस निन्दित पाप कर्म में लिप्त हो चुके हैं जिससे आप का पवित्र शरीर और अमर आत्मा कलङ्कित हो रहा है ? क्या सचमुच ही आप इन लियों के सहवास से अपने को उनकी भी अपेक्षा अधम बना रहे हैं और अपने बँधने के लिए ऐसी एक कठिन जजीर गढा रहे हैं जो अन्त को, हजार सुधार करने की इच्छा होने पर भी, किसी तरह कट नहीं सकेगी । यदि ऐसा ही हो तो मैं आप के आगे मनुष्यत्व की दोहाई देकर प्रार्थना करती हूँ कि आप अपनी पूजनीया मातादेवी और निष्कलङ्क गृह का स्मरण कर के, यहाँ शरीर की और इहलोक परलोक में आत्मा की भारी खराबी निश्चित जान कर, ईसा-मसीह के प्रेम के लिए—जिन्होंने हमको भयानक पाप के बन्धन से छुड़ाने के लिए अपनी बलि देदी, इस पाप-प्रवाह से बच कर भागिए, अपने हृदय से इन सब बुरे विचारों और खराब इच्छाओं को दूर कर पश्चात्ताप करते हुए हम लोगो के एक मात्र रक्षक भगवान् के चरणों की शरण में उपस्थित होइए ।

मैं जब सोचती हूँ, आप लोग पुरुष की जाति कितने अच्छे हो सकते हैं, किन्तु क्या हो गये हैं, तब लगातार शोक के आँसू बहाये बिना मुझसे नहीं रहा जाता । आप लोगों को उचित था कि कमजोर असहाय अबलाओं को सहायता पहुँचा कर उनकी रक्षा करते, किन्तु मैं देखती हूँ, आप लोग उलटे उल्टे धके देकर नरक की राह में ढकेल रहे हैं । मैं सोचती हूँ कि ये सब मनुष्य क्या पशुओं से भी अधम—गये-बीते—हैं ? इन में क्या कुछ भी मनुष्यत्व नहीं है ? ये लोग मनुष्यत्व को क्या एक दम गँवा बैठे हैं ? नहीं, मुझे विश्वास नहीं होता । बहुत सम्भव है कि इस जीवन में अब फिर मेरी और आपकी मुलाकात न होगी । पर मैं आशा करती हूँ कि उस दिन, जिस दिन सब के हृदयों का हाल प्रकाशित होगा, आप आज की तारीख को

इस भाव से स्मरण कर सकेंगे कि इस पत्र को पाने के बाद आप सब पाप छोड़ कर नवीन अमर यथार्थ आध्यात्मिक जीवन पाने के लिए तैयार हुए थे । प्रिय बन्धु, मैंने आप से एक पत्नी और एक माता के भाव से ये कई एक बातें कही हैं ।

इस पत्र के सम्बन्ध में और कुछ कहना अनावश्यक है । पाठक लोगो ने सहज ही समझ लिया होगा कि कैसे उच्च हृदय और महान् उद्देश्य से यह पत्र लिखा और बांटा जाता है । पता लगाने से मुझे मालूम हुआ कि समाज की उन्नति के लिए विशेष रूप से यत्न करने वाली एक शक्तिशालिनी सभा लन्दन में स्थापित है । अनेक अच्छे घरानों की स्त्रियां उसमें नाम लिखाये हुए हैं । उन्हीं का यह सब उद्योग है । देश के हित के लिए, मनुष्य-समाज के कल्याण के लिए अँगरेज स्त्री-पुरुष दिन रात क्या नहीं करते । बुरे को भला बनाने के लिए परिश्रम करने में ये कभी नहीं थकते । तभी तो इनके ऊपर विधाता की ऐसी कृपा है । धन्य है इनका उद्योग, उत्साह और शुभाकांक्षा ।

वेस्टमिनिस्टर एबी (Westminster Abbey) — 'The spaciousness and gloom of this edifice produce a profound and mysterious awe. We step cautiously and softly about as if fearful of disturbing the hallowed silence of the tomb, while every footfall whispers along the walls, and chatters among the sepulchres making us more sensible of the quiet. We have interrupted. It seems as if the awful nature of the place presses down upon the soul and hushes the beholder into noiseless reverence. We feel that we are surrounded by the congregated bones of the great men of past times who have filled history with their deeds, and the earth with their renown'—Washington Irving

वास्तव में इस स्थान का इससे अधिक उत्तम वर्णन ही नहीं सकता । इस स्थान का बहुविस्तृत घेरा, चारों ओर की गभोरता, दर्शकगण का धीरे धीरे चलना, साधारण शब्द की कोमल प्रतिध्वनि, ये सब एकत्र

हो कर इस विराट् समाधि-मन्दिर में चिरनिद्रा में सोये हुए यहाँ के निवासियों की पवित्र अमर आत्मा को जैसे शोक-सन्तप्त कृतज्ञ हृदय का सरल सम्मान प्रदान कर रहे हैं । यहाँ जिन लोगों की समाधियाँ हैं उनके और इस भवन के सम्बन्ध में दो एक बातें यहाँ पर लिखी जाती हैं ।

यहाँ पर मैं मन्त्रोच्चर 'पिट' (लार्ड चैथम), भारत के लाट पहले वाइसराय महात्मा 'कैनिङ्ग,' 'ब्राइट' के मित्र उन्नत-हृदय वार्ता-शास्त्रवेत्ता 'काव्डेन', नवावी अमल के ईस्ट इण्डिया कम्पनी के नौ-सेनापति 'वाट्सन' (यह चोगा पहने पल्ला हाथ में लिये बैठे हैं, दाहिनी ओर कलकत्ता नगरी घुटने टेके विजेता के निकट दरखास्त दे रही है, बाईं ओर जजीर में बँधा हुआ चन्दननगर-रूपी एक भारतीय पुरुष उपस्थित है), दासत्व-प्रथा को उठा-देने में प्रधान उद्योग करने वाले 'विल चारफोर्स,' जगद्विख्यात 'न्यूटन' (माध्याकर्षण की मूर्ति न्यूटन के देने और दो देव-मूर्तियाँ 'ज्ञान' का लिपटा हुआ कागज खोल रही हैं । ऊपर भारी गालक के ऊपर ज्योतिर्विद्या की मूर्ति है । नीचे सगमरमर के टुकड़े में बुद्धिमान न्यूटन की रोज और आविष्कार की मूर्तियाँ दिखलाई गई हैं), विवर्त्तनवाद अर्थात् क्रमविकास के प्रचार द्वारा ज्ञान-राज्य में युगान्तर उपस्थित करने वाले पण्डित 'डार्विन', प्रसिद्ध ज्योतिर्विद्या-विशारद 'हार्शेल', भूतत्त्व के पण्डित महात्मा, 'लायल', सुप्रसिद्ध राजमन्त्री 'विलियम पिट' । (यह चान्सलर की पोशाक पहने खड़े हुए जैसे वक्त्रता दे रहे हैं । इन की मूर्ति के नीचे दाहिनी ओर खड़ी हुई इतिहास की मूर्ति एकाग्रता के साथ जैसे उसे सुन रही है । बाईं ओर अराजकता-रूपी ऊधमी पुरुष जजीर से जकड़ा खड़ा है), भारतवन्धु सरल-हृदय 'लार्ड लारेन्स', सिपाही-विद्रोह की आग को घुभाने वाले महावीर 'आउट्राम' (बीच में कुछ

ऊँचे पर हाबलक साहब की मूर्ति है, और नीचे इधर उधर से आउट-राम और लार्ड क्राइड [सर कैलिन कैम्बेल] दोनों हाथ मिला रहे हैं । आसपास भारत के अनेक जातीय लोगों की शोकार्त मूर्तियाँ खड़ी हुई हैं), आफ्रिका के सुप्रसिद्ध धर्म-प्रचारक और परिव्राजक प्रेमवीर 'लिविंग्स्टन' (दो हबशी सेवक अत्यन्त कष्ट उठा कर विपत्ति-पूर्ण मध्य-आफ्रिका के पर्व-कुटीर से इन प्रात स्मरणीय महा-पुरुष के शव को यहाँ लाये थे । हबशी लोगों की कृतज्ञता से उत्पन्न प्रेम और आत्मत्यागी महासेवक परम भक्त को सम्मान देने वाले दयालु हरि की कृपा तथा प्रत्यक्ष शक्ति की सहायता के बिना ऐसी घटना का होना सर्वथा असम्भव ही था), कविवर 'गे' और दीर्घजीवी 'पार' तथा मनुष्य-सेवक अमेरिकन सौदागर 'जार्ज पीबडो' ।

कविवर गे की समाधि के पत्थर पर उन्हीं की कविता का निम्नलिखित अंश खुदा हुआ है—

*"Life is a jest, and all things show it,
I thought so once, but now I know it."*

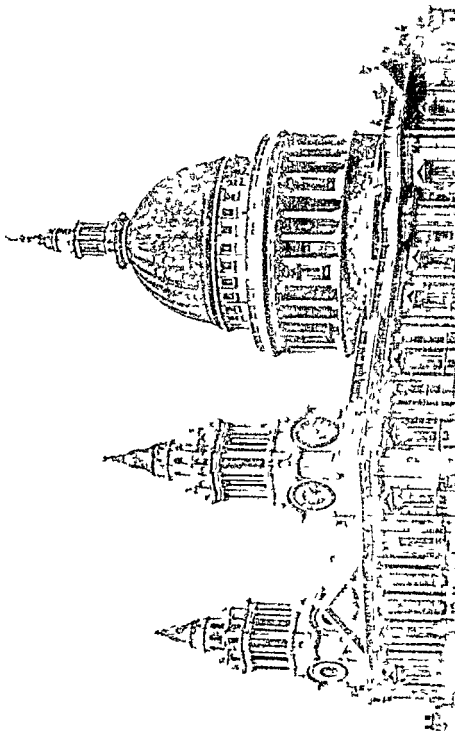
अर्थात्—जीवन असार है, सब पदार्थ इसके साक्षी हैं, इस बात को एक समय मैं सोचता था, किन्तु अब प्रत्यक्ष देखता हूँ ।

मि० पार ने १२० बरस की अवस्था में दूसरी शादी की थी और उससे कई लडकी-लडके भी उनके हुए । १५२ बरस की उम्र में इनका देहान्त हुआ । अन्त समय तक यह खूब सबल और सुस्थ थे । राजा ने इनको देखने की इच्छा से बुलाया । यह लन्दन में आये और राजभवन के गरिष्ठ भोजन करने से कब्ज हुआ, बीमार पड़े और कूच ही कर गये ।

इसी तरह चासर, शेक्सपियर, मिल्टन, मेकाले आदि पण्डितों, राजे-रजवाडों तथा अमीर-उमरावों (स्त्री और पुरुष, दोनों) की ३००

हो कर इस विराट् समाधि-मन्दिर में चिरनिद्रा में सोये हुए यहाँ निवासियों की पवित्र अमर आत्मा को जैसे शोक-सन्तप्त कृतज्ञ हृदय का सरल सम्मान प्रदान कर रहे हैं । यहाँ जिन लोगों की समाधियाँ हैं उनके और इस भवन के सम्बन्ध में दो एक बातें यहाँ पर लिखी जाती हैं ।

यहाँ पर मैं मन्त्रोत्तर 'पिट' (लार्ड चैथम), भारत के लात पहले वाइसराय महात्मा 'कैनिङ्ग', 'ब्राइट' के मित्र उन्नत-हृदय वार्ता-शास्त्रवेत्ता 'काव्डेन', नवावी अमल के ईस्ट इण्डिया कम्पनी के नौ-सेनापति 'वाट्सन' (यह चौगा पहने पखा हाथ में लिये बैठे हैं, दाहिनी ओर कलकत्ता नगरी घुटने टेके विजेता के निकट दरवास्त दे रही है, बाई ओर जजीर में बँधा हुआ चन्दननगर-रूपी एक भारतीय पुरुष उपस्थित है), दासत्व-प्रथा को उठा देने में प्रधान उद्योग करने वाले 'विल बारफोर्स', जगद्विख्यात 'न्यूटन' (माध्याकर्षण की मूर्ति न्यूटन के दोनो ओर दो देव-मूर्तियाँ 'ज्ञान' का लिपटा हुआ कागज खोल रही हैं । ऊपर भारी गालक के ऊपर ज्योतिर्विद्या की मूर्ति है । नीचे सगमरमर के टुकड़े में बुद्धिमान् न्यूटन की खोज और आविष्कार की मूर्तियाँ दिखलाई गई हैं), विवर्तनवाद अर्थात् क्रमविक्रम के प्रचार द्वारा ज्ञान-राज्य में युगान्तर उपस्थित करने वाले पण्डित 'डार्विन', प्रसिद्ध ज्योतिर्विद्या-विशारद 'हार्जेल', भूतत्त्व के पण्डित महात्मा 'लायल', सुप्रसिद्ध राजमन्त्री 'विलियम पिट' । (यह चान्सलर की पोशाक पहने लडे हुए जैसे वक्त्रता दे रहे हैं । इन की मूर्ति के नीचे दाहिनी ओर खड़ी हुई इतिहास की मूर्ति एकाग्रता के साथ जैसे उसे सुन रही है । बाई ओर अराजकता-रूपी ऊधमी पुरुष जजीर से जंकड़ा खड़ा है), भारतवन्धु सरल-हृदय 'लार्ड लारेन्स', सिपाही-विद्रोह की आग को बुझाने वाले महावीर 'आइटराम' (बीच में कुछ



(Deanery), सभागृह (Chapter house), जेरूसलम-चेम्बर, सप्तम हेनरी का अतुलनीय (लासानी) चैपेल, कालेज-स्कूल आदि इस चारह भवन हैं। यह सब इमारत पाँच बीघे जमीन में है। गिर्जा १०२ फुट ऊँचा है और उसकी चौड़ी २२५ फुट ऊँची है।

सन् ६१६ में राजा सिबर्ट (Sebert) ने, टेम्स नदी के किनारे, चारों ओर जल से घिरी हुई एक टुकड़े ज़मीन पर, सेन्ट पीटर के नाम से एक गिर्जा बनवाया था। ऐसी जमीन कभी बैठ जाना सर्वथा सम्भव समझ कर नेल्सन ने अन्त समय अपने शव के वहाँ समाधि-स्थान किये जाने की इच्छा प्रकट की थी। इस गिर्जे के निर्माता नरपति सिबर्ट इसी स्थान में गड़े हुए हैं। डिनार लोगो के द्वारा विनष्ट होने पर इस गिर्जे को, सन् १८८५ में, नरपति एडगर (Edgar) ने फिर बनवाया। भिन्न भिन्न राजाओं की अधोनता में क्रमशः बढ़ती होते-होते इस गिर्जे को वर्तमान विशाल आकार प्राप्त हुआ है।

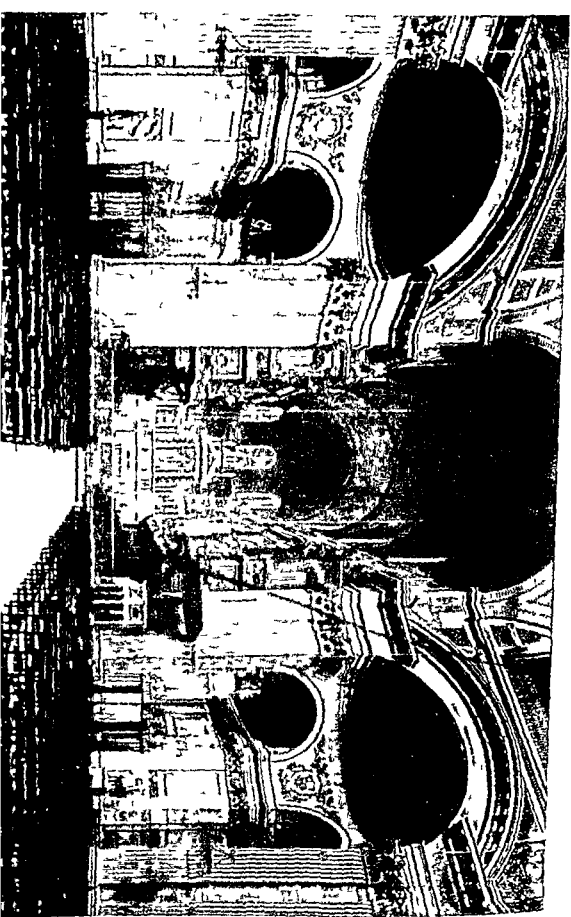
राज्य में इस तरह के समाधि-मन्दिर की विशेष उपयोगिता देख पड़ती है। वहाँ वेस्ट-मिनिस्टर एग्नी में गाड़ा जाना एक ऊँचे दर्जे की आशा समझी जाती है। मनुष्य-जीवन चार दिन का है। परन्तु वह नश्वर शरीर समान के साथ ऐसे स्थान में स्थापित होने से निःसन्देह ससार में अमरत्व प्राप्त होता है। इसी विचार से, उसी महा-गौरव के लिए, वहाँ अनेकों लोग कर्त्तव्य पथ में आगे बढ़ते हैं, और, उससे संसार की विलक्षण उन्नति हो रही है। उससे मनुष्य-जीवन की उन्नति के आदर्श का पृथ्वी पर प्रचार होता है और निःस्वार्थ-सेवा की जगती हुई ज्योति जगत् में फैल कर सबका कल्याण करती है।

इस गिर्जे की उपासना के समय के सम्बन्ध में एक कवि कहता है:—

“ All without is mean and small
All within is vast and tall
All without is harsh and shrill,
All within is hushed and still ”

अर्थात्—“बाहर सब लुद्र और हीन है । भीतर सब महान और विराट है । बाहर सब कठोर और कर्कश है । भीतर सब धीर और स्थिर है” ।

सेन्ट पाल गिर्जा (St Paul's Cathedral) । यह लन्दन का प्रधान भजनालय है । प्राचीन समय में, रोमन-साम्राज्य में, यहाँ 'डायना' देवी का एक मन्दिर था । यहाँ पहले पहल क्रिस्तानी गिर्जा, सन् ६१० में, स्थापित हुआ था । सेन्ट अगस्टाइन ने आकर राजा एथेल्बर्ट (Ethelbert) को क्रिस्तान बनाया । उसके बाद उक्त राजा ने यह गिर्जा बनवाया और इसके लिए एक सम्पत्ति (Manor of Tillingham) दान कर दी । उसी सम्पत्ति की आमदनी से अब तक इसका खर्च चल रहा है । इसके बाद, दो बार आग लग जाने के उपरान्त, इस स्थान पर जो गिर्जा बनाया गया, वह भी अच्छा और ऊँचा था । किन्तु सन् १६६६ में, लन्दन में, जो भारी आग लगी, उसमें वह भी भस्मीभूत होगया । उसके ६ बरस बाद, सन् १६७५ का २१ वाँ जून को, इञ्जीनियर रेन (Sir Christopher Wren) और उनके फ्रीमेसन (Freemason) भाइयों के द्वारा इस चर्च का वर्तमान इमारत की नींव डाली गई । इसके बनने में १२ लाख पाउण्ड की लागत आई है । रेन का शव इसी चर्च में समाधि-स्थ है । उत्तर द्वार के ऊपर लैटिन भाषा में, सुवर्णाक्षरों में, जो लेख है, उसका अर्थ यह है कि “इसके नीचे इस नगर के और इस गिर्जे के स्थपति-विद्या-विशारद इञ्जीनियर 'रेन' गड़े हुए हैं । ये ६० बरस से भी अधिक जिये, लेकिन अपने लिए नहीं—सर्वसाधारण के हित के लिए” ।



अर्थात्—“बाहर सब जुद्ध और हीन है । भीतर सब महान और विराट है । बाहर सब कठोर और कर्कश है । भीतर सब धीर और स्थिर है” ।

सेन्ट पाल गिर्जा (St Paul's Cathedral) । यह लन्दन का प्रधान भजनालय है । प्राचीन समय में, रोमन-साम्राज्य में, यहाँ 'ढायना' देवी का एक मन्दिर था । यहाँ पहले पहल क्रिस्तानी गिर्जा, सन् ६१० में, स्थापित हुआ था । सेन्ट अगस्टाइन ने आकर राजा एथेल्बर्ट (Ethelbert) को क्रिस्तान बनाया । उसके बाद उक्त राजा ने यह गिर्जा बनवाया और इसके लिए एक सम्पत्ति (Manor of Tillingham) दान कर दी । उसी सम्पत्ति की आमदनी से अब तक इसका खर्च चल रहा है । इसके बाद, दो बार आग लग जाने के उपरान्त, इस स्थान पर जो गिर्जा बनाया गया, वह भी अच्छा और ऊँचा था । किन्तु सन् १६६६ में, लन्दन में, जो भारी आग लगी, उसमें वह भी भस्मीभूत होगया । उसके ६ बरस बाद, सन् १६७५ को २१ वीं जून को, इञ्जीनियर रेन (Sir Christopher Wren) और उनके फ्रीमेसन (Freemason) भाइया के द्वारा इस चर्च का वर्तमान इमारत की नाव ढाली गई । इसके बनने में १२ लाख पाउण्ड की लागत आई है । रेन का शव इसी चर्च में समाधि स्थ है । उत्तर द्वार के ऊपर लैटिन भाषा में, सुवर्णाक्षरों में, जो लेख है, उसका अर्थ यह है कि “इसके नीचे इस नगर के और इस गिर्जे के स्थापति-विद्या-विशारद इञ्जीनियर रेन गढ़े हुए हैं । ये ६० बरस से भी अधिक जिये, लेकिन अपने लिए नहीं—सर्वसाधारण के हित के लिए” ।

इस मन्दिर के सम्बन्ध में पण्डितवर कार्लाइल, जिन्हें मैं अपने गुरु के समान समझता हूँ, कहते हैं—“(St. Paul’s was the only edifice which struck me with a proper sense of grandeur” (केवल यही इमारत मेरे मन में महत्त्व का यथार्थ भाव लाई थी) । यह लम्बाई में ५५०, चौड़ाई में १२५ और १८० तथा उँचाई में ३७० फुट है । गुम्बद के नीचे की गेलरी में एक ओर धीरे से भी कुछ कहने से वह दूसरी ओर बहुत स्पष्ट सुन पड़ता है । इस गेलरी का नाम है *Whispering gallery* । यहाँ की घड़ी भी छोटी नहीं है । आधी रात के सन्नाटे में उसकी आवाज २० मील तक सुन पड़ती है । यहाँ की सबसे ऊँची गेलरी से सारा लन्दन और आसपास के कस्बे खूब स्पष्ट देख पड़ते हैं । वहाँ पर से सड़क पर के गाड़ी-घोड़े और आदमी खेलने के खिलाँने सरोखे चलते-फिरते देख पड़ते हैं, और सारे लन्दन का गुल-गपाड़ा किसी मेशीन के चलने का शब्द जैसा जान पड़ता है ।

यहाँ जो लोग गड़े हुए हैं उनमें से अधिकांश लोग बहादुर हैं । इसी से इसे “*Pantheon for heroes*” कहते हैं । यहाँ महान् सेवक पूज्यपाद हावर्ड, पण्डित-प्रवर जान्सन, सङ्घट के सुपण्डित बङ्गाल-हाईकोर्ट के जज सर विलियम जोन्स, गवर्नरजनरल लार्ड कार्नवालिस, जगद्विख्यात प्रात-स्मरणीय खार्तूम के गार्डन, नौ-सेनापति लार्ड नेल्सन और प्रसिद्ध ड्यूक आफ् वेलिंगटन आदि बहुत से महापुरुषों की, सगमरमरकी, मूर्तियाँ इस गिर्जे के भीतर सुशोभित हैं । पहले ही कहा जा चुका है कि वेस्ट मिनिस्टर एबी की जमीन पहले जल से घिरी हुई या पानी की जमीन थी, और नेल्सन ने उसी में अपने गाड़े जाने की इच्छा इसलिए प्रकट की थी कि उनकी समाधि कभी जमीन घस जाने से पानी में मग्न हो जायगी । नेल्सन और वेलिंगटन के समाधि-

स्थान पर राजकवि का एक सुन्दर अँगरेजी पद्य इस भाव से लिखा हुआ है, मारो वाटर्लू के वीर बेलिंगटन के यहाँ धाने पर नेल्सन पूछते हैं कि —

“कौन आता है प्रतिष्ठित अतिथि की तरह, बाजे, पताका, सेना और पुरोहित के साथ । सब लोगों के रोने से मेरी विश्राम की शान्ति नष्ट होगई” ।

इसके उत्तर में कवि कहता है कि.—

“पराक्रमी वीर, तुम जैसे महान् थे समुद्र में, यह वैसे ही हैं पृथ्वी पर । तुम्हारा द्वीप तुमको खूब प्यार करता है, ससार में तुम्हारा ऐसा सागर-वीर दूसरा नहीं पैदा हुआ । अब शोकवाद्य और कोलाहल के साथ तुमसे मिलने आ रहे हैं वह प्रधान योद्धा, जो पृथ्वी पर वैसे ही महान् हैं, जैसे तुम समुद्र में थे ।”

अँगरेजी पद्य बहुत ही सुन्दर है । देखिए—

‘ Who is he that cometh, like an honour’d guest
With banner and with music with soldier and with priest,
With a nation weeping, and breaking on my rest ? ’

‘ Mighty seaman, this is he
Was great by land as thou by sea,
Thine island loves thee well, thou famous man,
The greatest sailor since the world began,
Now to the roll of muffled drums,
To thee the greatest soldier comes -
For this is he
Was great by land as thou by sea

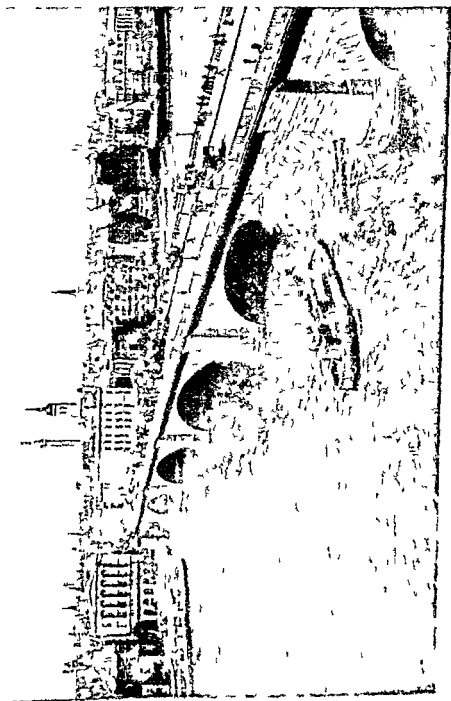
यहाँ पर महामति हावर्ड के सम्बन्ध में कुछ कहना अनुचित न होगा । बहुत से पाठक जानते होंगे कि इनका पूरा नाम “हावर्ड वि फिलान्थरोपिस्ट” था । इन्होंने अपना सारा जीवन रोगियों की सेवा करने में ही बिताया, और अन्त को रोगी की सेवा में ही स्वयं रोग का शिकार बने । यह कह गये हैं कि “मैं मृत्यु को जरा भी नहीं डरता । बल्कि और सब बातों की अपेक्षा अधिक प्रसन्नता के साथ मैं मृत्यु

के बारे में विचार किया करता हूँ । मेरी समाधि पर किसी तरह की सज-धज न की जाय, और कोई स्मारक चिह्न भी स्थापित न हो । चुपचाप मेरे शव को गाढ़ कर उस पर एक सूर्य-घड़ी स्थापित कर दी जाय, जिसमें मुझे लोग एकदम-भूल जायें" ।

"(Death has no terrors for me; it is an event I always look with cheerfulness, if not with pleasure, and be assured, the subject is more grateful to me than any other. Suffer no pomp to be used at my funeral, no monument to mark the spot where I am laid, but put me quietly in the earth, place a sundial over my grave, and let me be forgotten"—John Howard)

महापुरुष के योग्य ही यह उक्ति है । किन्तु यद्यपि ऐसे महापुरुष मान की चाह नहीं करते, तथापि भक्तवत्सल भगवान् अपने भक्त का मान बढ़ाये बिना नहीं रहते ।

लन्दन-पुल (London Bridge) । एक शताब्दी पहले लन्दन-राजधानी में केवल एक ही पुल था । वह पुल यही है । सन् ११७६ में, दूसरे हेनरी के राज्य-काल में, इसका बनना शुरू हुआ और सन् १२०६ में, राजा जान के समय यह बन कर तैयार हुआ । साधारण सड़कों की तरह इस पुल के ऊपर एक गिर्जा था । दोनो ओर दस्तूर के माफिक रहने के घर आदि और दोनो निकासों पर दो बड़े बड़े दुर्ग के ऐसे फाटक लगे हुए थे । इन्हीं दोनो फाटकों के ऊपर लोगों को शिक्का देने के लिए राजद्रोहियों या और किसी भारी अपराध के करनेवालों के कटे हुए सिर लटकाये जाते थे । पुराने स्थान से ६६ हाथ के फासल पर, सन् १८३२ में, यह नया पुल हटा दिया गया है । इस समय उस पर गिर्जा या आसपास रहने के घर, कुछ भी नहीं है ।—यह पुल ६२८ फुट लम्बा, ५४ फुट चौड़ा और



प्रेनिट पत्थर के पाँच खम्भों पर रक्खा हुआ है। बीच के खम्भे क घेरा (span) १५२ फुट है। नेपोलियन के समय में स्पेनिश-युद्ध (Peninsular War) में जीती हुई तोपों की धातु से इस पुल के दोनों ओर के लालटेनों के खम्भे (Lamp posts) ढाले गये हैं। गिन कर हिसाब लगाया गया है कि रोज १५,००० गाड़ी और १ लाख आदमी पैदल, शीसत के हिसाब से, इस पर से गुजरते हैं। पृथ्वी पर सब मिलाकर १४ पुल उत्तम हैं। उन सबमें वेस्टमिनिस्टर ब्रिज (Westminster Bridge) श्रेष्ठ है। बीच में रेल-लाइन और दोनों ओर पैदल चलने का रास्ता है। आत्महत्या करने की इच्छा रखनेवालों के लिए ऐसे स्थान बड़े सुभीते के होते हैं। कवि क्राब (Crabbe) ने किसी समय असहाय अवस्था से दुःखित होकर इसी पुल पर से टेम्स नदी में फाँदने की इच्छा की थी। इस बारे में वाटर्लू-ब्रिज (Waterloo Bridge) विशेषरूप से प्रसिद्ध है। उस पर से असह्य लोगों ने कूद-कूद कर आत्महत्या कर डाली है। इसी लिए उसे "दीर्घ-निश्वास का पुल" (English "Bridge of Sighs") कहते हैं। दोनों ओर की इमारत आदि मिला कर उसके बनने में दस लाख पाउण्ड की लागत आई है।

टेम्स-टनेल (Thames Tunnel)। इस पर से अब लोगों को चलने नहीं देते। केवल रेल चलती है। यह १२०० फुट लंबा, १७ फुट चौड़ा, ६३ फुट ऊँचा और १६ फुट नदी के नीचे है। इसके बनने में चार लाख अड़सठ हजार पाउण्ड खर्च हुए हैं। सन् १८२३ में यह सर्वसाधारण के लिए खोला गया था। उसके बाद, सन् १८६५ में, दो लाख पाउण्ड देकर ईस्ट-लन्दन-रेलवे कम्पनी ने इसे खरीद लिया। इससे कभी एक पैसे की आमदनी नहीं हुई। यह एक अद्भुत इञ्जीनियरी का नमूना अवश्य है। टावर के नीचे

और एक छोटा सा टनेल १६,००० पाउण्ड की लागत से बनवाया गया है । इसमें लोग आते-जाते हैं । यह १३३० फुट लम्बा है । इसका नाम सब्वे (Subway) है ।

मनूमेंट (Monument) । सन् १६६६ में दूसरी से लेकर सातवाँ सितम्बर तक लन्दन में एक भयानक आग (The Great Fire of London) लगी थी । इस अप्रिक्राण्ड में ४६० सड़कें, ८६ गिर्जे और १३,२०० घर जले थे । सब मिला कर कोई एक करोड़ पाउण्ड की सम्पत्ति खाहा होगई थी । यह स्तम्भ उसी अग्निक्राण्ड का स्मारक चिह्न है । इसी स्थान के निकट पुडिंगगली (Pudding Lane) में पहले आग लगी थी, इसी से यह स्तम्भ यहाँ पर बनाया गया है । यह २०० फुट ऊँचा है । कहा जाता है कि जिस घर से आग शुरू हुई थी उस घर से यह स्थान जितना दूर है उतनी ही इस मनूमेंट की ऊँचाई है । ३४१ गोल सीढियों पर चढ़ कर ऊपर जाना होता है । पहले बहुत लोगों ने ऊपर से गिर कर आत्महत्या कर डाली है । इसी से अब ऊपर के प्लेटफार्म पर लोहे का जाल लगा दिया गया है ।

विक्टोरिया पार्क (Victoria Park) । लन्दन के पूर्वी हिस्से की गरीबों की बस्ती के लिए यह पार्क ६०० बीघे के लगभग जमीन के ऊपर एक लाख पाउण्ड खर्च करके बनवाया गया है । इसके पूर्व और खुला हुआ मैदान है । उसमें लोग कसरत के खेल खेलते हैं । पश्चिम और टहलने का स्थान है, फूलों की क्यारियाँ और दो जलाशय हैं । यहाँ के फूलों की बहार मुझे कभी नहीं भूलने की । जगह जगह क्यारियाँ ऐसे ढँग से बनाई गई हैं कि उनके आगे बेलबूटेदार गलीचे विलकुल उच्छ हैं । 'प्रकृति' को कारीगरी के अधीन बना कर ससार की शोभा बढ़ाने

धीर सुभीता कर देने में अँगरेजों को अतुलनीय चमत्ता प्राप्त है— इस सिद्धान्त का यहाँ प्रत्यक्ष प्रमाण देखने को मिला । कृष्ण, पत्र, लता, पुष्प आदि जगह जगह पर इस ढंग से लगाये गये हैं कि वे सुख-सेज जान पड़ते हैं और उन पर लोट रहने की इच्छा होती है । यहाँ की शोभा देख कर सचमुच मेरे नेत्र सफल हो गये । गरीबों की बस्ती के लिए ऐसा सुन्दर प्रबन्ध देख कर मुझे परम प्रसन्नता प्राप्त हुई । यहाँ सर्वसाधारण के व्यवहार के लिए एक बड़ा भारी महल (People's Palace) भी बन गया है ।

भारतेश्वरी विक्टोरिया महारानी के दर्शन । हम भारतवासी चिरकाल से एक राजभक्त जाति हैं । हम लोग राजा को ईश्वर का अंश समझ कर उसकी पूजा किया करते हैं । यहाँ तक कि राजा अगर यवन हो तो भी उसे हम राजसमान देने में जरा भी कमी नहीं करते । मुसलमान-सम्राटों को भी “दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा” कह कर पूजने में हमें सकोच नहीं हुआ । युग-युगान्तर से चला आ रहा हमारा यह विश्वास तीन दिन की पाश्चात्य जातियों की सगति से एक-दम मिट नहीं सकता । यूरोप में भी बहुत दिनों तक राजा को ईश्वर-नियुक्त (Divine right of Kings) होने पर लोग विश्वास करते थे । नहीं मालूम, देश या जाति के ऊपर समान का भाव या आसक्ति हम में कभी थी या नहीं । अँगरेजों पेट्रियटिज्म (Patriotism) शब्द का प्रतिशब्द शायद हम लोगों में कभी नहीं प्रचलित था । इस समय उस शब्द को अँगरेजी से लेकर हम लोग उसके लिए “देश-हितैषिता” इस यौगिक शब्द का व्यवहार करने लगे हैं । हमारे यहाँ युद्ध में राजा को भागने या मारे जाने पर सैनिक लोग तुरन्त शस्त्र-त्याग कर देते थे ।

राजा को न रहने पर वे किस-के लिए युद्ध करते ? राजा के ऊपर हम लोगो की ऐसी ही अटल भक्ति है । देश के प्रति वैसी, भक्ति नहीं है । आधुनिक 'वन्दे मातरम्' मन्त्र यूरोप की नकल या अनुकरण-मात्र है । इसी से इंग्लैंड में पैर रखने के समय से एक बार महारानी विक्टोरिया को देखने की मुझे बड़ी प्रबल इच्छा थी । खास कर व्यक्तिगत भाव से 'कैसरेहिन्द' विक्टोरिया के ऊपर मुझे इतनी श्रद्धा है कि मैं उन्हें ईश्वर के विशेष अनुग्रह का पात्र मानता हूँ । सौभाग्य-लक्ष्मी बहुत ही थोड़े लोगो के यहाँ अटल अचल भाव से रहती है । किन्तु इन पुण्यवती महारानी ने जीवन की अन्तिम घड़ी तक सौभाग्य लक्ष्मी का उपभोग किया । महारानी विक्टोरिया लन्दन में बहुत कम रहा करती थीं । इसी कारण मुझे सहसा उनके दर्शन मिलना कठिन था । मन् १८८६ के मई महीने मे महारानी की पहली पोती के व्याह के उपलक्ष में बकिंगहम-महल (Buckingham Palace) में जाकर पहले पहल मैंने उनके दर्शन किये । महारानी का स्वरूप देख कर मुझको बड़ी ही प्रसन्नता हुई । महारानी साधारण पोशाक में थीं । यह देख कर उन पर और भी श्रद्धा बढ गई । जैसी आशा करके मैं गया था उससे कुछ कम वहाँ नहीं देखा । ध्वस्य ही उन हाई-लैंडर स्काच-मैन की तरह मेरे निराश होने का कोई कारण नहीं था । कहा जाता है कि एक समय स्काटलैंड के उत्तर के किसी गाँव होरु विक्टोरिया के जाने की खबर पाकर पास के गाँव का एक किमान बड़े ही आग्रह के साथ राजदर्शन के लिए सड़क के किनारे जाकर खड़ा हो गया । जब महारानी की गाडी निकल गई तब वह आदमी बहुत ही उदास होकर अत्यन्त विस्मय के साथ दूसरे साथी से कह उठा—“ Jack! Jack! She is nothing but

। woman" (अर्थात् यह तो साधारण लोके सिवा और कुछ नहीं है) । वह आदमी अपने मन में आशा करके आया था कि महारानी न-जाने कौन अद्भुत जीव होगी । किन्तु अन्त को उसने देखा, वह एक साधारण लोके हैं । जरा धूमधाम और पोशाक की उड़कभड़क ही होती तो भी उसे कुछ सन्तोष होता । किन्तु वह भी कुछ न था । इसी से उसे यो निराश और दुःखित होना पड़ा ।

महारानी के वर्णन के साथ ही ईंग्लैंड के प्रधान राजमुकुट के सम्बन्ध में कुछ कह देना उचित जान पड़ता है । यह मुकुट सन्दन-टावर में सुरक्षित है । इसमें सब मिलाकर १ बड़ा मानिक, २६ नीलम, ११ पन्ना, ४ छोटे मानिक और १,३६३ अन्य प्रकार के रत्न, १,२७३ गुलाबी हीरे, ४ अण्डे के आकार के मोती और २७३ छोटे मोती लगे हुए हैं । योरोप के सब राजमुकुटों से यह भारी वजन का है ।

श्रीगुरुदेव कार्लाइल (Thomas Carlyle) ।—

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।

चक्षुरुन्मीलित येन तस्मै श्रीगुरवे नम ॥

बड़े दुःख की बात है कि गुरुदेव की जीवितावस्था में मैं उनके निकट उपस्थित नहीं हो सका । ऐसे प्रेमावतार विश्वदर्शी महापुरुष के शरीर को देखना और पैर छूना मुझ सरोखे नराधम को कैसे नसीब हो ? अन्त समय वह जहाँ रहने लगे थे, उस लन्दन के चेल्सी कस्बे के बाँध (Chelsea Embankment) के ऊपर नदी के किनारे एक मूर्त्ति के सिवा उनका और कोई चिह्न नहीं देख पड़ा । कार्लाइल के रहने का घर खरीद कर उसकी रक्षा करने की

चेष्टा उस समय हो रही थी । यद्यपि अब तक कार्लाइल को समुचित संमान नहीं दिया गया, तथापि इसमें सन्देह नहीं कि समय पाकर कार्लाइल विश्वभर में प्रसिद्ध हो जायेंगे । उनके शिष्य कह कर अपना परिचय देने की योग्यता मुझमें नहीं है । अपने को उनका शिष्यानुशिष्य कहना भी मुझे नहीं सोहता । मैं कर्बल इतनाही कह सकता हूँ कि समकालीन मनुष्यों में मैं उनको सबसे श्रेष्ठ भक्ति-भाजन समझता हूँ । सन् १८६६ में एक बार महारानी विक्रोरिया ने उनसे मिलने की इच्छा प्रकट की । प्रसिद्ध साधु डीन स्टानले (Dean Stanley) ने अपने घर पर इनकी मुलाकात का प्रबन्ध किया । उस समय महारानी से बातचीत करते करते कार्लाइल इतने मुग्ध हुए कि अपनी कुर्सी खिसकाते-खिसकाते महारानी के सामने इतने निकट आगये कि उनके हिलने डुलने तक की जगह नहीं रही । इस मुलाकात के बाद इस बारे में कार्लाइल ने अपनी बहन को जो पत्र लिखा था, उसमें उनके किये हुए भारतेश्वरी के वर्णन का अंश नीचे उद्धृत किया जाता है ।

“ The Stanleys and we were all in a flow of talk and some flunkys had done setting coffee-pots and tea-cups of a sublime pattern, when Her Majesty, punctual to the minute, glided in, escorted by her dame in waiting (a Duchess Dowager of Athol) and by the Princess Louise, decidedly a very pretty young lady, and clever too, as I found out in talking to her afterwards. The Queen came softly forward, a kindly little smile on her face, gently shook hands with all the three women, gently acknowledged with a nod the silent bows of us male monsters, and directly in her presence every one was at ease again. She is a comely little lady with a pair of kind, clear, and intelligent grey eyes, still looks almost young (in spite of one broad wrinkle which shows on each cheek occasionally), is still plump, has a fine low, soft voice, indeed, her whole manner is melodiously perfect. It is impossible to imagine a politer little woman, nothing the least imperious; all gentle, all sincere, looking unembarrassing—rather attractive even, makes you feel, too (if you have any sense in you), that she is Queen Coffee fairly done, Lady

Augusta, the Dean's wife, called me to come and speak to Her Majesty I obeyed, first asking, as an old infirmish man, Majesty's permission to sit, which was graciously conceded. Nothing of the least significance was said nor needed, however my bit of dialogue went very well

उन्नीसवीं शताब्दी के लोकशिक्षक धर्मवीर के साथ पृथ्वी की प्रधान सम्राज्ञी की मुलाकात नि सन्देह एक विशेष दृश्य कही जा सकती है। एक पण्डित-प्रजा के साथ मुलाकात करने में ठीक समय पर उपस्थित होकर अपने सुन्दर व्यवहार से उसे प्रसन्न करने में महारानी विक्रोरिया का और अंगरेज जाति का जैसा महत्त्व प्रकाशित हुआ, वैसा ही उसके सम्बन्ध में कार्लाइल का मन्तव्य भी महापुरुषों के योग्य ही है। वह लिखते हैं कि "महारानी के व्यवहार में जरा भी अभिमान नहीं देखा गया। आदि से अन्त तक उनका व्यवहार भले आदमियों का ऐसा सरल, कोमल, प्रसन्न करनेवाला और मनोहर रहा। तथापि जिसमें जरा भी बुद्धि होगी वह उन्हें देखते ही समझ लेगा कि यह रानी हैं।" कार्लाइल और विक्रोरिया ने किसी साधारण विषय की भी आलोचना नहीं की, इसका कोई कारण भी नहीं था, तथापि बातचीत खूब अच्छी तरह हुई।

इस घटना के बाद महारानी ने कार्लाइल को 'लार्ड' की उपाधि देनी चाही, किन्तु उन्होंने योग्य उत्तर के साथ उसे लेने से इन्कार कर दिया। विधाता ने जिसे ससार भर के मनोराज्य का लार्ड बनाया है, वह मनुष्य राजा से साधारण 'लार्ड' की उपाधि क्यों लेने लगा ?

भारतेश्वरी विक्रोरिया के ऊपर अन्यान्य जातियों की भी श्रद्धा कम नहीं थी। आस्ट्रिया की राजधानी वियेना नगर के किसी समाचार-पत्र में प्रकाशित हुआ था कि "पृथ्वी के सर्व-प्रधान साम्राज्य की अधीश्वरी विक्रोरिया वर्तमान समय में एक यद्यर्थ

श्रद्धा के योग्य व्यक्ति हैं। 'राजराजेश्वरी' और 'घर की पुरखिन' के रूप में उन्होंने जिन सद्गुणों का परिचय दिया है, उनसे केवल उनकी प्रजा ही नहीं, सब जातियों के लोगों की भक्ति उन पर बढ़ती जाती है।"

दो बगवासा ओसवाल जैनी युवको की विलायत-यात्रा । विधाता की लीला कैसी अद्भुत है । एक समय भारतमाता की अन्धकारमयी गोद में रोग-शय्या पर पड़े रहने की अवस्था में बङ्गाल के जैन भाइयों के लिए भगवान् के निकट कितनी ही प्रार्थनायें की थीं । उन प्रार्थनाओं का इतनी जल्दी कुछ फल होते (लन्दन में दो जैन-युवकों का आगमन) देख में तो आनन्द से गद्गद हो गया । हमारे अपराध की सीमा है, किन्तु दयामय भगवान् की दया असीम है । नहीं तो मेरे इस पाप-पूर्ण जीवन में ऐसी अनहोनी घटना दिखा कर वह सदुपदेश न देते । चिरकाल से जानता हूँ कि पाप का दण्ड अत्यन्त तीव्र—भयानक कष्ट-दायक—है । परमपिता परमेश्वर पापियों को असह्य यन्त्रणा रूप दण्ड देकर उनका उद्धार करते हैं । विलकुल न रुवनेवाली फडवी दवा जैसे रोग-मुक्त होने का एक-मात्र उपाय है, खोटे सोने को खरा बनाने के लिए जलती हुई आग जैसे एक-मात्र राह है, वैसे पापपीडित आत्मा की शुद्धि के लिए घोर नरक-यन्त्रणा भोगना ही एक-मात्र प्रायश्चित्त है । किन्तु इस क्षुद्र जीवन में मैंने अनेक बार इस नियम के विरुद्ध होते देखा है । नरक की ओर तेजी से बढ़े जा रहे आत्मा को फिरा कर प्रेम के मार्ग में—पुण्य के मार्ग में—ले जाने के लिए वह परमपिता कैसे कोमल और मधुर व्यवहार करते हैं, 'सो' कहने की नटों, देखने और समझने की बात है । ऊपर लिखी हुई घटना, अर्थात् दो जैन-युवकों का लन्दन जाना, इसका एक प्रत्यक्ष उदाहरण है ।

इन सब अतर्कणीय घटनाओं के भीतर जो करुणानिधान की करुणा का आभास मिलता है, ससार के भागे, उसकी साच्ची न देना धीर कृतघ्नता है—इसमें कोई सन्देह नहीं ।

प्रेम अपने घर से ही शुरू होता है (Charity begins at home) । कुछ दिनों में बङ्गाल के जैनियों के बीच रहा हूँ । वहाँ उनकी गिरी हुई हालत देख कर कभी कभी मुझे बड़ा खेद हुआ है । रूप, गुण, धन, मान, कुल, शील में ऐसे सुन्दर जीवों का शिश्ता में शोचनीय रूप से पिछड़े देख कर किस सहृदय पुरुष को कष्ट न होगा ? इसके सिवा और भी अधिक दुःख की बात यह है कि वे लोग हम में से जिनको अपना बन्धु और हितचिन्तक समझते हैं उनमें अधिकांश ऐसे हैं जो स्वार्थ-साधन के लिए धनियों की सन्तानों को और भी अन्धकार में ले जाने की चेष्टा में सदा लगे रहते हैं । इन सब कपटों लोगों की कुयुक्ति और खुशामद का रसायन धनी-सन्तानों के कानों में अमृत की वर्षा करता है । इसका कारण यही है कि धनियों के लडकें प्रायः शिश्ता में विलकुल कोरे या अधकचरे होते हैं । ऐसी विषम अवस्था में, विधाता की विशेष कृपा के सिवा इन फूलों की सेज में सुख से पले हुए मारवाडियों की नोंद टूटने का और कोई उपाय नहीं था । दो मारवाडी युवकों का विलायत जाना उस ईश्वर की करुणा का विशेष विधान है, इसमें कोई सन्देह नहीं । अविश्वासी नास्तिक आँखें खोल कर देखें कि कैसी असम्भव बात सम्भव होगई । भारत के धनिक-सन्तान, रास कर बड़े आदमी मारवाडी बाबू, जिनकी भारी शौकीनी, अच्छा खाना, बढ़िया पोशाक और सबसे बढ कर जडभावमय अलस्य (Unconquerable inertia) किसी से छिपा नहीं, जिनको साधारणतः बङ्गाली

लोग 'असभ्य, मूर्ख, गँवार' कह कर घृणा करने में कुछ भी सङ्कोच नहीं करते, उन्हीं में से दो उज्ज्वल रत्न—जिनकी जोड़ के युवक भारत भर में घोड़े ही निकलेंगे—अभिज्ञता प्राप्त करने की लालसा से, भारत से सात समुद्र पार, १०,००० मील की दूरी पर, इंग्लैंड में उपस्थित हुए। यह कम आश्चर्य की बात नहीं है। स्वप्न में भी किसी ने नहीं सोचा होगा कि ये शैकीनी में डूबे हुए मारवाडी युवक, जो मोहरो की धैली सिरहाने रखे लेटे-लेटे सदा से सोने के कटोरे में दूध पीते आ रहे हैं, इस तरह प्रकृति-पर्यवेक्षण के द्वारा उन्नत होकर मनुष्यत्व की प्राप्ति के लिए घर, परिवार, सुख और ऐश-आराम को छोड़ कर सुदूर लन्दन में जा पहुँचेंगे। किसने उन्हें ऐसी अच्छी सलाह और शुभ बुद्धि दी ? किससे उनको ऐसा भारी हार्दिक बल मिला ? किसने उन्हें ऐसे साहस के काम में प्रवृत्त होने के लिए उत्तेजित उत्साहित किया और अन्त को उस पुण्यक्षेत्र में पहुँचा दिया ? जिसकी कोई गति नहीं उसकी गति उन्हीं भगवान् के सिवा और किसकी शक्ति है, जो अज्ञान से अन्धे हो रहे जीवकी हृदय की आँसुओं के आगे से मोह का पर्दा हटा सके ? भक्तवत्सल भगवान् इन उत्साही युवकों की कामना पूरी करेंगे। वे ऐसे उत्साही उद्योगी पुरुषों की अवश्य सहायता करेंगे। भविष्यत् में जो भारत का इतिहास बनेगा, उसके आसवाल-पर्व में अवश्य ही इन युवकों के नाम स्वर्गाचरो से लिखे जायेंगे।

इसी समय भारत में इन युवकों की जाति में बड़ी खलबली मची। कितने ही बुरे लोग कितनी ही तरह से बुरी बातें फैला कर इन युवकों के आत्मीय-स्वजनों को कष्ट पहुँचाने की चेष्टा करने लगे। कितनी ही भूठी गपे उड़ाई गईं। निकम्मे

और बेकार लोगों को कुछ दिनों तक गप्पाटक लडाने का सामान मिल गया । युवको को जातिभ्रष्ट करने के मनसूबे बाँधे जाने लगे । भाई मारवाडियो । ऐसे लोगों की बातों पर ध्यान न देना । डरने का कोई कारण नहीं है । सोच-विचार करने की कोई बात नहीं है । तुमको तो खुशी मनानी चाहिए । तुम अपने को इससे गौरवान्वित समझो कि तुम्हारे वच्चे परमप्रतापशाली अँगरेजों के घर में जाकर उनके साथ सब बातों में समान अधिकार प्राप्त कर सकें । जहाज के खलासी से लेकर बड़े लाट तक जिन अँगरेजों की असह्य मूर्तियों को देवता के समान मान कर सादर पोट शोषचार से पूजते हो, जिनके एक चपरासी का भी भारी आदर करते हो, तुम्हारे लडकों को वहाँ उन्हीं अँगरेजों की जाति के सबसे प्रधान व्यक्ति के बराबर बैठने का पूरा अधिकार है । तुम जिसकी कल्पना भी नहीं कर सकते, तुम्हारे कुलपावन पुत्रों ने उसी का उपभोग किया । जिस प्रकार की स्वाधीनता को तुम ध्यान में ही नहीं ला सकते, वैसे ही देव-दुर्लभ स्वर्गीय स्वाधीनता तुम्हारे पुत्रों को प्राप्त है । यह सब क्या तुम्हारे लिए कम गौरव की बात है । कहाँ भारत की यह हाथ-पैर जकड़े रहने की दशा, और कहाँ वह श्वेत-द्वीप में निर्मल स्वाधीन हवा में घूमना । ये दोनों युवक धन्य हैं । जिनके गर्भ से ये पैदा हुए, वे मातायें भी धन्य हैं ।

पशुशाला (Gardens of the Zoological Society) । यहाँ १,४०० के लगभग पक्षी, ७०० से अधिक चौपाये और न्यूनाधिक ४५० कीड़े अत्यन्त सुन्दर ढंग से यत्रपूर्वक सुरक्षित हैं । बड्डी-उद्यान के गर्मघर में जैसे गर्म देशों के पेड़, लतायें आदि गर्मी पहुँचा कर रक्खे जाते हैं, वैसे ही यहाँ गर्म देशों के जीव, थर्मामिटर के हिसाब से, आवश्यक भाप की गर्मी में रक्खे गये हैं ।

।नके स्वास्थ्य के सम्बन्ध की यथोचित व्यवस्था करने में भी कुछ त्रुटि नहीं की जाती । अँगरेजों के और और कामों के समान यह काम भी पृथ्वी भर पर अपने ढंग का एक ही है । ऐसा संग्रह, मैंने और नहीं नहीं देखा । पशुशाला में दर्शक को विशेष आनन्द मिलता है । थोका-शिक्क थैकरे (Thackeray) ने कहा है कि “जब मुझे अधिक चिन्ता सताती है तब मैं पशुशाला में जाता हूँ । जान पड़ता है, यह मानसिक चिन्ता उस पशु-निवास के दरवाजे के भीतर जाने की अधिकारिणी नहीं है । वहाँ अगणित पौंजडों में मुझे अपने (मनुष्य-जाति के) मित्र और शत्रु देखने को मिलते हैं” ।

यहाँ कई बार ‘भूली’ के सम्बन्ध में परीक्षा हो चुकी है । प्रबल जन्तु जो अपने से निर्बल जन्तु को अपनी विजली की शक्ति से आच्छादित निश्चेष्ट करके खा जाता है उसे ‘भूली’ कहते हैं । वैज्ञानिकों का मत है कि बाघ, सिंह आदि बिलाव की जाति के जो जीव हैं, उनकी रोमावली में अधिक विजली रहती है । किन्तु यह निश्चय करना कठिन है कि ये रूनी जानवर अपने शिकारों को इसी विजली की शक्ति से अभिभूत करके मारते हैं या किसी और अज्ञात शक्ति से । रोम-विद्युत् अगर इसका कारण होती तो सर्प आदि जीवों में, जिनके रोएँ बिलकुल नहीं होते, यह शक्ति कहाँ से आई ?

पण्डितवर काम (Professor Kalm) ने लिखा है कि अजगर (Rattlesnake) सर्प के जन्म-स्थान उत्तर अमेरिका में उक्त सर्प-गण वृक्ष के नीचे से डाल पर बैठी हुई गिलहरी को अपनी इसी शक्ति से अभिभूत करता है । सर्प यदि उसकी ओर देखता है तो उसमें- भागने की शक्ति नहीं रहती । वह शोकसूचक चीत्कार करती हुई पेड़ के ऊपर कुछ दूर चढ़कर फिर नीचे उतरती है । इसी तरह लगातार करते-करते हर बार ज़रा ज़रा नीचे खिसकती

आती है । अब तक सर्प अपने आसन और शिकार पर स्थिर दृष्टि जमाये हुए ऐसा एकाग्र अवस्था (concentrated) में तन्मय रहता है कि उसके पास खड़े होकर मनुष्य खूब गुलगपाडा मचावे तो भी वह उस पर ध्यान न देगा—तिल भर भी विचलित न होगा । अन्त को वह गिलहरी नीचे फाँद पडती है और एक बार फिर चीत्कार करके जल्दी से साप के फँसे हुए मुख में समा जाती है ।

कारोलिना (Cuolina) देश से लौट कर आये हुए प्रकृति-तत्त्व-वेत्ता फ्रांस के पण्डित काटेस्वी (Mark Catesby) और लासन (John Lawson) साहब के इस बात की साक्षी देने पर खोडन के सर्प-विद्या-विशारद आक्रेल (John Gust de Acrell) ने वहाँ की पशुशाला में परीक्षा करके प्रकट किया कि एक अजगर सर्प के लोहे के पिजडे में एक मूसा छोड दिया गया । वह पहले उस साप के पीछे के कोने में जा छिपा । फिर सर्प ने भयङ्कर तेज के साथ जब उसके ऊपर स्थिर दृष्टि जमाई, तब वह कोंपता हुआ कूद कर उसके मुख में चला गया । इस बात को देखने के लिए इस पशुशाला में भी ठीक इसी तरह परीक्षा की गई और बात सच निकली ।

- यहाँ भारत का एक हाथी और एक हथनी है । दोनों ही भारत से प्रिंस आफ वेल्स के साथ वहाँ गये हैं । हाथी का नाम "जङ्गप्रसाद" है । हैदराबाद के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री स्वर्गीय सर सलारजग ने यह हाथी प्रिंस आफ वेल्स को तोहफे के तौर पर नजर किया था । हथनी बलरामपुर के राजा की दी हुई है, उसका नाम है "सफाकुछी" । गर्मियों में तीसरे पहर हाथी पर दौदा रखकर दर्शक लोग उस पर चढाये भी जाते हैं । इसके लिए दर्शकों को कुछ पैसे देने पडते हैं ।

चित्रशाला (National Gallery) । यहाँ ५०० के लगभग स्वदेशी और विदेशी चित्रकारों के हाथ के बने चित्र सुशोभित हैं । लन्दन के अनेक स्थानों में इस तरह की चित्रशालाएँ हैं । इस कारण अन्यान्य नगरों के इस प्रकार के चित्र-संग्रहों में इसका स्थान उतना ऊँचा नहीं है ।

कवि किंग्सली कह गये हैं कि "A man who cannot spare time for daily country walk may well slip into the National Gallery or other collection of pictures. That garden flowers as gaily in winter as in summer, there in the space of a single room, the townsman may take a walk beneath mountain peaks, through green meadows, and by rushing brooks, where he lingers till he almost seems to hear the ripple of the stream and to see the fishes leap"—*Charles Kingsley*

अर्थात् चित्त प्रति देहात में घूम आने का समय जिन नगरवासियों को नहीं है वे ऐसे स्थान में अगर आवें तो सर्दी और गर्मी में समान भाव से खिले हुए फूलों के बाग और दुःख-शोक के विकार से रहित उज्ज्वल मुखमण्डल निहार कर अवश्य वे तृप्त होंगे । एक ही जगह पर्वत, मैदान-जङ्गल, नदी आदि के सब दृश्यों को वे ऐसे जीते-जागते रूप में देख पावेंगे कि कानों से भरनों की ध्वनि सुन कर और आँखों से मछलियों की उछलकूद देख कर मुग्ध हुए बिना नहीं रहेंगे ।

छोटे बड़े म्यूजियमों की तरह चित्रशालाएँ भी लन्दन के अनेक स्थानों में देखी जाती हैं । अँगरेजों का कहना है कि "वर्तमान में धनवान् और दरिद्र दोनों के लिए ये सब अन्तर्व्यवस्थान एक विशेष प्रयोजनीय वस्तु गिने जाते हैं ।"—(*Public museums*)

and galleries of art are a recognised necessity of modern life for rich and poor alike)

दक्षिण केन्सिंगटन म्यूजियम (South Kensington Museum) । यहाँ का नया घर सन् १८५७ से बनने लगा है, पर उस समय तक वह बन कर तैयार नहीं हुआ था । नया इम्पीरियल इन्स्टीट्यूट (Imperial Institute) यहाँ पर स्थापित है । इस भारी इमारत की चीजों का वर्णन कैसा, उनके नाम गिनना भी सर्वथा असम्भव है । यहाँ पर स्थूल रूप से कुछ बातें लिख कर ही इस वर्णन को समाप्त करूँगा, क्योंकि केवल कुछ चीजों का नामोल्लेख कर देने के सिवा और कोई उपाय नहीं है ।

प्रवेश करते ही महात्मा डार्विन की मूर्ति देख कर मैं बहुत ही प्रसन्न हुआ । युगान्तर उपस्थित कर देनेवाले महात्मा को ऐसा समान देना निस्सन्देह अंगरेजों के योग्य काम है । यहाँ अलग अलग न-जानें कितने विभाग हैं और उन विभागों में न जानें कितनी चीजें हैं ।

स्थपति-विभाग (Architectural Court) में प्राचीन समय के कितने ही देशों की प्राचीन कारीगरियों की हूबहू नकलें बनी हुई हैं । देखकर दर्शक सन्नाटे में आ जाता है । भास्कर्य-विभाग का भी यही हाल है । इसके बाद वस्त्रादि-विभाग में स्वदेशी और विदेशी कारपेट, दुलीचा, गलीचा, शतरञ्जी आदि के अतिरिक्त कपास, पशम, रेशम आदि के सादे और कारचोवी के काम का ऐसा समग्र है कि वगैर देखे उसका महत्त्व समझ में नहीं आ सकता । ठीक ऐसा ही बाजों का समग्र है । पृष्ठों भर की सभ्य और असभ्य जातियों के सभ्य तरह के प्राचीन और आधुनिक

संख्ये वाजे यहाँ रक्ते हुए हैं । अधिक क्या कहूँ, भारत में अब क घूम कर भी मैंने जिन चीजों को नहीं देख पाया, वे सब चीजें हाँ देखने को मिलीं । वैज्ञानिक विभाग में न-जाने कितने समय की कितनी ही तरह की घड़ियाँ ही जमा हैं । अन्यान्य यन्त्रों का भी कहना ही क्या है । इस अंश का प्रधान दृश्य है फूको का पेण्डुलम (Foucault's Pendulum) । बहुत ही ऊँचे टावर पर एक बहुत बड़ा पेण्डुलम लटक रहा है । उसके नीचे के स्थान में इस तरह के नेशन दिए हुए (Graduated) हैं कि सबेरे और शाम को अच्छी तरह देख पड़ता है कि पृथ्वी के घूमने से उसके डोलने में कितना अन्तर हुआ है । यहाँ पर रखे की सृष्टि करनेवाले स्टीफेन्सन के हाथों सन् १८२६ में बना हुआ पहला एन्जिन "रोकेट" (George Stephenson's "Rocket") भी रक्खा हुआ है । उक्त महात्मा की सोने की घड़ी, सीलमोहर, माप का फीता, नक्शा खींचने का सामान, हुलासदानी आदि कुछ चीजें, उनके हाथ का लिखा हुआ एक पत्र और उनके सिर के बालों का एक गुच्छा भी वहाँ देख पड़ा । वास्तव में स्टीफेन्सन जैसे महात्मा का ऐसा ही सम्मान होना चाहिए । यहाँ पर प्राणिवृत्तात का विभाग, जो ब्रिटिश-न्यूजियम में स्थानाभाव के कारण यहाँ आ गया है, एक अद्भुत सग्रह है । कलकत्ते के न्यूजियम को जिन लोगो ने देखा है वे इतना ही कहने से समझ जायेंगे कि इसमें कलकत्ता-न्यूजियम के सग्रह से सात आठ गुना अधिक सग्रह है । पक्षियों के रखने की व्यवस्था बहुत ही सुन्दर है । एक एक काच के घेरे में हर एक जाति के पक्षियों की सब हालतें—गर्भप्रसव से लेकर सब अवस्थायें—इसमें दिखलाई गई हैं । तार से वे ऐसे बँधे हैं कि दूर से उड़ते हुए जान पड़ते हैं । उनके रहने की जगह की मिट्टी और पत्थर तक हबहब वैसे ही सजाये गये

हैं । भूतत्त्व और ग्वनिज पदार्थों के विभाग में सब प्रकार के धातु और रत्न इतने रक्खे हैं कि उनकी गिनती नहीं की जा सकती । इस खण्ड में, भिन्न भिन्न समयों में, अनेक देशों में गिरे हुए उत्का-पिण्ड भी रक्खे हैं । पृथ्वी की तहों में मिले हुए आदमियों के ढाँचे और उस समय व्यवहार में आनेवाले अस्त्र, शस्त्र, पात्र आदि उसी उसी तरह की मिट्टी में—ठीक जैसे पाये गये हैं उसी अवस्था में—रक्खे हुए हैं । ये सब चीजें बड़े यत्न से सुरक्षित हैं । एक विभाग में अण्डे से लेकर सब अवस्थाओं की मछली, सीप, घोघे आदि काच के कुण्ड में विचर रहे हैं । इनके सिवा चित्रशाला, प्राचीन मणि-माणिक्य आदि का विभाग इत्यादि अनेक विभाग हैं । अब मैं केवल भारतीय विभाग की दो एक बातें लिख कर इस वर्णन को समाप्त करूँगा । भारतीय विभाग में प्रवेश करते ही जो 'हाल' मिलता है उसमें बर्मा के राजा धीबो के सोने के अस्त्राव के ढेर के ढेर पड़े हुए हैं । केवल यही 'हाल' मिल जाने से एक आदमी धनकुचेर बन जा सकता है । इसके बाद अनेक प्रदेशों के लकड़ी और पत्थर, घर, दरवाजे, झरोखे आदि देखने को मिलते हैं । उनमें नक्काशी की बढ़िया कारीगरी है । यहाँ एक कमरे में भारत के जवाहरात का इतना संग्रह है कि बहुत लोगों के मत से उसकी कीमत लगाई नहीं जा सकती—("In the Inner Room, the visitor will be able to form some idea of India's gorgeous jewels The value of this collection of stones is almost inestimable"—H Fry) । इसके सिवा भारत-विभाग में पञ्जाब-कैसरी, रणजीतसिंह का स्वर्ण-सिंहासन, टीपू सुलतान की घड़ी, प्रसिद्ध अर्गन बाजा, शिरछाय (Helmet-टोप), चश्मा और हाथी-दात की पालकी भी है । सन् १७६६ की चौथी मई को युद्ध समाप्त होने पर, रात को, लोगों के ढेर में

के गवर्नर जनरल मार्कुइस वेलेस्ली के बालो का गुच्छा, वेलिगटन ड्यूक का कैम्प-पलँग—जिस पर वाटर्लू-युद्ध की पहली रात को वह सोये थे, और नेपोलियन से सम्बन्ध रखनेवाले बहुत से प्रसिद्ध व्यक्तियों के इस्तेमाल में आई हुई अनेक चीजें और पोशाकें भी रक्खी हैं ।

यहाँ के एक स्थान का नाम है भीषण-भवन (Chamber of Horrors) । उसमें दो-एक विदेशियों के सिवा इंग्लैंड के प्रायः साठ चोर, डाकू, सूनी आदि दुराचारी लोगो की मूर्तियाँ सुरक्षित हैं । उनमें सुप्रसिद्ध नर-पिशाच पीस (Charles Peace) की भी मूर्ति है । नाम तो उसका 'शान्ति' था, परन्तु काम उसका महा अशान्ति के थे । मांस-पेशियों के हीरफेर (contortion of the muscles) से चेहरे की शकल बदल लेने की इसमें विचित्र शक्ति थी । यह मिनट भर में ऐसा चेहरा बदल लेता था कि पुराने से पुराना चतुर पुलीस-कर्मचारी भी उसे नहीं पकड़ सकता था * । वहाँ पर थर्टेल (John Thurtell) की मूर्ति और जिस पर उसे फाँसी दी गई थी वह लकड़ी भी है । दण्ड की आज्ञा सुनने के बाद थर्टेल ने खुद अपनी फाँसी के लिए इस सूली का नक्शा (Design) तैयार कर दिया था और उसी के अनुसार यह बना है । यहाँ प्रधान देखने की चीज है फरासी विषुव की एक

* लन्दन में, ऐसी सामर्थ्य रखनेवाले दो आदमियों का तमाशा एक थियेटर में मैंने देखा था । वे दोनो आदमी स्टेज के ऊपर केवल एक बार मुख फेर कर दो ही एक मिनट में ऐसे ऐसे परिवर्तन दिखाने लगे कि हम लोग सनाटे में आगये । दोनो आदमी पहले ग्लाबस्टन और डिजरेली के रूप में खड़े हुए । मिनट ही भर में वे नेपोलियन और वेलिगटन बन गये । फिर दम भर में बिस्मार्क और वान मल्क बन गये । इसी तरह उन्होंने सप्ताह के अनेक प्रसिद्ध लोगों के चेहरे दिखलाये । इनको Contortionist कहते हैं । जान पड़ता है, यह इनकी सीसी हुई विद्या है ।

गिलाटीन-छुरी और एक मुखोस (Guillotine-knife and Lunnette) । सोलहवे लुई, उसकी रानी, रोब्सपेयर आदि २२,००० अच्छे और बुरों के सिर काटने में ये दोनों चीजे काम आई हैं । उस समय के जहाद सान्सन (Sanson) के पोते से ये दोनों चीजे खरीदी गई हैं । असल गिलाटीन यहाँ नहीं है, उसकी नकल है ।

लुई दसो की प्रदर्शिनी (Louis Tussaud's Exhibition) । मोम की मूर्तियों की कारीगरी की इतनी उन्नति इन्हीं लुई दसो के पूर्वपुरुषों के द्वारा हुई है । मैडम दसो ने ही इस प्रदर्शिनी की सृष्टि की है । उन्हीं के पौत्र लुई दसो ने लन्दन में एक नई प्रदर्शिनी स्थापित की है ।

यहाँ अनेक बड़े आदमियों की मूर्तियों में निम्न श्रेणी के प्रतिनिधि जान बर्न्स (John Burns) और बेन टिलेट (Ben Tillet) की मूर्तियाँ भी देख पडीं । इसी से जान पडता है कि लन्दन में धीरे धीरे इस श्रेणी के लोगो का आदर बढता जाता है । लडको के मनोरञ्जन के लिए यहाँ एक नया विभाग खोला गया है, जिसमें राविन्सन क्रूसो, अलादीन, अलीबाबा आदि के जीते-जागते से सब दृश्य हूबहू दिखलाये गये हैं ।

अँगरेजों में अनेक गुण हैं । मुझे पहले विश्वास ही न था कि एक जगह इतने गुण हो सकते हैं । अँगरेजो अत्यन्त उत्कृष्ट भाषा है । बयोवृद्धि के साथ ही साथ साहित्य-संसार में इसका आदर दिन-दिन बढता जाता है । अनेक चेष्टा और भारी तत्परता के द्वारा बहुत से महामूल्य सत्य-रत्नों का समग्र इसमें किया जा रहा है और उस समग्र से यह भाषा अत्यन्त उज्ज्वल होती जा रही है । अतएव, अँगरेजों के चरित्र का ज्ञान प्राप्त करने, और वर्तमान सभ्य जगत् की गहरी चिन्ता और वैज्ञानिक आविष्कार आदि की आलोचना तथा शिचा के

द्वारा उन्नत बनने की इच्छा हो तो अँगरेजी भाषा को अच्छी तरह जानना बहुत जरूरी है । हमें ससार में सबसे बढ कर अँगरेज-चरित के अध्ययन की जरूरत है । विधाता ने उन्हीं के हाथों में हमारे उद्धार का काम सौंपा है । इसलिए यद्यपि अच्छे अभिप्राय से अँगरेजी पढने में भारी लाभ के सिवा हानि का कोई कारण नहीं देख पडता । मेरी समझ में तो अँगरेजी न पढने से हमारी भारी हानि ही है । विदेशी भाषाओं को मथ डालने में तो अँगरेज बडे बहादुर हैं । इस बात में वे बडी उदारता से काम लेते हैं । पृथ्वी भर की सारी भाषाओं को यथाशक्ति सीख कर उनके ज्ञान का सञ्चय करना, अँगरेज जाति अपना प्रधान कर्त्तव्य समझती है । यही उनकी भाषा और जाति की उन्नति का प्रधान कारण है । बडे भाग्यशाली हैं हम लोग जो भगवान् ने हमें ऐसी ज्ञान-भक्त उद्योगशील महाजाति के आश्रय में रक्खा है । इस समय कर्त्तव्य यही है कि इन श्वेताङ्ग महापुरुषों के आश्रय में जब तक भगवान् हमें रक्खें तब तक हम इनके सारे सद्गुणों को ग्रहण करने की चेष्टा करें, और, किस किस उपाय से ये लोग इतने ऊँचे स्थान पर पहुँच सके हैं, इसकी आलोचना करके उसी राह को पकडने का पूरा प्रयत्न करें । इनकी भारी भाषा से साल-मसाला लेकर अपनी प्राणों से प्यारी मातृभाषा को कुछ सुन्दर महल बना लें । निकमे नाटक और नाविल लिख कर समय, उद्योग और धन को नष्ट करने की अपेक्षा अँगरेजी से अच्छे भाव और अच्छी बातों का संग्रह करते हुए मातृभाषा की उन्नति और पुष्टि करना लाख गुना अच्छा है । इसमें कोई सन्देह नहीं कि कुछ योग्य पुरुष यदि इस कार्य में लग जायें तो शीघ्र ही बहुत कुछ काम हो सकता है । कालिदास और भवभूति के देश में 'कल्पना में' यश प्राप्त करने की चेष्टा विबुधना-मात्र है । इसके सिवा ऐसी गन्दी और निकामी पुस्तको

के डेर के डेर लग गये हैं, अतः वैसे मौलिक, किन्तु हानिकारक साहित्य की आवश्यकता नहीं है ।

एक पण्डित का कथन है—“Language is most commonly studied for practical purposes only, to gain greater assurance and accuracy in the use of one's own vernacular, or to acquire the use of other tongues which afford commercial, social or literary advantages” अर्थात् वाणिज्य, साहित्य या सामाजिक जगत् में सुविधा के लिए विदेशी भाषा का सीखना बहुत जरूरी है । नित्य के व्यवहार में मातृभाषा के सिवा अन्य भाषा का प्रयोग करना अस्वाभाविक है ।

अपनी साधारण समझ से मैं कह सकता हूँ कि हिन्दुस्तानी के लिए अँगरेजी में मन का भाव पूरी तौर से प्रकट करना सर्वथा असम्भव है । यह जरूर है कि हम लोग अँगरेजी में अच्छी पुस्तक लिख सकते हैं, अच्छा व्याख्यान दे सकते हैं, किन्तु अपने हृदय की बातें—जिनके साथ देश, काल, पात्र, आदि की घरेलू बातें विजडित हैं—जी भर कर आसानी से अँगरेजी में प्रकट करना सर्वथा असम्भव ही जान पड़ता है । हमारे और इंग्लैंड के दैनिक आचार-व्यवहार, कार्य-कलाप, रीति-नीति, जल-वायु, दिन-श्रुत आदि में इतना अन्तर है कि केवल देखने-सुनने-चलने आदि शारीरिक चेष्टाओं के और किसी बात में हमारी उनकी समानता नहीं देख पड़ती । ऐसी अवस्था में हम अपने खास भावों को पूर्णरूप से अँगरेजी में कभी नहीं प्रकट कर सकते । साल के शुरू से अन्त तक, सवेरे से सवेरे तक, हम लोग जिन जिन कामों को नियमित रूप से या प्रयोजनवश करते हैं अथवा सोचते-विचारते हैं, उनके प्रकट करने लायक शब्द केवल हमारी ही भाषा में होना सम्भव है । विदेशी लोगों की भाषा में उन शब्दों का न होना ही स्वाभाविक है । क्योंकि

उन्हें जो कुछ दरकार है वह उनके यहाँ मौजूद है । फालतू चीज किसी के नहीं रहती । लडकपन में सुना था कि किसी आफिस के बड़े साहब को डेकी के द्वारा 'सुरखी' कूटना समझाने के लिए एक क्लर्क ने मजदूरो की तरह सुरखी कूटने की नक़ल करके बतलाया था कि "बन् मैन धापुड-धुपुड टू मैन रखता है तब साहब 'सुरखी' बनता है" । लडकपन में यह हँसी-दिख़गी की बात थी, किन्तु अब समझ में आता है कि विलायत से तुरन्त आये हुए गोरे को 'सुरखी' के कारख़ाने का ठीक भाव समझाना कितना कठिन काम है । फ़रासी भाषा में 'लात' का प्रतिशब्द नहीं है । इसका कारण यही है कि वहाँ लात मारने की चाल नहीं है । किसी फ़्रान्सीसी को 'लात' समझाने के लिए 'पैर मारना' कहना होगा ।

इसी तरह सबके यहाँ थोड़ी बहुत कमी है । तुम्हारे जो है वह हमारे नहीं है, हमारे जो है वह तुम्हारे नहीं है । इसी से इस सप्ताह में विचित्रता देख पड़ती है । हर एक जाति में, देश की अवस्था के अनुसार, प्रयोजन में आनेवाली ऐसी चीजें, बात-चीतें, कहावतें और कहानियाँ हैं जो दूसरो के लिए बिलकुल नई हैं, या उनको बहुत ही भद्दी जान पड़ती हैं । हमारे देश की तरह "महाशय का क्या नाम है ? कहाँ निवास-स्थान है ?" इत्यादि प्रश्न करना वहाँ असभ्यता या भद्दापन समझा जाता है । वैसे ही अँगरेजों का "It is a nice morning?" कहना भी हमारे देश के लोगों के लिए एक नई बात है । वहाँ दो आदमियों में मुलाकात होने पर ऐसी बातचीत होती है कि "आज का प्रातःकाल कैसा है ? दिन कैसे बीतेगा ?" । ऐसी बातचीत के दो कारण समझ में आते हैं । एक तो इंग्लैंड की हवा ऐसी दम दम में बदला करती है और उज्ज्वल-सुन्दर प्रातःकाल ऐसी महामूल्य चीज समझा जाता है कि ऐसे प्रश्न में एक प्रकार की

विशेषता है। दूसरे, वहाँ के सामाजिक नियम के अनुसार एक आदमी दूसरे आदमी से और किसी तरह का सवाल कर नहीं सकता। अपने अपने काम-धन्धे में सब लगे रहते हैं। दूसरे की किसी बात का खोज लगाना वहाँ भले आदमियों की दृष्टि में नियमविरुद्ध और निन्दित समझा जाता है। इसी लिए “आज बड़ा सुहावना दिन है, साफ दिन है” इत्यादि आलोचना से ही बातचीत शुरू की जाती है। शायद ये बातें अनेक अँगरेजी के अनन्यभक्त बाबुओं को नहीं रुचेंगी—गरीब हिन्दुस्तानियों की मातृभाषा का ये गुण-गान करना उनके कानों में विष-वर्षा सा जान पड़ेगा। जो कुछ हो, सत्य के अनुरोध से यह मैं लिख रहा हूँ। जो देखा या समझा है उसे सुनाना हर एक मनुष्य का कर्तव्य है। मैं यह स्वीकार करता हूँ कि प्राचीन शेक्सपियर, मिल्टन, एडिसन, वायरन, मेकाले आदि के अतिरिक्त मेरे आगे के कार्लाइल, एमर्सन, मार्ले, रस्किन आदि अँगरेजी के महामहोपाध्यायों के अत्यन्त उदार सुप्रशस्त स्वर्गीय भावों की और उन भावों के योग्य गम्भीर अर्थबोधक होने पर भी सुललित स्पष्ट भाषा की प्रशंसा किये बिना कोई नहीं रह सकता। वह गँवार आदमी विलकुल ही रसिक या गुणज्ञ नहीं है जो अँगरेजी भाषा के साधारण वैज्ञानिक साहित्य के सुयश का बखान नहीं करता। इसमें कोई सन्देह नहीं कि ऊपर जिन पण्डितों के नाम लिखे जा चुके हैं उनकी टक्कर का एक भी आदमी अगर भारत में पैदा होता तो हमारी यह दुर्दशा न होती। किन्तु अपने अनुभव के अनुसार यह कहने में मुझे कोई सङ्कोच नहीं है कि रोजमर्रा के कामों—प्रयोजनों—को सिद्ध करने में अपनी मातृभाषा जो काम करती है, वह काम अँगरेजी से नहीं निकल सकता। बहुत से बङ्गाली भाई जानते होंगे कि क्लरुत्ते के मिचेल (Murray Mitchell, LL D) नाम के एक स्कॉटलैंडदेशीय

भाषा-तत्त्ववेत्ता पण्डित फ्री-चर्च-कालेज के प्रिन्सिपल थे । इन गुणग्राही सज्जन ने बहुत भाषाओं से अनेक प्रकार के सङ्गीतों का संग्रह करके अँगरेजी में उनका अनुवाद किया था । उन्होंने वँगला के संगीतों का अनुवाद करने के उपरान्त यह स्वीकार किया था कि अन्य किसी भाषा में इतने घोड़े शब्दों में ऐसे गम्भीर अर्थ-पूर्ण भावों को प्रकट करने की शक्ति नहीं देखी । उनका कथन है कि वँगला के निधू के टप्पे के ऐसा गान उनकी अन्य किसी भाषा में नहीं मिला । सङ्गीत का हर एक शब्द सुननेवाले के हृदय में चुभ कर उस पर असर डाले—यह बात उनको पहले-पहल निधू के टप्पों में ही देख पड़ी । ऐसा क्यों न हो ? ज्ञान, धर्म, राज्य, समाज, व्यवसाय, वाणिज्य, अन्न-वस्त्र आदि सब खो कर बङ्गाली बहुत काल से कविता करने ही में लगे हुए हैं । ऐसे कठिन आत्मत्याग-व्रत का कुछ फल भी तो मिलना चाहिए । जो कुछ हो, जब सब लोग आज-कल इस बात को स्वीकार करते हैं कि किसी भाषा के सम्बन्ध में विचार करना हो तो उस भाषा के सङ्गीतों की अच्छाई-बुराई देखनी चाहिए, तब केवल सङ्गीत की दुहाई देकर मातृभाषा के महत्त्व की घोषणा करने का हमको सोलहो आने अधिकार है । अब यह देखना चाहिए कि केवल सङ्गीतों पर विचार करने से अँगरेजी भाषा कौसी ठहरती है । पहले जब मैं इंग्लैंड में पहुँचा तब पाँच-छ घण्टों से इंग्लैंड में रहनेवाले एक बङ्गाली युवक ने बातचीत करते करते कहा कि “अँगरेजी के गीतों की भाषा और स्वर बहुत ही श्रेष्ठ हैं । हम लोग अपने पहले अभ्यास के कारण उनकी श्रेष्ठता का अनुभव नहीं कर पाते । कुछ दिनों इस देश में रहने से धीरे धीरे कानों को विलायती गीतों के सुर-तान लय की खूबी और अर्थ की मधुरता का अनुभव होने लगता है ।” उस समय उनकी बातों पर विश्वास करने में इस शर में अपने अज्ञ होने की बात

स्वीकार कर ली थी । उसके उपरान्त खय अनुसन्धान करके अँगरेजी गीतो के बारे में मुझे जैसा ज्ञान प्राप्त हुआ है, उसे मैं एक दिन का हाल लिखकर पाठकों को बतलाने की चेष्टा करूँगा ।

एक भले खानदान के यहाँ शाम को मेरा निमन्त्रण था । हमारे देश में जैसे निमन्त्रित व्यक्ति को भोजन के बाद ही पान देकर, या बहुत जगह शीघ्र विदा कर देने की इच्छा से पतली में ही पान का बीड़ा रस कर, लोग उससे पीछा छुटाते हैं, वैसी चाल यहाँ नहीं है । यहाँ निमन्त्रित व्यक्ति को भोजन कराकर दो-तीन घटे तक उससे बात-चीत या उसके मनोरञ्जन की चेष्टा करना हर एक गृहस्थ का विशेष कर्त्तव्य समझा जाता है । प्रचलित प्रथा के अनुसार हम सब लोग भोजनोपरान्त बैठक-खाने (Drawing room) में इकट्ठे हुए । घर के पुरखा ने पियानो लेकर गाना शुरू कर दिया । दो-तीन गीत गा चुकने के उपरान्त उन्होंने मुझसे पूछा कि “आपको ये गीत कैसे लगे ?” ।

गाने-बजाने में ये महाशय बड़े चतुर हैं, यह बात मैं पहले ही सुन चुका था । इसी से मैंने उत्तर दिया—“आप इस काम में उस्ताद आदमी हैं, आपका गाना-बजाना अवश्य ही अच्छा होगा । दु ख की बात है कि मैं इस बारे में विचार करने में सम्पूर्ण असमर्थ हूँ, मुझे इस विषय की कुछ भी जानकारी नहीं है” ।

वह—“गानो का मतलब तो आप सब समझ गये ? भाव कैसा है ?”

मैं बड़ो मुश्किल में पडा । शब्दों को जोड़ कर उनका भाव निकालना सहज काम न था । इसी से मैंने कह दिया—“भावों को मैं अच्छी तरह समझ नहीं सका” ।

वह—“ठीक है । ये गीत उतने मनोहर हैं भी नहीं । अच्छा, अब ‘टीटविलो’ गीत सुनिए । यह हमारी भाषा की अत्यन्त उत्कृष्ट रचना समझी जाती है” ।

उन्होंने ‘टीटविलो’ गान गाया । मैंने आदि से अन्त तक विशेष ध्यान के साथ कान खड़े करके एकाग्र मन से उस गीत को सुना कि शायद उसके किसी टुकड़े से कोई रत्न निकल पड़े । परन्तु उस गीत में ऐसा ही रस भरा हुआ था कि उसका एक एक शब्द जैसे जैसे कान में पड़ता था, वैसे वैसे मेरा कण्ठ सूखता जाता था । मैं यही सोचता था कि अब की अगर यह इस गीत के बारे में मेरी राय पूछेंगे तो बड़ी आफत होगी । परन्तु भगवान् ने मुझे इस विपत्ति से बचा लिया । उक्त गान की रचना-चातुरी और पदविन्यास का बखान करके मैं सुरसिक पाठकों के मरस हृदय को नीरस बनाना नहीं चाहता । यहाँ पर वानगी की तौर पर केवल उस गीत का अर्थ लिखे देता हूँ, उसी से पाठकगण समझ लेंगे । उस गीत का अर्थ यह है—

“एक छोटा सा पत्ती किसी नदी-किनारे के पेड़ की डाली पर बैठ कर ‘टीटविलो, टीटविलो’ कह कर विलाप करता हुआ पसीने से तर हो गया और छाती पीटते पीटते पानी में फाँद पड़ा ।”

सुर के सम्बन्ध में मुझे यही कहना है कि केवल दस बारह दफे ‘टीटविलो, टीटविलो’ सुन पडा, और कुछ भी समझ में नहीं आया । पाठकगण, अब आपको भी छुट्टी मिली और मेरी भी जान बची । किन्तु प्रश्न यह है कि इसमें बहादुरी किसकी अधिक है ? खूब तारीफ़ किसकी करनी चाहिए ? गीत बनानेवाले की, स्वर-निर्देश करनेवाले की, गानेवाले की, या इस तरह के विशुद्ध सुर-तान-लय और मधुर भाव में मोहित उस भङ्गाली युवक की ? आप चाहे जो कहें, पर मेरी समझ में तो सर्वोपरि निर्लज्ज और मूर्ख वह

बङ्गाली युवक ही सबसे बढ कर बडाई का अधिकारी है। शाबास ! शाबास बङ्गालो भाई ! तुम धन्य हो । सङ्गीत-रत्नाकर की उपाधि को सार्थक करनेवालो भारतमाता की कोख धन्य है, जिसमें तुम ऐसे समझदार सपूत पैदा हुए । भाई बङ्गाली युवक ! 'नाद-ब्रह्म' इस महावाक्य का अर्थ तुमने ही खूब समझा । दूसरी रिलत गीत रचनेवाले को मिलनी चाहिए । इस बरफ के मुल्क में पच्ची के मस्तक में पसीना, और उसका छाती पीटना । कल्पना की बलिहारी और रचना की वारी । ऐसी नई लिपि-चातुरी और भाव-माधुरी की बलायें लेने को जी चाहता है । 'टीटविलो' के बाद ब्रिटन विल्यात 'गिनावडी' प्रेम-गात गाया गया । इसका सुर तो बहुत चुरा नहीं था, किन्तु और और बातों में यह 'टीटविलो' से भी बढा चढा था ।

अब की मेरी पारी आई । सब मुझको एक वँगला गीत गाने के लिए लाचार करने लगे । फरमाइश हुई कि कोई प्रेम का गाना हो । पहले मैंने सोचा कि कृष्ण की प्रेम-लीला का कोई गीत गाऊँ । परन्तु फिर महात्मा मिचेल का स्मरण हो आने से मैंने निम्नलिखित गीत गाया ।

“भालोवासिबे बोले भालोवासिने ।

आमार चरित पई, तोमा बई आर जानिने ॥

अधरे मधुर हासी, देखिले आनन्दे भासी,

ताई देखिते आसी, देखा दिते आसिने” ॥

गीत समाप्त होने पर सबने एक स्वर से कहा—“Languishing air” अर्थात् मोहित कर देनेवाला स्वर है । इसके बाद ही चारों ओर “अर्थ ? अर्थ ?” की पुकार पडी । बालक बालिकाओं को छोड कर युवक-युवती बुड्ढे-बुडिया सब अर्थ जानने के लिए उत्कण्ठा प्रकट करने लगे । अर्थ की व्याख्या हो चुकने पर सब कह उठे—

“बहुत ही प्रच्छा है, बहुत ही मनोहर है” । घर की पुरखिन औ उनकी मँभली लडकी ने एकमत होकर अपनी राय जाहिर की वि इस तरह का ऊँचे दरजे का प्रेम इस देश में भी है । किन्तु भारत में यह प्रेम शायद सब जगह देखा जाता है, नहीं तो साधारण गीत में ऐसा प्रेममय भाव आ नहीं सकता था ।

उन लोगों ने प्रश्न किया कि “भारत में निःस्वार्थ-प्रेम के कितने गीत हैं ?” । मैंने कहा—“उनकी गिनती नहीं की जा सकती” । मेरा यह उत्तर सुन कर उन लोगों को बड़ा ही आश्चर्य हुआ । अन्त को युवतियों ने भारत की कोई कथा सुनने की इच्छा प्रकट की । मैंने उनको नल-दमयन्ती की पूरी कथा सुना कर कहा—“इस उन्नीसवीं शताब्दी में ऐसी छो देख पडना सहज नहीं है” । इसी बात पर, जब सब लोग उठ कर चले गये और उन दो बहनो के और मेरे सिवा और कोई नहीं रह गया तब, गृहस्वामी की अविवाहिता मँभली कन्या ने कहा—“आपका यह कहना ठीक नहीं । सच्चा प्रेम होने पर सर्वदा सब कुछ किया जा सकता है । क्यों बेटो ?

बेटो उसकी छोटी बहन का नाम था । उसने कुछ मुसकराकर कहा —“मैं नहीं जानती कि किस अवस्था में क्या करूँगी” ।

पाठकगण, मेरे इस तरह यहाँ तक बढ़ आने के लिए मैं आपसे क्षमा-प्रार्थी हूँ । यहाँ के भद्र-परिवार, जिनको यद्यार्थ “English Home” कहते हैं, सबमुच ही सरल-प्रेममय स्वर्ग के दृश्य हैं । उन्हीं की मोहिनी शक्ति से विवश होकर मैं आप लोगों को यहाँ तक ले आया हूँ । यदि कहीं भी पवित्र सुख है तो इंग्लिश-होम में । अँगरेजों का “Home, sweet home” गाना सर्वथा सार्थक है । जाने दीजिए, फटे चीथड़ों पर पड़े पड़े लाख रुपये को इमारत का स्वप्न देखने से कोई लाभ नहीं । हमें अपने उन्हीं कलह-पूर्ण, अशान्तिमय, विष-भरे, गन्द घरो का ही

साफ़ करके स्वर्ग बनाना होगा । क्योंकि हमको उन्हीं से काम है । हम लोग रूप, गुण, धन, मान, विद्या, बुद्धि, ज्ञान, धर्म आदि सब गँवाकर राह के फकीर बन बैठे हैं । अब हमारा ऊपर उठना सहज बात नहीं है । बूँद बूँद रुधिर से धोये बिना हमारी यह मलिनता दूर होने की नहीं ।

बातो ही बातों में पुस्तक बढ़ी जाती है । इस कारण अब दो-एक उदाहरणों के द्वारा मातृभाषा की प्रधानता और उपयोगिता दिखाने की चेष्टा करके इस प्रसंग को समाप्त करूँगा । “प्यारे भैया !” इस सम्बन्धन ही को ले लीजिए । देखिए, इसमें कैसी भारी शक्ति भरी हुई है । चिन्ताशील प्रेमी-मात्र इस शब्द की शक्ति का अनुभव कर सकते हैं । इस छोटे से शब्द के द्वारा दो आदमियों में कैसा अपूर्व प्रिय सम्बन्ध खड़ा हो जाता है और दोनों के मन और हृदय एक दूसरे के प्रति कैसे एक अनिर्वचनीय मधुर भाव से आकृष्ट होते हैं, यह बात अनुभव के बिना प्रकट करना कठिन ही है । अज्ञता से हो, या मातृभाषा के प्रति अत्यधिक स्वाभाविक प्रेम के कारण हो, अथवा कठिन सत्य के अनुरोध से हो, किसी तरह इस बात पर विश्वास नहीं होता कि इस सुन्दर सम्बन्धन के अमूल्य भाव ठीक इसी तरह अँगरेजी भाषा में भी प्रकट किये जा सकते हैं । और, यदि कोई प्रकट कर सकता हो वह मेरे गुरु के समान है, उसे मैं निःसङ्कोच गुरु मानने के लिए तैयार हूँ । ऐसे बहुत से शब्द हैं जिनका अँगरेजी में अत्यन्त उत्तम अनुवाद होने पर भी वह अनुवाद अर्थ और भाव में—अर्थात् कहनेवाले के मतलब को अच्छी तरह व्यक्त करने में—थोड़ा-बहुत हीन ही होगा । वैसे ही अँगरेजी में वीर-रस के जैसे शब्द हैं वैसे शब्द हम गुलामों की भाषा में नहीं हैं । “Onward !” “Forward !” “Quick march ” इत्यादि शब्दों के भावों को हम लोग अपनी भाषाओं के हजारों शब्दों से भी व्यक्त नहीं कर सकते ।

अँगरेजी में, सदा व्यवहार में आनेवाले शब्द, हमारी भाषाओं की अपेक्षा कम हैं । इस कारण अँगरेजी के एक एक शब्द को कई अर्थ प्रकट करने पड़ते हैं । प्रमाणस्वरूप “glove” और “bang bang” शब्द को ही ले लीजिए । जहाँ तक मुझे मालूम है “glove” शब्द का मुख्य अर्थ है दस्ताना । किन्तु भाषा में शब्दों की कमी के कारण लिहाफ, तकिया, कुर्सी इत्यादि के आवरणों के लिए भी इसी शब्द का प्रयोग होता है । ऐसी चीजों के लिए “case” “cover” आदि शब्दों का जैसे व्यवहार किया जाता है, वैसे ही “glove” शब्द का भी । विशेष शब्दों के अभाव से इन तीन तीन साधारण शब्दों का एक ही अर्थ में अनिश्चित रूप से प्रयोग किया जाता है । ऐसे ही “bang bang” शब्द का भी बहुत सी अवस्थाओं में प्रयोग होता है । हाथ से कोई चीज गिर पड़ने से जो शब्द होता है उसके लिए, शीशे के कई बर्तन गिरने से जो शब्द होता है उसके लिए, कोई चीज गिर कर सीढियों से लुढ़कने पर जो शब्द होता है उसके लिए, और बार बार दरवाजा खटखटाने से जो शब्द होता है उसके लिए भी, उसी एक ही “bang bang” शब्द का व्यवहार किया जाता है । इसी तरह के बहुत से दृष्टान्तों का संग्रह किया जा सकता है ।

दो अँगरेजों के दम भर बातचीत करते ही इस तरह की बातें बारबार सुनने को मिलती हैं । यथा—“Do you see what I mean?” (मैं क्या कहता हूँ, समझे ?), “Do you mean this?” (तुम्हारे कहने का क्या यही मतलब है ?), “Yes, that is exactly what I mean to convey” (हाँ, मेरे कहने का यही अर्थ है) । बातचीत में हमेशा इस तरह के सवाल-जवाबों से क्या यह नहीं प्रकट होता कि इस भाषा में शब्दों की कमी होने के कारण कहने और सुननेवालों को परस्पर अपना भाव प्रकट करने में कठिनाता का

सामना करना पडता है ? इसके सिवा 'well' (भला), 'you know' (समझे), 'don't you see?' (समझते हो न?), 'I will tell you what it is' (उसके बारे में मैं तुमसे कहता हूँ)—इत्यादि बातों का उद्देश केवल समय बिताना ही है। जो भाव सूझता है, तो उसके प्रकट करने लायक शब्द नहीं ढूँढे मिलते। कभी कभी एकदम व्यर्थ वाक्यों का प्रयोग किया जाता है। जैसे—“It is something—I do not know what to call it” (अर्थात् किस विशेषण का प्रयोग करना चाहिए, खोजे नहीं मिलता)। कभी कभी नाम न होने से या नाम न जाना रहने से (ये ऐसे नाम होते हैं जो भाषा में नये नये चलाये जाते हैं, या किसी विदेशी भाषा से लिये जाते हैं, किन्तु बातचीत में हमेशा उनका उतना व्यवहार नहीं किया जाता)। कोई कोई आदमी 'things' कह कर काम चला लेते हैं। ये सब बातें तो भले आदमियों के सम्बन्ध में कही गईं। किन्तु छोटे आदमियों की बातें इससे भी विचित्र हैं। उनके द्वारा अगर अँगरेजी भाषा का विचार किया जाय, तो ठीक न होगा।

मनुष्य-समाज की सबसे नीचे की श्रेणी में स्थित जङ्गली असभ्य वुशमैन आदि की भाषा में बातचीत के शब्द बहुत ही थोड़े रहने के कारण, वे आपस में बातचीत करते समय अधिकांश बातों का इशारे, हाव-भाव, अङ्ग-भङ्गी और हाथ-मुँह मटकाने के द्वारा प्रकाशित किया करते हैं। उस देश के अर्धशिक्षित और मूर्ख लोगो में यह अभ्यास बहुतायत से देख पडता है। यहाँ तक कि दो-एक भद्र-महिलाओं में भी मैंने यह दोष देखा है। जहाँ शब्दों के द्वारा भाव प्रकट करने में विलम्ब या कष्ट जान पडता

*लन्दन के बगालियों में से किसी किसी ने इस अभ्यास में सुष निपुणता प्राप्त कर ली है। वे बुरी बातों का—दोषों का—अनुकरण करने में—तिदहस्त हैं। ऐसे दो-एक आदमियों को मैंने देखा है, जो अँगरेजों की देखादेखी पोरों के हिसाब

है, या अर्थ समझाने के लिए वक्ता अपनी शारीरिक शक्ति के प्रयोग की आवश्यकता समझता है, वहाँ मनुष्य आप ही शरीर के भिन्न भिन्न अङ्गों के सञ्चालन द्वारा मन के भाव को स्पष्ट करके व्यक्त करने की चेष्टा करता है। किन्तु सुसभ्य शिक्षित भले आदमी, साधारण बातचीत में ऐसे अभ्यास को दोष की बात समझ कर, इस दोष से बचे रहते हैं। विलायत के सुशिक्षित समाज में इस दोष का लेश भी नहीं देखा जाता। वे बहुत धीरे धीरे बातचीत करते हैं, और पाण्डित्य के जोर से किसी तरह का भाव प्रकाशित करने में जरा भी नहीं अटकते। मगर शब्दों का आडम्बर बढ़ाने में वे भी कृपण नहीं हैं। इसी श्रेणी के लोगो के द्वारा अनेक नये शब्दों की सृष्टि हुई है, और अभी तक होती जा रही है। भाषा में शब्दों की कमी अधिक अत्यन्त ही मध्यम श्रेणी के अर्धशिक्षित लोगो को। यह हमारी भाषा की उत्तमता है कि हमारे यहाँ के नीचे श्रेणी के लोग भी अनायास बातचीत कर सकते हैं, और शरीर को नहीं हिलाते डुल्लाते।

मातृभाषा पर अश्रद्धा या घृणा का भाव रखना घोर कृतघ्न पुरुष का काम है। केवल इसी दृष्टि से, इसी कारण से, हर एक शिक्षित पुरुष का कर्त्तव्य है कि वह मातृभाषा की आलोचना और पुष्टि करने में सदा लगा रहे। बँगला में विद्यासागर, अक्षय कुमारदत्त और

से नहीं, बल्कि डँगलियो के हिसाब से गिनती गिनते ह। शायद वे नहीं जानते कि सुसभ्य यूरोप में असभ्य अवस्था का यह चिह्न रह गया है। जम मनुष्य हाथ पैरो की डँगलियों के हिसाब से केवल २० तक गिन सकता था, इसके आगे गिनती नहीं जानता था, उसी समय का यह अभ्यास है। दोनों हाथों की डँगलियों पर इस तरह गिना जा सकता था। इसी से १ से १० तक की दस संख्याओं को डँगली (Digit) कहते हैं।

बङ्किमचन्द्र के 'कल' के जल से और केशवचन्द्र सेन * के स्वाभाविक सतेज सरल 'फुहारे' के शीतल जल से साहित्य की भूमि खूब उपजाऊ हो चुकी है । अब मामूली परिश्रम से बहुत सी सफलता प्राप्त करने की आशा है † ।

लन्दन-पुलिस । पहले जमाने में जितना बड़ा शहर था उतने अर्थ को इस समय भी सिटी आफ् लन्दन (City of London) कहते हैं । इस हिस्से के शासन, विचार, आय-व्यय आदि सब काम जुदे हैं । नगर का यह अर्थ पूर्णरूप से लार्ड मेयर (Lord Mayor) के अधीन है । वही यहाँ के हर्ता-कर्ता-विधाता हैं, यहाँ तक कि स्वयं राजशक्ति भी इस हिस्से की चहारदीवारी के भीतर कोई चीज नहीं है । यहाँ के कई महलों को मिला कर एक स्वाधीन नगर सङ्गठित कर लिया गया है, जिसकी आन्तरी स्वाधीनता (Honoury Freedom) विशेष समान के रूप में किसी देशी या विदेशी प्रसिद्ध पुरुष को दी जाती है । साधारणतः ऐसी स्वाधीन (Freeman) मर्यादा का मिलना 'दानदान' आदि खास खास बातों पर निर्भर है । क्रमशः बढ़ कर इस समय जितना बड़ा नगर हुआ है, उसका मेट्रोपोलिस (Metropolis) कहते हैं । इस नगर के कार्य का भार एक सभा के

* केशवचन्द्र पारचाल्य भाषाओं के बड़े विद्वान् थे । कैनिंग (Canning), पार्कर (Parke), कार्लाइल (Carlyle), एमर्सन (Emerson) ये चार महाविद्वान् उनके मित्र थे । ये चारों विद्वान् वर्तमान समय में युग बदल देने वाले महर्षि समझे जाते हैं ।

† इसी तरह हम लोगों को हिन्दी-साहित्य के विषय में समझना चाहिए । यहाँ भी बहुत ऊँच सामान मौजूद है । मातृभाषा के प्रेमी सुशिक्षित पुरुषों का भी ध्यान मातृभाषा के उदासीन सुलभमण्डल की ओर आकृष्ट हुआ है । वे मातृभाषा की सेवा के लिए सबद्ध भी हैं, और छोटे से बड़े तक यथाशक्ति मातृभाषा की उन्नति के कामों में भाग ले रहे हैं । (अनुवादक)

हाथ, में है । उस सभा का नाम है लन्दन-कौन्टी-कौन्सिल (London County Council) । सिटी-पुलिस में ६०० से अधिक आदमी हैं; जिनका सालाना खर्च प्राय १ लाख पाउण्ड है । मेट्रोपोलिस में प्राय. १४,००० आदमी हैं, जिनका सालाना खर्च १५ लाख पाउण्ड है । सन् १८८२ की सूची से जाना जाता है कि उस साल इस महानगरी से ३,६६१ आदमी वालिगु और १२,८७८ बच्चे खो गये थे । उनमें पुलिस ने ११४ वालिगों और १२ बच्चों को छोड़ कर सबका पता लगा लिया । सिपाही पिता-माता के साथ से छूटे हुए रो रहे बच्चों को सहूलियत से स्नेहपूर्वक तरह तरह के प्रश्न करते हुए सड़क पर धीरे धीरे लिये जा रहा है और बहुत से लोग उसे घेरे हुए हैं । लन्दन की सड़कों में ऐमा दर्प-विषादमय दृश्य अक्सर देख पड़ता है ।

लन्दन की पुलिस कहती है—“लोग हमको सर्वज्ञ और सर्व शक्तिमान् समझते हैं । जिसको जो जरूरत होती है वह हमारे ही पास आता है” । सचमुच ऐसी अच्छी पुलिस और कहीं भी मैंने नहीं देखी । सिपाही ऐसे भले आदमी और ऐसे मुस्तैद हैं कि बिल्कुल अपरिचित विदेशी से भी बहुत ही अच्छा व्यवहार करते हैं । वे ठीक जैसे इस काम में परीक्षा देकर उत्तीर्ण हुए हैं । एक सप्ताह में डेढ़ पाउण्ड जैसे तनखाह है वैसे ही वे जवान, हृष्ट-पुष्ट, अनेक गुणयुक्त, लम्बे-चौड़े, सुस्थ-शरीर होते हैं । पाँच फुट दस इंच से छोटा आदमी भरती नहीं किया जाता । किसी स्थान का पता-ठिकाना पूछिए, तो वे, वह जगह चाहे जितनी दूर हो, ऐसा ठीक पता बताते हैं कि जैसे लन्दन की सारी घसो इन ही आँखों के आगे रहती है । जैसे — Third turning on the left, then fifth turning on the right, then fourth turning on the left (अर्थात् घाएँ तीसरा मोड़ है, उसके बाद दाहने पाँचवाँ मोड़ है, फिर उसके बाद बाएँ

चौथा मोड है) । यात्री मात्र इस बात को स्वीकार करते हैं कि यह पुलिस पृथ्वी भर की पुलिस से श्रेष्ठ है । बहुत लोगो को विश्वास है, और सूची आदि से भी यही सूचित होता है कि सन् १८७० के प्राथमिक शिक्षा सम्बन्धी आईन (Elementary Education Act) के प्रचार और बेकार लोगो के लिए अनेक प्रकार की व्यवस्था (Industrial Schools youngmen) होने के बाद अपराधियों की संख्या क्रमश कम होती जाती है । सारे इंग्लैंड में पुलिस जितने मुकद्दमो का चालान करती है उनकी सूची से भी यही बात प्रकट होती है । सन् १८६०—६६ में १६,१४६ मुकद्दमे, सन् १८७०—७६ में १५,८१७ मुकद्दमे और सन् १८८०—८६ में १४,०५८ मुकद्दमे हुए । ५०-६० वरस पहले लन्दन के कस्बों में रुपया-पैसा लेकर बेचटके जाना असम्भव था । लेकिन अब किसी तरह का खटका नहीं है । ५०-६० वरस से कुछ पहले नगर के भीतर भी आफिसो की तरफ चोरो और ठगों का बहुत उपद्रव था । बैंक के पास रात को बहुत लोगों को अपनी घड़ी-चैन से हाथ धोना पडता था ।

पुलिस के प्रधान कार्यालय के निकट भाग बुझानेवाले (Metropolitan Fire-Brigade) कर्मचारियों का हेड आफिस है । इस इमारत में एक १०६ फुट ऊँचा अष्टकोण टावर है । नगर में कहीं पर आग लगे, कर्मचारी लोग चढ़ उस टावर पर चढ़ कर देख लगे । इसी लिए वह टावर बना है । दमकल, एंजिन आदि साज्-सरजाम लेकर जब ये लाग आग लगने की जगह की ओर बिजली की तरह जाते हैं, वह भी दृश्य, लन्दन की सड़क में, देखने लायक होता है । नगर में इन लोगों के अनेक भेदे हैं । इनकी कार्यकुशलता जगत्प्रसिद्ध है । लन्दन में छोटी बड़ी आगें लगाही करती हैं । आईन के अनुसार चिमनियों (chimney) को सदा साफ रखना आवश्यक

होने पर भी असावधानी के कारण बहुत जगह चिमनी की भूल में आग लग जाती है। इसी लिए गृहस्थों को खूब जुमाने देने पड़ते हैं। वहाँ घरो के चारों ओर ईट-पत्थर की दीवार और भीतर सब काठ का सामान होता है। आग लगने से वहाँ बड़ी मुश्किल आ पड़ती है। दो चार बार मैंने भी आग लगना देखा है। भयानक दृश्य था। वर्तमान ढग के फायर-एन्जिन (Fire-Engine) सन् १६७६ में पहले-पहल प्रचलित हुए थे।

डाक-घर (Post Office)। पहले जेनरल पोस्ट-आफिस में दो भारी घर थे। एक में खास डाक-घर का काम होता था, और दूसरे में प्रधान आफिस और तार-विभाग था। अब तीन घर बन गये हैं। औसत हिसाब से, हर साल, यहाँ से डेढ़ सौ करोड़ पत्र, पचास करोड़ पुस्तकें और सवादपत्रों के पुलिन्दे, बीस करोड़ पोस्टकार्ड और ढाई करोड़ बैगियाँ जाती और आती हैं। बड़े दिनवाले सप्ताह में किसी किसी दिन २५ लाख से ३० लाख तक चीजें डाकखाने में आ जाती हैं। किन्तु ऐसा अच्छा प्रबन्ध है कि सब चीजें ठीक समय पर जहाँ की तहाँ पहुँचा दी जाती हैं। नित्य सन्ध्या के समय, दिन का काम समाप्त कर, जब लोग डाक-घर में पत्र आदि छोड़ने आते हैं, उस समय का दृश्य देखने ही लायक होता है। ६ से ८ बजे तक डाकखाने में बड़ी भीड़ रहती है। ठीक ८ बजे सब काम साफ हो जाता है। डाक चारों ओर चली जाती है। बड़े डाक-घर में ११,००० कर्मचारी हैं।

दूसरे घर में टेलीग्राफ-आफिस है। यहाँ पन्द्रह सौ मेशीने में तीन हजार आदमी काम करते हैं। लन्दन के सारे तारों की खबर यहाँ से जाती है। थोड़ी दूर के लिए न्यूमाटिक-ट्यूब (Pneumatic Tubes) की व्यवस्था है। छोटे छोटे डाकघरों से, एक बेग के भीतर में,

एक पुलिन्दे में एक ही साथ तीस तीस चालीस चालीस टेलीग्राम, दो तीन मिनट के भीतर, पड़े डाक-घर में आ गिरते हैं । बड़ी बड़ी भाप की रुलों से नल की हवा निकाल कर (Pulverizing the air in the tubes) यह काम किया जाता है । अंगरेजों के ऊपर लक्ष्मी देवी की कृपा बरम रही है, उसका विशेष लक्षण उनके वाणिज्य का विस्तार है, और विशेष प्रमाण डाक-घर की उन्नति है । इस समय इन घरों में स्थानाभाव के कारण मरे सामन ही एक तीसरा घर बना था ।

चेरिंग क्रॉस (Charing Cross) से चारो ओर आठ कोस की जो नगर की सीमा निर्दिष्ट है, वह सीमा लन्दन के डाक-घर के अधीन है । इस चौदहों के भीतर बहुत विभागों के डाक-घर हैं । उनके सिवा, छोटे छोटे और मोदियो बनिये-जकालों आदि की दूकानों के अलग अनेको छोटे छोटे पोस्ट आफिस हैं । उनकी सख्या करना कठिन है । मनीआर्डर, रजिस्ट्री आदि सब काम इन पोस्टआफिसों में होते हैं ।

डाकियो और तार बाँटनेवाले छोकरों में कोई भी बदसूरत या धिनौना नहीं है । छाँट छाँट कर सुन्दर सुडौल आदमी इस काम में नौकर रखे जाते हैं । अंगरेज लोग बदसूरत और धिनौने आदमी का किसी भले मानुस के घर में चिट्ठी लेकर जाना शेष की बात समझते हैं ।

लन्दन क प्रेस (Press) । लन्दन में रोज सबेरे आठ बडे और दो एक छोटे दैनिक समाचारपत्र निकलते हैं । इसके बाद दस बजे से तीसरे पहर के अखबार निकलने शुरू होते हैं । सबेरे के कागजों में 'टाइम्स' को छोड़ कर सबका मूल्य एक पेनी है । टाइम्स कलकत्ते के स्टेटसमैन के समान १६ पेज का छोटे छोटे हफ्तों में छपा हुआ होता है । इसी से वह तीन पेनी को बिकता है ।

तीसरे पहर के सब अखबार आधी पेनी को बिकते हैं। इनमें से हर एक के रोज सात आठ सस्करण निकला करते हैं। इन समाचार-पत्रों में दो-एक डेढ़ सौ घरस से भी अधिक पुराने हैं। सबरे के अखबारों में एक 'डेली टेलीग्राफ' ही नित्य तीन लाख के लगभग विक्रता है। मासिक पत्रिकाओं में साप्ताहिक और मासिक अनेक हैं, त्रैमासिक कम हैं। इनमें भी कोई कोई पुराने हैं। बहुत लोग यह प्रश्न कर सकते हैं कि हमारे यहां अखबारों की इतनी विक्री क्यों नहीं होती? इसके अनेक कारण हैं। उनमें से कुछ कारण यहाँ पर लिखे जाते हैं। लन्दन की सड़क पर चार मित्र जा रहे हैं। चारों ही चार अखबार खरीदेंगे। घर में अगर बाप-बेटे दो ही आदमी हैं तो दोनो ही कागज खरीदेंगे। इधर हमारे देश में एक कागज को गाँव भर के लोग पढ़ लेंगे। इसी प्रसङ्ग को उठा कर भारत-हितैषी हण्टर साहब ने एक बार कोई व्याख्यान देते समय श्रोता लोगो को खूब हँसाया था। यह तो हुई दैनिक और साप्ताहिक पत्रों की बात। यहाँ मासिक पत्रिकाएँ कितनी ही बार कितनी ही तरह की निकलती हैं, पर एक भी बहुत दिनों नहीं टिक सकती। किन्तु इसका कारण दूसरा ही है। विलायत में सब तरह के कागज जिस ढँग से चलते हैं उसी तरह यहाँ भी अगर पत्र चलाये जायें तो वे शायद इस तरह बन्द न हो। विलायत में हर एक लेखक अपने लेख के योग्य उसका पुरस्कार पाता है। पहले ही लिखा जा चुका है कि वहाँ केवल ब्रिटिश म्यूजियम से ही सवादपत्रों और सामयिक पत्रों में लिख कर कितने ही लोग अपनी जीविका चलाते हैं। हमारे यहाँ जैसे सभी कामों में "हर्रा लगे न फिटकरी, रग चोला हो" की नीति का अनुसरण किया जाता है वैसा विलायत में नहीं है। वहाँ कोई अपने सगे भाई को भी इसकी मेहनत का मूल्य दिये बिना उससे कोई काम

कराकर हीन बनना नहीं चाहता । इसी से अँगरेजी में एक कहावत है—“ Nothing for nothing, little for six pence ” (बिना मूल्य के कुछ नहीं होता, और थोड़े मूल्य में साधारण ही मिलता है) । विदेशी लोग इसके अनेक प्रकार के अर्थ करके अँगरेजों की निन्दा कर सकते हैं, किन्तु मैं पूछता हूँ कि यह नियम पृथ्वी पर कहाँ नहीं है ? मेरी समझ में तो यह बहुत ही अच्छा नियम है । हम तुमको लाभ पहुँचायें तो हम उस लाभ के भागी क्यों न बनें ? हमारे देश में जितने साहित्य सम्बन्धी पत्र बन्द हुए वे इसी कारण से । हाँ, यदि कोई इस तरह का दरिद्र सम्पादक हो, जो किसी तरह कठिनता से उस पत्र से अपना पेट पाल लेता हो, तो अवश्य सहृदय लेखकों का चाहिए कि उसे धन की भीख न दे कर लेखों की ही भीख दें । किन्तु जो सम्पादक या स्वत्वाधिकारी दूसरे के मध्ये प्रतिपत्ति-लाभ कर चुके हैं, या करना चाहते हैं, उन्हें ऐसी भीख माँगना कभी नहीं उचित है । हमारे यहाँ सम्पादक और स्वत्वाधिकारी लोग फोकट में ही लेख लिखा कर काम निकालना चाहते हैं, इसी कारण लेखक लोग जब देखते हैं कि इस वृत्ति से धन-लाभ की कोई आशा नहीं, तब वे लिखना बन्द कर देते हैं । इसी से—अच्छे लेखों के अभाव से—कागज बन्द हो जाते हैं । यदि लेखक खुद मुँह फोड़ कर माँगे और बारबार तकाजा करे, तो शायद कोई सम्पादक या स्वत्वाधिकारी कुछ दे भी दे । किन्तु कौन ऐसा समझदार होगा कि अपना दिमाग खर्च करके लेख लिखे और उलटे यह जजाल भी खरीदे ? सुन पड़ता है कि आज-कल पत्रों के सम्पादक या स्वत्वाधिकारी लोग “दया” करके लेखकों को कुछ कुछ देने लगे हैं । यह शुभ लक्षण है, इसमें कोई सन्देह नहीं । किसी तरह सुलेखकों को सन्तुष्ट रख कर ऐसे पत्रों को बनाये रखना

अत्यन्त आवश्यक है । यह एक जातीय शक्ति है । ग्राहकों की वेदमानी भी कभी कभी पत्रों के बन्द होने का कारण हो जाती है । पर मेरी समझ में ऐसे नादिहन्द ग्राहकों की संख्या अब घटती जाती है । सहृदय ग्राहकों की सहायता और पृष्ठपोषकता के बिना अखबारों या मासिक पत्रों का प्रचार सर्वथा असम्भव है ।

फ्लीट स्ट्रीट (Fleet Street)—सरस्वती महाल । टेम्पुल के निकट स्थित इस महल्ले में अनेक प्रधान सवादपत्रों के कार्यालय हैं—पुस्तकों की दुकानें हैं । इसे एक प्रकार से साहित्य का बाजार कह सकते हैं । पण्डितवर जान्सन ने यहाँ बहुत समय बिताया है । एक बार वह बसवेल के साथ ग्रीनिच-पार्क (Greenwich Park) में घूमने गये । जान्सन ने उक्त पार्क की प्रशंसा की । तब बसवेल ने कहा—“यह स्थान सुन्दर अवश्य है, किन्तु फ्लीट-स्ट्रीट के समान नहीं है” । प्रसन्न होकर जान्सन ने कहा—“बेशक, तुम ठीक कहते हो” । पण्डितवर जान्सन को यह स्थान (फ्लीट-स्ट्रीट) ऐसा प्रिय था कि वह यहाँ दिनरात बच्चों की तरह प्रसन्न-मन से घूमा करते थे । कवि लैम्ब (Charles Lamb) को भी यह स्थान प्रिय था । वह यहाँ सड़क पर होनेवाले पुतली के नाच के सामने खड़े होकर बच्चों की तरह खुशी के मारे नाचने लगते थे । लार्ड चैन्सलर स्टोवेल (Lord Chancellor Stowell) यहाँ मदा टहला करते और कहते थे कि “मैंने इस सड़क के सब छोटे-बड़े तमाशे देखे हैं” । एक बार एक नकली मत्स्य नारी (Mermaid) को देख कर प्रसन्न होकर उन्होंने तमाशेवाले को एक शिलिंग—बारह आने—दिया । किन्तु ऐसे भोले ग्राहक को ठगना ठीक न समझ कर तमाशेवाले ने कहा—“No, no, my Lord, I really mustn't charge you this time, you know our mermaid well She's only the ould seipint with a newtail ” (अर्थात्—माईलार्ड, अब की

में आपसे कुछ नहीं लूँगा । ठीक इसी को देख कर आप अनेक बार पैसे दे चुके हैं ।) पद-मर्यादा-सम्पन्न पण्डित का ऐसा बच्चे का सा भोलापन और सहज अभिमान-शून्य भाव एक जातीय गौरव की बात है, इसमें कोई सन्देह नहीं । यहाँ के निकट ही एक घर में बैठ कर महात्मा गोल्डस्मिथ ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ “विकार आफ् वेक फोल्ड” (Goldsmith's Vicar of Wakefield) नामक ग्रन्थ की रचना की थी । उसके बाद घर-वाली का श्रेय चुकाने के लिए, बहुत तग किये जाने पर, उन्होंने उक्त पुस्तक की हस्तलिपि, बेचने के लिए, जान्सन को दी थी । बहुत से सरस्वती के उपासकों के दुःख सुख की बातें इस महल्ले से सम्बन्ध रखती हैं । इन्हीं सब कारणों से, साहित्य की दृष्टि से, पलीट-स्ट्रीट एक तीर्थ-स्थान समझा जाता है । इसी महल्ले में जान्सन की मृत्यु भी हुई । इस सड़क पर एक नाई की दूकान पर लिखा है कि वह घर पहले राजा आठवें हेनरी का महल था ।

साधारण पाठ-भवन (Public Reading Room) । सब तरह के—सब दर्जों के—लोगों के लिए लन्दन में बहुत से पाठ-भवन हैं । पाठ-भवनों में यथासम्भव पुस्तकें, अखबार और मासिक पत्र आदि रखे जाते हैं । कहीं कुछ चन्दा देना होता है, और कहीं कुछ भी नहीं देना पड़ता । केवल अखबार आदि तो सब जगह मुफ्त पढ़ने को मिलते हैं । सर्वसाधारण को ज्ञान-दान करने के लिए ब्रिटिश-न्यूजियम ने लाइब्रेरी-टेक्स लगा रक्खा है, जो सबसे वसूल किया जाता है । अन्यान्य पाठ-भवनों का प्रबन्ध हर एक महल्ले की एक चुनी हुई मण्डली के हाथ में रहता है । ब्रिटिश-न्यूजियम में पढ़नेवालों की संख्या तो अधिक है ही, उसके सिवा अन्यान्य पाठ-भवनों में भी बहुत से जवान और बुढ़े केवल ज्ञानोपार्जन की लालसा से निरन्तर

ध्ययन किया करते हैं । दिन भर मेहनत करने के उपरान्त कितने । श्रमजीवी लोग शाम से डेढ़ पहर रात गये तक बैठ कर एकाग्र-वत्त से ग्रन्थ पढा करते हैं ।

हमारे यहाँ कहावत है कि “जो लिखता-पढता है वह गाड़ी-घोड़े र चढता है” । इसलिए यह मानना पडेगा कि आज-कल हमारे देश में लिखने-पढने का यथार्थ आदर नहीं है । व्यास, कणाद, कपिल आदि महात्मा लोगों ने नि सन्देह खूब पढा लिखा था, परन्तु गाड़ी-घोड़े पर वढना उनको नसीब नहीं हुआ । परन्तु इस समय देखा जाता है कि उल्लिखित महापुरुषों की अपेक्षा बहुत ही कम पढे-लिखे लोग— बैरिस्टर, डाक्टर, वकील, इंजीनियर आदि—घोड़े-गाड़ी पर चढे घूमते-फिरते देख पडते हैं । व्यास आदि के और आज-कल के बैरिस्टर आदि के लिखने-पढने में कितना अन्तर है, यह न जान सकने ही से हमारी यह दुर्गति है—यह धारणा है कि पढने-लिखने का फल केवल गाड़ी-घोड़े पर चढना ही है । असाधारण बुद्धिवाले व्यास आदि महर्षिगण जब तक सूर्य-चन्द्र रहेंगे तब तक ससार में जीते रहेंगे, और इस समय के विद्यादिग्गज शिश्तिताभिमानी हम लोग साधारण जीव-जन्तुओं की तरह जीवन के दिन पूरे करते हुए एक दिन अनन्त समय के लिए मिट्टी में मिल जायेंगे ।

पुस्तक पढने का यथार्थ उद्देश विद्या-लाभ के सिवा और कुछ नहीं है । किन्तु अविद्या, अर्थात् भोग-विलास आदि, के लिए धनो-पार्जन करना ही अगर लिखने-पढने का फल समझा जाय तो वह लिखना-पढना नहीं, एक मामूली दर्जे का रोजगार है । हम लोगों में कुछ ऐसे भी महापुरुष हैं जो किसी को सदा मन लगा कर पढते-लिखते देखते हैं, तो उसे उस सुमार्ग से हटा कर अपने दल में लाने के लिए कहते हैं कि “अजी लिखने-पढने में क्यों इतने लगे हुए

हो ।” । अर्थात्, लिखना-पढ़ना तो कालिज में ही समाप्त हो गया, अब हमने व्याह करके अपने जीवन को स्वार्थपरता के निकट गिरवा रख दिया है, और औरत के गहने, हलवा-पूरी और रुपयो की थैली के सिवा ससार में चौथी चीज का अस्तित्व स्वीकार ही नहीं करते । इस समय पढ़ने-लिखने जैसे व्यर्थ काम में मन लगाना सर्वथा असङ्गत और अनुचित है । किन्तु, इस प्रकार की आश्चर्योक्ति या कैफियत से यथार्थ ध्वनि क्या निकलती है ? इस युक्ति से हम आप ही फँस गये । हमने अपने हाथों अपने कपाल में, बड़े बड़े अचरो में, मूर्खता की छाप लगा ली । इन दिनों का नाम आज मिट गया । हमारी सैकड़ों पोथियाँ पढ़ने की भारी बडाई आज मिट्टी में मिल गई । हमने यह नहीं समझा कि हमारा मित्र इस धनोपार्जन की अवस्था में यथार्थ ज्ञानोपार्जन के लिए पढ़ने-लिखने में लगे हुए हैं । इससे यही जाहिर हुआ कि हम उसी गधे के समान हैं, जिसकी पीठ पर सैकड़ों पोथियाँ लाद दी गई हो । अभी तक हमको यही अभिमान था कि हम खूब पढ़े-लिखे हैं । पर आज जाहिर हो गया कि हममें और कतू चमार में कोई फर्क नहीं है । अगर अन्तर है तो यही कि हमारे ऊपर सौभाग्य की हवा चल रही है और उसके भाग्य में दरिद्रता का टुकड़ा लिखा है । हमें यह असम्भव जान पड़ता है कि मनुष्य नि स्वार्थ भाव से, केवल ज्ञान-प्राप्ति की लालसा से, जन्म भर लिखने-पढ़ने में लगा रह सकता है । तो फिर क्या हम घोर अज्ञान में पड़े हैं ? यदि यह सर्व-सम्मत वाक्य सच हो कि चोर ही चोर को और साधु ही साधु को अच्छी तरह जान सकता है, तो हमारी विद्या-बुद्धि की दौड़ इसी उक्ति से प्रकाशित होगई । इस समय भी अगर हम अपनी कमी और अभाव को देख सकें तो अच्छा है, नहीं तो सर्वनाश ही का सामना है । बहुत दिन हुएतब मैंने गुरुतुल्य रस्किन (Ruskin) के निकट सुना था कि —

You might read all the books in the British Museum (you could live long enough), and remain an utterly illiterate, uneducated person, but that if you read the pages of a good Book, letter by letter,—that is to say, with real accuracy,—you are for ever more in some measure an educated person.”

अर्थात् यदि कोई अमानुषिक दीर्घ-जीवन पाकर ब्रिटिश-म्यूजियम के दोस लाख ग्रन्थों का अध्ययन करे, किन्तु उनके यथार्थ भाव को समझ न सके, तो वह निरक्षर मूर्ख ही गिना जायगा। और, जो कोई एक अच्छे ग्रन्थ के दस पृष्ठों को अच्छी तरह पढ़ कर उनके भाव को—सत्य को—समझ सके, वह शिक्षित माना जा सकता है।)

इस अमूल्य उक्ति की प्रतिष्ठा करना हमने नहीं सीखा, इसी से आज ससार के न्याय-विचार के आगे मूर्ख ठहराये जा रहे हैं। इससे बढ़कर दुःख की बात और क्या हो सकती है? हाय! धनोपार्जन पर दृष्टि रखने के कारण हमने कितने ही अमूल्य ज्ञान-रत्नों को लात मार कर ठुकरा दिया है। धनोपार्जन के लिए नहीं लिखा-पढ़ा जाता। लिखने-पढ़ने के लिए ही धनोपार्जन किया जाता है। हमारा यही कर्तव्य है कि निर्वाह भर के लिए धनोपार्जन करते हुए ऐसी चेष्टा करे जिसमें जहां तक शीघ्र हो सके इस धनरूपी पिशाच-की गुलामी से छुटकारा पाकर निश्चिन्त चित्त से जन्म भर ज्ञान बढ़ाने में लगे रह सकें।

लन्दन में भारत-नारी। ब्रिटिश-म्यूजियम में दो भारत की स्त्रियाँ भी पढ़ने आती थीं। उनमें एक तो प्रसिद्ध पारसी-क्रिश्चियन रमणी मिस कार्निलिया सोहरावजी थीं। और दूसरी धङ्गलिन—कलकत्ते के प्रसिद्ध वकील मिस्टर दास की गुणवती पुत्रवधू—थीं। पहले में

समझता था कि हजार पढो-लिखी होने पर भी बङ्गाली की लडकी यूरोप में नि सङ्कोच भाव से नहीं रह सकती । किन्तु इस प्रतिष्ठित महिला को देग्य कर मेरा वह भ्रम दूर होगया । यह नित्य गृहस्थी का काम—रसोई आदि—करके पढने के लिए न्यूजियम में आती थीं । मिस्टर दास जैसे सज्जन थे, वैसेही उनकी स्त्री भी सीधे मिजाज की, रूपवती और गुणवती थीं । ये दोनों स्त्री-पुरुष बहुत दिनों तक लन्दन में रह-घुके हैं । मैं जब उक्त पण्डिता स्त्री को लन्दन की सडक में शीघ्रता के साथ जाते देखता था तब मुझे एक प्रकार का अपूर्व आनन्द प्राप्त होता था । इस विदुषी को देख कर आशा होती थी कि किसी समय हमारे यहाँ की स्त्रियों भी यूरोपियन रमणियों की तरह विदेशीय कर्म-क्षेत्र में सुगन्धमय सुयश के साथ काम करने की शक्ति प्राप्त कर सकेंगी । यह विदुषी स्त्री जिस तरह अपने पति के साथ सुदूर समुद्र-पार जा कर केवल पति के ही सहारे विदेश में सुखपूर्वक रहें, सो हर एक पतिव्रता स्त्री के लिए नि सन्देह अनुकरण करने योग्य है । यह विदुषी हमारी जाति के लिए गौरव की सामग्री हैं । जगदीश्वर इन्हें इनके स्वामी सहित चिरजीविनी बना कर सुख में रखे ।

लन्दन में रविवार । एक तो नगर भर में सदा हर एक घर के दरवाजे बन्द रहते हैं । उस पर रविवार को दूकान-पाट सब बन्द रहने के कारण नगर भर मनुष्य-शून्य जान पडता है । सबेरे के समय राहों में एक भी आदमी नहीं देख पडता । दोपहर के बाद, धीरे धीरे, घूमने के लिए निकलने लगते हैं । अधिकांश लोग सबेरे का कलेवा करने के उपरान्त नगर के बाहर किसी जगह दिल-बहलाव के लिए चले जाते हैं । बहुत से गृहस्थ उस दिन सब तरह के काम-काज बन्द करके वाइविल आदि धर्म-ग्रन्थ पढ कर या ज्ञान और धर्म की चर्चा करने दिन बिताते हैं । एक रविवार को सबेरे घर से निकल कर

मैंने सोचा कि आज अगर इस सड़क पर हरिकीर्तन होता तो बड़ा आनन्द होता । यह सोचते सोचते कुछ ही दूर पर जाकर देखा कि मुक्ति फौज का दल सचमुच वाजा बजा कर भगवद्भजन करता हुआ चला आ रहा है । बहुत दूर तक उन लोगो के साथ, अपने मन और अपने भाव से, भगवान् को भजता हुआ मैं चला गया । इससे मुझे विशेष सुख प्राप्त हुआ ।

लार्ड मेयर की प्रदर्शनी (Lord Mayor's Show) । पहले कहा जा चुका है कि लन्दन-‘सिटी’ सम्पूर्ण रूप से लार्ड मेयर के अधीन है । हर साल अल्डरमेन (Aldermen) लोगो में से एक आदमी इस पद के लिए चुन लिया जाता है । नवों नवम्बर उसके अभिषेक का दिन नियत है । यह लन्दन-वासियो का एक खास दिन है । जिस रास्ते से जलूस (Procession) निकलने को होता है उस रास्ते में सबेरे से ही दोनों ओर भीड़ डट जाती है । तीसरे पहर नियत समय पर, सैकड़ो गाड़ियो पर, अनेक ऐतिहासिक और सामाजिक स्वाँग लार्ड मेयर के घर से निकलते हैं, और अनेक मार्गों में घूम घूम कर फिर वहीं लौट जाते हैं । इस अभिनय में प्राचीन काल की अनेक बातें प्रत्यक्ष देखने को मिलती हैं । इस जलूस में सबसे आगे घुड़सवार पुलिस चलती है और सबसे पीछे लार्ड मेयर की गाड़ी रहती है । उसमें छे घोडे जुते होते हैं । यह जलूस एक मील की लम्बाई में रहता है ।

अभिषेक के उपरान्त एक धूमधामी भोज होता है । उसमें शहर के हजारों प्रतिष्ठित लोग उपस्थित होते हैं । एक साल इस हिसाब से भोज के भोजन की सामग्री बनाई गई थी —

कछुए का शोरवा ७ मन, चिडिया ५००, पेरू पत्ती १२०, पार्टरिज पत्ती २००, फेजन्ट पत्ती १००, लापुइङ्ग पत्ती ७००, मुर्ग २०,

सुअर की जाँधें २०, जेली लिये बख़डो के खुर ७००, कुल्फ़ी-बरफ़ १,४०० अगूर १० मन, १५,००० भोजन करने के बर्तन, १०,००० चाँदी के काँटे, ६,००० छुरी, ६,५०० गिलास काम में लाये गये थे । टेबिल सजाने में ३,००० गज बेलें और असख्य गुलाब कमल वगैरह के फूल लगे थे । इस तमाशे और भोज में न्यूनाधिक साढे तीन हजार पाउण्ड खर्च हुए थे । उसमें आधा खर्च लार्ड मेयर ने खुद और आधा खर्च दो शेरिफों ने दिया था । लार्ड मेयर की सालाना तनखाह १,००० पाउण्ड है, मगर भोज आदि देने में उनका इससे कहीं अधिक खर्च हो जाता है । इसके सिवा लार्ड मेयर का काम भी कुछ सहज नहीं है । एक लार्ड मेयर की कार्य-सूची देखने से मालूम हुआ कि उसे एक साल में ३६५ साधारण सभाओं और कमेटियों में उपस्थित रहना पडा । इसके सिवा उसे १३० भोजों और ८५ स्वागतों और नाच के जल्से (Receptions and balls) में जाना पडा, ३६ डेप्युटेशनों (Deputation) से मिलना पडा, ११,०० व्याख्यान देने पडे, २० दफे पद-मर्यादा सहित गिर्जे में जाना पडा, ३० सभाओं का सभापति होना पडा, १८ दिन विचार का कार्य करना पडा और ५,००० पत्रों का उत्तर देना पडा । अब पाठकगण विचार कर देखे कि यह नौकरी कैसी है । घर का पैसा खर्च करके केवल मान के लिए लार्ड मेयर लोग इतना परिश्रम करते हैं । लार्ड मेयर की खी को भी इसी तरह परिश्रम करना पडता है । नौकरी के समय सपत्नीक लार्ड मेयर जिस घर में रहते हैं, उसे मेन्शन हाउस (Mansion House) कहते हैं । इसके एक हिस्से में खास नगर की पुलिस-अदालत है, और वहाँ पर देश विदेशों में अनेक तरह की सहायता पहुँचाने को चन्दा जमा करने के लिए सभा-समितियाँ हुआ करती हैं ।

होवर्न-पुल (Holborn Viaduct) । फलकत्ते की तरह लन्दन सम-

थल जगह नहीं है । बहुत ही ऊँचे-नीचे स्थानों में नगर बसा हुआ है । जहाँ पर यह पुल बना है, वहाँ पहले पैदलो और घोडा-गाड़ियो को आने-जाने का बडा कष्ट था । एक तरफ जैसे नीचे उतरना पडता था, दूसरी तरफ वैसे ही ऊपर चढना पडता था । इस उपत्यका के ऊपर इस समय ऐसी इञ्जीनियरी की कारीगरी देख पड़ती है कि अनायास लोग आते-जाते हैं । नीचे भी शहर है, ऊपर भी शहर है । हिन्दुस्तानियो के लिए अवश्य ही यह एक नई चीज है । सन् १८६७ में इस पुल का काम शुरू हुआ था । इसके बनने मे बडी लागत आई है । पहले इस पुल के आस-पास की रराव तङ्ग गलियों में गँठकटे आदि तरह-तरह के चोरो के अड्डे थे । इस समय भी वहाँ एक ऐसी गली है, जिसके बारे मे लोगों की धारणा थी कि वहाँ भूत रहते हैं । पण्डितवर जानसन साहब भूत देख पाने की आशा से वहाँ अक्सर आया जाया करते थे ।

टेम्स नदी का किनारा । कलकत्ते मे गगा जैसे क्रमश दूर हटती चली गई हैं, लन्दन के नीचे टेम्स की भी वही दशा है । कलकत्ते के स्ट्रान्ड बैंक (Strand Bank) की तरह वहाँ जो बाँध बाँधा गया है, उसका नाम है विक्टोरिया एम्बैंकमेंट (Victoria Embankment) । यह ब्लैक फ्रायर्स पुल (Black Friars Budge) से वेस्टमिनिस्टर पुल तक है । यह बाँध ७,००० फुट लंबा, ४० फुट ऊँचा और ८ फुट चौड़े ग्रेनाइट पत्थर के घेरे से सुरक्षित है । २० लाख पाउण्ड की लागत से इस बाँध पर जो २७० बीघे जमीन निकाली गई है, उस पर सुन्दर सडक बनी है और उसके दोनो ओर मनोहर वृक्षों की कतारे लगा दी गई हैं । दिन के या गैस के प्रकाश में, जब देखिएगा तब विशेष प्रसन्नता प्राप्त होगी । ऐसा मनोहर स्थान यूरोप भर में और नहीं देख

पडा । नदी-तट का प्रधान दृश्य है मिसर देश से लाया गया एक पत्थर का स्तम्भ (obelisk—Cleopatra's Needle) । यह ग्रेनाइट पत्थर के एक ही टुकड़े से बना है, और ७० फुट ऊँचा है । नीचे की चौड़ाई ८ फुट है । वजन ५,६०० मन है । मिसर के प्राचीन मन्दिरों के सामने इसी तरह के दो दो स्तम्भे रहते थे । यह स्तम्भ महापुरुष मूसा के समय की चीज है । नृपति तृतीय थाथ्मेस (Thothmes III) ने इसकी स्थापना की थी । खेदीव महम्मद अली ने अँगरेज सरकार को भेंट में यह दिया था । इस स्तम्भे को मिसर से लाने में दस हजार पाउण्ड खर्च हुए हैं और लाने में बड़ा कष्ट उठाना पडा है । गधाबोट में लाद कर जो स्टीमर इसे खींचे लिये आ रहा था, वह, बिस्क के भारी तूफान में अपनी जान बचाने के लिए लाचार होकर, इसे राह में ही छोड़ आया । पीछे से एक दूसरा जहाज इसे लन्दन में लाया । अँगरेज गवर्नमेंट का काम सब जगह एक सा होता है । खेदीव का दान—यह स्तम्भ—लेकर अलेक्जड्रिया की रेली में डाल दिया गया । सरकार के पास इतना रुपया नहीं बचा कि वह उसे लन्दन में लाती । बहुत दिनों के बाद विल्सन नामक एक उदार भद्रपुरुष ने इसे लाने का खर्च दिया और यह स्तम्भ टेम्स नदी के तट की शोभा बढ़ाने लगा । इस बाँध के ऊपर कई एक महात्माओं की मूर्तियाँ स्थापित हैं । जैसे प्रसिद्ध पण्डित मिल, रविवार-विद्यालय के स्थापक रेडक्स, कवि वर्न्स, भारतीय सेना-पति आउटराम और महात्मा टिण्डेल । टिण्डेल लूथर के समसामयिक हैं । इन्होंने अँगरेजी भाषा में वाइविल के नवीन भाग का अनुवाद करने की चेष्टा की थी । इसी अपराध पर देशद्रोही कह कर यह देश से निकाल दिये गये और ब्रुसल्स के पास फिर फाँसी पर चढा दिये गये । मृत्यु के समय इन्होंने पुकार कर कहा था—“भगवन् । इंग्लैंड के राजा की आँखें खोलो” ।

ग्रीनविच । यह लन्दन का एक उपनगर है । यहाँ का अस्पताल ५७० बीघे में बना हुआ पार्क, जलसेना-विद्यालय (Naval College) उसके अन्तर्गत न्यूजियम और १८० फुट ऊँचा मानमन्दिर प्रसिद्ध है । अस्पताल के सामने, आर्कटिक समुद्र से लौटे हुए फ्रांसीसी लेफ्टिनेन्ट बेल्लो (French Arctic Navigator, Lieutt. Bellot) का स्मारक-स्तम्भ है । अस्पताल के पूर्व ओर पेन्शन पाये हुए जलसेना के सैनिक गोरे रहा करते थे । अब वे नकद पेन्शन लेकर चाहे जहाँ रह सकते हैं । यह अस्पताल एक बड़ी भारी सुसज्जित और बहुत पुरानी इमारत है । यहाँ पर सेनापति नेल्सन का वह कोट और वेस्ट-कोट बड़े यत्न से रक्षित हुआ है, जिसे उन्होंने ट्राफ्लार की लड़ाई के दिन पहना था । इन दोनों कपड़ों में गोलियों के छेद बने हैं ।

यहाँ का मान-मन्दिर (Observatory) जगत्प्रसिद्ध है, और सचमुच ही सब तरह से ससार भर के मानमन्दिरों में श्रेष्ठ है । राज्य के प्रधान ज्योतिषी इस जगह असीम आकाशमण्डल की देख-भाल करके ससार में रागोल-सम्बन्धी ज्ञान फैलाते हैं । ग्रीनविच का समय पृथ्वी के चारों ओर भेजा जाता है और उसी की थाप है । यहाँ से रोज़ दस बजे और एक बजे ब्रिटिश द्वीप के सब स्थानों में, और हर घंटे पर लन्दन के बड़े डाक-घर में, तार के द्वारा, यहाँ के समय की सूचना दी जाती है । यहाँ हर एक साफ दिन में सूर्योदय-काल का एक फोटो अवश्य लिया जाता है । जगो जहाजों की घड़ियों (Chronometer) की यहाँ चरम ताप और चरम शीत से परीक्षा ली जाया करती है । केवल इन्हीं घड़ियों के द्वारा अपार समुद्र के भीतर पृथ्वी की द्राघिमा (Longitude) जानी जा सकती है ।

भारत की कांग्रेस इंग्लैंड की गोद में;—

“ Well begun is half won ”

आरम्भ अच्छा होने पर आधा काम समाप्त समझना चाहिए ।

सन् १८६० की १४वीं अप्रैल को, भारत और इंग्लैंड दोनों देशों के विशेष आनन्द और गौरव का दिन था । पृथ्वी के इतिहास-लेखक लोग सोने के अक्षरों से लिख रक्खे कि इस शुभ दिन में, भारत के हृदय राज्य में, इंग्लैंड का उज्ज्वल सिंहासन चिरकाल के लिए स्थापित होने का सूत्रपात हुआ । हमारी जातीय कांग्रेस इतने दिनों तक गर्भावस्था में थी । उक्त १४वीं अप्रैल को पैदा होकर उसने ससार का प्रकाश देखा । गर्भावस्था में गर्भपात हो जाने का बहुत कुछ खटका होने से हम लोग सदा शक्ति रहते थे । लेकिन अब कुछ भय नहीं है । स्वाधीनता की जननी इंग्लैंड की भूमि ने स्वयं धाय बनकर इस नवप्रसूत बच्चे के पालन पोषण का भार अपने ऊपर ले लिया है । आओ भाई भारतवासिया, आज इस भारी आनन्द के दिन में जी भर कर गले मिलें, और हृदय के भीतर से आकाश-पाताल हिलाते हुए तीन बार कहें “जय दयामय ! जय दयामय ! जय दयामय !” घर और बाहर प्रबल शत्रुओं के रहते भी जिसकी कृपा से हमारे हृदय का सर्वस्व कांग्रेस इंग्लैंड जैसे चतुर और पालन करने की शक्ति रखनेवाले देश की वाँह की छाँह में स्थापित हुई है, उस करुणासिन्धु की करुणा की सीमा या परिमाण का निर्देश कौन कर सकता है ? विधाता की अनन्त कृपा के प्रभाव से यह कांग्रेस हमारी जैसी अभागो जाति के लिए स्थापित हुई है । यह कांग्रेस ही हमारी एक-मात्र आशा है । इसी से कहते हैं कि भाइयो, दुर्बल और सबल, दोनों के लिए जिसकी कृपा का द्वार खुला हुआ है, उसी पर सब काम

छोड़ दे। निराश न होना, जगदीश्वर के सिवा और कोई भारत के दुःख को नहीं दूर कर सकता। 'भगवान् इसका विचार करेंगे' इस गम्भीर मर्मभेदी सजीव निर्भरशीलता के सिवा कङ्गाल असहाय भारत-वामी और कोई उपाय नहीं जानते। यहाँ की रैयत हाकिमों का अत्याचार, जमींदार का अत्याचार, महाजनों का अत्याचार, अत्याचार के ऊपर अत्याचार सहती है, पर चूँ तक नहीं करती—अत्याचार के रोकने की कोई चेष्टा नहीं करती। भारत की गरीब दुरी किसानों की सहनशीलता के आगे कभी कभी भेड़ का घड़ा भी हार मान लेता है। चार करोड़ जीव, जो हमारे भरण-पोषण, सुख-स्वच्छन्दता और ऐश-आराम के लिए दिन-रात परिश्रम करके भी ग्राम को एक धार आधे पेट मोटा और खुला-सूखा खाने को पाते हैं, वे चुपचाप सब तरह के अत्याचारों को सहते हैं। ये लोग दुर्भिक्ष के समय अन्न न पाकर सपरिवार प्राणत्याग करने के पहले एक बार भी राजा, जमींदार या महाजन को कोसना नहीं जानते, केवल विधाता के विधान की ओर ताक कर दुर्लभ मनुष्य-जीवन को त्याग देते हैं। परन्तु हम उनकी ओर कुछ भी ध्यान नहीं देते, विल्कुल ही उदासीन हैं। इस बात की सुनकर अँगरेज लोग काँप उठते हैं और Shame, Shame की ध्वनि से हमको धिक्कार देते हैं। वास्तव में आश्चर्य तो यही है कि जिस देश में इतने अधिक निरीह शान्त सेवक श्रमजीवी लोगों की ऐसी दुर्दशा होती है, वह देश पाताल को क्यों नहीं चला जाता! राजा, महाराजा और राय बहादुर बाबू लोगो! दूध-मलाई-मक्खन-घी के आहार से मेदा बढ़ाकर आलस्य के गुलाम बनकर सुश-बूदार बोड़े चबाते हुए तुम लोग सुख से कोमल विछीनों पर टाँगें फँसा कर मोते हो! जरा भी नहीं विचारते कि तुम्हारे भयानक अत्याचार से जातीय जीवन की नींव नीचे धसती जाती है। किसी दिन ये सतमञ्जिले

मकान हीरा-मोती और प्रामिसरी नेटों से भरे लोहे के सन्दूको सहित धडाम से तुम्हारे सिर पर फट पड़ेंगे । यह आर्य और अनार्य के भेद-भाव का समय नहीं है । कलियुग के आर्य अंगरेज लोग हैं, तुम सब समान रूप से अनार्य हो रहे हो । इसलिए गरीब किसान, मजदूर और नीच जाति के सब लोगों को अपना भाई समझ कर अपने कल्याण की तरह उनकी भलाई के लिए भी यत्न करो । नहीं तो तुम्हारी भलमनसाहत बहुत जल्द तशरीफ ले जायगी । इन बे-जवान के आत्मत्यागी पुरुषों के हृदय की वेदना-भरी पुकार विश्वेश्वर के सिद्धासन के पास पहुँच गई है । इन लोगों के दुःख और क्लेश दूर करने के लिए ही कांग्रेस का जन्म हुआ है, इसलिए नहीं कि ऐरे-गैरे वाजुओ को भारी अधिकार सरकार में मिल जायँ और वे अपने निरचर सालो के लडकों को डिपटी-गीरी दिला दे । भाई सीधे-साधे किसानो, तुम्हारे इस विशाल देश में कोई ऐसा नहीं जो तुम्हारे लिए चार आँसू बहावे । किन्तु वहाँ हैं । सहते जाओ, भगवान् अवश्य तुम्हारे दिन फेरेंगे । कांग्रेस के जन्मदाता मिस्टर ह्यूम ने जब इस देश की चार करोड़ ब्रिटिश प्रजा को अन्न-बख न मिलने की बात अंगरेज-मण्डली के आगे कही, तब साधारण मजदूर तक “ छी-छी ” कह उठे ।

कांग्रेस की सहायता के लिए इंग्लेड में यही पहली सभा हुई थी । लन्दन के अन्तर्गत क्लर्कनवेल स्थान के फारेस्टर्स हाल (Forester's Hall, Clerkenwell) में १४ अप्रैल की रात को साढे आठ बजे के बाद इस सभा का काम शुरू हुआ । सभापति वेडवर्न (Sir William Wedderburn) ने प्रार्थना के ढग से मीठे कोमल स्वर में निम्न-लिखित शब्दों द्वारा पहले भूमिका वाची । उन्होंने कहा— “The humblest Roman citizen had the right of appeal to

Caesar, and in India a considerably larger population than that of the Roman Empire now desire to appeal to their Caesar, the sovereign British people" (अर्थात् अत्यन्त साधारण रोमन प्रजा भी अपने सम्राट् सीजर के निकट आवेदन करने का अधिकार रखती थी। रोमन साम्राज्य से कहीं अधिक भारतवर्ष की प्रजा आज अपने सीजर और हर्ता-कर्ता-विधाता ब्रिटन-वासियों के निकट अपना दुःख जताकर नालिश करने के लिए उपस्थित है।) इसके बाद उन्होंने सत्तेप में भारत के अभाव-अभियोग और कांग्रेस के भारी उद्देश का वर्णन करके कांग्रेस के भेजे हुए उपस्थित प्रतिनिधियों का परिचय दिया। इस प्रकार भरसक स्पष्ट-भाषा में सब वर्णन करके उन्होंने अपने कर्तव्य का पालन किया। "Righteousness exalteth a nation" (केवल पुण्य-प्रताप जातीय उन्नति का कारण है।) और "No taxation without representation" (प्रजा के प्रतिनिधियों के बिना 'कर' निश्चित करना अन्याय है।) इन दो मौलिक सूत्रों पर रखे होकर श्रोता लोगों से सहायता माँगी गई। "बल, बल ब्रह्मबलम्" यह वाक्य धर्मराज्य का कठोर सत्य है, जगत् को भिन्न भिन्न जातियों के इतिहास इसके सजीव साक्षी हैं। अँगरेज लोग इस महान् सत्य को बहुत अच्छी तरह जानते और समझते हैं। सभा-विसर्जन के बाद मेरे एक विद्वान् नौजवान अँगरेज मित्र ने स्पष्ट कह दिया कि "It is not policy of extent of dominion, or supremacy on land and on sea that is the stability of a nation, but righteousness" अर्थात् कला-कौशल, राज्य-विस्तार या जल-स्थल में एकाधिपत्य, कोई भी जातीय समृद्धि को बनाये नहीं रख सकता। केवल पुण्य का बल ही इस कार्य को कर सकता है। और एक सज्जन ने कहा— "It is only in righteousness that

the throne of kings is established' अर्थात् केवल पुण्य के प्रताप से राजा का सिंहासन सुदृढरूप से स्थापित हो सकता है ।

प्रतिनिधियों के वाद सुप्रसिद्ध देशहितैषी वृद्ध दादाभाई नौरोजी ने शान्त और एकाग्र भाव से कुछ कहा । उसके वाद क्रमशः पाँच छः अँगरेजों ने और सबके अन्त में प्रसन्नमुख मिस्टर ह्यूम ने दो चार बातों से हृदय की गहरी सहानुभूति प्रकट करते हुए दुःख-पीडित भारत की यथार्थ अवस्था और अभावों को श्रोतागण के आगे प्रकट करने की चेष्टा की । वक्तृताओं में "Black man" शब्द को लेकर प्रधान सचिव मार्कुइस साल्सवरी महाप्रभु की अनेक बार हँसी उड़ाई गई । एक वक्ता ने कहा—“Perhaps the noble Marquis has not used a looking-glass for the last ten years, as otherwise he would have known which of them is the darker” अर्थात् जान पड़ता है कि महात्मा मार्कुइस ने दस बरस से आईना नहीं देखा । नहीं तो वह देख पाते कि दोनों में कौन अधिक काले रँग का है । वास्तव में दादाभाई को देख कर यूरोपियन का भ्रम होजाता था । अनेक अँगरेजों के मुँह से भी मैंने यह बात सुनी है । जो कुछ हो, हमारे लिए तो यही बड़े सुख की बात है कि दादाभाई नौरोजी के ऊपर वहाँ के सब लोगों ने अनुराग प्रकट किया । वास्तव में साधु दादाभाई निस्सन्देह एक ऊँचे दर्जे के उदार महात्मा पुरुष थे । इस प्रकार एकाग्रता के साथ हार्दिक उत्साह से इतने दिनों तक स्वदेश की भारी सेवा करके भी अगर वह देश विदेश में सर्वसाधारण से भक्ति और पूजा न पाते तो इससे बढ़कर असम्भव और असङ्गत बात दूसरी नहीं होती । सरल प्रेम, गहरी सहानुभूति, प्रबल उत्साह, सजीव उद्यम और अप्रतिहत प्रयास तथा परिश्रम में उनकी बराबरी करनेवाला आदमी भारत में कोई नहीं था ।

प्रचण्ड उत्साह और विशेष आनन्द के साथ मभा ने निम्नलिखित प्रस्ताव पास किया । इसे परम शुभ चिह्न और भगवान् की कृपा समझना चाहिए ।

अर्थात् सभा में आये हुए लोगों ने भारत का दुःख दूर करने के लिए पार्लियामेंट में भरसक चेष्टा करने की प्रतिज्ञा की । हम अभागियों के लिए यह कम सौभाग्य की बात नहीं, और पहले उद्योग में इस तरह की आशा पाना निःसन्देह प्रबल उत्साह की बात है । इसे भविष्य के लिए सुखदक्षण समझना चाहिए । वह प्रस्ताव यह था—

" That this meeting of the inhabitants of the Finsbury Division and its neighbourhood, having heard the grievances of the Indian people stated by representative Indians and by others, and having had laid before it the reforms put forward by the Indian National Congress, declares that, in its opinion, the grievances from which our Indian fellow subjects are suffering should be removed, and believes that the reforms advocated by the Congress will be greatly helpful to this end. This meeting therefore expresses its most cordial sympathy with the efforts which, by its constitutional means, the Indian people are making to obtain the redress of their grievances through the good will and help of the British people, and those present pledge themselves, by every means in their power, to move the British Parliament to grant the reforms so temperately and so forcibly advocated.

That this meeting authorises the chairman to sign a petition for presentation to the House of Commons, praying that House to allow of the insertion in the Indian Councils' Bill of a section permitting the election of one half of the members of the Supreme and Provincial Legislative Councils, and of a large increase in the numbers of the respective Councils "

जितने लोगों के साथ इस धारे में मुझसे घातचीत हुई है, उनमें से दो आदमियों के सिवा किसी ने भी कोई आपत्ति नहीं की । एक तो जड-

दुभा बम्बई प्रदेश का भूतपूर्व कमिश्नर था । पहले की आपत्ति यह थी कि भारत में जब तक अनेक जातियाँ और अनेक धर्म हैं, तब तक भारतवासियों में परस्पर फूट और वैर का होना अनिवार्य है । अतएव ऐसे स्थान में प्रजा के हाथ में किसी तरह की कोई क्षमता या भार देना असङ्गत अन्याय और अहितकारी है । इसके सिवा मुसलमानों का सम्प्रदाय सदा हिन्दुओं का विरोधी रहता है । यह बात भी विशेष रूप से विचारने योग्य है । दूसरे आदमी ने यह कहा कि बहुत थोड़े से शिक्षित आदमियों के सिवा सारी प्रजा को अगर पशुतुल्य कहा जाय तो कुछ अनुचित न होगा । 'चुनाव' 'वोट' आदि शब्दों का अर्थ जानने के लिए इस समय भी उन्हें बहुत दिन चाहिए । उक्त कमिश्नर ने उदाहरण-स्वरूप कहा कि कई बरस हुए, सूरत में पहले पहल जब 'लोकल बोर्ड' की स्थापना हुई, तब सभ्य-निर्वाचन के समय वोट सग्रह करने के लिए सरकारी मामलतदारों को गडबो की तरह हँका कर प्रजा का जमा करना पडा था । उस दृश्य की याद आने पर उक्त साहब खूब हँसते थे । देने की आपत्तियाँ प्रबल हैं और पूरी तरह उनका सण्डन करना सहज नहीं । इस अवस्था में पहले अपने घर का सुधार करने को ही हमें अपना पहला और आवश्यक कर्तव्य समझना चाहिए । इस पर कोई महाशय कह सकते हैं कि अगर घर का ही सुधार करना है, तो उसमें विदेशियों का मुँह ताकने की क्या जरूरत है ? इसका भी उत्तर देना कठिन है । अतएव यहाँ पर एक विद्वान् पण्डित के मत का उल्लेख करके इस विषय को हम समाप्त कर देंगे ।

"It is the beginning of a movement which our generation will not see the end of, but which must be fraught with momentous consequences for England and India alike. Whether they shall prove alike happy for both lands or shall be disastrous to either or to both, depends upon the wisdom, patience and forbearance, which are mutually practised

*

"We English people have now such an opportunity as no other people has ever had of setting to the world an example of highminded, disinterested, straight dealing. Upon the way in which we meet the demands of India, upon the plan we adopt for the future government of the Empire, upon our justice, patience and temperance, during the next few short years, not only the future of India but that of England herself, and in no small measure of the civilized world, depends. In this matter, our national honour is deeply pledged. Our lot is in our own hands—God grant that we may be wise and just whilst yet there is time."

यह जिनका मन्तव्य है वह भी भारत से लौटे हुए अंगरेज हैं। इन्हीं का कहना ठीक है। दोनों जातियों के लिए भयानक समय उपस्थित हुआ है। दोनों के सामने विपम परीक्षा है। विधाता दोनों को इस परीक्षा में उत्तीर्ण होने का, इस समस्या के हल करने का, बल और बुद्धि दे।

विलायत में कांग्रेस के सम्बन्ध में मैंने जैसी आशा की थी वह देश में आने पर, यहाँ के रंग ढग देख कर, बहुत कुछ फीकी पड़ गई। देश का असली बल जो निम्नश्रेणी के करोड़ों दून दुखी हैं उनके साघातिक अभाव अभियोगों को दूर करने का यथार्थ उद्योग यहाँ कुछ भी नहीं देख पड़ता। देश में जो कुछ देय पड़ता है उसे ही समझाने की यहाँ पर चेष्टा की जाती है।

ससार में तीन तरह के लोग रहते हैं—स्वार्थपर, परार्थपर, और निरर्थपर। साधारणतः हमें दोही श्रेणी के लोग देख पड़ते हैं, तृतीय श्रेणी के लोगों के होने की उपलब्धि एकाएक नहीं होती। नहीं मालूम, भाषा के कोष में निरर्थपर शब्द है या नहीं। अब देखना चाहिए कि इस अभिनव शब्द की श्रेणी में कैसे लोगों की गिनती हो सकती है। स्वार्थपर और परार्थपर जीवों का परिचय देना तो व्यर्थ ही है। क्योंकि इन दोनों शब्दों के मतलब को तो सर्वसाधारण बचन अच्छी तरह समझते हैं। जो लोग इन दोनों श्रेणियों में नहीं

भा सकते, वेही निरर्थपर हुए । अब अगर आप विचारपूर्वक देखेंगे तो आपको पृथ्वी पर निरर्थपर लोगों की ही सख्या अधिक देख पड़ेंगी । साधारण दृष्टि से शायद वे स्वार्थ पर जँचें, पर जरा गौर करके देखने से मालूम हो जायगा कि अगर वे किसी अलौकिक शक्ति के द्वारा अपने आत्मा और शरीर को अलग कर ले सकते, तो शरीर को शोक को किसी दूसरे के सिर डाल कर निश्चिन्त हो रहते । ऐसे लोग अपने या ससार के किसी प्रकार के हितहित के सोचने में मन लगाना नहीं चाहते, और लगा भी नहीं सकते । ये अपने में आप ऐसे मत्त हो रहे हैं कि दुनिया के डूब जाने पर भी इनके लखे घुटनो-घुटनो पानी है । इस प्रकार के योग के योगी सचमुच ही ससार में दुर्लभ पदार्थ हैं । इनके जीवन का मूल-मन्त्र यही है कि “दिन हटा पाप कटा” । अपने या पराये सारे सासारिक मामले, जो कि उनके मन में चिन्ता या सोच-विचार पैदा कर सकते हैं, उन्हें वे लोग किसी तरह दबादुबाकर रोज-धरोज सुख से सोना चाहते हैं । उनके बाहरी कामो को देखने से तो वे कभी स्वार्थपर और कभी परार्थपर जान पड़ते हैं । किन्तु परार्थपर तो वे हैं ही नहीं । और स्वार्थपर भी उन्हें कैसे कहें ? अगर वे स्वार्थपर हैं तो उन्हें अपनी लाभ-हानि का ज्ञान होना चाहिए । लेकिन उनमें वह कहाँ है ? अपना मान, यश, ख्याति, प्रतिष्ठा रहे या न रहे, उनको इसका कुछ भी खयाल नहीं, है । अवधूत मत का “वर्तमानेषु वर्तन्ते” वाला भाव उनके हृदय में जमा हुआ है । अर्थात् इस घड़ी लाचार होकर चाहे जो कह दिया, काम निकाल लिया । काम के समय उसका कुछ भी खयाल नहीं । भूतकाल की सब बातें ये लोग जैसे भूल गये हैं, वैसे ही भविष्य के सम्बन्ध में भी कुछ सोचत-विचारते नहीं । जैसे भविष्य इनके लेंग्वे कोई चीज ही नहीं है । इसी तरह के कुछ निरर्थपर लोग मिल कर

एक हुजूम खड़ा करके, वर्तमान के 'खेल' के लिए अगर किसी का को खड़े होते हैं, तो बहुत से स्वार्थपर लोग अपनी अनेक प्रकाश की स्वार्थ-सिद्धि के लिए, और कुछ परार्थपर लोग बाहरी लक्ष्यों के चमक-दमक में भूलकर, उनका साथ देते हैं। इस प्रकार परस्पर विरुद्ध प्रयोजन से प्रेरित होकर जहाँ पर कोई दल सङ्गठित होता है वहाँ वह कुछ दिन धूमधाम के साथ चार दिन की चाँदनी दिखा कर शीघ्र ही तितर-बितर हो जाता है। इस प्रकार के मामलो में बहुत से लोग बटुर तो आते हैं, लेकिन कितने दिन के लिए ? काल्पनिक जगत के प्रधान लीला-क्षेत्र इस भारतवर्ष में बहुत सी ऐसी सभा, समाज, समिति, जथा और सम्प्रदाय हो गये हैं, इस समय भी हो रहे हैं और भविष्य में भी होते रहेंगे। भविष्य का आभास अभी से मिल रहा है। वर्तमान समय की यह अवस्था देख कर बहुत लोग कांग्रेस को भी इसी सन्देह की दृष्टि से देखने लगे हैं। पृथ्वी के इतिहास से जाना जाता है कि जहाँ जहाँ देश या जाति के कल्याण के लिए ऐसे काम हुए हैं, वहीं वहीं ऐसे कामों में दस पाँच तत्पर, स्वार्थत्यागी, नि स्वार्थ उत्साही लोग देख पड़े हैं। उनको अपने जीवन में और कोई धन्धा या चिन्ता नहीं, जागते-सोते, चलते-फिरते हर घड़ी केवल वही एक चिन्ता रहती है। एक घड़ी के लिए भी किसी अपने सगे बन्धु-बान्धव के किसी स्वार्थ की चिन्ता उनके हृदय में स्थान नहीं पाती। केवल अपने काम को—अपने स्वीकृत कर्तव्य को—पूरा करने की धुन उनके सिर पर सवार रहती है। जब तक ऐसे दो-तीन आदमी मुखिया और दस पाँच उनके सहकारी नहीं हुए, तब तक ससार में कहीं कोई भारी काम नहीं हुआ। ३६१ दिन गहरी नींद में खराटे लेकर केवल चार दिन काम करने से अगर साल भर का गुजारा हो

करने से जिन्दगी बनी रहती, तो कोई बारहो महीने काम न करता या रोज भोजन की खोज न करता । इसी से कहता हूँ गेरीवाल्डी, मेजिनी, लूथर, हास, क्राम्वेल, कोसुथ् आदि को जाने दीजिए, हमारे यहाँ स्वामी दयानन्द, स्वामी रामतीर्थ या महाशय ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने जैसे स्वार्थत्याग के साथ देश और जाति के हित का बीडा उठाया था, वैसे ही हमारे देश के कुछ सज्जन मन-वाणी-काया से तत्पर होकर कांग्रेस के लिए काम कर रहे हैं, अथवा देशहित के कामों में अपने जीवन को लगा रहे हैं, यह भी जान पड़े तो हम बहुत कुछ आश्वस्त और निश्चिन्त हो जायें । क्योंकि अपनी लियाकत या नालायकी की ओर न देख कर केवल इंग्लैंड की उदारता पर निर्भर करने से किसी तरह के सुफल की आशा नहीं है । अगर कुछ फल होगा तो उसे कुफल ही समझना चाहिए । उस योग्यता की चेष्टा में जो लोग मन लगाये हुए हैं, वे क्या देख पाते हैं ? यह क्या बिलकुल सच नहीं है कि भारतवर्ष के माने केवल कलकत्ते, बम्बई आदि के पाँच विश्वविद्यालय ही नहीं हैं, या कुछ बैरिस्टर, वकील और डाक्टर ही भारतवर्ष की जान नहीं हैं ? कलुआ मेहतर, टीका कहार, भोला चमार, रहमू जुलाहा, और बफाती कबडिया आदि नीच जाति के हिन्दू-मुसलमानों की उन्नति की चिन्ता जहाँ नहीं, वहाँ भारतवर्ष की हितकामना के नाम से चिह्नाना और हाथ मटकाना दिह्लगीवाजी के सिवा और कुछ नहीं । नीचे से उठाने के सिवा देश के हित की चेष्टा वैसी ही है जैसे कमजोर नाँव पर सतमजिला मकान बनाना । वह बहुत ही शीघ्र टेविल, कुर्सी, पखा, तसवीर, घडी, छडी, समेत गिर कर मिट्टी में मिल जायगा । इस विशाल ससार में गरीब दुखी का सहायक कोई नहीं है । उसके एकमात्र सहायक साक्षात् हीनबन्धु भगवान् हैं । जा कुछ

अच्छाई मनुष्य के द्वारा होती है वह वास्तव में स्वयं ईश्वर की प्रेरणा से होती है । परमेश्वर स्वयं अगर सहायक न हों तो कोई भी काम मनुष्य के द्वारा नहीं हो सकता । ससार के गरीब दुखी लोगो का दुख दूर करने के लिए दयालु महात्मा लोग जो उपाय सोचते या निकालते हैं, उसके मूल में ईश्वर की शक्ति हुआ करती है । मनुष्य क्या चीज है, जो उसके द्वारा बड़े बड़े काम होते हैं । मनुष्य तो इस ससार में चार दिन का मेहमान है । अभी हैं, दम भर में मर गये । देखते ही देखते अत्यन्त साधारण कारणों से रोज़ कितने ही मनुष्य काल के गाल में चले जाया करते हैं । हर एक मिनट में कितने ही मनुष्य इस पृथ्वी पर से चिरकाल के लिए विदा हो जाते हैं । अत्यन्त साधारण शक्तिवाले इस मनुष्य के द्वारा कुछ भी नहीं हो सकता, अगर सर्वशक्तिमान् परमेश्वर स्वयं उसकी क्षुद्र क्षमता के मूल में विद्यमान रह कर उसको हजार हाथी का बल न देते । परमेश्वर के आगे एक आदमी और एक चींटी बराबर है । वह चाहें तो दोनों को ही दम भर में नष्ट कर सकते हैं । यह देख कर हमें विचारना चाहिए कि हम कितने क्षुद्र जीव हैं । इस अपनी क्षुद्रता की उपलब्धि होते ही उन्नति का आरम्भ होता है । हमारे इतने क्षुद्र होने पर भी परमेश्वर ने हमको एक ऐसी शक्ति दी है, जिससे हम लोग जगत् में अच्छे कामो के द्वारा अपने आत्मा को खूब उन्नत बना कर देवता के पद को पाने योग्य बना ले सकते हैं । किन्तु उस शक्ति को अगर हम अपनी समझ कर मन ही मन अहङ्कार करते हुए उससे काम लेते हैं, तो हम किसी काम में सफलता नहीं प्राप्त कर सकते और हमारी अधोगति होती है । किन्तु जब अपने को अत्यन्त हीन क्षुद्र से भी क्षुद्र समझ कर उस शक्ति का व्यवहार करने के लिए अत्यन्त नम्रभाव से ईश्वर के निरुद्ध सहायता को प्रार्थना करते हैं, तब

पाते हैं कि हमारी वह ईश्वर की दी हुई शक्ति लाखगुनी सामर्थ्य से युक्त होकर हमको महाबलसम्पन्न बनाती है, और हमारे सब प्रकार के शुभ सङ्कल्पों को अत्यन्त सहज काम बना डालती है । अतएव हमको स्मरण रखना चाहिए कि हम जो इस शुभ कार्य में प्रयुक्त हुए हैं, उसमें अलक्षित रूप से विधाता का हाथ न रहने से हम कभी सफलता नहीं प्राप्त कर सकेंगे ।

देश के दुर्दशाग्रस्त लोगों के दुःख दूर करने के उपाय सोचना ही कांग्रेस का प्रधान उद्देश्य होना उचित है । अन्न, वस्त्र, ज्ञान, बुद्धि ही हमारे जीवनधारण की प्रधान सामग्री हैं । देश के कुछ लोगों के सिवा हम सब लोगों में इस समय इन चीजों का विशेष अभाव देख पड़ता है, और उसी से हमारा देश दिन-दिन अधोगति की ओर रिसकता जाता है । सारे भारतवर्ष की बात छोड़ कर केवल बङ्गाल ही को ले लीजिए । वहाँ आठ करोड़ के लगभग आदमी रहते हैं । उनमें तीन लाख से भी कम ऐसे आदमी हैं जिनको किसी बात की—खाने पीने पहनने की—कमी नहीं है । बाकी लोगों को, अर्थात् सात करोड़ से भी ऊपर आदमियों को, अपने और परिवार के लिए मुट्ठी भर अन्न प्राप्त करने में भी भारा मेहनत करनी पड़ती है । इस हिसाब से दो ढाई सौ लोगों में एक आदमी की भी हालत अच्छी नहीं कही जा सकती । कलकत्ते या अन्यान्य बड़े शहरों में गाड़ी घोड़े और मोटरों की भारी धूम-धाम अवश्य देख पड़ती है, लेकिन देहातो के रहनेवालों साधारण प्रजा की अवस्था बहुत ही खराब है । और, मध्यवर्त्ति लोगों की ही अवस्था क्या अच्छी है ? उनमें भी अधिकांश लोग दिन भर सिर का पसीना पैर में खपा कर नौकरी से जो धन पाते हैं उससे उनका गुजर नहीं होता । वे सपरिवार बड़े कष्ट, दुःख, चिन्ता और घबराहट में अपने जीवन के दिन बिताते हैं । जो कुछ हो,

मध्यवित्त श्रेणी के भलेमानसों की बात यहाँ पर नहीं उठाई जाती । क्योंकि उनमें ज्ञान और बुद्धि है । वे अगर चेष्टा करें तो सहज में ही अपनी अवस्था अच्छी बना सकते हैं । इसलिए उनको यहाँ पर कोई सलाह देने की जरूरत नहीं जान पड़ती । जिन किसानों के लिए कांग्रेस को पहले यत्न करना चाहिए, उनकी अवस्था को अगर हम उन्नत बनाना चाहे तो हमें यह चाहिए कि उनको पहले विद्या पढ़ाएँ, जिसमें वे भी समझ सकें और विचार कर सकें । इसके सिवा भलाई का और कोई उपाय नहीं है । और, असल बात तो यह है कि देश की भलाई-बुराई इन सब श्रमजीवी लोगों पर ही अधिकतर निर्भर है । ये संख्या में अधिक हैं और इनका दुःख भी भारी भयानक है । इनकी उन्नति के बिना देश की उन्नति होना सर्वथा असम्भव है, बल्कि भयानक अवनति अनिवार्य है ।

दुखी दरिद्र को दो चार दिन के लिए अच्छा खाने को अथवा अच्छा कपड़ा पहनने को देने की अपेक्षा ऐसा ज्ञान और बुद्धि देना कहीं अच्छा है, जिसके द्वारा वह हमेशा अपना रोजगार चला कर अच्छा भोजन खा सके और अच्छा कपड़ा पहन सके । केवल खाने पहनने को देने से उसका सामयिक उपकार अवश्य होता है, किन्तु ज्ञान-बुद्धि देने से वह आप सुख से रहेगा और अपने बाल-बच्चों को भी सुखी रख सकेगा । इसके सिवा वह भी अपनी स्थिति के अन्य दस आदमियों को ज्ञान और बुद्धि देकर उनको अच्छी हालत में लाने की चेष्टा करेगा । अतएव अन्न-वस्त्र देने की अपेक्षा ज्ञान-बुद्धि का देना हजार गुना अच्छा है । ज्ञान-बुद्धि के बिना एक तो मनुष्य अपनी हालत को समझ ही नहीं सकता । और, अपनी अवस्था को समझे बिना उन्नति की इच्छा भी नहीं होती । मैं दुर्दशा-ग्रस्त हूँ—यह समझने में, इसके बाद दुर्दशा के कारण खोजने में,

उसके वाद दुःख दूर करने के उपायो को सोचने और उन्हें काम लाने की चेष्टा में ज्ञान और बुद्धि की अत्यन्त आवश्यकता है ।

इसी लिए हम सबका पहला और प्रधान कर्त्तव्य यही है कि दुखी गरीब भाइयों को अपना विल्कुल सगा समझ कर उनका दुःख दूर करने के लिए प्रयत्न करें और दुःख दूर करने का प्रधान उपाय या मार्ग जो ज्ञान-बुद्धि का देना है उसे ग्रहण करें । अब सहृदय पाठकगण विचार कर देखे कि अब तक हम लोगो ने इस काम पर कितना ध्यान दिया है । देश के बड़े बड़े आदमी, जो कांग्रेस के पृष्ठपोषक बनने का दावा करते हैं, उनमें से कितने आदमी इस विषय पर मन लगा कर विचार करते हैं । इसी लिए फिर कहता हूँ कि दो-चार स्वार्थत्यागी व्रतधारी महापुरुषों के मैदान में आये बिना ये सब काम धूमधामी भले ही हों, पर शुभ फल देनेवाले कभी नहीं हो सकते । उत्साह न होने का यही कारण है ।

हम लोगो में आज-कल यूरोप के अनुकरण पर समान देने की एक नये ढंग की व्यवस्था प्रचलित देख पडती है । वह व्यवस्था है किसी व्यक्ति को समान देने के लिए उसकी गाडी के घोड़े खोल कर आदमियों का गाडी घसीटना । आदमियों की गाडी पर चढ़ने से भ्रगर कोई महान् बन सकता है, तो जापान के सभी आदमी महात्मा माने जा सकते हैं । क्योंकि वहाँ घोड़े की गाडी है ही नहीं । गलेबाजी के द्वारा कल्पित उच्च स्थान पाकर आदमियों के द्वारा घसीटी जाने-वाली गाडी पर चढ़ पाने से ही महापुरुषों का गौरव नहीं मिल सकता । नि स्वार्थ मनुष्य-सेवा के द्वारा ससार के दीन दुखी सत्वाये हुए भाइयों के हृदय की गाडी में युगयुगान्तर के लिए आसन पाने के योग्य बने बिना इस लोक और परलाक में महात्मा का पद नहीं पाया जा सकता । इसी से मैं अपने देश के 'बड़े' आदमियों से सविनय

अनुरोध करता हूँ कि ऊपर लिखे हुए ढंग के महान् कार्यों में निपुणता प्राप्त कर सारे जगत् और जगदीश्वर को प्रिय 'धन्य-पुरुष' की उपाधि पाने की चेष्टा करें । इससे वे मनुष्यलोक के राजा की उपाधि से भी वञ्चित न होंगे । ऐसे कामों में उन्हें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, ये चारो फल मिलेंगे ।

वर्तमान समय में, भारत में, गलेवाजी और कलमवाजी बहुत बढ़ गई है । पर इससे फल कुछ नहीं होता, और न किसी समय कुछ फल होने की संभावना है । अब अगर हम हृदय से काम करना न शुरू करेंगे तो हमारी वाजी हारी हुई रहखी है । दुःख की बात पर कहाँ तरु सोचें-विचारें ? कभी कभी मन में आता है कि इस अनन्त विषय पर मुझ ऐसे साधारण आदमी को इतना ऊहापोह—सोच-विचार—करने की जरूरत क्या है ? किन्तु फिर भी न जाने कहाँ से हिर फिर कर ऐसी ही चिन्तायें हृदय में उठती हैं ।

भगवान् मालिक हैं । वह जिस तरह नचावेगे वैसेही नाचना पड़ेगा । मतलब यह कि हम चाहे जो काम करे, भगवान् को स्मरण करके ही वह काम करना अच्छा होगा । अँगरेज लोग, जिनकी हम बहुत कुछ नकल करते हैं, ईश्वर की आराधना किये बिना पार्लियामेंट के अधिवेशन को आरम्भ नहीं करते । इतने बड़े देशोद्धार के काम में सरल हृदय से ईश्वर के निकट बल की प्रार्थना करके हाथ लगाने से ही अच्छे फल की संभावना है । हजार धूमधाम के साथ आरम्भ करने पर भी, सरल भाव के आगे सभी विकट ढोंग (Monumental humbug) खुल कर मिट जाते हैं । विधाता का यह कभी न बदलने-वाला नियम है । हमारी यह आत्म-चैतन्याभाव-रूप (Want of self consciousness) मोहाच्छन्न अवस्था है । इस अवस्था में किसी तरह का ढोंग करना कभी ठीक नहीं ।

कांग्रेस की और एक चेष्टा है राजा से कुछ इक पाना । ईस्ट इंडिया कम्पनी ने पहले इस विशाल भारत पर अधिकार किया था । कम्पनी के हाथ से इस विशाल साम्राज्य के शासन-भार को जब ब्रिटेन की अधोशरी महारानी विक्रोरिया ने अपने हाथ में लिया, तब उन्होंने यहाँ की प्रजा से जो जो वादे किये थे, उनमें से बहुत से वादे अभी तक पूरे नहीं किये गये । यही हमारी नालिश है । नि सन्देह यह चेष्टा अच्छी और बड़ी है । किन्तु मैं यह पूछता हूँ कि पहले अपने को योग्य बनाने की चेष्टा क्या प्रथम और प्रधान कर्त्तव्य नहीं है ? और, उस योग्यता को पाने के लिए मनुष्य समाज में जो स्थान पाना उचित है, वह क्या निम्नश्रेणी के दुर्ग लोगो के प्रति उपेक्षा करने या उदासीन रहने से पाना सम्भव है ? अतएव जिस पहलू से देखो, प्रधान कर्त्तव्य यही ठहरता है कि हम पहले अपने को योग्य बनावें । सुप्रसिद्ध सिपाही-विद्रोह के अन्त में महारानी विक्रोरिया का एक घोषणा-पत्र हिन्दुस्तान की हर एक भाषा में निकला था । उसे हर एक जिले के कलेक्टर ने मैदान में जमा हुए लोगो के आगे पढ़ा था । उस घोषणा-पत्र की कापियाँ सर्व-साधारण में बाँटी भी गई थीं । महारानी के घोषणा-पत्र को भारत का 'मैग्नाचार्ट' कहते हैं । पाठकगण का कौतूहल निवृत्त करने के लिए यहाँ पर उसकी नकल दी जाती है ।

श्रीश्रीमती महारानी का घोषणा-पत्र ।

(इलाहाबाद, सन् १८५८ । १ नवंबर, सोमवार ।)

श्रीयुक्त गवर्नर जनरल वहादुर श्रीश्रीमती महारानी के निरुक्त आज्ञा पाकर, श्रीश्रीमती महारानी के अनुग्रह-सूचक इस घोषणा-पत्र को भारतवर्ष के सब राजा और सरदारों तथा सब लोगो और सब-साधारण प्रजा के निकट प्रकाशित करते हैं ।

भारतवर्ष के सब राजा, सरदार और सर्वसाधारण प्रजा के निकट श्रीश्रीमती महारानी की यह घोषणा है ।

परमेश्वर के अनुग्रह से ग्रेटब्रिटन और आयरलैंड के संयुक्त राज्य की, तथा यूरोप, एशिया, आफ्रिका, अमेरिका और आस्ट्रेलेशिया देश के अन्तर्गत जिन स्थानों में इस संयुक्त राज्य के लोग रहते हैं, अथवा जिन स्थानों पर इस संयुक्त राज्य का अधिकार है, उन स्थानों की महारानी और धर्म की रक्षा करनेवाली श्रीश्रीमती महारानी विक्टोरिया हैं ।

भारतवर्ष में जिन देशों के शासन का भार अब तक हमारे देश की कम्पनी के हाथ में था, उन देशों का शासन-भार, पार्लियामेंट राज-सभा में बैठनेवाले पारमार्थिक और सासारिक लार्ड और कामन्स साहबों की सलाह और मशवरे से, हम लोगों ने खुद अपने हाथ में लेना निश्चित किया है । ऐसा करने के अनेक बड़े बड़े कारण हैं ।

अतएव हम लोग इस घोषणा-पत्र के द्वारा सब लोगों को जताते और प्रकाशित करते हैं कि हम लोगो ने पूर्वाक्त सभा के सभ्य सज्जनों की सलाह और संमति से उक्त देश के शासन का भार अपने हाथ में ले लिया है । और, उक्त देश में जो हमारी प्रजा रहती है, उसको हम यह आज्ञा देते हैं कि वे सब विश्वास करें और हमसे, हमारे उत्तराधिकारियों से, और हमारे बाद जो लोग वहाँ का राज्य पावेंगे उनसे सभ्यता और राजभक्ति का व्यवहार करें, और हमारे उक्त देश के शासनकार्य को, हमारे नाम पर, हमारी और से, करने के लिए, समय समय पर जिन लोगों को नियत करना हम उचित समझेंगे उनकी आज्ञा को अधीन रहे ।

और भी हम अपने विश्वासयोग्य स्नेहपात्र मुसाहब और मन्त्री श्रीयुक्त चार्ल्स जान बार्डकाउन्ट कैनिङ्ग साहब के भक्ति-गुण, क्षमता

और सद्बिचार पर विशेष मत से विश्वास और निर्भर करके उनके अर्थात् उक्त श्रीयुत वाईकाउंट कैनिङ्ग साहब को, उक्त देश में और उसके ऊपर अपना प्रथम प्रतिनिधि और गवर्नर जनरल बना कर हमारे नाम से उक्त देश का शासन करने को हमारे नाम तथा हमारी ओर से साधारणतः सब काम करने के लिए नियत करते हैं । किन्तु वह हमारे राज्य के एक प्रधान सेक्रेटरी साहब के द्वारा जो जो आह्वान और नियम समय-समय पर हमसे पावेंगे उन्हें प्रबल मान कर काम करेंगे ।

कम्पनी बहादुर की अधीनता में दीवानी और फौज के कामों में जो लोग जिस पद पर इस समय नियुक्त हैं, उनको हमने उनके ओहदे पर बहाल रक्खा । किन्तु इस बारे में हमारी जो कोई इच्छा इसके बाद प्रकाशित होगी और जो आर्देन और कानून इसके बाद बनाये जायेंगे उनको प्रबल मानने पर ही वे अपने अपने पद पर बहाल रह सकेंगे ।

भारतवर्ष के सब राजों को हम यह बात जताते हैं कि कम्पनी बहादुर के द्वारा, अथवा कम्पनी की दी हुई सन्मता के अनुसार, उन राजों के साथ जो सन्धियाँ और प्रतिज्ञायें की गई हैं, उनको हम स्वीकार करते हैं, और हम उन्हें अविकल रूप से मानेंगे । हम यही चाहते हैं कि वे राजे भी उन्हीं के अनुसार कुल व्यवहार करें ।

इस समय भारत के जितने देशों पर अधिकार हो गया है, उनसे अधिक किसी देश पर हम अधिकार करना नहीं चाहते । परन्तु हमारा जो देश या स्वत्व है, उसपर आक्रमण का उद्योग होने पर हम अवश्य उसके लायक सजा देंगे और ऐसी अनुमति भी न देंगे कि इस बीच में अन्य राजों के अधिकार या स्वत्व पर आक्रमण किया जाय । हम अपने स्वत्व, गौरव और प्रतिष्ठा को जैसे मानते हैं

वैसेही भारतवर्ष के राजे के भी स्वत्व आदि को मानेंगे । और, किसी देश में शान्ति और सुशासन न होने पर जो उन्नति और सभ्यता-वृद्धि नहीं हो सकती, उस उन्नति और सभ्यता को हमारी प्रजा प्राप्त करे, यह इच्छा हमारी है, और वैसे ही वही इच्छा उक्त राजा लोगों के लिए भी है ।

राजधर्म का प्रतिपालन करने के लिए जैसे अन्य सब प्रजा के निकट हम प्रतिज्ञाबद्ध हैं वैसे ही भारतवर्षीय अपनी सारी प्रजा के निकट भी हम प्रतिज्ञा-बद्ध होते हैं । और, सर्वशक्तिमान् परमेश्वर के प्रसाद से हम इस कार्य को विश्वस्तरूप से और सरल भाव से निवाहेंगे ।

ईसाई धर्म सच्चा है, इस बात पर हम हृदय मत्त से विश्वास रखते हैं और धर्म से जो हमें सान्त्वना मिलती है उसे कृतज्ञता पूर्वक स्वीकार करते हैं । किन्तु हम अपनी किसी प्रजा को वह अपना धर्ममत ग्रहण कराने की कोई क्षमता स्वीकार नहीं करते, और उस धर्म को इस तरह किसी से स्वीकार कराना भी नहीं चाहते । हमारी राजकीय वासना और इच्छा यही है कि धर्मसम्बन्धी विश्वास या काम को लक्ष्य करके किसी के साथ कोई पक्षपात न हो और कोई किसी देश या दुःख को न पावे । हमारी यही इच्छा है कि आईन के अनुसार सभी लोग समान रूप से न्यायानुसार पक्षपात-शून्य भाव से सुरक्षित हों । और, हमारी अधीनता में जिन्होंने हुक्ममत की क्षमता पाई है, उनके प्रति हम यह दृढ आज्ञा और आदेश करते हैं कि वे हमारी प्रजा में से किसी आदमी के धर्मविश्वास या उपासना में किसी तरह का हस्तक्षेप न करें, अगर वे करेंगे तो उनपर हम बहुत ही नाराज होंगे ।

और, हमारी यह वासना है कि हमारी प्रजा में से जो लोग उप-युक्त-रूप से सुशिक्षित होकर, क्षमता तथा सरल भाव से युक्त होकर,

हमारे किसी सरिश्ते का काम करने के योग्य हो, वे चाहें जिस वश या धर्म के आदमी हो, उनको, जहाँ तक सम्भव हो, बिना किसी बाधा या पक्षपात के काम में लगाया जाय ।

हमको यह बात मालूम हुई है कि भारतवर्ष के लोग जिस पैतृक भू-सम्पत्ति पर अधिकार करते हैं, उसपर उनकी अत्यन्त ममता होती है । हम इस भाव को मानते भी हैं और भूमि के सम्बन्ध में उनके जो स्वत्व हैं, उनको हम रक्षा करना चाहते हैं । लेकिन उनको गवर्न-मेंट का प्राप्य अश देना होगा । और, हमारी यह इच्छा है कि आईन बनाने और उस आईन को अमल में लाने के काम में भारतवर्ष में जो रीति और आचार व्यवहार पहले से चला आता है, उसके ऊपर उपयुक्त रूप से ध्यान रक्खा जाय ।

चमता पाने के लोभ से जिन लोगों ने वेजड की गपे उडा कर, अपने देश के लोगों को भ्रान्ति में डाल कर, उन्हें राज-विद्रोह की राह में चलाया है, उनके कामो से जो उपद्रव और यन्त्रणायें हुई हैं उनके लिए हमें अत्यन्त शोक है । उस राज-विद्रोह को युद्ध-भूमि में दबा देने से हमारी शक्ति जाहिर होगई है । जो लोग इस तरह के भ्रम में पडे थे, किन्तु अब कर्त्तव्य कार्य की राह में फिर आना चाहते हैं, उनके अपराध को चमा करके उनपर दया दिखाने की हमारी इच्छा है ।

एक प्रदेश में अधिक रक्तपात न हो, और हमारे भारतवर्ष के राज्यों में और भी शीघ्र शान्ति हो इस अभिप्राय से, हमारे प्रतिनिधि और गवर्नर जनरल बहादुर ने कोई कोई नियम प्रकाशित करके, जिन लोगों ने हाल की गडबडी में हमारी हुकूमत के विरुद्ध होने का अपराध किया है उनमें से अधिकांश लोगों को उसी नियम के अनु-सार माफी पाने की आज्ञा दी है, और भारी अपराध होने के कारण

जिनको माफी नहीं दी जा सकती उनको जो दण्ड होगा, सो भी प्रकाशित कर दिया है । हमारे प्रतिनिधि और गवर्नर जनरल बहादुर के इस काम को स्वीकार करके हमने प्रबल रक्खा है और उसी बात को फिर जताते और घोषणा करते हैं ।

ब्रिटन की प्रजा की हत्या करने के काम में साक्षात् लिप्त होने का अपराध जिनका प्रमाणित हो चुका है, या होगा, उनको न्याय-विचार के अनुसार दया नहीं दिखाई जा सकती । किन्तु उनसे अलग और उनको छोड़कर अन्य सब अपराधों के लिए हम दया दिखावेंगे ।

किसी आदमी या आदमियों को हत्याकारी जान कर भी जिन्होंने अपनी इच्छा से आश्रय दिया है, या राज-विद्रोह-व्यापार के सरदार या प्रवर्तक रूप से जिन्होंने काम किया है, उनके प्राणों की रक्षा होगी, इतनी ही हम प्रतिज्ञा कर सकते हैं । किन्तु जिस ग-ढग को देख कर उनके हृदय में राजभक्ति त्याग करने की प्रवृत्ति हुई है, उसपर उपयुक्त विचार करके उनको दण्ड दिया जायगा । और, कुसल्पना करनेवाले लोगों ने जो बे-जुड़ की गर्में हाँक दी थीं उनपर बिना जाने जल्दी विश्वास कर लेने के कारण जिनसे अपराध बन पड़ा है, उनपर अधिक अनुग्रह दिखाया जायगा ।

और जो सब लोग इस समय गवर्नमेन्ट के विरुद्ध शस्त्र धारण किये हुए हैं, वे यदि अपने घर में खेती बनिज रोजगार आदि कामों को करने के लिए लौट जायेंगे, तो हमारे विरुद्ध और हमारे राजमुकुट और समान के विरुद्ध उनसे जो अपराध बन पड़े हैं, उन्हें हम नियम की कोई भी पाबन्दी न करके माफ कर देंगे, और उनके उन अपराधों को भूल जायेंगे, इस बात को हम अङ्गीकार करते हैं । जो लोग आगामी जनवरी महीने की पहली तारीख के पहले इस नियम के

अनुसार काम करेंगे, वे सभी हमारे इस अनुग्रह और चमत्कार को पावें, हमारी यही इच्छा है ।

हमारी बड़ी इच्छा है कि परमेश्वर की कृपा से जब देश में फिर शान्ति स्थापित हो, तब इस देश की खेती, बनिज, रोजगार आदि के लिए उत्साह दिया जाय, और सर्व-साधारण के उपकार और उन्नति के कामों में सहायता की जाय, और भारतवर्ष में हमारी जो प्रजा वास करती है उसके मङ्गल के लिए देश का शासन किया जाय । प्रजा की उन्नति से ही हम बली होगे । प्रजा सुख-स्वच्छन्दता से रहेगी तो हम भी बेखटके रहेंगे । वे कृतज्ञ होंगे तो उसे ही हम उत्कृष्ट पुरस्कार समझेगे । प्रजा की भलाई के लिए हमारी इन सब इच्छाओं को सफल करने की शक्ति हमको और हमारी अधीनता में जो शासन करेंगे उनको परमेश्वर दें ।

भारतवर्ष के श्रीयुत राइट आनरेबिल गवर्नर जनरल बहादुर का घोषणा-पत्र ।

विदेशीय डिपार्टमेंट । इलाहाबाद ।

१८५८ । १ नवम्बर ।

भारतवर्ष के जिन देशों पर ब्रिटिश जाति का अधिकार हो चुका है उनके शासन का भार श्रीश्रीमती महारानी ने खुद अपने ऊपर लेने की इच्छा की है । अतएव उनके प्रतिनिधि श्रीयुत गवर्नर जनरल बहादुर यह सवाद देते हैं कि आज से भारतवर्ष की गवर्नमेंट के सब काम श्रीश्रीमती महारानी के नाम से किये जायेंगे ।

जिस वश या जिस जाति के लोगो ने कम्पनी बहादुर की अधीनता में रह कर ईंग्लैण्ड के मान-सम्भ्रम और चमत्कार को जड़ जमाने में सहायता की है, वे आज से केवल महारानी के चाकर होंगे ।

श्रीगुरु गवर्नर जनरल यद्वादुर उनके। यह आशा है कि श्रीमती गारानी की अनुमति की गृहणा होनेवाली भी वागना या इतरत प्रका-
त हुई है उसे मकल करने के लिए, हर एक आदमी अपने पद और
योग के अनुसार मन खगा कर यथाशक्ति सहायता करें ।

श्रीमती गारानी ने मंह और तथा के शर्तों का प्रयोग करके
भारतवर्ष की कंगेरी प्रजा की राजमति और विग्रहाग प्रकृत करने के
लिए जो पत्र लिखा है, उमी पत्र के अनुसार यह सब प्रजा भगि-
हित आजा का वागन करे, इस कार्य की प्रथम यनान में श्रीगुरु गव-
र जनरल यद्वादुर इस समय और सर्वदा कोई कसर नहीं करेंगे ।

भारतवर्ष के श्रीगुरु राइट आनरेबिल गवर्नर जनरल यद्वादुर की
आशा से प्रकाशित ।

जी० एफ० एमन्डन

श्रीगुरु गवर्नर जनरल यद्वादुर महिद
भारतवर्ष की गवर्नमेंट के सेक्रेटरी ।

Printed at the Alipore Jail Press.

पाठक, देखिए, इस घोषणा-पत्र में भी गारानी ने बारबार भग-
वान् का स्मरण किया है । उनके उदाहरण का अनुसरण करना क्या
हमारा कर्तव्य नहीं है ?

और दो-एक बातों का उल्लेख किये बिना यहाँ पर नहीं रहा जाता,
पाठकगण क्षमा करेंगे । आगे की बातों को अनेक लोग जानते हैं, अतएव
उनका उल्लेख यहाँ पर अनावश्यक होने पर भी, एक धार यहाँ पर
उनका स्मरण कराये बिना किसी तरह जी नहीं मानता । हमारे देश
में एक कहावत है कि “जातिभ्रष्ट हुआ सो वैष्णव” । कुलटा आदि
स्त्रियाँ, जो अनेक कारणों से समाजभ्रष्ट होती हैं, वे और कोई गति
न देख कर चढ़ वैष्णवदल में शामिल हो जाती हैं और किसी तरह

अपना पेट पालती हैं । वैसे ही आज-कल “कोई काम नहीं तो पेट्रिय का मसला दिखाई पड रहा है । किसी कारण से जिनकी रोजी बूट गई, अथवा जन्म भर खोजने पर भी जिनको कोई काम न मिले वे लाचार पेट्रियट अर्थात् देशहितैषी बन गये । वर्तमान समय में चार आदमियों के लिए ऐसी ‘देश-हितैषिता’ एक अच्छा रोजगार रही है । उनसे कोई कुछ पूछने-गछनेवाला नहीं, और अच्छी आदमी भी होती है । इस दल में जो पेशेदार गलेवाज या पेशेदार कलमवाज हैं, उन्हीं को अधिक सुभीता है । बाकी लोग केवल चिलम तम्बाकू भर कर या ‘वाह वाह’ करके केवल पेट पाल लेते हैं, अपना राग अलापने का अवकाश उन्हें नहीं मिलता । इनमें से कुछ लोगो पुराना दल छोड कर नया दल जोडने की कोशिश भी की है, और कर रहे हैं । असल बात तो यह है कि शौक से—उत्साह से—जो काम किया जाता है, वहीं यथार्थ होता है । पेशेदारी तो बस कोरी दूकानदारी हुआ करती है । कलमवाजों में बहुत से ऐसे हैं जिन्हे भले बुरे का कुछ विचार नहीं है, समाज और देश उन्नत हो रहा है या उजड़ा जा रहा है—इस पर कुछ ध्यान नहीं है, केवल सुनने में भली मालूम पड़नेवाली अटसट वाते लिखकर चार पैसे पैदा करना ही उनका उद्देश्य है । इसमें सन्देह नहीं कि पुस्तक लिखना एक उच्चश्रेणी का काम है । पर उसमें भी अनेक ऐसे पेशेदार लेखक जुट गये हैं, जो केवल कल्पना और बुद्धि के बल से कपट-सहृदयता दिखा कर नाविल-निर्माण करते हुए दस पाँच हजार पैदा कर चुके हैं, या पैदा करने की कोशिश में हैं । इन लोगो की दृष्टि में इस लोक और परलोक का उपास्य देवता रुपया ही है । इस लोक में रुपया मिले, परलोक में नरक भोगना पडेगा, इसकी कुछ पर्वा नहीं । असल में ऐसे लोगो की कृति से सबे सुशिक्षित लोगो को कोई भय नहीं । भय है तो

केवल उनके सजातीय अर्धशिक्षित और अशिक्षित लोगों को । य लोग उक्त प्रकार के ग्रथकारों को वातो में भूल कर कुपथगामी हुए, तो भारी हानि का खटका है । जहाँ का मूलमन्त्र कपट ही है, वहाँ मुख की बात सुन कर या हाथ का लिया पढ़ कर आदमी को पहचानना बड़ा ही कठिन है । किन्तु जगत् में रुपया ही एक ऐसी कसौटी है, जिस पर कसने से तुरन्त खोटा-खरा मालूम पड़ जाता है ।*

इस प्रसंग को लिखते लिखते एक महाप्रभु का महावाक्य मुझे मिल गया । उसे मैं अपने पाठकों के आगे उपस्थित करता हूँ । इसमें, थोड़े शब्दों में, देश हितैषिता का बड़ा अच्छा वर्णन किया गया है —

“मि०—मैं इस सारे जगत् का—इस विश्व ब्रह्माण्ड का—इन चौदह भुवनों का उपकार करने के लिए कसर कसे हुए हूँ । कोई इससे यह न समझ बैठे कि मैं केवल भारत या बङ्गाल के लिए ही व्यस्त हो रहा हूँ—नगरवासी खाने को न पावें, ग्रामवासी खाने को न पावें, परोसी खाने को न पावें, उसपर मेरी नजर नहीं है । क्योंकि उनको खिलाने के लिए इस भारत में अनेक आदमी हैं । विशेषकर वे लोग जैसे कष्ट सहने के आदी हैं, उसे देखते दो-चार महीने खाने को न पाने से भी उनका कुछ बन-बिगड नहीं सकता । भाई, बहन, यहाँ तक कि माता जी भी खाने को न पावें, इस पर मेरी दृष्टि नहीं है; क्योंकि बुढ़्ढो होने पर भी, विधवा होने पर भी उनके शरीर में खूब बल है—वह मेहनत करके—चर्खा कात कर—

* सुना जाता है, बहुत दिन हुए, एक बार कलकत्ते के पागलपाने में बहुत से पागल भर्ती हो गये । उनमें बहुत से ऐसे बेकार आलसी थे, जो पागल बनकर सुपत में पेट पालना चाहते थे । अफसरो को शक हुआ, और इन्होंने रुपये के द्वारा असल-नकल पागल पहचान लिये । जो असल पागल था, उसने रुपया लेकर फेंक दिया, और जो बगल हुआ था, उसने टेंट में सोस लिया ।

सा सकती हैं। मैं चाहता हूँ जगत् की उन्नति स्वर्ग-पृथ्वी-पाताल की उन्नति—गोलकधाम श्रीवैकुण्ठपुरी की उन्नति।”

बलिहारी। विल्कुल ठीक वर्णन है। वास्तव में यही हमारी देश-हितैषिता की पराकाष्ठा है—“भारत-पेट्रियट” का सजीव उच्छ्वास है।।। यह हँसी नहीं, विल्कुल सच है, इसमें एक अक्षर भी अति-रक्षित नहीं है।

महर्षि ब्लैकी (Professor John Stuart Blackie) से मुलाकात। बड़े पुण्यो से ऐसे महात्माओं के दर्शन मिलते हैं। इनको महर्षि कहने में अगर किसी को आपत्ति हो, तो हम उससे इतना ही कह सकते हैं कि इस समय हमारे देश में जो ‘महर्षि’ ‘महात्मा’ आदि नामों से अपने को प्रसिद्ध करना चाहते हैं, उनसे यह लाख-गुना उन्नत पुरुष हैं। मेरी समझ में तो यह यूरोपियन शरीर में एक आर्य महर्षि की आत्मा हैं। ऐसे आदमियों के दर्शन सहज में नहीं होते। हमारे देश में अनेक लोगों ने इनके आत्मोत्कर्ष (Self-Culture) नामक ग्रन्थ को पढ़ा होगा। इस कारण इनका विशेष परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। कुछ दिन हुए, इनका परलोकवास हो गया।

लन्दन के किसी स्थान में व्याख्यान देने के लिए यह बुलाये गये थे। उस व्याख्यान-मन्दिर के अध्यक्ष और उस सभा के सभापति महाशय मुझपर अनुग्रह करते थे, इसी कारण ऐसे महापुरुष को देखने का मौका मुझे मिल गया। उक्त सभापति का नाम डाक्यूर क्लिफर्ड Dr Clifford था। यह वैष्ट्रिट सम्प्रदाय के एक प्रसिद्ध पादरी हैं। इनके बारे में अधिक क्या कहूँ, ऐसा तेजस्वी उदार ईसाई बहुत कम देखने को मिलेगा। लन्दन में मैंने अनेक पादरियों के उपदेश सुने हैं, किन्तु ऐसा पाखण्डदलन

विक्रम-पूर्ण किन्तु हृदयप्राही उपदेश और नहीं सुना । इनके भारी पाण्डित्य का तो कहना ही क्या है । उसकी थाह लगाना हमारी शक्ति से विल्कुल बाहर है । मैकनील के उपदेश यहाँ अनेक लोगो ने सुने होंगे । यह भी लन्दन के एक प्रधान धर्मोपदेशक हैं । किन्तु वैसे तेज के साथ मनोहर भाव का मेल हिफर्ड की ही वाणी में देखा गया । धर्मोपदेश को जाने दीजिए, उनका धर्म-जीवन भी ऐसा था कि पृथ्वी में बहुत ही कम लोग उस तरह अपना जीवन बिताते होंगे । बहुत कहना व्यर्थ है, मुझ ऐसे नासमझ को उनकी वाणी ने ऐसा मुग्ध कर लिया था कि जब तक मैं लन्दन में रहा तब तक उनका उपदेश सुनने को अगर मिलता था तो रविवार को मैं और किसी गिर्जे में नहीं जाता था ।

मि० ब्लैकी का शरीर जैसा लम्बा-चौड़ा वैसाही सुडौल भी था । लम्बे लम्बे पके बाल पीठ पर पड़े होने से जटाजूटधारी ऋषियो का ही भाव मन में उदित होता था, उस समय उनकी अवस्था ८० से ऊपर थी । पहले मैंने सुना था, यह ऐसे बालको की तरह सीधे हैं कि सदा अपने को भूले से रहते हैं । यह एक जगह व्याख्यान देते समय सभापति से एकाएक पूछ उठे थे कि “तुमने व्याह क्यों नहीं किया ?” । यहाँ भी ठीक यही भाव मैंने देखा । लोकचर देते समय बीच बीच में सभापति की पीठ पर हाथ रख कर पूछते जाते थे कि “क्यों, ठीक कहता हूँ न ?” इत्यादि । अगर वक्ता कहीं भी ऐसा व्यवहार करे तो लोग उसको भारी असह्य समझेंगे, फिर यह तो सभ्य-ससार का केन्द्र लन्दन था । किन्तु उनकी इस बाल-सुलभ सरल प्रकृति को लन्दन के सभी लोग जानते थे । बल्कि अगर वह ऐसा कहीं न करते तो लोग उन्हें पहचान ही न सकते । इसके सिवा वह व्याख्यान के समय ईश्वर-प्रेम में मग्न होकर कभी कभी नाचने भी लगते थे । पण्डितवर रस्किन को

जब इन्होंने पहलेपहल आक्सफोर्ड में देखा, तब सबके सामने उनसे लिपट गये और उनका मुख-चुम्बन करने लगे । इससे कम मे इनसे हृदय का उद्दास नहीं जताया जा सका । अब शायद पाठक समझ गये होंगे कि महर्षि ब्लैकी कैसी भोली प्रकृति के जीव थे । हैट-कोट-धारी ऐसा जीव, वास्तव मे एक विचित्र ही बात थी । जो कुछ हो, उनके मुखारविन्द की कुछ बातें यहाँ मैं लिखता हूँ ।—

“पहले मैं कट्टर कालविन-सम्प्रदाय का ईसाई था । उसके बाद किसी पण्डितवर के मुख से एक बार मैंने सुना ‘जहाँ जीवन है वहीं ईश्वर है’—“Wherever life is, God is” तभी से, मेरे हृदय से ईश्वर का कठोर भाव जाता रहा और सर्वत्र विद्यमान ज्ञानमय-भाव का उदय हो आया ।”

“एक दफा किसी मद्य-पान-निवारिणी सभा से व्याख्यान देने के लिए मुझे बुलावा आया । मैं वहाँ जाकर कुछ भी निश्चय न कर सका कि मैं क्या कहूँ । क्योंकि मैं शराव के अधिक पीने का विरोधी अवश्य हूँ, पर एक दम न पीना तो मेरी सलाह नहीं है । मैंने वहाँ जाकर यो आरम्भ किया—I cannot understand why I am asked to be here I am not a teetotaler—far from it A man asks me to dine with him and does not give me a glass of good wine I say he is neither a Christian nor a gentleman Germans drink beer, Englishmen wine, ladies tea, and fools water अर्थात् मुझे नहीं मालूम कि मैं यहाँ क्यों उपस्थित हुआ हूँ । मद्यपायी न होना दूर रहे, यदि निमन्त्रण करके कोई भोजन के साथ एक गिलास उत्तम शराव न दे, तो मैं उसे कृस्तान या भद्रपुरुष नहीं कहूँगा । जर्मन लोग नियर, अँगरेज लोग शराव, भद्रमहिलायें चाय और मूर्ख लोग जलपान किया करते हैं ।”

भारतवर्ष की दुर्दशा का उल्लेख करके उन्होंने कहा—“देश की प्राकृतिक अवस्था अर्थात् जल-वायु तुम्हारे विरुद्ध हैं। तुम क्या करोगे? तुम्हारी उन्नति की आशा कम है। दक्षिण-इटली की दशा देखो। एक नेपल्स का आदमी एक बार हाईलैंड में आया। हमारे देश के लोगों ने उसके देश की प्रतिष्ठा करके कहा—‘तुम्हारे यहाँ का वायु कैसा उज्ज्वल सूर्यतप्त है, कैसा सुन्दर साफ नील आकाश है। तुम्हारा सब कोमल और मनोहर है। और हमारे इस हाईलैंड में दारुण शीत है, सदा बर्फ गिरा करती है, आँधी आदि अनेक दुःख और कष्ट के कारण मौजूद हैं’। इसके उत्तर में नियापोलिटन ने सिर पर हाथ पटक कर कहा—‘हाय ! हाय ! यह तुम क्या कहते हो ? इस तरह के प्राकृतिक क्लेशों को सह कर ही तुम लोग चिरकाल से, स्वाधीन भाव से, मनुष्यत्व का परिचय देकर गौरव के साथ एक ऐतिहासिक जाति कह कर परिचित हो, और हम लोग प्रकृति की कोमल गोद में लालित होने के कारण ही आलसी और निस्तेज हैं, और इसी कारण चिरकाल से पराधीन और पददलित हो रहे हैं। बड़े ही मेरे भाग्य थे कि तुम दस जनो की सहायता से आज कई दिन से स्वाधीनता का सुख भोगने को समर्थ हुआ हूँ। तुम्हारे देश में तुमको मैकडो दुःख रहते भी वह हमारे देश की अपेक्षा हजारगुना श्रेष्ठ है। प्रकृति की सुख-सेज अच्छी नहीं, वह सब दुखों का कारण है। यदि इसके कारण स्वाधीनता नष्ट हो तो यह आराम किस काम का ?’ इसी से तुम समझ लो कि शिथिल बना देनेवाला जल-वायु आपात-मनोहर होने पर भी उसका फल विषमय ही है”।

मि० ब्लैकी के मत से “Thou shalt love thy neighbour as thyself”—अर्थात् “परोसी पर अपना ही ऐसा प्रेम करो,” यह याइविल का वाक्य ही धर्म का मर्म है। और, उन्होंने इसी बात को अपने

जीवन में कर दिखाने की अन्त समय तक कोशिश की। वह प्रकट दान के सिवा कितने ही गरीब अनाथ विद्यार्थियों को गुप्त रीति से भी सहायता पहुँचाते थे। उनका आचार-व्यवहार एटिकेट से स्थायी था। लोगो की पीठ पर थपकी मार कर बात-चीत करने के सिवा, जहाँ जी चाहता था वहाँ जोर से गाने में भी वह कोई सकोच नहीं करते थे। वह लोगो के बर्ताव और बातो को अच्छाई की दृष्टि से देख कर कभी क्रोध न करते थे। और दूसरों से भी ऐसे ही व्यवहार की आशा रखते थे, ब्लैकी की और एक बात मेरे मन में चुभ गई थी। स्त्रियों के सतीत्व के सम्बन्ध में आलोचना करते समय मैंने स्त्री-पुरुष दोनो को दोषी कहा, तो उन्होने तेज के साथ कहा—
 “A man unchaste is an imperfect being, a woman unchaste is a monster” वास्तव में चरित्र-हीन स्त्रियों के ऐसे राक्षसी व्यवहार अनेक जगह देखे गये हैं जिनका पुरुषों में होना सर्वथा असम्भव है। ब्लैकी साहब वैरिस्टर थे, लेकिन उन्होने कभी वैरिस्टरो का धन्धा नहीं किया।

अदालत-सराय या आईन सीरने का कालेज (The Inns of court)। विद्यालय का नाम सराय, जरा सुनने में अटपटा जान पड़ता है। किन्तु क्रमशः आगे जान पड़ेगा कि क्यों इसका ऐसा नाम पडा। जब मैं भारत से विलायत-यात्रा को चला, उस समय एक आईन-शिष्यार्थी ने मुझसे कहा था कि “लौटते समय मेरे लिए चारो टेम्प्लो की धूल लेते आना”। वास्तव में अगर देखा जाय तो यह उनकी भक्ति बेंजड की नहीं है। इतिहास में इन कालेजों का वर्णन पञ्चस्थानीय अति प्राचीन अनुष्ठान के नाम में किया गया है। एक पण्डित ने इनके सम्बन्ध में कहा है—“The noblest nurseries of humanity and liberty in the British Empire.” अर्थात् ये ब्रिटिश साम्राज्य

मे मनुष्यत्व और स्वाधीनता के बड़े भारी शिचालय हैं। पूर्व समय में यह नियम था कि इस विश्वविद्यालय की पढाई समाप्त होने पर यहाँ कुछ दिन बिताकर आईन के सम्बन्ध में कुछ ज्ञान प्राप्त किये बिना 'सुशिक्षित' पद पाने का कोई उपाय नहीं था। विद्यार्थीमात्र को एक प्रकार से बाध्य होकर यहाँ का मेम्बर होना पड़ता था। इस समय यह प्रथा उठ गई है।

आईन-शिचाला के लिए चार कालेज या सराय हैं— १ मिडिल टेम्पल (Middle Temple) या मध्य-मन्दिर, २ इनर टेम्पल (Inner Temple) या आभ्यन्तरिक मन्दिर, ३ लिंकन्स इन (Lincoln's Inn) या लिंकन की सराय, ४ ग्रेज इन ((Gray's Inn) ग्रे की सराय। पहले चारों सब बातों में स्वतन्त्र थे। इस समय असल विषय की शिचाला और परीचाला आदि के सम्बन्ध का सब काम एकही में होता है। अन्यान्य बातों में किसी से किसी का सम्बन्ध नहीं है। हर एक की आमदनी-खर्च और जायदाद अलग अलग है। ईसा की तेरहवीं सदी से इनका काम शुरू हुआ है।

जेरुसलेम के कृस्तान तीर्थयात्रियों को रक्षा करने के लिए यूरोप में एक दल बना था। ये लोग बीच बीच में उस और जाकर शत्रुओं के साथ युद्ध आदि भी करते थे। इन लोगों ने पूर्व-राज्य के दस स्थानों से लूट-पाट करके बहुत धन इकट्ठा किया। इन लोगों का नाम था नाइट टेम्पलर (Knights Templars)। इस दल में जो डैंगलेंड के आदमी थे, उन्होंने लूटे हुए धन से लन्दन में बहुत सी सम्पत्ति खरीद ली थी, और वे उसपर दरगल करके उसका भोग करते रहे। उनका विध्वंस हो जाने के बाद वह सम्पत्ति राजा ने दो टेम्पलों को आईन-शिचाला की सहायता के लिए दे दी। इसके पहले ही इन दोनों टेम्पलों ने, विद्यार्थियों की सख्या अधिक होने के कारण,

दो भागों में बँट कर आहार आदि के लिए अपना-अपना अलग-अलग बन्दोबस्त कर लिया । राजा प्रथम जेम्स ने जिस लेख से इन टेम्पलो को उस सम्पत्ति का स्वत्वाधिकारी बनाया, उसमें लिखा गया था कि "आईन-शिच्चा के चार कालिजो मे, सारे यूरोप मे, ये ही दोनो सर्वश्रेष्ठ है । आईन-शिच्चारथी और अध्यापको को चिरकाल के लिए यह सम्पत्ति दी जाती है" । अन्य दो कालिजों के लिए जो नैतिक कर्त्तव्यमात्र है, वह करने के लिए टेम्पलो को अधिकारी लाग, आईन के अनुसार, बाध्य हैं । प्राचीन कवि स्पेन्सर (Spenser) ने दोनो टेम्पलों का उल्लेख करके कहा है—

" Those brickly towers,
The which on Themmes brode aged backe doo ryde,
Where now the studious lawyers have their bowers,
There whilom want the Templar Knights to byde,
Till they decayed through pride "

चासर (Chauce) से लेकर अब तक अँगरेजी साहित्य के साथ इस स्थान का विशेष लगाव है । बहुत से प्रधान पण्डितों के साथ इसका घनिष्ठ सम्बन्ध है ।

टेम्स नदी के किनारे इन टेम्पलो के अन्तर्गत एक रमणीय धाग है । वहाँ हर साल फूलों की मनोहर प्रदर्शनी हुआ करती है ।

मिडिल-टेम्पल का वर्तमान मन्दिर सन् १५७२ में बना था । ओक लकड़ी की ऐसी छत लन्दन में और कहीं नहीं देखी जाती । इस घर की दीवारों और सिढकियाँ पूर्वकाल के टेम्पलर लोगों के और आधुनिक समय के लार्ड-उपाधि को 'पाये हुए सभ्यों की मर्यादा के चिह्नों (Armoial bearings) से सुशोभित हैं । कहा जाता है कि स्पेन देश की आर्माडा (Spanish Armada) की लकड़ी इस मकान के बनाने में व्यवहृत हुई थी, और उस प्रसिद्ध युद्ध में जय पाने के बाद

रानी एलिजाबेथ ने इसी 'हाल' में आकर नृत्य किया था । यहाँ पर शेक्सपियर के 'द्वारहवीं रात, (Twelfth Night) नामक नाटक के अभिनय के समय उक्त रानी यहाँ उपस्थित थीं, इसके अनेक प्रमाण पाये जाते हैं ।

सभी प्रिन्स आफ् वेल्स इसके मेंबर होते हैं । इस कारण अन्यान्य कालिजों की अपेक्षा इसका माहात्म्य कुछ अधिक है । यह बात जरूर है कि प्रिन्स आफ् वेल्सों को न परीक्षा देनी होती है, और न अन्य किसी नियम आदि के अधीन होना पड़ता है । सुना जाता है, सिद्दासन के भावी अधिकारी, अर्थात् युवराज, और उनके बड़े लडके को यहाँ का सभ्य अवश्य होना पड़ता है । इसके लिए खास नियम है । राजघराने के अन्यान्य पुरुष भी इसके मेंबर हैं । इसकी महिमा के सम्बन्ध में और एक बात कही जाती है । सुविशाल ब्रिटिश-साम्राज्य के भिन्न भिन्न अशों के बहुत से लोग यहाँ के बैरिस्टर हैं, इसलिए इसको 'इम्पीरियल इन' (Imperial Inn) भी कहते हैं ।

इन कालिजों के अध्यक्षों को वेंचर (Masters of the Bench) कहते हैं । पुराने बैरिस्टर, क्वीन्स कौन्सिल (Queen's Counsel) हाईकोर्ट के जज और राज-परिवार के अन्तर्गत मेंबर लोग इस पद को पाते हैं । यह बात जरूर है कि जो जहाँ का बैरिस्टर है, वह वहाँ का वेंचर हुआ करता है । बेश्वर लोग अपने अपने कालिज के हर्ता कर्ता हुआ करते हैं । वे चाहे तो बिना परीक्षा के ही किसी आदमी को बैरिस्टर बना सकते हैं । और, हजार परीक्षा देने पर भी उनके मत के बिना कोई बैरिस्टर नहीं हो सकता ।

इस देश के अनेक लोगों को विश्वास है कि केवल भोज देने से ही बैरिस्टरी मिल जाती है । लेकिन असल में यह बात नहीं है ।

अन्यत्र जैसे परीक्षा के बिना उपाधि पाने का कोई और उपाय नहीं है, वही बात यहाँ भी है। यह बात अवश्य है कि यहाँ भोज खाने को मिलते हैं, देने नहीं पड़ते। और, परीक्षा का मामला पृथ्वी पर सर्वत्र समान ही है। इधर रट कर उधर उन्हीं बातों को समय पर ठीक-ठीक उगल दो, बस इसी पर पास होना निर्भर है। इस पाप का सर्वत्र यही एक रूप है, कहीं भी कुछ विचित्रता नहीं देख पड़ती। ब्राक्सफोर्ड और केम्ब्रिज आदि विश्वविद्यालयों में, वर्तमान समय में, जो प्रथा प्रचलित है, वह पुराने जमाने में यहाँ कुछ और भी कठिन रूप से प्रचलित थी। रोज़ हर एक विद्यार्थी को एक जगह बैठ कर भोजन करना पड़ता था। नित्य नियमित रूप से गिर्जे में जाना आवश्यक था। सन्ध्या के छ बजे के बाद बाहर रहने की मनाही थी। और, कालिज की टोपी (College-cap) और गाउन (Gown) के व्यवहार की आज्ञा थी। शिक्षा उस समय लेक्चर (Lecture), मूट (Moot) और सामयिक परीक्षा से दी जाती थी। इसके बिना कोई बैरिस्टर नहीं हो सकता था। मूट के माने यह है कि नियमित रूप से सभा लगती थी, वहाँ बेन्चर, बैरिस्टर और विद्यार्थी लोग उपस्थित रह कर किसी पहले से निर्दिष्ट आईन के मामले को लेकर उसपर वादानुवाद करते थे। वर्तमान समय में, प्रेज इनमें, यह बात और ढग से प्रचलित है। वहाँ किसी नियत दिन को भोजन करने के बाद तीन चार बेन्चर जज की जगह पर, और नये बैरिस्टर व विद्यार्थी लोग बैरिस्टर की जगह पर, बैठ कर, नकली मुकदमा चलाते हैं। साधारण लेक्चर की तरह इस सभा में चारों कालिजों के विद्यार्थियों को शामिल होने का अधिकार है। उस जमाने में बैरिस्टर बनाने की चमता अध्यापकों के हाथ में थी। परीक्षा के बिना वे किसी को उपाधि नहीं देते थे। उपाधि लेने के समय चुने हुए

विद्यार्थी कालिज के पुस्तकालय में एक 'बार' अर्थात् कठघरा लॉघने के लिए अध्यापक के द्वारा बुलाये जाते थे । इसी से इस समय भी " Call to the bar " (अर्थात् कठघरे में बुलावा) यह प्रवाद प्रचलित है । बीच में बहुत दिनों तक नाममात्र को जवानी परीक्षा प्रचलित हुई थी । मगरपीछे वह एकदम उठ गई । फिर चेम्बर-योग्यता (Chamber-qualification) प्रचलित हुई । अर्थात् किसी बैरिस्टर के निकट निर्दिष्ट समय तक काम सीखने का सर्टिफिकेट ले आने से ही उपाधि मिल जाती थी । इसके बाद लगभग तीस-चालीस बरस से वर्तमान लिखित और मौखिक परीक्षा का नियम प्रचलित हुआ है । अब 'आईन शिजा सभा' (Council of Legal Education) से परीक्षा पास होने की सनद पाने के बाद, अपने कालिज के बेञ्चर द्वारा मनोनीत होने पर, उपाधि मिलती है । लेक्चर, परीक्षा आदि की व्यवस्था उक्त सभा ही करती है । हर एक कालिज से एक निर्दिष्ट सख्या के बेञ्चर नियुक्त होकर इस सभा का सङ्गठन होता है ।

इन कालिजों को सराय क्यों कहते हैं, सो शायद पाठक लोग अब समझ गये होंगे । इसका और भी एक कारण है । प्राचीन समय में सब प्रधान अदालतें राजा के साथ ही साथ रहती थीं । राजा जहाँ जाता था, वहाँ वे अदालतें भी जाती थीं । जब राजा के साथ अदालत राजधानी में आती थी, तब आईन का व्यवसाय करने लोग इन्हीं स्थानों में टिकते थे । इसलिए इनका सराय नाम कुछ असङ्गत नहीं है ।

साल में चार टर्म (Term) होते हैं । हर एक टर्म में, विद्यार्थियों को, कम से कम छ. दिन अपने कालिज के साधारण भोज में उपस्थित न होने से, टर्म में नहीं रक्खा जाता । पूर्ण सख्या भर उपस्थित न होने से उपाधि नहीं मिलती । हर एक टर्म में एक बड़ा दिन (Grand Day) और एक बुलावे का दिन (Call Day) निर्दिष्ट होता है । बुलावे की रात को

काला गाउन, सादा गुलूवन्द और सादी परचूले की टोपी (Gown Band and Wig) पहने हुए परीक्षा में उत्तीर्ण विद्यार्थियों को उपाधि दी जाती है । एक खास बड़े दिन के राज-भोज का व्यौर नीचे लिखा जाता है ।

सन् १८६१ की नवीं अप्रैल को एक राज-भोज हुआ । यह हमारे टेम्पल के ईस्टर-टर्म का बड़ा दिन था । हर एक टर्म की ऐसी रात को बाहर के बड़े बड़े लोगो को न्योता दिया जाता है । इसी नियम के अनुसार आज भी अनेक प्रतिष्ठित लोग बुलाये गये । खास कर ब्रिटिश साम्राज्य के भावी अधीश्वर स्वयं प्रिन्स आफ् वेल्स ने टेम्पल के वेञ्चर की हैसियत से हमारे साथ खाया-पिया । अतएव आज का यह महायज्ञ था । इस यज्ञ में युवराज प्रधान होता था । पहले कहा जा चुका है कि चार कालिजों में से मिडिल-टेम्पल का राज-घराने से विशेष सम्बन्ध रहता है । रानी एलिजाबेथ से लेकर इधर अनेक राजा-रानियों और राजकुमारों ने इस हाल में पान-भोजन नाच-गाने-बजाने और नाटक आदि का आनन्द लूटा है । आजकल यहाँ अभिनय तो नहीं होता, लेकिन खाने-पीने और गाने-बजाने में कोई कमी नहीं हुई ।

आज साधारण नियम के विपरीत बैरिस्टरों और विद्यार्थियों— अर्थात् साधारण मेम्बरों—के लिए सब २७५ खास तौर के कार्ड भेजे गये थे । उक्त निमन्त्रण-पत्र में लिखित नियम के अनुसार सबको शाम की पोशाक (Evening Dress) पहन कर आना पडा था । रात को पौने आठ बजे के समय फल-भोजन शुरू होने वाला था, लेकिन युवराज की अपेक्षा करने में कुछ विलम्ब हो गया । उनके गाडी पर से उतरते ही पल्टन के वाजेवालों ने जातीय सङ्गीत (National

- विलायत के जज थोर बैरिस्टरों को कचहरी में परचूले की टोपी सिर पर देकर छाम करना पडता है ।

Anthem—"God save the Queen.") वजाना शुरू किया । कुछ मिनटों के बाद प्रिंस आफ वेल्स को आगे करके, निमन्त्रित व्यक्तियों के साथ, वेञ्चर लोग आकर उपस्थित हुए । उनके कदम रखने के साथ ही फिर घैण्ड बजने लगा—"March Prince of Wales" । इसके उपरान्त सब लोग मिल कर खड़े हुए और पुरोहित वान साहब ने नित्य नियमानुसार निवेदन (Grace) पाठ किया.—

"Gracious God, bless this food of which we are now about to partake, and all other gifts of thy Providence, for Jesus Christ's sake, Amen—God bless our Queen, bless the Prince of Wales, the Princes of Wales and all the Royal Family, God bless our Church, bless our country, &c, &c"

अब भोजन शुरू हुआ । आज पारुस में इतना विलम्ब हुआ कि अपने देश में न्योता खाने जाने की बात याद आ गई । आहार का नियमित समय नित्य का तो छ बजे होता था । मगर आज बहुत देर होगई थी । सभी बहुत भूखे थे । परोसनेवाले (Waiters—ये वैरिस्ट्रो के कुर्क होते हैं) जल्दी जल्दी परोसने पर भी सब जगह ठीक समय पर भोजन-सामग्री पहुँचाने में असमर्थ से हो रहे थे । एक एक किशती के बाद दस बारह मिनट अपेक्षा करनी पड़ती थी, और उस अवसर में बराबर बँड बजता था । भोज के बीच में बड़े दिन के साधारण नियम के अनुसार कर्म-कर्ता (Master Treasurer Lord Coleidge Lord Chief Justice of England) ने महारानी के टोस्ट (Toast) का प्रस्ताव किया । इसके लिए तत्वा-वधायक (Steward) महाशय ने कहा "Gentleman charge your glasses" अर्थात् महाशय गण, पात्र में मदिरा नाइए । इसके बाद सब लोग पान-पात्र हाथ में लेकर खड़े हुए । सबने एक स्वर से तीन बार "The Queen" "The Queen" "The Queen"

कह कर उसमें से जरा जरा सी शराब पी और फिर खाने बैठ गये । इसके घोड़ी देर बाद प्रिन्स को चुरट पीने की इच्छा हुई । तब पुरोहित महाशय ने नियमानुसार वन्यवाद (Last Grace) पढ कर नियम-रक्षा के लिए इस यज्ञ को समाप्त कर दिया । इसका कारण यही था कि इन दो प्रेसों के बीच में चुरट-तम्बाकू पीना नियमविरुद्ध है । वह वन्यवाद यह है—“We thank thee, O Lord for the food of which we have just partaken May it be for the nourishment of our bodies for Jesus Christ's sake, Amen” प्रिन्स के साथ साथ सबने चुरट जलाई । भोजन प्रायः समाप्त हो चुका था । शराब और फल-भोजन जारी था । इसी समय लार्ड कोलरिज ने खड़े होकर कहा—“Gentlemen, I give you, without preface and without expecting a reply, the one toast of ‘The Health of Master His Royal Highness the Prince of Wales’ तालियों की गडगडाहट के बाद फिर पानपात्र हाथ में लिये खड़े होकर “The Prince of Wales,” “The Prince of Wales,” “The Prince of Wales” कह कर सबने थोड़ी थोड़ी शराब पी । बहुतों ने प्रिन्स-सम्बन्धी एक मङ्गल गीत गाया और बैठ गये । अब प्रिन्स ने उठकर कहा—“Gentlemen, It was decided by our Treasurer that there should be only one toast and that no speeches were to be made, but I shall allow myself the privilege of having been for thirty years a member of this Inn, of proposing a toast which I know you will all receive with acclamation—it is that of The Health of our Treasurer, the Lord Chief Justice of England” अर्थात् मैं ३० साल से इस टेम्पल का एक मेम्बर हूँ और इसी स्वत्व से प्रस्ताव करने का अधिकारी हूँ ।

इस उक्ति के द्वारा यह भाव प्रकट हुआ कि मैं भी तुम मे से ए
हूँ । यह उदार प्रेमपूर्ण भाव प्रकाशित करने से इस समय विशेष प्रा
और उत्साह के साथ आनन्द-ध्वनि उठी । फिर खूब आनन्द-ध्वनि व
साथ लार्ड कोलरिज के समान के बाद सब लोग जब बैठ गये त
वह उत्तर देने के लिए खड़े हुए । उन्होंने कहा—

“ A great King, in former days, said, ‘ Put not your
trust in Princes’ (सबका हँसना और आनन्द-ध्वनि). I invited
his Royal Highness here upon the solemn undertaking that
no speeches were to be made, yet His Royal Highness
has forced upon me the duty of making one (खूब हँसी
और करतालि-ध्वनि). All I can say is that when I was upon
one occasion forced to make a speech, much against my
wish, a lady who sat next to me said, ‘ Never mind, you
will speak very late, everybody will be very tired, no-
body will in the least want to hear you or care what you
say, and when you have said that, you do not want to
make a speech, and then, and then, and then,— you can
sit down’ (सबका हँसना और करतालि-ध्वनि). That was
her advice, and I propose to follow it now.”

फिर खूब तालियाँ पिटोँ । कोलरिज साहब जब बैठ गये, तब
प्रेमपात्र (लविग-कप) चलने लगा । अर्थात् एक भारी चाँदी के
वर्तन में तरह तरह की शरावें मिला दी गई और प्रिंस आफ्
वेल्स से लेकर सबने उसमें से एक एक घूँट पिया । हर एक
ग्रैन्ड नाइट में इसी तरह प्रेम-प्याला सबके आगे फिरता है ।
जुनली के साल प्रिंस आफ वेल्स हमारे कालिज के अध्यक्ष थे ।

जब उस पद से वह अलग हुए, तब उन्होंने एक भारी चाँदी का वर्तन टेम्पल को भेंट किया। वही प्याला आज चल रहा था। रात को ११ बजे भोज समाप्त करके, अविराम आनन्दध्वनि में, दोनों ओर के आदमियों में से हर एक को सलाम करते करते, अपने दल सहित युवराज विदा हो गये। साधारण भोजन करनेवाले लोग इसके बाद भी बहुत देर तक बैठ कर शराब और चुरट पीते तथा बातचीत करते रहे।

फल-भोजन समाप्त होने पर मैं बैठ कर सोचने लगा कि घन्य हैं अंगरेज। आज देश के भावी सम्राट् ने पृथ्वी के हर एक हिस्से के आदमियों के साथ बैठ कर भोजन किया और आनन्द मनाया। आफ्रिका के घोर श्यामवर्ण हवशी, चीन-जापान के अधिवासी, भारत के हिन्दू-मुसलमान आदि ब्रिटिश साम्राज्य के भिन्न भिन्न भागों के गोरे और काले, उन्हीं के साथ निमन्त्रित ग्रीस देश के मन्त्री—यूरोप, आफ्रिका, अमेरिका, एशिया और आस्ट्रेलिया, इन पाँचों खण्डों के आदमी—स्वाधीन भाव से इंग्लैंड के प्रिन्स आफ् वेल्स के साथ प्रेमपूर्वक भोजन कर रहे हैं। इसी से कहते हैं कि “England is a free cosmopolitan country,” अर्थात् लन्दन केवल इंग्लैंड की राजधानी नहीं, सारी पृथ्वी की राजधानी है। यह सोचते सोचते मैंने विधाता को असत्य घन्यवाद दिये कि उन्होंने मुझ ऐसे नराधम पर ऐसी कृपा की कि मैं हजार अयोग्य होने पर भी इस सार्व-भौमिक प्रेम के दरवार में स्थान पा सका।

इस देश में गये बिना यहाँ की किसी बात का ठीक तत्त्व समझना बहुत ही कठिन है। वैरिस्टरी-भोज इसका एक खामा उदाहरण है। मैं जब देश में था और जब यहाँ आकर ‘डिनर’ खाया था, तब समझता था कि इस व्यवस्था की जब स्थापना हुई थी तब शायद

कोई इसका उद्देश्य रहा हो, लेकिन इस समय यह व्यर्थ है, इसको कोई उपयोगिता नहीं है। किन्तु क्रमशः मुझे देख पड़ा और राज-भोज में भी अच्छी तरह देखा कि इस तरह का अच्छा और महत् अनुष्ठान उठ जाने से भारी हानि के सिवा लाभ कुछ भी न होगा। जो लोग शिचा के माने, कुछ कितारों की रट कर परोचा समय उन विषयों को उगल देना ही समझते हैं, उनको समझाने की शक्ति और अवकाश मुझको नहीं है। इस आदमियों से आलापरिचय, आहार-व्यवहार के बिना मनुष्य को सच्ची शिचा मिलना असम्भव है। इस प्रकार के मेल-जोल से, परस्पर भाव-विनिमय के द्वारा, इस महान् उपयोगी भोज से जो लाभ होता है, वह और तरफ नहीं हो सकता। दो ही एक घंटे में भारी स्नेह हो जाता है और बहुत सी जानकारी हासिल होती है। परन्तु जो लोग वहाँ केवल जीभ का स्वाद लेने, पेट भरने या दिल-बहलाव के लिए जाते हैं, उनका ध्यान बात जुदी है। जिसकी जैसी भावना होती है, उसको वैसा ही फल मिलता है।

हर एक कालिज के अन्तर्गत एक पुस्तकालय और गिरजा है। केवल दो टेम्पलों का एक ही गिरजा है। क्योंकि जब दोनों कालेज अलग हुए, तो वह गिरजा बाँटा नहीं जा सका। टेम्पल-गिरजा अत्यन्त प्राचीन और मिडिल-टेम्पल-हॉल के तरह, या उससे भी अधिक, नगर का एक विशेष दृश्य समझा जा सकता है। इसका बाजा बहुत ही प्रसिद्ध है। इसी गिरजे में गोल्डस्मिथ गिरजा हुआ है।

एक गिरजे के बारे में बयान कर देने से सबका हाल मालूम हो जायगा। इसलिए सबका वर्णन यहाँ नहीं किया जाता। सबका

व्यवहार एक-सा है । पहले अर्ल लिंकन यहाँ रहते थे, इसलिए 'लिकन्स-इन' का यह नाम पडा है । 'ग्रेज इन' के सम्बन्ध में भी यही बात है । वह भी किसी समय लार्ड ग्रे की सम्पत्ति थी । लार्ड बेकन ग्रेज इनके एक बैरिस्टर और किसी समय उसके वेञ्चर भी थे । उनके हाथ का लगाया हुआ एक वृत्त आज भी वहाँ के बाग में विराजमान है । इन कालिजों में, जैसे परीक्षा-सम्बन्धी एक सार्टीफिकेट दिया जाता है वैसे, उपाधि पाने का कुछ चिह्न नहीं दिया जाता । विदेश-यात्रियों को पीछे से दाम देकर एक "निमन्त्रण" का निदर्शन-पत्र खरीदना होता है ।

लन्दन का जाडा । तबीयत ठीक न रहने से कुछ दिन समुद्रतट पर राम्सगेट (Ramsgate) नगर में रहने के बाद, सन् १८८१ के जनवरी महीने में, लन्दन में लौट आकर मैंने देखा कि सारे जलाशय बर्फ बन कर मिट्टी की तरह कडे बन गये हैं । लोग उनके ऊपर स्केटिंग (Skating) के द्वारा कसरत का मजा लूट रहे हैं । सब कहने लगे, ऐसा जाडा बहुत दिनों से नहीं हुआ । अक्टूबरों में, सन् ३५८ से लेकर अब तक की, जाडे की सूची, प्रकाशित होने लगी । उसमें देखा गया कि तब से सन् १८८८ तक, ४२ भयानक जाडे की फसलें इस देश में हुई हैं । उनमें सन् १८१३—१४ का जाडा बहुत कुछ इसी साल से मिलता-जुलता था । उस दफा भी पहले भयानक कुहरा पडा और बराबर कई रोज बना रहा था । उसी कुहरे में प्रिन्स रिजेन्ट राह भूल कर मुशफिल में पड गये थे । इस साल के जाडे में टेम्स के ऊपर मेला लगा था, छापाखाना स्थापित हुआ था और जाडे के सम्बन्ध की बहुत सी कवितायें आदि छप कर बिकी थीं । एक कविता की हूबहू नकल नीचे दी जाती है ।

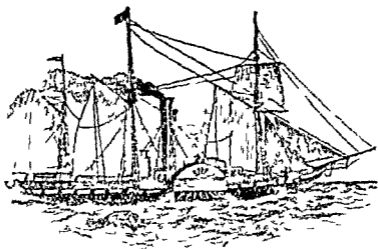
कोई इसका उद्देश्य रहा हो, लेकिन इस समय यह व्यर्थ है, इसमें कोई उपयोगिता नहीं है। किन्तु क्रमशः मुझे देख पड़ा और उत्तर राज-भोज में भी अच्छी तरह देखा कि इस तरह का अच्छा और महत् अनुष्ठान उठ जाने से भारी हानि के सिवा लाभ कुछ भी नहीं होगा। जो लोग शिक्षा के माने, कुछ किताबों को रट कर परीक्षा के समय उन विषयों को उगल देना ही समझते हैं, उनको समझाने की शक्ति और प्रवकाश मुझको नहीं है। दस आदमियों से आलाप-परिचय, आहार-व्यवहार के बिना मनुष्य को सच्ची शिक्षा मिलना असम्भव है। इस प्रकार के मेल-जोल से, परस्पर भाव-विनिमय के द्वारा, इस महान् उपयोगी भोज से जो लाभ होता है, वह और तरह नहीं हो सकता। दो ही एक घंटे में भारी स्नेह हो जाता है और बहुत सी जानकारी हासिल होती है। परन्तु जो लोग वहाँ केवल जीभ का स्वाद लेने, पेट भरने या दिल-बहुलाव के लिए जाते हैं, उनकी बात जुदी है। जिसकी जैसी भावना होती है, उसको वैसा ही फल मिलता है।

हर एक कालिज के अन्तर्गत एक पुस्तकालय और गिर्जा है। केवल दो टेम्पलों का एक ही गिर्जा है। क्योंकि जब दोनों कालिज अलग हुए, तो वह गिर्जा बाँटा नहीं जा सका। टेम्पल-गिर्जा अत्यन्त प्राचीन और सिडिल-टेम्पल-हॉल की तरह, या उससे भी अधिक, नगर का एक विशेष दृश्य समझा जाता है। इसका घाजा बहुत ही प्रसिद्ध है। इसी गिर्जे में गोल्डस्मिथ गढ़े हुए हैं।

एक गिर्जे के बारे में बयान कर देने से सबका हाल मालूम हो जायगा। इसलिए सबका वर्णन यहाँ नहीं किया जाता। सबका

व्यवहार एक-सा है । पहले अर्ल लिंकन यहाँ रहते थे, इसलिए 'लिकन्स-इन' का यह नाम पडा है । 'प्रेज इन' के सम्बन्ध मे भी यही बात है । वह भी किसी समय लार्ड ग्रे की सम्पत्ति थी । लार्ड वेकन प्रेज इनके एक वैरिस्टर और किसी समय उसके वेञ्चर भी थे । उनके हाथ का लगाया हुआ एक वृक्ष आज भी वहाँ के बाग मे विराजमान है । इन कालिजों मे, जैसे परीक्षा-सम्बन्धी एक सार्टीफिकेट दिया जाता है वैसे, उपाधि पाने का कुछ चिह्न नहीं दिया जाता । विदेश-यात्रियों को पीछे से दाम देकर एक "निमन्त्रण" का निदर्शन-पत्र खरीदना होता है ।

लन्दन का जाडा । तबीयत ठीक न रहने से कुछ दिन समुद्रतट पर राम्सगेट (Ramsgate) नगर मे रहने के बाद, सन् १८६१ के जनवरी महीने मे, लन्दन में लौट आकर मैंने देखा कि सारे जलाशय बर्फ बन कर मिट्टी की तरह कडे बन गये हैं । लोग उनके ऊपर स्केटिंग (Skating) के द्वारा कसरत का मजा लूट रहे हैं । सब कहने लगे, ऐसा जाडा बहुत दिनों से नहीं हुआ । अखबारों मे, सन् ३५६ से लेकर अब तक की, जाडे की सूची, प्रकाशित होने लगी । उसमें देखा गया कि तब से सन् १८८८ तक, ४२ भयानक जाडे की फसलें इस देश मे हुई हैं । उनमे सन् १८१३—१४ का जाडा बहुत कुछ इसी साल से मिलता-जुलता था । उस दफा भी पहले भयानक कुहरा पडा और बराबर कई रोज बना रहा था । उसी कुहरे मे प्रिन्स रिजेन्ट राह भूल कर मुशकिल मे पड गये थे । इस साल के जाडे मे टेम्स के ऊपर मेला लगा था, छापाखाना स्थापित हुआ था और जाडे के सम्बन्ध की बहुत सी कवितायें आदि छप कर बिकी थीं । एक कविता की हबहब नकल नीचे दी जाती है ।



Behold the River Thames is frozen o'er,
Which lately ships of mighty Burthen bore,
Now different arts and Pastimes here you see,
But **Printing** claims the Superiority

Printed to commemorate a remarkably
Severe Frost,

Which commenced December 27th, 1813 accompanied by an unusual **Thick Fog** that continued Eight Days and was succeeded by a tremendous **Fall of Snow**, which prevented all Communication with the Northern and Western Roads for several Days The Thames presented a complete **Field of Ice** between London and Blackfriars Bridges on Monday the 31st January 1814 A Fair is this day held and the whole space between the two Bridges covered with spectators

Printed at the **crow** and **constitution**,
near **Thames Street Stairs**
Blinkside, Southwook

This 4th Day of February, 1814

झीर भी दो बार, सन् १६८३-८४ झीर १७८८-८९ में, टेम्स नदी जम कर मैदान बन गई थी और उस पर मेला लगा था। दोनों

मर्तवा वहाँ भाग जला कर खाना पकाने का काम हुआ और प्रेस भी स्थापित हुआ ।

लन्दन का कुहरा । अक्सर नवम्बर महीने में थोड़े-बहुत कुहरे से लन्दन नगर घिरा रहता है । किन्तु सन् १८६१ के बड़े दिन के पहले जो एक सप्ताह से भी अधिक समय तक कुहरा छाया रहा था, वह बड़ा ही भयानक था । राह में दिन-रात रोशनी रहती थी त भी हाथ-मारे नहीं सूझता था । प्राकृतिक कुहरे के साथ मिल कर चिमनियो के धुएँ के ढेर ने लन्दन की जो दशा कर दी थी, उसे जिसने देखा है, वही उसकी भयानकता को जान सकता है । जाड़े की फसल में लन्दनवालों के दिन और रात एक-समान गुजरते हैं । सूर्यदेव के अस्तित्व का कोई चिह्न ही नहीं देख पड़ता । उसके ऊपर कुहरे का जोर अगर हुआ तो आफत ही हो जाती है । हृदय के भीतर जैसे ऊबासासी लग जाती है, और दम जैसे घुटने लगता है । बहुत लोगो का कहना है कि हर साल इस फसल में बहुत से लोग पृथ्वी की सब यन्त्रणाओं से छुटकारा पाने के लिए आत्महत्या तक कर डालते हैं । दिन-रात विपत्ति-शोक से भरी ऐसी दुनिया में ऐसा प्राकृतिक उत्पात होने से उसका असह्य हो जाना असम्भव नहीं है । एक दिन एक मित्र के साथ सलाह करके लन्दन छोड़ देने के विचार से अम्निवस (Omnibus) पर बैठ कर हम स्टेशन की ओर चले । एक मिनट में एक इच रिसकने के हिमाव से उसे चलते देख कर हमको अपना इरादा छोड़ देना पड़ा । ये कुहरे के कई दिन बड़े कष्ट से कटे । सन् १७८३ में, सारे यूरोप में, ऐसा ही कुहरा छा गया था ।

इम्पीरियल लेवी (Imperial Levee) । लन्दन से दूसरी बार महादेश दर्शन की यात्रा करने के पहले मैंने सोचा कि एक दफा बादशाही दरबार देख लूँ । बात देखने लायक थी, और लाभ यह था कि

अगर दरबार में दाखिल हो गया तो कन्टीनेन्ट (Continent) में भ्रमण के समय एक राजकीय-निदर्शन पास रहेगा । यह सोच कर मैं इण्डिया आफिस में गया । वहाँ के पोलिटिकल एडीकांग (Political Aid-de-camp) सर सीमर फिजजरल्ड (Sir Seymour Fitzgerald) ने कहा कि “लन्दन के रहनेवाले किसी इज्जतदार आदमी का लिखा हुआ एक मान-मर्यादा का सर्टीफिकेट लाइए” । मैंने भारतीय म्यूनिसिपल-कमिश्नरी आदि की सनदें दिखाई, और यह भी बतलाया कि मैं बैरिस्टर हूँ । तथापि उन्होने कहा कि “बैरिस्टरि पास होना कोई सनद नहीं है । उपाधि पाते तो वह मानी जा सकती, फिर किसी बात की दरकार न थी” । इसके बाद उन्होने कहा—“यद्यपि भारत के कागज-पत्रों से आप एक इज्जतदार आदमी जान पड़ते हैं, तथापि नियम का बन्धन बड़ा कड़ा होता है । यदि भविष्य में, आपके सम्बन्ध में, कोई विरुद्ध बात प्रकट हो, तो प्रेजेन्टेशन (Presentation) अर्थात् दाखिल करने का अधिकार सदा के लिए मेरे हाथ से जाता रहेगा । इसलिए इन बातों में खूब सावधानी से काम करना ही उचित है” ।

दरबार के दो दिन पहले यह बातचीत हुई । समय बहुत थोड़ा था । क्या करता, चारों ओर दौड़-धूप करके ऐसा एक सर्टीफिकेट हासिल कर फिर उनके पास पहुँचा । तब उन्होने पूछा कि “अभी तक आपको बैरिस्टर की उपाधि नहीं मिली । इस कारण अभी आपके नाम के साथ ‘एस्क्वायर’ शब्द नहीं लिखा जा सकता । इसलिए आपके नाम के पहले ‘मिस्टर’ लिखें या ‘बाबू’ ? आपके देश के बहुत लोग ‘बाबू’ शब्द पर आपत्ति करते हैं, इसी लिए आपसे पूछता हूँ” ।

मैंने उत्तर में कहा—“बाबू लिखने में मुझे कोई आपत्ति नहीं” । इसके बाद पोशाक के बारे में उन्होने उपदेश दिया कि “आप

इंग्लैंड की दरबारी पोशाक, या भारतीय पोशाक, जो चाहे उसे पहन सकते हैं । किन्तु दरबार को सार्वभौमिक बादशाही भाव देने के लिए, मेरी समझ में, भारतीय पोशाक पहनना ही ठीक होगा ” । मैंने भी देखा कि कोर्ट-डेस तैयार कराने का समय नहीं है । उसकी लागत भी जियादा होगी । किराये पर लाने में भी कम खर्च न पड़ेगा । मुझे भारतीय पोशाक पहनने में ही सुभावा है । मैं चटपट अपने एक पञ्जाबी दोस्त से रेशम का साफा और शाल का चोगा ले आया । नियत दिन में ठीक समय पर केवल कोट के बदले चोगा पहन कर और साफा बाँध कर दरबार को चला । वहाँ जाकर देखा, बाहर कई वेर्चें पडी थीं । कोई उन पर बैठा हुआ था, और कोई सड़ा हुआ अपेक्षा कर रहा था । मैं भी एक बेच के ऊपर बैठ गया । थोड़ी देर बाद बहुत से तमगे पहने हुए पञ्जाब के भूतपूर्व लाट एचीसन माहत्र ने शायद मुझे पञ्जाबी समझ कर, मेरे पास बैठ कर, यो वातचीत शुरू कर दी—

प्रश्न—तशरीफ हिन्दोस्तान से आया है ?

उत्तर—हाँ ।

प्रश्न—मिजाज अच्छा है ?

उत्तर—बहुत अच्छा है ।

प्रश्न—इंगलिस्तान कैसा देखते हैं ?

उत्तर—बहुत अच्छा ।

प्रश्न—आब-हवा अच्छी मालूम होती है ?

उत्तर—बहुत अच्छी ।

प्रश्न—लोग कैसे देखते हैं ?

उत्तर—बहुत अच्छे ।

अगर दरवार में दाखिल हो गया तो कन्टीनेन्ट (Continent) में भ्रमण के समय एक राजकीय-निदर्शन पास रहेगा । यह सोच कर मैं इण्डिया आफिस में गया । वहाँ के पोलिटिकल एडीकांग (Political Aid-de-camp) सर सीमर फिजजरल्ड (Sir Seymour Fitzgerald) ने कहा कि “लन्दन के रहनेवाले किसी इज्जतदार आदमी का लिखा हुआ एक मान-मर्यादा का सर्टीफिकेट लाइए” । मैंने भारतीय म्यूनिसिपल-कमिश्नरी आदि की सनदेँ दिखाई, और यह भी बतलाया कि मैं बैरिस्टर हूँ । तथापि उन्होंने कहा कि “बैरिस्टर पास होना कोई सनद नहीं है । उपाधि पाते तो वह मानी जा सकती, फिर किसी बात की दरकार न थी” । इसके बाद उन्होंने कहा—“यद्यपि भारत के कागज-पत्रों से आप एक इज्जतदार आदमी जान पड़ते हैं, तथापि नियम का बन्धन बड़ा कड़ा होता है । यदि भविष्य में, आपके सम्बन्ध में, कोई विरुद्ध बात प्रकट हो, तो प्रेजेन्टेशन (Presentation) अर्थात् दाखिल करने का अधिकार सदा के लिए मेरे हाथ से जाता रहेगा । इसलिए इन बातों में सब सावधानी से काम करना ही उचित है” ।

दरवार के दो दिन पहले यह बातचीत हुई । समय बहुत थोड़ा था । क्या करता, चारों ओर दौड़-धूप करके ऐसा एक सर्टीफिकेट हासिल कर फिर उनके पास पहुँचा । तब उन्होंने पूछा कि “अभी तक आपकी बैरिस्टर की उपाधि नहीं मिली । इस कारण अभी आपके नाम के साथ ‘एस्कायर’ शब्द नहीं लिखा जा सकता । इसलिए आपके नाम के पहले ‘मिस्टर’ लिखें या ‘बाबू’ ? आपके देश के बहुत लोग ‘बाबू’ शब्द पर आपत्ति करते हैं, इसी लिए आपसे पूछता हूँ” ।

मैंने उत्तर में कहा—“बाबू लिखने में मुझे कोई आपत्ति नहीं” ।

इसके बाद पोशाक के बारे में उन्होंने उपदेश दिया कि “आप

Lord Chamberlain's Office.



I hereby certify that the following Presentation took place at Her Majesty's Levee, on Friday the 5th of June, 1891 at St James's Palace

Babu _____

By

The Political Aide-de-camp to the Secretary of State for India

S PONSENBY FANE,

Comptroller

Lord Chamberlain's Office,

12th June, 1891

इसके बाद उन्होंने अपनी बातें कहना शुरू किया । कहा, “मैंने चालीस बरस हिन्दास्तान की खिदमत की है” ।

इसके उत्तर में मैंने कहा—“मैं आपका नाम बहुत दिनों से सुनता था, लेकिन कमनसुवी से मुलाकात का मौका कभी नहीं हुआ” ।

इतने ही में और एक आदमी बहुत से तमगें पहने दूसरी ओर आकर बैठ गये । शायद वह किसी प्रदेश के भूतपूर्व चीफ कमिश्नर होंगे । उन्होंने कहा—“मैंने ३५ बरस हिन्दास्तान की नौकरी की है” ।

इस तरह पुराने लाट आदि का आपस आप काले आदमी से बातचीत करना, बहुत लोगों को, आश्चर्य की बात मालूम होगी । पर नहीं, यह उस मिट्टी की तासीर है । इसके बाद यथासमय दरबार में उपस्थित हुआ । नाम पुकारा जाने पर दरबार-भवन के भीतर गया । बहुत से लोग एक इसी काम के लिए नियत कर्मचारी के साथ भवन देखने लगे । किन्तु मुझे यह सौभाग्य नहीं नसीब हुआ । दरबार में देखने की चीज थी “डिप्लोमाटिक सर्किल” (Diplomatic Circle), अर्थात् सिंहासन के सामने अनेक देशी दूतों की मण्डली । और सब बातें यहीं की लेवी की ऐसी थीं । अधिक यह हुआ कि निम्नलिखित एक सार्टीफिकेट मिला । इसकी पृथ्वी के सब राज-दरबारों में इज्जत होती है । अर्थात् इस सार्टीफिकेट के पास रहने से दुनिया के हर एक राजदरबार में आदमी जा सकता है । चुरा-छिपा कर अँगरेजों को निन्दा सभी करते हैं, लेकिन प्रकाश्य भाव से अँगरेजों को श्रेष्ठ समान भी देते हैं ।

Lord Chamberlain's Office.



I hereby certify that the following Presentation took place at Her Majesty's Levee, on Friday, the 5th of June 1891, at St James's Palace

Babu - - - - -

By

The Political Aide-de-camp to the Secretary of State for India

S PONSÖNBY FINE,

Comptroller

Lord Chamberlain's Office,

12th June, 1891

(With The Lord Chamberlain's Compliments)

लन्दन-माहात्म्य । यहाँ पहले धन और स्वास्थ्य की बात लिखना ही उचित है । इस बात को तो शायद बहुत लोग जानते हैं कि धन में लन्दन पृथ्वी भर में अन्वल नंबर है । यहाँ इतना सोना जमा है कि किसी समय कहीं भी इतना सोना नहीं जमा हुआ । चीफसाइड लन्दन का बड़ा बाजार है । वहाँ एक समय दो-तीन वर्ग हाथ जमीन के लिए दो खरीदारों में लागडॉट पड गई । एक खरीदार ने कहा—“मैं मोलदर क्या करूँ, जितनी जमीन है उस पर गिन्नियों बिछा दूँगा ”। यह सुन कर दूसरे ने उतनी दूर में गिन्नियों का ऊँचा ढेर लगाकर उस जमीन को खरीद लिया । प्राचीन तसवीरों और शौक के कुत्ते घोड़े वगैरह कभी कभी इतने दामों में बिक जाते हैं कि सुनकर आश्चर्य होता है । अगर कोई आदमी कोई चीज़ लन्दन में ले जाकर दो-एक ऐतिहासिक प्रमाणों के प्रयोग द्वारा यह समझा सके कि युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ में इस चीज का व्यवहार किया था, तो अवश्य बहुत बड़े मूल्य पर उस चीज को बेचकर वह धनी बन सकता है । और भी एक बात से मैं इस विषय को समझाने की चेष्टा करूँगा । गत बार जिस रात को पार्लियामेन्ट में यह निश्चित हुआ कि यह दल—मन्त्रिमण्डल—बदल जायगा, उसके सबेरे ही चुनाव के खर्च के लिए अनेक सभ्य-पद-प्रार्थियों ने मुफरिसल में नोट और नकद मिला कर दस लाख पाउण्ड भेजे थे । स्वास्थ्य के सम्बन्ध में शायद लन्दन की ऐसी जाँच और कहीं नहीं होती । इतना बड़ा शहर और इतनी धनी बस्ती होने पर भी स्वास्थ्य के विषय में लन्दन अनेक बड़े बड़े नगरों की अपेक्षा श्रेष्ठ है । वर्तमान समय में यहाँ की मृत्यु-संख्या हजार में आठ के हिसाब से है । किन्तु बहुत स्थानों में वह फी हजार इक्कीस के हिसाब से कम नहीं है । सारा यूरोप घूम आने पर अच्छी तरह मालूम होजाता है कि यहाँ के लोग कैसे तन्दुरुस्त और सुन्दर हैं । इंगलैंड के नर-

नारियो के मुखमण्डल पर जैसी स्वास्थ्य की एक झलक सी देख पड़ती है, वैसा तेज अन्यत्र नहीं देखा जाता। पैंतीस बरस की अँगरेज-रमणी और बीस बरस की अन्यदेशीय रमणी स्वास्थ्य में समान होगी वहाँकी हवा ऐसी अच्छी है कि वह सबको सदा सतेज बनाए रखती है। अत्यन्त शिथिल अवस्था से घर से बाहर निकलने पर मोराह की हवा में ऐसी स्फूर्ति देने की शक्ति है कि दस पग चलते ही सारी शिथिलता दूर हो जाती है। सुडौल, सतेज, सीधे अँगरेज गोरो के ऐसे सिपाही अन्यत्र कम देखने को मिलेंगे।

रोम की बढ़ती के समय जैसे लोग कहते थे कि सब मार्ग रोम की ही ओर हैं, वैसे ही वर्त्तमान समय में कहा जा सकता है कि सभ्य जगत् की सब श्रेणी के लोगों की दृष्टि लन्दन ही की ओर है। पृथ्वी की सब जातियों और सब धर्मों के लोग लन्दन में देखे जाते हैं। लन्दनवासी इस बात को अभिमान और गौरव की दृष्टि से देखते हैं कि वे लोग जाति और धर्म का खयाल न करके सबको समान भाव से स्वाधीन समझते और स्वदेशी विदेशी सबसे ज्ञान, धर्म सीखने और गुण ग्रहण करने के लिए सर्वदा तैयार हैं। महातीर्थ काशीधाम की तरह यहाँ भी अन्नपूर्णा विराजमान हैं। इतने गरीब शायद पृथ्वी में और कहीं न होंगे। परन्तु भूरा कोई नहीं रहता। रोज लाखों आदमी सबरे उठ कर यह नहीं कह सकते कि उम दिन वे क्या खाकर रहेंगे। लन्दनवासियों के वार्षिक खान-पान का हिसाब सुनकर पाठकों को आश्चर्य हुए बिना नहीं रहेगा। सुनिए— ६३००० बुशेल गेहूँ, ३७ लाख मन मक्खली, ८ लाख गऊ, ४० लाख सुअर भेंडे आदि, १ करोड़ मुर्गे वत्तक आदि। अण्डों की तो गिनती ही नहीं की जा सकती। एक बार केवल हिसाब लगाया गया था कि फ्रान्स के उपकूल से केवल दस लाख पावण्ड के अण्डे हर साल आते

हैं । फल और कन्द-मूल आदि की तादाद बतलाना तो असम्भव ही है । साल में १८ करोड़ बोतलें बियर शराब की और ५ करोड़ बोतलें अन्यान्य शराबों की खर्च होती हैं । लन्दनवासी लोग हर साल ३१ करोड़ मन कोयला खर्च करते हैं । भूमध्यसागर और अटलांटिक महासागर में खाने-पीने की चीजें लादे हुए अनेको जहाज अनेक देशों से लन्दन की ओर जाते हुए देख पड़ते हैं ।

इन नगरवासियों के लिए साठे सात सौ शराब की दूकानें और सत्रह सौ काफी पीने के अड्डे हैं । शराब की दूकानों से यहाँ की ऐसी कलवरिया न समझ लेना चाहिए । लन्दन में उन्हें पब्लिक हाउस (Public-house) कहते हैं । लोग संक्षेप में इन्हें 'पब' कहते हैं । ऐसे ही 'जनवरी' को 'जन', 'फ्रेड्रिकरी' को 'फेब', कैब्रियोलेट (Cabriolet) को 'कैब', 'अम्निबस' (Omnibus) को 'बस', इत्यादि अनेक शब्दों को उच्चारण-सुविधा के लिए सक्षिप्त बना लिया गया है । अँगरेज कहते हैं कि जीवन इतना सक्षिप्त है कि लम्बे शब्दों का उच्चारण करने का अवकाश नहीं ("Life is evidently too short for long words") इन सब शराबखानों या 'पबों' को एक एक राजमहल कहना भी अनुचित न होगा । इनका साज-सरञ्जाम असवाध वगैरह ऐसा साफ-सुथरा और कीमती है कि एक एक पब लगभग लाख पाउण्ड की सम्पत्ति होगा । मदिरा पीने का विरोधी दल इन शराबखानों को बन्द कराने की बहुत कुछ चेष्टा कर रहा है । लेकिन एक ओर दृष्टि डालने से जान पड़ता है कि अगर ये शराबखाने उठ जायें तो लन्दनवासियों को सचमुच बड़ा कष्ट हो । यहाँ फेबल शराब ही नहीं बिकती । अन्यान्य पीने की चीजें भी बिकती हैं, और जलपान का भी प्रबन्ध है । इसके सिवा शाम के घाढ़ या और फुर्सत के वक्त साधारण लोग यहाँ आकर बैठते हैं । इस

सर्द मुल्क में खुली जगह में खड़े होकर बातचीत करना असम्भव है। इस कारण राह में किसी इष्टमित्र से मुलाकात होने पर, उससे दो घड़ी बातचीत करने के स्थान ये ही हैं। इन अड़ो में भिन्न भिन्न श्रेणी के लोगों के बैठने की जगहें अलग अलग बनी हुई हैं, और उसी हिसाब से खाने-पीने की चीजों का मूल्य भी कमोवेश है। बेंचने का काम अनेक स्थानों में सुशील सुन्दर जवान औरतें ही करती हैं। परन्तु कहीं कुछ गड़बड़ नहीं होती। अंगरेजों के लिए यह कम गौरव की बात नहीं है।

हर साल लगभग ५०,००० के लन्दन की जन-संख्या बढ़ती जाती है। इस समय प्राय ६० लाख आदमी हैं। यहाँ जितने रोमन कैथलिक हैं, उतने उनके प्रधान स्थान रोम (Rome) नगर में नहीं हैं। जितने यहूदी यहाँ रहते हैं, उतने अपने आदि-प्रदेश पैलस्टाइन में नहीं हैं। जितने स्काच (Scotch) यहाँ हैं, उतने अपनी जन्म-भूमि स्काटलैंड के आबर्डीन (Aberdeen) नगर में नहीं हैं। जितने वेल्स (Welsh) यहाँ हैं, उतने वेल्स के प्रसिद्ध नगर कार्डिफ (Cardiff) नहीं हैं। जितने आयरिश यहाँ हैं, उतने आयरलैंड के अन्तर्गत बेलफास्ट (Belfast) नगर में खोजे नहीं मिलते।

स्वास शहर (City of London) १६०० बीघे जमीन में है। उस में हर रोज ८ लाख पैदल आदमी और ७७,००० से भी अधिक गाड़ियाँ आती और जाती हैं।

चेयरिंग-क्रास से ६।७ मील की चौहद्दी के भीतर ढाई सौ मील रेल-पथ चला गया है, जिसमें १२ प्रधान और साठ साधारण स्टेशन हैं। बड़े स्टेशनों में Midland Railway Terminus, St Pancras Station की इमारत सबसे श्रेष्ठ है। इसकी पेसी ७०० फुट लम्बी और २४० फुट चौड़ी इकहरी छत शायद ही और कहीं हो। रेल-कम्पनियों

में London and North-Western Railway Company सब श्रेष्ठ है। इसकी पूँजी १२ करोड़ पाउण्ड के लगभग है, और आमदनी १ घंटे १३०० पाउण्ड से भी अधिक है। इसके २३०० एंजिन हैं। ६०,०० आदमी इसमें काम करते हैं। ११ लाख से ऊपर यात्री नित्य इस यात्रा करते हैं। यह कम्पनी अपनी इमारत, पुल, रेल, कल गाड़ यहाँ तक कि अस्पताल का जरूरी सामान तक अपने ही कारखाने में बना लेती है। इस कम्पनी को राह की मरम्मत के लिए रोज ढाई सौ पाउण्ड खर्च करने पड़ते हैं। प्राय तीन लाख पाउण्ड अन्यान्य स्थानों की मरम्मत आदि में खर्च होता है। साल में नौकर चाकरों की तनख्वाह देने में, सवा चार लाख पाउण्ड खर्च होते हैं। एक तीसरे दर्जे की गाड़ी बनने में ६०० पाउण्ड और प्रथम श्रेणी की गाड़ी में ८०० पाउण्ड खर्च होते हैं। सब बातों को देखते यह रेल कम्पनी पृथ्वी भर में बड़ी है।

रेल के सिवा लोगों के जाने-आने के लिए ६०० के लगभग अग्नि-बस (Omnibus) और ७०० ट्रामगाड़ियाँ शहर के भीतर रोज चला करती हैं। साफ दिन में, अग्निबस पर बैठकर लन्दन की सड़कों का दृश्य देखने में बड़ा ही मनोहर और शिक्षाप्रद देखा पड़ता है। अग्निबस के चलानेवाले सदा बैठे-बैठे काम करने के कारण बड़े मोटे शरीर के होते हैं। वे मसखरी करने में भी बड़े चालाक होते हैं। दो गाड़ीवानों में झगडा होने पर उनमें ऐसी मर्ज की बातें होती हैं कि दम भर खड़े होकर सुनने को जी चाहता है। १४,००० किराये की गाड़ियाँ भी हैं, जिनको कैब (Cab) कहते हैं। दो पहिये की कैब को हसम (Hansom) कहते हैं। डिजरेली इन्हें लन्दन का गण्डोला (Gondola) कहते थे। वर्तमान शताब्दी के प्रारम्भ में हसम नामक आदमी ने इन्हे प्रचलित किया था। इनके हाँकनेवाले

गाडीवान सप्ताह में एक पाउण्ड के लगभग पैदा करते हैं। गाडियाँ इनकी अपनी नहीं होतीं। ये लोग गाडियाँ, उनके मालिकों से, किराय पर ल आते हैं। आफिस के समय बैंकघर में जितने आदमी आते हैं, वे किराये के अलावा ६ पेनी बकसीस भी देते हैं। इस कारण इस तरह की सवारियों पर इन गाडीवानों की विशेष श्रद्धा देखी जाती है। जनानी सवारियों से ये लोग बहुत नाराज रहते हैं। क्योंकि वे बकसीस देने की कौन कहे, ठीक भाडा देने में भी बहुत हिचिर-मिचिर करती हैं। जहाँ तक होता है, उसमें भी कमी कराने की चेष्टा करती हैं। ये गाडीवान अक्सर अत्यन्त शिष्ट, शान्त, चालाक, सभ्य, सच्चरित्र और परिश्रमी आदमी होते हैं। बहुत लोगों को देखने-भालने का मौका मिलने के कारण इनमें से बहुत से दिखगीवाजो में या आदमी पहचानने में पूरे सिद्धहस्त हैं। विलायती बरसाती कोट को 'मैकिन्टश' कहते हैं। एक दफे स्काटलैंड के प्रसिद्ध मैकिन्टश घराने के एक प्रधान पुरुष लन्दन में आये। उन्होंने कैन के गाडीवान को भाडा देने समय अनेक उज्र और आपत्तियाँ करके धमकाते हुए कहा—“मुझे नहीं पहचानते ? मैं साधारण आदमी नहीं, अमुक मैकिन्टश हूँ”। गाडीवान ने तुरन्त जवाब दिया—“आप मैकिन्टश हैं या चाहे जो हैं, मुझे इससे क्या ? मैं अपना भाडा चाहता हूँ”। इन गाडीवानों को लन्दन के पते-ठिकाने जानने के सम्बन्ध में कठिन परीक्षा देकर पास होना पडता है। इस कारण केवल रास्ता और नम्बर बतला देने से ही ये आपको ठीक जगह पर पहुँचा देंगे। ये भाडे की गाडियाँ और इनके घोड़े, कलरुत्ते की बहुत सी घर की गाडियों और घोड़ों से अच्छे, कीमती और सुन्दर हैं। लन्दन में कुछ भी कुत्सित, कदर्य, चीण नहीं देखा जाता।

लन्दन के ऊपरी हिस्से में ये कारखाने हैं। इनके सिवा जर्मन

के नीचे जो कुछ है उसे देख कर बुद्धि चकरा जाती है । लन्दन के एक विशेष ग्राम में सड़क के नीचे एक रेलवे है । उसके नीचे शहर का भारी नाला है । उसके बाद ६३ फुट नीचे विजली की रेल चलती है, और यह रेल जिस “मध्य लन्दन” रेल से जाकर मिली है वह ८० फुट नीचे है ।

नित्य के खेल-तमाशे और दिलवहलाव के स्थान भी यहाँ कम नहीं हैं । ५० तो थियेटर हैं, और म्यूजिक-हॉल (Music Hall) तथा कन्सर्ट-रूम (Concert Rooms, &c) आदि ४०० हैं । म्यूजिक हॉलों में अनेक हँसी-खेल के तमाशे और कभी कभी अनेक प्रकार के अद्भुत दृश्य दिखलाये जाते हैं । इन स्थानों में यूरोप के दोनो भोम—सामसन और सैण्डो (Samson and Sandow)—ने लोहे की ज़ज़ीरो को अनायास हाथ से तोड़ कर हम लोगों को चकित कर दिया था ।

चीनादैत्य चाङ्ग (Chinese Giant Chang) । जिसे मैं पहले कलकत्ते में एक बार देख चुका था, वह भी यहाँ एक डेढ़ हाथ के बौने के साथ दिखलाया गया । किसी म्यूजिक-हॉल में एक दफ़ा मैंने लिस्का (Elizabeth Lyska) नाम की एक रूस देश की बालिका को देखा था । उसकी अवस्था उस समय केवल बारह बरस की थी । लेकिन वह ६ फुट ८ इंच लम्बी और चौड़ाई में उससे भी अधिक थी । तब तक वह दो महीने में एक इंच के हिसाब से बढ़ रही थी । वह देह की मुट्ठी के माफिक भोजन भी करती थी । इन सब स्थानों की स्त्रियों की पोशाक-सम्बन्धी रुचि परिमार्जित रखने के लिए बीच-बीच में पूर्वोक्त सुनीति-सरक्षिणी सभा की महिलायें इन्हें समझाया-बुझाया भी करती हैं । इन स्थानों में घुरट, शराब आदि पीने की व्यवस्था प्रचलित होने के कारण तीन लाख के लगभग नर-नारी नित्य शाम के बाद आकर दो घंटी

समय बिता जाते हैं । यहाँ के नाचने-गानेवाले मर्द और औरतें अच्छी रकम पैदा कर लेती हैं । ऐसा भी होता है कि एक ही रात का दस-दस जगह ये नाचते और गाते हैं । कोई नया गाना अच्छी तरह गा-सकने से गानेवाले का बड़ा नाम होता है । परस्पर की लागडाँट से इन लोगों की तनख्वाह भी धीरे धीरे बढ़ जाती है । जहाँ ऐसे नामी गाने-नाचनेवाले जिस दिन खड़े होते हैं वहाँ से उस दिन, स्थाना-भाव के कारण, कितने ही श्रोताओं को मन मार कर लोट जाना पड़ता है । मेरे सामने कालिन्स (Lottie Collins) नाम की एक महिला के “ता-रा-रा-बूम-दि-ये” (Ta-ra ra boom de-ay) नामक गाने के यश के सम्बन्ध में ऐसा हुआ था कि अन्त को अमे-रिका तक वह इसी एक गाने को सुनाने के लिए गई । कुछ दिन तक उसे मासिक पाँच सात सौ पाउण्ड की आमदनी होती रही । एक बार लन्दन में इसकी मौत का भूठा समाचार फैल जाने से भयानक गड-बड मच गई थी । अखबारों में प्रकाशित हुआ था कि देश के आध प्रसिद्ध आदमियों के न रहने पर भी ऐसी गडबड नहीं हो सकती । हमारे समय में, गानेवालियों में मैडम पाटी (Madame Patti) सबसे श्रेष्ठ थी । सुना जाता है कि वह एक घटे का मेहनताना चार सौ गिन्नियों लेती थी । मैंने केवल एक दफा अल्बर्ट हाल में उसका गाना सुना । उसका गला महीन तेज और भीठा था । कुछ दिन हुए, वह मर गई । उसने बहुत सा रुपया पैदा किया, और उसे दोन दुखियों की सहायता में जी खोल कर खर्च भी किया । इस स्त्री का गुण और स्वभाव, दोनों, धन्य थे ।

थियेटर आदि मनोरञ्जक स्थानों के सिवा ‘शीशमहल’ की व्यवस्था के ढंग के अनेक खेल तमाश के स्थान हैं । यथा—रायल एकोएरियम (Royal Aquarium), एग्रीकल्चरल हाल (Agricuiltu-

ral Hall), ओलम्पिया (Olympia) आदि । पहले के स्थान में घर भीतर एक जलाशय है, उममे तैरने का तमाशा दिखाया जाता है । डाक्टन नामक एक आदमी एक दफे होवर की प्रणाली को तैरते तैर पार हुआ था । उसने यहाँ आकर अपने तैरने के कायदे हमको दिखा लाये थे । इसके सिवा रोज दस बजे से इस भवन के कई हिस्सों अनेक तरह की वैज्ञानिक प्रक्रियाओं के तमाशे दिखलाये जाते हैं । एक दफा यहाँ एक छोटी सी मच्छड की गाडी (Flea) देख कर मैं सजा में आ गया था । दो मच्छड गाडी खींच रहे और एक मच्छड हाँ रहा, ऐसी एक अनुवीचणिक (Microscopic) गाडी बनाई गई थी । तीनों मच्छड ऐसे सिखाये हुए थे कि ठीक घोडे और आदमी का ऐसा काम कर रहे थे । यह तमाशा मैग्निफाइंग-शीशे (Magnifying glass) के बिना अच्छी तरह नहीं देखा जा सकता था । एक वैज्ञानिक पुरुष (Phienologist) इस जगह एक दफा छूकर मस्तक की परीचा कर लेते और उस आदमी की प्रकृति के बारे में बतला देते थे । बहुत कहते हैं और मैंने भी देखा कि उनकी बातें—(अर्थात् परीचा-फल)—अक्सर ठीक उतरती हैं । दूसरे स्थान में मिलिटरी टूर्नामेन्ट (Military Tournament) आदि हुआ करते हैं । ओलम्पिया को एक मैदान कह सकते हैं । यहाँ जो नुमायशे होती हैं वे भी अद्भुत होती हैं । ओलम्पिया का मैदान बहुत बड़ा है । उसके एक आदमी ने “The Colossal Hall of the world's greatest Metropolis” कहा था । यहीं पर विख्यात प्रदर्शक अद्भुत कम मि० बार्नेस (P I Barnum) ने अपनी प्रदर्शनी दिखलाई थी । यह प्रदर्शनी बहुत भारी थी । लन्दन-निवासियों ने इससे पहले ऐसी भारी नुमाइश नहीं देखी थी । चारों ओर इतने जानवरों के खेल एक साथ दिखलाये जाते थे कि देखनेवाला हैरान हो जाता था । वह किस

किसको और कहाँ तक देखे ? सिंह और बाघ की गाड़ी तो थी ही । उसके सिवा एक सौ से ऊपर छोटे-बड़े जानवरों के विचित्र तमाशे दिखाए जाते थे । इनके सिवा और कई अति अद्भुत दृश्य इस प्रदर्शनी के अन्तर्गत थे । जैसे—मेक्सिको के आदिम निवासी लुप्तप्राय अजटेक (Aztecs of Mexico) जाति के कृष्णवर्ण स्त्री पुरुष । पुरुष पीने तीन फुट और स्त्री ढाई फुट लम्बी थी । बाल घूँघरवाले थे । चेहरा देखने से जान पड़ता था कि उनका मस्तिष्क विकास-रहित है, मस्तिष्क की गदन भी अच्छी नहीं है । इसके सिवा वे हाथ-पैर के, बहुत ही स्थूल, बहुत ही सूक्ष्म या चीण, सुन्दर दाढ़ी-मूँछोंवाली स्त्री, निपट बौना आदमी आदि ईश्वर की विचित्र लीलायें यहाँ देखने को मिलती हैं । यहाँ जम्बो नाम के एक भारी हाथी की लाश एक जगह पर जिन्दा की तरह खड़ी हुई है । यह अमेरिका के रेलवे इंजन के साथ लड़ कर घायल हुआ और मर गया था । यह पहले लन्दन की पशुशाला में था । बार्नम ने इसे २००० पाउण्ड में खरीद लिया और अमेरिका ले गया । यह सब दिखाने के बाद "सम्राट् नीरो (Nero) के द्वारा रोमनगर-विध्वंस" का अभिनय दिखाया गया । अभिनय पाँच अङ्कों में समाप्त हुआ । अन्त को कृस्तानी धर्म के उदय का बड़ा सुन्दर दृश्य देखने को मिला । इस अभिनय में ६०० पुरुष, ५०० स्त्रियाँ और इससे भी अधिक हाथी-घोड़े रङ्गमञ्च पर आते हैं । इसी से शायद पाठकगण समझ गये होंगे कि ओलिम्पिया कितनी बड़ी जगह है । वहाँ १५००० दर्शकों के बैठने की जगह है और इतना ही बड़ा 'स्टेज' है । यह अभिनय किराल्फी (Imie Knolly) नामक एक इटलियन कारीगर ने सजा कर बार्नम की प्रदर्शनी में रक्खा है । बार्नम की इस नुमाइश में ६ लाख पाउण्ड की लागत आई है और उसका रोजाना खर्च १३०० पाउण्ड है । बार्नम ने ४२ बरस यह काम किया । इस बीच में उन्होंने

१० करोड से ऊपर टिकट बेचे । लन्दन का राज-परिवार दो दफे प्रकाश्य रूप से आकर देख गया था और गुप्त रीति से सर्व-साधारण के साथ तो राजवराने के लोग अक्सर देख जाते थे । लन्दन मे अनुपस्थित रहने के कारण केवल महारानी विक्टोरिया इस प्रदर्शनी को नहीं देख सकीं । इसके लिए बार्नम से और कुछ दिन लन्दन में रहने का अनुरोध किया गया, पर उन्होने ठहरने मे अपने को असमर्थ बतलाया । उक्त शिल्पी ने पहले साल ओलिम्पिया मे प्रसिद्ध जलमय नगर वेनिस की हूबहू नकल दिखलाई थी । वैसा ही पानी, गण्डोला, माँझो, नगर, बाजार, मकान, होटल, पुल, दूकान आदि सब दिखलाया गया था । मानो वेनिस नगर लन्दन मे ले आया गया था । जमीन में कई अभिनयो और जल मे रंगविरंगी सुसज्जित नौकाओं के द्वारा वेनिस के उत्सव आदि वसी देश के ढंग से दिखलाये जाने से यह तमाशा सर्वाङ्ग-सम्पन्न हो गया था । इसके पहले मैं वेनिस नगर को प्रत्यक्ष देख आया था । इस कारण साधारण दर्शको की अपेक्षा मुझे अधिक आनन्द मिला ।

और एक तरह का तमाशा लन्दन में देखा । हाइड पार्क मे अक्सर कुछ लोग एक नई गढी हुई मनोहर कहानी सुनाया करते हैं और सुननेवालो का मनोरञ्जन करके उनसे कुछ पैदा कर लेते हैं । शनिवार को शाम के बाद सडक के किनारे भी इस तरह लोगो को कुछ पैदा कर लेते देखा जाता है । कोई कहानी और कोई प्रसिद्ध कवि की कोई सुन्दर रचना सुना कर लोगो का मुश करता और उनसे पैसे पाता है । इसके सिवा फुटपाथ के ऊपर अनेक रंग की मिट्टियों से तसवीरें बना कर भी गरीब कारीगर दो पैसे पैदा कर लेते हैं । यह सब देख-सुन कर हमको जानना चाहिए कि शिचा पर साधारण लोगो का अनुराग बढ़ाने के उद्देश्य से ही लोग इस प्रकार का उत्साह-दान किया करते हैं । कभी कभी शाम के बाद निर्मल रात्रि

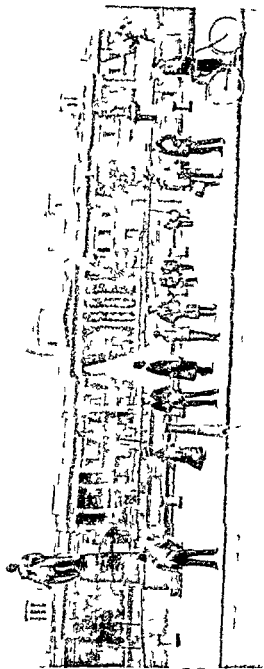
को फुटपाथ के ऊपर देखा जाता है कि एक आदमी एक भारी दूरवीन खडो करके खड़ा हुआ है । रास्ते चलनेवाले लोग एक पेनी उसे देकर एक दफे आकाशमण्डल का निरीक्षण करते और चले जाते हैं । रास्ते की आटोमेटिक (Automatic) कलें दूकानदारी के लिए बुरी नहीं हैं । कल में एक जगह छेद है, वहाँ एक पेनी डाल देने से, दूसरे छेद से, उस कल के भीतर से, चुरट दियासलाई का बक्स, एसेस आदि चीजें बाहर निकल आती हैं । ऐसी कलों में एक पेनी डाल देने से आर्यों की परीचा या शरीर का वजन भी कराया जा सकता है ।

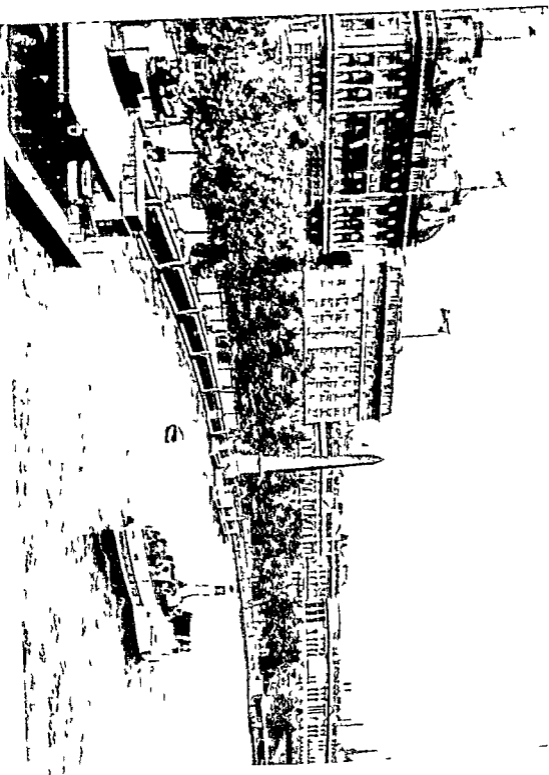
इन वर्णन किये हुए हजारों खेल तमाशों के अलावा गर्भियों के लिए नियमित रूप से दो नये ढंग की नुमाइशें खोली जाती हैं । सन् १८६० की ऐसी ही सामरिक प्रदर्शनी (Royal Military Exhibition) में युद्धसज्जा, अस्त्र-शस्त्र, नकली अस्पताल आदि असंख्य चीजे दिखलाई गई थीं । उनमें से कुछ का उल्लेख यहाँ पर किया जाता है । टीपू सुल्तान की पीतल की तोप, तम्बू, तलवार और हौदा, भरतपुर का छुरा, ढाल और तलवार, सिपाहीयुद्ध की प्रसिद्ध भाँसी की रानी के हाथ का कवच, सम्राट् जहाँगीर की तलवार, नादिरशाह की तलवार, दिल्ली के अन्तिम सम्राट् की ढाल और तलवार, सन् १८१७ की सीता-वर्दी के युद्ध में जीता हुआ भारतवर्ष का महाराष्ट्र-राजदण्ड, अवध की राज-तलवार, सन् १८५७ में लखनऊ घेरने के समय बाहर से कलम (Quill) में भेजा गया, ग्रीक हफों में लिखा हुआ, अँगरेजी पत्र, उसी समय लखनऊ की भयानक अवस्था का वर्णन करके वहाँ के सेनापति ने इलाहाबाद में हावलाक साहब को जो लिखा था वह पत्र, धिरी हुई पल्टन की आर्बर बुक, जो स्याही न होने से पानी में बाह्य घोल कर लिखी जाती थी, प्रसिद्ध

ताँतिया टोपी की पथरकला बन्दूक, ड्यूक आफ् वेलिंगटन की पोशाक और वाटर्लू के मैदान में बाँधी गई उनकी तलवार, दूरबीन और फील्ड-ग्लास (Field glass) । यह प्रदर्शनी जहाँ स्थापित हुई थी वहाँ सन् १८४६ में चिलियानवाला के युद्ध का एक स्मारक-स्तम्भ खड़ा किया गया था । वह भी प्रदर्शनी के अन्तर्गत कर लिया गया था । इसके प्रवेशद्वार के ऊपर लिखा हुआ था—“It is on the Navy, under the good Providence of God, that our Wealth, Property and Peace depend” अवश्य यहाँ पर बहुत से तमाशे दिखाये गये थे, क्योंकि अँगरेजों की बहादुरी समुद्र में ही सबसे बढ़ कर है । युद्ध या व्यापार, किसी ओर से, कोई अँगरेजों को नहीं पा सकता । सन् १८६० में सारे साम्राज्य के व्यापार की कोमत १२० करोड़ पाउण्ड थी । पृथ्वी के आधे से भी अधिक वाणिज्य के जहाजों पर अँगरेजों की पताका फहराती है । इस प्रदर्शनी में आर्कटिक (Arctic) प्रदेश की हूबहू नक़ल देखकर भारतेश्वरी विक्टोरिया तक बहुत खुश हुई र्था । यहीं मेरे मन में उत्तर-अन्तरीप की यात्रा की इच्छा पैदा हुई थी । इस स्थान के अन्तर्गत जलाशय में सन्ध्या के बाद टारपीडो (Torpedo) का कला-कौशल दिखलाया जाता था ।

सन् १८६० में आफ्रिका-सम्बन्धी एक नई प्रदर्शनी स्थापित हुई थी । महात्मा स्टानली के द्वारा अमीन पाशा का उद्धार होने के बाद इस प्रदर्शनी की सृष्टि हुई, इसी से इसका नाम स्टानली प्रदर्शनी (Stanley and African Exhibition) रक्खा गया । यहाँ उक्त अन्ध-कारपूर्ण महादेश की अनेक बातों का ज्ञान, प्रत्यक्ष देख कर, प्राप्त किया जा सकता है । समय बड़ा भारी है । केवल दृष्टि दौड़ा कर देखने में भी दो तीन घंटे से कम समय नहीं लग सकता ।

खार्तूम से भेजे हुए महात्मा गार्डन के कई टेलीग्राम यहाँ हैं ।





डाकूर लिविंगस्टन की भी अनेक चीजें यहाँ हैं । इसक आफ्रिका के जङ्गल, गाँव, गुलामों का रोजगार और उसके कारखाने, सिद्धों के रहने के स्थान आदि बहुत सी बातों की हूबहू नक़ल यहाँ देखने को मिली । ये सब चीजें ऐसे सजीव भाव से सजाई गई थीं कि अचानक देखने से असली का भ्रम होता था । एक मन बारह सेर भारी और नव फुट लम्बा एक हाथीदाँत यहाँ रक्खा है । इससे अच्छा हाथीदाँत शायद दुनिया में और कहीं न होगा । मध्य आफ्रिका की धीनी-जाति के दो बालक प्रदर्शनी के भीतर खेलते घूम रहे थे । देखने में वे बड़े ही मनोहर थे ।

व्यक्तिगत स्वाधीनता के सम्बन्ध में पृथ्वी पर ऐसी और कोई जाति नहीं है, और कभी नहीं हुई, जो जवान की बात और हाथ के लिखे के ऊपर कभी बाधा न डालती हो । जब तक तुम्हारी बात से प्रत्यक्ष में किसी को बेचैनी या किसी का सुखान नहों होता तब तक तुमको कोई नहीं रोकेंगा—तुम जो चाहे कह सकते हो, जो चाहे लिख कर प्रकाशित कर सकते हो । नित्य, खास कर रविवार को, हाइडपार्क में कितने ही वक्ता खड़े होकर राजा, मन्त्री, राजकर्मचारी आदि के विरुद्ध जो चाहत हैं, कहते हैं । पुलिस के लोग तक खड़े खड़े सुनते हैं, पर कोई कुछ नहीं कहता । ऐसी वक्तृताओं से कोई कोई रुपया भी कमा लेते हैं । कभी कभी खूब कड़े शब्दों में आलोचना करके श्रोता लोगों के पास घूम आते हैं और श्रोता लोगों से उन्हें पाँच सात शिल्लिंग मिल जाते हैं । इसके सिवा सभा-समितियों में इस तरह की न-जानें कितनी वक्तृतायें हुआ करती हैं । किन्तु राज-पक्ष का कोई भी आदमी उधर ध्यान नहीं देता । उदाहरण-स्वरूप, लन्दन में मुद्रित, सन् १८८२ की ७ वीं अप्रैल के ट्युन-नामक साप्ताहिक पत्र को देख लीजिए । उसके एक अंश में लिखा था कि 'भयानक शीत के कारण

राजा, राज-परिवार और प्रधान मन्त्री का इस तरह विदेश में जाकर रहना उनका कर्त्तव्य नहीं है । इससे ऐसी घटना का होना असम्भव नहीं है कि वे किसी दिन लौट कर देखेंगे कि उनके लिए देश का द्वार बन्द है ”—इत्यादि । अँगरेजी की नकल नीचे दी जाती है ।

“ Far be it from me to suggest any traitorous thoughts, but with the Sovereign, the Heir Apparent, and his Heir, together with almost every member of the Ruling House, besides the Prime Minister, absent upon the Continent a tempting opportunity offers itself for the Revolutionary element in our midst to attempt to proclaim a Republic in Great Britain. Some day it might conceivably happen that so hazardous an experiment should prove too tempting, and it is within the bounds of possibility in such an event that our hereditary rulers might then find the British ports closed against them on their return.
Truth—7th April, 1892

कोई इन बातों को सुन कर विचलित नहीं हुआ, किसी ने कुछ जाँच-परताल नहीं की । यह बात अवश्य है कि बात पागलों की ऐसी है । फिर ब्रिटिश-सिंह इन बातों पर ध्यान क्यों दे ? किन्तु यहाँ पर आलोचना का विषय है राजा का स्वभाव । राजशक्ति की ऐसी राग-द्वेष-शून्य निर्भय उदारता, प्रजावत्सलता, धैर्य, समता आदि किसी युग में कहीं नहीं देखी गई । इतिहास इस बात का साक्षी है । वर्तमान समय में अन्य देशों की बात ही नहीं है, फ्रान्स और अमेरिका, जो खूब स्वाधीनता प्रेम की डींग मारते हैं, वे प्रजा-परतन्त्र होकर भी प्रजा को सामयिक प्रधान शक्ति के बहुत कुछ अधीन में रखते हैं । किसी की मजाल नहीं जो पदाभिपिक्त प्रेसीडेन्ट की कार्यप्रणाली की तीव्र आलोचना करके कुछ कहे या लिखे । पूर्व समय की बात जाने दीजिए, भारत के आधुनिक छोटे राजों के राज्य में ऐसी बात कह कर कोई अपनी जान नहीं बचा सकता । ऐसी दया कभी किसी राजा के राज्य में नहीं देखी गई । जो राजशक्ति प्रजा को मुक्तहस्त

होकर ऐसा स्वाधीन मत प्रकट करने का अधिकार दे सकती है, उसके चरणों में ससार कोटि कोटि प्रणाम करेगा । यह देखकर भी यदि हम पागलों की तरह “स्वत्व दो, स्वत्व दो” की पुकार दिन-रात राजा के पास करे तो सचमुच ही हम बड़े नीच हैं । बड़े सौभाग्यो से हमको ऐसी कृपालु राजशक्ति का आश्रय मिला है । हमारा इस समय एक यही कर्त्तव्य है कि हम अपने को लायक बनावें । उसके बाद राजा आप ही समझ-बूझ कर क्रमशः हमें सब हक देकर सुखी बनावेगा । अनेक रचणशील दल के लोगो के मुख से भी मैंने सुना है कि “हमारे अधीनस्थ देशों में जो जब सम्पूर्ण रूप से योग्य होगा, हम उसी घड़ी आनन्दपूर्वक प्रेमालिङ्गन करके बालिग लडके की तरह उसके हाथ में उसका सब भार दे देंगे । ‘असहाय अवस्था से तुमको मनुष्य बनाया है, अब तुम समर्थ हुए हो, हमको फुरसत देकर तुम अपना भार अपने हाथ में लो,’ यही हमारे हृदय की बात है । धवराभ्रो नहीं— अपेक्षा करो” ।

वास्तव में हम लोगो ने अनेक उपद्रवों से बच कर, “रिसीवर” के हाथ में सम्पत्ति देकर, बेखटके खा पीकर निश्चिन्त भाव से जिन्दगी बिताने का जैसा अवसर पाया है, वैसा अवसर घोड़े भाग्य से नहीं हाथ आता । अब हमारा कर्त्तव्य यह है कि इन अंगरेजों के छत्र की छाया में रह कर अपने दिन फेर लें । जिसमें, इनकी अधीनता में स्वच्छन्दता के साथ शिचा लाभ करके किसी समय इनके सारे सद्गुणों के अधिकारी होकर जगत् की उन्नत जातियों में गिने जा सकें । हमको इसमें अपना गौरव समझना चाहिए कि ऐसे प्रबल प्रतापी और अभूत-पूर्व उदारता के आदर्श-स्थल ब्रिटिश-साम्राज्य का अशक कह कर अपना परिचय देने का अधिकार विधाता ने हमको दिया है । धन्य है वर्त्तमान राजशक्ति की प्रजावत्सलता । धन्य है उसकी उन्मुक्त उदार प्रकृति ।

लन्दन की दरिद्रता । यहाँ आकर जिनके निकट मैंने लन्दन की समृद्धि का उल्लेख किया उनमें से किसी किसी ने उसे हीन करने के इरादे से कहा—“लन्दन में भयानक दरिद्रता भी है” । दोष खोजने का क्या प्रयोजन है ? बुरी बात को लेकर तो हमारा कोई लाभ नहीं है । अच्छी बात को जान कर अच्छे होने की चेष्टा से ही लाभ है । इसमें सन्देह नहीं कि लन्दन में अनेक दरिद्र लोग हैं, पर कहाँ नहीं हैं ? “सर्वत्र त्रिविधा लोका उत्तमाधममध्यमा” । जैसा बड़ा शहर है, जैसी वहाँ लोक-सख्या है, उतनी ही दरिद्रता का रहना अस्वाभाविक नहीं । इसके अनेक कारण हैं । एक तो, कल-कारखानों के प्रचलित होने से देहात के बहुत लोग काम न पाकर कमाने की आशा से राजधानी में उपस्थित होकर विपत्ति में पड़ जाते हैं । दूसरे, शराबखोरी में वेशुमार खर्च करके बहुत लोग इस दुर्दशा में पड़े हुए हैं । तीसरे, अदूरदर्शी श्रमजीवी लोग व्याह करके बहुत सी सन्तानों के साथ कष्ट पाते हैं । पृथ्वी में और कहीं बाल-बच्चों की इतनी सख्या नहीं देखी जाती । जो कुछ हो, दरिद्रता के इन सब कारणों को दूर करने के लिए वहाँ सहृदय महात्मा लोग पूरी चेष्टा कर रहे हैं । इस सम्बन्ध में जगद्विख्यात डाक्टर बार्नाडो, जनरल बोधा और मुल्लर आदि प्रात स्मरणीय महापुरुष जो यत्न कर रहे हैं, उसे अनेक लोग जानते हैं, इसलिए उसका उल्लेख यहाँ पर नहीं किया जाता । इस लोक में वे भगवान् के हाथ से अपने कार्य का उचित पुरस्कार पा रहे हैं, और परलोक में भी पावेंगे । हम लोगों में उनके पदाङ्क का अनुसरण करनेवाला अगर एक भी आदमी हो, तो हम कृतार्थ हो जावें । रास्ते में पड़े हुए अनेक दोन-दरिद्र बच्चों को महात्मा बार्नाडो ने पाला-पोसा और बड़ा किया है । उनके आश्रम में लालित पालित शिश्तित सैकड़ों बालक जब धनोपार्जन के लिए देश-विदेश में भेजे जाते हैं, तब वे

कभी अलबर्टहाल में आकर साहाय्यदाता महोदय के दर्शन कर जाते हैं । पाठकगण सोच कर देखे कि उनके मन में, उन बालकों के हृदय में, और दाता लोगों के चित्त में कैसी अनिर्वचनीय कृतज्ञता और आनन्द की लहरें उठती हैं । उस समय निश्चय देवता लोग इस स्थान पर स्वर्ग से प्रेम पुष्प वर्षा करते होंगे । इसी तरह ५००० से भी अधिक बच्चों को उन्होंने पाला-पोसा है ।

इसी के साथ महात्मा पीबडी (George Peabody) का उल्लेख न करना अनुचित होगा । यह एक अमेरिकन सौदागर थे । अन्तिम अवस्था में लन्दन में रह कर सन् १८६६ में स्वर्गीय दुन्दुभि-ध्वनि के साथ वेस्ट-मिनिस्टर-एवी में यह गाडे गये । इन्होंने ५ लाख पाउण्ड खर्च करके दरिद्र श्रमजीवियों के रहने के लिए एक बड़ी भारी इमारत बनवा दी है । जिस समय इन्होंने यह भारी दान किया, उस समय महारानी विक्रोरिया ने इनको धन्यवादसहित पत्र लिखा था । उसके उत्तर में इस प्रकार इन्होंने अपने हृदय के महत्त्व का परिचय दिया था—“आपका धन्यवाद-पत्र पाकर मैं सुरभी हृष्टा । ईश्वर की प्रसन्नता और विवेक के अनुमोदन के नीचे मैं उसको स्थान दूंगा” ।

आजकल बहुत पादरी और प्रतिष्ठित कुम्हान नर-नारी दरिद्रों की बस्ती के पूर्वाञ्चल (East End) में, दीन-दुश्चिन्तों के बीच में, रह कर उनकी उन्नति के लिए मन-वाणो-काया से परिश्रम कर रहे हैं । इस प्रकार नि स्वार्थ भाव से मनुष्य सेवा में निरत श्रेष्ठ कर्मों निःसन्देह वे ईसा के इस कथन का अनुसरण कर रहे हैं—

“ Inasmuch as ye have done it unto one of the least of these, my brethren, ye have done it unto me ”

अर्थात् मेरे निम्नायत छोटे भाई के साथ जो तुमने सब कुछ किया, मानों मेरी ही सेवा की ।

असहाय पीडित व्यक्तियों की सेवा के लिए कितनी ही बे-व्याही धनकुबेरा की कन्यायें प्रातःकाल के भोजन के उपरान्त अस्पतालों में जाकर दिन भर धानरेरी धाय का काम करती हैं। यह लन्दन के लिए कम गौरव की बात नहीं है।

बोर्ड-स्कूल की स्थापना के द्वारा दरिद्र सन्तानों की शिक्षा की विशेष व्यवस्था की गई है। ऐसे लड़कों को राह में घूमते-फिरते देख कर उन्हें पकड़ कर पुलिस स्कूल में ले जाती है, और उन बालकों के पिता-माता की खोज करके उनकी शिक्षा का प्रबन्ध करती है।

दरिद्र और अन्धे-लँगड़े आदि के लिए अलग अलग आश्रम हैं। वहाँ जाकर परिश्रम करने से अनिच्छा भी दरिद्रों की सख्या-वृद्धि का एक कारण है। प्रकाश्यरूप से भीख माँगना मना होने के कारण देखा जाता है कि बहुत से अन्धे गले में एक 'अन्धा' लिखा हुआ टिकट और भीख जमा करने का एक टीन का 'मग' लटकाये हुए फुटपाथ के ऊपर, या एक कुत्ते के साथ, या दियासलाई का बक्स हाथ में लिये धीरे धीरे जा रहे हैं। दियासलाई का बक्स इससे हाथ में लिये रहते हैं, जिसमें जान पड़े कि दियासलाई बेच रहे हैं, नहीं तो पुलिस पकड़ लेगी।

लन्दन की सड़कों में और एक बड़ा ही मनोहर दृश्य देखा जाता है। जिस जिस जगह रास्ता पार करना होता है वहाँ वहाँ एक दफा कुछ लोगों के जमा होते ही पुलिस घोडा-गाड़ियों को बन्द करके उन्हें बिना किसी कष्ट के पार कर देती है। इनमें प्रायः छोटे बच्चों को गोद में लिये सात-आठ-नव बरस की दो एक दरिद्र बालिकायें रहती हैं। एक दिन इसी तरह की एक लड़की से किसी भद्र पुरुष ने पूछा तो उसके उत्तर में उसने कहा—“छोटे भाई को लेकर मैं अगर बाहर न घूमूँ तो उसके उपद्रव से मेरी माँ हम लोगों के लिए रोटी नहीं बनाने

पार्ती । वह जब इस तरह हमारी सेवा करती हैं, तो क्या हमारा यह कर्त्तव्य नहीं कि इसी तरह यथाशक्ति उनकी सहायता करे ?” । कैसा सुन्दर दृश्य और कैसे स्नेह की बात है ।

लन्दन के दारिद्र्य को उसका कलक बता कर बहुत लोग उसके गौरव का कम करने की चेष्टा किया करते हैं । किन्तु चन्द्रमा में भी तो कलङ्क है । दरिद्रों का दुःख दूर करने के लिए ब्रिटिश-द्वीप में सालाना एक करोड़ पाउण्ड से भी अधिक खर्च होता है । इसका एक-तिहाई मुद लन्दन के लोग देते हैं ।

१ लन्दन का लोक-चरित्र । धर्म, नीति, चरित्र आदि के सम्बन्ध में जो बहुत से सद्गुण इन लोगों में देख पड़ते हैं वे अनेक जातियों के लिए नि सन्देह अनुकरणीय हैं । धर्म शब्द से केवल कुछ शारीरिक और अन्य प्रकार के नियमों के पालन का ही बोध नहा होता । दया-दाक्षिण्य आदि गुणों को प्राप्त कर, बन्हे नित्य के जीवन में कार्यरूप से कर दिखलाना ही सच्चा धर्म है । यह क्या सहज में ही पाला जा सकता है ? पुरुषपरम्परा से शिक्षा और अभ्यास के द्वारा इस प्रकार धर्म को चरित्रगत होना चाहिए कि समय उपस्थित होने पर सत्कार्य में प्रवृत्त होने के पहले किसी प्रकार सोच-विचार या तर्क न उठे, और भूखा अन्न की ओर अथवा प्यासा जल की ओर जिस तरह जाता है, उसी तरह आपही आप मन की प्रवृत्ति उस ओर हो । मेरी छोटी समझ में तो यही आता है कि जो जाति जितनी दुर्बल, पीडित, असहाय, वृद्ध, अबला, बच्चे, विदेशी और विपन्न पर दया दिखाती है, वह जाति उतनी ही उन्नत है । अँगरेजों को ऐसे दीन-दुखियों पर विशेषरूप से दया दिखाते देखा गया है । राह में तेजी से जाते समय भी इस बात पर हर एक अँगरेज विशेष दृष्टि रखता है । नगर के आस्फाल्टों के रास्ते बहुत ही चिकने हैं । इस कारण जरा

भी बरसने से गाड़ियों के घोड़े अक्सर फिसल कर गिर पड़ते हैं। ऐसी घटना होने पर उसी घड़ी चारों ओर से लोग आकर फ़ौरन् गाड़ीवान को सहायता पहुँचाते और घोड़ों को खड़ा कर देते हैं। और, वे इस तरह काम करके चले जाते हैं कि विपत्ति से उबरे हुए गाड़ीवान को धन्यवाद देने का भी अवसर नहीं मिलता। यह तो हुई लन्दन की सड़कों की हालत। और, हमारे यहाँ का यह हाल है कि ऐसी घटना होने पर सहज में कोई उसके पास भी नहीं जाना चाहता। धल्कि जो जाना चाहते हैं उन्हें भी बहुत लोग “शतहस्तेन वाजिन” यह चाणक्य की नीति का वचन सुनाकर लौटाने की चेष्टा करते हैं। और एक उदाहरण लीजिए। एक ग़रीब बालक का बाप मर गया। उसने अपनी दुखिया माता से पूछा कि उनके दुःख को कौन दूर कर सकता है? माता ने उत्तर दिया कि भगवान् के सिवा और कौन दूर कर सकता है? यह सुनकर नासमझ लड़का स्वर्ग के पते पर ईश्वर के नाम एक चिट्ठी लिख कर उस पर एक पेनी का टिकट लगा कर रविवार को सबरे (क्योंकि उसने सुना था कि रविवार ईश्वर के अवकाश का दिन है) डाक में छोड़ने के लिए सड़क-किनारे के लेटर-बक्स के पास गया। वहाँ तक हाथ न पहुँचने के कारण उसने एक ईट ला कर रखी और उस पर खड़ा हुआ। फिर भी हाथ न पहुँचने पर वह लड़का दूसरी ईट लाने के लिए जा रहा था। उसी समय उधर से एक पादरी तेज़ी के साथ गिर्जे की ओर जा रहे थे। दयालु पादरी ने बालक की सहायता करने के लिए ठहर कर उसके हाथ से चिट्ठी लेकर लेटर-बक्स में छोड़ना चाहा। इतने में उनकी नजर सरनामे पर पड़ी तो उसमें लिखा था—ईश्वर, स्वर्ग। पत्र के बारे में बालक से पूछ कर सब हाल जान लिया। उसके बाद बालक सं कहा—“यह पत्र तो इस डाकघर से जा नहीं सकता, इसके

लिए भलग बारूघर है । मेरे साथ आओ” । बालक को वह गिर्जे में ले गये । वहाँ का नियमित उपासना आदि कृत्य समाप्त होने पर दान-समूह के समय वेदी के पास बालक को बुला कर उन्होंने वह पत्र आदि से अन्त तरु सनके आगे पढा और उसका सब हाल कह सुनाया । साधारणत लन्दन के हर एक गिर्जे में रविवार को दोनों वक्त मं २० । ३० पाउण्ड जमा हो जात हैं । किन्तु उस दिन इम बालक की सहायता के लिए उससे कहीं अधिक दान जमा हो गया । उस धन-सहित बालक को लेकर पादरी साहब ने उसकी मा के पास जाकर कहा— ‘तुम्हारे पुत्र न आज सहायता के लिए भगवान् को जो पत्र लिखा था, उसके बदले में यह धन ईश्वर ने तुमको भेजा है । इसे लेकर ईश्वर को धन्यवाद दो’ । पाठकगण जरा सोच कर देखिए, इस उदाहरण में कैसा जातीय चरित्र गत धर्मवल भक्तक रहा है । जहाँ के लाग इस प्रकार परायें दुख को नहीं देख सकते, वहाँ ईश्वर स्वय अपनी प्यारी लक्ष्मी के साथ निवास करते हैं । और एक उदाहरण लीजिए । एक दफे टेम्स नदी में डूबते हुए किसी बालक को एक आदमी ने निकाला । पुलीस ने आकर उसका नाम-धाम पूछा तो वह उसी घटी यह उत्तर देकर चला गया कि “मैंने क्या यश की घोषणा अथवा पुरस्कार पाने की प्रत्याशा से यह काम किया है ? मैंने तो इसे अपना कर्त्तव्य समझ कर उसका पालन किया है” । हमारे यहाँ अगर कोई किसी का उद्धार करता तो वह वहाँ पर दो घटे खडे रहकर इकट्ठे हुए लोगों के आगे इस प्रकार लेकर भाडे बिना न रहता कि “मेरा यह नाम है मेर बाप का यह नाम है, मेरे बाप ने भी इसी तरह बहुतो को जानें बचाई हैं । मैंने भी कई दफे योंही कई जानें बचाई हैं । मैं अगर न होता तो आज यहाँ यह बालक डूब ही गया था—इत्यादि इत्यादि” । और एक उदाहरण लीजिए । हमारे साथ

एक 'महाशय' और रहते थे। उनके पास अमेरिका से खबर कि उनकी सारी पूँजी—दस-बारह लाख रुपये—वहाँ की कम्पनी के फेल हो जाने से डूब गये। यह खबर उन्होंने ज़ाहिरा को, बल्कि वैसे ही हँसी-खुशी के साथ बातचीत करते रहे। कई 'वाद' उनके एक खास दोस्त ने आकर हम सबको यह खबर 'लन्दन' में यही नियम है कि घर में किसी को विपत्ति या शोक-समाचार मिलने पर भी, वह आनेवाले को उसका आभास दे भी उसे कष्ट नहीं पहुँचाता। और हमारे यहाँ, घर में किसी का चिन्ता या कष्ट होने पर हर एक आनेवाले और मिलनेवाले के वही रोना रोवेंगे, और कोई बात ही न करेंगे। केवल हम लोग ही नहीं हैं। हमारे साथ पहले कुछ दिन एक जर्मन था। किसी काम से उसे ५०० पाउण्ड का नुकसान हो गया। उसके उपरान्त राह में जाते-दफ्त उससे मुलाकात हुई, उसने यह कह कर अपना ही रोना रोना कि "हम गरीब जाति हैं। हम अँगरेजों के ऐसे धनी तो हैं ही नहीं कि वे ५०० पाउण्ड को कुछ नहीं समझ सकते। लेकिन हमारे लिए वही बहुत है। मेरा बड़ा भारी नुकसान हो गया। क्या करूँ, मुझे तो कुछ सूझ नहीं पड़ता।"

अँगरेज और फ्रेञ्च स्त्री-पुरुषों के पत्र लिखने में इतना अन्तर है कि अँगरेज तो सीधी-सादी खबर दे देते हैं और एवर पूछ लेते हैं, मगर फ्रेञ्च लोग ऐसी लज्जेदार बातें लिखते और स्नेह जताते हैं कि पढ़नेवाला पढ़ते पढ़ते स्तब्ध उठता है।

अँगरेज-महिलाओं के चरित्र के सम्बन्ध में निकट उत्तर की आशा से हम लोगों में से अनेक लोग इस प्रश्न को उठाते हैं। इस बारे में मेरा यह विश्वास है कि उच्च और नीच—इन दोनों श्रेणियों की कियों में कुचरित्रा कियों का होना भी सम्भव है। और, यह हाल

किस देश का नहीं है ? किन्तु मध्यसमाज, जो जातीय अस्थि-मज्जा समझा जाता है, अत्यन्त पवित्र है । गृहस्थो की पवित्रता अंगरेजों की एक बड़े गौरव की चीज है । वे प्रकाश्यरूप से ऊहा करत हैं कि इस पवित्रता के ऊपर ही उनका विशाल साम्राज्य और भारी प्रतिष्ठा स्थापित है ।

अपने अपने विश्वास के अनुसार धर्म की शिचा प्राप्त करना यहाँ हर एक गृहस्थ का एक खास काम है । रोज सवेरे भोजन के पहले घर का मालिक सारे परिवार को साथ लेकर भगवान् के निरूट प्रार्थना करेगा और प्रातःकालीन भोजन के उपरान्त बाइबिल के किसी विशेष अंश को सबके साथ पढ़ेगा । इसके सिवा रात को सोने जाने के पहले भी एक बार नित्य नियम के साथ प्रार्थना होती है । स्वयं भारतेश्वरी विक्टोरिया ने अपने बच्चों को बाइबिल पढ़ाई थी । राजकुमारों की बाल्यावस्था में एक पादरी ने उनकी बाइबिल की जानकारी से प्रसन्न होकर कहा था कि "तुमको जिसने सिखलाया है वह विशेष प्रतिष्ठा के योग्य है ।" इस पर राजकुमारों ने ऊहा— "हमारी माता खुद हमें बाइबिल की शिचा देती हैं" । इतना ही नहीं, राजराजेश्वरी होकर भी वह अपने बच्चों के चरित्र पर खास नजर रखती थीं । एक दिन एक मेले में विक्टोरिया की बड़ी लडकी (उस समय बाल्यावस्था थी, फिर वह जर्मन-सम्राट् की माता हुई) माता के साथ गाडी पर जा रही थी । कुछ सैनिक कर्मचारियों का देखकर प्रसन्नता प्रकट करने के लिए राजकुमारों रुमाल हिला हिला कर क्रीडा सी करने लगे । माता के टेडी नजर से धुङ्कने पर भी बालिका ने वह रुमाल फेंक दिया । सैनिक उच्च कर्मचारियों रुमाल उठाकर देने के लिए दौडे । विक्टोरिया ने सबको रोक दिया, और बेटों को खुद नीचे उतर कर रुमाल उठा लाने के लिए बाध्य किया । राजकुमारों

को पिता भी इस बार में कम न थे । एक दिन वह और बड़ा त घोड़े पर चढ़े जा रहे थे । रास्ते में एक आदमी ने इन लोगों सलाम किया । युवराज बदले में सलाम करना भूल गये । यह कर पिता ने युवराज को उसी समय उस आदमी के सलाम का देने के लिए लौटाया । इसी से पाठकगण जान जायेंगे कि इस जार राजा से लेकर साधारण प्रजा तक चरित्र-रक्षा के विषय में अन्य जातियों की अपेक्षा अधिक सावधान रहत हैं ।

अब पाठकगण स्वयं समझ लेंगे कि इस विषय में अँगरेजों कौन दर्जा है । मैंने तो जहाँ तक देखा है, मुझे अँगरेज ही सबसे जँचते हैं । यूरोप जाने के पहले मुझे अँगरेज जाति पर ऐसी अश्रद्धा कि मैंने अँगरेजों जहाज छोड़ कर इटली के स्टीमर पर यात्रा की मुझे यह खटका था कि अँगरेजों स्टीमर के यात्रियों से और मुझ बर्ताने के बारे में कुछ खटपट न हो जाय । किन्तु अँगरेजों के देश जाकर जो मैंने देखा वह मेरी धारणा के सम्पूर्ण विपरीत निकला । यहाँ पर भी यही प्रश्न उठता है कि फिर लन्दन के अँगरेजों की प्रकृति और जगह के अँगरेजों से भिन्न क्यों है ? इसका कारण यही कहा जा सकता है कि लन्दन के अँगरेज जानते हैं कि सारा जगत इंग्लैंडमय है, सारी पृथ्वी के लोग स्वाधीन, स्वतन्त्र, धीरे स्थिर, शान्त, समाहित, सत्यप्रिय, दयालु, निष्कपट, परायण दुःख के न देख सकनेवाले, सुशील, भय, शिष्ट, वीरोचित नम्रता गुण से युक्त और विनयी हैं । किन्तु डोवर की नहर पार होते ही उनका यह स्रयाल धीरे धीरे दूर होता जाता है और भू-मध्यसागर पार होने पर शहर के लोगों को चेहरे में, स्वभाव में, बुद्धि में, चरित्र में सम्पूर्ण रूप से विभिन्नता देखकर उनकी बुद्धि पलट जाती है । हजार शिक्षित होने पर भी वे मनुष्य के सिवा देवता-ता बनही नहीं जाते ? यहाँ

पर बहुत कुछ हमारा ही दोष है। हम यह चाहते हैं कि हम जा कुछ हैं वही बने रहें, और पृथ्वी भर के लोग हमें महात्मा भीष्म और अर्जुन का ऐसा समान दें। किन्तु मनुष्यलोक में यह असम्भव है, विधाता की यह व्यवस्था नहा है। पहले पाने के योग्य बने और फिर पाने की इच्छा करो। यह सत्कार का एक कठोर नियम है। इसके कारण तो अनेक हैं, पर उनके उल्लेख का यह स्थान नहीं है। केवल दो एक का निर्देश यहाँ विशेषरूप से किया जाता है। हम पृथ्वी भर की सब जातियों को मनेच्छ कह कर उनसे सोलहों आने घृणा करें और वे हमको सिर चढ़ा कर नाचें, ऐसी आशा करना क्या पागल का काम नहीं है? और भी एक देव-दुर्लभ गुण हममें है खुशामद या खुशामद पसन्द करना ! इसी ने हमारी इतनी उन्नति की है। इससे दोनो की—खुशामदी और खुशामदपसन्द की—भारी हानि होती है। जो मनुष्य अपने मातहत लोगों से खुशामद चाहता है उसके सम्बन्ध में यह बात निश्चित रूप से कही जा सकती है कि वह भी अपने अफसरों की चापलूसी में हर घड़ो लगा रहता है। यह स्वर्गीय गुण अँगरेजों के ठडे मुल्क में, जहाँ न वसन्त ऋतु है और न कोमलता है, नहीं मिलता। और हम ? हम लोगों में तो यह गुण भग्पूर भरा पडा है। फल यह होता है कि हम जिस आशा से खुशामद करते हैं उसका कुछ फल हमें, व्यक्तिगत रूप से, अवश्य मिलता है, लेकिन उसके कारण विजातीय लोगों को हमारी सारी जाति पर एक प्रकार की विजातीय घृणा सी हो जाती है। हम सो० आई० ई० या रायबहादुर अवश्य हो जाते हैं, लेकिन उसी के साथ हमारे देश की इज्जत लातो से रौंद डाली जाती है। इसी तरह की अनेक बातें हैं। इससे ऐसे मामला में पहले विचारपूर्वक अपनी ओर देखकर दूसरे पर दोषारोप करना अच्छा होता है। मेरी छोटी

के पिता भी इस बार में कम न थे । एक दिन वह और बड़ा घोड़े पर चढ़े जा रहे थे । रास्ते में एक आदमी ने इन लोगों को सलाम किया । युवराज बदले में सलाम करना भूल गये । यह देख कर पिता ने युवराज को उसी समय उस आदमी के सलाम का जवाब देने के लिए लौटाया । इसी से पाठकगण जान जायेंगे कि इस जाति का राजा से लेकर साधारण प्रजा तक चरित्र-रक्षा के विषय में अत्यन्त जातियों की अपेक्षा अधिक सावधान रहते हैं ।

अब पाठकगण स्वयं समझ लेंगे कि इस विषय में अँगरेजों का कौन दर्जा है । मैंने तो जहाँ तक देखा है, मुझे अँगरेज ही सबसे अच्छे जँचते हैं । यूरोप जाने के पहले मुझे अँगरेज जाति पर ऐसी अश्रद्धा कि मैंने अँगरेजी जहाज छोड़ कर इटली के स्टीमर पर यात्रा की । मुझे यह खटका था कि अँगरेजी स्टीमर के यात्रियों से और मुझसे घर्षा के बारे में कुछ खटपट न हो जाय । किन्तु अँगरेजों के देश जाकर जो मैंने देखा वह मेरी धारणा के सम्पूर्ण विपरीत निकला । यहाँ पर भी यही प्रश्न उठता है कि फिर लन्दन के अँगरेजों की प्रकृति और जगह के अँगरेजों से भिन्न क्यों है ? इसका कारण यही कहा जा सकता है कि लन्दन के अँगरेज जानते हैं कि सारा जगत् इंग्लैंडमय है, सारी पृथ्वी के लोग स्वाधीन, स्वतन्त्र, धार्मिक, स्थिर, शान्त, समाहित, सत्यप्रिय, दयालु, निष्कपट, पराये दुख न देख सकनेवाले, सुशील, भय, शिष्ट, वीरोचित नम्रता गुण युक्त और विनयी हैं । किन्तु डोवर की नहर पार होते ही उनका स्वभाव अत्यन्त घोर घोर दूर होता जाता है और भू-मध्यसागर पार होने के पश्चात् डोवर के लोगों को चेहरे में, स्वभाव में, बुद्धि में, चरित्र में सम्पूर्ण रूप से विभिन्नता देखकर उनकी बुद्धि पलट जाती है । हजार शिल्पियों होने पर भी वे मनुष्य के सिवा देवता तो बनही नहीं जाते ? या

पर बहुत कुछ हमारा ही दोष है । हम यह चाहते हैं कि हम जा कुछ हैं वही बने रहें, और पृथ्वी भर के लोग हमें महात्मा भोष्म और अर्जुन का ऐसा समान दें । किन्तु मनुष्यलोक में यह असम्भव है, विधाता की यह व्यवस्था नहा है । पहले पाने के योग्य बने और फिर पाने की इच्छा करो । यह ससार का एक कठोर नियम है । इसके कारण तो अनेक हैं, पर उनके उल्लेख का यह स्थान नहीं है । केवल दो एक का निर्देश यहाँ विशेषरूप से किया जाता है । हम पृथ्वी भर की सब जातियों को मनेच्छा कह कर उनसे सोलहो आने घृणा करें और वे हमको सिर चढा कर नाचें, ऐसी आशा करना क्या पागल का काम नहीं है ? और भी एक देव-दुर्लभ गुण हममें है खुशामद या खुशामद पसन्द करना ! इसी ने हमारी इतनी उन्नति की है । इससे दोनों की—खुशामदी और खुशामदपसन्द की—भारी हानि होती है । जो मनुष्य अपने मातहत लोगों से खुशामद चाहता है उसके सम्बन्ध में यह बात निश्चित रूप से कही जा सकती है कि वह भी अपने अफसरों की चापलूसी में हर घड़ो लगा रहता है । यह स्वर्गीय गुण अँगरेजों के ठड़े मुल्क में, जहाँ न बसन्त श्रुतु है और न कोमलता है, नहीं मिलता । और हम ? हम लोगों में तो यह गुण भग्नूर भरा पढा है । फल यह होता है कि हम जिस आशा से खुशामद करते हैं उसका कुछ फल हमें, व्यक्तिगत रूप से, अवश्य मिलता है, लेकिन उसके कारण विजातीय लोगों को हमारी सारी जाति पर एक प्रकार की विजातीय घृणा सी हो जाती है । हम सी० आई० ई० या रायबहादुर अवश्य हो जाते हैं, लेकिन उसी के साथ हमारे देश की इज्जत लाता से रौंद डाली जाती है । इसी तरह की अनेक बातें हैं । इससे ऐसे मामलों में पहले विचारपूर्वक अपनी ओर देखकर दूसरे पर दोषारोप करना अच्छा होता है । मेरी छोटी

समझ में तो अगर इन बातों के लिए किसी को दोष दिया जा सकता है तो अपने भाग्य ही को । आज अगर हम सिर झुका कर खड़े होने के बदले सिर उठा कर खड़े होना सीख लें तो कल बीसी नालिश करने का मौका ही हाथ न आवेगा । यह ध्रुव निश्चय है कि ऐसा होने पर हम लोगो को यह कह कर रोना नहीं रोना पड़ेगा कि अंगरेज लोग हमसे स्नेह का बर्ताव क्यों नहीं करते ।

लन्दन में हुआ । बहुत लोगो का यह खयाल हो सकता है कि पूर्व-देशीय लोग ही अज्ञान के अन्धकार में पड़े हुए हैं और इसी से अस्वाभाविक बातों पर सहज ही विश्वास कर लेते हैं, लन्दन ऐसी पृथ्वी के सभ्यतम देश की राजधानी में, इस बीमवीं सदी के आरम्भ में, बीसी बातों को लोग पागलों का प्रलाप समझ कर उड़ा देते होंगे । किन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है । हुआ के सम्बन्ध में अन्यान्य स्थानों की अपेक्षा लन्दन कुछ कम नहीं है । बल्कि लोग वहाँ गाँठ का पैसा खर्च करके ऐसे हुआ में शामिल होते हैं । वहाँ साठ लाख आदमी रहते हैं । अगर कोई अच्छा हुआ खड़ा करके दो चार हजार आदमियों को भी रूश कर सका, उसका मतलब हो गया । उदाहरणस्वरूप सन् १८८६ की एक घटना का यहाँ पर उल्लेख किया जाता है । उस समय में पहले ही पहल लन्दन गया था । राह में देखा विज्ञापन बँट रहे हैं । उनमें अद्भुत अद्भुत भविष्यदाणियाँ लिखी हुई हैं । विज्ञापन में लिखे हुए स्थान पर जाकर देखा, एक पादरी एक भारी 'हाल' में तरह तरह की विचित्र तस्वीरे दिखाकर व्याख्यान देते हुए पैसे वसूल कर रहे हैं । परदार घोड़े के मुँह से आग निकल रही है, साँगा और परोवाला उड़ रहा शेर मुँह फैलाये धुध्राँ उगल रहा है । इस तरह की बहुत सी अप्राकृतिक भयानक दृश्या-वलियों की भारी भारी तस्वीरे हाल की दीवार में टँगी हुई थीं ।

लोगों का जमाव भी कम न था, पैसा भी खूब आ रहा था । विज्ञापन के अनुसार व्याख्यान दिया जा रहा था कि “सन् १८६० में, यूरोप में, भयानक युद्ध होगा और उसके कारण २३ राज्यों के १० ही राज्य रह जायेंगे । अँगरेजों के हाथ से आयरलैंड और भारत निकल जायगा । सन् १८६२ में नेपोलियन ग्रीक-राज के रूप में प्रकट होगा । सन् १८६६ में १,४८,००० ईसाई सशरीर स्वर्ग को जायेंगे । सन् १८०१ में ईसा का अवतार होगा । इत्यादि इत्यादि” । मुझे विश्वास है कि इस देश का अगर कोई वहाँ जाकर फलित ज्योतिष या सामुद्रिक का रोजगार करे तो वह बहुत रुपया पैदा कर सकता है ।

लन्दन की सूची । लन्दन में ६ स्तम्भ और ४७ मूर्तियों के सिवा ६४ प्रकाश्य स्मारक चिह्न, न्यूनाधिक ३००० प्रोटेस्टेन्ट, ३०० रोमन कैथलिक और २,००० अन्यान्य फिर्कों के पादरी, २,५०० वैरिस्टर, ४,००० एटर्नी, ७,००० डाक्टर, ४,५०० एपधिकरी और दवाफरोश, सर्वसाधारण की सहायता से रचित २५ बड़े और कई छोटे अस्पताल, २,५०० प्रन्थकार, ७,५०० बाजे बनानेवाले, ३,५०० नट और नटी, २२,००० स्कूलमास्टर, ३,५०० विज्ञान का व्यवसाय करनेवाले, १०,००० होटलवाले और पीने की चीजें बेचनेवाले, ४,००० वियर शराब बेचनेवाले, ५,००० काफीयानों के मालिक, २२,००० छापेखाने, ५,००० बुकसेलर, ७,००० घड़ीवाले, ८,००० जौहरी, २५,००० दर्जी, ३०,००० दर्जिन, ७५,००० पोशाक बनानेवाले ३२,००० जूतेवाले, १४,००० मास बेचनेवाले, ६,००० मछली बेचनेवाले १५,००० रोटीवाले, १४,००० चाय बेचनेवाले, और ४,००० वियर शराब बनानेवाले हैं ।

बस अब यहाँ पर लन्दन का वर्णन समाप्त किया जाता है । और

कहाँ तक कहूँ ? पाठकों को इसी से अनुमान कर लेना चाहिए कि अभी तक लन्दन का कुछ भी वर्णन नहीं किया जा सका । वास्तव में लन्दन शहर एक ऐसी ही जगह है कि उसे देखे बिना उसका पूरा हाल नहीं जाना जा सकता । जिस महानगरी को "Heart of the world" पदवा मिली है उसका वर्णन करना सहज काम नहीं है । अन्त में किसी कवि का बनाया हुआ एक अँगरेजी का पद्य नीचे उद्धृत करके लन्दन का वर्णन समाप्त किया जाता है । अपने दोष और परायण गुण को बड़ा करके देखना अँगरेजों का स्वभाव है । इसी से इस कविता के कवि ने वहाँ के दोष-भाग का विशेष रूप से वर्णन करके गुण-भाग का सन्तोष से वर्णन किया है । जो कुछ हो, इस पद्य के द्वारा थोड़े शब्दों में लन्दन का एक आभास देने की चेष्टा की गई है ।

LONDON DAY BY DAY

The smoke in vaster volumes rolls
 The fever fiend takes larger tolls,
 And sin a fiercer grip of souls,
 In London day by day

Still Buggins builds on swampy site,
 And Fissol houses block the light
 And make a town of dreadful night
 Of London day by day

In fashion's long and busy street,
 The outcast foreign harlots meet,
 While Robert smiles upon his beat,
 In London day by day

Still modest maidens cheeks are stung
 With foulest words from wanton's tongue,
 And orths yelled out with leathern lung,
 In London day by day

Wealth riots in a mad excess
 While thousands poor and penniless
 Starve in the mighty wilderness,
 In London day by day

Wrong proudly rears its wicked head,
 While rights sad eyes with tears are red
 And sluggard Justice lies abed
 In London day by day

The Har triumphs and the knave
 Rides buoyant on the rolling wave,
 And Liberty makes many a slave,
 In London day by day

Yet Hope and Trust and Faith and Love
 And God's fair dowers from above
 Still find a branch, like Noah's dove
 In London day by day

And onward still, though slow the pace,
 Press pilgrims of our grand old race,
 Who seek the right with firmset face
 And show Truth's light by God's good grace
 O'er London day by day

फ़्रान्स ।



सन् १८८६ की चौथी सितम्बर को हम तीन भारत-वासी एक बजे रेल पर चढ़े, और लन्दन छोड़ कर 'डोवर' की ओर चले । बहुत से प्रसिद्ध यात्रियों का कहना है कि लन्दन और डोवर (Dover) के मध्य-वर्ती प्रदेश का सा सुन्दर दृश्य पृथ्वी भर पर और कहीं नहीं देखा जाता । वास्तव में मैंने भी ऊँची-नीची जमीन पर हरे-भरे खेत, बाग़ और हरी घास से ढके हुए मखमल ऐसे चिकने कोमल साफ़ भूमि-खण्ड, इस प्रकार सुन्दर ढङ्ग में, कहीं नहीं देखे । ठीक समय पर हम डोवर पहुँच गये । वहाँ सात आठ घंटे ठहरने के बाद रात को दस बजे प्रणाली (Strait) पार होने के लिए हम लोग जहाज पर चढ़े । डोवर और कैले (Calus) के बीच में समुद्र केवल २५ मील है । सन् १८७५ में २४ अगस्त को सुप्रसिद्ध तैराक वेब साहब (Captain Webb) सबेरे १० बजे को ४ मिनट पर पानी में उतरे और २१ घंटे ४५ मिनट में इस साठे बारह कोस समुद्र को तैर कर पार हो गये थे । उनके बाद डाटल नाम का एक आदमी, सन् १८६० में, पार हुआ था । इस तैराक की चातुरी हम लोगों ने लन्दन में देखी थी । दो घंटे के लगभग जहाज में रह कर प्राची रात के समय हम लोग कैले-बन्दर में पहुँचे । डोवर से कैले में उपस्थित होने पर स्पष्ट जान पड़ता है कि इङ्ग्लैण्ड और फ़्रान्स की हवा में कितना अन्तर है । धीरे शान्त गर्भोर अँगरेज-समाज से निकल कर एक-दम फ़ुंध लोगों की सर्वदा परिवर्तनशील शिथिल कोलाहलमय राज्य-सीमा में पहुँचने पर सहज ही दोनों जातियों का पार्थक्य विदित हो जाता है ।

सब लैटिन-जातियाँ (पोर्चुगोज, स्पेनिश, फ़्रेञ्च, इटलियन) बहुत कुछ हमारे ही समान उच्छ्वास के अधीन emotionally effusive) हैं । डोवर में जैसे शान्त-गम्भोर भाव देखा जाता है, वैसे ही कैले में गोल-माल शोरगुल की बहार देख पडती है । यहाँ तक कि नवागत अँगरेजों का मिजाज भी मिट्टी के प्रभाव से वहाँ पर बहुत कुछ बदल जाता है । प्रत्यक्ष देखे बिना इस अटलांटिक महासागर के सुद्र द्वीप (टापू) का महिमा समझना कठिन ही नहीं, असम्भव है ।

गाडी पर चढ़ कर देखा, दोनों कौनों पर दो फ़्रेञ्च भद्रपुरुष चार आदमियों की जगह घेरे हाथ पैर फैलाये मीठी नोंद में खराटे ले रहे हैं । गाडी चली । गाडी में सिर्फ़ दो अँगरेज थे । और कोई न समझे, इसलिए एक अँगरेज ने दूसरे अँगरेज से, सो रहे फ़्रेञ्च भद्रपुरुष को लक्ष्य कर, हिन्दी में कहा—“जरा उनको तो देखिए जो कोने में बैठे हैं” । इस बात में उन दोनों के साथ मैं भी मुसकिया दिया । अब उस गोष्ठी में मैं भी मिल गया । दोनों साहबों से और मुझसे बातचीत होती रही । उस समय हम पाँचों में ऐसा स्नेह हो गया, मानो एक ही देश के हैं । बातचीत में जान पडा, एक साहब बर्मा के वन-विभाग में काम करते हैं, और दूसरे साहब भारत के सिविलियन हैं । सिविलियन साहब जरा गम्भोर प्रकृति के थे । केवल फ़्रान्स की हवा लगने का यह असर था कि इतना मसखरापन वह कर बैठे थे । उन्होंने पहले मुझे अमेरिकन समझा था, इसी से हिन्दी में बातचीत की थी । किसी तरह रात बिता कर सबेरे पेरिस पहुँचा । एक महीने के लगभग पेरिस में रह कर विश्वप्रदर्शिनी (Exposition Universelle) और नगर का जो कुछ चमत्कार देखा, उसका पूरा क्या, कुछ भी वर्णन करना मेरी शक्ति के बाहर है । तथापि यथाशक्ति लिखने की चेष्टा करूँगा ।

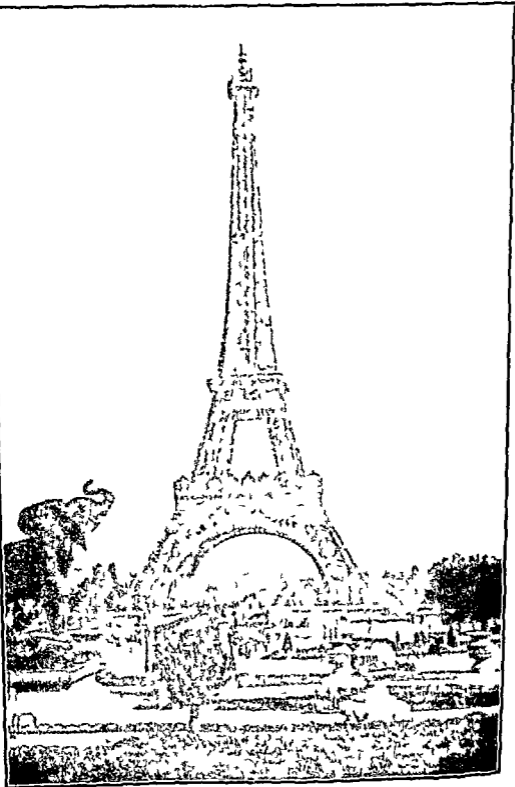
पेरिस-विश्वप्रदर्शनी ।

पेरिस में, सन् १७६८ में, स्थानीय चीजों की पहली प्रदर्शनी खोली गई थी । उसके बाद क्रमशः १२ प्रदर्शनियाँ हो जाने पर, सन् १८४५ में, पेरिस-अन्तर्जातिक प्रदर्शनी में सारी पृथ्वी की चीजें एकत्रित हुई थीं । तेईस बरस बाद, सन् १८७८ में, सुवृहत् ट्रोकाडैरो (Trocaidero) गोलघर का निर्माण हुआ और एक उच्च श्रेणी की प्रदर्शनी खोली गई । उसके बाद सन् १८८६ में यह महाप्रदर्शनी खोली गई । विगत सौ बरसों में फ्रान्स और साथ ही साथ सारा सभ्य जगत् उन्नति के सोपान पर कूटों तरु चढ सका है, यह जानने के लिए इस महाप्रदर्शनी को कसौटी समझना चाहिए । सन् १८८६ के मई महीने में चुपचाप धीरे धीरे शुरू हुए नवजीवन डालनेवाले फ्रेंच-विप्लव ने १४ जुलाई के दिन अनिवार्य हार्दिक बल के तीव्र तेज के साथ पेरिस के दुर्भेद्य खास-राजकारागार भुवनविख्यात वास्टिल (Bastille) का ध्वस करते हुए सजीव भाव से प्रकट होकर यूरोप के राजनैतिक और सामाजिक जगत् में मौलिक परिवर्तन किया, और उससे मनमानी करनेवाली राजशक्ति की जड भी फट गई । उसी चिरस्मरणीय घटना की सौ बरस की जुबिली में यह महाप्रदर्शनी खोली गई थी । इस प्रदर्शनी का शिरोभूषण-स्वरूप विराट् कीर्तिस्तम्भ "ला-टूर-एफेल" (La Tour Eiffel) ६ सप्ताह का है । सारी प्रदर्शनी ५२० बीघे में है और उसमें २२ फाटक हैं । उत्तर-भाग में एफेल-स्तम्भ है ।

एफेल-स्तम्भ । पृथ्वी की जितनी ऊँची इमारतें हैं वे इसकी बराबरी नहीं कर सकतीं । आगे की सूची से इसकी भारी ऊँचाई का कुछ कुछ अनुमान हो सकेगा । ऊँचाई हाथों के हिसाब से दा गई है—



पेरिस—पृ० २६३



ईफेल टावर—पृ० २५३

पेरिस का एफेल स्तम्भ (Eiffel Tower)	६५७ हाथ
अमेरिका का वाशिंगटनस्तम्भ (Washington Column)	३७० हाथ
जर्मनी का कोलनगिर्जा (Cologne Cathedral)	३४८ हाथ
फ्रान्स का रोएँ गिर्जा (Rouen Cathedral)	३३२ हाथ
मिसर का प्रधान पिरामिड (Great Pyramid)	३१८ हाथ
जर्मनी का स्ट्रासबर्ग-गिर्जा (Strasbourg Cathedral)	३१० हाथ
रोम का सेन्टपीटर-गिर्जा (St Peter's Church)	२८८ हाथ
लन्दन का सेन्टपाल-गिर्जा (St Paul's Church)	२६८ हाथ
पेरिस का इनवेलिड्स (Invalides)	२३३ हाथ
दिल्ली का कुतुब मीनार (Kutub Minar)	१५८ हाथ
पेरिस का नटरडाम-गिर्जा (Notre Dame)	१५० हाथ
„ पान्थियन (Pantheon)	११६ हाथ
कलकत्ते का मनुमेंट (Ochterlony Monument)	११० हाथ

पेरिस का यह एफेल-स्तम्भ कुतुबमीनार से चारगुना और कलकत्ते के मनुमेंट से छगुना ऊँचा है। इसके बनने में १,८२,००० मन लोहा, २३ लाख पाउण्ड की रकम और कई सौ आदमियों का २३ वर्ष का मानसिक और शारीरिक परिश्रम लगा है। इसके सिवा विपुलमस्तिष्क धीमान् एफेल की अङ्गविद्या और इञ्जिनियरी का कौशल भी इममें खर्च हुआ है। सन् १८८७ की २८ जनवरी को इसकी नींव पड़ी और सन् १८८८ की १ मई को यह विल्कुल तैयार होगया। भिन्न भिन्न माप और आकार के बारह हजार लोहे के टुकड़े सत्तर लाख छेदों में पचास लाख पेंचों से कसे हुए हैं। परस्पर से मिले और ठीक माप के छेद और उन छेदों की माप के पेंच, स्क्रूप आदि बनाने में जैसे ऊँचे दर्जे की कारीगरी और हिसाब की जरूरत पड़ी होगी, सो वह दर्जा सहज में नहीं समझ सकता, जो

स्वयं कुछ भी इन्जिनियरी का काम नहीं जानता । इसके सिवा आँधी से सुरक्षित रखने के लिए ऐसे वैज्ञानिक ढंग से यह स्तम्भ खड़ा किया गया है कि दसो दिशाओ से, चाहे जिधर से आँधी आवे, उसका धक्का स्तम्भ में नहीं लगेगा, वह तूफान स्तम्भ के शरीर में केवल हाथ फेरता हुआ निकल जायगा । इसके बनने में जितनी गिनियाँ खर्च हुई हैं उनकी बाँड अगर बनाई जाय तो वह जमीन से इस स्तम्भ की चोटी तक पहुँच जायगी । इसमें कोई सन्देह नहीं कि बुद्धिमान एफेल, सब तरह से, यह एक सुवर्ण स्तम्भ खड़ा कर गये हैं । शुरू से अखीर तक इसमें १७६२ गोल सीढियाँ हैं । बहुत लोग पैदल भी चढ़ते हैं, लेकिन बहुत से लोग कल (Lift) के द्वारा ऊपर चढ़कर दो तरह का आनन्द भोगते हैं । ऊपर चढ़ानेवाली कलें तीन जगह हैं । इसलिए ऊपर जाने में तीन बार तीन जगह जाना और वहाँ से निकलना होता है । इतनी भीड़ होती है कि हर जगह डेढ़ दो घंटे खड़े रहे बिना 'कल' में बैठ पाना असम्भव हुआ करता है । जमीन से १२२ हाथ की उँचाई पर ११० हाथ चौड़े चार भारी दरों पर पहला खण्ड स्थापित है । इसकी चारों ओर बड़े बड़े ऊँचे अक्षरो में, जो नीचे से साफ पढ़े जाते हैं, ब्रोका, ब्रुटेयर (Broca, Voltaire, &c) आदि ७२ महामहोपाध्याय प्रोफेसर पण्डितों के नाम लिखे हैं । राजा, बादशाह, वजोर या अमीर का एक भी नाम नहीं है । पहले खण्ड को एक छोटा सा गाँव कहा जा सकता है । उसमें ४ पान-भोजन-भवन (Resturant) हैं । हर एक में ४०० आदमी बैठ कर खा-पी सकते हैं । चार बाहरी खण्डों (Gallery) में १००० आदमी घूम फिर सकते हैं । दो पानभोजनभवन के मध्यवर्ती हर एक खण्ड में ४०० आदमी आ सकते हैं । इस हिसाब से प्रथम खण्ड में छ हजार चार सौ आदमी अनायास रह सकते हैं । इसके सिवा बाहर जाने आदि के स्थान, अनेक दुकाने, डाकघर और तार का आफिस आदि भी इसी खण्ड में स्थापित

हैं । यहाँ से चारों ओर का दृश्य बड़ा मनोहर देख पड़ता है । खास कर सन्ध्या के घाट दक्षिण ओर नीचे के भूमि-खण्ड की सुन्दरता देखने ही लायक होती है । अनेक रङ्ग के फूल वगैरह सुहावने ढङ्ग से खिलते देख पड़ते हैं । स्वच्छ हरे रङ्ग की कोमल घास से ढके हुए मैदान में चारों ओर पास ही पास लगी हुई विजली की राशनी बड़ी ही विचित्र छटा दिखलाती है । मेज की तरह कटी हुई क्यारियो से उस भूमि-खण्ड की बहार दूनी देख पड़ती है । चारों ओर बहुत से बड़े, मझोले और छोटे पुतल सजानेवाले की सुरुचि का परिचय दे रहे हैं । उनमें एशिया, यूरोप, आफ्रिका, अमेरिका, और आस्ट्रेलिया की मूर्तियाँ साजसरजाम और सहचर-सहचरियों के साथ रमणी-रूप से विराजमान हैं । दोस्रिमान (Chemically illuminated) श्वेत, पीले, लाल, हरे, अनेक रङ्ग के जल की नहरें और फुहारों की बहार दिखाई पड़ती है । चारों ओर असख्य गोरे नर-नारियों की भारी भीड़ और सुसज्जित विजली की रोशनी से जगमगा रहा प्रदर्शनी-भवन आदि हैं । और ठीक सामने, इस भूमि-खण्ड के दूसरे छोर पर, बहुत ही घोड़ी दूर पर, इमारतों के बीच में, विशेष रूप से विजली की रोशनी से नीचे से ऊपर तक जगमगा रहा डोमसेन्द्रल (Dome Centrale) है । यह पेरिस के केन्द्र में बना है । इसका गुम्बद २५० फुट ऊँचा और १०० फुट के घेरे का है । इसके दूसरे ओर ५-६ 'रशी' के फासिले पर टेडी-मेडी सेइन (La Seine नदी बहती है । इसमें असख्य जगमगा रही नावें, स्टीमर, पानी में तैर रहे विहार-भवन, होटल, स्नानभवन और सेतु-समूह शोभायमान देख पड़ते हैं । इस नदी के दूसरे तट पर ठीक सामने, कुछ फासिले पर, प्रदर्शनी के अन्तर्गत फुहारा, भरना और विजली की रोशनी से दोपमालिका की भी मात कर रहा ट्रोकाडेरो गोलघर है । उक्त सब दृश्य मिल कर, इस १२२ हाथ ऊँचे स्थान से,

एक अपूर्व अलौकिक अनिर्वचनीय शोभा से सम्पन्न देख पड़ते थे। उस शोभा का वर्णन शब्दों से नहीं किया जा सकता; वह देखने ही की चीज है। फ्रेंच लोगों की सतेज, सुपरिस्फुट, सौन्दर्यानुभववृत्ति और शोभा-प्रियता (wonderfully developed aesthetic faculty) को जो लोग जानते हैं वे सहज में ही समझ सकते हैं कि सुन्दर वस्तु को मनोहर भाव में सजा कर दर्शक का मन हर लेने की विद्या में वे कैसे सिद्धहस्त हैं। फ्रेंच ढंग से सजाने के कौशल का कुछ परिचय जुवेयर महाशय, सन् १८८४ में, कलकत्ते की प्रदर्शिनी में, देगये हैं। यहाँ के लोग सजाने की कारीगरी ऐसी जानते हैं कि सड़ी से सड़ी चीज इनका हाथ लगने से सुन्दर जान पड़ने लगती है। फिर यहाँ तो सौन्दर्य को सुन्दर सजावट दी गई है। जिन दो बन्धुओं के साथ मैं इस स्तम्भ को देखने गया था, वे इस मेरे वर्णन को पढ़ कर बहुत अच्छी तरह समझ सकते हैं कि मैं कुछ भी वर्णन नहीं कर सका। क्या करूँ, वह अनुपम सौन्दर्य हृदय में अङ्कित है, उसे बाहर प्रकट करने की शक्ति ही मुझमें नहीं। कवि कान्ग्रेव (Congreve) की कविता नीचे लिख कर मैं पाठकों से अपनी लाचारी के लिए क्षमा-प्रार्थना करता हूँ।

“Hard is the task and bold the advent'rous flight,
Of him who dares in praise of beauty write,
“For when to that high theme our thoughts ascend,
‘Tis to detract, too poorly to commend’

अफसोस यही है कि भारत के सौ आदमी भी इस महाप्रदर्शिनी को न देख सके। जो लोग इंग्लैंड में थे उनमें से अधिकांश लोग नहीं गये। हाय हाय। इस जीवन में अब वैसा दृश्य फिर न देखने को मिलेगा, यही दुःख है। सन् १८६२ में अमेरिकन लोगों ने इसी ब्रागहॉट पर एक महामेला किया था। परन्तु अटलांटिक समुद्र के उस पार

फ्रान्स की बहार या वैसें सजावट कहाँ ? फ्रेञ्च लोग कहते हैं "संसार में पेरिस एकही है, दूसरा असंभव है" ("I In'y a qu'un Paris dans le monde"), "जिसने पेरिस नहीं देखा उसने कुछ नहीं देगा" ("Quin'a vis Paris ni rien vis"), यह पक्षपात की नहीं, सच्ची बात है । अँगरेज और अमेरिकन भी लाचार होकर स्वीकार करते हैं कि "Paris is the pleasure-garden of the world," अर्थात् पेरिस पृथ्वी का प्रमोदकानन है । इंग्लैंड और अमेरिका आदि बहुत देशों क रईस हर साल या बीच-बीच में मनोरञ्जन के लिए पेरिस जाते हैं । सम्राट् सप्तम एडवर्ड भी हर साल जाते थे ।

स्तम्भ के प्रथम खण्ड से, और दूसरी कल पर बैठ कर, दूसरे खण्ड में जाना होता है । दूसरा खण्ड २५० हाथ के ऊँचे पर है । यहाँ भी अनेक खानपान के अट्टे (Refreshment Bar), फिगारा-नामक सचित्र सवादपत्र (illustrated newspaper *Figaro*) का छापाखाना और कई दूकानें हैं । यहाँ पर १५०० आदमी रह सकते हैं । यहाँ से चारों ओर बहुत दूर तक, किन्तु अस्पष्ट, देख पड़ता है । नीचे का दृश्य अद्भुत और वर्णन से परे है ।

तीसरा खण्ड ५१६ हाथ की उँचाई पर है । यहाँ ५०० आदमियों के जमा होने की जगह है । लगभग १०,००० आदमी इस स्तम्भ में विचर सकते हैं । इसको अगर एक छोटा सा नगर कहा जाय तो कुछ अनुचित न होगा । तीसरे खण्ड में भी डाकघर तारघर और कई एक दूकानें हैं । यहाँ से चारों ओर ४० कोस तक बजर जाती है, पर सब अस्पष्ट देख पड़ता है । इसके ऊपर ८१ हाथ की उँचाई पर चोटी (Campinale) है । वहाँ तक जाना हो तो

एफेल साहब की मंजूरी लेनी होती है । चोटी के भीतर चौथा र है । उसमें एफेल साहब का आफिस और तीन वैज्ञानिक प्रवि के कमरे (Laboratory) हैं एक ज्योतिष (Astronomy) का, दूस चिकित्सा-शास्त्र और आकाशतत्त्व (Physic and Meteorolog सम्बन्धी और तीसरा जीवतत्त्व और वायु-विज्ञान (Biology and micrographic study of the air) सम्बन्धी है । आकाश और वायु की परीक्षा के लिए ऐसा उपयोगी स्थान दूसरा नहीं है । अ तक जितने ऊँचे पर परीचाये हुई हैं वहाँ कहीं भी विल्कुल विशु वायु नहीं पाया गया । बड़े ऊँचे पर्वत की चोटी पर भी वृक्ष और मिट्टी से पैदा हुई भाप के मिले रहने का दोष दूर नहीं हुआ ।

चूडाखण्ड अर्थात् कैम्पनेल की चोटी पर और भीतर दो भार बिजली की रोशनियाँ हैं । यह प्रकाश (It represents the transmuted energy of engines of 500 horse-power, Stead) २० कोस की दूरी पर से दिखाई पड़ता है और इस प्रकाश से ७ मील दूर सॉन्-जारमेया-अँला (Saint Germain-en-Laye) नगर की सड़क पर अखबार पढ़ा जा सकता है । हर रविवार को सन्ध्या के बाद खूब अन्धकार होने पर १५ मिनट के लिए सब स्तम्भों में लाल रोशनी (Bengal Lights) कर दी जाती है । सबके ऊपर स्तम्भ की चोटी पर फ्रेंच साधारण-तन्त्र की स्वाधीनता, साम्य और आवृभाव (Liberte, Egalite, Fraternite) को व्यक्त करने-वाली तीन रङ्ग की पताका गर्व के साथ फहरा रही है । इसको लक्ष्य कर फ्रेंच विज्ञान-सभा (Academie Francaise) के सभ्य कविवर सली प्रूधोम (Sully Prudhomme) ने विज्ञान-समिति के भोज की वक्तृता में कहा था—“हर एक फ्रेंच को अपना गौरव इसमें समझना चाहिए कि पृथ्वी के सब देशों की पताकाओं से ऊँचे पर फ्रान्स की

पताका फहरा रही है । यह हमारे शौर्य वीर्य का परिचय चाहे न हो, लेकिन इससे हमारे अदम्य उद्यम और उच्च आशा का परिचय सपर्यय मिन्नता है ।”

एफेल-स्तम्भ से, जैसे चर्मचक्षुषो से बहुत दूर तक फ्रान्स देश दृष्टिगोचर होता है, वैसे ही, काल के सम्बन्ध में, मानसिक दृष्टि से, पीछे की शताब्दी की घटनायें भी धुंधले रूप में देख पड़ती हैं । सन् १७८६ में वास्टिल-ध्वंस के साथ “८६ की साम्यनीति” (‘Le principes de’ 89) का अभ्युत्थान, जातीय-सभा (L'Assemblée Nationale) की स्थापना, सब मनुष्यों के समान-स्वत्व की विस्तृत घोषणा (Déclaration des droits de l'homme), सन् १७९० में “समाज के विभागों की उँचाई-निचाई मिटाना (Abolition de la noblesse), सन् १७९१ में राजा की यात्रा और वन्दी-भाव से फिर आना, सन् १७९२ में दाँत मारा और रोमस्पेयर का अभ्युदय और प्रधानता एवं राजपद का प्रत्याख्यान (Abolition de la royauté), विख्यात सेप्टेम्बर-हत्या, १३०० मनुष्यों की बलि, सन् १७९३ में सिद्दासन से उतारे गये सोलहवें लुई का विचार और प्राणदण्ड, नर-राजस मारा का वध और उसके साथ ही अनुपम रूप-यौवन और सुमहोद्य हृदयवाली मारा को मारनेवाली देवी कुमारी कर्डे (Charlotte Corday) का विचार और प्राणदण्ड, निराश्रया विधवा राजरानी का मेम्बर हेबेट (Hebert) के हाथों अपमान, अन्याय विचार और प्राणदण्ड, सन्चे देशहितैषी २२ प्रधान पुरुषों की हत्या, अतुल रूप-लावण्य-सम्पन्ना विद्यावती तीक्ष्ण बुद्धिवाली साध्वी रोलैंड की स्त्री (Madame Roland) पर अन्याय अत्याचार और उसकी हत्या, सन् १७९४ में भाई के खून के प्यासे दुष्ट हेबर्ट, दाँत और रोमस्पेयर को क्रमशः प्राणदण्ड और गद्दर का जोर घटना, सन् १७९५-

६७ में नेपोलियन की क्रमश उन्नति, १७९८ में अली बोनापार्ट की मिसर-लीला, सन् १८०४ में नेपोलियन का सम्राट् होना, सन् १८१२ में मास्को-विभ्राट् (Burning of Moscow) के बाद नेपोलियन का सिहासन से उतारा जाना और एल्वा-प्रयाण, सन् १८१५ में नेपोलियन का फिर आना, १०० दिन की लड़ाई और नेपोलियन के सौभाग्य-सूर्य का चिरकाल के लिए अस्त हो जाना—अठारहवें लुई का फिर आविर्भाव, सन् १८४८ में दूसरा गदर और लुई नेपोलियन की अधीनता में दूसरी बार साधारणतन्त्र की स्थापना, सन् १८५२ में बड़े चाचा के पदानुसरण द्वारा क्रमश तीसरे नेपोलियन के नाम से उसका सिहासन पर बैठना, सन् १८७० में जर्मनी से युद्ध और आत्मसमर्पण—इसके चार दिन बाद तृतीय साधारणतन्त्र की स्थापना, सन् १८७०-७१ में दो चार पाँच महीने तक जर्मन-सेना के द्वारा पेरिस का घेरा जाना—वहाँ के रहनेवालों को अनेक प्रकार के दारुण अभाव और हेश—सन्धि और शान्ति की स्थापना—मोसिओ टियर्स के शासन से शुरू करके मैकमेहन और गम्बोट आदि की प्रधानता और वर्त्तमान समय के महात्मा कार्ने का सभापति या प्रेसीडेंट होना, ये सब बातें सजीवभाव से मानसिक दृष्टि के सामने प्रकट सी होकर हृदय में एक अनिर्वचनीय भाव उत्पन्न कर देती हैं । सचमुच कलियुग में विधाता का विशेष-विधान-स्वरूप फ्रान्स का विराट् विप्लव जैसे सभ्य जगत् के इतिहास में अग्रगण्य है, वैसेही उसका स्मारक अतुल कीर्तिस्तम्भ आकाश-भेदी एफेलटावर भी है ।

महाराजा दिलीपसिंह । एफेल-स्तम्भ के निकटवर्ती एक होटल में

* मुसलमानों को प्रसन्न करने के लिए किया था । मुसलमानों की गुंथी के लिए निन्दा भी करता था ।

नाम

जानी

अकरमात् प्रसिद्ध पंजाब-केसरी प्रबल पराक्रमी रणजीतसिंह के पुत्र महाराजा दिलीपसिंह से मेरी मुलाकात होगई । इस प्रदर्शिनी के ययान में इनका अद्भुत वर्णन पाठकों को शायद नापसन्द न होगा । जिस प्रदर्शिनी ने विश्व ससार के जड, चेतन, चराचर, वनस्पति-वृत्त आदि के अनेक अद्भुत चमत्कारों को एकत्र करके, असख्य उपायो से, पृथ्वीमण्डल के लोगो को 'ज्ञान' बढ़ाने में सहायता पहुँचाई, उसी प्रदर्शिनी में, सिंहासन-च्युत सिख-मम्राट् को, लौकिक ऐश्वर्य की अस्थिरता के सर्जीव सात्त्वो के रूप में जगत् के आगे उपस्थित करना, मेरी समझ में विशेष शिक्षादायक ही होगा । मैं तो दिलीपसिंह को इस प्रदर्शिनी के दृश्यों में एक खास दृश्य समझता हूँ । यह भी मान-मर्यादा के अनुसार नित्य नियमित रूप से शाम को इसी होटल के बराण्डे में खो और बन्धु-बान्धवों के साथ आराम से बैठ कर भोजन आदि करते थे । यह एक अँगरेज का होटल था । यहाँ हिन्दुस्तानी पुलाव वगैरह भी मिल सकता था, इसी से वह नित्य यहाँ भोजन करते थे । मुलाकात के दूसरे दिन उन्होंने हम लोगों की कीमती दावत की और उसके बाद हम लोग उनके साथ धियेटर गये । और भी कई दिन मुलाकात हुई । एक दिन मैं उनके घर पर गया था । उस दिन उन्होंने मुझे अपने द्वारा भारतेश्वरी के नाम भेजे गये पत्रके और अपने सिखों के प्रति घोषणा-पत्रा की छरी हुई कापी और अपने मण्डिमुक्ता-शोभित राज-वेश का फोटो दिया । पहली खों के मरने बाद उन्होंने दुबारा

* इनमें, नर्म गर्म भाषा में काहेनूर हीरे की कीमत विकटोरिया के खास खजाने से मांगी गई थी ।

† Manifesto—सिख और भारत के सब हिन्दू-मुसलमानों को अंगरेजों के विरुद्ध भड़काना ही इसका उद्देश्य बतलाया जाता है । स्थानाभाव से इन दोनों पत्रों की नकल नहीं दी जा सकती ।

व्याह किया था। यह स्त्री भी अँगरेज-रमणी थी। 'महारानी' की बातचीत से जान पड़ता था कि ब्रिटिश गवर्नमेंट से फिर मिलने की उनकी सलाह न थी।

मेरी छोटी समझ के अनुसार मैंने दिलीपसिंह से इंग्लैंड लौट जाने के लिए कहा। इसके उत्तर में उन्होंने कहा—“अल्जियर्स देश में एक पैसे की एक रोटी खाकर इसी तरह अज्ञात-वास की हालत में रहूँगा, मगर अँगरेजों से आर्थिक सहायता न लूँगा”। लेकिन ये सब उनके पागलपन के खयाल थे। चोर से रुठ कर जमीन में रखकर राटी खाना इसी को कहते हैं। उनका फिर पञ्जाब पाने का प्रयास बौने की चोंद की पकड़ने की चेष्टा ही था। पश्चिम का सूर्य पूर्व में अस्त हो तो भी ब्रिटिश-गवर्नमेंट का शासन हट नहीं सकता। उन्होंने खुद भी कहा कि रशिया, फ्रान्स आदि उन्हें रत्ती भर भरोसा नहीं देते, मब ब्रिटिश-गवर्नमेंट के प्रबल प्रताप से हिचकते हैं। हमारे परम मङ्गल के लिए विधाता की विशेष कृपा से अँगरेज लोग भारत में आये हैं। उनका शासन चिरकाल तक हमें सुरभी बनावेगा। चालीस हजार पौंड की वार्षिक वृत्ति रणजीतसिंह के लिए 'साधारण' होना आश्चर्य की बात नहीं है। लेकिन प्राय ४० बरस तक वसी में सन्तुष्ट रह कर अन्त को आपत्ति करने से क्या हो सकता है? महाराज के दो लड़के थे, पर वे पिता के अनुगामी नहीं हुए। दोनों लड़कियाँ बेचारी उनके साथ ही थीं। उनकी माता का पहले ही देहान्त हो चुका था। महाराज के बाल्य-काल की अभिभाविका लेडी लॉगिन (Lady Logan) कहती थीं कि महाराज के साथ इन्साफ नहीं किया गया और महाराज को इन दशा में देखकर उन्हें बड़ा दुःख है। हमको भी इन कोमल-हृदया दयावती रमणी के साथ ही महाराज की अवस्था पर रोद हुआ।

लेकिन उपाय क्या था ? महाराज के पञ्जाव पर फिर अधिकार जमाने की चेष्टा से किसी ने सहानुभूति नहीं दिखाई और न हम ही दिखा सके । जरा सोच कर देखिए, जिस शासन-प्रणाली में राजरानी को भिचा सी माँगनी पड़ती है—स्वयं ब्रिटिश-साम्राज्य की अधीश्वरी को परिवार के भरण-पोषण के लिए “Honorable Guardians of the National purse” (जातीय धन-भाण्डार के मान्यवर अभिभावकों की सभा में) लिख कर कामन्स-सभा में रुपय-पैसे के लिए प्रार्थना करनी पड़ता है और बहुत कुछ आपत्ति तथा तर्क-वितर्क के बाद बड़ा मुश्किल से, सण्डित भाव (conditionally) से, वह प्रार्थना स्वीकृत होती है, वहाँ हमारा हार हुए महाराज का अपने वाप-दादे का राज्य पाने की कौन आशा हो सकती है ? इससे सिवा दस पेट काट कर अपना तोड़ बढ़ाने का जमाना गया । अब तो “Lebon est orue” (अम ही पूजा है) इस महामन्त्र की दीक्षा सबको लेनी चाहिए ।

जो कुछ हो, महाराज की एक बात से मैं बहुत ही खुश हुआ । महाराज वारह वर्ष की अवस्था में पञ्जाव के रत्न सिंहासन से उतारे जा कर इंग्लैंड के एक स्कूल में पढ़ने के लिए भर्ती कर दिये गये थे । जब मुझसे मुलाकात हुई, तब उनकी अवस्था ५० बरस से ऊपर की थी । वह इतनी उम्र तक प्रिंस आफ वेल्स आदि बड़े बड़े आदमियों की सोहबत में बराबर अँगरेजों में ही हिले मिले रहे, मतलब यह कि मातृ-भाषा के व्यवहार का साबिका ही न पड़ता था, तथापि वह मुझसे शुद्ध और साफ हिन्दी में बातचीत करते थे । यहाँ तक कि “फलाना” “ढेकाना” तक न भूलें थे । हमारे यहाँ के जो लोग जरा सी अँगरेजी पढ़ कर या किसी अँगरेज के नीचे काम करके मातृभाषा को भूल जाते हैं, उन्हें महाराज से अवश्य शिक्का लेनी

चाहिए । अपने देश और अपनी भाषा को भूलना असम्भव है । और जो भूल जाते हैं उन्हें पागल ही समझना चाहिए ।

पेरिस में मुलाकात होने के दो बरस बाद दिलीपसिंह को अपना भ्रम देख पडा । इसी अवसर में उन पर फालिज भी गिर पडा । वह इंग्लैंड लौट गये और भारतेश्वरी से फिर मिले । इसके थोड़े ही दिन बाद उनकी मृत्यु हो गई । जब भारत में आने की आशा जाती रही और महाराज यूरोप में ही रहने लगे, तब महारानी विक्टोरिया ने उनको एक स्नेहपूर्ण पत्र लिखकर बहुत कुछ खेद प्रकट किया था । पत्र की नकल नीचे दी जाती है ।

Windsor Castle, July 6th, 1886

Dear Maharaja—I hear extraordinary reports of your resigning your allowance and of your intending to transfer your allegiance to Russia I cannot believe this of you who always professed such loyalty and devotion towards me, your truest friend, and who, I may say, took a maternal interest in you from the time when, not thirty two years ago, you came to England as a beautiful, & charming boy ! I watched your life with true interest, and thought your home with your amiable wife and fine children was a pattern to all India Princes But after the death of your really true and devoted friend, Colonel Oliphant, bad and false friends have surrounded you, and put things into your head and heart which I am sure never could under other circumstances have enclosed them

I let me appeal to all that is noble in you, and ask you to abandon wild ideas and plans, which can only plunge you into deeper difficulties and lead to disastrous consequences Think of me as your best friend and the godmother of your dear son who bears my name

Trusting that you may be able to give me assurance that these reports are untrue,

Believe me always,

Your true friend,

VICTORIA I R

इसी समय दिलीपसिंह ने रूस से सहायता पाने की चेष्टा की, पर उनका मनोरथ सफल नहीं हुआ । इसके लिए अनेक फ़्रेंच भद्र

पुरुषों ने रूस के उस समय के चान्सलर की निन्दा की कि इंग्लैंड को हैरान करने का ऐसा अच्छा मौका छोड़ कर उन्होंने बड़ी ही मूर्खता का काम किया। फ्रेंच लोग ऐसी ही प्रकृति के आदमी हैं। जब भारत में, मनीपुर में, हगामा हुआ था, तब पेरिस के अनेक अखबारों ने यह ममभ्र कर खूब खुशी जाहिर की कि अब अंगरेजों के हाथ से भारत निकल जायगा। ऐसी निपट साधारण घटना को लेकर इस प्रकार के आन्दोलन करने से अनुचित डाह और नैतिक असारता ही प्रकट होती है। यूरोप के अनेक देशों में, खास कर फ्रान्स में, अनेक लोग डाह के मारे भारत के सम्बन्ध में अंगरेजों के अमङ्गल की कामना किया करते हैं, और इसी उद्देश्य से वातचीत में हमारे इस मामले में सहानुभूति प्रकट करने में भी नहीं हिचकते। किन्तु चाहे फ्रेंच हो और चाहे रूसी, हजार चेष्टा करने पर भी वर्तमान व्यवस्था में किसी तरह का तिल भर का भी परिवर्तन वे नहीं करा सकते। इंग्लैंड का शासन नैतिक पराक्रम पर अटल है, वह आसुरिक बल नहीं है। इस बात को जो साधारण बुद्धि के आदमी नहीं समझते, केवल वे ही ऐसी ऊटपटांग बातों को अपने मन में स्थान दे सकते हैं। ऐसे लोग बाल बॉका तो कर ही नहीं सकते, उलटे डाह की आग से आपही जला करते हैं।

'रहने के घर' का प्रत्यक्ष इतिहास (Histoire de L'habitation de l'homme) एफेल-स्तम्भ से उत्तर और के फाटक को जाने से दोनों ओर, मानव-समाज की आदिम अवस्था से लेकर वास-गृह की सिलसिलेवार किस प्रकार उन्नति हुई है, यह दिखाने के लिए, लगभग १४ रशी लम्बे और २ रशी चौड़े स्थान में प्रमाण गृह आदि बने हुए हैं। ऐतिहासिक-युग के पूर्व समय के निवास-स्थान चार पक्तियों में स्थापित हैं।

(१) बिना छत के, पत्थर की दीवार से घिरे हुए साधारण आश्रय स्थान ।

(२) गुहा-गृह । पुराशैलिक (Palaeolithic) और नवशैलिक (Neolithic) युगों में यूरोप और एशियाखण्ड की बहुत सी गुफायें प्राथमिक (Primitive) मानव के रहने का स्थान थीं । वर्तमान समय में भी तुशमान आदि कुछ असभ्य जातियाँ कन्दरा के सिवा दूसरे प्रकार का आश्रय जानती ही नहीं ।

(३) खूनी जानवरों की चोट से बचने के लिए किसी जलाशय में गडों हुई थूनियों पर रखी हुई भौपडी । यहाँ यह दिखलाया गया है कि अस्त्र आदि के न होने के कारण उस समय जलते हुए अंगारों से काठ काटा जाता था । इतिहास-बहिर्भूत (Prehistoric) समय में यूरोप के अनेक कुण्डों और भोलो में इसी तरह के गाँव के गाँव बसे थे । वर्तमान समय में बोर्नियो (Borneo) सिलिविस (Celebes) और कैरोलिन द्वीप-पुञ्ज (Caroline Islands) में, न्यूगायना (New Guinea) के अन्तर्गत डोरी उपसागर (Bay of Dore) में, मध्य अफ्रिका के मोर्हिया (Mothrya) कुण्ड में (गुलाम पकड़नेवाले डकैतों के डर से), दक्षिण अमेरिका की माराकाइबो नहर (Gulf Maracaibo) आदि अनेक स्थानों में इस तरह के गाँव देखे जाते हैं । कश्मीर में भी पानी में तैरते हुए घर हैं ।

(४) हरिण (Reindeer) पालिश किये हुए पत्थर (polished stone पीतल (Bronzed) और लौहयुग (Iron Epochs) के कुछ साफ़ घर बगैरह ।

ऐतिहासिक समय के घर पाँच श्रेणियाँ में बाँटे गये हैं ।

(१) प्राथमिक सभ्यता ।

(२) आर्य-सभ्यता ।

(३) रोमन पाश्चात्य-सभ्यता ।

(४) रोमन प्राच्य-सभ्यता ।

(५) पृथ्वी की अन्यान्य जातियों की सभ्यता । यह सभ्यता भारत-यूरोपियन (Indo European) सभ्यता के बाहर है । और, इसी कारण सारे मानव-समाज की उन्नति के किसी काम नहीं आई ।

सन् १५०० के राजा सिसस्ट्रीस के शासनकाल के मिसरदेशीय मकान, सीरियन, फिनिशियन, सन् १००० के हिब्रू और हाट्स्कन, सन् ७०० के आसीरियन, पेलसगियन, ईसा के सन् से ४५० बरस पहले के पेरिक्लिस के समय के ग्रीस के मकान, ईसा से ३०० बरस पहले के हिन्दुओं के मकान, पारसियों रोमनों वाइजन्टाइनों और अरबों के मकान, ४०० बरस पहले के मेक्सिको के आदिम रहनेवाले अज्टेक लोगों के घर, वर्तमान काल के स्कण्डिनेवियन और आफ्रिकन असभ्य लोगों की भोपड़ियाँ, गुलाम हबशियों के भोपड़े, सूडन चीन और जापान के लोगों के घर और ग्रीनलैंड का एक बरफ से ढका हुआ छोटा सा गाँव । इतनी चीजें इस जगह के प्रधान दृश्यों में से हैं ।

इतिहास से पहले की असभ्यता के घरों में उस समय के माफिक कपड़े पहने हुए उसी अवस्था में मनुष्य-मूर्तियाँ रक्खी हुई हैं । ऐतिहासिक और वर्तमान समय के घर, महल और भटारियाँ में अपने अपने देश का पहनावा पहने भिन्न भिन्न देशों के स्त्री-पुरुषों की मूर्तियाँ विक्री के लिए रक्खी हुई हैं । बड़े भारी कारीगर गार्निए ने इस जगह पर जैसी असाधारण योग्यता से सब सामग्री ठीक ठीक बना कर यथास्थान रक्खी है, उसकी प्रशंसा कबल साधारण दर्शक ही नहीं करते, बल्कि पृथ्वी के सब देशों के पुरातत्त्व और वर्तमान-तत्त्व जाननेवाले पण्डित भी उस पर रोभ गये हैं । जगह जगह पर

प्रयोजन के अनुसार अत्यन्त प्राचीन काल के चित्र आदि देख कर वैसी ही पोशाक तैयार करके काम में लाई गई है। यह गवेषणा और उसका प्रत्यक्ष प्रचार वास्तव में बड़े महत्त्व का काम है। सैकड़ों पुस्तकों पढ़ने पर भी जिस ज्ञान के पाने की सम्भावना नहीं, वह ज्ञान इस स्थान को पहर भर देखने से ही सहज में पाया जा सकता है। जगत् की मध्य और असम्य सब जातियों को शिक्षा देने के लिए यूरोप, खास कर इंग्लैंड, फ्रान्स और जर्मनी ने जैसे अतुलनीय उद्यम-उत्साह के साथ यत्न किया है और कर रहे हैं, उस ऋण को सारा कभी चुका नहीं सकता। पर हम ऐसी भाग्यहीन दरिद्र जाति हैं कि ऐसे सहज और सस्ते ज्ञान का भी प्राप्त नहीं करते। एक भयानक आलस्य शिथिलता और अनिवार्य धन-चिन्ता ने हमारी बुद्धि को इस तरह ढक रक्खा है कि हम जैसे मनुष्य ही नहीं रहे। कल्पना का शैतान मजीब भाव से हमारे ऊपर बेहद यथेच्छाचार के साथ बिना किसी बाधा के हुक्म चला रहा है। जो लोग 'शिक्षित' होना का भारी अभिमान रखते हैं, उनको भूल कर भी न समझना चाहिए कि वे अशिक्षितों की अपेक्षा बहुत ऊँचे दर्जे के जीव हैं। उन में और अशिक्षितों में केवल उन्नीस-बीस का फर्क है। एम० ए०, डी० एल० उपाधि-धारी "चार पैसे पैदा करनेवाले" म्यूनिसिपल कमिश्नर, जस्टिस आफ् दि पीस इत्यादि इत्यादि, महामहिमार्णव श्रीयुत लाला मदारीलाल रायबहादुर में और मक्खन अहीर, बच्चू कलवार और दीन दरिद्र मुल्लू जुलाहे में बहुत अधिक अन्तर नहीं है। अधिक कहने की क्या जरूरत है, केवल यह "मानव वास-गृह का प्रत्यक्ष इतिहास" ही यूरोपियनों की योग्यता और शक्ति का जैसा परिचय दे रहा है, वह योग्यता और शक्ति हमारे यहाँ के हजार हजार विद्यावारिधियों और विद्या-दिग्गजों को स्वप्न में भी नहीं प्राप्त हो सकती। हमारे यहाँ के

शिक्षित लोग “कहीं की ईंट कहीं का राडा, भानमती ने कुनवा जोडा” की कहावत को प्रत्यक्ष दिखाने में बड़ सिद्धहस्त हैं । कोई लुप्त प्राचीन ग्रन्थ देवयोग से उनके हाथ में पड जाय ता उसका अनुवाद, नक़ल या धेमालूम चोरी करके महा गवेषक बन कर बाह्यवाही लूटने के लिए सबके भागे तैयार रहेंगे । लेकिन किसी मौलिक तत्त्व की खोज के समय वे केवल खीसें वा देने के और कुछ न कर सकेंगे । उस समय उस धार में अस्सी बरस की नानी जितना समझ सकती है, उतना ही वे सुशिक्षित भी समझ सकते हैं । यूरोप के महावीर स्टेनली ने जैसी उदारता, उच्च श्रेणी की सहानुभूति और सहिष्णुता, विपुल क्षमता और असाधारण अध्यवसाय दिखलाया है, उसका शताश भी हमारे देश का कोई आदमी नहीं दिखा सकता । केवल परोस की और सुसुरार की स्त्रियों के सामने कई दर्जे पास होने की बहादुरी हाँकने से और स्त्री के निकट अपने मुँह अपनी धडाई करने से न कोई सुशिक्षित कहा जा सकता है और न किसी को मनुष्यत्व ही प्राप्त हो सकता है । बाबूजी ने सुसुराल में भ्रमर सास के मुँह से, आड सं, सुन लिया कि “ऐसा दामाद बड़े नसीब से मिलता है । भटपट भटपट कई दर्जे पास कर डाले और हाकिम की नौकरी करके हमारी मुन्नी को खूब गहने बनवा दिये हैं । कई हजार रुपये बैंक में भी जमा कर चुके हैं,” फिर क्या पूछना है । भीम, अर्जुन, न्यूटन और डार्विन, सब उनके आगे हेच हैं । वे अपनी समझ से उच्च-आकाक्षा की चोटी पर चढ गये । और एक बात है, जिस देश के पुरुषों को ‘अच्छी नौकरी मिले’ और स्त्रियों को ‘खूब गहने से लदी रहो’ कह कर आशीर्वाद दिया जाता है, उस देश के लोग कदा तक विनाश की राह में आग बढ गये हैं, इसका निर्याय बहुत बड़ी ताकत की दूरबीन भी नहीं कर सकती । यहाँ आजकल जडता का ही साम्राज्य है । जडता का ही

समान है। हाथ, इतने जड कितनी सदियों में मुक्ति पा सकेंगे।
 यथार्थ मनुष्यत्व बड़ी कठिन बात है। उममें किसी का मुँह न
 ताक कर केवल न्याय और कर्तव्य की राह में सीधे खड़े होकर
 चलना होता है, भाव-राज्य में बहुत ऊँचे उठना होता है, ससार में
 बहुत से साधारण स्वार्थी को पददलित करके दूरदर्शनी दृष्टि से
 सोच-विचार कर आगे बढ़ना होता है, क्रूर-रूप-हृदय को प्रशान्त
 महासागर सा बना लेना होता है, देश-काल के अन्तर को मिटा कर
 सारी पृथ्वी को अपने हृदय में स्थान देना होता है, तब मनुष्य मनुष्यत्व
 का अधिकारी होता है। नहीं तो गुरेला, बुशमान और मनुष्य में और भेद
 ही क्या है? पादरी-वीर धर्मात्मा महाप्रेमिक डाक्टर लॉविगस्टन के
 समान भौगोलिक आविष्कार के द्वारा ज्ञान फैलाने और सताये गये दीन-
 दुखी धर्महीन हबगियों के उद्धार या सुधार के लिए तन-मन-वन जीवन
 अर्पण कर देने का भाव हमारे यहाँ के कितने आदमियों के हृदय में
 होगा? 'योग' और 'भक्ति' के बाहरी आडम्बर के सम्बन्ध में बहुत
 लोगो के मुँह से अनेक लम्बी-चौड़ी बातें सदा सुनने में आती हैं,
 किन्तु योग और भक्ति पाने के प्रथम और प्रधान उपाय जो ज्ञान
 और कर्म हैं उनका नाम तरु बहुत ही कम लोग जानते हैं। इसके
 माने और कुछ नहीं हैं। जहाँ बराबर आलस्य है, आँख मूँद कर
 अमीरी और आराम है, उसी ओर सोलहो आने हमारा मुकाब है।
 और, जहाँ स्वार्थत्याग, शरीर और मन का परिश्रम है, उस ओर से
 हम हजार हाथ हटे रहते हैं। मरने के बाद योग-भक्ति की चर्चा के
 लिए खूब अवकाश मिलेगा, मगर कर्म की आशा नहीं है। अतएव
 मन, मस्तिष्क, हाथ-पैर आदि के सही सलामत रहते यदि हम उनसे
 ठीक काम न लेंगे तो फिर पीछे पछतावे की आग में जलना पड़ेगा।
 विधाता ने हमको इस लोक में जड और चैतन्य के अद्भुत सम्मिलन-

सबल इस शरीर और मन को देकर ऐसी दया दिखाई है कि इनके द्वारा किये गये छोटे छोटे कामों से भी हम लोग बहुत सी उन्नति कर सकते हैं । परानर तीन रात तक आँख मूँद कर ध्यान करने से जितनी आत्मा को उन्नति होती है, उससे कहीं अधिक आत्मा को उन्नति पानी में डूबते हुए एक आदमी को जान बचा सकने से होती है । अतएव इस अवस्था में इस पृथ्वी पर हमारे लिए कर्म ही ईश्वर की उपासना और आराधना—Work is Worship— है ।

स्वेज-पनामा-भवन । एफेल-टावर के दक्षिण ओर प्रथम स्वेज और पनामा का भवन है । यह हिंदू ढङ्ग का एक अजीब तरह का घर है । स्वेज नहर की पूरी नकल एक भारी टेबुल पर बनी हुई है । बहुत से दर्शकों के जमा होने पर घर में अन्धकार कर दिया जाता है और बहुत सी छोटी छोटी विजली की रोशनियों से नहर प्रकाशित कर दी जाती है । जुगनू की तरह रोशनियाँ जल रही हैं, जहाज जा रहे हैं । दोनो ओर स्वेज और पोर्ट-सैड बन्दर में अनेक जहाज लगे हुए हैं । भारत और भू-मध्यसागर में कितने ही जहाज तैर रहे हैं । स्वेज-नहर क्या, एक अद्भुत वैज्ञानिक तमाशा है । चारों ओर नहर के कल-कारखाने और साज-सरजाम की नकल सजाई रखी हुई है ।

पनामा । पैसिफिक महासागर और अटलांटिक महासागर को जोड़ने के लिए, योजक के इस पार उस पार, पनामा से कोलन तक ५४ मील की जो नहर निकाली गई है, उसकी कल-कारखाने सहित पूरी नकल एक जगह पर रखी हुई है । स्वेज में केवल मरुभूमि को काट कर नहर खोदी गई है, पर इसमें पहाड भी काटने पडे हैं और कई नदियो से भी मेल रखना पडा है । इसके सिवा दोनो समुद्रों की सतह की उँचाई-निचाई में बडा अन्तर है । इस मेल को

मिलाना भी सहज काम नहीं । अतएव इन कामों के लिए तरह तरह की कलों से काम लिया जाना दिखाया गया ।

कानफिडारेसिओ अर्जेन्टिना (Confederacion Argentina)-गृह । अर्जेन्टाइन या रीप्य साधारण तन्त्र—लाप्लाटा और पाटागोनिया का मिलित राज्य । हर घर में उस देश के प्रचलित सिक्के, तीन चार बड़े बड़े साधारण और रिलीफ मैप (नक्शे), प्रधान दृश्यावली, उद्भिद, जीव-जन्तु और बड़े आदमियों के फोटो और अन्यान्य प्रकार के चित्र, तथा स्थानीय आचार-व्यवहार आदि दरसानेवाली मूर्तियाँ बड़े अच्छे ढंग से रक्खी हुई हैं । चित्रों में ग्रान चाको (Gran Chaco) के प्रधान शिकार के जङ्गल का चित्र बहुत ही मनोहर है । पाराना (Parana) नदी के तीर-वर्ती जीव-जन्तु-पूर्ण एक बने जङ्गल की नकल भी दर्शनीय है । मूषकजातीय गिनी शूकर, चुद्रकाय टूको, हिस्स जागुयर, (Ctenomys Braziliensis) चुद्र हरिण और तरह तरह के पक्षियों व कीड़ों का समूह भी कम कौतूहल-वर्धक नहीं है । उद्भिदों में एक तरह का नवजातीय तालवृक्ष (Trithrinax), नारियल-खजूर (Cocos Detib) अर्थात् नारियल का ऐसा पेड़ और खजूर का ऐसा फल और रेशम की तरह कोमल भाव से उज्ज्वल रूपहला और धान के ढंग का टोटोरस-पम्पस-वृक्ष (Totoras-Gynerium Argentum) मुझे बहुत अच्छे मालूम पड़े । लोहे, ताँबे और चाँदी की खानों की नकल भी यहाँ दिखाई गई थी । मूर्तियों में लासो और बोलस (Lasso and Bols) तथा पेरू देश को स्वाधीनता देनेवाले सेनापति सन मार्टिन (General San Martin) की बुडसवार मूर्ति विशेष दर्शनीय है । लासो और बोलस दोनों मिश्र-गाड़को (Gaucha) जातीय अर्द्ध-सभ्य पुरुष हैं । फन्देदार चमड़े की रस्सी का गुच्छा लिये छोटे नाटे घोड़ों पर ये दोनों मूर्तियाँ हैं । स्थानीय

वस्तुओं में ऊन, चर्बी, नमकीन मांस, उष्ट्रपत्ती के पख, चाँदी, लोहा, फोयला, अस्त्र-शस्त्र, स्थानीय लोगों के व्यवहार में आनेवाली और ऐतिहासिक चीजें दिखलाई गई हैं । पल्टन की पोशाक नये ही ढंग की है । राजधानी बुन्जायरा (Buenos Ayres) का रिलीफ नकशा सुन्दर शहर के लायक ही है ।

ब्रेजिल गृह । ब्रेजिल या सुन्दर पच्छिमराज्य के अन्तर्गत जङ्गल । असल दरय की नकल यहाँ सजीव सी जान पड़ती है । बड़ी से बड़ी और छोटी से छोटी विचित्र पूँछवाली, अनेक रङ्ग की चिड़ियाँ वृक्षों पर ऐसी बैठी (stuffed) हैं कि दूर से कोई उन्हें नकल नहीं बता सकता । जङ्गल के सब जीव सजीव से रक्खे हुए हैं । साँप (Sollouco, Jrralae, &c) इस तरह फन उठाये हैं, मानों चोट करने ही चाहते हैं । नाग के भय से भाग रहे छोटे छोटे जीव ऐसे बनाये गये हैं कि मानो सचमुच भाग ही रहे हैं । बीस बाईस हाथ का लम्बा एक बौआ (Boa Constrictor) एक सुअर को पकड़े मार रहा है । उस देश की असभ्य स्त्रियाँ एक तरह के प्रवाल-सर्प को गले में डार की तरह पहनती हैं । यह साँप छोटा और उज्ज्वल रङ्ग का होता है । यह साँप भी यहाँ शान्त निरीह भाव से पड़ा हुआ है । वनबिलाव, तेंदुए, जागुयर, स्लाथ, स्याहो आदि जीव चारों ओर फैले हुए हैं । एक अद्भुत दृश्य है । सजाने की तारीफ तो की ही नहीं जा सकती ।

उद्भिद् । इस इमारत में एक भारी उद्भिद्घन (Green House) स्थापित है । इसमें ब्रेजिल-प्रदेश के खास राम लता-गुल्म-वृक्ष आदि जीत जागते रक्खे हुए हैं । एक एक वृक्ष में सेवार से शुरू करके इतनी शाखायें हैं कि योरप के बहुविस्तृत भूमि-खण्ड में भी इतने उद्भिद् एकत्र नहीं देखने को मिलते । वृक्षों पर चढ़नेवाली लतायें (Canisteria, प्रधानत Malpighiana) पेड़ पेड़ पर फिर कर माला

की तरह शोभायमान हो रही हैं । वृक्षों और पौधों में अनेक रङ्ग के फूल खिले हुए हैं । यहाँ हमारे यहाँ का सेमर का पेड़ भी है ।

चित्र । आमाथन (Amazon) नदी के किनारे का पारुआकुआरा (Paruacuara) का जङ्गल और पहाड़ी सिलसिला; पारा (Para) नगर का बाज़ार और राजधानी रिओ जेनीरो (Rio Janeiro) की दृश्यावली खास कर देखने की चीजें हैं ।

मूर्तियाँ । मलाटो (Mullattoes) मामालूको (Mamalucoes), मेस्टिजो (Mestizoes) और खास आदिम निवासियों के आचार-व्यवहार दरसानेवाली बहुत सी मूर्तियाँ रक्खी हैं ।

चीजें । काफी, चीनी, तम्बाकू, चाय, सोना हीरा और अनेक प्रकार के कीमती पत्थर अस्त्र-शस्त्र, स्थानीय भिन्न भिन्न जातियों की पोशाकें तथा व्यवहार में आनेवाली चीजें और बहुत सी ऐतिहासिक सामग्री रक्खी हुई है ।

मेक्सिको-गृह । प्रायः चौदह काठा जमीन में यह भारी महल है । इसके भीतर तीन खण्डों में सब सामान भरा पड़ा है । उनमें से किस किस का वर्णन किया जाय ? और और स्थानों की तरह इसका भी सम्पूर्ण वर्णन असम्भव है । हर एक देश की पुरानी से पुरानी चीज इकट्ठी करने में फ्रेञ्च लोगो ने भरसक कसर नहीं रक्खी है, और साथ ही हर एक देश के कारीगरो और रोजगारियों ने भी विज्ञापन का प्रचार होने की आशा से चीजे भेजने में कोताही नहीं की । यहाँ तक कि हर एक देश की खाने-पीने की चीजे, दवाएँ, पल्लंग, चौकी, कुर्सी, टेबिल आदि भी बहुत सी जगह घेरे हुए हैं । अब पाठक आपही समझ सकते हैं कि विशेष वर्णन करना सर्वथा असम्भव है ।

टोलटेक (Toltecs), अजटेक (Aztecs), माया (Mayas) आदि सभ्यासभ्य आदिम निवासियों के समय से लेकर वर्तमान यूरोपियन अधिवासियों के समय तक जितनी तरह की चीजे इस देश में विद्यमान रही हैं उन सबका भरसक समग्र किया गया है ।

इसी तरह बोलिविया (Bolivia), इकोयडर (Equador), वेनेजुला (Venezuela), कोलम्बिया (Colombia), पेरू (Peru), उरुगुये (Uruguay), पारागुये (Paraguay), चिली (Chili) आदि देश इसी तरह एक एक घर में दिखलाये गये हैं । इस विभाग में बालको की प्रसन्नता के लिए तरह तरह की चीजें एक घर में रक्खी हैं ।

टावर के बाईं ओर गैस-कम्पनी का घर है । नगर में गैस-कम्पनी की जो बड़ी इमारत है, यह उसी की नकल है । सन्ध्या के बाद इसकी छत, चोटियाँ, बराण्डे, दरवाजे, भरोखे आदि बेलवर की दीपमाला से प्रकाशित होते हैं । सारा घर जैसे सुसज्जित भाव से ठीक अग्रिमय हो जाता है ।

तार-घर । तार-घर एक लकड़ी का बना हुआ दोमञ्जिला मकान है । यहाँ पर, महात्मा एडिसन (Edison) के निकाले हुए टेलीफोन की प्रथम अवस्था से लेकर अब तक जो कुछ उन्नति हुई है सो सब मेशीनो के द्वारा दिखलाई गई है । दर्शक लोग उन मेशीनो का इस्तेमाल करके परीक्षा ले सकते हैं ।

स्वीडन-देश का भवन । यहाँ स्वीडन देश की तरह तरह की चीजें रक्खी हैं । कला-कौशल में दियासलाई, काच, और चीनी मिट्टी तैयार करने के कारखाने दिखलाये गये हैं । राजधानी स्टोकहलम के निकटवर्ती किसी स्थान की सुन्दर प्राकृतिक दृश्यावली और गटनवर्ग नगर का चित्र मनोहर है ।

नार्वे-गृह । समुद्र में मछली पकड़ने की अनेक तरह की कलें और कौशल, बल्गा और एल्क हरिण अन्यान्य जन्तु (stuffed), लापलैंड-निवासियों की भोपड़ी और गार्हस्थ्य जीवन को जताने-वाली मूर्तियाँ और बल्गा हरिण के रथ आदि यहाँ सजीव भाव से दिखाये गये हैं । चित्रों में “सात बहनों का भरना” (Seven Sisters' Fall) और वहाँ के फियर्ड (Fjord) की अनेक तरह की सुन्दर तस्वीरें हैं ।

इसके पास ही रूस के छोटे छोटे फूस से छाये हुए लकड़ा के घर, फिनलैंड देश के घर, मोनाको-प्रदेश की इमारतें, लोहे का पलस्तर किये घर और उनमें तैयार होनेवाली चीजों की प्रदर्शनी और तुर्की तम्बाकू का घर है । इस घर में सबसे अच्छी तम्बाकू तीन रुपये की पाव भर के हिसाब से मिलती है । प्रदर्शनी में दिखाया गये भिन्न भिन्न राज्यों की चीजे ठीक उन्हीं देशों की प्रथा के अनुसार बने हुए घरों में रक्खी हुई हैं, यह कम प्रशंसा की बात नहीं है ।

मध्यस्थल । एफेल-खण्ड से बाहर निकल कर मैं तो जैसे चकर में पड़ गया । तीन तीन चार चार बीघे के चबूतरों पर भारी भारी घर बने हुए थे । किसी में नक्काशी के काम, किसी में बड़े बड़े तैलचित्र (Oil painting), किसी में केवल जलचित्र (Water-colour painting) और किसी में अगणित कल-कारखाने भाप और बिजली के जोर से चल रहे हैं । कहीं हाथ से चलानेवाली मशीनें रक्खी हुई हैं । चारों ओर अनेक देशों की रेलगाडियाँ और एजिन कायदे से रक्खे हुए हैं । किसी भारी इमारत के भीतर सभ्य ससार के अनेक राज्यों की तरह तरह की चीजे रक्खी हुई हैं । कहीं दस बारह काठा जमीन में केवल सोने, चाँदी, हीरे, मानिक, मोती, मूँगे आदि के तरह तरह के अलङ्कार ही ढेर हैं । किसी घर में केवल

घडियाँ, किसी में खाली चीनी मिट्टी के बर्तन और एक जगह केवल फ्रान्स देश के रेशमी कपड़े जमा हैं । एक जगह पोशाक के ऊपर लगाने के नकली फूल-पत्ते और लतायें रक्खी हुई हैं । तरह तरह की लेडियो की पोशाके एक जगह इतनी रक्खी हुई हैं कि देखते देखते जी ऊब उठता है । कहीं पर इस्तेमाल में आनेवाली केवल धातुओं की बनी चीजें रक्खी हैं । कहीं केवल विजला का कारखाना है । कहीं केवल हवाई-विमानों का आद्योपान्त वृत्तान्त और साज-सरजाम रक्खा हुआ है । कहीं पर तरह तरह की नौकाओं और जहाजों की छोटी छोटी नकलें और उनका विवरण दिखाया गया है । कहीं पर प्रसिद्ध इंजीनियरी का कारखाना दिखलाया गया है । एक बड़ी भारी इमारत में युद्ध-सम्बन्धी सब सामान है । एफेल-स्तम्भ की तरह यहाँ भी सदा भारी भीड़ बनी रहती है । बड़ी कठिनता से हम लोगों को भीतर जाने को मिला । भीतर युद्ध का साज-सरजाम, तम्बू, कनात, सवारों, पोशाक, रसद, अस्त्र-शस्त्र आदि सब कुछ दिखलाया गया है । एक एक अजगर सी तोप देख कर मेरा तो हृदय दहल उठता था । युद्ध-सम्बन्धी वैज्ञानिक और इंजीनियरी की इतनी कले और कौशल यहाँ देखने को मिले कि उनकी गिनती करना, दर्शक के लिए, असम्भव ही है । तथापि बहुत सा युद्ध का सामान ऐसा है जो वहाँ दिखलाया नहीं गया । अस्पताल, पुल, खाई, किलेबन्दी आदि सब प्रत्यक्ष दिखाया गया था । यहाँ तक कि युद्ध-कवचों को शिचा देने के लिए जिस प्रणाली की आवश्यकता है, वह भी दर्शकों को दिखलाने की चेष्टा की गई थी । प्राचीन-युद्ध आदि और वाटर्ल्ड आदि महासमरों की सामग्रियाँ ऐतिहासिक विभाग में रक्खी हुई हैं । घुड़सवार और पैदल फौज की गति-विधि ऐसे स्वाभाविक ढंग से दिखाई गई है कि कहीं कहीं पर दर्शक उन्हें सजीव समझ कर चीक पड़ता है । प्राचीन समय के

अस्त्र-शस्त्र और यन्त्र आदि भी दिखलाये गये थे । युद्ध-विक्रम के गौरव से उन्मत्त फ्रान्स के वीरो ने इस इमारत में जातीय युद्ध-विद्या-सम्बन्धी बुद्धि और होशियारी प्रकट करने में यथाशक्ति कुछ फसर नहीं रहने दी । जर्मनी से हार जाने से क्या होता है ? वैज्ञानिक स्थल-युद्ध में प्रखर बुद्धिवाली उत्साहपूर्ण फ्रेञ्च-मण्डली किसी जाति से दबने-वाली नहीं है । इस इमारत के एक हिस्से में जल-युद्ध के साज-सज्जाम और जहाजों की नकल भी रक्खी है । जितना शीघ्र 'हो, ससार से युद्ध-विग्रह उठ जाना ही चाहिए । इसलिए बहुत देश के ज्ञानी पुरुष पूरी पूरी कोशिश कर रहे हैं* । इसी लिए मैं इस विभाग की जी खोल कर प्रशंसा नहीं कर सका । फ्रेञ्च लोग खुद भी अब पृथ्वी पर भाई का खून गिराना या भाइयों का खून गिरते देखना नहीं चाहते । उनकी इस महाप्रदर्शनी के उद्देश्यों में यह प्रधान उद्देश्य था कि सब देशों के लोग आवें, आपस में हेलमेल बढे और ससार में शान्ति स्थापित हो । यद्यपि राज-कर्मचारियों में से अनेक ऐसे हैं जो जर्मन लोगों से दारुण वैरभाव रखते हैं, तथापि साधारण प्रजा में यह भाव नहीं है और वे शान्ति ही पसन्द करते हैं । फ्रान्स की भूमि पर अनेक बार खून खराबा हो चुका है, अब रक्तपात होना उचित भी नहीं है । इसी तरह कहीं चिकित्सा-शास्त्र के अनेक विभागों की दवाएँ और औजार आदि रक्खे हैं । कहीं पर रसायन, भू-तत्त्व आदि अनेक श्रेणियों की वैज्ञानिक चीजें, सामान, कल-कारखाने आदि हैं । सब विभागों का पूरा पूरा हाल लिखना तो सर्वथा असम्भव ही है । केवल फल-घर के बारे में यहाँ कुछ लिखा जाता है ।

* पर वह कोशिश दिखाऊ थी । गत महायुद्ध ने यह प्रमाणित कर दिया है । अनुवादक ।

कल-घर । एफेल-स्तम्भ की तरह यह भी इञ्जीनियरी की बड़ी भारी करतूत है । पृथ्वी भर में एक छत की इतनी बड़ी इमारत और कहीं नहीं है । अँगरेज और अमेरिकन लोगो ने एक स्वर से स्वीकार किया है कि " It is the largest building under one roof in the World " ३७७ फुट के घेरे पर एक खम्भा है । बीच में सारे सभ्य जगत् के भिन्न भिन्न देशों के राजनैतिक चिह्न (coat-of-arms) अङ्कित हैं । यहाँ की अधिकांश कले (मेशीनें) फ्रान्स की हैं । किन्तु इंग्लैंड, वेल्जियम, अमेरिका आदि अन्यान्य देशों की भी बहुत सी कले २००० घोड़ों की ताकत (2000 horse-power) से घटे में पाँच लाख किलोग्राम (500000 Kilogrammes) भाप के द्वारा चलती हैं । मेशीन से कागज बनने का दृश्य वास्तव में विचित्र ही था । इस घर के एक हिस्से में एडीसन के उन्नत फ़ोनोग्राफ के द्वारा दर्शक लोगो को असली मनुष्य के गले के गाने का मजा मिलता है । धन-कुबेरो के घरों के लायक विजली की रोशनी भी यहाँ दिखलाई गई है । कुछ कलें विजली के जोर से चलती हैं । पाश्चात्य राज्यों के भिन्न भिन्न घरों का वर्णन करना असम्भव ही है । अतएव पाश्चात्य खण्ड को छोड़ कर प्राच्य खण्ड का वर्णन किया जाता है ।

जापान-भवन । एशियाखण्ड का यह छोटा सा टापू वर्तमान समय में खूब उन्नत है, और दिनों दिन अधिक उन्नति के लिए राजा तथा समाज, दोनों, का प्रयत्न जारी है । जापान बहुत ही छोड़े समय में इतने नीचे से इतने ऊपर चढ़ आया ! यह देख कर हमें भी इस समय जापान का अनुसरण करना चाहिए । इतने छोटे से देश में २५,००० स्कूल हैं । और क्या चाहिए ? यहाँ पर जापान का धना रेशम, चीनी मिट्टी, सोने, चाँदी और एनामेल (enamel) का काम बहुत ही विचित्र और सुन्दर देखने को मिला । नेकरे (Nacre)-लिखित

अस्त्र-शस्त्र और यन्त्र आदि भी दिखलाये गये थे । युद्ध-विक्रम के गौरव से उन्मत्त फ्रान्स के वीरो ने इस इमारत में जातीय युद्ध-विद्या-सम्बन्धी बुद्धि और होशियारी प्रकट करने में यथाशक्ति कुछ कसर नहीं रहने दी । जर्मनी से हार जाने से क्या होता है ? वैज्ञानिक स्थल-युद्ध में प्रखर बुद्धिवाली उत्साहपूर्ण फ्रेञ्च-मण्डली किसी जाति से दबने-वाली नहीं है । इस इमारत के एक हिस्से में जल-युद्ध के साज-सज्जाम और जहाजों की नकल भी रक्खी है । जितना शीघ्र ही, सत्सार से युद्ध-विग्रह उठ जाना ही चाहिए । इसलिए बहुत देश के ज्ञानी पुरुष पूरी पूरी कोशिश कर रहे हैं* । इसी लिए मैं इस विभाग की जो खोल कर प्रशंसा नहीं कर सका । फ्रेञ्च लोग खुद भी अब पृथ्वी पर भाई का खून गिराना या भाइयों का खून गिरते देखना नहीं चाहते । उनकी इस महाप्रदर्शनी के उद्देश्यों में यह प्रधान उद्देश्य था कि सब देशों के लोग आवें, आपस में हेलमेल बढे और सत्सार में शान्ति स्थापित हो । यद्यपि राज-कर्मचारियों में से अनेक ऐसे हैं जो जर्मन लोगों से दारुण वैरभाव रखते हैं, तथापि साधारण प्रजा में यह भाव नहीं है और वे शान्ति ही पसन्द करते हैं । फ्रान्स की भूमि पर अनेक बार खून खराबा हो चुका है, अब रक्तपात होना उचित भी नहीं है । इसी तरह कहीं चिकित्सा-शास्त्र के अनेक विभागों की दवाएँ और औजार आदि रक्खे हैं । कहीं पर रसायन, भू-तत्त्व आदि अनेक श्रेणियों की वैज्ञानिक चीजें, सामान, फल-कारखाने आदि हैं । सब विभागों का पूरा पूरा हाल लिखना तो सर्वथा असम्भव ही है । केवल फल-धर के बारे में यहाँ कुछ लिखा जाता है ।

* पर यह कोशिश दिखाऊ थी । गत महायुद्ध ने यह प्रमाणित कर दिया है । अनुवादक ।

कल-घर । एफेल-स्तम्भ की तरह यह भी इञ्जीनियरो की बड़ी भारी करतूत है । पृथ्वी भर में एक छत की इतनी बड़ी इमारत और कहीं नहीं है । अंगरेज और अमेरिकन लोगो ने एक स्वर से स्वीकार किया है कि " It is the largest building under one roof in the World " ३७७ फुट के घेरे पर एक खम्भा है । बीच में सारे सभ्य जगत् के भिन्न भिन्न देशों के राजनैतिक चिह्न (coat-of-arms) अङ्कित हैं । यहाँ की अधिकांश कले (मेशीनें) फ्रान्स की हैं । किन्तु इंग्लैंड, बेलजियम, अमेरिका आदि अन्यान्य देशों की भी बहुत सी कले २००० घोड़ों की ताकत (2000 horse-power) से घटे में पाँच लाख किलोग्राम (500000 Kilogrammes) भाप के द्वारा चलती हैं । मेशीन से कागज बनने का दृश्य वास्तव में विचित्र ही था । इस घर के एक हिस्से में एडीसन के उन्नत फोनोग्राफ के द्वारा दर्शक लोगो को असली मनुष्य के गले के गाने का मजा मिलता है । धन-कुपेरो के घरों के लायक बिजली की रोशनी भी यहाँ दिखलाई गई है । कुछ कलें बिजली के जोर से चलती हैं । पाश्चात्य राज्यों के भिन्न भिन्न घरों का वर्णन करना असम्भव ही है । अतएव पाश्चात्य खण्ड को छोड़ कर प्राच्य खण्ड का वर्णन किया जाता है ।

जापान-भवन । एशियाखण्ड का यह छोटा सा टापू वर्त्तमान समय में खूब उन्नत है, और दिना दिन अधिक उन्नति के लिए राजा तथा समाज, दोनों, का प्रयत्न जारी है । जापान बहुत ही थोड़े समय में इतने नीचे से इतने ऊपर चढ़ आया । यह देख कर हमें भी इस समय जापान का अनुसरण करना चाहिए । इतने छोटे से देश में २५,००० स्कूल हैं । और क्या चाहिए ? यहाँ पर जापान का बना रेशम, चीनी मिट्टी, सीने, चाँदी और एनामेल (enamel) का काम बहुत ही विचित्र और सुन्दर देखने को मिला । नेकरे (Nacre) -लिखित

ग्रन्थावली, बक्स, छाता, वाँस की चोजें और नफ़लो फूल बड़े ही सुन्दर थे । 'हेमेजिगावा' अर्थात् चमड़े के पोर्टमेन्टो, पुतले और पैन्टिल (Pantile) के काम में शायद और कोई जाति जापान की बराबरी नहीं कर सकती । इसके बाद ही पर्शिया-भवन था । उससे निकलते ही मिसर देश का भवन मिला ।

कैरो की सड़क । यहाँ पर खड़े रह कर किसी की भी मजाल नहीं कि वह अपने को यूरोपखण्ड में समझे । मानूम पड़ता है, सशरीर एशिया-खण्ड में, किसी जादू के प्रभाव से, आगये । एक फ्रैञ्च कर्मचारी को किसी काम से बहुत दिनों तक मिसर में रहना पड़ा । नील-नदी के तीरवर्ती स्थान में बहुत दूर तक इस कर्मचारी की गति थी । इस कर्मचारी की मातृहती में वहाँ के बहुत से टूटे-फूटे पुराने मकान खोदे गये । तभी से यह कर्मचारी माल-मसाला इकट्ठा करने लगा । उसी ने नक्काशीदार लकड़ी के बराण्डे, दरवाजे, झरोखे आदि के द्वारा इस स्थान पर बहुत प्राचीन से लेकर वर्तमान समय तक के ढग से बने हुए बड़े बड़े पचीस मकान, मसजिद और मिनारेट (Minaret) तथा कई एक दूकानें बनवाई हैं । गन्धी अतर फुलेल बेच रहे हैं, नानवाई चपातियाँ सजाये बैठा है, हलवाई मिठाई रखे पैर फैलाये बैठा है । कहीं पर अरब लोग विकट चीत्कार करके गाना गा रहे हैं । किसी घर में मिसर की सुन्दरियाँ विशेष हाव-भाव के साथ नाच गाकर दर्शकों का मनोरञ्जन कर रही हैं । कहीं पर बन्दरो का नाच और साँपो का खेल हो रहा है । राह में बहुत सी स्त्रियाँ और लड़के गधे की पीठ पर चढ़े विचर रहे हैं । मिसर के, अरब के और यूरोपखण्ड के लोगों की इतनी भीड़ थी कि राह चलना कठिन था । हबहब मिसर का गुलजार बाजार हो रहा था । एक सौ गधे और उनका साजसर-जाम, सईस, दूकानदार, नाचनेवाली,

साजिन्दे आदि सब सामान खास कैरो से मँगाया गया था । यह स्थान बहुत ही मनोहर जान पडा ।

इसके बाद मरको बाजार, उस देश का नाचना गाना आदि देखा । फिर चीन और भारत के भवन मिले । भारत-भवन में सादी पगडो, चपकन और पाजामा पहने देसी खानसामा लोग चाय विसकुट आदि देकर दर्शकों की सेवा कर रहे थे । इस विभाग में स्थित हाइटी द्वीप, ग्वाटिमाला आदि छोटे छोटे घरों का नामोल्लेख करके अन्य ओर चलना चाहिए । ये सब सुन्दर विचित्र गठनवाले मकान यहाँ पर अन्य भारी और अच्छे मकानों के आगे तुच्छ से जँचते हैं । नहीं तो ऐसा एक घर अगर मन् १८८४ की कलकत्ते की प्रदर्शिनी में होता तो अनेक लोग उसे देख कर अपन नेत्रों को सफल समझते ।

यहाँ से प्रदर्शिनी की प्रदर्शिणा करनेवाली डिफ़विल रेलवे (Decauville Railway) पर चढ़ कर मैं दूसरे विभाग की ओर चला । इस रेल की छोटी छोटी खुली गाड़ियाँ ठोक कलकत्ते की ट्रामगाड़ी की ऐसी हैं । रेल की राह के दोनो ओर पृथ्वी की मुर्दा और जिन्दा सब तरह की भाषाओं में, बड़े बड़े अच्छे में, छपे हुए विज्ञापनों (placards) के द्वारा लोग 'वस्तुओं' का प्रचार कर रहे थे । उनमें से कुछ संस्कृत के और हिन्दी प्लैकार्ड देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई ।

आदर्शग्रामावली । इस रेल के जिस अंश में मैं उतरा, वहाँ कुछ गाँवों की नकल स्थापित थी । उनमें यवद्वीप (Java), सेनिगल (Senegal), मलगेचिया (Malgache), टाहिटी (Tahiti) कंगो (Congo), न्यू कालिडोनिया (New Caledonia) और गाबन मुख्य (Gabon) थे । पृथ्वी के अनेक स्थानों के, दूर दूर के देशों के, तीस चालीस निवासियों सहित घास-फूस और बाँस व ताड़ के पत्तों से पास ही पास बने हुए ग्राम बहुत सुन्दर जान पड़ते थे । इन

गाँवों को देखने से उस उस स्थान के गार्हस्थ्य जीवन का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त हो जाता है । हर एक स्थान के स्थानीय दूकानदार और स्थानीय लोग, स्थानीय भाव से, प्रदर्शिनी जब तक रहेगी तब तक, यहीं रहेंगे । इससे अधिक और क्या चाहिए ? एक अँगरेज़ विद्वान् का कथन है कि “इस तरह निश्चिन्त होकर बेखटके बेखर्च और बिना कुश के थोड़े ही समय में पृथ्वीपर्यटन और किसी तरह असम्भव है” यथा— 'We can linger in a Tahitian village, a Chinese, Cochinese, or Chinese, and examine the inhabitants, then going round the World, not in eighty days or even eighty hours but in an hour or an hour and a half, and without danger of being killed or eaten— which is certainly an advantage मेरी ममक में तो ऐसी व्य-

वस्था फ्रेञ्च लोगों के सिवा अन्य जाति से नहीं हो सकती । अमेरिकन लोगों ने भी इसी टकर का एक मेला किया था । मालूम नहीं कि वे कहाँ तक इस महाप्रदर्शिनी की बराबरी कर सके । परन्तु यह बात अवश्य है कि अमेरिकन लोगों में उत्साह और तेज तथा काम करने की चेष्टा खूब है । खास कर ऐसे लागडाँट के मामले में उन्होंने जो कुछ न कर डाला हो उसे थोड़ा समझिए । पृथ्वी की और कोई जाति जिस काम को एक पखवार में करेगी, उसे अमेरिकन लोग एक दिन में कर डालेंगे । अँगरेजों में श्रेष्ठ और असाधारण धी-शक्ति-सम्पन्न मनीषी हर्वर्ट स्पेन्सर अमेरिकन लोगों के अति अद्भुत उत्साह और अमानुषिक उद्यम को देखकर दग रह गये थे । इस बात को स्वीकार करने के लिए सारा जगत बाध्य है कि उद्यम, उत्साह और उन्नति में अमेरिकन लोग आदर्श हैं । ससार की उन्नति के लिए इस तरह और कोई शरीर और मन को लगा नहीं सकता । क्यों न हो ? वे अँगरेजों के ही बच्चे ठहरे । नये टग से नये देश (अमेरिका और आस्ट्रेलिया) में बस कर अग्र

वे अद्भुत चमत्कार दिखलावें तो आश्चर्य ही क्या है ? सच तो यह है कि मानव देह पाकर इस नश्वर शरीर और मन को अगर नर-रूपी नारायण की सेवा में न लगाया तो जन्म वृथा ही गया। ऐसी हालत में ७३ में और हम में अन्तर ही क्या रहा ? जब भी हमसे अच्छे रहे। उन्हें मनुष्य अपनी इच्छा के अनुसार अपने काम में तो लगा सकता है। हममें तो वह बात भी नहीं। हम तो केवल धातवीत की यहादुरी दिखा सकते हैं और काम के समय कुछ नहीं कर सकते। जब तक हम अन्य जातियों से "काम करने का सबक" न लेंगे तब तक हमारी उन्नति कभी नहीं हो सकती।

यवद्वीप। यहाँ के आदमी छोटे और पीले रंग के देखे। स्त्रियाँ देगने में आसाम की नागा-जाति के ढग की थीं। पर बहुत दुबली थीं। गाँव के पास एक नाट्यशाला थी। वहाँ विचित्र पोशाक पहने एक नये ढग के विचित्र नाजे के साथ जवान नर्तकियाँ नाच रही थीं। यह एक नये ढग के मनोरञ्जन और शिक्षा की वस्तु थी। इस नाट्य-मन्दिर में कुछ देर विश्राम किया, कुछ जलपान किया। फिर यव-द्वीप के लोगों का नाचना, गाना, बजाना देख-सुन कर चित्त को प्रसन्न किया। इस द्वीप के निवासी पहले बौद्ध थे। अब उनमें से अधिकांश मुसलमान हो गये हैं।

टाहिटी। पश्चिम-आफ्रिका के सेनिगाल नामक हबशियो के गाँव के पास टाहिटी गाँव दिखाया गया था। यहाँ के निवासी ताँबे के रंग के, सुबोल और मँझोले बोल के देख पडे। इनकी भाषा, खास कर औरतों की आवाज बहुत मीठी थी। इसमें कोई सन्देह नहीं कि चिर-वसन्त-शोभित, मनोहर सुगन्ध और फूलों से परिपूर्ण द्वीप के लायक ही इनका स्वर भी है। ये सब किस्तान हैं।

न्यूकालिडोनिया। यहाँ की स्त्रियाँ इतनी बदशकल हैं कि प्रबल

कल्पना के द्वारा भी वैसी बद्सूरती आँखों के आगे नहीं लाई जा सकती । बहुत दिनों तक फ्रान्स के शासन में रहने पर भी इस प्रशान्त महामागर के छोटे से टापू में अनेक मासलोलुप राक्षसजातीय मनुष्य इस समय भी देख पड़ते हैं ।

गाबन । आफ्रिका के गिनीउपकूल में स्थित गोरिलाओं की निवास-भूमि गाबन ग्राम में अनेक जानने की बातें देखीं । इस स्थान का कीड़े-पतंगों का समग्र प्राणितत्व-शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा रखने-वाले के लिए बहुत ही उपादेय है । निवासियों में अधिकांश लोग साधारण हथियारों की अपेक्षा सुन्दर और सुडौल हैं । यहाँ की लाल चोंचो बड़ी भयानक होती है ।

अलजीरिया, ट्युनिस आदि का देशों के घर, मसजिद, मिनारेट, वृक्ष-लता, चीजें, निवामी और बाजार आदि का केवल नामोल्लेख ही करके मैं अपने पाठकों को अन्यत्र लिये चलता हूँ ।

क्रमोन्नति का ऐतिहासिक भवन । यह भारी महल बाहर से जैसा सुन्दर है उससे कहीं अधिक हृदयग्राही और गभीर-उपदेश-पूर्ण भीतर का दृश्य है । दु रा है कि आँखों से बिना देखे इसके महत्त्व का ठीक अनुमान भी करना असम्भव है । इसके दृश्यो का पूरा वर्णन करना मनुष्य की शक्ति से परे है । कहीं पर मनुष्य जाति के पूर्व-पुरुष पर्वत की कन्दरा से भाँक रहे हैं, कन्दरा के पास शेर खड़ा है । कहीं पर नगे आदिमी लकड़ी पर लकड़ी रख कर रगड़ से आग पैदा कर रहे हैं । किसी वृक्ष के नीचे बल्कलधारी दीर्घकाय पुरुष चकमक पथरी ठोंक रहे हैं । कहीं पर मिसर की स्त्रियाँ बच्चे को गोद में लिये तोत बुन रही हैं । कहीं पर वागीचे के भीतर चटसार में ओक पण्डित लोग छात्रों को शिक्षा दे रहे हैं । कहीं रोमन राज-सभा और अदालत दिखाई गई है । किसी ओर प्राचीन असभ्य यूरोप के

लुहार की दूकान है । कहीं पर काल्डिया के भेंड चरानेवाले लोग नचत्र-मण्डल की सैर कर रहे हैं । किसी स्थान पर बल्गा-हरिण और सौल-मछली सहित शिविर-वासी एस्किमो का ससाराश्रम है । कहीं तक गिनाऊँ ? इसी तरह अनेक देशों का, अनेक युगों का, अनेक अवस्थाओं का सामाजिक जीवन, उस समय का पहनावा, आचार-व्यवहार और अस्त्र-शस्त्र यन्त्र आदि सर्जाव भाव से दिखलाये गये हैं । अचानक देखने से जान पड़ता है कि सब मूर्तियाँ सजीव हैं और अपना अपना काम कर रही हैं । इसी महल के एक पास अनेक देशों से इकट्ठी की गई ऐतिहासिक घटनाओं की चीजे और चित्र रखे हैं ।

पास के एक घर में अनेक देशों के अनेक प्राकृतिक दृश्य दिखलाये गये हैं । यहाँ से निकल कर निकारागुआ-भवन में उस देश के निकटवर्ती प्रशान्त महासागर की बहुत ही सुन्दर नकल देखने को मिली । छोटे छोटे जहाज तैर रहे हैं । नदी का सोता, कुड की लहरे और सागर की तरङ्गें सचमुच ही अद्भुत बनी थी । काच के ऊपर असली जल से ये सब दृश्य दिखाये गये थे ।

निकट ही और एक घर में पृथ्वी के धरे के नियुताश परिमाण का एक भारी ग्लोब रक्खा था । सारा गोलक देखने के लिए तीन खण्ड ऊपर चढ़ना पड़ता है और प्रदक्षिणा करने में थकत चढ आती है । यहाँ पर छोटे बड़े तरह तरह के गोलक दिखलाये गये हैं ।

और एक जगह पर मेशीन से एक ही तान का बाजा बज रहा है और पास ही पर्सीपोलिस (Persepolis) नगर के भूगर्भ से नया निकाला हुआ प्राचीन पारसी लोगों के अहुरमज्द का उपासना-मन्दिर भी ठीक उसी तरह उपासकों सहित विद्यमान है ।

इसके सिवा भिन्न भिन्न स्थानों में ऊँचे स्तम्भ और उनकी चोटों पर चढ़ने के लिए विजली की कलें, पृथ्वी के भिन्न भिन्न देशों के नाच-

गाने थियेटर-तमाशे, अनेक जातियों के अनेक श्रेणियों के अगणित होटल, काफे (café), रेस्तराँ (restaurant), काबारे (cabaret) आदि पान-भोजन-भवन, महल, इमारतें और छोटी दूकाने थीं ।

सेइन नदी के पार । ठीक सामने ट्रोकाडेयारो-गोलधर द विशाल पख फैलाये खड़ा है । आँगन में नकली झरना है और एक बड़ा भारी फुहारा पत्थर के चार पशुओं—सॉड, घोड़ा, गैंडा, हाथी—पर रक्खा हुआ है । महल के भीतर एक भारी हाल है । उसमें टेबिल, कुर्सी आदि सामान सहित ५००० के लगभग आदमी बैठ कर भोजन कर सकते हैं । अन्यान्य कमरों में प्राचीन और आधुनिक नकाशी और खुदाई के काम, फोटोग्राफ, पृथ्वी की सभ्य असभ्य अनेक प्रकार की पोशाकें गहने और व्यवहार में आनेवाले सामग्री, अस्त्र-शस्त्र, यन्त्र-तन्त्र, बाजे और स्त्री-पुरुषों की मूर्तियाँ रक्खी हुई हैं । यह स्थान कुछ समय के लिए प्रदर्शिनी में शामिल कर लिया गया था । असल में यह टुकड़ा एक स्थायी म्यूजियम है । इस ओर वन, उपवन, नदी, पुल, पेड़, लता, फूल, फल और जीते हुए जलचर जन्तु दिखलाये गये थे ।

विश्व-प्रदर्शिनी का वर्णन समाप्त हो गया । पर मैं प्रदर्शिनी का हाल कुछ भी नहीं लिख सका । इसके लिए मैं पाठकों के निकट क्षमाप्रार्थी हूँ । यह प्रदर्शिनी भी एक अपूर्व चीज थी । अब वैसे दृश्य आँखों से देखने को नहीं मिल सकता । मगर यूरोप के जीव सचमुच विश्वकर्मा हैं । कई महीने तक लन्दन के (Oxford Cyclorama Hall) में पृथ्वी के अन्यान्य विविध दृश्यों के साथ पेरिस-प्रदर्शिनी के भिन्न भिन्न खण्ड इस तरह दिखाये गये थे कि वे ठीक असल जान पड़ते थे । माडर्न ट्रुथ (Modern Truth) पत्रिका का मत नीचे उद्धृत किया जाता है । इससे पाठक लोग इस विराट् अनुकरण की खूबी का कुछ कुछ अनुमान कर सकेंगे ।

“ No words could give the faintest idea of the wonderful realism of the representations. You look along the landscape for miles, and are entranced. So perfect is the method employed that the haze of the atmosphere and that chiaroscuro which many of our best painters fail to catch, is faithfully reproduced. The green herbage on the mountain side is so vivid, and apparently so near that you feel as though it were possible to stretch out your hands and pluck a cowslip from its vernal bed. We are charmed and have forgotten when the circle is completed that we are in England's metropolis. It is simply astounding in its versimilitude.”

29th March, 1890

जो कुछ हो, यहाँ भी वही रमणीय नन्दन कानन, वही वृक्ष समूह के पत्तों में बिजली की रोशनी की विचित्र शोभा, वही अगणित नर-नारियों की भीड़, वही कृत्रिम और स्वाभाविक सौन्दर्य के मेले में रूप का बाजार और वही चारों ओर आनन्द का प्रवाह था। तात्पर्य यह कि वैसे मनोहर और विराट् प्रदर्शिनी अत्र फिर जगत् को देखने को नहीं मिल सकती।

विगत सौ बरसों में जगत में जो भयानक परिवर्तन हो गया था, उसे दिखलाने के लिए यह प्रदर्शिनी आईने के समान थी। सन् १७८६ में असह्य राजशक्ति के मिटाने का उद्योग फ्रान्स में शुरू हुआ। लगातार कई साल तक भयानक रक्तपात होता रहा। सन् १८८६ के शेष में, पेरिस-प्रदर्शिनी के अन्त में, ११ नवम्बर को, विशाल ब्रेजिल-साम्राज्य के अधीश्वर प्रजाहितैषी साठ से भी अधिक अवस्था के बूढ़े सम्राट् डाम पेड्रो ने आधी शताब्दी के सुशासन के वाद, राज्य के भारी हित के लिए, प्रजा को प्रसन्न रखने की इच्छा से, चुपचाप, सिंहासन का स्वत्व सदा के लिए छोड़ दिया और अपने प्रिय ब्रेजिल के निकट जन्मभर के लिए विदा होकर यूरोप को चले गये। शान्त भाव से प्रजातन्त्रशासनप्रणाली साम्राज्य में जारी हो गई।

प्रदर्शिनी का वर्णन समाप्त कर चुकने पर भी उसे समाप्त करने की इच्छा नहीं होती । मेले के ही अवसर में फ्रेञ्च साधारण तन्त्र के सभ्यों का चुनाव हुआ था । इसी उपलक्ष में एक फ्रेञ्च लेखक ने जो कुछ लिखा है, वह नीचे उद्धृत किया जाता है ।

"The universal Exhibition has also had and rightly had, a great influence on people's minds. This vast enterprise was looked upon in the first instance with no little distrust. The refusal of the great European Powers to take part in it raised fears as to the success of the undertaking, the great trades and manufactures doubted how far it would be any profit to them, the small trades felt certain of suffering by it. There seemed to be something incongruous in associating a great international concourse with the views of the old neighbouring monarchies. It needed the almost apostolic energy of its chief organizer, M Berger, to carry the object through. He went from town to town preaching in every chamber of commerce, to every syndicate, to every manufacturer, the necessity of contributing to the success of the Exhibition. That success distanced every expectation. The new and daring beauty of the buildings themselves, where the unprecedented combination of iron, terra cotta, and enamelled pottery produced an association of architectural effects hitherto unknown, the bold elegance of the Eiffel Tower, the display of wealth and splendour of our industries, which not only proved that France is not yet ruined, but showed what immense efforts and what striking progress she has made during the last few years, and, finally, the extraordinary concourse of foreigners who came from all parts of the globe to witness these marvels of our industrial activity—all this combined to make the Exhibition a subject of boundless satisfaction to our national pride. It was impossible not to attribute to the Republic something of the credit of this triumph of pacific France. Was it not the Republic that conceived, and willed, and executed this gigantic work? Was it not the Republic which so managed the undertaking as to work it at a profit from the very first day? How could any one have the face to say that the Republic had impoverished France after such a proof of the vitality of our industries, and after hundreds of thousands of strangers had come to Paris and left more than a milliard of money behind them?

Festivities of various sorts were skilfully distributed throughout the whole time of the Exhibition—a happy mixture of festivities—industrial, patriotic, and intellectual, and all these celebrations tended

of course, to lend something of their own *eclat* to the Republican idea, while at the same time they relieved the commemoration of the centenary of 1789 of any sectarian or too exclusively national character. First on the 5th and 6th of May, there was the commemoration of the opening of the states general at Versailles, and at Paris the inauguration of the Exhibition. Then in July, came the national festival of the 14th--the centenary of the fall of the Bastille. In August came the inauguration of the new Sorbonne, to which several hundred provincial and foreign students came by invitation and which gave the youth of France an opportunity of displaying all their finest and most amiable qualities in entertaining the youth of the neighbouring countries. After the inauguration, seventy-five meetings were held at the Sorbonne, and these meetings attracted a number of the learned *elite* of all countries, who received a warm welcome from the representatives of the Government as well as from the representatives of learning. Then a little before the elections, came the banquet of the thirteen thousand mayors in the Palais de l'Industrie and in the same hall, magnificently decorated for the occasion, the performance of Mademoiselle Holmes' "Triumphal Ode to the Republic" sung by a thousand choristers before an audience of twenty two thousand persons. In the interval between the two ballots, M Carnot inaugurated M Dalon's great monument, the Triumph of the Republic, and presided at the distribution of prizes at the Exhibition. The quietness with which the elections went off in the midst of all these festivities struck every body, especially those strangers who had been startled by the virulence of the political passions expressed in speech, but the festivities, themselves, and the Exhibition of which they were incidents, helped to produce this calm. When every thing seemed so gay, so smiling, with such a prophecy of peace and prosperity in the air, why should the voter play into the adversaries of the Republic, and throw France into confusion once more?"

G Monod

Contemporary Review, November, 1889

पत्र में यद्यपि कुछ फ्रेञ्च-चरित्र की बू पाई जाती है तथापि इसे 'अत्युक्ति' नहीं कह सकते। एक महानीच निन्दक को भी लाचार होकर यह स्वीकार करना पड़ेगा कि पेरिस की विश्व-

प्रदर्शनी गौरव के साथ बहुत सी बाधाओं और विघ्नों को हटा कर आशा से अधिक सफलता और यश प्राप्त करती हुई सभार के यात्रियों और दर्शकों को प्रसन्न कर मकी ।

महामेला के बाहर । यहाँ नकली (Rue Saint Antoine) नामक सड़क और उस पर बना हुआ प्रसिद्ध वास्टिल-कारागार दिखाया गया है । रोज सन्ध्या के समय तीन घंटे तक इस स्थान में वास्टिल-ध्वंस का सजीव अभिनय होता था । सन् १७८६ की १४ जुलाई को वास्टिल का क़िला मिट्टी में मिला दिया गया । उसी समय की अवस्था के अनुरूप वैसेही रास्ते-सड़कें, घर-द्वार, अनेक प्रकार की चीजों की ५० दूकानें, और उस समय के आचार-व्यवहार, पोशाक आदि की नकलें असल रूप में दिखाई जाती थीं । पहले जेल की खिडकी से रस्सा लटका कर एक कैदी के भागने की चेष्टा करने पर उस पर पहरेदारों ने गोलियाँ चलाई । उसके बाद फ्रेञ्च-विप्लव के सूत्रपात्र-स्वरूप वास्टिल-ध्वंस के समय जो जो कुछ हुआ था सो सब सक्षेप में ठीक ठीक करके दिखाया गया । जेल के चारों ओर भारी भीड़ दिखाई दी, कोलाहल सुनाई पडा । उसमें सैकड़ों कण्ठों से *Vive la nation* (जाति की जय) की पुकार सुन पडती थी । किले के मोर्चे और दूसरी ओर की दूकानों से तोपों का छूटना दिखाया गया । तदनन्तर जेलखाने पर अधिकार हो गया । लोग "*Victoire ! La Bastille est prise*" (जय ! वास्टिल पर अधिकार) कह कह आनन्दध्वनि करने लगे । अन्त को सुन्दर पोशाक पहने कुछ नर-नारियों का नाच हुआ और फ्रेञ्च लोगों का प्रिय जातीय सङ्गीत गाया गया । तीन घंटे तक मुझे मालूम पडता रहा कि सचमुच फ्रेञ्च-विप्लव में हम लोग मौजूद हैं । मेरे साथ दो फ्रेञ्च भद्र महिलायें थीं । अभिनय समाप्त

होन पर वे विशेष प्रसन्नता के साथ चारम्बार कहने लगीं कि यह विप्लव अगर न होता तो हम लोगों की इतनी उन्नति कभी न होती ।

वास्टिल-ध्वंस का वर्णन करना सहज काम नहीं है । महात्मा कार्लाइल लिखते हैं—

“ To describe the Siege of the Bastille (thought to be one of the most important in History) perhaps transcends the talent of mortals. Could one but after infinite reading, get to understand so much as the plan of the building ! ”—History of the French Revolution ”

जो कुछ हो, ४०० वर्ष के घोर अत्याचार के साक्षी-स्वरूप वास्टिल-कारागार के नष्ट हो जाने की खबर सभ्य जगत् में विशेष आदर के साथ सुनी गई । कवि कोपर की नीचे उद्धृत कविता पढ़कर पाठक लोग इस बात की यथार्थता को समझ लेंगे ।

“ Ye horrid towers, the abode of broken hearts,
Ye dungeons and ye cages of despair
That monarchs have supplied from age to age
With music, such as suits their sovereign ears,
The sighs and groans of miserable man
There's not in English heart that would not leap ”
To hear that ye are fallen at last

Cooper

शताब्दी भर का पानोरामा (Panorama) चित्र । (Tuileries) बाग में यह भारी चित्र-पट है । इसमें उन्रोसवीं सदी के शिल्पी, ग्रन्थकार, नट, राजनैतिक और कामकाजी आदमी, नया आविष्कार करनेवाले और पण्डित लोग एक ही जगह एक ही चित्र में देखने को मिलते हैं ।

विप्लव का म्यूजियम । लूव्रे महल के एक हिस्से में यह ऐतिहासिक म्यूजियम स्थापित है । विप्लव के मन्वन्ध की हस्तलिपियां, पदक, इस्तेमाल में आनेवाली चीजें और अन्यान्य चिह्न यहाँ रक्खे

हुए हैं । वास्टिल के प्रसिद्ध कैदी लाट्यूड (Latude)) ने जिस रस्ती के द्वारा जेल से भागने की चेष्टा की थी वह रस्ती घोर दाँत, मारा, रोवस्पेयर आदि मुखियों की भिन्न भिन्न अवस्थाओं की तसवीरों, तरह तरह के दृश्य और स्मारक वस्तुएँ यहाँ दिखलाई गई हैं ।

शताब्दी का इतिहास । इस जगह भारी भारी बीस चित्रपटों में सन् १७८६ से लेकर सन् १८८६ तक की ऐतिहासिक घटनायें चित्रित हैं । यह रू सेक्रेटन (Rue Secretan) सड़क पर है । पहले चित्रपट में विप्लव के ठीक पहले की फ्रांस की हालत दिखाई गई है । देहात का एक अभागा परिवार जमींदार का बकाया नहीं दे सका है, अतएव उस पर घोर अत्याचार हो रहा है । उनकी भोपड़ा के किवाड़ तक उतारे लिये जा रहे हैं । उसी समय उधर से जमींदार महाशय कारचोवी के काम की कोमती पोशाक पहने चौबदार घुडसवार आदि बहुत से अनुचरों और सहचरों से घिरे हुए जोड़ी-गाड़ी हँकाते हुए चले जा रहे हैं । दूसरे चित्रपट में वास्टिल-ध्वंस से लेकर विगडो हुई रियाया के काम दिखलाये गये हैं । एक में डरपोक मूर्ख राजा सोलहवे लुई (Louis XVI) का विचार दिखाया गया है । इसी तरह पहले नेपोलियन के काम, वार्टर्न का युद्ध, तीसरे नेपोलियन की लीला, आक्रमण के समय जर्मनी का गान्घेटर-विमान पर चढ़ना आदि दिखला कर अन्त को सन् १८८६ के महामेला का दृश्य दिखलाया गया है । यहाँ पर दो बहुत ही भयानक चीजें रक्खी हैं । एक तो गिलाटीन के हाथो मारी गई अभागिन रानी मेरी एन्टोइनेट ((Marie Antoinette) का खून से तर रुमाल और दूसरी बलिदान की पहली रात को लिखा गया राजा सोलहवे लुई का आँसुओं से तर बसीयतनामा । विप्लव के ये दोनो लोमहर्षण निदर्शन पत्थर के हृदय को भी विगलित कर देते हैं । मोची साइमन

Simon the Cobbler) के आश्रय में वे-मा-नाप के राजकुमार (Dauphin) की दुर्दशा का चित्र भी बहुत ही करुणाजनक है ।

पेरिस महानगरी ।

मव सभ्य जातियाँ एकस्वर से स्वीकार करती हैं कि बड़े किन्तु सुन्दर महलों, गौरवपूर्ण अनेक प्रकार के स्मारक-चिह्न मनुमेन्टो, सुरुचिसम्पन्न सुसज्जित बड़ी बड़ी दूकानो, निवासियो का असाधारण प्रफुल्ल-भाव और हँसमुख स्वभाव और सभ्य नमाज को पसन्द खेल-तमाशे आदि बातों में पेरिस ससार में सर्वश्रेष्ठ राजधानी है । यद्यपि घेर में, लोक-सख्या में, व्यवसाय-वाणिज्य में और धन में पेरिस लन्दन की अपेक्षा बहुत छोटा है तथापि एक बात में पृथ्वी के सब नगर पेरिस के आगे सिर झुकाते हैं । सब श्रेणी के यात्रियों का मनोरञ्जन करके उनके हृदय में एक प्रकार की स्फूर्ति ला देने में पेरिस की बराबरी कोई नगर नहीं कर सकता । अगण्य विपुल-समृद्ध-पूर्ण म्यूजियम, अनेक श्रेणी के विद्यालय, असख्य सुशोभित बिहार-वाटिकायें, सड़कों के हर एक मोड़ पर सुव्यवस्था-युक्त आमोद-भवन, हमेशा भीड़-भाड़ से भरे पान भाजन के स्थानों से घिरे रास्ते नगर में हर घड़ी रौनक पैदा करते रहते हैं । 'काफे' के भीतर और बाहर, फुटपाथ के ऊपर, पेड़ों के नीचे हर घड़ी आप देखेंगे कि लोग बैठे हुए खा-पी रहे हैं, सिगरेट पी रहे हैं । जैसे किसी को कोई काम नहीं । एक अद्भुत दृश्य देखने को मिलता है । रास्ते के बीच नियत फासिले पर बड़ी बड़ी घड़ियाँ लगी हैं, रात को विजली की रोशनी होती है । दिन रात एक ही ढंग से नगर की शोभा बनी रहती है । पेरिस में अँगरेजों का फुर्ता के साथ चलना नहीं देख पड़ता, सभी जनवासी चाल से मौज के साथ चलते हैं । जैसे उनके निकट ससार और ससार का काम-काज एक तुच्छ चीज

है। लन्दन की राह में किसी से भी कहीं का पता-ठिकाना पूछन पर वह उत्तर देकर फुर्ती से अपनी राह लेता है। और, पेरिस में किसी से वैसा प्रश्न करने पर वह तुम्हारे साथ बातचीत शुरू कर देगा, फिर तुमको राह बतलावेगा। अगर आप भूल कर उलटी तरफ चले आये हैं तो वह आपको, कुछ दूर साथ जाकर, राह दिखला आवेगा। फ्रेंच लोगों की भव्यता (Politeness) भी इसका एक कारण है। पूर्व और पश्चिम के सम्मिलन-भाव ने पेरिस को एक अपूर्व भाव दे रक्खा है। पेरिस के मार्ग में, सेइन नदी के किनारे या बाग आदि में खड़े होने से मन में एक ऐसे अनिर्वचनीय भाव का उदय होता है कि मानो हमारा शरीर स्वर्ग की ओर उड़ा जा रहा है।

पेरिस की किलेबन्दी और शहरपनाह। इसमें सड़को के लिए ५६, रेल के लिए ८, सेइन नदी के लिए २ और दो नहरों के लिए २ द्वार हैं। सेइन नदी शहर के भीतर पूर्व-पश्चिम को बहती है। दीवार के भीतर, शहर को घेरे हुए २१ मील रेल-लाइन है। पेरिस की बड़ी बड़ी सड़को को बुलवर्ड (Boulevard) कहते हैं। इनमें दोनो किनारे और बीच में वृक्ष-समूह-शोभित तीन तीन फुटपाथ हैं। एक बुलवर्ड और रेल-लाइन शहर-पनाह के किनारे किनारे शहर को घेरे हुए है।

पेरिस और उसके उपनगरों के दृश्य अच्छी तरह देखने के लिए बहुत समय की आवश्यकता है। रास कर मैं प्रदर्शनी के समय गया था, इस कारण सब देखना और प्रदर्शनी की भी सैर करना मेरे लिए सर्वथा असम्भव था। इसलिए मैं सब स्थानों को नहीं देख सका। जितने स्थान देखे उनका वर्णन नीचे लिखा जाता है।

नाट्रडाम गिर्जा (Notre Dame de Paris)। यह एक बड़ा भारी उपासना-मन्दिर है। इसके आस-पास २२३ फुट ऊँचे दो टावर हैं।

चारो ओर ११३ बड़ी बड़ी खिडकियाँ और २६७ स्तम्भ हैं । इसमें बहुत से घटे हैं । उनमें से दक्षिण टावर का एक घटा ४४८ मन भारी है । खाली इसके भीतर का गोला १४ मन का है । फ्रान्स भर में इससे बड़ा घटा और नहीं है । सन् १६८६ में यह ढाला गया था । सन् ११६३ में इस गिर्जे की नींव पड़ी थी । विप्लव के समय इस गिर्जे का नाम उपासना-मन्दिर की जगह प्रजामन्दिर (Temple de la Raison) नाम रक्खा गया और इसी रूप में इसका इस्तेमाल भी हुआ । ईसा की माता मेरी की मूर्ति की जगह स्वाधीनता की मूर्ति स्थापित हुई । प्रज्ञा-देवी के सिंहासन पर एक नर्तकी (Maillard the ballet dancer) को देवी बना कर खूब धूमधाम के साथ उसकी पूजा हुई । चारो ओर बाल्टेयर, रूसो आदि साम्य-वादी पण्डितों की मूर्तियों के अङ्के स्थापित हुए । इस प्रकार सन् १३६४ की १२ वीं मई तक यह मन्दिर खूब गुलजार रहा । उसके बाद ८ बरस तक बन्द रहा । अन्त में सन् १८०२ में महावीर नेपोलियन ने फिर इसे भगवान् की उपासना के लिए खोला । पेरिस का यह प्रधान गिर्जा और ऐतिहासिक मन्दिर सेइन नदी के किनारे—उसके भीतर के एक टापू (Île de Paris) में स्थापित है । यहाँ पर सेइन नदी दो धारा होकर फिर आगे दोनों धाराओं की एक धारा हो गई है । इसी से टापू सा बन गया है ।

जातीय पुस्तकालय और पाठ भवन (Bibliothèque Nationale) इसमें पचीस लाख से अधिक छपे हुए ग्रन्थ और बहुत सी हस्त-लिपियाँ आदि का समूह है । यहाँ पाठकों के लिए दो विभाग हैं । एक में चाहे जो जा सकता है और दूसरे में अनुमति-पत्र के बिना जान को नहीं मिलता । इस विभाग में ३३४ पाठकों के बैठने के लिए सीटें हैं । विदेशी लोगों को अपने अपने देश के राजदूत (Ambassadors) से

है। लन्दन की राह में किसी से भी फर्ही का पता-ठिकाना पूछने पर वह उत्तर देकर फुर्ती से अपनी राह लेता है। और, पेरिस में किसी से वैसा प्रश्न करने पर वह तुम्हारे साथ बातचीत शुरू कर देगा, फिर तुमको राह बतलावेगा। अगर आप भूल कर उलटी तरफ चले आये हैं तो वह आपको, कुछ दूर साथ जाकर, राह दिखला आवेगा। फ्रेंच लोगों की भव्यता (Politeness) भी इसका एक कारण है। पूर्व और पश्चिम के सम्मिलन-भाव ने पेरिस को एक अपूर्व भाव दे रक्खा है। पेरिस के मार्ग में, सेइन नदी के किनारे या बाग आदि में खड़े होने से मन में एक ऐसे अनिर्वचनीय भाव का उदय होता है कि मानों हमारा शरीर स्वर्ग की ओर उड़ा जा रहा है।

पेरिस की किलेबन्दी और शहरपनाह। इसमें सड़को के लिए ५६, रेल के लिए ६, सेइन नदी के लिए २ और दो नहरों के लिए २ द्वार हैं। सेइन नदी शहर के भीतर पूर्व-पश्चिम को बहती है। दीवार के भीतर, शहर को घेरे हुए २१ मील रेल-लाइन है। पेरिस की बड़ी बड़ी सड़को को बुलवर्ड (Boulevard) कहते हैं। इनमें दोनो किनारे और बीच में वृक्ष-ममूह-शोभित तीन तीन फुटपाथ हैं। एक बुलवर्ड और रेल-लाइन शहर-पनाह के किनारे किनारे शहर को घेरे हुए है।

पेरिस और उसके उपनगरों के दृश्य अच्छी तरह देखने के लिए बहुत समय की आवश्यकता है। खास कर मैं प्रदर्शनी के समय गया था, इस कारण सब देखना और प्रदर्शनी की भी सैर करना मेरे लिए सर्वथा असम्भव था। इसलिए मैं सब स्थानों को नहीं देख सका। जितने स्थान देखे उनका वर्णन नीचे लिखा जाता है।

नाट्रडाम गिर्जा (Notre Dame de Paris)। यह एक बड़ा भारी उपासना-मन्दिर है। इसके आस-पास २२३ फुट ऊँचे दो टावर हैं।

चारो ओर ११३ बड़ी बड़ी रिडकियों और २६७ स्तम्भ हैं । इसमें बहुत से घटे हैं । उनमें से दक्षिण-टावर का एक घटा ४४८ मन भारी है । खाली इसके भीतर का गोला १४ मन का है । फ्रान्स भर में इससे बड़ा घटा और नहीं है । सन् १६८६ में यह ढाला गया था । सन् ११६३ में इस गिर्जे की नींव पड़ी थी । विप्लव के समय इस गिर्जे का नाम उपासना-मन्दिर की जगह प्रजामन्दिर (Temple de la Raison) नाम रक्खा गया और इसी रूप में इसका इस्तेमाल भी हुआ । ईसा की माता मेरी की मूर्ति की जगह स्वाधीनता की मूर्ति स्थापित हुई । प्रज्ञा-देवी के सिंहासन पर एक नर्तकी (Maillard the ballet dancer) को देवी बना कर खूब धूमधाम के साथ उसकी पूजा हुई । चारो ओर बाल्टेयर, रूसो आदि साम्य-वादी पण्डितों की मूर्तियों के अङ्के स्थापित हुए । इस प्रकार सन् १३६४ की १२ वीं मई तक यह मन्दिर खूब गुलजार रहा । उसके बाद ८ वरस तक बन्द रहा । अन्त को सन् १८०२ में महावीर नेपोलियन ने फिर इसे भगवान् की उपासना के लिए खोला । पेरिस का यह प्रधान गिर्जा और ऐतिहासिक मन्दिर सेइन नदी के किनारे—उसके भीतर के एक टापू (Île de Paris) में स्थापित है । यहाँ पर सेइन नदी दो धारा होकर फिर आगे दोनों धाराओं की एक धारा हो गई है । इसी से टापू सा बन गया है ।

जातीय पुस्तकालय और पाठ-भवन (Bibliothèque Nationale) इसमें पचीस लाख से अधिक छपे हुए ग्रन्थ और बहुत सी हस्त-लिपियों आदि का सग्रह है । यहाँ पाठकों के लिए दो विभाग हैं । एक में चाहे जो जा सकता है और दूसरे में अनुमति-पत्र के बिना जान को नहीं मिलता । इस विभाग में ३३४ पाठकों के बैठने के लिए सीटें हैं । विदेशी लोगों को अपने अपने देश के राजदूत (Ambassadors) से

यहाँ जाने का अनुमतिपत्र मिलता है । यद्यपि यहाँ पुस्तको का इतना बड़ा संग्रह है तथापि व्यवस्था कुछ बहुत अच्छी नहीं है । सूचीपत्र (Catalogue) आदि का बन्दोबस्त इतना खराब है कि कभी कभी सड़ज में पुस्तक खोजे नहीं मिलती । इस स्थान के सिवा और भी अनेक साधारण पुस्तकालय और पाठ-भवन हैं । किन्तु सबके पास खास नियम हैं ।

साधारण-तन्त्र की मूर्त्ति । पेरिस की बहुत सी बड़ी बड़ी मूर्त्तियों में यह मूर्त्ति एक विशेष दृश्य है । तीन मूर्त्तियाँ—स्वाधीनता, साम्य और मैत्री—बैठी हैं । तीन बार साधारण तन्त्र की स्थापना में जिन घटनाओं ने सहायता की उनके बारह रिलीफ दृश्य हैं । ठीक इसी स्थान पर, द्वितीय साम्राज्य के समय में, एक मन्मूमेन्ट स्थापित हुआ था । उसी मन्मूमेन्ट को तोड़ कर इमकी स्थापना हुई है । और शायद शासन-प्रणाली के बदलने पर इसका भी ध्वस हो जायगा ।

प्रायश्चित्त-मन्दिर (La Chapelle Expiatoire) । यह एक छोटा सा गिर्जा, सेन्ट ओनो की सड़क पर, है । राजा सोलहवे लुई और उनकी रानी की, विप्लव के समय में, गिलाटीन में हत्या कर डाली गई । उन्हीं के स्मारक में यह उपासना-मन्दिर स्थापित हुआ है । सिर-कटी दोनो लाशें यहाँ गड़ी हुई हैं । इसके सिवा पेरिस में अनेक रोमन-कैथलिक, प्रोटेस्टेन्ट, रूसी और यहूदियों के उपासना-मन्दिर हैं । उनमें से कुशल-क्षेत्र के पास ही बना हुआ माडिलीन गिर्जा (La Madeleine) बहुत बड़ा और विशेष दर्शनीय है । इसकी बनावट गिर्जा की ऐसी नहीं है । यह मन्दिर ग्रीक ढंग से—बहुत कुछ कलकत्ते के यूनिवर्सिटी-हाल से मिलता हुआ—बना है । ३३ हाथ ऊँचे और ११ हाथ घेरे के ५२ स्तम्भे इसे घेरे हुए हैं ।

कुशलक्षेत्र (Place de la Concorde) । यह हवा खाने

का स्थान (square) अत्यन्त रम्य और प्रशस्त है। यह पृथ्वी के अब्जल नम्बर के सुन्दर और मनोहर स्कायरो म गिना जाता है। बहुत लोग तो इसी को सबसे श्रेष्ठ समझते हैं। यह ३६० गज लम्बा और २३५ गज चौड़ा है। दक्षिण ओर सेइन नदी बहती है, पश्चिम ओर (Champs Elysees Park and Promenade) है, उत्तर ओर विचित्र शोभावाली सड़क (Rue de Rivoli) है और पूर्व ओर तुलरी का बाग (Jardin des Tuileries) है। सन्ध्या के बाद यहाँ से शुरू करके डेढ़ मील तक लम्बी दोनो ओर गैस के लैम्पो की रोशनी देख पड़ती है। इसी जगह पर मिसर के पाशा का दिया हुआ उपहार एक स्तम्भ स्थापित है। यह मिसर के लक्सर नामक गाँव से लाया गया है, इसी से इसको लक्सर-स्तम्भ (obelisque de la Louqsor) कहते हैं। उत्तर और दक्षिण में दो बड़े फुहारे हैं। उनके बीच के नल से २० हाथ के लगभग ऊँचा पानी उठता है। इतिहास से इस स्थान का विशेष सम्बन्ध है। सन् १७६३ में इस स्कायर का नाम “पञ्चदश-लुई क्षेत्र” था। सन् १७७० में राजकुमार (बाद को सोलहवे लुई) के ब्याह के उपलक्ष में यहाँ आतशबाजी की ऐसी धूम हुई कि उस जगह की भीड़ में दक्कर १२०० आदमी मर गये और २००० के भारी चोट आई। सन् १७९२ में ११ अगस्त को, अर्थात् विप्लव के बाल्यकाल में व्यवस्थापक सभा के हुक्म से यहाँ की धातु की राजमूर्ति गला कर बेच डाली गई और उसकी जगह स्वाधीनता देवी की मूर्ति स्थापित हुई। इसी समय से पहला नाम बदल कर नया नाम “विप्लव की रङ्गभूमि” (Place de la Revolution) रख दिया गया। सन् १७९३ की २१ वीं जनवरी को सोलहवे लुई का वध हुआ। तब से सन् १७९५ की तीसरी मई तक भीषण

यहाँ जाने का अनुमतिपत्र मिलता है। यद्यपि यहाँ पुस्तको का इतना बड़ा संग्रह है तथापि व्यवस्था कुछ बहुत अच्छी नहीं है। सूचीपत्र (Catalogue) आदि का बन्दोबस्त इतना खराब है कि कभी कभी सहज में पुस्तक खोजे नहीं मिलती। इस स्थान के सिवा और भी अनेक साधारण पुस्तकालय और पाठ-भवन हैं। किन्तु सबके खास खास नियम हैं।

साधारण-तन्त्र की मूर्त्ति। पेरिस की बहुत सी बड़ी बड़ी मूर्त्तियों में यह मूर्त्ति एक विशेष दृश्य है। तीन मूर्त्तियाँ—स्वाधोनता, साम्य और मैत्रो—वैठी हैं। तीन बार साधारण तन्त्र की स्थापना में जिन घटनाओं ने सहायता की उनके बारह रिलीफ़ दृश्य हैं। ठीक इसी स्थान पर, द्वितीय साम्राज्य के समय में, एक मन्मेन्ट स्थापित हुआ था। उसी मन्मेन्ट को तोड़ कर इसकी स्थापना हुई है। और शायद शासन-प्रणाली के बदलने पर इसका भी ध्वस हो जायगा।

प्रायश्चित्त-मन्दिर (La Chapelle Expiatoire)। यह एक छोटा सा गिर्जा, सेन्ट आनो की सड़क पर, है। राजा सोलहवें लुई और उनकी रानी की, विप्लव के समय में, गिलाटीन में हत्या कर डाली गई। उन्हीं के स्मारक में यह उपासना-मन्दिर स्थापित हुआ है। सिर-कटी दोनों लाशें यहाँ गड़ी हुई हैं। इसके सिवा पेरिस में अनेक रोमन-कैथलिक, प्रोटेस्टेन्ट, रूसी और यहूदियों के उपासना-मन्दिर हैं। उनमें से कुशल-क्षेत्र के पास ही बना हुआ माडिलीन गिर्जा (La Madeleine) बहुत बड़ा और विशेष दर्शनीय है। इसकी बनावट गिर्जा की ऐसी नहीं है। यह मन्दिर ग्रीक ढंग से—बहुत कुछ कलकत्ते के यूनिवर्सिटी-हाल से मिलता हुआ—बना है। ३३ हाथ ऊँचे और ११ हाथ घेरे के ५२ खम्भे इसे घेरे हुए हैं।

कुशलक्षेत्र (Place de la Concorde)। यह हवा खाने

का स्थान (square) अत्यन्त रम्य और प्रशस्त है। यह पृथ्वी के अब्बल नम्वर के सुन्दर और मनोहर स्कायर में गिना जाता है। बहुत लोग तो इसी को सबसे श्रेष्ठ समझते हैं। यह ३६० गज लम्बा और २३५ गज चौड़ा है। दक्षिण ओर सेइन नदी बहती है, पश्चिम ओर (Champs Elysees Park and Promenade) है, उत्तर ओर विचित्र शोभावाली सड़क (Rue de Rivoli) है और पूर्व ओर तुलरी का बाग (Jardin des Tuileries) है। सन्ध्या के बाद यहाँ से शुरू करके डेढ मील तक लम्बी दोनों ओर गैस के लैम्पो की रोशनी देख पड़ती है। इसी जगह पर मिसर के पाशा का दिया हुआ उपहार एक स्तम्भ स्थापित है। यह मिसर के लक्सर नामक गाँव से लाया गया है, इसी से इसको लक्सर-स्तम्भ (obelisque de la Louqsor) कहते हैं। उत्तर और दक्षिण में दो बड़े फुहारे हैं। उनके बीच के नल से २० हाथ के लगभग ऊँचा पानी उठता है। इतिहास से इस स्थान का विशेष सम्बन्ध है। सन् १७६३ में इस स्कायर का नाम “पञ्चदश-लुई क्षेत्र” था। सन् १७७० में राजकुमार (बाद को सालहवे लुई) के ब्याह के उपलक्ष में यहाँ आतशबाजी की ऐसी धूम हुई कि उस जगह की भीड़ में दक्कर १२०० आदमी मर गये और २००० को भारी चोट आई। सन् १७६२ में ११ अगस्त को, अर्थात् विप्लव के वाल्यकाल में व्यवस्थापक सभा के हुक्म से यहाँ की धातु की राजमूर्ति गला कर बेच डाली गई और उसकी जगह स्वाधीनता देवी की मूर्ति स्थापित हुई। इसी समय से पहला नाम बदल कर नया नाम “विप्लव की रङ्गभूमि” (Place de la Revolution) रख दिया गया। सन् १७६३ की २१ वीं जनवरी को सालहवे लुई का वध हुआ। तब से सन् १७६५ की तीसरी मई तक भीषण

गिलाटिन राक्षस को कराल तरवार इस रमणीय आरामभूमि में क्रीडा करती रही । इसी समय में राजा, रानी, मन्त्री और अन्यान्य नर-नारियों को मिलाकर ३००० के लगभग जीवों के रक्तपात से यह सुन्दर स्थान अपवित्र होता रहा । शान्ति स्थापित होने के बाद, राजा की जहाँ हत्या हुई थी वहाँ पर एक फुहारा स्थापित करने का प्रस्ताव उपस्थित होने पर मन्त्रिवर शटेब्रियॉ (Chateaubriand) ने आपत्ति की और यह सबो ही बात कही कि इस स्थान पर जितना पून बहा है उमका दाग पृथ्वी का सारा जल लाकर डालन से भी नहीं छुट सकता । सन् १७६६ में विप्लव का नाम हटाकर फिर “प्लस दि ला काकर्ड” नाम रक्खा गया । फिर राजसिंहासन स्थापित होने पर, सन् १८१४ को १६ वीं एप्रिल को वर्मानुष्ठान से पवित्र करके “पञ्चदशलुईक्षेत्र” नाम रक्खा गया । सन् १८३० के बाद फिर “प्लस दि ला काकर्ड” के नाम से पुकारा जाता है । शान्तिदाता भगवान् के निकट में प्रार्थना करता हूँ कि वर्तमान माधारण तन्त्र फ्रान्स में चिरकाल तरु बना रहे, और फिर इस मनाहर नाम को बदलन का प्रयोजन न हो । इस एक स्कायर के इतिहास में ही पाठक लोग फ्रेञ्च लोगो के चरित्र का परिचय पा सकते हैं । इतने छोटे स्थान में ऐसा विचित्र ऐतिहासिक अभिनय शायद ही और कोई जाति दिखला सकी हो ।

देा सैनिकाश्रम (Hotel des Invalides) । सन् १६७० में राजा चौदहवें लुई ने इसकी स्थापना की थी । भित्ति-स्थापन के लेख में इसका उद्देश्य यो प्रकाशित किया गया है—
 “pour issuer une existence heureuse aux militaires qui, vieillards mutilés ou infirmes, Se trouveraient sans ressources après avoir blanchi sous les drapeaux ou versé leur sang pour la patrie”

अर्थात् जो सैनिक पुरुष देश के लिए लड़े हैं और उसमें अङ्गहीन हो गये हैं, अथवा वृद्ध होने के कारण जीविकाहीन हो गये हैं उनका शोष जीवन सुख से व्यतीत होने के लिए इस आश्रम की स्थापना हुई है । ६० बीघे जमीन में यह स्थान बना हुआ है । इसमें ५००० आदमियों के रहने की व्यवस्था है, किन्तु इस समय (जब मैं वहाँ था) ४०० से अधिक आदमी इसमें नहीं हैं । इसका कारण यही है कि अधिकांश सैनिक लोग पेंशन लेकर स्वतन्त्र भाव से रहना पसन्द करते हैं । सामन के मैदान में कई एक तोपें रक्खी हुई हैं । इनमें अलजीरिया, चीन और कोचीन चीन में जीती हुई कई तोपें भी हैं । दाहान और बाएँ नपोलियन-द्वारा यूरोप के कई देशों से जीतकर लाई गई अनेक तोपें रक्खी हैं । इस इमारत का ३६० फुट ऊँचा गुम्बद बहुत दूर से दिखाई पड़ता है ।

इसके पश्चिम-खण्ड में हथियारों का न्यूजियम Musée de Artillerie है । यहाँ, बड़ी बड़ी तोपों से लेकर तीर कमान तक, ४००० तरह के अस्त्र-शस्त्र रक्खे हुए हैं । बहुत से झुंडे रक्खे हैं । उनमें सुप्रसिद्ध वीरबाला जोन आफ् आर्क (Joan of Arc) का झुंडा देखने योग्य है । एक छोटे से कमरे में अनेक ऐतिहासिक ढाल तरवार और कवच आदि रक्खे हैं । आदिम युग से मनुष्य के व्यवहार में आनेवाली जितनी और जितने प्रकार की युद्ध की सामग्री यहाँ जमा है उतनी और कहीं नहीं । इस बात को अँगरेज लोग भी स्वीकार करते हैं—“It is one of the most complete collections of arms extant from the earliest period of human ingenuity in this department of art and science ”

इस स्थान के एक खण्ड में, गुम्बद के नीचे ही, महावीर

नेपोलियन की समाधि है । २० फुट गहरे और ३६ फुट घेरे के एक गोलाकार (Crypt) में एक परम प्रतापी सम्राट् का शरीर लेटा हुआ है । यहाँ खड़े होते ही शरीर में रोमाञ्च हो आया । मैंने सोचा, आज सारे यूरोप के महाभय का कारण शूरशिरोमणि का बल-विक्रम न-जाने कहीं लीन होगया है, तथापि उसका आतङ्क बहुत दिनों तक ससार में बना रहे । यूरोप के, खासकर इंग्लेड के, बच्चे बहुत दिनों तक नेपोलियन के नाम से डराये जाते थे । नेपोलियन जैसा जीव था उसकी समाधि भी वैसी ही है । ऊपर १६० फुट ऊँचा गुम्बद है और नीचे समाधि के चारों ओर युद्ध और शामनकार्य आदि के चित्र अंकित हैं । १० विराट् 'विजय' की मूर्तियाँ हैं और चारों ओर अनेक देशों से जीतकर लाये गये ६० झंडे हैं । एक भयानक गम्भीर दृश्य है । समाधि सीमा के भीतर प्रवेश करने का द्वार बन्द है । द्वार के ऊपर सम्राट् के वसीयतनामे से उद्धृत यह महावाक्य लिखा हुआ है—*"Se desue que mes cendres reposent sui les bords de la Seine au milieu de ce peuple francais que g'ai tant aime"*) अर्थात् मेरी इच्छा है कि मेरा भस्म (देह) सेइन नदी के किनारे, उन्हीं लोगों के बीच, जिन्हें मैं बहुत ही प्यार करता हूँ, रक्खा जाय ।

सन् १८२१ की ५ मई को सेन्टहेलिना टापू में नेपोलियन की मृत्यु हुई । उन्नीस बरस बाद, सन् १८४० में, नेपोलियन का शव विशेष धूमधाम के साथ उक्त टापू से पेरिस लाया गया और उपयुक्त स्थान पर समाधि-स्थ किया गया । नेपोलियन का जीवन अपने दोष और गुण दोनों के कारण जगत् के लिए शिक्षा प्राप्त करने की सामग्री है । उसकी समाधि अगर अप्रसिद्ध और दूरवर्ती दक्षिण

अटलांटिक के एक छोटे से टापू में पड़ी रहती तो कभी ठीक न होता । इसी से विधाता ने नेपोलियन को समाधि पेरिस में बनाने का आयोजन कर दिया ।

हजार ताकत और गुणों के रहने पर भी स्वार्थपरता का हीन-भाव मनुष्य को जवर्दस्ती अवनति और दुःख का और घसीट लाता है, और, अधार्मिक नीतिहीन जीवन अन्त को सर्वनाश करा देता है । इसका पूरा प्रमाण आपको नेपोलियन के जीवन में मिल जायगा । सभी बातों की एक हद होती है । ऊँची अभिलाषायें पूरी करने की भी एक हद होनी चाहिए । यद्यपि मनुष्य पूरी तौर से सन्तोष नहीं कर सकता, तथापि सासारिक उन्नति के सम्बन्ध में ऐसा स्थान या सीमा सबके लिए है जहाँ रुकें होकर कहना उचित है कि यहाँ पर मुझे स्थिर हो रहना चाहिए । उसके आगे पैर बढ़ाने से फिर गिरने का खटका है । किन्तु नेपोलियन ने यह बात सीखी ही नहीं । सारा यूरोप उसे क्षुद्र जान पड़ा । जीव की स्वाधीनता को वह तुच्छ वस्तु समझने लगा । इसी से इतने ऊँचे से इतना भारी पतन हुआ । एक विद्वान् ने इस सम्बन्ध में लिखा है—

“ The story of Napoleon Buonaparte presents probably the most memorable example in the world of the action of great intellect and resolute will unrestrained by conscience, and shows both the possible success which may reward for a time the most unscrupulous selfishness, and also, happily, its certain ultimate failure and overthrow ”

William S R Cates

लुव्रे (Luvre) । सेइन नदी के किनारे, पेरिस के भीतर, सब तरह सबसे श्रेष्ठ यह लुव्रे-मन्दिर है । पहले इस स्थान पर, लुपारा या लुवेरी (Lupara or Luverne) नामक खनी जानवरों से

भरे जगल में, एक मृगया-भवन (Chateau) था । क्रमशः वस्ती होने पर, सन् १५४१ में, पुराना घर तोड़ कर वर्त्तमान भवन की नींव डाली गई । लुव्रे के सब कमरो में एक सिरे से केवल घूम आने में दो घंटे लगते हैं ।

प्रथम खण्ड—मिस्र का म्यूजियम (Musée Egyptien) । यह यूरोप भर में सर्वोत्तम संग्रह है । अत्यन्त प्राचीन राजा, राजपुरुष और प्रतिष्ठित पुरुषों की मूर्तियाँ, उनके समय की और उनके इस्तेमाल में आनेवाली चीजें, तथा तरह तरह के नक्काशी के काम इन कमरो में रक्खे हैं । इस संग्रह से प्राचीन मिस्र वासियों की मभ्यता, धर्म, आचार-व्यवहार और कारीगरी का पूरा परिचय प्राप्त किया जा सकता है । एशियाटिक म्यूजियम (Musée des Antiquités Asiaticques) विख्यात पुरातत्त्वज्ञ पण्डित बोटा (M. Botta) और लेयार्ड (H. Layard) ने प्राचीन असीरिया-राज्य की बहुत सी नक्काशी और खुदाई की कारीगरियों को निनेवी और असुर-प्रदेश के गड्ढहरों को खोदकर निकाला था । यह सब ऐतिहासिक संग्रह अँगरेज और फ्रेञ्च लोगों में आधा आधा बँट गया । आधा सामान ब्रिटिश-म्यूजियम में और आधा सामान यहाँ रक्खा है । इसके सिवा प्राचीन फिनीशिया और ग्रीस की अनेक नक्काशी और खुदाई की कारीगरियाँ और तरह तरह की इस्तेमाल में आनेवाली चीजें एक दूसरे कमरे में रक्खी हैं । यूरोप के प्राचीन भास्कर-कार्य का संग्रह (Musée des Mairies Antiques) इन कमरो में प्राचीन ग्रीक और रोमन-साम्राज्य के समय की तरह तरह की सगमरमर की मूर्तियाँ रक्खी हैं । उनमें ग्रीस के मेल्स द्वीप में निकली हुई और वहाँ से लाई गई वीनस-देवी की संगमरमर की मूर्ति यूरोप के गौरव और प्रतिष्ठा की चीज समझी जाती है । बहुत लोगों ने उस मूर्ति

का देखन के लिए मुझसे विशेष अनुरोध किया था । लेकिन मुझे उस मूर्ति में ऐसी कोई विशेषता नहीं देख पड़ी । इसे मेरी विचार-शक्ति की कमजोरी या अयोग्यता ही समझना चाहिए । जिस कमरे में यह मूर्ति रक्खी है उसका नाम है वीनस का घर (Salle de la Venus de Mils) इस मूर्ति की ऐसी ही इज्जत है । जर्मन-पण्डित लुबके (Lubke, Professor of Art-history) ने उक्त मूर्ति के सम्बन्ध में जो अपनी राय दी है वह नीचे उद्धृत की जाती है । वह कहते हैं—

“ This is the only statue of Venus that has come down to us which represents the goddess and not a beautiful woman. The power and grandeur of form, over which the infinite charm of youth and beauty is diffused, is in harmony with the pure and majestic expression of the head which free from human infirmity, proclaims the calm self-sufficiency of divinity ”

दुःख की वान है कि मूर्ति के दीनो हाथ टूट गये हैं । एक हाथ का कुछ अंश है, लेकिन दूसरा बिल्कुल नदारत है । सन् १८२० में यह मूर्ति निकली थी । तब से अब तक देश-विदेश के अनेक पण्डितों ने इस मूर्ति के इतिहास आदि के सम्बन्ध में कलम चलाई है । जो कुछ हो, केवल डाक्टर लुबके के पूर्वोक्त मत से ही मेरी अयोग्यता प्रमाणित हो गई । प्रथम खण्ड के अन्यान्य कमरों में मध्यकाल और वर्तमान समय के भास्कर-कार्य रक्खे हुए हैं ।

दूसरा खण्ड—चित्रशाला (Musée de Tableaux) । इन कमरों में पहुँच कर आदमी सन्नाटे में आ जाता है । एक जगह पर इतने चित्र मैंने पहले कभी नहीं देखे थे । लन्दन की सब चित्रशालाओं के चित्र जमा करने से शायद वे गिनती में यहाँ के चित्रों से अधिक भी हो, किन्तु चित्रकार कुलमूषण रेफेल आदि अनेक श्रेष्ठ

चित्रकारों के चित्र यहाँ अधिक हैं । लुव्रे का यह खण्ड सा सभ्यजगत् की ऊँचे दर्जे की तसवीरो का एक अपूर्व सग्रह है । दर्शक यहाँ विशेष शिक्षा और ज्ञान प्राप्त कर सकता है । चित्रकारों के नाम के पहले अक्षर के अनुसार चित्र सजाये गये हैं । इस खण्ड का आपोलों (Galerie d'Apollon) कमरा सबसे सुन्दर है । यह १४० हाथ लम्बा है । अनेक अँगरेजों के मुँह से सुनने को मिला—“One of the finest halls in the world” । इसके बीच में पाँच काँच के डेस्को में रत्न-निर्मित और रत्नजडित बहुत सी छोटी मूर्तियाँ, पात्र, राजदण्ड, प्राचीन राजों की ढाल-तरवार आदि बहुत सी वेशकीमती चीजें रक्खी हैं । इसी कमरे में शार्लमेन (Charlemagne) की तरवार रक्खी है । दूसरे खण्ड में इसके सिवा और भी अनेक म्यूजियम हैं ।

तीसरा खण्ड—सामुद्रिक म्यूजियम (Musée de la Marine) । यहाँ छोटे छोटे तरह तरह के नकली जहाज, जहाजी मेशीनों, बन्दरगाहों के रिलीफ नकशे आदि बहुत सी चीजें हैं । और कई कमरों में भारत, चीन और जापान से लाई गई तरह तरह की चीजें हैं । सोना, चाँदी, हाथोदाँत, वाँस आदि पूर्वी माल मसाले से तैयार चीजें भी यहाँ देख पडें । यहाँ विष्णु की मूर्ति-सहित छोटा जगन्नाथ-मन्दिर और मुलम्मेदार सिंहासन पर बैठी हुई बुद्धदेव की मूर्ति भी एक जगह देख पडी । दूसरे कमरे के बीच में स्वेज नहर का नकली दृश्य (Relief-plan, 6 100000), नहर के कल-कारखाने की नकल और उसके भिन्न भिन्न अशों के दृश्य देख पडें । पेरिस में इसके सिवा प्राकाडेयारी आदि और भी ६ म्यूजियम हैं ।

पॉन्थे (Pantheon) । यह मन्दिर कुछ कुछ लन्दन के सेन्ट-

पान गिर्जे की तरह है । यह वर्तमान मन्दिर २६ वरस में बन कर तैयार हुआ है । सन् १७६० में यह बनकर तैयार हुआ था । यह पहले उपासना-मन्दिर के रूप में स्थापित होकर एक वरस बाद स्मृति-मन्दिर बनाया गया और इसका वर्तमान नाम पडा । नाम के ऊपर लिखा है—“Aux grands hommes la patrie reconnaissante” अर्थात् महान् जीवों के निकट देश कृतज्ञ है । इस भारी इमारत का इस्तमाल बार बार जुदे जुदे ढग से होने के बाद सन् १८८५ में कवियर ह्यूगो (Victor Hugo) की अन्त्येष्टि क्रिया के उपलक्ष में फिर यह सर्व-साधारण के लिए खोल दिया गया । यह इमारत ३७० फुट लम्बी और २७६ फुट चौड़ी है । इसका गुम्बद २७० फुट ऊँचा है । इसके बीच में, एक खण्ड (Tympanum) १६ फुट ऊँची ‘फ्रान्स’ देश की एक सगमरमर की मूर्त्ति अपने पुत्रों को माला दे रही बनी हुई है । बाईं ओर एक चौतरे पर, स्वाधीनता देवी के पास, नाजनीतिज्ञ पण्डित माल्हेयार्ब (Malesherbes) और मिराबो (Mirabeau), वैज्ञानिक पण्डित मज (Lavoisier), टेलीमेकस के रचयिता फनेलन (Fenelon) और प्रसिद्ध ज्योतिषी लापलाम (Laplace) आदि अनेक महात्माओं की मूर्त्तियाँ हैं । इसी ओर दूसरी लाइन में प्राणि-तत्त्व के भारी पण्डित कुवियर (Cuvier), वीरवर लाफेइट (Lafayette), बाल्टेयर, रूसो और चिकित्सक विशा (Bichat) की मूर्त्तियाँ हैं । दाहिनी ओर ‘इतिहास’ की मूर्त्ति के पास नेपालियन बोनापार्ट आदि अनेक शूर-वीरों की मूर्त्तियाँ हैं । और भी अनेक मूर्त्तियाँ और चित्र-पट यहाँ रक्खे हैं ।

तहरखाना (Caveaux) । कुछ यात्रियों के जमा होने पर वहाँ का एक पहरेदार हम लोगों को इस पातालपुरी के भीतर ले चला ।

अधी तंग गली में बहुत कुछ घूमने-फिरने के बाद हम लोग ठीक जगह पर पहुँचे । मिरावो का शव पहले यहीं गाड़ा गया था । उसके दो वर्ष बाद नर-पिशाच (उस समय के प्रजा-बन्धु) मारा का भी शव यहीं गाड़ा गया । किन्तु बाद की सरकारी हुकम से दोनों शव वहाँ से हटाकर अन्यत्र रक्खे गये । प्रवेश-द्वार के निकट दाहनी ओर पुष्प-माला-शोभित विकृष्ट ह्यूगो की समाधि, स्मारक-चिह्न और मूर्ति शीघ्र ही स्थापित होनेवाली थी । उसके सामने, अर्थात् बाईं ओर, एक किनारे रूसो का स्मारक-चिह्न है । और दूसरे किनारे पर बाल्टेयर का स्मारक-चिह्न और 'मूर्ति' है । मूर्ति के पैरों के पास लिखा है—“ Aux Manes de Voltaire ” अर्थात् बाल्टेयर की आत्मा के सम्मान के लिए । “बाल्टेयर के सम्बन्ध में फ्रेञ्च भाषा में जो कुछ लिखा है उसका हिन्दी-अनुवाद दिया जाता है—“कवि, इतिहास-लेखक और दार्शनिक । इन्होंने मनुष्य के मन को उन्नत बनाकर स्वाधीनता की शिक्षा दी है । इन्होंने काला (Calas) सरवाँ ("Suven) बारे (Barre) और मान्टबेली (Montbally) राजद्वार में दण्डित निरीह व्यक्तियों का पक्ष-समर्थन करने में बड़ा परिश्रम किया । इन्होंने नास्तिकता और धर्मान्धता के विरुद्ध युद्ध किया । इन्होंने साम्यवाद की शिक्षा दी और सब प्रकार की पराधीनता को दूर कर मनुष्य के स्वाभाविक अधिकारों की रक्षा का प्रयत्न किया” । रूसो के स्थान पर लिखा है—“प्रकृति और सत्य का मनुष्य यहाँ गड़ा हुआ है” । अन्यान्य महात्माओं में से गणितज्ञ लाग्रान्ज (Lagrange) यहाँ गड़े हुए हैं । तहखाने में बोलने से उसकी प्रतिध्वनि बड़ा मजा दिखाती है । खास कर सानुनासिक-पूर्ण फ्रेञ्च भाषा की प्रतिध्वनि प्रेत की सी आवाज जान पड़ने लगी । सन् १८५१

में प्रसिद्ध वैज्ञानिक फुर्लुट ने इसी मन्दिर में अपनी प्रसिद्ध पेण्डुलम-प्रक्रिया के द्वारा पृथ्वी की दैनिक गति के सम्बन्ध में कई नवीन तथ्य प्रमाणित किये थे ।

बोया-डी-बुल्लों (Bois de Boulogne the Hyde park of Paris) । यह बहुत ही भारी और बहुत ही विचित्र विहार-स्थान है । गाडी पर चढकर सब घूमने में भी पहर भर से कम नहीं लगता । जिस समय रोमन लोगों ने गाल् देश पर अधिकार जमा लिया उस समय इस स्थान पर घना जगल था । सम्राट् तीसरे नेपोलियन के राज्यकाल में, सन् १८५३ से यह एक रमणीय बगीचा बन गया है । सबेरे, तीसरे पहर और शाम को घोडे और गाडियो पर चढ कर बहुत से नगरनिवासी यहाँ हवा खाने को आया करते हैं । इसके भीतर दो जलाशय हैं । एक ८४ बीघे की कृत्रिम नदी है । नदी में दो टापू भी बने हैं । एक टापू पर खाने-पीने के लिए एक सुन्दर भवन बना है । नान पर चढ कर इसमें जाते हैं । १५ मिनट के बाद नाव मिलती है । दूसरा १८ बीघे का एक नकली कुण्ड है । इन दोनों जलाशयों में जल बनाये रखने के लिए ५० मील लम्बी नहर के द्वारा जल लाया गया है । ५३ मील नहर इस बाग की हद में ही है । इस भारी विलास-वाटिका का घेरा बहुत भारी है । घेरे का अन्दाजा नीचे लिखी धावो से लगा लिया जा सकता है । गाडियो पर और पैदल टहलने का रास्ता सब मिलाकर साठ मील है । उसमें ३६ मील तक गाडी मजे में जा सकती है । घुडदौड के लिए ७३ मील की बालू की सडक है । २१० बीघे की जमीन बाग के लिए है । उसमें १५ बीघे की एक मनाहर विहार-वाटिका बनी है । १५० बीघे में चिडियाखाना (garden d' Acclimatation) है । यहाँ जल और स्थल के बहुत

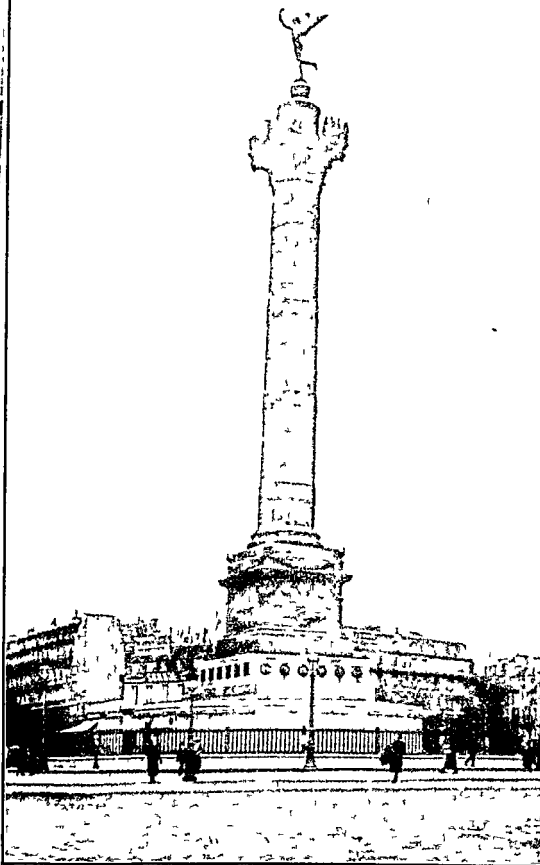
से विदेशी जीव-जन्तु, आवश्यक ताप आदि पहुँचा कर, यत्रपूर्वक सुरक्षित हैं। मछलियोंवाला हिस्सा खासकर देखने की चीज है।

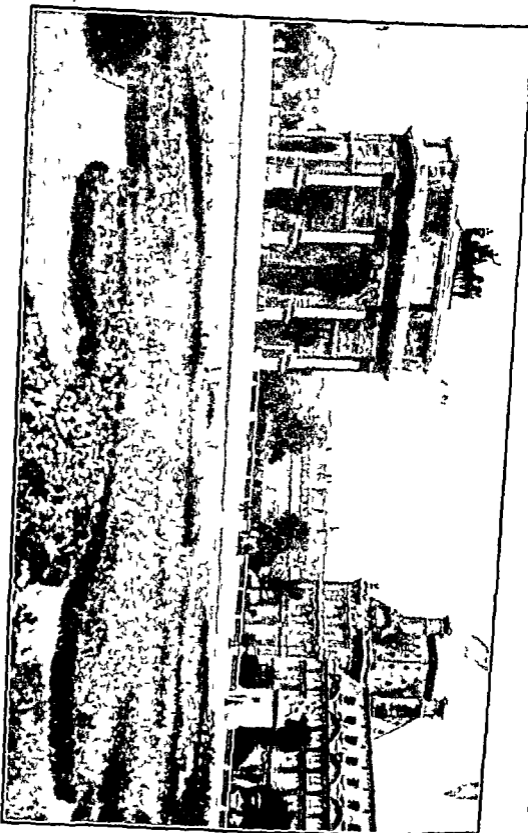
विन्सेन-पार्क (Park de Vincennes)। यह भी उल्लिखित वाग के इतना ही बड़ा है। इसमें ६० बीघे का एक जलाशय है। उसमें तीन टापू हैं। उनमें से छोटे टापू पर एक 'काफे' (पान-भवन) स्थापित है। पार्क के एक किनारे एक महल है। सर्व-साधारण को, खाम कर विदेशियों को, उसके भीतर जाने की मनाही है।

जूलाई-स्तम्भ (colonne de juillet)। पहले जिस जगह पर प्रसिद्ध बास्टिल कारागार था इस समय वहाँ खुली जगह (Place de la Bastille) है। बीच में यह धातु (Bronze)-निर्मित १६० फुट ऊँचा, अर्थात् कलकत्ते के मन्मेन्ट से केवल ३४ हाथ छोटा, यह जूलाई-स्तम्भ है। चोटी के ऊपर स्वाधीनता की धातुनिर्मित मूर्ति, एक हाथ उठाये, एक पैर से लड़ी है। सन् १८३० के विप्लव के स्मारक में यह स्तम्भ स्थापित हुआ है। विप्लव में मारे गये आदमियों के नाम स्तम्भ में लिखे हुए हैं और उन लोगों के देहावशेष इस स्तम्भ के नीचे गड़े हैं।

वेण्डम-स्तम्भ (Colonne de Vendome)। नेपोलियन ने युद्ध में आस्ट्रियन लोगों की १२०० तोपें लूट ली थीं। सन् १८०६ में उन्हीं तोपों को गलाकर यह स्तम्भ बनाया गया है। सन् १८०५ के रूस और आस्ट्रिया के साथ फ्रांस के युद्ध आदि के रिलीफ चित्र इस स्तम्भ में अंकित हैं। यह रोम के प्रसिद्ध ट्रैजन-स्तम्भ का अनुकरण है। इसकी चोटी पर नेपोलियन की मूर्ति है। सन् १८७१ की १६ मई को विद्रोही प्रजा (Communists) ने इसे गिरा दिया था। तीन वर्ष बाद फिर यह स्तम्भ खड़ा किया गया।

विजय-फाटक। पेरिस की बड़ी सड़क में इस तरह के चार





शार्क की दीवार—पृ० ३०६

फाटक हैं । दो चौदहवें लुई के और दो नपोलियन के समय के हैं । सेन्टडेनिस फाटक (Porte St Denis) ७५ फुट और सेन्ट मार्टीन फाटक (Porte St Martin) ५६ फुट ऊँचा है । नरपति लुई न जिन युद्धों में विजय लक्ष्मी प्राप्त की है उन युद्धों के अनक चित्र और लेख इन फाटकों पर अंकित हैं ।

इटाइल विजय फाटक (Arc de Triomphe de l' Etoile) । यह फाटक सबसे बड़ा है । सन् १८०६ में नेपोलियन ने इसको बनवाना शुरू किया था । सन् १८३० में एक करोड़ फ्रैंक (फ्रांस का सिक्का) की लागत लग चुकने पर यह बनकर तैयार हुआ । यह १५० फुट लम्बा, १५० फुट के लगभग ऊँचा और ७० फुट चौड़ा है । दरवाजा ६० फुट का ऊँचा और ४५ फुट का चौड़ा है । इसमें चारों ओर विप्लव और साम्राज्य-काल के युद्ध आदि की रिलीफ तस्वीरें और जीते हुए युद्धों तथा विजयी सेनापतियों के नाम अंकित हैं । पृथ्वी में इस श्रेणी का फाटक दूसरा नहीं है । अँगरेज लोग कहते हैं—("It is the finest triumphal arch in the world, and in all probability never had an equal") यही से नगर की १२ प्रधान सड़कें निकली हैं ।

दूसरा फाटक (Arc de Triomphe du carrousel) । राम नगर में सम्राट् सिवीरस के सम्मान के लिए जो फाटक बना था उसी के अनुकरण पर यह फाटक बना है । यह ४५ फुट ऊँचा और ६० फुट चौड़ा है । फाटक की चोटी पर पीतल की बनी चार घाँडे की गाड़ी का हाँक रही विजया देवी (Victory) की मूर्ति स्थापित है । वीनिस नगर के सेन्ट मार्क गिर्जे से लूट कर लाये गये पीतल के घाँडे पहले यहीं रक्ते गये थे, किन्तु फिर फेर दिय गये ।

उद्भिद्-उद्यान और पशुशाला (Jardin des Plants) । यह

नदी के किनारे है । यद्यपि लन्दन की पशुशाला या क्यू-बाग की अपेक्षा यहाँ कम सग्रह है, पर उस सग्रह से शिक्षा प्राप्त करनेवाले विद्यार्थियों के लिए यहाँ वहाँ से अच्छा प्रबन्ध है । एक समय यह प्रसिद्ध प्राणितत्त्वज्ञ बुफों की देखरेख में था और अद्वितीय जीव-विद्या-विशारद कुचीर यहाँ रहते थे । इस जगह अनेक प्रकार की प्राकृतिक विद्याओं (Comparative Anatomy, Anthropology, Zoology, Mineralogy, Geology, Botany) के कई सुन्दर म्यूजियम और विद्यार्थियों को उपदेश देने के लिए लेक्चर-हाल हैं ।

उपनगरों के पुलों को छोड़ कर पेरिस में सेइन नदी के ऊपर २६ पुल बने हुए हैं । बोया-डि-बुलों और विन्सेन-पार्क के सिवा चार बड़े और बहुत से छोटे पार्क हैं । देखने योग्य इतनी चीजें ऐसे सुन्दर ढङ्ग से सजाई हुई हैं कि लिख कर या कह कर कोई बतला नहीं सकता ।

वेयरसेइल (Versailles) । यह पेरिस का एक उपनगर, नगर से ११ मील के फासिले पर, है । यहाँ का राजमहल और उससे मिला हुआ गिर्जा, म्यूजियम, चित्रशाला, बगोचा, फुहारा आदि सब चीजें अद्भुत ही हैं । यहाँ का राजभवन पृथ्वी पर सर्वश्रेष्ठ राजभवन है, यह बात सर्वसम्मत—*The most magnificent royal residence in the world*— है । राजा चौदहवें लुई ने सन् १६८२ में इसे बनवाना शुरू किया था । इसके सर्वाङ्गसम्पन्न बनने में बेशुमार रुपया खर्च किया गया । बहुत खर्च हो जाने के कारण, उसे छिपाने के लिए, राजा ने खुद हिसाब के कागज-पत्र नष्ट कर डाले । प्रथम नेपोलियन के बाद राजा लुई फिलिप ने केवल इसकी मरम्मत कराई थी । उसमें उन्हें १० लाख पौण्ड

की भारी रकम लगानी पडी । इससे और अन्यान्य अनुमानों से लोग कहते हैं कि इसके बनान और सजान में पहले ५ करोड़ पाँण्ड लगे होंगे । इतनी बड़ी इमारत है कि उसके भीतर के महलों में केवल एक बार घूम आने में पहर भर से कम नहीं लगता । केवल चित्रपट इतने हैं कि देख कर मनुष्य की बुद्धि चकरा जाती है । एक जगह पर ऐसे कीमती चित्रों का ऐसा भारी समूह सप्ताह भर में और कहीं नहीं है । इस बारे में यात्री लोग वेयरसेइल को अब्बल नवर बतलाते हैं । इसके बाद नम्बरवार अन्य स्थानों की चित्रशालाओं का उल्लेख नीचे किया जाता है । न० २ ड्रेसडेन, न० ३ माड्रिड, न० ४ लुव्रे, न० ५ लन्दन, न० ६ सेन्टपीटर्सबर्ग, न० ७ वर्लिन, न० ८ वियेना, न० ९ म्यूनिख, न० १० फ्लेन्स, न० ११ नेपल्स, न० १२ वीनिस्, न० १३ एन्टवर्प, न० १४ स्टूरिन् ।

इस राजमहल में अनेक ऐतिहासिक घटनाएँ हो चुकी हैं । सन् १७८९ की २ वीं अक्टूबर को सोलहवें लुई के खास शरीररक्षकों (Gardes du Corps) को यहाँ भोज दिया गया । उस भोज की वक्तूतायें ही विप्लव के पहले के हंगामे का कारण हुईं और राजा जन्म भर के लिए महल से भगा दिए गये । और एक अद्भुत घटना उसी महल में हुई । प्रुशिया (जर्मनी) के लोगों ने जब पेरिस को घेर लिया तब राजा विलियम (William King of Prussia) अपने मन्त्रियों सहित इसी महल में ठहरे थे और सन् १८७१ की १६ वीं जनवरी को यहाँ के विधायी-महल में सभा करके उन्होंने जर्मन-साम्राट् की उपाधि ग्रहण की । महल के आंगन में प्रसिद्ध फ्रञ्च योद्धा लोगों की मूर्तियाँ स्थापित हैं । बीच में चौदहवें लुई की मूर्ति है । नेपोलियन की मूर्ति यहाँ नहीं है । विप्लव के पूर्ववर्ती वीरों की ही मूर्तियाँ यहाँ स्थापित हैं । यहाँ तीन बड़े बड़े और कई छोटे

फुहारें हैं । मई से अक्तूबर तक तीसरे, पहरे कभी कभी ये चलाए जाते हैं । म्यूजियम और चित्रशाला देखने से फ्रान्स का इतिहास पढ लेने का ज्ञान प्राप्त हो जाता है । राजा चौदहवें लुई का पल्लो भी यहाँ रक्खा है । वेयर सेडल पार्क का घेरा २० मील का है ।

सॉ-क्लू (St Cloud) । यह भी पेरिस का एक उपनगर ही माना जाता है । राजधानी से रेल पर चढ कर आध घंटे में यहाँ पहुँचते हैं । यहाँ के राजमहल को पेरिस घेरने के समय शत्रुओं ने जला दिया था । यहाँ का पार्क बहुत ऊँची जमीन के ऊपर है । वहाँ से पेरिस नगर और सेइन नदी का दृश्य बहुत मनोहर जान पडता है । सितम्बर में १५ दिनों तक यहाँ एक मेला लगता है । यूरोपियनो का मेला मैनं पहले पहल यहीं देखा ।

फन्टानाब्लो (Fontanableau) । यह प्रसिद्ध स्थान पेरिस से ३७ मील के फासले पर है । यहाँ का बाग प्रसिद्ध है । उसका घेरा ५५ मील का है । लगभग डेढ लाख बीघे जमीन को यह बाग घेरे हुए है । प्रथम नेपोलियन के राज्य काल में पोप पियस सेविन्थ (Pope Pius VII) डेढ बरस तक यहाँ कैदी होकर रहे हैं । यहीं पर सम्राट् ने आपही, माम्कोविभ्राट् के बाद, पुत्र को राज्य देने की दलील पर दस्तखत किये और आप एल्बा-द्वीप को चले गये । सम्राट् की पहली स्त्री जोसेफोन यहाँ के महल में रहना बहुत पसन्द करती थीं । इसी नगर में राज्य के गोलन्दाजों का स्कूल स्थापित है । जगल में घूमने के लिए कई एक साफ़ रास्ते बनाये गये हैं । सब रास्ते एक ही तरह के होने के कारण राह चलनेवाला बहुत जल्द राह भूल जाता है । इसलिए इधर सैर के लिए जानेवालों को अपने साथ किसी ऐसे आदमी को अवश्य ले लेना चाहिए जो अच्छी तरह इधर के भागों से अभिज्ञ हो ।

पेरिस-माहात्म्य । पहले ही कहा चुका है कि पेरिस अत्यन्त सुन्दर नगर है । यहाँ की लोकसंख्या ढाई लाख से कुछ ऊपर है । लन्दन में पत्थर का कोयला जलता है, उसके काले धुएँ से सब घर मैले हो जाते हैं । परन्तु पेरिस के लोग लकड़ी के कोयले को जलाते हैं, इस कारण नगर में कालिख का साम्राज्य नहीं है । सब इमारतें साफ-सुथरी हैं । शहर में १००० से अधिक लोग १२५ से लेकर २५० पौण्ड तक, १२०० से अधिक लोग ५०० से १००० पौण्ड तक और ३०० आदमी इससे भी अधिक रकम, मकान के किराये की मद में, सालाना खर्च कर डालते हैं । १००० से अधिक लोगों का सालाना आमदनी २००० पौण्ड या इससे भी अधिक है । पहले यह भी कहा जा चुका है कि पृथ्वी के अनेक देशों के बेकार धनी लोग सदा इस नगर में आते और सैर-सपाटे में समय बिताते हैं । ब्रेजिल के धनी युवक और दक्षिण अमेरिका के लोग पेरिसवालों के लिए कल्पवृक्ष हैं । ये सब अहमक 'बड़े आदमी' पेरिस को मुसलमानों का स्वर्ग समझ कर सशरीर स्वर्ग-सुरा भोगने के लिए झुण्ड के झुण्ड पहुँचते रहते हैं । पेरिस के नर-नारी भी उनके आदर और अभ्यर्थना के लिए हमेशा हर घड़ी हाथ फैलाये रहते हैं । इन रईसों के पास जब तक पैसा रहता है तब तक अनेक श्रेणी के स्त्री-पुरुष भोज, जुआ, कर्ज आदि अनेक उपायों से इन लक्ष्मी के वाहना का वन लूटते रहते हैं । देहाती वालक अचानक किसी मेले में पहुँच कर जैसे मोहाच्छन्न हो जाता है वैसे ही पेरिस में पहुँच कर ये बड़े आदमी अथवा आँख के अन्ध गोठ के पूरे वन जाते हैं । उनकी जिस चीज की तारीफ कर दीजिए वह आपकी होगी । घड़ी अँगूठी आदि अपन मुसाहबों को अक्सर बाँट दिया करते हैं । मूर्ख रईसों का रोग इन लोगों में भी देख पडा ।

ये भी उपाधि के बड़े भूरे देख पड़े। इटली में तो इस समय भी मामूली रकम खर्च करने से सहज में उपाधि मिल जाती है। यहाँ के मुसाहब लोग ऐसी ही उपाधियों का प्रचन्ध करके कभी कभी अच्छी रकम हथिया लेते हैं। यहाँ के कुछ नागरिक लोग 'साम्राज्य-काल' को स्मरण करके इस समय भी दुःख प्रकट करते हैं। उस समय नगर और उपनगरो में जो राजभवन और विहारभवन थे उनमें हमेशा तरह तरह के रगन्तमाशे हुआ ही करते थे। देश विदेश के बहुत से पण्डित भी इन स्थानों में निमन्त्रित होकर आते थे और उनका सत्कार हाता था। इन राजभोजों में बहुत सा रुपया खर्च होता था और बहुत लोग पलते थे। अब साधारणतन्त्र स्थापित होने पर सब बातें एक-दम बन्द कर दी गई हैं।

ब्रिटिश-द्वीप में भिन्न भिन्न प्रधान नगरों की प्रधानता अलग अलग मानी जाती है, फ्रान्स में यह बात नहीं है। पेरिस ही फ्रान्स है, पेरिस के साथ फ्रान्स के अस्तित्व का ऐसा घनिष्ठ सम्बन्ध है। फ्रान्स देश में जो कुछ श्रेष्ठ है वह सब पेरिस में जमा है, अन्यत्र कुछ भी नहीं है। अतएव पेरिस का गौरव, पेरिस की बड़ाई सारे फ्रान्स का गौरव और बड़ाई है। फ्रेंच लोगों की शिक्षा सदा से ऊँचे दर्जे की है। फ्रान्स में भी एक ऐसा समय था जब स्त्री-शिक्षा का चलन कैसा, उसके विरोध में लोग यह छन्द कहते थे—
 "Poule que chant, Pirette que dance, Femme que
 parle Latin, N'arrivent j'amaiz a belle fin")
 (पुल कि शांत प्रेट्र कि डॉस, फाम कि पार्ल् ह्याट्यॉ। नारीव जामे,
 आ वेल फ्याँ।) अर्थात् मुर्गी अगर मुर्गी की तरह बोले, धर्म-प्रचारक
 होकर अगर नाच-तमाशों में शरीर ही, और स्त्री अगर लाटिन बोले तो
 इसका अन्तिम फल कभी अच्छा नहीं हो सकता। किन्तु वह समय चला

गया। अब प्रायः दो सदियों से फ्रान्स की खिया शिखा में किसी से कम नहीं हैं। पेरिस की मजलिसों (Salon) का सञ्चालन प्रायः खिया के ही द्वारा होता है। आंपीर (Ampere), गिज़ो (Gizot) आदि पण्डित वरू प्रसिद्ध खियों के रक्ते सालों में विशेष आग्रह के साथ जाते और प्रसन्न होते थे। इन मजलिसों और सालों को पेरिस का जीवन कहें तो कुछ भूठ नहीं। इन स्थानों में साहित्य, राजनीति, गाने बजाने आदि सब विषयों की मनोहर आलोचना हुआ करती है। एक एक प्रसिद्ध पण्डिता इन मजलिसों की जान है। नगर में अनेक श्रेणियों के क्लब (Club) भी हैं। उनमें अनेक क्लब केवल जुआ खेलने के लिए हैं। अनेक श्रेणियों के दैनिक अखबार तो इतने पेरिस से निकलते हैं कि इस बात में कोई भी नगर पेरिस को बराबरी नहीं कर सकता। सबेरे और शाम को नित्य बेशुमार अखबार छप कर प्रकाशित होते हैं। कोई नया बैंक या नई कम्पनी स्थापित हुई तो उसे अपना अलग अखबार चाहिए। विशेष कर बड़े आदमियों की बढ़ती घटती के साथ वहाँ के अनेक अखबारों की उन्नति-अवनति अनिवार्य है। लेकिन पेरिस में उनको साख और प्रचार कम होने पर भी मुफ्तिसल के ग्राहकों से उनका काम किसी तरह चलता रहता है। विज्ञापनों से यहाँ के अखबारों को सब फायदा है। सन प्रचार के समय एक अखबार साल में तीन लाख फ्रैंक विज्ञापनों से पैदा करता था। पर अब उसका प्रचार और प्रतिष्ठा बहुत घट गई है। दैनिकों के सिवा मन्चित्र साप्ताहिक आदि अनेक अखबार पेरिस से निकलते हैं। खेल-कसरत आदि में मछली पकड़ने का शौक आजकल के लोगों में अधिक देखा जाता है। आप देखेंगे कि सेइन नदी के किनारे बहुत से बंजार बुड़े पानी में काँटा डाले धैर्य की परीक्षा दिखला रहे हैं। पडितवर जान्सन मछली पकड़ने की छीप के

सम्बन्ध में कहते थे—(A fish at one end and a fool at the other) किन्तु यहाँ एक ओर ठीक होने पर भी दूसरी ओर प्रायः कुछ भी नहीं रहता । छीपों की अपेक्षा मछलियों की संख्या बहुत ही कम होती है । डुएल-युद्ध (Duel) यहाँ इस समय भी प्रचलित है, किन्तु पहले का ऐसा रून-खराबा अब नहीं होता । अब केवल नाम-मात्र को डुएल होता है । शतरज का खेल । इसके लिए तो पेरिस प्रसिद्ध ही है । इस खेल का प्रधान अड्डा रिजेन्स काफे (Cafe de la Regence) है । नेपोलियन जब पलटन में नौकरी करता था तब यहाँ शतरज खेलने आता था । एक छोटा सा सग-भरमर का टेविल यहाँ रक्खा है, जिसे यहाँ के लोग नेपोलियन के शतरज खेलने का टेविल बतलाते हैं ।

साधारण चित्रशालाओं के सिवा अनेक बड़े आदमियों के घरों में बहुत सा चित्रों का संग्रह है । एक व्यक्ति के चित्र-संग्रह का मूल्य एक करोड़ फ्रैंक होगा । दस बीस लाख फ्रैंक की कीमत के चित्र-संग्रह तो बहुत से लोगों के घरों में हैं । पेरिस में नित्य ३० थियेट्रो में नाटक खेले जाते हैं । इनके सिवा बहुत से छोटे और बड़े नाचने-गाने बजाने के घर, नानारङ्गी रङ्गालय और काफी-खानों सं मिले हुए सन्ध्याकालीन आमोद के स्थान (Cafe chantant) बहुत सं हैं । जिन स्थानों में देशी भाषा में नाटक खेले जाते हैं उन्हें सरकारी सहायता मिलती है । यूरोप में कहावत प्रसिद्ध है कि कण्ठ और सुर की मधुरता में इटलियन, वाजे की ताल में जर्मन और नाटक के अभिनय में फ्रेंच लोग श्रेष्ठ हैं । पेरिस का प्रधान स्टेज पृथ्वी भर के स्टेजों में सब बातों में श्रेष्ठ है । अंगरेज लोग स्वीकार करते हैं कि "It is the finest theatre in the world" लगभग ६ बीघे जमीन के ऊपर, न्यूनाधिक १५ लाख पाउण्ड की लागत से,

चौदह घरसों में यह मनोहर और भारी भवन बना है । उसमें २००० से अधिक दर्शकों के बैठने का स्थान और सामान है । इसके अस्पाय, चित्र, सुनहले काम आदि का सौन्दर्य अनिर्वचनीय है । अभिनय की छुट्टियों में दर्शकों को टहलने के लिए जो हाल (Crushroom) बना है वह १६७ फुट लंबा, ४३ फुट चौड़ा और ५६ फुट ऊँचा है । सारी इमारत बहुत लम्बी चौड़ी और ऊँची है । फ्रेंच लोग नाटकों के ऐक्टों को जैसे बहुत दिनों तक खास तौर की शिक्षा देते हैं वैसे ही वहाँ ऐक्टर पैदा भी रख करते हैं । प्रसिद्ध ऐक्टर ब्रेसान्त (Bressant) ने जब “थियटर फ्रांस” का काम छोड़ा तब सालाना दस हजार फ्रैंक के इनाम के अलावा एक मुश्त अस्सी हजार फ्रैंक का पुरस्कार (Gratuity) दिया गया । एक एक थियेटर की ऐक्ट्रेस १०००० फ्रैंक की रात के हिसाब से अमेरिका में नाचने-गाने जाया करती है । पेरिस में नटियों की तनख्वाह सवा लाख फ्रैंक वार्षिक तक है । इटली में जैसे अत्यन्त साधारण अशिक्षित आदमी तक सुर के साधारण अन्तर को भी पकड़ सकता है वैसे ही फ्रेंच लोग अभिनय में ग्रन्थकार या ऐक्टर की साधारण त्रुटि को भी सहजही पकड़ लेते हैं । यहाँ तक कि अभिनय के समय ऐसी त्रुटि होने पर सारे दर्शक चौंक उठते और दुःख प्रकाशित करने लगते हैं । पेरिस में जीव-जन्तुओं के खेल के लिए चार स्थायी सर्कस हैं । उनमें हिपोड्रॉम-सर्कस खूब बड़ा है । इन सबको जैसे सरकारी सहायता मिलती है वैसे ही इन्हे भी आमदनी का दसवाँ हिस्सा दान करना पड़ता है । रसेई के वारे में पेरिस सदा से प्रसिद्ध है । किन्तु क्रमशः रेल और विजलों के भव्यता में पड़ कर फ्रेंच लोग इस काम में शिथिलता दिखाने लगे हैं । पेरिस के भले आदमियों के लिए प्रधान भोजन घर में

करना निन्दा की बात है । जिनके पास कुछ भी ठिकाना है वे प्रधान भोजन बाहर ही करते हैं । इस बात में अँगरेज लोग भी कुछ कम नहीं हैं । ग्लाडस्टोन ने अपने जीवन में कैं दिन घर में डिनर खाया सो गिन कर बतलाया जा सकता है । परन्तु फ्रीच लोग फिर भी इस बात में अँगरेजों से बड़े ही हुए हैं । बाहर खाने का सब चलन होने के कारण साधारण होटलो में ग्राहकों को रुश रखने के लिए रसोई की सफाई और स्वाद पर विशेष दृष्टि रखनी जाती है । कुर्तों में भोजन करने का अधिक चलन होने के कारण इस विषय में होटलो का भी ध्यान कम होता जाता है । तथापि पेरिस के होटलो के भोजन की व्यवस्था और देशों के होटलों की व्यवस्था से गनीमत है । बड़े बड़े होटलो में कभी कभी ऐसी भीड़ हो जाती है कि दस वार पुकारने पर भी परोसनेवाले का पता नहीं चलता । पेरिस के अग्निवस और ट्रामगाडी के टिकट गाडी में नहीं मिलते । टिकट बेचने के लिए राह में छोटे छोटे लकड़ी के घर हैं । भीतर बैठने के और छत पर बैठने के भाड़े में अन्तर है । कभी कभी गाडी में जगह न होने के कारण बहुत देर तक राह में खड़े खड़े दूसरी ट्राम की राह देखनी पडती है । पेरिस के नीचे सेइन नदी नव सौ साठे नव सौ फुट से अधिक चौड़ी नहीं है । नगर के भीतर के २६ पुलों में एक लोहे का बना हुआ है । जेना युद्ध के स्मारक में जो पुल नेपोलियन ने स्थापित किया था उसे वाटर्लू-युद्ध के बाद कुपित प्रुशियन लोगो ने पेरिस पर कब्जा करके तोड़ डालना चाहा था । परन्तु केवल वेलिंगटन की विशेष चेष्टा से अन्त को वह बच गया ।

पेरिस में दो तरह के डाकघर हैं । एक तरह के तो सिगरेट की दूकानों में हैं । उनमें केवल टिकट विकते हैं और चिट्ठियाँ छोड़ी

जाती हैं । दूसरी तरह के डाकघरों में टेलीग्राफ और टेलीफोन के आफिस और सेविङ्गर्वेण भी हैं । ब्रिटिश-द्वीप के हर हिस्से में जैसे आधे शिलिङ्ग (छ आने) में तार भेजा जा सकता है वैसे ही फ्रान्स के हर एक स्थान में तार भेजन का महसूल आधा फ्रैंक है । बड़े डाकघर से साल में न्यूनाधिक पचास करोड पत्र आदि और अस्सी करोड छोटे पुलिन्दे आते जाते रहते हैं । रेहन की चीजों के कारबार के लिए बहुत से सरकारी आफिस हैं । उनमें नित्य पाँच हजार में अधिक चीजें बन्धक होती हैं । खर्चा निकाल कर जो लाभ होता है वह खैरात में खर्च किया जाता है । निर्दिष्ट समय के भीतर चीज न छुड़ाने से वह नीलाम कर दी जाती है । अगर कुछ बचता है तो वह चीज के मालिक को दे दिया जाता है और अगर नुकसान होता है तो जिस कर्मचारी के द्वारा पहले उस चीज की कोमत आँकी जाती है उसे देना पड़ता है । पेरिस के स्कूलों की देख-रेख म्यूनिसिपलिटि के हाथ में है । उच्च शिक्षा के लिए फ्रान्स-कालेज (College de France) में भिन्न भिन्न विद्यायें सिखाने के लिए ४५ अध्यापक नियत हैं । उनके लेक्चर को नर-नारी सर्व-साधारण सुन सकते हैं । विश्वविद्यालय (Sorbonne) में दस हजार के लगभग विद्यार्थी रहते हैं । दिसम्बर से जुलाई तक यहाँ भी सर्व-साधारण के लिए व्याख्यान दिये जाते हैं । इन लेक्चरों में स्त्रियों के जान को मनाही है । इसके सिवा जुदी जुदी विद्याओं के लिए जुदे जुदे कालेज हैं । उनमें संगीत और अभिनय तथा कारीगरी के विद्यालय में बिना फीस के शिक्षा दी जाती है । कारीगरी के विद्यालय में बहुत तरह की मशीनें, यन्त्र-तन्त्र और पुस्तकें आदि रक्खी हैं । सरकारी अस्पताल आदि के सिवा बुढ़े अपाहिज आदिमियों के लिए पाँच, और बे-मा-चाप के असहाय बच्चों के लिए कई एक, तथा दो

देख पडी। जान पडता है, वहाँ के गृहस्थों की असावधानता ही इसका मुख्य कारण है। लन्दन में हर एक प्रजा को, औसत के हिसाब से, दो पौण्ड सात शिलिंग नव पंती मालाना खर्च पडता है। और पेरिस में पाँच पौण्ड चार शिलिंग सात पेनी। लन्दन की हर एक प्रजा पर जातीय ऋण का भार नव पौण्ड तीन शिलिंग आठ पंती के हिसाब से है और पेरिस में बत्तीस पौण्ड पाँच शिलिंग तीन पेनी के हिसाब से। इससे मालूम पडता है कि पेरिस में खर्च बहुत अधिक है और उनकी भीतरी हालत उतनी अच्छी नहीं जान पडती।

फ्रान्स की साधारण अवस्था। फ्रान्स अन्यान्य देशों से पर्वत-श्रेणी के द्वारा विल्कुल अलग और सुरक्षित है। केवल बेलजियम की ओर ऐसी कोई सुरक्षित सीमा नहीं है। किन्तु बेलजियम के आधे निवासी फ्रेञ्च हैं। यूरोप में, ऐसा सुरक्षित देश होने के कारण ही, फ्रान्स चिरकाल से अपना अस्तित्व बनाये रख कर सारे महा देश (यूरोप) में अपन को प्रधान बनाये हुए है। यूरोप में घूमने से स्पष्ट देखा जाता है कि सब फ्रेञ्च-ढंग और फ्रेञ्च-सभ्यता को पसन्द करते हैं। सबमुच यूरोप भर फ्रान्स-मय है। फ्रान्स का इतिहास यूरोप का इतिहास है। फ्रान्स की लोक-सख्या न्यूनाधिक चार करोड है। अन्यान्य देशों में जैसे लोक-सख्या बढती जाती है, यहाँ वैसे लोक-सख्या की वृद्धि नहीं होन पाती। एक तो बार बार युद्धों में यहाँ के बहुत आदमी छीज गये, दूसरे यहाँ के आज-कल के अनेक मध्यम श्रेणी के लोग व्याह करना ही नहीं पसन्द करते। यही कारण है कि जन-सख्या घटाने के लिए फ्रान्स में एक प्रकार की चिन्ता साँ छद्म है।

सेना की सख्या सब मिला कर कुछ अधिक पाँच लाख (अब

बहुत बढ गई है।) है। इस बात को सभी स्वीकार करते हैं कि स्थल-युद्ध में फ्रान्स की फौज बहुत ही होशियार है। यह भी सब लोग जानते हैं कि हार होती है स्वभाव के अनुसार, नैतिक बल के अभाव से अथवा भगवान् के कोप से। सेना बहुत होने के कारण उसकी पोशाक वैसी अच्छी नहीं है। किन्तु युद्ध के अनेक प्रकार के नवीन कौशल निकालने के लिए फ्रान्स के कुछ वैज्ञानिक विद्वान् बराबर चेष्टा करते रहते हैं। इसके सिवा इस बात की भी फौज को शिक्षा दी जाती है कि काम पडने पर वह आननफानन में तैयार हो कर लडाई के मैदान में खडी हो सके। यहाँ से वहाँ कूच-धावे बराबर हुआ करते हैं। राज्य के नियमानुसार प्रजा को जैसे कुछ दिन समरविभाग में काम करना पडता है वैसे ही युद्ध के समय सब लोग अपन घोड युद्ध के लिए देने को बाध्य हैं। जलयुद्ध में भी फ्रेञ्च लोग पिछडे हुए नहीं हैं। लौहयान और अनेक आविष्कार फ्रेञ्च लोगों के किये हुए हैं। यद्यपि अँगरेज लोग कहते हैं कि "The French fleet has had more science, but less stamina" तथापि यह बात वे अस्वीकार नहीं कर सकते कि निर्माण-कौशल में फ्रेञ्च लोग श्रेष्ठ हैं। फ्रान्स के छोटे बडे सब मिला कर ४०० भाफ से चलनेवाले जगी जहाज उस समय थे और इधर कई वर्षों से लगातार जी रोल कर जंगी जहाज आदि बनवाने में रुपया खर्च किया जा रहा है। इंग्लड में क्रिस्तानी धर्म के एक सम्प्रदाय (इंगलिश चर्च) के सिवा और किसी तरह के मत-विश्वास को 'राज्य' स्वीकार नहीं करता। किन्तु फ्रान्स में यह बात नहीं है। रोमन-कैथलिक और प्रोटेस्टेन्ट, ये दो ईसाई-सम्प्रदाय और यहूदी धर्म—इन तीन मतों को फ्रान्स-राज्य स्वीकार करता है। इन मतों को राज्य से सहायता भी मिलती है। फ्रान्स

देख पडो । जान पडता है, वहाँ के गृहस्थों की अभावधानता ही इसका मुख्य कारण है । लन्दन में हर एक प्रजा को, औसत के हिसाब से, दो पौण्ड सात शिलिंग नव पेनी सालाना खर्च पडता है । और पेरिस में पाँच पौण्ड चार शिलिंग सात पेनी । लन्दन की हर एक प्रजा पर जातीय ऋण का भार नव पौण्ड तीन शिलिंग आठ पेनी के हिसाब से है और पेरिस में बत्तीस पौण्ड पाँच शिलिंग तीन पेनी के हिसाब से । इसमें मालूम पडता है कि पेरिस में खर्च बहुत अधिक है और उनकी भीतरी हालत उतनी अच्छी नहीं जान पडती ।

फ्रान्स की साधारण अवस्था । फ्रान्स अन्यान्य देशों से पर्वत-श्रेणी के द्वारा विल्कुल अलग और सुरक्षित है । केवल बेलजियम की ओर ऐसी कोई सुरक्षित सीमा नहीं है । किन्तु बेलजियम के आधे निवासी फ्रेञ्च हैं । यूरोप में, ऐसा सुरक्षित देश होने के कारण ही, फ्रान्स चिरकाल से अपना अस्तित्व बनाये रख कर सारे महा देश (यूरोप) में अपने को प्रधान बनाये हुए है । यूरोप में घूमने से स्पष्ट देखा जाता है कि सब फ्रेञ्च-ढंग और फ्रेञ्च-सभ्यता को पसन्द करते हैं । सचमुच यूरोप भर फ्रान्स-मय है । फ्रान्स का इतिहास यूरोप का इतिहास है । फ्रान्स की लोक-सख्या न्यूनाधिक चार करोड है । अन्यान्य देशों में जैसे लोक-सख्या बढ़ती जाती है, यहाँ वैसे लोक-सख्या की वृद्धि नहीं होन पाती । एक तो बार बार युद्धों में यहाँ के बहुत आदमी छीज गये, दूसरे यहाँ के आज-कल के अनेक मध्यम श्रेणी के लोग ब्याह करना ही नहीं पसन्द करते । यही कारण है कि जन-सख्या बढ़ाने के लिए फ्रान्स में एक प्रकार की चिन्ता सी छाई हुई है ।

सेना की सख्या सब मिला कर कुछ अधिक पाँच लाख (अथ

आश्रम और सभा-सोसाइटियाँ हैं वैसे ही सारे राज्य में हैं यद्यपि गरीब अपाहिज मोहताज लोगों के कोई कानूनी बन्दोबस्त नहीं है तथापि गवर्नमेन्ट तथा सर्वसाधारण की ओर से बराबर दीन-हीन जनों को सहायता मिलती रहती है। फ्रेच, जर्मन और अँगरेज, तीनों के चरित्र की तुलना में, सर्वसाधारण में, एक प्रवाद प्रचलित है। एक अध्यापक ने अपने तीन विद्यार्थियों से, जिनमें एक अँगरेज, दूसरा फ्रेञ्च और तीसरा जर्मन था, ऊँट के सम्बन्ध में एक एक प्रबन्ध लिखने को कहा। जो फ्रेञ्च था वह उसी समय लाइप्रेरी में जाकर ऊँट के बयान की पुस्तकें ढूँढने लगा। जो जर्मन था वह प्रबन्ध लिखने की मामूली जुटाने के लिए पशुशाला में जाकर ऊँट को देखने लगा। जो अँगरेज था वह उसी दिन अरब की ओर चला। उसने ऊँट की जन्मभूमि में जाकर, उसके सम्बन्ध का सब वृत्तान्त समझ कर, एक बहुत ही अच्छा लेख लिख डाला। इस प्रवाद से यह नतीजा निकलता है कि फ्रेञ्च लोग सब कामों को सचेप में कर डालना चाहते हैं। धैर्य, स्थैर्य, गभीरता, शान्त-भाव-पूर्ण एकाग्रता आदि गुणों में अँगरेज लोग फ्रेचों से बड़े-चड़े हैं। अँगरेज लोग कामकाजी होते हैं, वे मृदा का आडम्बर पसन्द नहीं करते। परन्तु प्रथम जीवन के उद्यम, उत्साह और अन्तिम जीवन की ज्ञान-वर्चा में फ्रेञ्च लोग अनेक जातियों से आगे हैं। खून तत्परता के साथ रुपया-पैसा पैदा करके अनेक फ्रेञ्च लोग ऐसा ठिकाना कर लेते हैं कि ४०।४५ वर्ष की अवस्था में, किसी कोलाहल-हीन गाँव में बसकर, शेष जीवन को अपनी रुचि के अनुसार साहित्य, विज्ञान आदि की चर्चा और खोज में लगाते और इस प्रकार ससारा भर का भारी उपकार कर जाते हैं। खूब पैनी बुद्धि के बल से प्रतिभा के विकास

के अलजीरिया-प्रदेश की प्रजा मुसलमान है । राज्य की ओर से वहाँ मुसलमानी-मत की भी प्रतिष्ठा होती है । केवल प्रतिष्ठा ही नहीं, राज्यकोप से सहायता भी दी जाती है । फ्रान्स में यह नियम है कि एक लाय प्रजा जिस मत या धर्म को मानेगी वह राजभाण्डार से धन की सहायता पाने का अधिकारी है । यह अवश्य है कि फ्रान्स में रोमन-कैथलिक सम्प्रदाय ही सख्या के हिसाब से प्रबल है, किन्तु इस कारण उक्त सम्प्रदाय के प्रति किसी प्रकार का पक्षपात नहीं दिखलाया जाता । बल्कि कभी कभी अन्यान्य सम्प्रदायों पर विशेष अनुग्रह दिखलाया जाता है । फ्रेश्व लोगों के लिए यह कम, बड़ाई की बात नहीं है । दुःख की बात है कि इन्हीं सब कारणों से रोमन-कैथलिक सम्प्रदाय वर्तमान फ्रान्स की गवर्नमेन्ट पर असन्तुष्ट है । रोमन-कैथलिक सम्प्रदाय का प्रभाव फ्रान्स में इतना अधिक है कि अन्य किसी देश में न होगा । सब प्रकार के दुःख और विपत्तियों में प्रभु पोप फ्रान्स के आगे उपस्थित होते हैं और उन्हें, उनकी आशा के अनुसार, यथेष्ट सहायता भी मिलती है । फ्रान्स के राज्य में अनेक परिवर्तन होने पर भी पोप और फ्रान्स के सम्बन्ध में कुछ भी परिवर्तन नहीं हुआ । यहाँ तक कि सन् १८०१ में नेपोलियन ने पोप के साथ जो शर्तें कर ली थीं उनमें से बहुत सी अभी तक वैसे ही मानी जाती हैं ।

फ्रान्स में शिक्षा का विशेष प्रधान है । जिस गाँव में ५०० आदमियों की भी वस्ती है वहाँ म्यूनिसिपलिटि की ओर से बालक और बालिकाओं के लिए दो स्कूल खुले हुए हैं । उनमें असमर्थ मा-बापों के लडकी-लडके बिना फीस के शिक्षा पाते हैं । निम्न श्रेणी के स्कूलों और कालेजों में कानून के अनुसार वाणिज्य-शिल्प आदि की शिक्षा देने की विशेष व्यवस्था है । पेरिस में जैसे दूरीाती

देना पड़ता है। फ्रान्स् के सिक्के को फ्रैंक कहते हैं। २५ फ्रैंक का एक पौण्ड होता है। पांच फ्रैंक से लेकर सौ फ्रैंक तक के सोने के सिफे चलते हैं। एक सौ सातिमें (Contime) का एक फ्रैंक होता है। पांच सातिमें के ताँबे के सिक्के को सू (Sow) कहते हैं। फ्रान्स में इसका चलन बहुतायत से है। जहाँ पर हम 'कौडी कौडी को मुफलिस' शब्द का और अँगरेज लोग 'पेनीलेस' (Penniless) शब्द का व्यवहार करते हैं वहाँ पर फ्रेञ्च लोग 'सासू' (Sausow) शब्द का व्यवहार करते हैं। सन् १८१३ में राजकर उन्नीस करोड पौण्ड के लगभग जमा हुआ था। सन् १८११ में राज्य पर साठे तेरह करोड पाँड का भ्रूण था।

देना पड़ता है । फ्रान्स के सिक्के को फ्रैंक कहते हैं । २५ फ्रैंक का एक पौण्ड होता है । पाच फ्रैंक से लेकर सौ फ्रैंक तक के सौके सिक्के चलते हैं । एक सौ साँतिमे (Centime) का एक फ्रैंक होता है । पाच साँतिमे के ताँबे के सिक्के को सू (Sow) कहते हैं । फ्रान्स में इसी का चलन बहुतायत से है । जहाँ पर हम 'कौडी' कौडी को मुफलिस' शब्द का और अँगरेज लोग 'पेनीलेस' (Penniless) शब्द का व्यवहार करते हैं वहाँ पर फ्रेञ्च लोग 'साँसू' (Sanssow) शब्द का व्यवहार करते हैं । सन् १८१३ में राज कर उन्नीस करोड पौण्ड के लगभग जमा हुआ था । सन् १८११ में राज्य पर साढ़े तेरह करोड पौण्ड का ऋण था ।

के विषय में शायद कोई भी जाति फ्रेञ्च लोगों को नहीं पा सकती ।

नगरनिवासी तो नहीं, किन्तु देहाती लोग घोर कुसस्कार-प्रस्त हैं । जगलो में, साधारण मडकों के किनारे तरह तरह की मूर्तियाँ रक्खी देख पडती हैं । उन मूर्तियों में अधिकांश ईसा और मेरी की हैं । उनमें कुछ साधु-महात्मा लोगों की भी मूर्तियाँ हैं । डार्इन, भूत-प्रेत आदि को, हमारे देश की तरह, वहाँ के लोग भी डरते हैं । रोमन-कैथलिक सम्प्रदाय के ईसाइयों की जहाँ प्रधानता है वे सब देश घोर पौतलिक (मूर्तिपूजक) और कुसस्कार-प्रस्त हैं । ग्रीक-सम्प्रदाय के क्रिस्तान भी इन दोषों से नहीं बचे हैं । फ्रान्स में धर्म के नाम से जुआ-चोरी और ठगविद्या आदि अपराधों को करने के कारण बहुत से लोग पकड़े जाकर राजद्वार से दण्ड पाते हैं । किन्तु बहुत से ऐसे भी हैं जो कानून से बचाकर काम करते और बेखटके माल चोरते हैं । फ्रान्स में उपाधिधारी रईस नहीं हैं । विप्लव के पहले जो ऐसे रईस थे उनके वंशधर लोग नाम तो उसी ढग के रखते हैं, पर उनका वह पहले का ऐसा दबदबा अब नहीं है । साधारण-तन्त्र का जो सभापति होता है वही राज्य में सबसे बड़ा और प्रधान समझा जाता है । सभापति अर्थात् प्रेसीडेण्ट सात बरस के लिए चुना जाता है । वह अपनी इच्छा से पर-राष्ट्रों के साथ सन्धि तो कर सकता है, लेकिन 'सभा' के अनुमोदन बिना किसी में लड़ाई नहीं ठान सकता । राज्य में कानून के अनुसार सारी प्रजा को प्राथमिक शिक्षा अवश्य प्राप्त करनी पडती है । विल्कुल मुफलिसों को छोड़ कर दर एक प्रजा को डेढ़ फ्रैंक से लेकर साठे चार फ्रैंक तक एक साधारण कर (Personnelle mobile—Capitation Tax)

देना पड़ता है । फ्रान्स के सिक्के को फ्रैंक कहते हैं । २५ फ्रैंक व एक पौण्ड होता है । पाँच फ्रैंक से लेकर सौ फ्रैंक तक के सौ के सिक्के चलते हैं । एक सौ सॉतिमे (Centime) का एक फ्रैंक होता है । पाँच सॉतिमे के ताबे के सिक्के को सू (Sow) कहते हैं फ्रान्स में इसी का चलन बहुतायत से है । जहाँ पर हम 'फ्रीड कौडी को मुफलिस' शब्द का और अँगरेज लोग 'पेनीलेस' (Penniless) शब्द का व्यवहार करते हैं वहाँ पर फ्रेञ्च लोग 'साँसू' (Sanssow) शब्द का व्यवहार करते हैं । सन् १८१३ में राज कर उन्नीस करोड पौण्ड के लगभग जमा हुआ था । सन् १८११ में राज्य पर साठे तेरह करोड पौंड का ऋण था ।

इटली ।

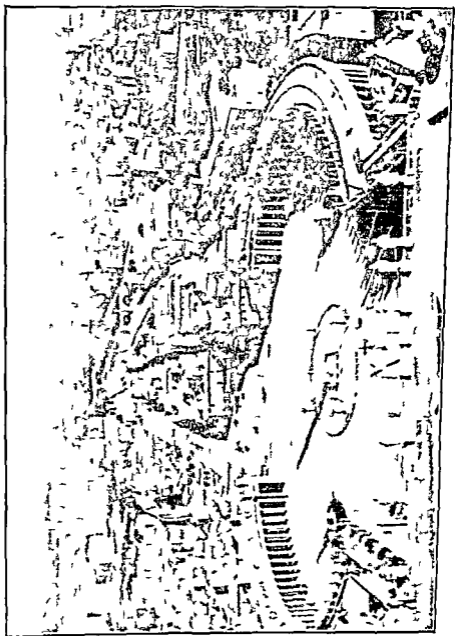
“ If I could open my heart you'd see
Written on it I-ta-ly ”—Browning

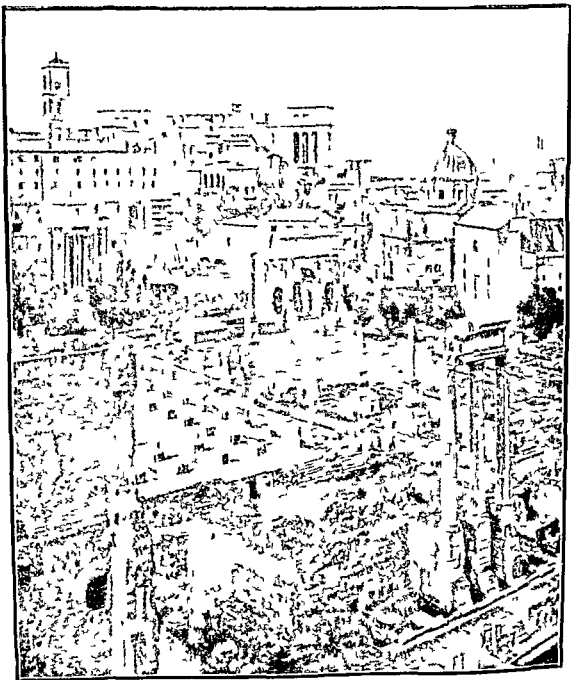
इटली बहुत से पण्डितों को बहुत ही प्यारी है। इसका इ अपूर्व-गौरव और ऐश्वर्य, मध्य-समय की दुर्दशा और वर्तमान अभ्युत्थान बहुत लोगों के लिए आलोचना की सामग्री है। इसके सिवा इसकी प्राकृतिक और कृत्रिम सुन्दरता और विचित्रता भी एक ऐसी चीज है जो सारे यूरोप का ध्यान अपनी ओर खींचती है।

रोम ।

६

पेरिस से एकदम सीधा रोम का टिकट लिया। किन्तु किसी कारण से रोम में रहना नहीं हुआ, उसी दिन नेपल्स जाने की ठहरी। उसके बाद सन् १८८१ में ग्रीस से जब इटली को आना हुआ तब कुछ दिन रोम में रहना हुआ। इस जगत्प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर के सम्बन्ध में उस समय जो कुछ मैं जान सका वही यहाँ पर लिखता हूँ। नपोली से रवाना होकर सबेरे रोम में पहुँचा। ग्रीस से आते समय स्वर्गीय विक्रम इमानुएल (राजा) के एक कर्मचारी से जान-पहचान हो गई। उन्होंने कह दिया कि होटल की अपेक्षा रोम के 'लोकांडा' में रहने से सुभीता होगा। वहाँ रजर्व भी कम पड़ेगा। लोकांडा में केवल रहने का घर मिलता है, खाने-पीने का कुछ प्रबन्ध





फोरम—पृ० ३३५

नहीं होता । जो चादिए सां बाहर भोजन करिए । उनके उपवेश के अनुसार मैं एक ताराङ्गा में जाकर ठहरा ।

सेन्टपॉटर का गिर्जा (St. Peter's Vaticano) इसके विषय में एक विदुषी (Fredrika Bremer) का कथन है— "St. Peter's, that glorious temple, the largest and most beautiful in the world" इमन काई मन्दिर नहीं कि हर एक यात्री को मरसे पहलें सेन्टपॉटर का गिर्जा देखने को इच्छा दाती है । यह गिर्जा फ्रेड्रिक राम या यूरोप में ही नहीं पृथ्वी भर में प्रधान भवन समझा जाता है । ऐसी इमारत, ऐसी मजापट और नासान, ऐसी कामती मूर्तियाँ मचमुच और कहीं नहीं है । जब से यह गिर्जा स्थापित हुआ है तब से जितन (पाप क गद्दीधर) पाप हुए मर यशुमार रुपया इम गिर्जे में लगाते चल गये । इस गिर्जे का वर्णन करने का इरादा और चन्द्रमा को मुट्ठी में छिपान को इच्छा एक ही बात है । तथापि यथासम्भव दो-चार शब्द इम गिर्जे के धार में लिखे जात हैं । इस गिर्जे के सुविस्तृत सामन के मैदान में दानों किनारा पर दो अर्धचन्द्राकार ५५ फुट चौड़े कालोनड (Colonnades) हैं । ४८ हाथ ऊँची चार छतें २८४ गोल और ६४ चौकोन खम्भों पर हैं । बीच के स्थान से दो गाडियाँ बराबर बराबर जा सकती हैं । खम्भों की कार्निसे में १० फुट ऊँची १६२ साधुआ की मूर्तियाँ रखी हैं । दोना कालोनडे के बीच के सहन का फैलाव ७४७ फुट है । कालोनड और दालान से धिरे हुए आँगन के बीच में एक मिसर देश का स्तम्भ (Egyptian Obelisk) है । उसकी चाटी पर कृस ग्यापित है । स्तम्भ के आस-पास दो फुहारें हैं । इमारी गाथा के गाथ और एक गाडी आई और गिर्जे की सीढियाँ के पास आकर थम गई । दा तीन आदमी गाडी से उतर । वे भी दर्शक थे । गिर्जे की इमारत में

प्रवेश करने के फाटक इतने ऊँचे हैं कि ऊपर नजर उठाकर देखने से सिर की पगड़ी जमीन में गिर पड़े । भीतर प्रवेश करके जो कुछ मैंने देखा उसका वर्णन एक दूसरे विद्वान् के शब्दों में ही करना ठीक होगा । हर्वर्ट साहब कहते हैं—“The first view of the interior of St Peter's makes the eye fill with tears and oppresses the heart with a sense of suffocation. It is not simply admiration, or awe, or wonder—it is full satisfaction, of what nature you neither understand nor inquire. If you may only walk aside and be silent you ask nothing more”—A. Herbert.

सचमुच भीतर प्रवेश करते ही आदमी चकरा जाता है । चारों ओर इतनी सामग्री है कि जिसका वारापार नहीं । भीतरी छत (ceiling) के चित्र आदि और चारों ओर के सुनहले काम तथा एक एक पोप की ममाधि की सजावट में ही न जाने कितने रुपये खर्च होगये हैं । जगत्प्रसिद्ध शिल्पी राफेल (Raphael) और माइकेल एन्जेलो (Michael Angelo) ने यहाँ बड़ा परिश्रम किया है । बहुत अच्छे संगमरमर की मेज़ पर एक जगह यूरोप के कई एक प्रधान गिर्जों की उँचाई लिखी हुई है । यथा—सेन्टपीटर का गिर्जा ६०६ फुट, लन्दन का सेन्टपाल का गिर्जा ५२१ फुट और मिलन-गिर्जा ४३६ फुट, रोम का सेन्टपाल गिर्जा ४१५ फुट और कुस्तुनतुनिया की सेन्ट सुफिया मसजिद ३५६ फुट ऊँची है । यहाँ पर काले रंग की एक सेन्टपीटर की, पीतल की, मूर्ति है । उसके सिर पर पगड़ी की जगह एक चक्र है और हाथ में स्वर्ग की चाभी है । उस मूर्ति के दाहने पैर की उँगलियों को चाँट चाँट कर यात्रियों ने सपाटे कर दिया है । बाये पैर की भी प्राय वही दशा है । बीच में एक वेदी पर चँदोवे के नीचे कूस रक्खा है । चँदोवे की पीठ पर पवित्र कवूतर

बैठा है। सामन घुटन टेके पोपो की मूर्तियाँ हैं। चारो ओर १३ पाप स्वीकार के स्थान (Confessional) हैं। वहाँ बहुत सी स्त्रियाँ धीरे धीरे बीमे स्वर से पादरियो के आगे अपने गुप्त पातको का हाल कहती हैं। एक जगह एक पोप (Alexander VII) की यमराज और गोलक (Globe) सहित मृत्युञ्जय-भाव की मूर्ति बनी हुई है। पोप के आफिस से पास लेकर बहुत परिश्रम से सीढियाँ चढ़ कर गिर्जे की चोटी पर पहुँचे। वहाँ पर से रोमनगर का दृश्य बहुत अच्छी तरह देख पडा। गिर्जे के गुम्बद (Cupala) का घेरा २०० हाथ का है। छत के ऊपर सामने ही ईसा के साथ द्वादश-प्रेरितों (Apostles) की १६ फुट ऊँची मूर्तियाँ देखने से डर मालूम पडता है। पीटर की चाभी की तरह हर एक के हाथ में एक एक चीज है। क्रिस्तानों के सभी गिर्जे क्रूस के आकार के बने हैं, यह भी वैसा ही है। इसकी लंबाई (Nave) ६०७ फुट, चौड़ाई (Transept) ४४४ फुट और उँचाई ४५० फुट है। पूर्व ओर का सम्मुख भाग ३६६ फुट लम्बा और १६० फुट ऊँचा है। वहाँ के खम्भे ८८ फुट ऊँचे हैं और उनका घेरा २५ फुट का है। इसके भीतर ४६ वेदी (Altar), ४०० मूर्तियाँ, जेरुस्सलम से लाये हुए सालामन मन्दिर के १२ खम्भे और बहुत से पोप-सम्राट् और राजाओं की मूर्तियाँ हैं। २४ बीघे जमीन के ऊपर १२० बरस में यह गिर्जा बनकर तैयार हुआ और एक करोड पौण्ड की लागत लगा कर ३५० बरस में सर्वाङ्गसम्पन्न बनाया गया। उसके बाद से अब तक न-जाने कितना रुपया इसमें लगता ही चला जा रहा है। सोलहवीं सदी के मध्यभाग में एक बार हिसाब करके देखा गया था। उससे जान पडा था कि तब तक १,१६,२५,००० पौण्ड खर्च हो चुका था। इसकी सालाना मरम्मत में साठे छ हजार पौण्ड के लगभग

खर्च हो जाते हैं । कहा जाता है कि महात्मा सेन्टपीटर का शव यही गाढा गया है । बहुत से प्राथमिक क्रिस्तान राजों की आज्ञा से महात्मा पीटर मारे गये थे । पीटर की अपनी आज्ञा के अनुमार, रोम के उस समय के त्रिशप आनाक्लिटस (Anacletus) ने सन् ६० में पीटर की समाधि के ऊपर भजनालय बनाया । उसके बाद, सन् ३०६ में सम्राट् कान्स्टन्टाइन (Constantine) ने द्वादश प्रेरितों के सम्मान में वारह डलिया मिट्टी अपने हाथ से लाकर एक गिर्जे की नींव डाली । जब तक गिर्जा बनता रहा तब तक बराबर सम्राट् उसकी देखरेख करते रहे । १००० वर्ष तक वही गिर्जा बना रहा । उसके बाद सन् १५०६ की ८ वीं अपरैल को पोप दूसरे जूलियस (Julius II) ने सत्सार में सबसे श्रेष्ठ भजनालय स्थापित करने के इरादे से वर्तमान गिर्जे की नींव डाली । उन्होने और उनके परवर्ती पोप ने स्वर्ग की ठेकेदारी अथवा (Indulgences) वेंच कर इस गिर्जे के बनने का खर्च उगाहा । इस गिर्जे के सम्बन्ध में दो विद्वानों की सम्मतियों का कुछ अंश यहाँ पर उद्धृत किया जाता है ।

“The building of St Peter’s surpasses all powers of description. It appears to me like some great work of nature, a forest, a mass of rocks, or something similar, for I never can realize the idea that it is the work of man. You strive to distinguish the ceiling as little as the canopy of heaven. You lose your way in St Peter’s, take a walk in it, and ramble till you are quite tired. When divine service is performed and chanted there. You are not aware of it till you come quite close. The angels in the baptistry are enormous giants, the doves, colossal birds of prey. You lose all sense of measurement with the eye, or proportion, and yet who does not feel his heart expand when standing under the dome and gazing up at it.”

सचमुच ही, यह गिर्जा मनुष्य की करतूत है, यह मानन के जो नहीं चाहता । इसके भीतर घूमते घूमते आदमी थक जाता और कुछ लोग राह भी भूल जाते हैं । जैसा भारी भवन है वैसा ही उसके भीतर का सामान है । और एक विद्वान् लिखता है—

“The interior burst upon our astonished gaze, resplendent in light, magnificence and beauty, beyond all that imagination can conceive. As I walked slowly up its long nave, empanelled with the richest marbles, and adorned with every art of sculpture and taste, and caught through the lofty arches opening views of chapels and tombs, and altars of surpassing splendour, I felt that it was, indeed, unparalleled in beauty, in magnitude and magnificence, and one of the noblest and most wonderful of the works of man.” C. Eaton

वाटिकान अथवा पोप भवन । एक ऊँची जमीन के ऊपर, पूर्वोक्त गिर्जा और यह पोप-भवन, दोनों पास ही पास बने हुए हैं । आठवीं शताब्दी में यह बना था । बीच में टूट फूट जाने के बाद बारहवीं सदी में फिर से बना है । यह महल ११५० फुट लंबा और ७७० फुट चौड़ा है । इसमें २० ड्यौडियाँ, ४४४२ कमर और ८ बड़ी तथा २०० छोटी सीढियाँ हैं । दीवार के चित्रों, अन्यान्य चित्रों और पुस्तकों के संग्रह के लिए यह स्थान प्रसिद्ध है । कहा जाता है कि इतनी और ऐसी कीमती हस्तलिपियाँ पृथ्वी पर और कहीं नहीं हैं । एक लाख छपी पुस्तकों के अलावा पाँचवीं सदी तक की यूरोप और एशिया की २७००० हस्तलिपियाँ यहाँ जमा हैं ।

पोप का ऐश्वर्य एक ऊँचे दर्ज के सम्राट् का ऐसा है । यद्यपि इस समय पोप के हाथ में राज्यशासन की शक्ति नहीं है तथापि साज-सामान, लाव-लशकर, सिपाही-सन्तरी आदि सब कुछ है । वर्तमान

पोप तेरहवें लिओ (Leo XIII) *वृद्ध होने पर भी सब काम नियमित रूप से करते हैं। पहले सबेर चार बजे उठते थे, अब तबोयत ठीक न रहने के कारण छः बजे उठते हैं। सबेर की उपासना (Mass) के बाद काफी और दूध पीकर धर्म-सम्बन्धी कागज-पत्र पढ़ते हैं, ८ बजे महल के कर्मचारी रिपोर्ट देने आते हैं, ९ बजे प्रधान कार्डिनल धर्मराज्य की व्यवस्था आदि (Business of the Holy See) के बारे में सलाह लेने आते हैं। १० बजे प्रधान पाद-रियो से पोप मुलाकात करते हैं और दोपहर को महल के बाग में टहलते हैं। बाग अच्छा है। बहुत से अच्छे अच्छे पेड़ और लताएँ हैं। उनमें कई खजूर के भी पेड़ हैं। बनावटी भरने और कुज आदि भी बने हैं। इसके बाद पोप प्रभु एक बजे के लगभग विदेशी विशिष्टों और अन्यान्य लोगों से मिलते हैं और दो बजे पुरानी क्लारेट शराव के साथ दिव्य भोजन करते हैं। भोजन के बाद चार साढ़े चार बजे तक सोते हैं। उसके बाद आँख खुलते ही विदेशी अखबार पेश किये जाते हैं। उन अखबारों को या तो वे सुद पढ़ते हैं और या कोई मुमाहब पढ़ कर सुना देता है। इसके बाद कार्डिनल लोगों की रिपोर्ट सुन कर तीसरी बार कागज-पत्रों पर पोप प्रभु दस्तखत करते हैं। अन्त को ९ बजे कुछ मामूली भोजन करते हैं। एक बार पोप बीमार थे। डाक्टर ने कहा—आप किसी से मुलाकात न करें। महात्मा लिओ पोप ने हँस कर कहा—‘तो फिर पोप का सिंहासन शून्य हो जायगा। मेरे ऐसे पद पर स्थित मनुष्य के लिए मौत की घड़ी तक काम करने की व्यवस्था ही ठीक है’। यह बहुत सी भाषायें जानते हैं। सन् १८७८ में पोप के पद पर इनका अभिषेक हुआ था। रोम के महल के अलावा अलवानो-नामक स्थान में

२ : यह अभी मरे हैं।

पोप का प्राम्थ्य भवन भी है । आवहवा बदलन के लिए पोप कभी कभी वहाँ जाया करते हैं । पोप लिओ का जन्म सन् १८१० में हुआ था । सन् १८३७ में पोप के पद पर इनका अभिषेक हुआ । इस हिसाब से सन् १८८७ में धर्मयाजक कार्य करते पचास वर्ष पूरे होने पर, इस साल बड़ा धूमधाम से जुविलो मनाई गई थी । पोप को वहाँ की गवर्नमेण्ट से साठे बत्तीस लाख लिरा (इटली का सिक्का) वार्षिक वृत्ति मिलती है ।

फोरम (Forum Romanum) । इस भूमिखण्ड के दोनो किनारे खव ऊँचे हैं । बीच में तग उपत्यका है । यह स्थान रमूलस (Romulus) के समय से शेष अगस्टिवली (Augustus) के समय तक रोमन साम्राज्य का सिर बना हुआ था । ऐसा बहुत सा समय बीत गया है जब पृथ्वी भर का दिवाहित इस छोटे से स्थान की सीमासा पर निर्भर रहता था । कितने ही राजनीति विशारद वक्ताओं के कण्ठस्वर यहाँ सुनाई पडते थे । जिस रोमन-व्यवस्था (Roman Law) पर आज सभ्य जगत् के कानून बने हैं उस व्यवस्था की उत्पत्ति इसी भूमि पर हुई है । जिस जगह पर मानव-मस्तिष्क की इतनी बड़ी बड़ी लीलाएँ हो गई हैं उसका इस समय नाम है “गोरुओ का अड्डा” (Campo Vaccino) । समय तू जो चाहे सो करे । एक समय पृथ्वी के प्रधान साम्राज्य का सर्वोत्तम स्थान होने के कारण जो भूमि पुजती थी वह इस समय सचमुच ही गऊ और बकरियों की विहार-भूमि बन रही है । ग्यारहवीं शताब्दी में बर्बर लोगों ने चढाई करके रोम का विध्वंस कर डाला । यह स्थान ध्वस्त-स्तूपों के नीचे दब गया । पीछे बडे कष्ट से—बडे परिश्रम से—तोद कर यह स्थान निकाला गया है । बहुतो का कहना है कि अभी उस स्थान का केवल एक हिस्सा बाहर निकला है, बहुत सा हिस्सा मिट्टी

कं नीचे दबा पडा है । वेस्पेसियन (Vespasian), शनि (Saturn) और शान्ति (Concord) का मन्दिर और सिवरस का फाटक (Arch of Septimius Severus) यहाँ के प्रधान दृश्य हैं । प्रसिद्ध कैपिटल (Capitol) मन्दिर के नीचे ही यह फाटक बना हुआ है । पर्शिया आदि देशों को जीतने के बाद उस जय का चिह्न यह फाटक बना था । जिसमें चित्र खुदे हुए हैं उनमें युद्ध-भूमि और जंजीरो से जकड़े कैदी राजों के साथ नगर में प्रवेश आदि दृश्य दिखलाये गये हैं ।

कलोसियम (Colosseum) । फोरम में और उसके चारों ओर जो कुछ आज भी मौजूद है उसमें कलोसियम नामक क्रीडा-भवन सर्वोत्तम है ।

इतना बड़ा क्रीडा-भवन ससार में और किसी भी राजा ने न बनवाया होगा । सैकड़ों बरसों से इसके ईंट-पत्थर महलों और गिर्जों में लगाने के लिए उठते जा रहे हैं । तथापि जितनी इमारत खड़ी है वह रोम के प्राचीन गौरव की भरपूर गवाही दे रही है । कवि ने ठीक ही कहा है—

“ While stand Coliseum, Rome shall stand,
When falls the Coliseum, Rome shall fall,
And when Rome falls—the World ”

प्रथम शताब्दी के मध्य-काल में सम्राट् वेस्पेसियन ने इसकी स्थापना की थी । यहाँ मल्ल-युद्ध आदि कितनी ही क्रीडाएँ, सूनी जानवरों के द्वारा कितने ही साधु पुरुषों की हत्याएँ और अन्यान्य अनेक प्रकारों से नरहत्याएँ हुई हैं । इस रंगभवन की शोभा बढ़ाने के लिए रेशमी तन्तुओं के नीचे कितनी ही सगमरमर, सोनं, हाथी दाँत, रत्न आदि की बहुमूल्य सामग्रियाँ रक्खी रहती थीं—इस्तेमाल

आती थी । क्रोडा के समय चारों ओर सुगन्धित जल के फुहारे
 छूटते थे । ईसाई-धर्म की पहली अवस्था के इतिहास से इस स्थान
 का कुछ घनिष्ठ सम्बन्ध है । बहुत से धर्मवीर ईसाई यहाँ, हजारों
 प्रादमियों के सामने, खूनी जानवरों को खिला दिये गये हैं ।
 प्रान्तिओथ के विशप इगनेशियस (Ignatius, Bishop of An-
 tioch) उनमें एक प्रधान भक्त पुरुष थे । जब वे पकड़ कर लाये
 गये तब उन्होंने रोम के क्रिस्तानों को चिट्ठी में लिखा कि “मुझे
 छुड़ाने के लिए तुम लोग कुछ भी चेष्टा न करना । तुम लोग चुप-
 चाप निश्चेष्ट रहो, मुझे खूनी जानवर ईश्वर के निकट भेज देंगे ।
 मैं यही चाहता हूँ, कि मेरे शरीर की एक बोटी भी न बाकी रहे ।
 आस्तव मे उनकी इच्छा के माफिक ही सब कुछ हुआ । रोम के
 अनेक स्थानों में इस आत्म-बलिदान (Martyrdom) के सजीव चित्र
 आज भी देखने को मिलते हैं । क्रूस हाथ में लिये, भक्त खड़ा है ।
 सामन शेर मुँह बाये खड़ा है । पर भक्त वैसे ही प्रसन्न भाव से
 खड़ा है । उसे जरा भी दहशत नहीं । इस भाव के दृश्य को देख
 कर कौन ऐसा पाखण्डी होगा जिसका हृदय न विगलित हो जायगा ।
 ऐसी घटनाओं पर विचार करने से जैसे, एक तरफ मनुष्य का
 शाक्तिक भाव देखकर दुःख और कष्ट होता है, वैसे दूसरी ओर
 अमर तेजस्वी महापुरुषों के अनन्य ईश्वर-प्रेम, धर्म-विश्वास और
 देव्य निर्भीकता की बातों से हृदय उछल पडता है । क्लोसियम
 एक अण्डे के आकार की इमारत है । बीच में लंबा-चौड़ा आँगन है ।
 यह इमारत ६२० फुट लम्बी, ५१३ फुट चौड़ी और १५७ फुट
 लंबी है । कुछ तो टूटी-फूटी हालत में पड़ा हुआ है और कुछ को
 अरम्भत करवाई गई है । विधाता की लीला विधाता ही जाने । एक
 दिन जहाँ हजारों ईसाइयों की हत्या होती थी, आज वहाँ ईसाइयों

का तीर्थ हो रहा है । आँगन के बीच में एक क्रूस रक्खा है । उसके चारों ओर १४ मन्दिर हैं । उनमें सदा बहुत से लोग घुटने टेके पूजा में मग्न रहते हैं ।

पालाटीन् ("Palatine—a spot unsurpassed even in Rome for its marvellous combination of historic interest and picturesque beauty" अभिनव सौन्दर्य और ऐतिहासिक विशेषता में यह सर्वोत्तम है । इस पर्वत के ऊपर एक गाँव था और वही समय पाकर यह नगर बन गया है । इसी जगह पर खड़े होकर मूलस ने उड़ रहे गिद्ध के शुभ सगुन को देखा था और इसी के नीचे नगर स्थापित करने का सकल्प किया था । पालाटीन् में ही उनकी मृत्यु हुई और नीरो (Nero) के राज्यकाल तक उनकी मडैया विशेष सम्मान के साथ रक्खी थी । क्लासस (Classus), सिसिरो (Cicero) आदि प्रतिष्ठित सेनेटरोँ (Senators) के महल यहीं पर बने थे । सम्राटों ने इसी जगह अपने अपने भारी महल बनवाये । इस कारण यूरोप की सभी भाषाओं में प्रासाद-बाची शब्द "पालाटीन्" शब्द से निकले हुए देख पड़ते हैं । पृथ्वी भर की पत्थर की खानों से कीमती सगमरमर इस इमारत के लिए मँगाया गया था । यहाँ का सुवर्ण-भवन बन चुकने पर उसमें प्रवेश करने के समय सम्राट् नीरो ने कहा था कि "अब मैंने मनुष्य के योग्य निवासस्थान पाया" । इस समय सबका ध्वसावशेष-मात्र देख पड़ता है । न वे सगमरमर हैं और न वह कीमती साज-सामान है । केवल ईंटों का भारी ढूह इसके विगत गौरव की घोषणा कर रहा है । देखने से एक भारी दानवनगर सा जान पड़ता है । पर्वतमय भारी भारी फाटकों और अन्यान्य ध्वसावशेषों के बीच एक नये ढंग का सौन्दर्य देखने में आता है । एक प्रसिद्ध पर्यटक का

यन है—“ No sight of Roman ruin equals the Palatine blending the wildness of nature with the beauty of decay, the picturesqueness of the landscape with the solemnity of the ornamental remains ” सचमुच भग्नावशेषों के बीच-बीच में तरह-तरह के छोटे-बड़े वृक्ष जम आने से उस स्थान का एक अद्भुत रूप हो रहा है ।

सीजर नरपतियों के इस महल में दो नये ढंग की व्यवस्थाएँ बनी पड़ीं । भोजन-भवन को पास ही एक ऐसा कमरा बना हुआ जहाँ बहुत खा-पी लेने से जिन लोगों की तनीयत खराब हो जाय आराम कर सकें । दूसरा एक ऐसा स्थान देखा पड़ा जहाँ ईश्वरी रानियों के रहने के लिए बहुत से कमरे बने हुए हैं । हर एक महाने के लिए अलग-अलग कमरे थे । उनमें के भीतर के दीवार चित्र और व्यवस्थाये भिन्न-भिन्न थीं । भीतरी छतों के चित्र भी तबक वैसे ही बने हुए हैं । इतिहास में, ईसाई-धर्म के साथ लाटीन का विशेष सम्बन्ध देखा जाता है । महात्मा 'पाल' का यह स्थान लीला-क्षेत्र है । एक जगह की दीवार में ईसाई-धर्म पर व्यंग्य चित्र बनाया गया एक चित्र अभी तक अकित है । एक आदमी, जिसका हाथ गधे का है, हाथ फेंनाये क्रूस की तरह खड़ा है । उसके सामने खड़ा एक आदमी खड़ा हुआ पूजा कर रहा है । उसके नीचे जो लिखा है उसका अर्थ यह है कि “अलेक्सामेनस अपने देवता की पूजा कर रहा है” । इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस चित्र के द्वारा किसी मूर्त्तकार ने अपने ईसाई साथी के धर्म-विश्वास पर कटाक्ष किया है ।

काराकाला का स्नानभवन (Baths of Caracalla) । सम्राट् काराकाला ने इसे बनवाना शुरू किया था किन्तु वह बीच-बीच में मर गया । फिर सिवेरस (Alexander Severus) ने बनवाकर पूरा किया ।

यहाँ भी कलोसियम की तरह भारी कारखाने हैं । इसका घंरा एक मील का है । इसमें ऐसी व्यवस्था थी कि एक साथ १६०० आदमी स्नान कर सकें । उसका फ़र्श, दीवारें और भीतरी छतें अत्यन्त सुसज्जित और सगमरमर से सुशोभित थीं । यहाँ अगणित मूर्तियाँ थीं । उनमें से कुछ मूर्तियाँ मिट्टी के नीचे से खोद कर निकाली और म्यूजियम में रख दी गई हैं । नगर के बाहर, सात कोस के फासिले से, ऊँची नाली के द्वारा, यहाँ जल आता था । उस नाली के फाटक आज भी चौदह मील तक खड़े हुए हैं । तरह तरह से नहाने की व्यवस्था के अलावा यहाँ नीचे लिये बन्दोबस्त थे । सुगन्धित वस्तुओं और तरह तरह के फैशन की चीजों की दूकानें, जलपान की दूकानें, पाकशाला, भोजन-भवन, बातचीत करने और टहलने के लिए हाल, पुस्तकालय और पाठ-भवन, रंगालय, कसरत दौड़-धूप और कुश्ती लड़ने की जगह, चित्रशाला और मूर्तियों का म्यूजियम । इसे वर्तमान समय का "पीपुल्स पैलेस" (People's Palace) कहे तो ठीक होगा । कवि शेली (Shelley) ने यहाँ बैठकर एक काव्य ("Prometheus Unbound") बनाया है और उस काव्य की भूमिका में इस प्रसिद्ध स्थान को विशेष सम्मान दिया है ।

सान पिघाट्रो मोन्टोरिओ (San Pietro in Montorio) । यहीं जानिक्युलम (Janiculum) पहाड़ के ऊपर महात्मा सेन्ट पीटर उलटे लटकाये जाकर क्रूस पर मारे गये हैं । ठीक उसी जगह पर एक सूखे कुएँ के ऊपर मन्दिर बना है । लोहे के स्कूप (Scoop) वाली लंबी लाठी से उस कुएँ की रज निकाल कर दर्शको दी जाती है । एक गद्दोघर विशप ने वह धूल मेरे मस्तक में भी लगा दी और कुछ हाथ पर रख दी ।

इस स्थान को अन्तर्गत गिर्जों और मठों में बहुत से सन्यासी (Monks) रहते हैं । रोम के आदमी अपने ही नगर की इतनी कम खबर रखते हैं कि इस प्रसिद्ध तीर्थस्थान का पता लगाने में मुझे बड़ा खोज करनी पड़ी । वास्तव में पतित जातियों के जो लक्षण हुआ करते हैं उनमें से कुछ लक्षण आज भी इटली के लोगों में देख पड़ते हैं । यूरोप था और पाँच लोगों ने सहायता की, इसी से ये लोग अपनी वर्तमान उन्नति कर सके हैं ।

सान पाउलो ट्रिफन्टानो (San Paolo alle tre Fontane) अर्थात् सेन्ट पाल का गिर्जा । यह आधुनिक नगर के बाहर जरा दूर पर है । सेन्ट-पीटर गिर्जे के पास होने से इसकी उतनी कदर नहीं है । किन्तु यदि और कहीं होता तो अवश्य इसकी बड़ी प्रतिष्ठा होती । यह एक सुविशाल और सुमज्जित भोजनालय है । इस गिर्जे से तीन मील के लगभग वह स्थान है जहाँ सेन्ट पाल की मृत्यु हुई है । जिस तग घर में वह कैद रहे और जिस छोटे से पत्थर के टुकड़े पर उनका सिर काटा गया वह लोहे के सीरुचे से घिरा हुआ है । मस्तक कट कर जिन तीन स्थानों पर गिरा था वहाँ तीन स्वाभाविक फुहारें दिखलाये गये हैं । इसी लिए इसका नाम है "ट्रिफन्टानो" । कहा जाता है कि यहाँ १०२०३ क्रिस्तानो का (Martyrs) बलिदान हुआ है । यहाँ कमरे कम नहीं हैं, तथापि बहुत लोग नहीं रहते । यहाँ का एक सन्यासी घुमा फिराकर सब मुझे दिखा लाया । उसके बाद वह मुझे एक कमरे में ले गया और एक छोटे से पात्र में आशीर्वाद-सूचक कुछ मद्य देकर उसने कहा—यह पापहारी और शरीर और आत्मा के लिए कल्याणकारी अमृत है । इस प्रकार पीने के लिए अनुरोध करके उसने कुछ दक्षिणा माँगी । रोमन-कैथलिक पादरी सभी जगह लोभी देख पड़े ।

पान्थियन "The Pantheon is the one edifice of old Rome that remains entire, spared and blessed by time Simple, erect, severe, austere, sublime, shrine of all saints, and temple of all Gods", यह पान्थियन पौत्तलिक समय का मन्दिर है, आज तक उसी प्राचीन अवस्था में खड़ा हुआ है। ईसा के जन्म से सत्ताईस वरस पहले कन्सल आग्रिपा (Consul Agrippa) ने सब देवताओं के नाम पर इसका उत्सर्ग किया था। किन्तु यह मन्दिर बना इससे भी पहले का है। यहाँ के जिस फर्श पर अगस्टस आदि आते जाते थे ठीक वही फर्श अब तक बना हुआ है, उसमें कुछ भी परिवर्तन नहीं हुआ। ऊँची और लम्बी चौडो इमारतों के भीतर कुछ कुछ अँधेरा अवश्य रहता है। लेकिन यहाँ अन्धकार दूर करने की एक नई व्यवस्था देख पडी। छत के बीच में एक ६० हाथ के घेरे का गोल छेद कर दिया गया है, उससे भीतर खूब रोशनी आती है। इस छेद से पूर्व समय में अनेक देव-देवियों की पूजा और बलि का धुआँ निकलता था और अब, रोमन-कैथलिक सम्प्रदाय की प्रथा के अनुसार, ईसा और मेरी की पूजा का धूप-धूम निकलता है। पान्थियन के सिवा इम महानगर में दूसरा ऐसा स्थान नहीं है जहाँ प्राचीन समय के "हिडेन" या पौत्तलिक रोम और वर्तमान ईसाई रोम का भाव इस तरह सम्मिलित है। उक्त छिद्र बनाने की कारीगरी की सब लोग बडी बडाई करते हैं। इस छिद्र तक ऊपर चढ़ने के लिए २०० सीढियाँ बनी हुई हैं। इस छिद्र के द्वारा भीतर से जो दृश्य देख पडता है उमका वर्णन एक प्रसिद्ध पर्यटक के शब्दों में ही करना ठीक होगा। वह लिखता है—

"In the Pantheon to stay it was pleasant, looking up to the circular opening, to see the clouds flitting across it, sometimes covering it quite over, then permitting a glimpse of sky, then showing all the circle of sunny blue. Then would

come the ragged edge of a cloud, brightened throughout with sunshine, passing and changing quickly * * * The great slanting beam of sunshine was visible all the way down to the pavement, falling upon motes of dust, or a thin smoke of incense imperceptible in the shadow. Insects were playing to and fro in the beam, high up toward the opening. There is a wonderful charm in the naturalness of all this"—Hawthorne

भारी मन्दिर आदि के भीतरी भाग को प्रकाशित करने की ऐसी व्यवस्था शायद और कहीं भी न होगी। ईश्वर की उपासना का स्थान होने के कारण यह गिर्जा दर्शकों के मन में अनेक प्रकार के स्वर्गीय मधुर भावों को उत्पन्न करके दृश्य को और भी मनोहर बना देता है। यहाँ के गुम्बद की सुन्दरता और निर्माण-कौशल की प्रशंसा हर एक यात्री न की है। रोम के सेन्टपीटर-गिर्जे को और इस्ताम्बूल की प्रसिद्ध सान्टासोफिया का गुम्बद इसी के अनुकरण पर बना है। सयुक्त स्वाधीन इटली के प्रथम राजा विक्रम इमानुएल और जगत्प्रसिद्ध चित्रकार राफेल इसी गिर्जे में गढ़े हुए हैं। गिर्जे के सामने एक खम्भा है, जिसकी चोटी पर क्रूस बना हुआ है।

ब्रूनो स्तम्भ । रोम-नगर में एक एक स्थान पर ब्रूनो (Giordano Bruno, the most genial and interesting of the Italian philosophers of the Renaissance) का यह स्मारक-स्तम्भ बना हुआ है। धर्म के लिए ससार में जितने आदमियों ने प्राण दिये हैं उनमें इन महात्मा को एक प्रधान पुरुष समझना चाहिए। यह एक प्रसिद्ध इटलियन दार्शनिक हो गये हैं। यह प्रचलित रामन-कैथलिक धर्म के विरोधी थे। यही अपराध लगा कर, पोप की आज्ञा से, सन् १६०० की १७ वीं फरवरी को इसी जगह पर यह आग में जला दिये गये। यह बहुत दिनों तक देश से भाग

कर इधर-उधर फिरते रहे । अन्त को पकड कर रोम में लाये गये । सात बरस कैद में रखकर उनकी हत्या कर डाली गई । इनके बनाये बहुत से धार्मिक और दार्शनिक ग्रन्थ हैं । इनका यह मत था कि मनुष्य का विचार उसके कर्मों के अनुसार ही होगा, मत-विश्वास के साथ दण्ड या पुरस्कार का कुछ सम्बन्ध नहीं है ।

इसके सिवा ट्राजन-स्तम्भ (Trajan Column), कान्स्टान्टाइन और टाइटस का फाटक (Arches of Constantine and Titus) सेन्ट एञ्जेलो का क़िला (Castle of St Angelo), सिपिओ लोगों की समाधि (Tombs of the Scipios), क्वीरिनल महल (Quirinal), एक पिरामिड और बड़े बड़े प्राचीन गिर्जे और फुहारे आदि सैकड़ों ऐसे स्थान अब भी रोम में मौजूद हैं जिनका वर्णन करना इस स्थान पर असम्भव है । एक पर्यटक ने ठीक ही कहा है—“The place is so rich in ancient monuments, in artistic treasures, in memories and wonder of all kinds, that one has only to dabble about in it” वास्तव में दो एक महीने रह कर रोम का सब दृश्य देख लेना बहुत ही कठिन है । हाल में एक न्यूजियम इस नगर में स्थापित हुआ है जिसमें बहुत सी पुरानी गढ़ी हुई मूर्तियाँ और अनेक पुरानी कारीगरी की चीजें रक्खी गई हैं । किन्तु जो चीजें जहाँ की थी वहाँ से उन्हें हटा देना, मेरी समझ में, अच्छा नहीं हुआ । अमेरिकन लोग जो इस समय बहुत ऊँची इमारतें बना कर अपने नगरों की शोभा बढ़ा रहे हैं सो यह रामन लोगों का अनुकरण या भाव है । रोम में कभी कभी मकान की उँचाई के सम्बन्ध में राजकीय आज्ञा निकलती थी कि इतने से अधिक उँचा मकान न बनाया जावे । तथापि लोग उस नियम को न मान कर मनमाने उँचे मकान बनवा ही डालते थे । रोम के सम्राट् और और बातों में चाहे जैसे रहे हों,

लेकिन प्रजा के सुख-स्वास्थ्य और स्वच्छन्दता पर उनकी सदा दृष्टि रहती थी। रोमन लोग अगर इस जमाने का ऐसा घर बनाने में लोहे का इस्तेमाल जानते होते तो निश्चय ही वे आकाश फाड़ डालने की चेष्टा में कसर न रखते। एक इटलियन पण्डित का रुथन है कि "देश के शिल्प आदि से आधा जातीय इतिहास जाना जा सकता है।" रोम में प्राचीनशिल्प की कारीगरी के जो नमूने अब भी मौजूद हैं उससे अच्छी तरह समझ में आ जाता है कि इस जाति ने कहां तक उन्नति की थी। एक समय में पौत्तलिक रोम ने जैसे सागर-द्वीप-समेत सारी पृथ्वी के ऊपर अपना प्रबल साम्राज्य स्थापित किया वैसे ही क्रिस्तान रोम ने बहुत दिनों तक धर्म जगत् के ऊपर अपना सिक्का जमा रक्खा। सारे पश्चिमी भूमिरण्ड का इतिहास रोम में लीन है और रोम से ही सारे यूरोप के इतिहास का आरम्भ होता है। दुख की बात है कि मूर्त्तिपूजक रोम के समय की और पोप के अनुगामी रोम के समय की जितनी कीर्तियाँ नगर में हैं उतनी मध्य-युग की नहीं हैं। तो भी जो कुछ है उतना भी औरों के यहाँ नहीं है। सम्राट् कान्स्टन्टाइन के परवर्त्ता हजार वर्षों में विनष्ट हुए। पेगन-मन्दिरों के माल मसाले से जो क्रिस्तानी गिर्जे बने हैं उनके विषय की आलोचना अन्यान्य इमारतों की आलोचना की अपेक्षा अधिक शिक्षाप्रद है।

प्राचीन नगर को अलग रखकर अगर इटली की वर्त्तमान राजधानी की स्थापना होती तो अच्छा होता। पुराने और नये के मेल से आधुनिक रोम में एक तरह का खिचड़ी भाव देखा पड़ता है। राजधानी के भीतर इतने उजाड़ स्थान और कहीं न होंगे। बीच बीच में ऐसे उजाड़ स्थान होने के कारण बड़ी ही उदासी जान पड़ती है। शहर के भीतर भारी ध्वसावशेषों के रहने से लौकिक ऐश्वर्य की

अस्थिरता का बड़ा अच्छा उपदेश नगरनिवासियों और यात्रियों को मिलता है, इसमें कोई सन्देह नहीं । किन्तु ऐसे ज्ञान के लिए कितने लोग जाते हैं ? साधारण रुचि के अनुसार ये खंडहर अच्छे नहीं मालूम पड़ते । जो कुछ हो, ढाई हजार वर्ष का इतिहास रोम के कलेवर में अमिट अक्षरों से लिखा हुआ है । कैपिटल के ऊपर खड़े होकर यात्री स्पष्ट देख पावेगा कि उसके चारों ओर विचित्र-वर्ण-रञ्जित बहार है । सामने रमूलस-निवास पालाटीन है । नीचे सिद्धो-पियन दीवार है । समीप ही वह पहाड़ है जिस पर हानिबल ने एक समय छावनी डाली थी । सामने जो सब फाटक देख पड़ते हैं उनसे कितनी ही बार असख्य सेना ने पृथ्वी-विजय के लिए यात्रा की है । सामने फोरम देख पड़ता है, जहाँ सिसिरो की उद्दीपना-पूर्ण वाणी सुनने के लिए हजारों लोग इकट्ठे होते थे, और जहाँ एक दिन ब्रूटस के हाथ से दिग्विजयी महावीर जूलियस सीजर मारा गया था । वह त्रिण्डिसी तक विस्तृत आपियन मंडक देख पड़ती है । इसी राह से महात्मा पाल कैद होकर जेरुस्सलम से रोम को पैदल आये थे । वह कलोसियम है । ये सब फाटक, स्नानभवन, देवमन्दिर, महल, गिर्जे आदि साम्राज्य के उत्थान और पतन के साक्षी बने हुए खड़े हैं । रोम ने पृथ्वी भर को ग्रस लिया । अपनी सत्ता को पृथ्वी भर पर फैलाने के कारण पराक्रम घट जाने से वह आपही नष्ट हो गया । द्वितीय शताब्दी के शेष भाग से सम्राट् तक ने रोम में स्थायीभाव से रहना छोड़ दिया और विशाल अधिकार की शृङ्खला स्थापित करने के लिए दूर जाकर रहने लगे । रोम श्री-भ्रष्ट हो चला ।

रोम की लोक-सख्या ६ लाख से कुछ अधिक है । रोमन लोग बड़े ही कुसस्कारग्रस्त हैं । खास खास आदमियों की नजर को

वे बहुत डरते हैं । भूतपूर्व पोप पायस इस वारं में ऐसे बदनाम थे कि उनके दल को दूर से आते देख कर राह चलनेवाले लोग अपन प्रालवर्चों को लेकर आड में हो जाते थे । और अगर बिल्कुल ही सामन आ पड़ते थे तो बालकों के मुखों को कपड़े से ढक देते थे और मन्त्र पढ़ कर अमङ्गल दूर करने की चेष्टा करते थे । ऊँचे दर्जों के लोग तब इस कुसस्कार से नहीं बच सके । एक दफे उक्त पोप ने कुछ दिनों के लिए एक विराट् सभा का अधिवेशन किया । उन कई दिना तक एक गुप्त समाचार-पत्र निकला । और उसमें यह सब हाल प्रकाशित हुआ कि किस दिन पोप की कुट्टि से क्रिया क्या बुरा हुआ । मनुष्य की बुरी नजर के बारे में ऐसा कुसस्कार होने के कारण रोम नगर में और सारी इटली में मर रहे आदमी को उसके पिता पुत्र भाई आदि सब स्वजन तक अलग छोड़ देते हैं । उसके पास रहन की हिम्मत किसी को नहीं होती । इसका कारण यही है कि रोमन लोग मर रहे मनुष्य की दृष्टि को बहुत डरते हैं । मृत्यु के समय मर रहे मनुष्य को नौकर-चाकर या पादरी के सिवा और किसी को मुख देखने को नहीं मिलता । मरने के बाद मुर्दे के साथ भी नौकर-चाकर या पादरी के सिवा और कोई नहीं जाता । वहाँ और एक नई चाल यह है कि शोकार्ता कुटुम्बी लोग भी बीमार की तरह दवा पीते हैं । रोमन लोग जबानी शोक तो खूब दिखाते हैं मगर उनके काम उसके विपरीत ही होते हैं । चित्रों में रोमन लोगों की जैसी पोशाक देखने को मिलती है वैसी पोशाक अब वहाँ के लोग नहीं पहनते । शायद ही कभी कोई एक आध आदमी उस बेश में देखने को मिल जाता है । देहाते में फिर भी कुछ लोग ऐसे हैं, मगर शहर के लोग तो सब यूरोप की मामूली पोशाक पहनना पसंद करते हैं ।

नेपल्स । पहले ही कह चुका हूँ कि यहाँ तीन बार गया हूँ । यात्रा के समय, सन् १८८६ के भ्रमण में और सन् १८९१ में ग्रीस से त्रिण्डिसी होकर । यद्यपि रोम-नगर इटली की राजधानी है, किन्तु नेपोली सब तरह से देश का प्रधान नगर है । यहाँ की लोक-संख्या पाँच लाख के लगभग है । रोम में तीन लाख से भी कम आदमी रहते हैं । यह नगर पुराने नेपल्स-राज्य की राजधानी था । इस समय भी यह नगर खूब समृद्धिशाली है । सुन पड़ता है कि यहाँ का की (Quay) अर्थात् समुद्रतट बहुत ही मनोहर है । दक्षिण-इटली के लोग कहते हैं कि “मरने के पहले एक बार नेपोली को देखना उचित है” (Vedi-Napole poi mori) । एक ओर बहुत से मुँदें आग्नेय-पर्वतों के साथ विसूविचस एक ओर खड़ा बराबर धुआँ उगल रहा है । चारों ओर गली हुई धातुओं के पहाड़ ऐसे ऊँचे ढेर लगे हुए हैं । पास ही छोटे छोटे गाँव और गूलर के बाग तथा अगूर के खेत हैं । दूसरी ओर ५३ मील तक अर्धचन्द्राकार समुद्र-तट (Bay of Naples) की अपूर्व वहार देख पड़ती है । छोटे छोटे द्वीपों की भी अपूर्व शोभा है । इन सब चीजों से नगर की एक अपूर्व शोभा होगई है । नेपल्स के उप-सागर के सम्बन्ध में एक यात्री की राय है—

“Such richness of colour, such play of light and shade, such marvellous combinations of sea and coast line, of fertile plains and barren mountains, and vine-clad slopes and white walled cities, can surely not be found elsewhere”—Whymper

प्राचीनता में भी नेपोली कम नहीं है । ईसा से १०५६ वर्ष पहले इसकी स्थापना हुई थी । सिसिरो (Cecero), हेरंस (Hirace) आदि बहुत से पण्डितों ने अपने लेखों में इसे इन्द्रभवन बतलाया है ।

प्राचीन समय में अनेक प्रतिष्ठित धनी पुरुषों ने यहाँ पर विलासभवन आदि बनवाये थे । महात्मा पाल जब पकड़ जाकर लाये गये तो वह नेपोली के निकट जहाज से उतर कर पैदल चले थे ।

नगर के और पास के टापुओ के घरो की छतें हमारे ही देश की ऐसी हैं । अर्थात् उत्तर-यूरोप की ऐसी ढालू नहीं हैं । बराबर हैं । यहाँ जगह जगह पर अरबी लुटेरो के मुसलमानी ढग के किलों और मकानो के ध्वसावशेष भी देख पडते हैं । इस प्रदेश के लोग भी बहुत बातों में एशियाई भाव रखते हैं । यह जरा गर्म मुल्क है । इस कारण निम्नश्रेणी के बहुत से आदमी गरमियों में घुटनो तक का पाजामा पहने, गले में केवल कमीज डाले बाहर निकलते हैं और साधारण भोजन करने दिन काटते हैं । दक्षिण-इटली के लोग आलसी हैं । दूसरे के द्वारा अगर काम हो जाय तो अपने हाथो कोई कुछ करना नहीं चाहता । अगर उधार मिले तो कोई नकद दाम देकर सौदा खरीदना नहीं चाहता । यही स्थानीय नियम है । रास्ते में बहुत से भीख माँगनेवाले मिलते हैं । बहुत से लोग हँसी-तमाशे और गपशप में ही समय बिताया करते हैं । मेरे साथ यात्रा करनेवाले और एक महाशय कहते थे—(“ Nowhere else such an indolent set of vagabonds in the streets ”) इस देश के लोग विश्वासघातक और ठग हैं, यह बात कहने में कोई भी यात्रो सकोच न करेगा । अँगरेजी भाषा जाननेवाले भद्रवेशधारी दो चार आदमी मेरे भी पीछे लगे थे । उनमें से एक आदमी कुछ ले भी गया । यहाँ धर्माधर्म का कुछ विचार नहीं है, यह कहना भी कुछ अनुचित न होगा । तमोगुणी पौत्तलिकता और हीन श्रेणी के कुस-स्कार मनुष्य को कहाँ तक नीच बना सकते हैं, यह देखना हो तो नेपोली-निवासियों को देख ले । एक प्रात काल से दूसर प्रात काल

तक अगणित वेश्याएँ खुलासा तौर पर समुद्र-तट की सड़को पर विचरती हुई अनजान विदेशी मछाहीं आदि के हाथ पकड़े खाँच-खाँच किया करती हैं। मानो इस काम में कोई दोष ही नहीं। इसके सिवा गली-कूचे में, यहाँ तक कि गिर्जा और मठ आदि पवित्र स्थानों के द्वार पर भी मध्य-श्रेणी की स्त्रियाँ, दिन-रात सब समय, बिना किसी रुकावट के, अनेक भाषाओं के कुत्सित शब्दों में विदेशी दर्शकों को प्रलोभन दिखाया करती हैं। नेपोली के 'लाजरोनी' अर्थात् निम्नश्रेणी के गुण्डे कुछ दिन पहले इतने थे और उनका उपद्रव ऐसा प्रबल था कि शहर के भले आदमी उनके डर से कौपा ही करते थे। ऐसा कोई पैशाचिक काम न था जो ये गुण्डे न कर सकते हों। इस समय भी इन गुण्डों का एक-दम अभाव नहीं हो गया है। यहाँ का भीतरी और बाहरी दृश्य प्रायः एक सा ही है। यहाँ के निवासियों का जैसा स्वभाव है, नगर की अवस्था उससे अधिक बुरी है। राह, घाट, नालियों और नालों का ऐसा कुप्रबन्ध है कि सब तरफ गदगी के साथ ही दुर्गन्ध फैली हुई रहती है। एक यात्रा करनेवाली महिला ने इस बारे में बहुत ही ठीक कहा है—

("The paving is about the worst in Europe, and the damage extremely incomplete. Evil odours are more abundant in Naples than in any other Italian city."

* * Naples is an ill-built, ill-proved, ill-lighted, ill-drained, ill-watched, ill-governed, ill-ventilated")

एक घात यहाँ नई देख पड़ी। बोम्बे की गाड़ियों में एक घोडा और एक बैल जुता रहता है।

नेपोली की प्रधान सड़क का नाम है 'टोलिडो'। उसमें, दिन में, सब समय न्यूनाधिक ५०००० पैदल और २००० के लगभग अनेक रंग की सवारियाँ चला करती हैं। इस सड़क पर शोरगुल

और गोलमाल बहुत रहता है । खुली सड़क पर नगर का आधे के लगभग काम हुआ करता है । दरजी, बढई, मोची आदि सभी सड़क के किनारे बैठकर अपना अपना राजगार चलाते हैं । बहुत से तेलक डेस्क रखे बैठे हुए हैं । निरक्षर लोग वेस्टके अपने मन की सब गुप्त बातें, चिट्ठी में लिखने के लिए, उनसे कह रहे हैं । 'भिन्नुक' सडे हुए धर्म-प्रचार के साथ ही कुछ न देनेवाले श्रोता लोगों को अमङ्गल का भय दिखा रहे हैं । एक और बुढ़िया ककीरेन ऊँचे स्तर से धर्मगीत गा रही है । दूसरी ओर एक दवा बेचनेवाला धातूनी आदमी गला भाड भाड कर अपनी दवाआ के यश की डोंग मार रहा है । इसी तरह जुआरी, मदारी आदि के कोलाहल में गरीब औरतें तरकारी काट रही हैं, वर्तन मॉज रही हैं, तकिये में—गद्दे में पाट भर रही हैं, अगणित लोग हाथ-मुँह मटका मटका कर जोर जोर तरह तरह की बातें कर रहे हैं । इसके सिवा असल्य गाडी, घोडे, गधे, पैदल आदमियों आदि के शोरगुल का तो कुछ ठिकाना ही नहीं । ईसाई-यूरोप में ऐसा गोलमाल और कहां नहीं देखने को मिलेगा । वोभा डानवाने जीवों के साथ ऐसा निठुर वर्ताव और कहीं न किया जाता होगा । तात्पर्य यह कि एशिया के अनेक हीन दृश्य यहाँ भी देखने को मिलते हैं । पुराई की समाधि के बारे में यहाँ इटली की साधारण प्रथा प्रचलित है । अर्थात् आत्मीय स्वजन कोई साथ नहीं जाता, पुरोहित आदि के द्वारा सब काम होता है । गरीबों के लिए अच्छी व्यवस्था नहीं है । गरीब निवासियों के लिए दो कमरिस्तान बने हुए हैं । उनमें ३६६ कमर के गडे हैं । साल भर राज जितने गरीब मरते हैं वे एक ही गडे में एक साथ नित्य गाडे जाते हैं । साल भर के बाद फिर उतने ही गडे सोदे जाते हैं ।

नेपल्स के दृश्यों में राजमहल, एकोयोरियम, स्यूजियम, चित्र-शाला, गिर्जा और थियेटर-भवन मुख्य हैं। एकोयोरियम अर्थात् जल-जन्तु-शाला समुद्र के किनारे है। यहाँ जीते मूँगे आदि स्वाभाविक अवस्था में रक्खे हुए हैं। स्यूजियम के पम्पी-कमरे में ज्वालामुखी के उत्पात से विनष्ट प्रसिद्ध पम्पी-नगर के भू-गर्भ से निकाली हुई बहुत सी सामग्रियाँ रक्खी हैं। उसमें किवाड़े, लांहे के मन्दूक, पीलसोज, नर-नारी, कुत्ते, विल्लो, घोड़े, मूसे आदि के शव, अण्डे, फल, रोटी, रासायनिक प्रयोग के यन्त्र आदि, सगमरमर के टेबिल, छरुड, ताला, कुजी, सगमरमर और पीतल की कई मूर्तियाँ और और भी अनेक इस्तेमाल में आनेवाली चीजें हैं। इसके अन्तर्गत एक ऐसा कमरा है जहाँ स्त्रियाँ और बालकों के लिए जाना मना है। उसमें बहुत सी गद्दी और घुरी चीजें हैं। इन घुरी चीजों की नकलें बाजार में खुलासा तौर पर बिका करती हैं। सडक पर भी अश्लील चित्र और पुस्तकें बिका करती हैं। स्यूजियम के अन्यान्य अर्थों में इतना रोमन, प्राचीन इटलियन इट्रस्कन और इटली-ग्रीक सामान रक्खा है जितना और कहीं भी न होगा। यहाँ की चित्रशाला का, पृथ्वी की चित्रशालाओं में ११ वाँ नम्बर है। नेपोली में ३०० से अधिक भजनालय हैं। उनमें से सेण्ट के गिर्जे में उनका रक्त शीशी में, जमा हुआ, रक्खा है। यहाँ के लोगो का विश्वास है कि १ ली मई और १-६ वी सितम्बर को यह रक्त पतला और गर्म हुआ करता है। महात्मा सेण्ट जानु-आरियस ईसाई विश्वास थे। मूर्तिपूजक रोमन विचारक की आज्ञा से उनका सिर काटा गया। वह सिर अभी तक इस गिर्जे में रक्खा हुआ है। कहा जाता है कि जब उनके खून की शीशी सिर के सामने लाई जाती है तब खून में गर्मी आ जाती है। नेपल्स में २० थियेटर हैं। प्रधान थियेटर का नाम है "सान कार्लो"। इस थियेटर का

भवन ५१५७ वर्ग गज में बना है । उसमें ३२०० आदमी बैठ कर नाटक देख सकते हैं । यहाँ की रायल लाइब्रेरी में ढाई लाख छपी हुई पुस्तकें हैं । उनके अलावा विनष्ट हर्कुलेनियम नगर से प्राप्त ३००० पापाइरस-भोजपत्र में लिखे हुए ग्रन्थों का संग्रह है ।

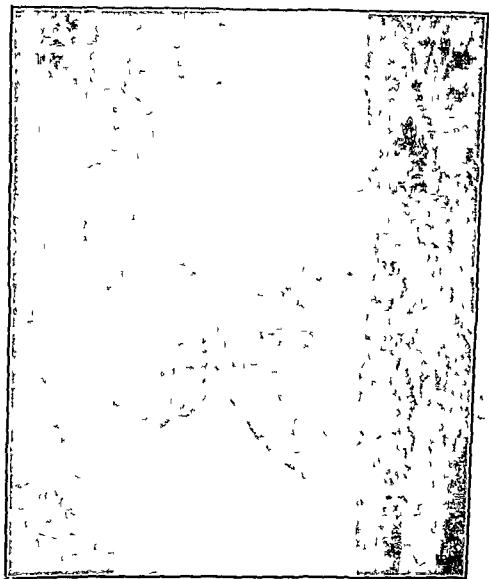
नेपल्स को लोऊ-सख्या साढ़े सात लाख के लगभग है । नेपल्स के आसपास ५।६ कोस में जो देखने लायक स्थान हैं उनमें कवि वर्जिल की समाधि, कई एक टापू, विसूवियस और प्राचीन नगर के कई एक ध्वसावशेषों में हर्कुलेनियम और पम्पी प्रधान हैं ।

हर्कुलेनियम । नगर से बाहर निकल कर, पम्पी की राह में, हर्कुलेनियम है । यह नगर, सन् ७८ में, गली हुई धातु के नीचे गड गया था । इसी से इसका उद्धार कष्ट-साध्य है । ८५ फुट मिट्टी के नीचे एक थियेटर-भवन का उद्धार किया गया है, उसे सब लोग जाकर देख सकते हैं ।

पम्पी । अंगरेजी में इसी को पम्पियाई कहते हैं । किन्तु स्थानीय लोगों का उच्चारण पम्पी ही है । ज्वालामुखी से गली हुई धातु की धारा हर्कुलेनियम की ओर चली थी । बीच में पम्पियाई के ऊपर इतनी राख और और चीजें आकर गिरों कि सब निवासियों सहित सारा नगर बीस फुट नीचे गड गया । १८ वीं शताब्दी से इसके उद्धार का काम जारी हुआ और १८ वीं शताब्दी के मध्यभाग में समाप्त हो चला । नगर के उद्धार का काम ऐसी सावधानी और हिसाब से किया गया है कि विध्वंस के दिन जो कुछ जैसा था वह इस समय भी उसी दशा में देख पड़ता है । पम्पियाई नगर छोटा सा, दो मील के घेरे का, था । चारों ओर की दीवार और उससे सौ गज के फासले पर टावर का अधिक भाग, आठ फादकों सहित, वैसे ही खड़ा है । रास्ते सब सीधे हैं, किन्तु अधिक चौड़े नहीं हैं ।

गाडियो और छकड़ों की लीकें अभी तक स्पष्ट बनी हुई हैं। नेपल्स और उसके उपनगरो की तरह पम्पियाई की भी सबकें विसूवियस के उगले पत्थर के टुकड़ों से बनी हुई हैं। दो थियेटर हैं। उनमें बड़ा आम्फी थियेटर ४३० X ३३५ फुट का है। फोरम, विचार-भवन, कारागार, कई देवमन्दिर, बलिस्थान, 'ग्लाडियेटर', पहलवानो की बारिके, साधारण स्नानभवन आदि सब जैसे का तैसा बना हुआ है। प्रायः हर एक गृहस्थ के घर में मैदा पीसने की व्यवस्था और पाव-रोटी पकाने के लिए तंदूर है। नगर में रोटीवालो की दूकाने भी कम नहीं हैं। किसी घर के निचले खण्ड में खिडकी नहीं है। केवल दो खण्ड के मकानो में, ऊपर के खण्ड में, छोटी छोटी खिडकियाँ हैं। मूर्त्ति बनाने और गढाईके अनेक कारखाने हैं। धनी लोगों के घरों के सदर दरवाजों पर देशी भाषा में आनेवालो की अभ्यर्थना के शब्द लिखे हुए हैं। वेश्याओं के भवन बड़े ही अद्भुत हैं। साइनवोर्ड की तरह हर एक के द्वार पर पत्थर की गुप्त इन्द्रिय की मूर्त्ति रक्खी हुई है और लिखा हुआ है—*Mie habitat felicitas* अर्थात् सभोग-भवन। घरों की भीतर की दीवारों पर ऐसे अश्लील चित्र बने हैं कि पिता और पुत्र उन्हें एक साथ नहीं देख सकते। चित्रों की तारीफ यह है कि आज भी वे उसी तरह चमक रहे हैं।

सन् ७६ की २४ वीं अग्रेस्त की ज्वालामुखी का उत्पात शुरू हुआ और तीन दिन में सब विध्वंस कर डाला। सन् ६३ के भूकम्प से जो नुकसान हुआ था उसकी लोग मरम्मत कर रड़े थे। उसी दिन म्यूनिसिपल चुनाव भी हो रहा था। इतने ही में विसूवियस पहाड पागल की तरह जलती हुई राख, रोडे, पत्थर और गली हुई धातु बरसाने लगा। उससे नगर में घोर अन्धकार



उस पर चढ़ कर टेढ़े-मेढ़े रास्ते होकर बड़े कष्ट से फुनीक्यूलर (Funicular) रेलवे-स्टेशन तक चढ़ कर गया । यह स्थान १००० फुट के लगभग ऊँचा और ऐसा खड़ा है कि रेल के सिवा और किसी तरह चढ़ना सम्भव नहीं । रेल से उतर कर ४०।५० कदम चढ़ कर उस छिद्र के पास पहुँचते हैं जिससे राख, रोड़े वगैरह निकलते हैं । इस छिद्र तक जाने की राह में इतने छेद हैं कि मानो सब नीचे से पोला है । उन छेदों से बराबर गन्धक का धुआँ निकला करता है । छिद्र के मुख के पास जाकर जो कुछ देखा और उसे देखकर जो कुछ भाव पैदा हुआ उसका वर्णन सर्वथा असम्भव है । क्रेटर के घेरे का अनुमान नहीं किया जा सका । घना काला धुआँ इतना छाया हुआ था कि कुछ देस नहीं पड़ता था । जान पड़ता है, तीन चार बीघे से कम का घेरा न होगा । धुआँ, ज्वाला और गली हुई धातु तो बराबर बाहर निकलती ही रहती है । उसके सिवा एक साथ आठ-दस तोपों का ऐसा भयानक धडाका बीच बीच में होता है कि अच्छे बहादुर का भी कलेजा काँप जाता है । सुनने में आया कि सन् १८७२ में ५८ दर्शकों सहित थोड़ी सी जमीन धँस गई थी । मुझसे कई दिन पहले एक अमेरिकन यात्री भुक्त कर छेद के भीतर भाँकने लगा, इतने में उसका पैर विछल गया और वह क्रेटर के भीतर चला गया । वैसी चारों ओर पोली जमीन के ऊपर चलना निस्सन्देह विपत्ति का सामना करना है । गली हुई धातु का प्रवाह दूमरी और बहा जा रहा था । उसमें से कुछ कुछ इधर-उधर भी छिटक जाता था ।

पहाड़ से थक कर नीचे उतरने पर एक गूलर के बाग़ में गया । वहाँ गूलर और एक प्रकार के मीठे फल (प्रिक्की पेयर) खाकर बड़ी प्रसन्नता प्राप्त हुई । इन गूलरों को हमारे यहाँ के गूलर न

समझना चाहिए । इन फलों को अँगरेजी में 'फिग' कहते हैं । होते ये गूलर की ही जाति के हैं, लेकिन गूलर से बड़े होते हैं । इनका छिलका हरा और पतला तथा गूदा सफेद मक्खन ऐसा मुलायम और खूब मीठा होता है । दक्षिण यूरोप और एशियाई टर्की में यह फल बहुत मिलता है । हमारे देश के तरबूज, खरबूजे और बेंगन भी इटली के इस अंश में उपजते हैं ।

रात को होटल में आकर सोया । विसूवियस के दृश्य की याद करने से डर मालूम पड़ने लगा । पहले उस स्थान की भयानकता मालूम न थी, इसी से वहाँ तक देखटके चला गया था । अब क्रेटर पर चढ़ना और मौत के मुँह में जाना बराबर जान पड़ने लगा । यद्यपि बराबर सैकड़ों आदमी देखटके वहाँ तक जाते आते रहते हैं तथापि इसका कुछ भी ठिकाना नहीं कि कब कहीं की जमीन नीचे धस जायगी । मेरे जाने के तीन महीने पहले, सन् १८६१ की ६ जून को यह पहाड़ अभिभूति हो गया था । बहुत थोड़े दिन हुए, एक जगह एक नया छोटा सा मुँह फूटा है । इसका कुछ ठीक नहीं कि विसूवियस के किस स्थान में कब क्या अनर्थ होगा । चोटी पर चढ़ने के रास्ते में एक मानमन्दिर की स्थापना हुई है । शायद एक दिन अचानक वह भी गली हुई धातु के नीचे दबकर नेस्तनाबूद हो जायगा ।

त्रिण्डिसी । त्रिण्डिसी में दो बार आना हुआ । पहली बार सन् १८८६ में नेपल्स से आकर जिस होटल में ठहरना हुआ वहाँ हमारे भूतपूर्व (बगाल के) छोटे लाट मेकेंजि साहब (Sir Alexander Mackenzie) से मुलाकात हुई । उसी अवसर में वहीं प्रोक-द्वितीय पुरातत्व के पण्डित डाक्टर श्लीमन (Dr Schliemann) भी रहते थे । महात्मा मेकेंजि मुझे उनके पास ले गये ।

उन्होंने पहले मुझे ग्रीक समझा था । परिचय पा चुकने पर उन्होंने भारत के सम्बन्ध में बहुत सी बातें कहीं । यह जाति मैं तो जर्मन, किन्तु अमेरिकन प्रजा, थे । ग्रीस के प्राचीन तत्त्वों के आविष्कार में इन्होंने बहुत परिश्रम किया । कन्टीनेन्ट की दूकानदारी के सम्बन्ध में मुझे मावधान करके मेर्केजी साहब ने कहा—“वेनिस की एक दूकान में तीन दिन धराधर चक्कर लगा कर कुछ चीजों को, जिनकी कीमत पहले दूकानदार २०० लिरा माँगता था, ५० लिरा में खरीदा था” । रोम आदि नगरों की कुछ दूकानों पर “एक बात” लिखा रहता है । इसी से विदित होता है कि वहाँ सब दूकानों पर “एक बात” का व्यवहार नहीं है । ब्रिटिश-द्वीप के सिवा और कहीं भी खरीद-फरोख्त में एक बात नहीं कही जाती । अँगरेजों के लिए यह कम गौरव की बात नहीं है । दूसरी बार, सन् १८६१ में, ग्रीस से यहाँ आया । रोमन-समय में यहाँ का नाम था ब्रण्डुसियस (Brundisium) । रोमन लोगों के अनेक चिह्न इस समय भी हैं । उनमें बन्दरगाह के सामने, समुद्र के भीतर, एक छोटा सा टापू देखने के योग्य है । जूलियस सीजर ने यहीं पर अपने प्रतिद्वन्द्वी पम्पियस पर आक्रमण किया था । ईसा से १६ वर्ष पहले महाकवि वर्जिल की मृत्यु जिस घर में हुई थी वह इस समय भी मौजूद है । प्रसिद्ध आपियन-सड़क (Appian Way) रोम से आकर यहीं पर समाप्त हुई है । उसका चिह्न-स्वरूप एक स्तम्भ भी बना हुआ है । त्रिण्डिसी छोटा शहर है । सड़कें और रास्ते अच्छे नहीं हैं । आजकल भारत की डाक इधर से ही आने जाने लगी है । इस कारण कुछ श्री-वृद्धि के साथ रेल्वे-स्टेशन से समुद्र-तट तक एक चौड़ी सड़क बन गई है । बन्दरगाह के सामने के समुद्र को बाँध कर कुण्ड सा बना लिया गया है । उसमें नाव पर घूमने में बड़ा मजा

आया । यहाँ की हवा बहुत साफ और आकाश सदा उज्वल नीलवर्ण रहता है । सदा वसन्त सा बना रहता है । यूरोप के एक किनारे पर सडे होकर देश की राह की ओर देखने से हृदय में एक प्रकार के अभाव का अनुभव होने लगा । गढी के ऊपर से चारों ओर का दृश्य उदुत ही मनोहर देख पडता है । रेल में आते समय त्रिण्डिसी के पास गधे से जमीन जुतवाते देखा । इस प्रदेश की लियाँ विचित्र अलङ्कार पहनती हैं । नैतिक अवस्था में अन्यान्य वन्दरगाहों की अपेक्षा त्रिण्डिसी की हालत अच्छी नहीं है । रास्ते में जुआरी और बेश्याएँ तो सुलासा बुलाती ही हैं, उनके सिवा बहुत से ऐसे कमसिन बालक घूमते रहते हैं जो आत्मीय महिलाओं का परिचय देकर, धनोपार्जन के लिए, विदेशियों को अपने घर ले जाते हैं । भोले भाले बालक इन सब बातों को इस तरह कहते हैं जैसे उनमें कुछ दोष नहीं है । उनकी यह दशा और यह भाव देख कर बडा ही दुःख हुआ ।

बोलोनिया (Bologna) । त्रिण्डिसी से, एड्रियाटिक की राह से, एक दम बोलोनिया पहुँचा । बोलोनिया चहारदीवारी से घिरा हुआ दो वर्गमील का छोटा सा नगर है । इसमें प्रवेश करने के लिए १२ फाटक हैं । यहाँ के घर बडे और ऊँचे हैं । सडकें अक्सर तंग और टेढ़ी-मेढ़ी हैं । मगर सब साफ और पक्की हैं । स्थानीय प्रधान स्कायर में एक फुहारा और नेपचून देव की भारी मूर्ति विराजमान है । इतने से शहर में १३० गिर्जे, २० कनवेन्ट, ६ अस्पताल, ५ थियेटर, २०० स्कूल और विश्वविद्यालय, न्यूजियम, बटानिकल गार्डन और मानमन्दिर है । बारहवीं शताब्दी के दो टेढे टावर (Leaning Towers) यहाँ का प्रसिद्ध और प्रधान दृश्य हैं । इस नगर में क्रैप, रेशम, काँच, मोमबत्ती, कागज, बाजे और मिट्टी के बर्तनो

के कारखाने रूब चलते हैं। चित्र-विद्या के धारे में, यूरोप में, वोलोनिया प्रसिद्ध है। यहाँ दो लाख के लगभग लोग रहते हैं।

पाडुवा। स्थानीय नाम है पाडोवा (Padova)। वोलोनिया से पाडुवा और फिर वहाँ से वीनिस गया। पाडुवा चहारदीवारी से घिरा हुआ पुराना एक छोटा सा नगर है। इसी नगर से वीनिस की उत्पत्ति हुई है। लोग आक्रमणकारियों के भय से वहाँ से भागे। उन्होंने विपत्ति से बचने के लिए पानी के भीतर वीनिस नगर बसाया। सन् १२३८ में स्थापित वहाँ का प्राचीन विश्वविद्यालय प्रसिद्ध है। रोमन-इतिहासज्ञ लिवी (Livy) का जन्म यहीं हुआ था।

वीनिस। स्थानीय नाम है विनिजिया। इटली के दक्षिण में जैसे नेपोली के सम्बन्ध में प्रवाद प्रचलित है वैसे ही इटली के उत्तर में लोग कहते हैं—(Vedi Venezia e poi mori) अर्थात् वीनिस देखकर मरना। सचमुच वीनिस एक अजब शहर है। जैसे सब सपने का तमाशा है। गाड़ी-घोड़े का नाम भी नहीं है। केवल जलही जल है। सब जगह जाने आने के लिए ४००० काले रंग की 'गण्डोला' नाम की नावें चला करती हैं। ये नावें हमारे देश की डोंगी की तरह होती हैं। बीच में सवारियों के बैठने के लिए छार्ड हुई जगह रहती है। ३८० पुलों से मिले हुए ११७ टापुओं के ऊपर २० मील लम्बे और ६ मील चौड़े "लेगुन" (Lagune) अर्थात् उथले पानी के भीतर यह नगर स्थापित है। नगर का घेरा ७ मील का है। २०० खर्भों का एक पुल है जो इस नगर को महादेश से मिलाता है। इनमें १५० नहरें हैं। उनमें "केनाली ग्राण्डे" प्रधान है। यह ३०० फुट चौड़ी और शहर की लवाई में बीच से निकल गई है। इसके ऊपर सगमरमर का बना हुआ रियाल्तो पुल (Ponte di Rialto) सर्वोत्तम और प्रधान

है । इसके ऊपर दोनों तरफ दूकाने, और इस कारण तीन रास्ते, हैं । पैदल चलने के लिए जो नगर में रास्ते हैं वे बहुत ही तंग और टेढ़े-मेढ़े हैं । नाव पर आने-जाने में ही सुभीता है । हर एक के दरवाजे तक सहज में नाव चली जाती है । नगर बहुत पुराना है और जल में बहाव नहीं है । बहुत सी घास और पत्ते आदि के सड़ जाने के कारण बहुत जगह बड़ी बढवू आती है । रात को मच्छड़ों के मारे मसहरी के बिना कोई सो नहीं सकता । मलेरिया ज्वर का भी अभाव नहीं है । इटली में सब जगह स्कायरा को 'पियाजा' कहते हैं । यहाँ के प्रधान कामकाज और आमोदप्रमोद का स्थान ५६२ × २३२ फुट है । सान मार्को का पियाजा (Piazza di San Marco), अर्थात् सेण्ट मार्को का स्कायर । यहाँ एडे होने पर सामने ३१६ फुट ऊँचा और ४२ फुट घेरे का कैम्पानिल या घण्टाघर देख पडता है । उसके सामने ही सानमार्को का गिर्जा है । इस घटाघर पर चढ़ने के लिए सीढ़ी के बदले क्रमश उच्च-समान मेजों की व्यवस्था है । गिर्जे की बनावट गाथिक (Gothic) और मुसलमानी ढंग की है । इसमें ५०० सगमरमर के खम्भे हैं । उनमें से कई एक सालोमन के प्रसिद्ध मन्दिर से लाये गये हैं । गिर्जे के सदर दरवाजे के ऊपर चार पीतल के घोडे हैं । इन घोडों को रोम के नीरो और ट्राजनके मन्दिर से सम्राट् कान्स्टन्टाइन निजनिर्मित कान्स्टेन्टिनोपल अर्थात् कुस्तुन्तुनिया में ले आये थे । पीछे वीनिस का कोई राजा वहाँ से इन घोडों को लूट कर यहाँ लाया । उसके बाद नेपोलियन इन घोडों को अपने बाहुचल से पेरिस ले गया । अन्त को फिर आस्ट्रिया के सम्राट् ने इन घोडों को यहाँ लाकर स्थापित कर दिया । इन घोडों का इतिहास शिचाप्रद है । वीनिस जब स्वाधीन था तब वहाँ के राजा

को डोज (Doge) कहते थे । यह डोज-महल इस नगर का प्रधान दृश्य है। मकान अरबी ढंग का बना हुआ है। सन् ८०० में सबसे पहले बना था। कई बार अग्नि में जल जाने के उपरान्त सन् १३५४ में वर्तमान महल बना है। उसके बाद भी दो बार कुछ कुछ हिस्सा जल गया था। उसकी मरम्मत होगई है। यह २४६ वर्ग-फुट का और अत्यन्त सुन्दर है। कई कमरों की दीवारों और भीतरी छतों में कई प्रसिद्ध चित्रकारों के हाथ के चित्र बने हैं। महल के पीछे प्रसिद्ध "दीर्घनिःश्वास सेतु" (Bridge of sighs) से युक्त प्रसिद्ध भयानक कारागार है। साधारणतन्त्र के समय में वहाँ बहुत से बड़े आदमी कैद रहे हैं। वीनिस का समरसज्जा का भवन (Arsenal) और उसका कारखाना किसी समय विशेष प्रतिष्ठित गिना जाता था। इसका घेरा ३ मील का है। इस कारखाने में एक समय १६००० आदमी काम करते थे। दरवाजे पर दो सगमर-मर के शेर बने हुए हैं। ये दोनों शेर, सन् १६८७ में, ग्रीस की राजधानी एथेन्स से लूट कर लाये गये हैं। एक के शरीर में, रुमिक (Rumi) भाषा में, जो लिखा है उससे जाहिर होता है कि इस शेर को हाकल ने, पाइरिउस (Pnaeus) विजय के चिह्न-स्वरूप, उक्त बन्दरगाह में स्थापित किया था। इस स्थान के अन्तर्गत अस्त्रा-गार में लेपान्टो के युद्ध में लूटे हुए लाल पीले रेशम के तुर्की झण्डे और प्राचीन वीनिस के बहुत से धनुष-बाण और कवच आदि रक्खे हैं। इसके सिवा अनेक प्रकार के जगी जहाजों की बहुत सी नकलें रक्खी हुई हैं। प्राचीन डोज लोग जिस प्रकार की नावों पर बैठ कर, साल में एक दिन, समुद्र को व्याहने की यात्रा करते थे वैसी भी एक नाव रक्खी हुई है। यहाँ एक म्यूजियम और

दो पार्क अर्थात् सरकारी बाग हैं । प्रधान पार्क नगर के छोर पर समुद्र के किनारे, है । बहुत ही मनोहर स्थान है । उसमें महावीर गेरीवाल्डी की मूर्ति स्थापित है । वीनिस में तीन थियेटर और तीन अपेरा-भवन हैं । स्थानीय चित्रशाला और सबसे प्राचीन चित्रों का विश्वविद्यालय भी यूरोप में प्रसिद्ध है । यहाँ डेढ़ लाख से अधिक आदमी रहते हैं । यहाँ के जल में बहुत से हियोक्म्पस (Hippocampus) नामक जीव देख पड़ते हैं । इनका मुँह घोंघे का ऐसा और सारा शरीर मछली का ऐसा होता है । यह आधे हाथ के लगभग लम्बा होता है । वीनिस के आदमी एशिया के निवासी से जान पड़ते हैं । मैले रंग के भी बहुत से आदमी यहाँ हैं । यहाँ आलस्य का ऐसा साम्राज्य है कि नौकर-चाकर सब विदेशी हैं । देशी लोग खैरात खायेंगे तो भी नौकर का काम न करेंगे ।

पायेचेञ्जा (Piacenza) । वीनिस से बोलेोनिया लौट गया और वहाँ से यहाँ आया । कई गिर्जे, पाँच छ. सौ बरस के एक महल और कुछ मूर्तियों के सिवा यहाँ विशेष कुछ देखने की सामग्री नहीं है । ईसा से २१६ वर्ष पहले रोमन लोगों ने इस नगर की स्थापना की थी । इसके पास पम्पियाई ऐसा एक गढ़ा हुआ नगर निकला है । बहुत छोटा नगर है । केवल ३५००० आदमी रहते हैं ।

ट्यूरिन । स्थानीय नाम टोरिनो (Torino) है । पायेचेञ्जा से यहाँ आया । सन् १८८६ को इटली यात्रा का यही अन्तिम स्थान था । ट्यूरिन नगर बहुत दिनों तक पिड्मन्ट राज्य की राजधानी था । इस समय युक्तराज्य की एक प्लेटन का अड्डा-मात्र है । यहाँ दो लाख से अधिक लोग रहते हैं । नगर पहाड़ों से घिरा हुआ और चौकोना है । रास्ते सीधे होने से शतरंज की पिसात की

बहार देता है । यह नगर डोरा और पो-नदी के सगम पर स्थापित है । पास ही गिरिराज आल्पस का सुन्दर दृश्य है । गणितज्ञ लाम्राञ्ज और महात्मा काचूर की जन्मभूमि यही है । हगेरी के कोसूख यहाँ, शोपावस्था में, आकर रहे थे । कई एक पियाजा अर्थात् स्कायर हैं, उनमें दो बहुत अच्छे हैं । एक स्कायर में पो-नदी के पुल की राह में बहुत सी अच्छी अच्छी सुमज्जित दूकानें हैं । काचूर, लाम्राञ्ज आदि कई महापुरुषों की मूर्तियाँ, एक सप्त-दैत्यरचित प्रस्तर-स्तूप-युक्त फुहारा और आविलिक्स नगर की शोभा बढ़ा रहे हैं । अन्यान्य दृश्यों में प्राचीन राजमहल, और उसके अन्तर्गत अस्त्रागार, जानेवा के ड्यूक का महल, पशुशाला, मानमन्दिर, एक राजमाता का महल, विज्ञान-शिक्षा-भवन और उसके अन्तर्गत म्यूजियम, चित्रशाला, शिल्प-विद्यालय, विश्वविद्यालय, नागरिक म्यूजियम, कई एक गिर्जे, टाउनहाल, आर्सनल और उसका म्यूजियम, भारी थियेटर, विक्टरइमानुएल का मन्दिर, और पो-नदी के दूसरे तट पर, मान्टी पहाड़ के ऊपर बना हुआ कपूचीन-सम्प्रदाय का कनवेन्ट देखने योग्य है । नगर के सामने, पो-नदी के भीतर, एक जल-प्रपात है । सामान्य जल गिरता है, इससे अर्धचन्द्राकार उच्च-नीच दृश्य बहुत ही सुन्दर जान पड़ता है । नदी-तट पर बैठकर चारों ओर के स्वाभाविक और कृत्रिम सौन्दर्य को देखकर हृदय हरा हो उठता है । नगर से ५ मील की दूरी पर, २५०० ऊँची पहाड़ की चोटी पर, एक राजा का समाधिमन्दिर बना हुआ है । यह एक अपूर्व दृश्य है । विसूवियस की तरह यहाँ भी फुनीक्युलर रेल पर ऊपर चढ़ना होता है । इस नगर में साठे चार लाख के लगभग लोग रहते हैं ।

फ्लोरेंस । स्थानीय नाम है फिरेन्जी (Firenze) । यह नगर

आर्नो-नदी के किनारे बसा है । फ्लोरेन्स का अर्थ है “फूलों का नगर और नगरों में फूल” राजा इमानुएल ने रोम में प्रवेश करने के पहले कुछ दिनों तक यह युक्त-इटली की और उससे पहले टास्कनी राज्य की राजधानी था । मैं, सन् १८६१ में, रोम से यहाँ आया । यहाँ के रास्ते बहुत तंग हैं । हॉ, नदी के दोनो किनारों की दो मील लम्बी पक्की सड़क बहुत अच्छी है । उस पर टहलने से सब आराम मिलता है । नगर में ६ फाटक हैं, दो बड़े बाजार हैं, तीस पियाजा है । उनमें से एक में अनेक मूर्तियाँ हैं, एक में डान्टे (Dante) का स्मारक चिह्न है, और एक में माइकेल एञ्जेलो के ‘डेविड’ की नकल रक्खी है । नगर के अनेक बड़े महल और कई गिर्ज प्रसिद्ध हैं । इमारतों में पुराना और नया टाउनहाल और माइकेल एञ्जेलो तथा डान्टे का घर देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई । एञ्जेलो के घर में अनेक चीजें यत्नपूर्वक सुरक्षित हैं । यहाँ का प्रधान गिर्जा (Domo) सन् १२६८ से बनने लगा और सन् १४७० में बन कर तैयार हुआ । इसकी दीवारों में सगमरमर जड़े हैं । यह ५०० फुट लम्बा, १२८ और ३१० फुट चौड़ा और ३८० फुट ऊँचा है । इसके भीतर कितने ही साधु महापुरुषों की मूर्तियाँ और असंख्य अङ्कित चित्र हैं । एक गिर्जे में डान्टे, गेलीलियो और मेकियावेली आदि विद्वानों के मनुमेन्ट हैं । यहाँ के दोनो म्यूजियमों में मूर्तियाँ और चित्रपटों का अपूर्व समूह है । उसमें जवाहरात का भी अच्छा समूह है । एक यात्रो इनके सम्बन्ध में लिखता है—“The two galleries (Galleria Reale and Galleria di Palazzo Pitti) contain perhaps the richest and most celebrated collection of statues and pictures in the World, including the Venus de Medici, and works of Raphael whose portrait by himself is in the Hall of Portraits”

राफेले की अपने हाथ की बनाई अपनी तस्वीर यहाँ पर है ।

मेग्लियावे की (Magliabecchi) की लारेन्सियन लाइब्रेरी में डेढ़ लाख छपी किताबें और बारह हजार हाथ की लिखी पुस्तकें हैं। यहाँ के और एक पुस्तकालय में वर्जिल, टासिटस (Tacitus) प्लुटार्क (Plutarch) और डान्टे की हस्तलिपियाँ रक्खी हुई हैं। इसके सिवा और भी कई म्यूजियम हैं। शिल्पविद्यालय (Academy of fine Arts) में एञ्जेलो के हाथ का असल 'डेविड' स्थापित है। आर्नो के एक पुल के ऊपर मनुष्यों के रहने के घर आदि बने हैं। नदी के किनारे का बगोचा भी बहुत बड़ा है। तरह तरह के लार्यों पेड़ और लतायें यहाँ हैं। पुल पर के घरों से मिला हुआ बाग़ और पहाड़ है। पहाड़ के ऊपर से नगर का दृश्य बहुत मनोहर देख पडता है। रोम की तरह यहाँ के लोग भी कुदरती भरना का पानी पीते हैं। भारतेश्वरी विक्रोरिया कभी कभी यहाँ जाया करती थीं। नगर के पास ही एक पहाड़ के ऊपर गेलीलियो का विला (घर) है। यहाँ ढाई लाख के लगभग लोग रहते हैं।

मिलन । स्थानीय नाम है मिलानो (Milano)। सन् १८६१ में, फ्लोरेन्स से स्वीजरलैंड जाते समय इधर ही से जाना हुआ था। स्टेशन से निकल कर नगर के फाटक में प्रवेश करने के पहले एक छोटी सी फूलों की बगिया मिलती है। वहाँ महात्मा कावूर (Cavour) की मूर्ति स्थापित है। नगर का घेरा सात मील का है, चारों ओर खाई और दीवार है। भीतर प्रवेश करने के लिए १३ फाटक हैं। फाटक बड़े बड़े हैं और मूर्तियों तथा अन्यान्य कारीगरियों से विभूषित हैं। यहाँ का प्रधान दृश्य है प्रसिद्ध ड्यूमो गिर्जा। यह नीचे से ऊपर तक सगमरमर के पत्थर से बना है। बहुत ही सुन्दर है। इसी से यात्री लोग इसे (Frozen music) अर्थात् "घनीभूत स्वर-तान" कहते हैं। रोम के सेन्टपीटर गिर्जे

के बाद इटली में यही सर्वोत्तम गिर्जा है । यह ५०० फुट लम्बा और १८६ फुट चौड़ा है । ५२ खम्भों के ऊपर १५८ फुट ऊँची नेव स्थापित है । इसका टावर ३०० फुट ऊँचा है और उसमें ४६४ सीढियाँ हैं । उसकी चोटी १३५ फुट ऊँची है । इस गिर्जे में १५०० रिलीफ चित्र हैं । इसके बाहर १६२३ और भीतर ६८० मूर्तियाँ हैं । इसकी और और भी अनेक सजावटें देखने योग्य हैं । यहाँ दो-तीन फर्लांग का लम्बा एक आर्केड-वाजार भी देख पडा । उस वाजार में २४ प्रसिद्ध इटलियन लोगों की मूर्तियाँ स्थापित हैं । यहाँ ६ लाख से अधिक लोग बसते हैं ।

इटली की साधारण अवस्था । इटली बहुत सी बातों में हमारे देश के समान है । उसे अगर यूरोप का भारतवर्ष कहें तो कुछ अत्युक्ति न होगी । हमारे पञ्जाब, कश्मीर, मदरास और सिन्ध के जल-वायु और आदमियों में जैसा अन्तर है वैसा ही अन्तर इटली के लम्बार्डी, पिड्मान्ट प्रदेश, कालात्रिया और सिसिली के जलवायु और आदमियों में भी है । पहले केवल दक्षिण अश को ही इटली कहते थे । अनेक बातों में हमारे समान होने के कारण, इटली के सम्बन्ध में विशेषरूप से जानकारी हासिल करने की इच्छा होना हमारे लिए स्वाभाविक ही है । इटली के सिवा यूरोप के किसी देश में शायद धान नहीं बोये जाते । इटलियन जहाज में यात्रा करने और कई बार इटली की सैर करने से मुझे जो कुछ मालूम हुआ है वह पाठकों की जानकारी के लिए नीचे लिखता हूँ । परोसी जातियों के साथ मिलान करके देखने से कहना पडता है कि इटली की अवस्था अच्छी नहीं है । अँगरेजों में यह गुण है कि वे अन्यान्य जातियों की अपेक्षा अधिक परिश्रम करने की आदत रखते हैं, पैदा करते हैं और जी खोल कर खर्च करने में भी किसी से पीछे नहीं

हैं । फ़्रेंच लोग उतना परिश्रम नहीं करते, पर कृपण स्वभाव के, और इसी से सञ्चयी, होते हैं । बालबच्चों की व्यवस्था के सम्बन्ध में, अन्यान्य जातियों की अपेक्षा, वे अधिक सावधान होते हैं । हर एक सन्तान को कुछ कुछ रकम दे जाने के ऊपर उनका विशेष लक्ष्य रहता है । इसी कारण फ्रान्स में बहुत सा धन जमा है । किन्तु इटली में यह कोई भी गुण नहीं । तेल और शराब तैयार करने का सुभीता जैसा इटली को है, और इन दोनों रोजगारों में जैसा लाभ इटली को हो सकता है, वैसा सुभीता और मुनाफा अन्यत्र असम्भव है, यद्यपि इधर किसी का विशेष ध्यान नहीं है । आईन-अदालत की व्यवस्था बहुत खराब होने के कारण विदेशी लोग वहाँ कोई जायदाद खड़ी करने का साहस नहीं करते । स्थानीय लोगों में भी उद्यम और उत्साह का अभाव है । इटली के देहातों में जो शराब एक पेनी की एक बोतल विक्रती है उसी को साधारण प्रक्रियाभेद से फ़्रेंच लोग ऐसी अच्छी शराब बना लेते हैं कि वह पेरिस में चार फ्रेंक की एक बोतल तक के हिसाब से विक्र जाती है । जर्मन जाति के लोग खूब बली होते हैं । जर्मनी में चयरोग, हमेशा की कमजोरी आदि शारीरिक कुल-त्तण जर्मनों में बहुत कम देखने को मिलते हैं । किन्तु इटली के लोगों की दशा विल्कुल इसके विपरीत है । वहाँ के लोगों को अगर चिर-रोगी कहे तो अनुचित न होगा । इटली के हर एक प्रधान नगर में टाइफाइड टाइफस ज्वर या शीतला-रोग स्थायी भाव से बना रहता है । साल में ऐसा कोई समय नहीं होता जब राज्य के किसी-न-किसी स्थान में किसी सकामक रोग की प्रवृत्तता न होगी । मलेरिया और अनेक प्रकार के ज्वरो का तो कुछ कहना ही नहीं है । उनके सिवा तरह तरह के फण्ठ-रोग भी देख पड़ते हैं । इन सब कारणों

से बहुत से लोग शारीरिक स्वास्थ्य की उन्नति के लिए कभी कभी हलकी शैंपेन शराब पीते हैं । इटली में सहज में यह शराब बनाई जा सकती है । लेकिन आलस्य के पुतले इटलियनो ने उसके बनाने का काम जर्मनो को सौंप रक्खा है । जर्मन लोग अपने यहाँ शैम्पिन बनाकर इटलियनो के हाथ बेचते और अच्छा नफा उठाते हैं । यद्यपि यह एक मामूली रोजगार है, मगर इसी तरह से तिल तिल से ही ताल होता है । इंग्लेड अगर इसी तरह अपने लोहे और कोयले का असद्व्यवहार करके युद्ध-सज्जा आदि में लगा रहता तो आज उसकी कैसी दुर्दशा होती ? फ्रेञ्च लोग एक घड़ी के समय को भी व्यर्थ नहीं जाने देते, इसी से वे इतने धनी हैं । रुई, लोहे और कोयले से इंग्लेड जैसे धनी है वैसे ही इटली भी अन्न, शराब और तेल के रोजगार से अच्छा रुपया कमा सकती है । किन्तु इटली जी नहीं लगाती और इंग्लेड उन्नतिशील देश है । दोनों देशों की आर्थिक अवस्था ही इसका प्रमाण है । इंग्लेड में जाति से अलग गवर्नमेन्ट-नाम की किसी शक्ति का अस्तित्व कोई स्वीकार नहीं करता । किन्तु लैटिन जातियों में इसके विपरीत देखा जाता है । सब प्रजा राजशक्ति को अपने से अलग समझ कर हर घड़ी उसी के मुँह की ओर ताका करती है । वहाँ के लोग जैसे हर काम में गवर्नमेन्ट का मुँह जोहते हैं वैसे ही कोई गोलमाल होने पर उसका दोष गवर्नमेन्ट के मत्थे मढ़ने में भी वे एक ही हैं । यह बात हममें और उनमें ठीक एक सी है । विचार, शासन आदि के सम्बन्ध में इटली की अवस्था बहुत ही खराब है । किसी किसी नगर में जासूस-पुलिस के अलावा तीन श्रेणी की पुलिस है । उनका इतना अख्तियार है कि वे साधारण सन्देह होने पर किसी भी नगरनिवासी को कैद कर सकते हैं, और अन्त को कोई विशेष कारण दिखाये बिना, केवल सन्देह के ऊपर

ही, उसे घरवार रोजगार छोड़कर ५०० मील की दूरी पर भाग जाने के लिए लाचार कर सकते हैं। वहाँ का समाज ऐसा मुर्दा है कि ऐसी विकट क्षमता को कम करने की कुछ भी चेष्टा नहीं करता। म्यूनीसिपलिटि की अवस्था उससे अधिक सराव है। किसी नगर के भीतर जानेवाली माल से लदी गाड़ी की चुड़ी तो नहीं देनी पडती, लेकिन उसके साथ साथ एक चुड़ी का आदमी, अपनी सीमा तक, यह देखने जाता है कि वह गाड़ी सीधी चली जाती है, कहीं ठहर कर कुछ बेचती नहीं। उस आदमी का मेहनताना गाड़ीवाले को देना पडता है और इस बन्दोबस्त के लिए चुगीघर के पास गाड़ी को बहुत देर तक सड़ा रहना पडता है। इटली में समय की कदर बहुत कम है। इसी से वहाँ के लोगो में मुस्तैदी विलकुल नहीं है। म्यूनीसिपल-कमिश्नरो मे से अनेक लोग नियत समय के घटे डेढ घटे के वाद सभा मे उपस्थित हो हँसते हुए यह उज्र पेश करते नजर आते हैं कि “मुझे और जगह कुछ काम था”। वहाँ की म्यूनीसिपलिटियाँ काम करने मे भी बहुत शिथिल हैं। फ्लोरेन्स मे एक मामूली पुराना घर पाँच बरस से खाली पडा था, तीन बरस से उसकी मरम्मत हो रही है। शायद चार पाँच बरस से कम में वह बनकर तैयार न हो सकेगा। विचार-विभ्राट् तो वहाँ ऐसा भयानक है कि साधारणत दस पाँच साल मे भी मुकद्दमे का फैसला नहीं होता। हमारे यहाँ के सबजजों की श्रेणी के वहाँ के हाकिमों की सालाना तनखाह ५० पौण्ड से अधिक नहीं है। अपने से अधिक क्षमताशाली लोगों के विरुद्ध मुकद्दमे का फैसला करते समय वे बड़ी कठिनाई मे पड जाते हैं। ऐसी जगह आपस में फैसला हो जाने के लिए वे बड़ा यत्न करते हैं। मेरी देखी हुई बात है कि मुकद्दमा दायर होने पर जज ने फर्यादी के घर आकर विनीत-भाव से प्रार्थना की कि

“देखिए, थोड़ी सी तनख्वाह मिलती है । यही मेरी जीविका है । आप मुकद्दमा चलावेंगे तो न्याय के अनुसार मुझे आपको डिग्री देने ही पड़ेगी । पर उससे मेरा सर्वनाश हो जायगा । मुहाअलेह रोम में जाकर पार्लियामेंट के मेम्बर अमुक वैगिस्टर के द्वारा राज-मन्त्री के निकट मेरी बुराई करावेगा और उससे मेरी नौकरी जाती रहेगी” ।

इंग्लैंड को इसलिए लोग बदनाम करते हैं कि वहाँ धनी के लिए और आर्इन है और गरीबों के लिए और आर्इन है । लेकिन इटली के लिए अगर यह कहा जाय कि वहाँ किसी के लिए कोई आर्इन नहीं है तो कुछ बेजा न होगा । राज्य के आर्इन से फाँसी का दण्ड उठ जाने के कारण मनुष्य-हत्याओं की संख्या बढ़ गई है । सन् १५६१ में युक्त-इटली स्वाधीनता के मार्ग में उठकर खड़ी हुई । उस समय दो करोड़ से कुछ अधिक इटली के निवासियों में डेढ़ करोड़ से भी ऊपर आदमी विल्कुल निरक्षर थे । जब का मैं हाल लिख रहा हूँ उस समय फी सैकडे चवालीस आदमी ऐसे थे । इस समय वहाँ कानून के जोर से प्राइमरी शिक्षा प्रचलित हो गई है और वह सबको बिना फीस दी जाती है । म्यूनीसिपलटियाँ अपनी अपनी आमदनी के अनुरूप स्कूल रखने के लिए बाध्य हैं । सरकारी मंजरी के बिना कोई स्कूल खुल नहीं सकता । राज्य का तो यही नियम है, लेकिन इसका पालन करने में उतनी कड़ाई नहीं की जाती । राज्य में एक नया और सोलह पुराने विश्वविद्यालय, पन्द्रह शिल्प-विद्यालय और पाँच सरकारी संगीतशिक्षा-भवन हैं । राज्य के निवासियों की रुचि परिमार्जित नहीं जान पड़ती । केवल नेपल्स में ही अनेक भयानक अश्लील कार्यरूपाय नहीं देख पड़ते, रोम, फ्लोरेन्स आदि स्थानों में भी उस अश्लीलता का थोड़ा बहुत

आभास पाया जाता है । फ्लोरेन्स के प्रधान गिर्जे में दोपहर को, विदेशी दर्शकों को, बहुत ही अश्लील विकाज चित्र और पुस्तकें दिखलाई जाती हैं, पर जरा छिपे तौर से । रोमन-कैथलिक धर्म ही राज्य का प्रधान धर्म है । किन्तु दक्षिण-इटली में ग्रीक-चर्च की भी प्रधानता है । राज्य में धर्म-सम्बन्धी रात बहुत होती है । लाखों आदमी नित्य सहायता पाते हैं । अनेक प्राचीन मठों की आमदनी सरकार में जब्त कर ली गई है । मठधारी लोग उस आमदनी से कुकर्म करते थे । अब वही आमदनी शिक्षा-प्रचार के काम में खर्च होती है । भारत की तरह इटली भी कृषि-प्रधान देश है और किसानों की दशा भी शोचनीय है । राज्य में दारिद्र्य की भयानक छाया देर पड़ती है । इटली की लोक-संख्या साठेतीन करोड़ के लगभग है । किन्तु जिन प्रधान व्याधियों से इंग्लैण्ड में इस समय २०००० से अधिक आदमी नहीं मरते, उन्हीं व्याधियों से इटली में लाखों आदमी मर जाते हैं । इटली की लोक-संख्या, हमारे देश की तरह, बढ़ती जाती है और बहुत से लोग विदेशों में जाकर बसते हैं । राज्य की आर्थिक अवस्था अच्छी नहीं है । युक्त और स्वाधीन होकर इटली ने समझा था कि वह भू-मध्य-सागर में अपने को क्षमता के साथ स्थापित कर सकेगी और इस इरादे को पूरा करने के लिए बहुत सा धन खर्च करके उसने कई जगह जहाज भी बनवाये थे । लेकिन युद्ध की सामग्रियों में इधर ऐसी वैज्ञानिक उन्नति हुई कि उसके वे जहाज पुराने पश्चाद्ग की तरह किसी काम के नहीं रहे । इटली ने वर्तमान ढंग के जहाज भी बहुत से बनवाये हैं । उनकी संख्या २०० के लगभग होगी ।

इटली में अनेक प्रकार के अपव्ययो की भी कमी नहीं है । बहुत जगह ऐसा देखा जाता है कि कम तनखाह में एक आदमी का काम

पांच आदमी कर रहे हैं और लाखों रुपये ऐसी जगह खर्च हो रहे हैं जहाँ उस खर्च से रत्तो भर भी लाभ होने की आशा नहीं। लेकिन दूसरे काम में एक पैसे के लिए प्रजा का खून चूसा जा रहा है। टेक्स का भी बोझा प्रजा पर बहुत है। प्रजा और अधिक टेक्स देना नहीं चाहती और सेना तथा जमी जहाजों के बढ़ाने के लिए विशेष आमद भी है। इसका फल यह हुआ कि राज्य ऋणी होता चला जा रहा है। इतना ऋण हो गया है कि उसका सूर साल में दो करोड़ पाँच से अधिक देना पड़ता है। यह विस्तार में हमारे यहाँ के निजाम-राज्य के समान है। सालाना आमदनी डेढ़ करोड़ पाँच है। राज्य का ऋण ५७) करोड़ पाँच हो गया है। राजा अपने ही पास नमक का ठेका रखता है। यहाँ के सिक्के की कीमत फ्रान्स की ऐसी है। यहाँ के चाँदी के सिक्के का नाम है लिरा। सोना तो यहाँ देखने को ही नहीं मिलता, चाँदी भी बहुत कम है। पाँच लिरा का नोट सहज में नहीं मुनता। राज्य में केवल नोटों का ही चलन है। नोट छ बँकों के और छ तरह के चलते हैं। वे-आईनी और जाली नोट भी बेहद चलते हैं। जिस बँक को जितने के नोट निकालने का अधिकार है वह अगर उससे अधिक नोट निकाले तो वे नोट वे आईनी समझे जायेंगे। नोट ऐसे पुराने और मैले हैं कि उन्हें हाथ में लेने की जी नहीं चाहता। यहाँ के नीची श्रेणी के लोग निहायत आलसी, कुसस्कारपूर्ण और मूर्ख हैं। उच्च श्रेणी के धनी लोग अपने ही रंग में रहते हैं। केवल लोभी और सकीर्ण हृदय के मध्यवर्ती श्रेणी के लोगो के हाथ में ही सब कुछ है। वे पार्लियामेन्ट-आफिस आदि में अपने और अपनी बस्ती के खत्वों के लिए ही जान देते रहते हैं। सारे राज्य और देश के हित की ओर ताकने का भी अवसर उन्हें नहीं मिलता। अनेक बातों में इटली की

हमारी ही ऐसी दुर्दशा है । बहुत से पण्डितों का कहना है कि विगत गौरव की आलोचना में लगे रह कर वर्तमान पर ध्यान न देने से ही इटली की यह दशा हुई है । हममें भी ठीक यही दोष है । एक समय इटली की एक मूर्ति स्थापित करने का प्रस्ताव हुआ । उस अवसर में एक वृद्ध इटली-निवासी अंगरेज ने कहा था—

“ Italy should be represented with head turned round and looking over her shoulder ” अर्थात् इटली की सीधी मूर्ति न बना कर ऐसी मूर्ति बनानी चाहिए कि वह मुँह फेर कर पीछे देख रही हो । बात भी यही है कि सीजरो के रोम और कोलम्बस का जनेवा भूले बिना इटली की खैर नहीं है । वर्तमान राजा उम्बर्टो (Umberto) और उनकी स्त्री मागरिटा (Margherita) सबको प्यारे और प्रजावत्सल हैं । थोड़े दिन हुए, ऐसे राजा के जीवन पर भी किसी दुष्ट ने चोट की थी । पर वह चोट खाली गई । जो जाति सगीत के वारे में प्रसिद्ध होती है वह जाति शिथिल होने के लिए बाध्य हो जाती है । मुझे तो यह विश्वास है कि आलस्य का शिकार बने बिना टप्पेबाजी कभी नहीं आती । रेलस्टेशनों पर भोजन बेचनेवाले बालकगण परा—“ ने, वी—नो, सिनिओ—रे— ” (Pane, Vino, Signore!) अर्थात् रोटी और शराब, महाशय ! इन शब्दों को ऐसे मीठे स्वर में कहते हैं कि बार बार सुनने की इच्छा होती है । इसी प्रकार गली-कूचा में फेरीवाले लोग लय के साथ पुकार पुकार कर सौदा बेचते हैं । लन्दन के अग्निबस और रेल के छोकरे जैसी तेजी के साथ सन्नेप में स्थान आदि का नाम पुकारते हैं वैसे यहाँ नहीं है । इटली-राज्य में भी कान्स्क्रूप्शन की प्रथा प्रचलित है । सब मिलाकर २५ लाख आदमियों के नाम फौज में लिखे हैं । किन्तु असल में

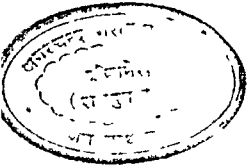
a native of India) travelling on the Continent to pass freely without let or hindrance, and to afford him every assistance and protection of which he may stand in need

Given at the Foreign Office, London, the 24th day of June, 1891

Salisbury

Signature of the Bearer

क्रिश्चियन-साण्ड (Christiansand) । सन् १८६१ के जून महीने में लन्दन से रेल पर सवार होकर हार्विच-बन्दर में पहुँचा और वहाँ से नार्वे जानेवाले विल्सन कम्पनी के जहाज पर सवार हुआ । जहाज आधी रात को छूटा । गर्मिया की श्रुति में यूरोप के समुद्र स्थिर तालाब की तरह बने रहते हैं, उनमें किसी प्रकार का उपद्रव नहीं होता । तीसरे दिन, दोपहर के समय, नार्वे के दक्षिण उपकूल में स्थित क्रिश्चियन-साण्ड नगर में पहुँचना हुआ । यहाँ पहले पहल फियोर्ड (Fjord) देखा । लेकिन इसमें एक नदी के आकर मिल जाने से अच्छा भाव नहीं पाया गया । मानचित्र (नक्शे) में स्पष्ट देखा पड़ता है कि नार्वे के उपकूल में अनेक फियोर्ड हैं । इनकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में अनेक भू-तत्त्व वेत्ता पण्डितों का मत है कि स्वर्णयुग (Glacial Epoch) के अन्त में जब बर्फ की राशि (Glacier) देश के भीतर से समुद्र की ओर चली तब पहाड़ों के किनारे इसी तरह कट कट कर सागर में गिर पड़े । देख भाँल कर ऐसा भी बतलाया गया है कि ऐसे बर्फ के ढेरों की चाल चौबीस घंटे में एक हाथ से भी कम हुआ करती है । इस हिसाब से दो-एक सौ कोस चल कर चार पाँच छ हजार फुट ऊँचे पहाड़ काट कर समुद्र का गढ़ा बनाने में न जाने कितना समय लगा होगा । बन्दर-गाह में प्रवेश करने के द्वार पर एक छोटा सा द्वीप बना है और उस



नार्वे ।



सपोर्ट (Passport) । एशिया आदि यूरोप के कई देशों में घूमनेवाले के पास पासपोर्ट का होना बहुत जरूरी है । जाने को तो चाहे किसी तरह कोई इन देशों के भीतर चला भी जाय, लेकिन

इन देशों से पासपोर्ट के बिना बाहर जाना सर्वथा असम्भव है । जिसका जिस बैंक से व्यवहार होता है उसे उस बैंक के द्वारा अपने सारे वृत्तान्त के साथ, फारेन-आफिस में, अर्जी देनी होती है । वहाँ से पासपोर्ट मिलने पर उसे, बैंक के द्वारा, जिस देश में जाना हो वहाँ के लन्दनस्थित राजदूत (Ambassador) से स्वीकृत (Visa) करा लेना पडता है । उसके बाद अन्य पासपोर्टवाले देश में प्रवेश करने के पहले किसी प्रधान नगर में उस देश के कन्सल (Consul) से फिर इसी तरह स्वीकृत कराने की जरूरत पडती है । पासपोर्ट की नकल नीचे दी जाती है ।

We, Robert Arthur Talbot Gascoyne Cecil, Marquess of Salisbury, Earl of Salisbury, Viscount Cranborne, Baron Cecil, a peer of the United Kingdom of Great Britain and Ireland, a member of Her Britannic Majesty's Most Honourable Privy Council, Knight of the Most Noble Order of the Garter, Her Majesty's Principal Secretary of State for Foreign Affairs, etc , etc , etc

Request and require in the Name of Her Majesty, all those whom it may concern to allow Mr ——(British Subject,

a native of India) travelling on the Continent to pass freely without let or hindrance, and to afford him every assistance and protection of which he may stand in need

Given at the Foreign Office, London, the 24th day of June, 1891

Salisbury

Signature of the Bearer

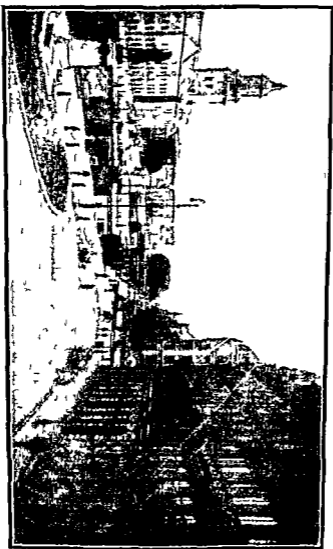
क्रिश्चियन-साण्ड (Christiansand) । सन् १८६१ के जून महीने में लन्दन से रेल पर सवार होकर हार्विच-बन्दर में पहुँचा और वहाँ से नार्वे जानेवाले विल्सन कम्पनी के जहाज पर सवार हुआ । जहाज आधी रात को छूटा । गर्मिया की श्रुति में यूरोप के समुद्र स्थिर तालाब की तरह बने रहते हैं, उनमें किसी प्रकार का उपद्रव नहीं होता । तीसरे दिन, दोपहर के समय, नार्वे के दक्षिण उपकूल में स्थित क्रिश्चियन-साण्ड नगर में पहुँचना हुआ । यहाँ पहले पहल फियोर्ड (Fjord) देखा । लेकिन इसमें एक नदी के आकर मिल जाने से अच्छा भाव नहीं पाया गया । मानचित्र (नक्शे) में स्पष्ट देखा पड़ता है कि नार्वे के उपकूल में अनेक फियोर्ड हैं । इनकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में अनेक भू-तत्त्व वेत्ता पण्डितों का मत है कि स्वर्णयुग (Glacial Epoch) के अन्त में जब बर्फ की राशि (Glacier) देश के भीतर से समुद्र की ओर चली तब पहाड़ों के कगारे इसी तरह कट कट कर सागर में गिर पड़े । देख भाल कर ऐसा भी बतलाया गया है कि ऐसे बर्फ के ढेरों की चाल चौबीस घंटे में एक हाथ से भी कम हुआ करती है । इस हिसाब से दो-एक सौ कोस चल कर चार पाँच छ हजार फुट ऊँचे पहाड़ काट कर समुद्र का गढ़ा बनाने में न-जाने कितना समय लगा होगा । बन्दर-गाह में प्रवेश करने के द्वार पर एक छोटा सा द्वीप बना है और उस

पर नगर की रक्षा के लिए एक क़िला बना हुआ है । लन्दन की भीड़भाड़ और कोलाहल से क्रिश्चियन-साण्ड में आकर शान्ति का आनन्द पाया । मालूम पडा जैसे ससार को छोड़कर किसी निर्जन स्थान में आ गया हूँ । इस देश की पुलिस और देहाती नर-नारियों की पोशाकें बहुत ही विचित्र हैं । मर्दों के पायजामे प्रायः गले तक के होते हैं । स्त्रियों के घाँघरे घुटनों से जरा नीचे तक के होते हैं । चाँदी के गहने खूब पहने जाते हैं । मर्द भी कुछ कुछ चाँदी के गहने पहनते हैं । यहाँ के लोग साधारणतः लम्बे, सबल और सुडौल शरीर के होते हैं । नगर के रास्ते बहुत सीधे और चौड़े हैं । यहाँ के घर लकड़ी के बने हुए हैं । प्रायः हर एक घर के दरवाजे के बाहर गमलों में फूलों के पेड़ यत्न और योग्यता के साथ सजाये हुए रक्खे हैं । यहाँ की और यहाँ के अन्यान्य म्यूनिसिपलिटीवाले शहरो की एक प्रथा बहुत अच्छी है । वह यह कि यहाँ शराब की दूकानें कम हैं । और जो हैं वे एक कम्पनी की हैं और आईन के अनुसार उन्हें फी सैकडा पाँच रुपये के हिसाब से मुनाफ़ा मिलता है । बाकी धचत उन्हें म्यूनिसिपलिटी को दे देनी पडती है ।

क्रिश्चियानिया (Christiana) । क्रिश्चियन-साण्ड से रात को जहाज पर सवार हुआ । जहाज सबेरे एक पहर दिन चढने पर यहाँ की राजधानी क्रिश्चियानिया में पहुँचा । उत्तरान्तरीप-यात्रा के पहले और वहाँ से लौट आकर कई दिनों तक यहाँ रहना हुआ । वृत्त आदि से शोभित और जुदे जुदे घेरे और उँचाईवाले टापुओं की कतारों से सुसज्जित बन्दरगाह के सामने के फियोर्ड-जलसाण्ड का दृश्य बहुत ही मनोहर है । नगर बहुत बडा नहीं है और उसमें देग्वने योग्य स्थान और चीजें भी अधिक नहीं हैं । किन्तु यह जगह साफ है । यहाँ की खाने की चीजें भी अनेक प्रकार की और स्वादिष्ट

हैं । यह बात यहीं पहले पहल देखी कि बारह वजे रात को भी अन्धकार नहीं, गोधूलि-बेला के समान प्रकाश का आभास बना रहता है । रात भर लोग सड़को पर चलते-फिरते रहते हैं । यहाँ का राजमहल एक ऊँची जगह पर, स्वच्छ और सुसज्जित बाग के भीतर, बना हुआ है । ड्यौढ़ो के सामने के चौड़े सहन में वर्तमान राजा के पितामह राजा जोहन (Earl Johan) की घोड़े पर चढ़ी हुई भारी पीतल की मूर्ति स्थापित है । इनका असल नाम था बार्नाडोर (Jean-Baptiste-Jules Barnadotte) । यह एक मामूली वकील के लडके थे और इन्होंने भी पहले वकालत की ही शिक्षा पाई थी । किन्तु इन्होंने वकालत नहीं की और जल-युद्ध-विभाग में मामूली सिपाही की हैसियत से भर्ती होगये । क्रमशः नेपोलियन की मातहत में सैन्याध्यक्ष होकर विशेष नामवरी के साथ इन्होंने काम किया । पीछे सम्राट् नेपोलियन से न पटने के कारण यह स्वीडन को चले आये । यहीं भावी नरपति युवराज की अचानक मृत्यु होजाने से स्वीडिश पार्लियामेन्ट ने, सन् १८१० में, इन्हे ही राज्य का उत्तराधिकारी चुनकर सारे यूरोप को अवाक् कर दिया । पूर्व-राजा की जिन्दगी में ही सारे राजकाज का बोझ इन्हों पर आपडा । इसके बाद, सन् १८१८ में, तेरहवें चार्ल्स के मरने पर, कार्ल जोहन नाम से यह सिंहासन पर बैठे । सन् १८१४ में, इन्हों की अधीनता में नार्वे राज्य स्वीडन राज्य से मिला दिया गया । किन्तु दोनो देशों के एक छत्र के अधीन होने पर भी दोनो जगह अलग अलग पार्लियामेंट थी और दोनो देश अपने अपने नियम अलग अलग बनाते और अलग अलग बजट पास करते थे । राजमहल के सामने से उत्तर राजा के नाम पर नगर की लम्बी चौड़ी प्रधान सड़क निकली है । नगर के किनारे विश्वविद्यालय और उसी के अन्तर्गत एक घर में

शट्टेनवर्ग—पृ० ४०२



हैं । यह बात यहीं पहले पहल देखी कि बारह बजे रात को भी अन्धकार नहीं, गोधूलि-बेला के समान प्रकाश का आभास बना रहता है । रात भर लोग सड़की पर चलते-फिरते रहते हैं । यहाँ का राजमहल एक ऊँची जगह पर, स्वच्छ और सुसज्जित बाग़ के भीतर, बना हुआ है । ड्यौढी के सामने के चौड़े सहन में वर्तमान राजा के पितामह राजा जोहन (Earl Johan) की घाटे पर चढ़ी हुई भारी पीतल की मूर्ति स्थापित है । इनका असल नाम था बार्नाडोर (Jean-Baptiste-Jules Barnadotte) । यह एक मामूली वकील के लडके थे और इन्होंने भी पहले वकालत की ही शिक्षा पाई थी । किन्तु इन्होंने वकालत नहीं की और जल-युद्ध-विभाग में मामूली सिपाही की हैसियत से भर्ती होगये । क्रमशः नेपोलियन की मातहत में सैन्याध्यक्ष होकर विशेष नामवरी के साथ इन्होंने काम किया । पीछे सम्राट् नेपोलियन से न पटने के कारण यह स्वीडन को चले आये । यहीं भावी नरपति युवराज की अचानक मृत्यु होजाने से स्वीडिश पार्लियामेन्ट ने, सन् १८१० में, इन्हे ही राज्य का उत्तराधिकारी चुनकर सारे यूरोप को अवाक् कर दिया । पूर्व-राजा की जिन्दगी में ही सारे राजकाज का बोझ इन्हीं पर आपडा । इसके बाद, सन् १८१८ में, तेरहवें चार्ल्स के मरने पर, कार्ल जोहन नाम से यह सिंहासन पर बैठे । सन् १८१४ में, इन्हीं की अधीनता में नार्वे राज्य स्वीडन राज्य से मिला दिया गया । किन्तु दोनो देशों के एक छत्र के अधीन होने पर भी दोनो जगह अलग अलग पार्लियामेन्ट थी और दोनो देश अपने अपने नियम अलग अलग बनाते और अलग अलग बजट पास करते थे । राजमहल के सामने से उक्त राजा के नाम पर नगर की लम्बी चौड़ी प्रधान सड़क निकली है । इसी के किनारे विश्वविद्यालय और उसी के अन्तर्गत एक घर में

हजार वर्ष के लगभग की पुरानी एक वाइकिंग-नाव (Vikings Galley) रक्खी है । नार्वे-राज्य की पुरातत्व-सभा के सुयोग्य सभापति पण्डित निकोलसन (Nicolaysen) महाशय की देखरेख में, सन् १८८० में, गकस्टॉड (Gokstad) नामक स्थान के निकट जमीन खोद कर नीचे से यह नाव निकाली गई है । जोड़ तोड़ लगाकर नाव को ठीक पहली हालत में खड़ा कर दिया है । ऐसी नावों पर बैठकर यहाँ के लुटेरे और योद्धा लोग इंग्लैंड आदि देशों में जाकर अनेक प्रकार के उपद्रव करते थे । राजा कैन्यूट (Canute) ने ऐसी ही नावों से लन्दन पर आक्रमण करके अपना अधिकार जमाया था । यह भी बात प्रमाणित हो चुकी है कि कोलम्बस से बहुत दिन पहले इसी तरह की नावों पर नार्वे के उपकूल में रहनेवाले लुण्ठनलोलुप वाइकिंग लोग प्रतिकूल हवा के कारण अटलान्टिक समुद्र के पार अमेरिका तक जा पहुँचे थे । यह नाव २० हाथ लंबी और १० हाथ चौड़ी है । इसपर १०-१५ आदमी अच्छी तरह बैठ सकते हैं । इस नाव पर, जीर्ण अवस्था में, ढाल-तरवार आदि हथियार, खाने-पीने के बर्तन और एक आदमी का ढाँचा मिला था । सब सामान उसी तरह इस नाव पर सजाया हुआ रक्खा है । और जगह एक स्थान में एक ३० फुट की आधुनिक नाव रक्खी हुई है । इस पर बैठ कर दो नार्वेजियन नाविक (Captain Gorgensen and Mr Nilsen) सन् १८८६ की १२ वीं सितम्बर को लन्दन नगर से चले थे और अनेक प्रकार की विपत्तियों का सामना करते हुए दो बरस में आस्ट्रेलिया के आडेलैड (Adelaide) नगर में पहुँचे थे । उन दोनों में से एक नाविक (Mr Nilsen) खुद खड़ा हुआ दर्शकों को नाव की सब बातें समझा रहा था ।

नगर के भीतर एक पहाड़ के ऊपर सुन्दर बाग और जल-कल का कारखाना है । यहाँ से सार नगर और उपनगरों का दृश्य मनोहर देख पड़ता है । खास कर पूर्व ओर पहाड़ से मिली हुई ऊँची नीची वस्तियाँ और बागों का दृश्य बहुत ही सुन्दर मालूम पड़ता है, क्वरिस्तान के सामन के ऊँचे भूमिखण्ड पर स्थानीय यहूदियों की कृतज्ञता का निदर्शन-स्वरूप नार्वे के प्रधान कवि (Henrik Wergeland, died 1815) की लौहमय अर्द्धमूर्ति (Bust) स्थापित है । यहूदी इस देश में रहने के लिए राजा की आज्ञा पावे, इसलिए इन महामनस्वी कविवर ने बड़ा परिश्रम किया और उसमें सफलता भी प्राप्त की । यहाँ का पार्लियामेन्ट-भवन, गिर्जा (Johans Kuke), न्यूजियम, पुराना गढ़ (Akershus) और आस्कर-हाल (Oscars Hall) आदि देखने की चीजें हैं । लोक-संख्या ढाई लाख के लगभग है ।

ट्राञ्जेम यात्रा । दोपहर को रेल पर ट्राञ्जेम की यात्रा की । रेल के किनारे हर एक गाँव में देखा कि प्रायः हर एक गृहस्थ के घर में छत पर तरह तरह के वृक्ष लग देख पड़ें । ३५० मील जाने में २० घण्टे से अधिक समय लगा । रास्ते के प्राकृतिक दृश्य, जङ्गल, पहाड़, झरने, नदी, सफेद सेवार आदि सब चीजें एक नयन की देख पड़ी । मियोसेन (Mjosen) भील के किनारे की शोभा बहुत ही अच्छी लगी । भील के किनारे छोटे छोटे गाँव बसे हैं । जल के ऊपर पाइन की लकड़ी लादे अनक स्टीमर और नावे चल रही हैं । यह भील ३० कोस लम्बी और ६ कोस चौड़ी है । सन् १७५५ की पहली नवम्बर की प्रलय रूप भूमिकम्प के द्वारा जब पुर्तगाल की राजधानी लिसबन नगर का विध्वंस हुआ था उसी समय दम भर के लिए इस भील का पानी २० फुट ऊँचा हो गया था ।

ट्राब्जेम (Tromsø) । प्रातःकाल ट्राब्जेम में पहुँचने पर अनेक दृश्य देखे । उसी दिन रात को ६ बजे के समय उत्तर-महासमुद्र की यात्रा के लिए जहाज पर सवार हुआ । ट्राब्जेम के निकटवर्ती नीड (Nid) नदी के दोनो भरणो को लौटते समय देखा । एक १०० फुट ऊँचा और ४५० फुट चौड़ा है । दूसरा ८० फुट ऊँचा और १२२ फुट चौड़ा है । नीड नदी जहाँ समुद्र से मिली है वहाँ किनारे पर बसा हुआ ट्राब्जेम नगर नार्वे की पुरानी राजधानी है । आईन के अनुसार, सन् १८१४ से, वर्तमान राजो का भाँ यहाँ अभिषेक होता है । यहाँ का प्राचीन गिर्जा देखने लायक है । सुप्रसिद्ध धर्मवीर राजा ओलफ-क्युरे (Olaf Kyire) ने सन् ११६२ में इस गिर्जे की नींव डाली थी । डेढ सौ बरस के बाद यह गिर्जा बन कर तैयार हुआ । इस गिर्जे के एक हिस्से में 'ओलफ-कूप' और राज्याभिषेक का स्थान है । जगत्प्रसिद्ध डिनामा के कारीगर थारवाल्डसन (Thorwaldsen) की बनाई एक ईसा की मूर्ति की नकल यहाँ स्थापित है । असल मूर्ति कोपनहेगेन के थारवाल्डसन-न्यूजियम में है । ट्राब्जेम के सब घर दोमजिले हैं । यहाँ लकड़ी के घर बनाना नियम-विरुद्ध है । सब घर ईंट या पत्थर का होना चाहिए । सन् १८४१ में आग लगने के बाद यह नियम कर दिया गया है । सर्दियों में जमीन से बर्फ उठाने की एक प्रकार की मशीन यहीं पहले पहल देखी । हमारे देश के किसी किसी गाँव में जैसे साल के बाद मेला हुआ करता है वैसे ही साल के अन्त में एक सप्ताह के लिए ट्राब्जेम में भी एक छोटा सा मेला लगा करता है । साल भर के लिए कपडा वगैरह खरीदने को गाँवों के बहुत से लोग इस मेले में आया करते हैं । इस मेले से बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त हुआ ।

महातीर्थ-यात्रा ।

उत्तरान्तरीप (North Cape) World-promontory—
 Ultima Thule—"The Northern Sun, creeping at
 midnight at the distance of five diameters along the
 horizon, and the immeasurable Ocean in apparent
 contact with the Skies, form the grand outlines in the
 sublime picture presented to the astonished spectator
 The incessant cares and pursuits of anxious mortals
 are recollected as a dream, the various forms and
 energies of animated nature are forgotten, the earth is
 contemplated only in its elements, and as constituting
 a part of the solar system" *Travels to the North
 Cape Acerbi*

"While all the nations of the Earth are sleeping, you
 here stand in the presence of that great power which will
 wake them all" —*Carlyle*

"All the charms of Norway are outweighed by the
 strange weird beauty and grandeur of the neighbourhood of
 the North Cape I know of nothing that comes within the
 range of tourist experiences that will make a more lasting
 impression on the memory than a day or two in the region of
 the midnight sun

Each traveller has some new poetic thought to register
 For myself the midnight sun has a solemnity which nothing
 else in Nature has Midnight is solemn in the darkness, it
 is a hundredfold more solemn in the glare of sunlight, rather
 than ever is seen under tropical skies This is the "silence
 of death," not the hum of a bird, not the buzz of an insect,
 not the distant noise of a human being Silence palpable
 You do not feel drowsy, though it is midnight, you feel a
 strange fear creep over you as if in a nightmare, and dare

not speak, you think what if it should be time that the world is in its last sleep, and you are the last living ones, yourselves on the verge of the Eternal Ocean

To some standing on the highest part of the plateau a thousand feet above the sea, and looking away to that great unknown Arctic Ocean, it has seemed as if they had come to the end of the earth, that they were gazing upon the confines of the eternal regions, that they saw in the distance the outlines of the land of which it is said "there is no night there" —A Traveller

पहले दिन, सन् १८६१ की १ ली जूलाई को, रात के समय, ८ बजे के बाद, दिव्य सूर्य के प्रकाश में, नार्वेजियन जहाज न्योलफक्यूरे, पर चढ़ कर ट्राञ्जेम से खाना हुआ । दूसरे दिन, सवेरे, नामसस-फियोर्ड (Namsos Fjord) और छोटा सा नामसस नगर देख पडा । यहा जहाज ठहरा । चार बजे के समय टारघाटन (Torghatten) द्वीप का ८०० फुट ऊँचा पहाड़ और उसके अन्तर्गत ३०० फुट लम्बा और ६२ से २४६ फुट तक ऊँचा स्वाभाविक टनेल देखने गये । इस भारी छिद्र की उत्पत्ति के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की अस्वाभाविक बातें कही जाती हैं । किन्तु वैज्ञानिक लोग इस बारे में अभी तक कुछ निश्चय नहीं कर सके । इस छिद्र के भीतर से सामने के समुद्रखण्ड और द्वीप आदि का दृश्य बहुत ही सुन्दर देख पडता है । एक विद्वान् यात्री इस विषय में लिखता है—“The view of the sea with its countless islands and rocks seen from this gigantic telescope is indescribably beautiful and impressive”

ऊँचे पर चढ़ने उतरने के कारण थक कर साढ़े छ बजे जहाज की ओर लौटा । जाते आते समय पास के गाँवों के लडके लडकी आकर दूध और लेमोनेड बेच गये थे । उससे बहुत कुछ आराम मिला । एक

घटे के बाद ३०० फुट ऊँचे सात बहनों के पहाड़ होकर आधी रात को आर्कटिक-केन्द्र (Arctic Circle) में उतरा। इस समय यहाँ सूर्य अच्छी तरह, अर्द्धस्तिमितभाव से, देख पड़े। किन्तु वह सूर्यचिम्ब का प्रतिफलित (Refracted) दृश्यमात्र था। इस जगह समुद्रगर्भ से ३,७५० फुट ऊँचा एक पहाड़ ऊपर को निकला है। दूर से ठीक क्लोकधारी सवार की तरह जान पड़ता है, इसी से उसका नाम है अश्वारोही पहाड़ (Hestmandso or Horseman Mountain like a cloaked horsoman)। इस स्थान के बाद उपकूल का भोम सोन्दर्य (Savage grandeur) विशेष रूप से चित्त को अपनी ओर खींचनेवाला है। तीसरे दिन, सबेरे, लफोडेन (Loffoden) द्वीपपुञ्ज की तरफ गया और देखभाल कर लौट आया। अत्यन्त विचित्र दृश्य देखने को मिला। उसके बाद हेनिग्सवार (Henningsvoer) मिला। यह कठमछली पकड़ने का एक प्रधान श्रद्धा है। वसन्त-ऋतु में यहाँ बीस हजार से ऊपर धीवर जमा हुआ करते हैं। सबको सरकारी देख-रेख में काम करना पड़ता है। चार बजे के समय अत्यन्त मनोहर “राफ्ट सुण्ड” अर्थात् तग जल-पथ के दोनो ओर सड़ा पहाड़ देख पड़ा। साढे ग्यारह बजे रात को बाहर समुद्र में छोटी छोटी तिमि-नामक मछलियों की क्रीडा देखने को मिली। आज ठीक आधी रात को उज्ज्वल सूर्य का दृश्य बहुत ही मनोहर देख पड़ा। कप्तान ने एक घटा पहले ही से जहाज को बाहर समुद्र में लाकर सड़ा कर दिया था। सब लोग सूर्य की ओर एक टक ताक रहे थे। सूर्यदेव उत्तर-पश्चिम से क्रमशः उत्तर की ओर चले। ठीक १२ बजे जहाज पर तोप दागी गई। उस समय सूर्य ठीक उत्तर में थे। उसके बाद क्रमशः उत्तर पूर्व की ओर जाकर वह ऊपर चढ़ने लगे। हमारे देश में,

सर्दियों में, साढ़े नौ या दस बजे सूर्य जहाँ पर रहते हैं, यहाँ ठीक १२ बजे उतनी ही उँचाई पर देख पड़ते हैं। तोप दगते ही कप्तान ने सब जातियों को झण्डे उड़ाये। सबके ऊपर अमेरिकन झण्डा था। कारण आज इस समय ४ थी जूलाई शुरू हुई थी। इसी दिन अमेरिका में स्वाधीनता की घोषणा हुई थी। जो यात्री अमेरिकन थे वे टोपी उतार कर हुर्रै-ध्वनि करते हुए कप्तान को, उसकी इस समझदारी के लिए, धन्यवाद देने लगे। रात को किसी को नींद नहीं पड़ी। इस जहाज में महातीर्थ के यात्री ६५ आदमी थे। स्त्री-पुरुष और बालक-बालिका मिलाकर सब ग्यारह देशों—इंग्लैंड, फ्रांस, बेलजियम, हॉलैंड, डेनमार्क, नार्वे-स्वीडन, जर्मनी, आस्ट्रेलिया, अमेरिका और भारतवर्ष—के आदमी थे। मेरे सिवा सब गैराग थे। अमेरिकन सबसे अधिक थे। अमेरिकन लोगों को पृथ्वी-पर्यटन का बड़ा शौक होता है। दो स्त्रियाँ भारत में घूम आई थीं और मर्द आगामी जाड़े में जानेवाले थे। यात्रियों में चार-पाँच अमेरिकन पृथ्वी की प्रदक्षिणा कर आये थे, अब अन्त को नार्थ-पोल की यात्रा करके अपने देश को जानेवाले थे। अमेरिकन स्त्री-पुरुष सदा मेरे साथ भारत के बारे में बातचीत करना पसन्द करते थे। एक आस्ट्रेलिया-निवासी आयरिश अमेरिकनों के आगे भारत-निवासी प्रजागण की झूठी निन्दा किया करता था। वे लोग उसकी इस बात से चिढ़ कर मुझे उसके पास ले गये और मुझसे उसकी झूठी शिकायतों का प्रतिवाद करने के लिए अनुरोध करने लगे। मुझसे बातचीत होने के उपरान्त वह आयरिश चुप हो रहा और शायद सदा के लिए अपनी यह बुरी आदत छोड़ दी होगी।

आधी रात का सूर्यदर्शन ।

स्थान	प्रथम दर्शन			शेष दर्शन		
	ऊपरी भाग	मध्यभाग	सम्पूर्ण	सम्पूर्ण	मध्यभाग	ऊपरी भाग
उत्तरान्तरीप	११ मई	१२ मई	१३ मई	३० जूलाई	३१ जूलाई	१ अगस्त
हामरफेस्ट	१३ मई	१४ मई	१५ मई	२७ जूलाई	२८ जूलाई	२९ जूलाई
बादसो	१५ मई	१६ मई	१७ मई	२६ जूलाई	२७ जूलाई	२८ जूलाई
ट्राम्जो	१८ मई	१९ मई	२० मई	२२ जूलाई	२४ जूलाई	२५ जूलाई
घोडे	३० मई	१ जून	३ जून	८ जूलाई	१० जूलाई	१५ जूलाई

उत्तरान्तरीप में ११ मई से १ अगस्त तक बराबर दिन ही बना रहता है । हम लोगों को पूरे छ दिन तक दिन-रात सूर्य का ही प्रकाश देखने को मिला ।

चौथे दिन सवेरे ट्राम्जो (Thomsø) पहुँच कर, देश के भीतर सदा बर्फ से ढके बार्च-वृक्ष-पूर्ण पहाडी रास्ते से, घोडे पर चढ़ कर, ट्राम्सडाल (Thomsdal) गाँव में लाप लोगों (Lopps) का अड्डा देखने को गया । लाप लोग हमारे देश के अरबों वनजारों की तरह झुण्ड बना कर घूमते रहते हैं । लाप लोगों के भोपडे, बल्ला-मृगों के झुंड, कुत्ते, मावा के गले में लटक रही भौली में पटा हुआ

बच्चा इत्यादि बड़ी विचित्र घाते देखने को मिलीं । लाप लोग नार्व-स्वीडन और रशिया उत्तरांश में रहते हैं, इसी लिए यूरोप के इस प्रदेश को लाप-लैंड कहते हैं । लाप लोग संख्या में ३०,००० से अधिक न होंगे । ये मंगोलियन जाति के हैं । ये नाटे कद के हृष्ट पुष्ट, बलिष्ठ और विकट सूरत के होते हैं । ये अपने भोपडे (गाम्) पत्थर के ढुङ्गडो, घासो और बार्च-वृक्ष के षकलों से घनाते हैं । घुषाँ निकलने के लिए चोटी पर एक गोल छेद बना देते हैं । इनके भोपडे में हर घडी आग सुलगा करती है और काफी पीने के गर्म जल तैयार रहता है । इसी चूल्हे (अरन) के पास सब परिवार लेटा रहता है । एक किनारे आने-जानेवाले के लिए इज्जत का आसन "बोयासो" पडा रहता है । लाप लोग रोएँदार चमडे के तरह तरह के जूते (स्काल्को, मागर, स्कालय आदि), मृग-दुग्ध की सीर और सोग के चमचे आदि बेंचने के लिए समुद्र-तट पर लाते हैं । गर्मिया की ऋतु भर समुद्र-तट पर रहकर ये लोग सर्दियों में अपने मुल्क के भीतर चले जाते हैं । बल्गा-मृग खूब बडे बडे होते हैं । उनके सींग मखमल की तरह कोमल रोम-युक्त होते हैं । चलते समय उनके पैरों के घुटनेो मे एक प्रकार की चटचटाहट होती है । सप्ताह में केवल दो बार मादा दुही जाती है । दूध खूब घना होता है । ये मृग लाप लोगो को वैसे ही प्यारे होते हैं जैसे भारतनिवासियो को गऊ । इन मृगों से ही उन्हे खाने-पीने और पहनने को मिलता है । येही उनकी जीविका हैं । पहले लाप लोग इन मृगों का शिकार करते थे । लेकिन अब पालने लगे हैं और इस प्रकार उन्होंने इन मृगों को अपनी स्थायी सम्पत्ति बना लिया है । इस तरफ होने-वाला सफ़ेद सेवार ही इन मृगों का मुख्य आहार है । ये पैरों से ४ । ५ फुट बर्फ़ छोद कर इस सेवार को बाहर निकालते और खाते

हैं । इसके सिवा उन्हें वृत्ति नहीं होता । भारत की उत्तर-पूर्व सीमा पर रहनेवाले असभ्य नागा लोगो की तरह लाप लोग भी चिराग नहीं जलाते । भाग जला कर ही दीपक का काम निकाल लेते हैं । ट्राम्जो नगर से फोटोप्राफर लोग मेरे साथ गये थे, उन्होंने लाप लोगो के भोपडों के सामने हम लोगो की तसवीर उतारी । पृथ्वी को अन्यान्य असभ्य जातियों की तरह तसवीर उतरवाने में ये लोग भी राजी नहीं होते । बडो मुश्किल से रुपया देकर एक आदमी को एक मृग लेकर अपने साथ खडे होने के लिए हम लोग राजी कर सके ।

लाप लोगो से सबने कुछ-न-कुछ खरीदा । दोपहर तक घूम कर समुद्र-तट को लौटे । उसके बाद बोट पर चढकर ट्राम्जो नगर देखने गये । यह टापू के ऊपर बसा हुआ है । यहाँ ७,००० के लगभग लोग रहते हैं । यहाँ एक टाउनहाल, रोमकैथलिक मिर्जा और म्यूजियम है । बहुत से जहाज यहाँ से तैयार होकर उत्तर-समुद्र में तिमि, सोल आदि मछलियों को पकडने के लिए खाना होते हैं । जनवरी के महीने यहाँ का ताप-मान २३ डिग्री फार्नेहित तक उतर आता है । शाम के छ वजे खाना होकर दस वजे के समय स्कारन (Skarlan) पहुँचे । वहाँ डोगी पर चढ कर तिमि-तैल का कारखाना और चार मरे हुए तिमि-मत्स्य देखने गये । पाँचव दिन, सबेरे, हामरफेस्ट (Hammerfest) में पहुँचे । पृथ्वी के उत्तर-सीमान्त-प्रदेश का यही अन्तिम नगर है । इसके बाद और शहर नहीं है । इसके आगे उत्तर में पन्द्रह कोस पर केवल एक किला बना हुआ है । उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में यहाँ केवल ७७ आदमी रहते थे और कुछ दिन पहले यहाँ पर एक साधारण गाँव था । अब न्यूनाधिक ३००० आदमी यहाँ रहते हैं । नगर में काठ-

बच्चा इत्यादि बडो विचित्र घाते देखने को मिलीं । लाप लोग नार्ब-स्वीडन और रशिया उत्तराश मे रहते हैं, इसी लिए यूरोप के इस प्रदेश को लाप-लैंड कहते हैं । लाप लोग सख्या में ३०,००० से अधिक न होंगे । ये मगोलियन जाति के हैं । ये नाटे कद के हृष्ट-पुष्ट, बलिष्ठ और विकृत सूरत के होते हैं । ये अपने भोपडे (गाम्) पत्थर के टुकडो, घासो और बार्च-वृक्ष के बफलों से घनाते हैं । धुधों निकलने के लिए चोटी पर एक गोल छेद बना देते हैं । इनके भोपडो में हर घडी आग सुलगा करती है और काफी पीने के गर्म जल तैयार रहता है । इसी चूल्हे (अरन) के पास सब परिवार लेटा रहता है । एक किनारे आने-जानेवाले के लिए इज्जत का आसन "बोयासो" पडा रहता है । लाप लोग रोएँदार चमडे के तरह तरह के जूते (स्काल्को, मागर, स्कालय आदि), मृग-दुग्ध की खीर और साँग के चमचे आदि बेंचने के लिए समुद्र-तट पर लाते हैं । गर्मिया की ऋतु भर समुद्र-तट पर रहकर ये लोग सर्दियों में अपने मुल्क के भीतर चले जाते हैं । बल्गा-मृग खूब बडे बडे होते हैं । उनके साँग भखमल की तरह कोमल रोम-युक्त होते हैं । चलते समय उनके पैरों के घुटनो में एक प्रकार की चटचटाहट होती है । सप्ताह में केवल दो बार मादा दुही जाती है । दूध खूब घना होता है । ये मृग लाप लोगों को वैसे ही प्यारे होते हैं जैसे भारतनिवासियों को गऊ । इन मृगों से ही उन्हें खाने-पीने और पहनने को मिलता है । येही उनकी जीविका हैं । पहले लाप लोग इन मृगों का शिकार करते थे । लेकिन अब पालने लगे हैं और इस प्रकार उन्होंने इन मृगों को अपनी स्थायी सम्पत्ति बना लिया है । इस तरफ होने-वाला सफेद सेवार ही इन मृगों का मुख्य आहार है । ये पैरों से ४ । ५ फुट बर्फ खोद कर इस सेवार को बाहर निकालते और खाते

हैं । इसके सिवा उन्हें वृत्ति नहीं होती । भारत की उत्तर-पूर्व सीमा पर रहनवाले असभ्य नागा लोगों की तरह लाप लोग भी चिराग नहीं जलाते । भाग जला कर ही दीपक का काम निकाल लेते हैं । ट्राम्जो नगर से फोटोग्राफर लोग मेरे साथ गये थे, उन्होंने लाप लोगों के भोपडों के सामने हम लोगों की तसवीर उतारी । पृथ्वी की अन्यान्य असभ्य जातियों की तरह तसवीर उतरवाने में ये लोग भी राजी नहीं होते । बड़ी मुश्किल से रुपया देकर एक आदमी को एक मृग लेकर अपने साथ खड़े होने के लिए हम लोग राजी कर सके ।

लाप लोगों से सबने कुछ-न-कुछ खरीदा । दोपहर तक घूम कर समुद्र-तट को लौटे । उसके बाद बोट पर चढ़कर ट्राम्जो नगर देखने गये । यह टापू के ऊपर बसा हुआ है । यहाँ ७,००० के लगभग लोग रहते हैं । यहाँ एक टाउनहाल, रोमकैथलिक गिर्जा और म्यूजियम है । बहुत से जहाज यहाँ से तैयार होकर उत्तर-समुद्र में तिमि, सोल आदि मछलियों को पकड़ने के लिए रवाना होते हैं । जनवरी के महीने यहाँ का ताप-मान २३ डिग्री फार्नेहिट तक उतर आता है । शाम के छ बजे रवाना होकर दस बजे के समय स्कारन (Skarran) पहुँचे । वहाँ डोगी पर चढ़ कर तिमि-तैल का कारखाना और चार मरे हुए तिमि-मत्स्य देखने गये । पाँचवें दिन, सवेरे, हामरफेस्ट (Hammerfest) में पहुँचे । पृथ्वी के उत्तर-सीमान्त-प्रदेश का यही अन्तिम नगर है । इसके बाद और शहर नहीं है । इसके आगे उत्तर में पन्द्रह कोस पर केवल एक क़िला बना हुआ है । उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में यहाँ केवल ७७ आदमी रहते थे और कुछ दिन पहले यहाँ पर एक साधारण गाँव था । अब न्यूनाधिक ३००० आदमी यहाँ रहते हैं । नगर में काड-

लीवर-आयल इतना तैयार होता है कि सड़को और गलियों में सब जगह उसी की तीव्र गन्ध भरी रहती है। सन् १८२३ में, सर एडवर्ड साविन ने यहाँ अपनी प्रसिद्ध पेण्डुलम-प्रक्रिया करके दिखाई थी। नगर के किनारे मेरिडियन-स्तम्भ (Meridian Column) देखने गया। स्तम्भ के ऊपर एक भूगोलक है। स्तम्भ के एक ओर लैटिन में और दूसरी ओर नार्वेजियन-भाषा में एक एक लिपि है। लैटिन भाषा की ओर लिखा है— (Terminus Septentrionalis Arcus Meridian 25 20 quem In de ab Oceano Arctico per Norvegiam Sueciam et Rosseam gussu et auspicio et auspicio Reges Augustissimi Ascar I et Imperatorum Augustissimos Alexandri I Annis MDCCXXVI ad MDCCCLII Continuo labore emensisium trium gentium Latitudo 70. 40'. II" 3" E Det Nordendliche Ende punct of en meridiene bue paa 25 20 fra det Nordlige Ocean til Donan Floden igjennem Norge, Sverige Og Rusland efter Foranstaltning of aus I ved uafbrudt Arbende fra 1816 til 1852 udmaalt af de tre Nationer geometrer Brede 70 40 II 3" m

अर्थात् नार्वे-स्वीडन और रशिया के ज्यामितिक पण्डितों ने एकत्र होकर नार्वे के राजा प्रथम आस्कार और रशिया के देनो सम्राटों— प्रथम अलोकजण्डर और प्रथम निकोलस के राज्यकाल में, उनकी अनुमति के अनुसार, सन् १८१६ से १८५२ तक लगातार परिश्रम करके, आर्कटिक महासागर से डान्यूव नदी के मुहाने तक माप की और मेरिडियन निर्धारित किया है। एक वजे के समय यहाँ से खाना होकर प्रायः दस लाख पक्षियों से पूर्ण पच्ची-पहाड के पास पहुँचे।

यहाँ पर जहाज रोक कर तोप की आवाज कर-के पत्ती उढाये गये । शाम के सात बजे उत्तरान्तरीप मे पहुँचना हुआ । द्वारका जाने के रास्ते में, द्वारकापुरी मे पहुँचने के एक घटा पहले दूर ही से मन्दिर की चूडा देखकर यात्री लोग “द्वारकानाथ की जय”, “मीरा बाई की जय”, “पीपा भगत की जय” कहकर आनन्द प्रकट करने लगे थे और उनकी इस भक्ति और आनन्द को देख कर मेरे भी आँसू बह चले थे । आज यहाँ भी छ बजे के कुछ पहले ही दूर से ‘केप’ को देखकर जय यात्रीगण ‘केप, केप,’ चिल्लाने लगे तब मुझसे भी उनके इस महान् आनन्द में शरीक हुए बिना नहीं रहा गया । मैंने भी सबके साथ जहाज के ऊपर जाकर एक बार उत्तर-केन्द्र की अनन्तता की ओर देख कर अन्तरीप मे स्थित समुद्र के भीतर से ऊपर उठे हुए पहाड को देखा । हृदय भर आया और मैं एकान्त केबिन में जाकर सब रोया और कहने लगा—“हे नाथ ! अब यह आनन्द छोटे से इस हृदय में नहीं समाता । इस नराधम पर आपने ऐसी करुणा दिखाई । कहाँ भारत और कहाँ चिरसूर्य शोभित अनन्त कालसागर के द्वार-रूप इस उत्तर-केन्द्र के सामने पहुँचना । यह सब आपही की कृपा है । दो महीने पहले यहाँ तक आने का खयाल भी मुझे न था । एकाएक आपने मुझे यहाँ पहुँचा दिया । आपकी दया और आपकी कीर्ति धन्य है ।” इसके बाद ऊपर आकर देखा, ‘केप’ क्रमशः निकट आता जाता है । इस समय लाङ्गफेलो की एक कविता मुझे याद आ गई :

“ And then uprose before me,
 Upon the water's edge
 The huge and haggard shape
 Of that unknown North Cape
 Whose form is like wedge ”—Longfellow

सामने जाकर जहाज लगा । उस समय वहाँ घोर जाड़ा था । अधिक बोभे के खयाल से अधिक गर्म कपड़े में लाया नहीं था । कप्तान ने अनुग्रह करके एक गर्म कपड़ा मुझे दिया । अब यह चिन्ता हुई कि हजार फुट खड़ी बर्फ की चढाई में कैसे चढूंगा । रात को १० बजे के समय दयामय भगवान् का नाम लेकर और लोगों के साथ बोट पर चढा । जिनको वहाँ जाने की हिम्मत नहीं हुई, उन्होंने बहुत कुछ मना किया, किन्तु उनकी सुनता कौन ? मुझे तो जैसे कोई पीछे से धक्का देकर उसी ओर लिये जा रहा था । दस औरते और इकतीस मर्द चले । एक डिनामा का और एक फ्रान्स का आदमी कई बार फिसल कर गिर पडने के कारण बहुत दूर तक पशुओं की तरह हाथों और पैरों से चले । एक मोटी सी अमेरिकन स्त्री बहुत ही दिक हुई, तब भी खलासी की सहायता से चली ही गई । नीचे से ऊपर तक एक मोटी रस्सी बँधी हुई है । उसी को पकड कर लोग चढते हैं । इसके बिना ऊपर चढना बहुत ही कठिन है । रस्सी के सहारे प्रायः डेढ घंटे में हम लोग ऊपर पहुँचे । आधे मील से कुछ अधिक सीधी राह पर चल कर राज-मनूमेन्ट के निकट उपस्थित हुए । मनूमेन्ट में लिखा हुआ है— “Kong Ascar II. Besleg Nordkap 19 Juli 1873” अर्थात् राजा द्वितीय आस्कार ने सन् १८७३ की ६ जूलाई को नार्थकेप के दर्शन किये । यहाँ एक गोल काठ का घर बन रहा था । यहाँ शम्पेन और केप के कोटो विक्रते हैं । यहाँ पहाड़ों पर इसी तरह दूध, लेमोनेड और स्थानीय फोटो बिका करते हैं । पर्वत पर चढ कर साथ चलनेवाले एक चारह बरस के अमेरिकन बालक ने मुझसे पूछा—“और भी उत्तर में आगे बढने से कहाँ पहुँचेंगे ?” मैंने कहा—“क्रमशः केन्द्र-पार होकर तुम्हारे देश में पहुँच जायँगे ।” यह सुन कर वह

बालक चीक पडा । उसने कहा—“तो क्या हम पृथ्वी के ।
पर पहुँच गये ? अच्छा, यहाँ से हम अन्य ग्रह में जा सकते है
मैंने कहा—“नहीं ।”

रात के एक बजे हम लोग वहाँ से नीचे उतरे । उतरना च
की अपेक्षा अधिक भयानक है । उत्तरान्तरीप की स्थिति ७१ १'
डिग्री लैटिट्यूड में स्थित है । किन्तु यहाँ आमोनाइट श्रेणी के शम्बू
के ढाँचे इतने पाये गये हैं कि उससे वैज्ञानिक लोगों को यह मान
पडा है कि किसी समय यह स्थान गर्म मुल्क में था । वर्तमान
समय में मेक्सिको से गर्म सोता बहता है, इस कारण उपकूल
उतना प्रचल जाडा नहीं होता । छठे दिन बहुत सबेरे वहाँ से
लौटे और प्रसिद्ध रमणीय लिङ्गेन फियोर्ड (Lyngen Fjord) की
सैर की । समुद्र-जल के दोनों ओर दो से छ हजार फुट तक
ऊँचा खडा पहाड है । चोटी पर से चर्राँदी के साँपों के समान
अगणित झरनों के जल की धाराये नीचे बह रही हैं । पहाड को
स्वर्णयुग के ग्लेसियर ने इस तरह काटा है जैसे आरे से लकड़ी
चीरी जाती है । एक अद्भुत दृश्य है । यहाँ पर पहाड के
कलेवर में अनेक भूतत्त्व-सम्बन्धी प्रमाण (Geological evidence)
देखने को मिलते हैं । रात को ११ बजे अनेक तिमि-मत्स्य जल के
ऊपर फूत्कार के साथ दौडते धूपते देख पडे । स्कारन कारखाने के
तिमि-जहाज (Whale "Duncan Grey") ने हमारे सामने
ही एक मछली को गोली मारकर पकड लिया । कप्तान ने हमारे
जहाज को रोक लिया । उसके बाद घायल मछली को जजीरों से
बाँधकर वह 'डनकनग्रे' जहाज हमारे पास ही से होकर निकल
गया । स्कारन-कारखाने के मालिक की छी हमारे जहाज पर
ट्राब्जेम में सवार होकर स्कारन आई थी । इस 'डनकनग्रे' जहाज म

उनके स्वामी थे और उनके साथ वह भी थीं । इसी से 'डनकनमे' जहाज को देखने का हमें विशेष सुभीता होगया । आज यहाँ अन्तिम आधी रात को पूर्ण-सूर्य दर्शन होगा । इसी से सब लोग रात भर जगे और ऊपर डेक पर सब मिलकर गपशप लडाते और खेल-तमाशे करते रहे ।

सातवें दिन सबेरे फिर ट्राम्पोजो-नगर में आगये । यहाँ आकर इधर के देखे हुए दृश्यों के फोटो और कुछ वहाँ की स्मारक वस्तुएँ खरीदीं । यहाँ से भी रवाना होकर आठवे दिन सबेरे स्वार्टिसेन (Svartisen) में पहुँचे । १० वजे पृथ्वी का एक प्रधान ग्लेसियर देख आये । २० कोस लम्बे, ६ से १३ कोस तक चौड़े, ४००० फुट ऊँचे पर्वत-प्लाटो (Mountain Plateau) भर में, जगह जगह पर ३०० फुट घना, एक वर्ग का टीला है । इसी का नाम है ग्लेसियर । समुद्र तीर से यह दृश्य कैसा मनोहर और साथ ही भयङ्कर जान पडता है, सो शब्दों के द्वारा नहीं बतलाया जा सकता । पृथ्वी के सिवा और कोई इस बात की साक्ष्य नहीं दे सकता कि कितने दिनों से यह टीला इसी तरह है ; स्वर्णयुग से ही इसका होना बहुत सम्भव है । जगह जगह पर गहरे गढे हैं, उनमें सूर्य का प्रकाश सुन्दर नील-आभा-युक्त देख पडता है । पहले ही कहा जा चुका है कि ऐसे ग्लेसियरों के समुद्र की ओर जाने से ही पहाड कट जाते हैं और उनसे फ़ियोर्ड बन जाते हैं । पूर्वोक्त अमेरिकन बालक ने इस ग्लेसियर के बारे में पूछा कि यह कितने दिनों का होगा ? मैं कुछ उत्तर न दे सका । इसी समय स्वीडन के राजवैद्य (Royal Physician) डाक्टर सालिन ने मेरी ओर से उत्तर दिया कि "It was made when Adam was a boy" अर्थात् बाबा आदम के लडकपन में इसकी सृष्टि हुई थी । आज

रात को बहुत थोड़ी देर तक छिपे रहकर सूर्यदेव फिर निकले । नवे दिन दोपहर को ट्राञ्जेम को लौटे । जिस आनन्द और सुख से यह तीर्थयात्रा गुजरी वैसा आनन्द और सुख और किसी यात्रा में नहीं प्राप्त हुआ । इस सार्वभौमिक भारी परिवार का चित्र सदा के लिए हृदय-पटल पर अंकित होगया । जी चाहता था कि यह यात्रा किसी तरह समाप्त ही न हो । यात्रियों में सभी हँसमुख सुशामिजाज और भले आदमी थे । पृथ्वी के भिन्न भिन्न देशों के ६५ आदमी इतने दिनों एक परिवार की तरह एक जगह खाते-पीते, उठते बैठते और बातचीत करते रहे । ससार में इससे बड़ कर प्रसन्नता की बात और क्या हो सकती है ? इन आठ दस दिनों का बीतना तो जैसे जान ही नहीं पडा । जितना समय सोने में निकल गया वह व्यर्थ ही बीत गया जान पडा । एक घड़ी बैठ कर लिखने का समय नहीं मिला । एक दृश्य समाप्त न होने पाता था कि दूसरा सामने आ जाता था । जहाँ जहाँ किनारे उतर कर देखने जाना होता था वहाँ वहाँ उसकी सूचना तीन घंटे पहले दे दी जाती थी । नार्वे के पश्चिम कूल में बराबर टापू और फियोर्ड देखने को मिले । जाते समय एक खाड़ी से गये थे । आते समय दूसरे मार्ग से फियोर्ड के भीतर होकर जहाज गया । बहुत से अनिर्वचनीय अद्भुत दृश्य देखने को मिले । समुद्र स्थिर गभीर था । तब भी मध्याह्न भोजन के समय जहाज ठहरा दिया जाता था । आराम के प्रबन्ध में कुछ भी कसर न थी । सब लोगो से विदा होते समय उडा छेश हुआ ।

तीर्थयात्रा समाप्त हुई । उत्तरान्तरीप के ऊपर खड़े होकर सूर्य के प्रकाश में केन्द्र की ओर देखने से मन में जो भाव उत्पन्न होता है उसका वर्णन शायद ही कोई कर सके । पण्डित लोगो के मनमें जो भाव उत्पन्न हुए उनका वर्णन आगे, उनकी भाषा में ही, उद्धृत

किया जाता है। मुझ मूर्ख की समझ में तो यह आया कि मृत्यु तो एक दिन होना ही है, किन्तु बराबर विराजमान सूर्यनारायण के सामने अनन्त के द्वारस्वरूप इस महातीर्थ में अगर शरीर छूट जाय तो अमर-धाम का द्वार खुला हुआ ही मिले। बहुत ज्ञानी पण्डित इस बारे में बहुत तरह की बातें लिख गये हैं। नीचे केवल दो विद्वानों की राय लिखी जाती है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि “एक बार जो यहाँ आ गया है उसके मन में यहाँ का दृश्य सदा अंकित रहेगा। सारा यूरोप और आफ्रिका (पहरेदारों को छोड़ कर) जब सो रहा है उस समय हम, सूर्यदेव जहाँ का एक छोटा सा दीपक-मात्र हैं, उस अनन्त के मन्दिर के सामने खड़े हैं।

“Behind is Europe with all its diversities of race with its seething masses of humanity, with its great capitals, its business and passions, its toils, its cares. In front is the calm slowly heaving ocean, possessing to the eye no limit and known to possess no shore but these masses of ice hitherto impervious to all that human skill and courage and endurance can effect. And high in the heavens, the sight of its circuit impeded by no island or mountains the eye can watch unobstructed by the successive revolutions of the sun through the long weeks of the Arctic day. It is one of the spots which when visited photograph themselves for ever on the memory and become one of the happy and insuperable associations of life”—A traveller

“Silence, as of death, for midnight, even in the Arctic latitude, has its character, nothing but the granite cliffs, ruddy-tinged, the perceable gurgle of that slow heaving Polar Ocean, over which in the utmost North the great Sun hangs low, as if he too were slumbering. Yet is his cloud-couch wrought of crimson and cloth of gold. Yet does his light stream over the mirror of waters, like a tremulous fire-pillar, shooting down-

wards to the abyss, and hide himself under my feet In such moments solitude also is invaluable, for who would speak or be looked on, when behind him lies all Europe and Africa fast asleep, except the watchman, and before him the silent immensity, and palace of the eternal whereof our sun is but a porch-lamp” — Carlyle

आर्कटिक दिन तो देखा, मगर रात नहीं देखी । किन्तु वहाँ की रात्रि के सम्बन्ध में यूरोप, अमेरिका और अपन देश में लोगों ने अनेक प्रश्न किये । पाठकों के जानने के लिए जहाज के कप्तान और अन्यान्य कर्मचारियों के मुँह से सुना हुआ हाल लिखता हूँ । उसके साथ ही रूस के वैज्ञानिक यात्री नासिलाफ और वर्त्तमान सुप्रसिद्ध पण्डित नान्सेन का किया हुआ वर्णन भी नीचे उद्धृत किया जाता है । अक्टूबर तक दिन घटता रहता है । नवम्बर के पहले सप्ताह में एक-दम सूर्यास्त हो जाता है और कई दिन तक गोधूलि-बेला का ऐसा झुटपुटा बना रहता है । उसके बाद हर घड़ी अँधेरी रात का राज्य बना रहता है । यह हालत जनवरी के दो सप्ताह तक बनी रहती है । उसके बाद फिर कई दिन तक झुटपुटा बना रहता और उसके उपरान्त सूर्योदय हो जाता है । इस रात्रिकाल में अरोरा-बोरियालिस (Aurora Borealis) के प्रकाश से बड़ा लाभ होता है । यह अद्भुत वैद्युतिक्रम प्रभा विधाता की एक विशेष सृष्टि है । कभी कभी यह बराबर पाँच छ दिन तक बनी रहती है । इसकी प्रभा वर्णन से परे है । कप्तान कहता था कि लाखों तरह तरह की आतशबाजियाँ एक साथ छुड़ाने से जिस प्रकार का प्रकाश हो सकता है उससे ही मिलती-जुलती यह आभा होती है । नान्सेन (Nansen) ने अपनी

पुस्तक (Farthest North) में जो लिखा है वह यहाँ उद्धृत किया जाता है ।

“Nothing more wonderfully beautiful than an Arctic night It is dreamland, painted in the imagination's most delicate tints, it is color etherealised One shade melts into the other, so that you cannot tell where one ends and the other begins, and yet they are all there No forms—it is all faint, dreamy color-music, a far-away, long drawn-out melody, on muted strings The sky is like an enormous cupola, blue at the zenith, shading down into green, and then into lilac and violet at the edges Presently the Aurora shakes over the vault of heaven its veil of glittering silver—changing now to yellow, now to green, now to red It spreads, it contracts again in restless change, next it breaks into waving manifolded hands of shining silver, over which shoot billows of glittering rays, and then the glory vanishes Presently it shimmers in tongues of flame over the very zenith, and then again it shoots a bright ray right up from the horizon until the whole melts away in the moonlight Here and there are left a few waving streamers of light, vague as foreboding, they are the dust from the Aurora's glittering cloak but now it is growing again, new lightnings shoot up, and the endless game begins afresh ”

किसी किसी रात को लन्दन के आकाश में अरौरा की रक्त वर्ण आभा बहुत अच्छी तरह देख पड़ती है ।

नार्वे की साधारण अवस्था । नार्वे का स्थानीय नाम है नार्ज (Norge) । देशीय भाषा का नाम है नार्स्क (Norsk) । अँगरेजी के साथ बहुत सी बातें मिलती हैं । जैसे—*we —vi, they—de, daughter—datter, bread—brod* इत्यादि । अँगरेज-जाति के साथ इनके पूर्व पुरुषों का घनिष्ठ सम्बन्ध था । यूरोपसण्ड के

सब स्थानों की भाषाओं में यह बात सीखनी पड़ी कि “दाहिने ओर जायें कि बायें ?” । यह न सीखता तो राह भूलकर बड़ी मुश्किल में पड़ता । फ्रेंच-भाषा में दाहिने और बायें को ‘आदोया’ और ‘आगोश’ कहते हैं । इटलियन भाषा में ‘डेस्ट्रा’ और ‘सिनिस्ट्रा’ कहते हैं । जर्मन भाषा में ‘रेघ्ट’ और ‘लिकस’ कहते हैं । “मैं यहाँ की भाषा नहीं जानता” यह भी हर एक देश की भाषा के शब्दों में सीखना पड़ा था । इस देश का विस्तार १,२३,३०० वर्ग-मील है । अर्थात् दोनों ब्रिटिश-द्वीप इससे कुछ बड़े हैं । किन्तु यहाँ के निवासियों की संख्या बहुत कम है । सन् १८१० की मर्दुमशुमारी के अनुसार न्यूनाधिक पचास लाख आदमियों की वस्ती है । सारा देश जगलों और पहाड़ों से परिपूर्ण है । नार्वे में छोटे और बड़े सब मिलाकर ३,००० के लगभग कुण्ड या झीलें हैं । पश्चिम उपकूल में बहुत से छोटे छोटे टापू हैं । साधारण-शिक्षा के लिए यहाँ विशेष व्यवस्था है । सन् १८१४ तक यह देश डेनमार्क के अधीन था । इस समय भी, यद्यपि यह स्वीडन से मिला दिया गया है, परन्तु इसका शासन स्वतन्त्ररूप से इसी देश की पार्लियामेंट के द्वारा होता है । रास्ते की रक्षा और मरम्मत का आईन यहाँ नयगढग का है । रास्ते के किनारे जिन लोगों की जमीन है वे अपनी हद के भीतर की सड़क को दुरुस्त करवाने के लिए बाध्य हैं । नार्वे की साधारण प्रजा यूरोप के अन्यान्य स्थानों की अपेक्षा अच्छी हालत में और सुखी है । ब्रिटिश-साम्राज्य की तरह अमीरी और गरीबी की चरमसीमा यहाँ देखने को नहीं मिलती । इससे एक और विशेष उपकार यह है कि वशमर्यादा की अलौकिक नीतिवाली शक्ति यहाँ न होने से उँचाई-निचाई का पचड़ा यहाँ नहीं है । यहाँ भिक्षु को अगर एक पैसा दीजिए तो वह भी देनेवाले को बराबर खड़े होकर उससे हाथ मिलाकर कृतज्ञता

जताने आता है और उस भित्तुक से हाथ न मिलाना इन्सानियत खिलाफ समझा जाता है । चारों ओर घने जंगलो, पहाडों, भू-आदि के गभीर प्राकृतिक दृश्य हैं । उनके बीच में रहने के कारण यहाँ के मनुष्य चिन्ताशील, धर्मभीरु, शान्त और धीरप्रकृति होते हैं । अतिथिसत्कार करने में ये अज्वल नम्बर होते हैं । यूरोप के और किसी देश में अभ्यागत की ऐसी सेवा नहीं की जाती । इस देश के व्याह आदि सस्कारों में इस समय भी कुछ प्राचीन समय की रीतियाँ प्रचलित हैं । मतलब यह कि बाहरी सभ्यता का कृत्रिम जीवन अभी तक नावें को सोलहो आने प्रस नहीं सका । यूरोप के अधिकांश स्थानों में पवन-यन्त्र (Wind-mill) का व्यवहार बहुत अधिक है । इस देश में जल-यन्त्र (Water-mill) का प्रचार अधिक है । भरनो का तो कहना ही क्या है, प्रबल जलस्रोत मात्र पर एक कल खडी करके प्रवाह की शक्ति से काम लिया जाता है ।

सन् १९०५ से नावें एक स्वतन्त्र राज्य होगया है । यहाँ की सैन्य-सख्या १,२०,००० है । सन् १९१३ में सोलह करोड क्रोनर के लगभग राज्य का कर वसूल हुआ था । राज्य पर छत्तीस करोड क्रोनर से भी अधिक कर्ज है । अठारह क्रोनर का एक पौण्ड होता है ।

स्वीडेन ।

उत्तर-अन्तरीप से लौट आने के तीन दिन बाद नार्वे की राजधानी क्रिश्चियानिया से शाम को रेल पर चढ़कर गटेनबर्ग को रवाना हुआ । समुद्रतट पर जब तक रेल चलती रही तब तक वहाँ के छोटे छोटे टापुओं की मनोहर शोभा देखने को मिली । यहाँ की रेलगाड़ियों में मुसाफिरो को सब तरह का आराम मिलता है । यहाँ के सेक्रेट क्लास की गाड़ियों में जैसा आराम मिलता है वैसा अन्य किसी देश की सेक्रेड क्लास की गाड़ियों में नहीं मिलता । नार्वे और स्वीडेन की रेल्वे में जहाँ जहाँ भोजन का प्रबन्ध है वहाँ गाड़ी बहुत देर तक ठहरती है । स्टेशनों और होटलों की व्यवस्था भी नये ढंग की है । घर में एक किनारे खाने-पीने का सामान टेबिल पर सजाया हुआ रक्खा रहता है, जो जितनी चीज चाहता है वह उतनी ले आता है, परोसने के लिए कोई नौकर-चाकर नहीं है । केवल एक औरत काउन्टर (कटहरे) में खड़ी हुई है, भोजन के उपरान्त पेट-पूर्ति का जो मूल्य वहाँ निर्दिष्ट है वह उसे दंकर चले आइए । यह भी सुना कि नार्वे के देहातो में जो छोटे छोटे इन (होटल) हैं उनमें खाने-पीने की चीजों की कीमत प्राहको की मर्जी के माफिक हुआ करती है । अर्थात् वे लोग जिस चीज का जो उचित मूल्य समझते हैं वह देते हैं । प्राहक लोग भी कम कीमत नहीं देते । यात्रियों को अगर कोई चीज ख़राब या यथेष्ट नहीं

मिलती तो वे वहाँ की मन्तव्य-पुस्तक में, होटल के अधिकारी को जताने के लिए, अपनी राय लिख जाते हैं। नार्वे के निवासी अभ्यागतों का बहुत ही आदर करते हैं। हमारे देश में शायद ऐसी उदारता देखने को भी न मिलती होगी।

गटेनबर्ग। दूसरे दिन सबेरे गटेनबर्ग पहुँचा। इसका स्थानीय नाम है जोतेबोर्ज (Goteborg)। अँगरेज़ी में इसे Gottenburg कहते हैं। होटलों में अधिकतर औरतें ही काम करती हैं और वहाँ के भद्रपुरुष सबके सामने उनसे कुव्यवहार करने में कुछ भी नहीं हिचकते। इस सम्बन्ध में मैंने जो कुछ देखा उसे स्वयं वर्णन न करके एक सुप्रसिद्ध यात्री की राय यहाँ पर उद्धृत कर देना ही यथेष्ट होगा—

At the restaurants, young blades order their dinners of the female waiters with an aim round their waistes, while the old men place their hands unblushingly upon their bosoms"—Northern Travels—Bayard Taylor—) दोनो में हाथापाई की नौबत देखकर खड़े हुए खो-पुरुष दर्शक हँस रहे हैं। यह देखकर मैं सज़ाटे में आगया।

इंग्लैंड आदि देशों में प्यास लगे तो पब्लिक-हाउसों (यहाँ मद के सिवा सोडावाटर, लेमनेड, जिञ्जरेड आदि पानी भी मिलते हैं) में जाना पडता है। किन्तु नार्वे-स्वीडन आदि यूरोप के कई देशों में ऐसी व्यवस्था नहीं है। राह के किनारे लकडो के छोटे छोटे घरों में एक एक खी रहती है और वे ही सोडावाटर शरबत आदि बेचा करती हैं। यह नगर कुछ प्रोश्व, कुछ अँगरेजो और कुछ ओलन्दाजो डंग का है। नगर के भीतर पत्थर की पक्की बनी हुई तीन नहरे हैं। इनके भीतर समुद्री जहाज तक आ सकते हैं। नहरों के दोनों

किनारों पर सबके हैं और उनके किनारे किनारे पेड़ों की कृतारें हैं । यही ओलन्दाजी ढग है । यहाँ के घर फ्रेंच ढग के बने हैं और साधारण दृश्य सब अँगरेजी ढग के हैं । नगर में और उपनगरों में अनेक मनोहर निकुञ्ज-कानन हैं । सबको में वृक्षों की श्रेणी से शोभित “नया आली” (Nya Aleo) सबक अर्थात् “नया रास्ता” अत्यन्त रमणीय रौनक की जगह है । इस सबक पर टहलकर या किनारे कहीं बैठ कर यहाँ के लोग असाधारण आनन्द-भोग करते हैं । सबकों पर बहुत से लकड़ों के बने तार-घर हैं । प्रवल प्रतापी नरपति गस्तावस (Gustavus Adolphus the Lion of the North) ने सन् १६१६ में इस नगर की स्थापना की थी । नगर का प्रधान गिर्जा उन्हीं के नाम से प्रसिद्ध (Gustavie domkyrka) है । “तेर्ग” अर्थात् बाजार में उक्त राजा की एक भारी मूर्ति स्थापित है । इस देश में जिला या प्रदेश को लान (Lan) कहते हैं । यह नगर जोतेबोर्जलान की राजधानी है । प्रादेशिक शासनकर्ता यहीं रहता है । इस कारण यह नगर स्वीडेन के बनिज का प्रधान बन्दरगाह और गुलजार है । प्रथम नेपोलियन ने अपने प्रवल प्रताप के समय में जब इंग्लैंड को नीचा दिखाने के इरादे से उक्त द्वीप के साथ महादेश का वैपार-बनिज बंद कर दिया था (Continental blockade) तब इंग्लैंड के साथ उत्तर-यूरोप के वैपार के लिए केवल यही जगह खुली रह गई थी । तभी से यह नगर ऐसा समृद्धिशाली बन गया है । यहाँ की शराब की दूकानों का प्रबन्ध नार्वे का ही ऐसा है । विशेषता यह है कि दूकान के कार्याध्यक्षों का वेतन निर्दिष्ट होने का कारण वे ऊपरी प्राप्ति की आशा से अधिक खरीदार जुटाने की कोई चेष्टा नहीं करते । शनिवार को शाम के ६ बजे से लेकर सोमवार को सवेरे ८ बजे तक सब शराब की दूकानें विल्कुल बंद रहने के कारण शराब पीनेवालों और शराब की दूकानों

की सत्या क्रमशः घटती जाती है । पाश्चात्य महादेशों में रविवार का दिन रास तौर पर धर्मचर्चा का दिन समझा जाता है । उस दिन शरावियों को शराब न मिलने से उनकी भलाई की ही आशा की जा सकती है । जब का मैं हाल लिख रहा हूँ उस समय यहाँ एक छोटी सी प्रदर्शनी भी खुली थी । एकजिवीशन के नौकर-चाकर अधिकतर औरतें ही थीं । वे काले रंग की एक एक दरवेशी टोपी दिये हुए चारों ओर घूम रही थीं । यह मेरे लिए एक नया ही दृश्य था । कहीं मेशीन में छपाई हो रही थी, कहीं एक विजली की ताकत से बहुत सी सिलाई की मेशीनें एक साथ चल रही थीं । कहीं पालिश किये हुए ग्रेनाइट पत्थर के छोटे छोटे घर दिखलाये गये थे । कहीं सगमरमर के अनेक प्रकार के काम दिखलाये गये थे । एक जगह दियासलाई के बक्सों का पहाड़ एक विचित्र ढंग से सजाया गया था । यहाँ के दियासलाई के कारखाने प्रसिद्ध हैं । इसी से यहाँ दियासलाई के बक्सों का अधिकार अधिक था, और दर्शकगण विशेषरूप से उनका निरीक्षण करते थे । यहाँ के न्यूजियम में भी सब औरतें ही औरते हैं । यहाँ अत्यन्त प्राचीन डोंगी (The North) से लेकर स्वीडेन देश की अनेक प्रकार की नौकाओं और जहाजों की शकलें दिखलाई गई हैं । इसके सिवा राज परिवारों के हजारों चित्र, राजों और रानियों की हस्तलिपियाँ, उनकी कारचोवी के काम की मखमली पोशाकें और ६००० पुराने सिक्के और तगमे वगैरह रक्खे हैं । यहाँ के थियेटर और काफी वगैरह पेरिस के ढंग के हैं । डाकघर की इमारत भी फ्रांस के "शाटो" (Chateau) के ढंग की है । नगर में एक लाख के लगभग आदमी बसते हैं । यहाँ पहुँचने के दूसरे दिन दोपहर को गोथा-नहर के स्टीमर "पलास" (S S "Pallas") पर चढ़ कर यहाँ की राजधानी स्टॉकहोल्म (Stockholm) को रवाना

हुआ । रेल की राह से जाने में कम समय लगता, मगर गोथा-नहर के सौन्दर्य की वड़ाई बहुत लोगो ने की थी, इस कारण इसी राह से मैं रवाना हुआ ।

गोथा-नहर (Gotha Canal) । जोतेबोर्ज से स्टाक्होल्म तक एक नहर बनाने की चेष्टा बहुत दिनों से होती आ रही थी । पहले दो एक बार इसका उद्योग भी हुआ था, किन्तु काम शुरू हो कर ही रह गया । अन्त को अँगरेज इंजीनियर टेलफोर्ड ((Thomas) Telford) साहब की सहायता से स्थानीय इंजीनियर प्लाटेन साहब (Batzar Bogeslans Von Platen) ने २२ वरम लगातार लगे रहकर इस काम को पूरा किया । इस नहर का काम मन् १८१० में शुरू हुआ और मन् १८३२ में यह नहर बनकर तैयार होगई । इस नहर के बनने में बहुत रुपया खर्च हुआ है । बीच में सात आठ छोटे बड़े कुण्ड या झीलें मिल जाने से नहर काटने में बहुत कुछ सुभोता हुआ है ।

पलास जहाज में हम सब, जुदे जुदे देशों के, ३०।३५ यात्री थे । जहाज का कप्तान स्वीड जाति का था । वह बड़ा ही दिलगी-वाज था । उसे अँगरेजी बोलने की अच्छी योग्यता थी । सिंगापुर, पिनांग तक अनेक बार वह आ जा चुका था । इस कारण एशियाई लोगो के स्वभाव और रंग ढंग को वह थोड़ा बहुत जानता था । जहाज में एशिया के केवल दो आदमी थे । एक मैं और दूसरे पजाब के बुलाकीराम शास्त्री । जहाज पर सवार होने के दो घंटे बाद डिनर-भोजन की तैयारी हुई । यहाँ पहले-पहल मैंने स्मोर्गस-प्रथा (Smorgas) देखी । भोजन के टेबिल सजाये जा चुकने पर, वहाँ बैठने के पहले, भोजन करनेवाले लोग पास ही के एक टेबिल पर खड़े खड़े कुछ जलपान करके गला भिगो लेते हैं । इसी समय

एक तरह की बड़ी कड़ी शराब थोड़ी थोड़ी सबको पीनी पडती है । जान पडता है, भूख घटाने के लिए ही यह जल-पान और सुरा-पान किया जाता है । इस कृत्य को समाप्त करके सब लोग एक साथ साधारण भाव से भोजन करने बैठते हैं । स्वीडेन देश में भोजन करने का यही नियम सर्वत्र प्रचलित है । गटेनबर्ग के "टावल-डोट" (Table d'hote) में भोजन करने का सौभाग्य मुझे नहीं प्राप्त हुआ । एक निर्दिष्ट समय पर सबके एकत्र भोजन करने को टावल-डोट कहते हैं ।

भोजन के उपरान्त प्राचीन बोहस-दुर्ग (Bohus ruins) का भग्नावशेष देखते देखते साढ़े तीन बजे के समय हम लोग प्रथम लाक (Lock) या फाटक पर उपस्थित हुए । जो लोग कभी हिन्दुस्तान की नहरों में घूमे हैं वे फाटक की व्यवस्था को सहज ही समझ लेंगे । नहर के सामने ऊँचे या नीचे समतल स्थान की कोई नदी या कुण्ड आ पडने पर फाटक के बिना नहर के जल का परिणाम ठीक नहीं रक्खा जा सकता । फाटक पार होकर २०० हाथ चौड़े एक झरने के पास होकर हम लोग पाँच बजे के समय प्रसिद्ध ट्रालहाटन (Trollhattan Falls) प्रपात के पास पहुँचे । फाटक में प्रवेश करने के पहले हम सब यात्री जहाज़ पर से उतर पडे । पैदल टहल कर देखे बिना इस प्रसिद्ध मनोहर स्थान के सौन्दर्य का उपभोग नहीं किया जा सकता । अनेक यात्रियों के मुँह से मैंने इस जल-प्रपात का वर्णन सुन रक्खा था । नायगेरा (Niagara Falls) जल-प्रपात के बाद इसी का नम्बर है । इस समय साक्षात् देख कर समझ में आया कि दृश्य साधारण नहीं है । इसे प्रपात न कह कर ४०० हाथ के घेरे की रापिड-श्रेणी (A series of tremendous rapids) कहना ही ठीक होगा । पहला प्रपात

२३ फुट का है। ईश्वरी शक्ति के सिवा इस भयङ्कर अप्रतिहत वेग को और कोई नहीं सँभाल सकता। प्रपात के पूर्व ओर अनेक कल-कारखाने उसी के जोर से चलते हैं। एक कारखाने ने प्रपात के दौड़ रहे प्रवाह के बहुत पास तक एक मचान बाँध रक्खा है। प्रपात के बीच में एक टापू है। कुछ नीचे हट कर एक और टापू है। पुल पर होकर उन टापुओं में लोग जाते हैं। इस पुल के बीच में खड़े होकर नीचे और चारों ओर कोलाहलमय जल की कलोल देखने में बड़ी अच्छी मालूम होती है। किन्तु यह अत्यन्त रमणीय दृश्य देखने के लिए हृदय में हिम्मत और नसों में ताकत चाहिए। ठीक नीचे ४२ फुट खड़ा जल-प्रपात है। उसका और चारों ओर के जल के भयानक शब्द के सिवा और कुछ भी सुनाई नहीं पड़ता। पुल इतना मजबूत नहीं जान पड़ता। अगर टूट जाय तो फिर किसी तरह धचना संभव नहीं।

सुन्दर तीसरे पहर के समय चारों ओर के कल-कारखाने, भयानक होने पर भी मनोहर जल-केलि, फाटकों का इब्जिनियरी-कौशल आदि देख कर कई घंटे तक विशेष आनन्द-भोग करने के उपरान्त हम लोग फिर जहाज पर चढ़े। रात के ६ बजे हम लोग वेनरन-भील (Lake Venern) के किनारे पर बसे हुए वेनर्सबोर्ज (Venersborg) नगर में पहुँचे। ठीक ठीक इसी जगह से गोथा नदी निकली है। नगर में केवल ६००० आदमी बसते हैं। जगह छोटी है, किन्तु चारों ओर चलनेवाले जहाजों और नावों का मध्य-स्थान होने के कारण रौनक देख पड़ती है। यहाँ रात को ६½ बजे उत्तरोत्तर-पश्चिम दिशा (N N W) में सूर्यास्त हुआ और ठीक पश्चिम दिशा में चन्द्रमा के दर्शन हुए। भील में अनेक काठ के बड़े और दो एक जहाज देख पड़े। भील ५० कोस लंबी है

और जगह जगह पर २४।२५ कोस चौड़ी है । समुद्र का भ्रम होता है । कभी कभी आँधी-तूफान भी आ जाता है । मनुष्य जिनमें बसते हैं, ऐसे दो-चार टापू भी हैं । इस भील को नाँघ कर फिर नहर में पहुँचे । दूसरे दिन दोपहर को छोटी सी वाइकेन-भील (Lake Viken) के भीतर होकर कार्ल्सबोर्ज (Karlsborg) नगर के नीचे वेहर्न-भील (Lake Vettern) में पहुँचे । वाइकेन-भील में प्रवेश करने के पहले एक जगह पर नहर की गति चक्राकार होगई है । यहाँ पर कप्तान न कहा—इस समय हम लोग नहर के सबसे ऊँचे स्थान पर पहुँच गये हैं । इसकी सूचना देनेवाला एक टुकड़ा पत्थर का किनारे पर लगा हुआ था । उसमें लिखा था “समुद्रतल से ३०८ फुट ऊँचा” । वाइकेन-भील बहुत छोटी है । किन्तु दोनों किनारों के खेतों और वृक्ष-लताओं के झुंडों की ऐसी सुन्दर सजावट है कि वहाँ के चारों ओर का दृश्य एक मनोहर चित्र माना जान पड़ता है । वेहर्न-भील ४० कोस लंबी और ६ कोस चौड़ी है । वाइकेन-भील की अपेक्षा इस भील का जल १२ फुट नीचे है । फाटक पर से यह बात अच्छी तरह देख पड़ती है । किनारे का दृश्य मनोहर और जल बहुत ही निर्मल है । परन्तु प्रायः आँधी की हलचल मची रहती है । कार्ल्सबोर्ज में एक पुराना किला और सामरिक विद्यालय है । भील के पश्चिम किनारे पर एक सुन्दर पहाड़ और बीच में अनेक टापू होने से इस स्थान की शोभा और भी बढ़ गई है । कार्ल्सबोर्ज के सामने के दूसरे तट पर वाडस्टेना (Vadstena) नामक प्राचीन नगर और ६०० वर्ष का पुराना एक प्राचीन मठ (Motala) है । पहले यह एक कास्ल (Castle) था । यहाँ अनेक राजा कैद रह चुके हैं । इस स्थान से थोड़ी दूर आगे बढ़ने पर फिर नहर मिली । पाँच किवाड़े का फाटक पार होने

में बहुत समय लगेगा, यह सोच कर हम सब लोग उतर कर मुताला (monastery) तक पैदल ही गये। रास्ते में उस देश के निम्न श्रेणी के बालक साधारण भाव से सलाम करके और बालिकायें घुटने टेक कर हम लोगों को प्रणाम करने लगीं। इससे जान पडा कि उस देश के छोटे आदमी भी विनयी और सभ्य हैं। यह नहर की राह १३० कोस लंबी है। इस मार्ग के मध्यस्थल में मुताला है। नगर सुसज्जित है। इसके पास ही नहर के किनारे इञ्जीनियर-प्लाटेन की समाधि बनी हुई है। स्वीडेन देश के रुल-काररुानो का प्रधान स्थान मुताला है। यहाँ की लेस (lace) अत्यन्त प्रसिद्ध है। शाम के सात बजे (तीसरा पहर कहना चाहिए, क्योंकि इस समय भी वहाँ ढाई घंटे दिन था) फिर पाँच किवाड़े के फाटक होकर हम लोग एक दूसरी झील (Lake Boren) में पहुँचे। पाँच कोस लंबे इस जलाशय को नाँघ कर हम लोग जिस नहर में पहुँचे वह बहुत दूर तरु चारों ओर की धरती की अपेक्षा बहुत ऊँची जमीन पर चली गई थी। हम लोग जहाज पर से नीचे खेतों की बहार देखते चले। सचमुच यह एक विल्कुल नया ही दृश्य था। इसके बाद सोलह किवाड़े के फाटक को नाँघ कर, १२० फुट नीचे उतर कर, हमारा जहाज रक्सेन-झील (Lake Roxen) में पहुँचा। यह झील ६ कोस के लगभग लंबी थी। इस झील के बाद एक छोटा सा जलाशय और मिला। उसे नाँघ कर फिर नहर में पहुँचे। कुछ दूर के बाद मेम् (Mem) नामक स्थान में आखिरी फाटक से बाहर निकल आये। यहीं पर एक सगमरमर के पत्थर में खुदा हुआ है कि “ईश्वर स्वयं घर न बनावे तो मनुष्य की सभी चेष्टायें बृथा हैं”। सचमुच विधाता की सहायता के बिना ऐसे बड़े कामों का छोटे मनुष्यों के द्वारा होना सर्वथा असम्भव है। यहीं से हम नहर के मार्ग से विदा

हुए। एक बात कहना भूल गया। नहर में, बीच बीच में, इस पार से उस पार जाने के लिए, कई एक काठ के पुल हैं। हर एक पुल पर एक खो रहती है और पुल की सारी जिम्मेदारी उसी के सिर रहती है। जहाज आने पर वे खिया कल घुमा कर पुल खोल देती हैं और फिर उसे बंद कर लेती हैं।

दूसरे दिन सवेरे हम लोग समुद्र की खाड़ी में घुसे। क्रमशः दोपहर को जहाज जब बाल्टिक-समुद्र में पहुँचा उस समुद्र के जल में भारी हलचल मच गई। बहुत से यात्री विस्तरों पर जाकर पढ़ रहे। बाल्टिक सागर के इस हिस्से में बहुत से छोटे छोटे पहाड़ हैं। तीसरे पहर एक छोटी सी नहर के मार्ग से हमारा जहाज मालारन भील (Lake Malaren—“one of the most entrancing and delightful regions in Europe”—Richard Lovett M.A.) में पहुँचा। इसका दूसरा नाम है “हजार टापू की भील”। इस ३३ कोस लंबी भील में १४०० टापू हैं और उन टापुओं में बहुत से मकान और बाग़ हैं। हमारा जहाज जब इन टापुओं के पास से निकला तब वहाँ के लडकी-लडके रूमाल उछाल उछाल कर हमारा स्वागत और अभिवादन करने लगे। इस प्रेम के दृश्य ने हृदय को एक नये ढंग के आनन्द का अनुभव कराया। देखते ही देखते शाम होगई और साथही स्वीडेन की राजधानी महलो और गिर्जों की चाटियाँ दिखाई पडने लगी। हम लोग थोड़ी ही देर में स्टाकहोल्म में दाखिल होगये।

नहर की सैर समाप्त हुई। अब यात्रियों के सम्बन्ध में दो चार बातें लिखकर इस वृत्तान्त को समाप्त करूँगा। पजाब के प० बुलाकीराम शास्त्री का नामोल्लेख-मात्र किया गया है। आगे चलकर उनके विषय में विशेषरूप से लिखने की इच्छा है। यहाँ और कई

लोगों का हाल लिखूँगा । यात्रियों में एक अमेरिकन स्त्रियों का दल था । सात आठ काँरी औरते और दो प्रवीण मास्टराइन्स यूरोपभ्रमण के लिए अमेरिका से आई थीं । उन्हीं का यह दल था । इनमें से कई एक स्त्रियाँ अँगरेजों से बहुत चिढ़ी हुई थीं और हरघडी अँगरेजों की निन्दा किया करती थीं । यहाँ तक कि अँगरेजों के नाम से भी उन्हें घृणा थी । उनमें एक स्त्री को हँसी-मजाक बहुत पसन्द था । वह खाने के टेबिल पर, आराम की जगह और डेक के ऊपर सदा हँसी-दिल्लीगी की बातों से सब यात्रियों को प्रसन्न बनाये रखती थी । जिसके साथ इस स्त्री का व्याह पका हुआ था वह भी इसी दल में था । इनके सिवा और कई अमेरिकन मर्द भी हम लोगो के साथ थे । उनमें और कुछ भी विशेषता नहीं देख पडी । केवल भोजन के समय अच्छी अच्छी भोजन-सामग्रियों को मरभुरो की तरह दोनो हाथो से हडप जाने में वे बडे ही प्रवीण थे । उनके मारे अच्छे फल किसी को नहीं मिलते थे । अँगरेज यात्री आश्चर्य के साथ अवाह् होकर उनका तमाशा देखते थे । कहना न होगा कि ये अमेरिकन यात्री बालिग और भले आदमी थे । इज्जतदारी के सब लक्षण उनमें मौजूद थे । और एक व्यक्ति की बात लिखकर मैं पलास-जहाज का वर्णन समाप्त करूँगा । मैं इस महीयसी महिला को ही सब यात्रियों में श्रेष्ठ समझता था । मैं अपने अवकाश का समय इनके साथ बातचीत करने ही में व्यतीत करता था । मैं इनसे बातचीत करके रूस का हाल-चाल जानना चाहता था । यह अत्यन्त प्रतिष्ठित घराने के स्वर्गीय एड्मिरल कोजाकरविश (Admiral Kozakervitch) की विधवा पत्नी थीं । एड्मिरल महा-शय बहुत दिनों तक मध्य-एशिया के शासक रहे थे । आमूर नदी के

एक टापू का नाम उन्हीं के नाम पर रक्खा गया है। सन् १८८८ में, ७० वर्ष की अवस्था में, उनकी मृत्यु हुई। इस रूसी रमणी की अवस्था अपने पति से दो ही तीन वर्ष कम होगी, किन्तु अभी तक किसी प्रकार की शिथिलता नहीं पाई जाती थी। यह अत्यन्त सहृदय और हमारे देश की "पुरखिनो" के ढग की स्त्री थी। अँगरेजी और फ्रेंच-भाषा में पूरी जानकारी थी और इतिहास तथा साधारण साहित्य पर भी पूरा अधिकार था। इनके एक सोलह बरस का लड़का था। वह भी साथ था। अँगरेज गवर्नेस (governess) रख कर उसे भी अँगरेजों की अच्छी शिक्षा दी जा रही थी। बालक का नाम व्लाडिमिर (Vladimir) था। वह खूब लम्बे-चौड़े डील-डौल का था। दाढ़ी मूँछ न होने से ही उसकी अवस्था का कुछ पता चलता था, नहीं तो अन्यान्य बातों से वह पचीस बरस का जवान ही जान पड़ता था। बालक भी अपनी माता के समान शान्त और उदार था। इस माननीया महिला के साथ बातचीत करके रूस के सम्बन्ध में मैंने जो जाना है उसे उसी प्रश्नोत्तर के रूप में पाठकों की सेवा में उपस्थित करता हूँ। आशा है, इससे पाठकों को सन्तोष होगा। प्रश्न मेरे हैं और उत्तर उस भद्र-महिला के हैं।

प्रश्न—भारतवर्ष के सम्बन्ध में रूस की कैसी लालसा है ?

उत्तर—तुम्हारे देश की ओर हम लोगों की किसी तरह की कुदृष्टि नहीं है।

प्रश्न—तो फिर यह क्यों सर्वदा सुन पड़ता है कि रूस भारत पर आक्रमण करने के उद्देश्य से ही मध्य-एशिया में अपना राज्य बढा रहा है ? सम्राट पीटर (Peter) अपने बिल में इस सम्बन्ध में प्रकाशि और इस समय

सेनापति स्कूनेल्फ (General Skobeloff) ने प्रकाश्यरूप से जैस इरादा जाहिर किया है उसे देखकर तो भारत पर रूस के आक्रमण का खटका दूर नहीं होता । उन्होंने तो स्पष्ट ही कह दिया है कि भारी एशियाटिक सवारों का दल तैयार करके उसके द्वारा तेमूरलग की तरह खूनखरावा और लूटपाट करते करते भारतवर्ष पर आक्रमण करना ही हमारा अन्तिम उद्देश्य है" । (अँगरेजी में यह उक्ति इस तरह लिखी हुई है—(" It will be in the end our duty to organise masses of Asiatic cavalry, and to hurl them into India under the banner of blood and pillage as a vanguard as it were, thus reviving the time of Tamerlane")

उत्तर—(मुसकाकर) मेरी समझ में पीटर का विल जाली है । और सेनापति जो लिख गये हैं उसके सम्बन्ध में मैं इतना ही कह सकती हूँ कि उस तरह अपने अपने मन की बात कह डालना बहुत ही सहज है । वह मध्यएशिया के प्रधान सेनापति थे । उनका निज का वैसा विचार हो सकता है, किन्तु साम्राज्य की अवस्था पर विचार करने से वैसा खयाल करना पागलपन के सिवा और कुछ नहीं जान पड़ेगा । हमारे घर की हालत ऐसी खराब है कि सबसे पहले उसी को सुधारना अत्यन्त आवश्यक है । जो बड़ा भारी राज्य हाथ में है उसी को सँभालने की सामर्थ्य हममें नहीं है । फिर और अधिक राज्य बढ़ाने की इच्छा पागलपन नहीं तो और क्या है ? असल चीज है रुपया । हमारे देश की आर्थिक अवस्था वैसी अच्छी नहीं है । इस समय धन बढ़ाने की चेष्टा करना ही पहला कर्त्तव्य है । सबसे पहले राजधानी (सेन्टपीटर्सबर्ग) से लेकर साइबेरिया के भीतर से कामट्स्काट्का (Kamatschatka) की सीमा तक रेल-लाइन बननी चाहिए । शीघ्र ही इस काम में

हाथ लगाया जायगा (यह रेल अब बन गई है) । साइबेरिया-प्रदेश में जो धन-रत्न हैं उन्हें हथियाने के लिए इस भारी राज्य के भीतर से प्रशान्त महासागर तक रेल-लाइन का होना अत्यन्त आवश्यक है । यह रेलवे-लाइन खुल जाने पर साइबेरिया के धन से हमारा साम्राज्य खूब धनी हो सकता है । इससे एक और भी विशेष लाभ होगा । वह यह कि प्रशान्त महासागर के किनारे बन्दरगाह बनाकर वहाँ पर जहाजी सेना रखने की व्यवस्था की जा सकेगी । इस समय जहाजी सेना के सम्बन्ध में बहुत कुछ असुविधा भोगनी पड़ती है । रूस के उत्तर और पश्चिम ओर का जल वारहो महीने काम में आने लायक नहीं रहता । जाड़े के महीनों में सब पानी जम कर बर्फ बन जाता है । इस कारण प्रशान्त महासागर के सिवा और कोई ऐसा जल हमारे आस पास नहीं है जहाँ बारहों महीने जहाज रखने की सुन्दर व्यवस्था की जा सके । ऐसी अवस्था में विचार करके देखो, तुम्हारे देश के ऊपर हमारी नियत डोलना कहाँ तक ठीक होगा । हमारे साम्राज्य में प्रधान दोष यही है कि प्रधान प्रधान कर्मचारी लोग सर्वसाधारण के मत को ग्रहण न करके मनमाने खामखयाली के प्रस्ताव करने में कुछ भी नहीं हिचकते । रूस के सम्राटों के नाम जितने कलंक पृथ्वी पर प्रचारित होते रहते हैं, बहुत संभव है कि उनमें से अधिकांश की खबर भी सम्राटों को न हुई हो । बाहरी आदमी समझते हैं कि हमारे सम्राट् स्वेच्छाचारी हैं, जो मन में आता है वही करते हैं, किसी की बात नहीं सुनते । किन्तु असल में बात ठीक उलटी है । सम्राट् अगर किसी अच्छे अभिप्राय से कुछ करने का इरादा करते हैं तो उनके मुसाहब लोग, यदि कुछ अपनी स्वार्थ-हानि देखते हैं, चट अनेक उपायों से सम्राट् को उस काम से निवृत्त

करने की चेष्टा करते हैं । मैं इसका एक उदाहरण बतलाती हूँ ।
 आशा है, तुम फिनलैंड जाओगे, वहाँ जाकर सुन लना । फिनलैंड में
 स्वायत्तशासन की प्रथा प्रचलित है और वहाँ से मिले हुए राज-
 कर को सम्राट् देश-हित के लिए उन लोगों को लौटा देते हैं । इसके
 लिए रूस-राज्य के मन्त्री लोग कोलाहल मचाते रहते हैं । वे चाहते
 हैं कि फिनलैंड ही क्यों रूसी नियम से बचा रहे । इस प्रकार के
 सभी कामों में मन्त्रियों का हाथ रहता है । सम्राट् बेचारे को तो
 लोग वृथा ही बदनाम किया करते हैं ।

प्रश्न—गत वर्ष (सन् १८६० में) इंग्लैण्ड में एक पत्र प्रकाशित
 हुआ था । एक विदुषी रूसी महिला ने अपने सम्राट् के नाम वह
 खुली चिट्ठी लिखी थी । उसमें साम्राज्य के अनेक कलंको का
 उल्लेख है । उस पत्र की सब बातें क्या ठीक हैं ? वह पत्र मैं
 आपको पढ़कर सुनाता हूँ—

Addressed by Madame Tehebrikova, a popular Russian
 authoress of good family, to the Czar of Russia

“Your Majesty,—The laws of my country punish free
 speech All that is honourable in Russia is condemned to see
 thought persecuted by an arbitrary Administration We witness
 moral and physical massacre of youth, the spoliation and flagel-
 lation of a people condemned to remain speechless But
 liberty, Sire, is the primordial necessity of a people, and sooner
 or later the hour will come when the citizens, having, under
 the tutelage, exhausted their patience will raise their voices,
 and then your authority will have to yield

There are also in the lives of individuals moments when
 they are ashamed of their silence, and then they dare to risk
 all that is dear to them, so as to say to the person who holds
 in his hands all the power and all the strength, the person

who could put an end to so much evil and so much shame, "Look at what you allow to take place, look at what you are doing either consciously or not"

The Russian Emperors are obliged to see and hear only what their functionaries, the Tchinovniki, allow them to see. The latter form a thick wall between the Czar and the Zemstres—that is the millions of inhabitants who are not in the employ of Government. The terrible death of Alexander II has thrown a lugubrious shadow on your accession to the throne. You were told that his death was the result of the ideas in favour of freedom which had been developed in consequence of the reforms introduced during the previous reign, and you were inspired to take measures by which it was desired to make Russia go back to the sombre epoch of Nicholas I. They frighten you by agitating the spectre of revolution, of a revolution which would suppress monarchy, and this at the present time, and in such a country as yours is a pure illusion. After the catastrophe of the 1st March the regicides themselves did not hope to see the convocation of a Constituent Assembly. The enemies of the Czar have been executed, every one obeys blindly the will of the monarch. Then by what fatal misunderstanding does the Government suppress all traces of those reforms projected during the best years of Alexander II's reign. It was not the reforms enacted during the previous reign that brought our terrorists into existence, it was their insufficiency.

* * * * *

Do you imagine that because you are an anointed sovereign, you are a divinity possessing knowledge of all things? If you could, Sire, like the sovereign in the fable, pass over the towns and villages so as to know what life the Russian people live, you would see its misery, you would see how the Governors bring up your soldiers to shoot down the peasants and the workmen. You would see that this order,

maintained by thousands of soldiers, by legions of functionaries, by an army of spies—this order in the name of which every word of protestation is suppressed—that this order is not an order at all, but a state of administrative anarchy”

उत्तर—इस ग्रन्थकर्त्री का नाम मैंने सुना है । बात कहने या करने की स्वतन्त्रता हमारे देश में नहीं है । जहाँ जो चाहो वह करने से जासूस लोग पुलिस में खबर करके गिरफ्तार करा देते लिखने की जाँच करने के लिए एक खास राजकर्मचारी है, के अनुमोदन बिना कोई भी छपी चीज पब्लिक में प्रकाशित की जा सकती । राजकर्मचारियों के अत्याचार के सम्बन्ध में मैंने ही रुढ़ चुका हूँ । सम्राट् को लाचार होकर दूसरों की दिखाई पर चलना पड़ता है । अनेक कारणों से हमारे यहाँ की शासन-तन्त्राली दूषित हो रही है । रूस के सिविल-विभाग के कर्मचारी एक विशेष श्रेणी के लोगों में से हमेशा से चुन लिये जाते हैं । उच्च श्रेणी में गिने जाते हैं और न नीच श्रेणी में समझे जाते हैं । वे एक मध्यम श्रेणी के लोग हैं । वे गिनती में भी बहुत थोड़े हैं । हमारे देश में एक उच्च श्रेणी है और दूसरी नीच श्रेणी । मध्यम नामक कोई श्रेणी नहीं है । उक्त श्रेणी के लोग उच्च और नीच श्रेणियों के मेल से बने हैं और इसी से बहुत थोड़े हैं । उनका नौकराना, नौकरी से छूटना और तरफ़ों सभी बातें प्रादेशिक शासक मन्त्रिगण अथवा अन्यान्य विभागों के अफसरों की मर्जी के ऊपर निर्भर है । नौकरी का कुछ ठिकाना नहीं, अभी है और दम-भर में है, उसके ऊपर तनख्वाह बहुत ही कम है । ऊपर के अफसरों को धन बचाने के लिये बुरे या भले किसी भी उपाय से खुश रखना बहुत ही जरूरी है । इन सब कारणों से वे निहायत लोभी और अत्यन्त अत्याचारी बन गये हैं । यही कारण है कि देश या प्रजा के, हिताहित को और कुछ भी

लक्ष्य न रखकर वे “येन केन प्रकारेण” केवल अपना ही पेट भरने में चौबीस घण्टे सोलहो आने लगे रहते हैं । राज-काज चाहे जिस तरह चले, वे उधर रक्ती भर ध्यान नहीं देते । तृतीय अलेकजण्डर ने, कई साल हुए, इस ऐव को मिटाने के लिए विशेष यत्न करके नौकर रखने और नौकरी से छुड़ाने का बहुत कुछ भार अपने सिर पर लिया था और जाँच के लिए एक खास इन्स्पेक्शन-विभाग खोला था । सन् १८६१ में दूसरे अलेकजण्डर ने अनेक विश्वविद्यालयों की स्थापना की थी । अनेक कारणों से वे शीघ्र ही बन्द हो गये । इस साल (१८८१ में) भी हजारों स्कूल बन्द कर दिये गये हैं । शिक्षा-प्रचार कम करने का विशेष कारण यही देस पढता है कि हमारे छात्रगण लिखना-पढना सीख कर केवल सरकारी नौकरी पाने की ही कोशिश करें । विद्या-लाभ से वे यही समझें कि हम अन्यान्य कार्य नहीं कर सकते, हमारी योग्यता यही है कि हम सरकारी नौकरी करें । हमारे ऐसे दरिद्र साम्राज्य में अधिक विद्या-प्रचार से कोई अमगल की आशका करके ही राजकर्मचारियों ने ऐसा किया होगा । इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि अक्सर प्रजा पर अत्याचार ही जाते हैं । जासूस लोग वेकसूर लोगो को भी कभी कभी फँसा देते हैं । ऐसी गिरफ्तारियाँ आधी रात के समय ही हुआ करती हैं । उस समय सब लोग अपने अपने घर पर मिलते हैं । ऐसा भी होता है कि अनेक निर्दोष लोग केवल सन्देह या दुष्ट कर्मचारियों की अदावत से, बिना विचार हुए ही, जन्म भर के लिए साइबेरिया भेज दिये जाते हैं । साइबेरिया में जो राजनीतिक कैदी (Political prisoners) रक्खे जाते हैं उन्हें वहाँ भयानक कष्ट मिलते हैं, उन पर भारी अत्याचार होते हैं । समय समय पर लन्दन में इसके लिए आन्दोलन हुआ करता है । कैदियों पर अत्याचार

होने के विशेष प्रमाण भी पाये गये हैं । राज्य शासन के गूढ़ रहस्यों का पता लगाना सहज काम नहीं है । ऐसा भी समय होता है कि जब कठोर शासन बहुत जरूरी हो जाता है । उस मौके पर शासन-चक्र को न्याय के आधार पर ठीक बनाये रखना बहुत ही कठिन काम है । जाति, धर्म, शिक्षा, अवस्था (हालत) इत्यादि बातों में परस्पर विभिन्न ढङ्ग रखनेवाली और अनेक वर्ण की प्रजा भारी रूस-साम्राज्य में निवास करती है । उन सबको साथ लेकर चलने में एकर-न-एक के खिलाफ जरूर होगा । रूस की निन्दा तुमने बहुत सुनी होगी, मगर मेरी कुछ बातें सुनने से आपको मानना पड़ेगा कि हम ससार का हित करना चाहते हैं । देखो, मध्यएशिया जब से हमारे हाथ में आई है तब से उसकी कितनी उन्नति हुई है । कहीं दिन-रात तुर्क लोग लूट-पार करते थे, अनेक प्रकार के उपद्रव और अत्याचार होते थे, गुलाम बिकते थे । कहीं अब वहाँ के निवासी धन और जीवन को निरापद जान कर बेलटके आहार-विहार करते हैं, सुख की नाँद सोते हैं, खेती और बनिज की उन्नति में तत्पर रहते हैं । केवल एक रूसी कर्नल आठ देसी सहकारियों की सहायता से, निर्विघ्नरूप से, ३०,००० प्रजा का शासन कर सकता है । यह क्या हमारे लिए गौरव की बात नहीं है ? कर्नल अलीखानफ (अलीग्याँ) एक तातारी मुसलमान हैं । उन्होंने रूस की अधीनता स्वीकार करके युद्धविभाग में नौकरी पाई और सैकड़ों गुलामों को गुलामी के बन्धन से मुक्त कर दिया । अब वह गुलामी की प्रथा को जड़ से उखाड़ डालने की चेष्टा में लगे हुए हैं । साधारणतः यह कहा जा सकता है कि फ्रेंच लोगों ने ६० बरसों में अलजीरिया (Algeria) में जितना सुधार कर पाया है, हम लोग २० ही बरसों में तातार देश का उससे अधिक उपकार

कर सके हैं । इतने दिनों अलजीरिया में फ्रान्स का शासन है, मगर अब भी अलजीरिया के लोग फ्रैञ्च-शासन के विरुद्ध सिर उठाने को तैयार हैं । लेकिन मध्य-एशिया (तातार) ने हमको विल्कुल अपना समझ लिया है । वहाँ की प्रजा बड़े सुख से निवास करती है । इसके सिवा, मुझे आशा है कि आपको यूरोप के इतिहास की अच्छी जानकारी होगी । मेरे इस कहने की सचाई का आप स्वयं अनुमान कर सकते हैं कि सभ्य जगत् का हित करने में रूस ने बहुत कुछ भाग लिया है । आपने “रूस की दुराकाचा और राज्य-लोलुपता” की बहुत बातें सुनी होंगी । परन्तु निरपेक्ष भाव से विचार करिएगा तो देखिएगा कि प्रायः हमारे कार्यों में इस धारणा के विपरीत उदारता का परिचय प्राप्त होता है । नेपोलियन जब पहली बार एल्बा (Elba) से भगाये गये तब रूस के सिवा और सभी ने लवे लवे हाथ बढा कर निर्वल परोसी के राज्य के टुकड़े अपने पेट में डालने की चेष्टा की थी । उस समय सबकी सलाह थी कि फ्रान्स में उनका पुराना राज-घराना फिर राज्य करे । केवल हमारे सम्राट् ने ही इस मत के विरुद्ध खड़े होकर फ्रेश्व लोगों से पूछा था कि वे लोग साधारण तन्त्र स्थापित करना चाहते हैं या नहीं । उद्दण्ड नेपोलियन-राहु के विनाश में प्रधान सहायक रूस ही था । मास्कोदाह (Burning of Moscow) और लाइपजिक युद्ध (Battle of Leipsic) इसके सजीव साक्षी हैं । इसके बाद नेपोलियन-नाश के उपरान्त से यूरोप की अराजकता और विप्लव का प्रधान शत्रु रूस ही रहा है । ग्रीस, रोमानिया, सर्बिया, मान्टीनिग्रो और इटली की स्वाधीनता और जर्मन-एकीकरण के प्रधान सहायक रूस-सम्राट् हैं । ग्रीस और रोमानिया के बन्दोबस्त के समय इंग्लैंड तक ने कुछ कुछ उसका विरोध किया था । परन्तु

रूस सोलहो आना उनका सहायक था । अँगरेज लोग अगर रुकावट न डालते तो प्रोस को और भी कुछ अधिक मिलता । रोमानिया के मामले में उनकी बात चली नहीं । बहुत लोगों को स्मरण होगा, अभी उस दिन की बात है, केवल २०-२० वर्ष होते होंगे, — युद्ध के अन्त में सन्धि हो जाने के बाद जर्मन-सम्राट् प्रथम विलियम ने हमारे जार द्वितीय अलेक्जण्डर को पत्र लिखा था कि “प्रुशिया इस बात को कभी नहीं भूल सकती कि केवल आप ही के कारण यह युद्ध भयानक रूप नहीं धारण कर सका । जगदीश्वर आपका कल्याण करें । आपका चिरकृतज्ञ बन्धु ॥”

प्रश्न—द्वितीय अलेक्जण्डर ता बड़ी ही अच्छी प्रकृति के सदाशय पुरुष थे । उनकी मार डालना तो वास्तव में रूसी प्रजा के लिए कलङ्क की बात है । या इसमें कुछ और रहस्य था ?

उत्तर—वह जैसे बाहरी मामलों में उच्च उदारता और महनीय महत्त्व का परिचय देते थे वैसे ही भीतरी ढंग से सब तरह प्रजा की भलाई सोचते थे । सन् १८८१ की १३ वीं मार्च को वह एक घोड़ागाड़ी पर जा रहे थे । एकाएक उनकी गाड़ी के नीचे एक डिनामाइट बम फूटा । वह चटपट गाड़ी से फाँद पड़े और जो लोग घायल हुए थे उनकी सेवा-शुश्रूषा के प्रबन्ध के लिए आज्ञा देने लगे । इतने ही में उनके पैरों के नीचे और एक बम फूटा और उससे उनके दोनों पैर उड़ गये । उसी दिन तीसरे पहर उनकी मृत्यु हो गई । इसके पहले प्रथम अलेक्जण्डर के पिता सम्राट् पाल (Paul) की भी मौत इसी तरह किसी दुष्ट प्रजा के हाथों हुई थी । किन्तु ये सब वे-मतलब के वाहियात काम पागलों के ही हाथ होते हैं, सर्वसाधारण से इन घृणित कामों का कोई सम्बन्ध नहीं होता । पीटर दि ग्रेट से लेकर जितने हमारे देश के सम्राट् हुए हैं उन्होंने देश की

उन्नति और भलाई के लिए विशेष यत्न किया है, तथापि उनके साथ ऐसी बदसलूकियाँ हुई हैं। शायद तुमको मालूम होगा कि केवल असभ्य रूस को सभ्य बनाने के लिए ही महात्मा पीटर ने हैलैंड और इंग्लैंड में घूम कर अनेक घातों का ज्ञान प्राप्त किया था। उन्होंने विदेश में अत्यन्त साधारण आदमी की तरह बटई लुहार का काम, जहाज और घड़ी बनाने की कारीगरी आदि बहुत से व्यावहारिक शिल्पों की शिक्षा प्राप्त की और कलकारखाने, अस्पताल आदि की देखभाल से ज्ञानोपार्जन किया। फिर अपने राज्य में आकर उन्होंने प्रजा को इन सब बातों की शिक्षा देना शुरू किया। रूस में जाने पर उनकी कीर्ति के अनेक चिह्न देखोगे।

× × × ×

विदा होते समय जहाज के कप्तान और यात्रियों से—सास कर उक्त रूसी महिला से मिल कर मैं होटल की ओर चला। कप्तान ने उतरते समय फिर मुझसे कह दिया कि यहाँ का हममाम (स्नानागार) देखना न भूलना।

जानकी बाई और पंडित बुलाकीराम शास्त्री। गोथा-नहर की यात्रा में मैं शास्त्रीजी का नाम लिख चुका हूँ। यह वैरिस्टर हैं। लन्दन से मेरा और इनका साथ हुआ था। इन्हें केवल रूस-देश देखने की प्रबल इच्छा थी। नार्वे की राजधानी क्रिश्चियानिया से मैंने जब नार्थकेप अर्थात् उत्तर-अन्तरीप की यात्रा की उस समय मेरे आने की प्रत्याशा में वह क्रिश्चियानिया से ही ठहर गये। उसके बाद आर्कटिक-प्रदेश से मेरे लौट आने पर फिर एक साथ हम दोनों की यात्रा शुरू हुई। क्रिश्चियानिया से रूस जाने का सीधा रास्ता यह है कि स्टीडेन की राजधानी स्टाक्होल्म में जाकर जहाज पर चढ़ ले। क्रिश्चियानिया से स्टाक्होल्म

तक सीधी रेल चली गई है । पर वन्धु बुलाकीराम के परामर्श गोद्या-नहर होकर ही जाने का निश्चय हुआ । गोद्या-नहर की यात्रा के जहाज में जो यात्री थे उनमें एक डिनामार-परिवार था । डिनामार भद्रपुरुष के एक बर्षा और दो सुन्दरी कन्याये थीं । मैं ते प्रायः उन रूसी रमणी से बातें किया करता था । बुलाकीराम भी उस परिवार के साथ हिलेमिले रहते थे । यात्रा समाप्त हुई । हम लोग स्टाक्होल्म पहुँच गये । सब लोग अपनी अपनी राह चले गये । हम लोग रूस चल दिये । रूस से लौट कर जब हम लोग स्टाक्होल्म में पहुँचे तो अचानक बुलाकीराम से उस परिवार से भेंट हो गई । जिस होटल में वह परिवार ठहरा था वहाँ बुलाकीराम का निमन्त्रण भी हुआ ।

स्वीडेन से हम लोग जर्मनी गये । बर्लिन में कई दिन रहने के बाद बुलाकीराम लन्दन को लौट गये । उसके उपरान्त मैं भी महीने तक अनेक देशों में भ्रमण करके जब मैं लन्दन को लौटा तो वहाँ दो एक दिन फिर बुलाकीराम से भेंट हुई । सन् १८६१ दिसम्बर महीने में वह भारत को लौट आये । मैं भी दो महीने बाद दूसरी यात्रा में चला गया । भारत में आने पर कुछ दिनों के बाद मित्र बुलाकीराम का एक पत्र मुझे मिला । उससे मालूम हुआ कि सन् १८६५ सन् की ६ वीं फरवरी को, लन्दन में, पूर्वोक्त डिनामार परिवार की छोटी कन्या के साथ सिल्वर-धर्म की रीति के अनुसार उनका व्याह हो गया है ।

बुलाकीराम ने लिखा था कि उनके देश के जातीय भात्मिय वन्धु-बान्धवों ने उन लोगों को सादर हिन्दू-नमाज में जिया है—“The most wonderful thing, perhaps, will observe is that my wife has been taken into

Hindu Society by the people of my province My own family has received her with open arms and the leading Hindus with whom we have been guests have had no objection to dine with her My servants are all Hindus—Brahmans and Khetryas”—प्रतिष्ठित हिन्दू लोग विना किसी आपत्ति के उनके साथ आहार और व्यवहार करते हैं। उनके यहाँ ब्राह्मण-चत्रिय नौकर हैं। अर्थात् मुसलमान या ईसाई खानसामा नहीं हैं। अब जरा उस श्वेताङ्ग-रमणी का हाल सुनिए। वह हिन्दुस्तानी पोशाक पहनती है और उसका नाम जानकी बाई रख दिया गया है। मेरे मित्र ने लिखा था—
 (“ My wife is now a thorough Hindu, and rejoices in the name of Janaki Bai She dresses like a Hindu lady and wears Hindu shoes ”—) डेढ़ साल हुआ जानकी बाई के एक लडकी हुई है और इसका नाम रक्खा गया है “शकुन्तला”। नामकरण के उत्सव में बुलाकीराम की सास तक डेनमार्क से पञ्जाब आई थीं।

पर्यटन । उत्तर-अन्तरीप और गोथा-नहर में पर्यटन करने से यूरोप की सैर का मजा मिल गया। रेल में घूमना और पार्सल होकर वहाँगी की डाक में जाना प्रायः बराबर ही है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि रेलवे होने से द्वैपार-वनिज और कामकाज के लिए जाने-आने का विशेष सुभीता हो गया है, किन्तु देशभ्रमण का असल मजा चला गया है। राह में सहयात्रियों के साथ एकत्र आहार-विहार और बैठने उठने का सुभीता हुए विना आपस में भावों का लेन-देन नहीं हो सकता। किन्तु देश-भ्रमण का मुख्य लाभ यही है। अमेरिका की पैलेस-गाडियों (Palace Car) ने इस कमी को कुछ कुछ पूरा किया है। अमेरिका के वर्णन में इन गाडियों पर विशेष

स्वीडेन ।

रूप से लिखा जायगा । देशभ्रमण उद्देश्य बहुत से और वे म
 जैसे बराबर जल-वायु के बदलते रहने से एक प्रकार की
 आकर शरीर के स्वास्थ्य को बढ़ाती है वैसे ही नित्य नवीन
 देखने से हृदय भी प्रफुल्लित और तृप्त होता है । केवल यही
 दृश्यों और घटनाओं की गम्भीरता और अभिनव सौन्दर्य हृदय
 उन्नत बना देता है और विल्कुल अपरिचित विदेशी लोगों के
 घनिष्ठ ससर्ग होने के कारण बहुत से अनभ्यस्त व्यापारों और
 तथा विशेष शिक्षाप्रद बातों का कार्यत ज्ञान (Prac
 knowledge) प्राप्त होता है, जिससे बहुत ही सहज में आत्म
 भारी उन्नति हो जाती है । जलमार्ग में घूमना मानों चलते
 घर में रहना है । किन्तु जिन जहाजों में कामकाजी यात्री जाते
 उनमें उतना देखने या सीखने को नहीं मिलता । सहयात्री
 अपने अपने धंधे में लगे रहते हैं, इससे यात्रा में भी वे मानों
 अपने आफिस में काम करते रहते हैं । तात्पर्य यह कि सब ल
 को हिलने-मिलने का अवसर नहीं प्राप्त होता । मगर जिस मार्ग
 वे ही यात्री जाते हैं जो छुट्टी के समय केवल जल-वायु बदलने प्र
 देशाटन का आनन्द भोग करने निकले हैं उस मार्ग की यात्रा
 विदेशियों के आचार-विचार और रङ्ग-ढङ्ग देखने का या पर
 मानसिक भावों के विनिमय का पूरा सुभीता रहता है । ऐ
 यात्रा में किसी ससारी कामकाज के लिए चिन्ता नहीं हो
 केवल यही देख पड़ता है कि कहीं हँसी-मजाक हो रहा है, क
 बातचीत हो रही है, कहीं कोई खेल खेला जा रहा है । राह
 देखे गये दृश्यों और स्थानीय घटनाओं पर लोग, अपनी अपनी त
 और शिक्षा के अनुसार, तरह तरह की टीका-टिप्पणी और बातची
 करते हैं । एक दूसरे से जी खोल कर मिलता है और हर एक क

दूसरे से अच्छी बातें सीखने का और जानकारी हासिल करने का अच्छा अवसर मिलता है । इस प्रकार स्वच्छन्द भाव से आमोद और आनन्द के साथ ज्ञान प्राप्त करने से हृदय में जो एक प्रकार की स्फूर्ति पैदा होती है वह अन्य प्रकार से सर्वथा अप्राप्य है । इस प्रकार के आमोदजनक ज्ञानप्रद गोथा-नहर के भ्रमण को समाप्त करके मैंने स्वीडेन देश की राजधानी में पैर रक्खा ।

स्टाक्होल्म । उत्तर-यूरोप में ऐसा सुन्दर नगर और दूसरा नहीं है । जल के ऊपर से परिस्तान सा मालूम पड़ता है । यह नगर सात द्वीपों (टापुओ) और दो उपद्वीपों (छोटे टापुओ) पर स्थापित है । इसी से इसको लोग "उत्तर का वेनिस" (Venice of the North) कहते हैं । सचमुच यहाँ भी अधिकांश स्थानों में जाने-आने के लिए, वेनिस की ही तरह, नावें चलती हैं । अन्तर यही है कि वेनिस में कृष्ण-वर्ण गण्डोला (Gondolla) चलते हैं और उन्हें आदमी चलाते हैं, और स्टाक्होल्म में छोटे छोटे स्टीमरो से यह काम लिया जाता है । यहाँ के द्वीप पत्थर के और सुसज्जित हैं, उनमें सुन्दर बाग और बड़े छोटे रमणीय महल सुशोभित हैं । इस कारण यह नगर वेनिस की अपेक्षा अधिक मनोहर है । इसके सिवा वेनिस का पानी गँदला और यहाँ का पानी निर्मल है । वेनिस में घोड़ागाड़ो आदि बिल्कुल नहीं हैं किन्तु यहाँ की चौड़ी सुन्दर सड़कों पर सदा गाड़ी-घोड़े चला करते हैं । रूस जाने के पहले कई दिन यहाँ मैं रहा था । रूस से लौट कर जर्मनी जाने के पहले भी कई दिन यहाँ रहना हुआ । यात्रियों के ठहरने के लिए यहाँ अनेक रहने के घर [Ruman hyara (Room on hire)] किराये पर मिलते हैं । उनमें खाने-पीने का कोई प्रयत्न नहीं है । उसके लिए अनेक भोजनालय हैं । हम लोग इन स्थानों में न जाकर होटल में ही रुके थे । जाने-आने

के लिए गाडियों (Droskey) की कमी नहीं । स्टीमरों पर जाने-आने में भी कुछ दिफात नहीं होती । घाट पर पाच सात मिनिट अपेक्षा करते ही स्टीमर मिल जाता है ।

राजभवन । यहाँ का हार्बर (Harbour) बन्दर बहुत ही सुन्दर है । इसके भीतर बड़े बड़े जहाज सहज में जा सकते हैं । इसके ठीक ऊपर ही अनेक सड़कें, अर्द्धगोलाकार थियेटर (Amphitheatre) की तरह, एक के ऊपर दूसरी, निरुन गई हैं । सबसे ऊँचे पर ३६२ + ४१६ फुट के एक चतुष्कोण स्थान पर राजभवन बना हुआ है । महल से मिला हुआ शाहीगिर्जा बहुत सुन्दर है । उसमें सगमरमर के सभे लगे हुए हैं । अनेक सुन्दर बहुमूल्य चित्र उसकी शोभा बढ़ा रहे हैं । राजभवन में, बड़े बड़े कमरे, गैलरियाँ (Gallery), अनेक प्रकार के बड़े बड़े चित्रपट और अनेक श्रेणी के भारी भारी आईने उसको शोभायमान कर रहे हैं । वहाँ विशेष रूप से देखने की चीजें ये हैं—किसी प्राचीन राजा की सोने जडो कीमती एक तरवार मूर्तिपूजक बवाटिया लोग से खरीदे गये सफेद और बैंगनी रंग के पार्चमेण्ट (Parchment) पर सुनहल अक्षरों से लिखे हुए बाइबिल के अंश । वहाँ कुछ हस्तलिपियों का भी सग्रह है । उसमें सन् १५२६ की, लूथर (Martin Luther) के हाथ की टीका-टिप्पणियों से युक्त एक लैटिन बाइबिल दर्शनीय है । महल देखने की आज्ञा पाने के लिए दर्वाजे पर के कर्मचारी के आफिस में जाना पड़ता है । वहाँ से एक आदमी मिलता है । वही आदमी सब महल दिखा लेता है । सब देखने में तीन घंटे के लगभग समय लगता है ।

नेशनल म्यूजियम । दूसरे दिन जातीय अजावन-घर (National Museum) गया । वहाँ अनेक ऐसी चीजें हैं जिन्हें देखने से यह अच्छी तरह समझ में आ जाता है कि पृथ्वी भर के मनुष्य प्रथम

अवस्था में सर्वत्र प्रायः एक से ही थे । वहाँ जो पुरानी चीजें रक्खी हैं उनमें निम्नलिखित वस्तुएँ हमारे इस कथन को पुष्ट करनेवाली हैं । कुछ एक औरतो के गहने, चर्खा, सूत की कुकड़ी, पीलसोज़, दीपक, इमामदिस्ता खरिल, बधना, पीतल के घेठ की छुरी, कुदाल, वर का मुकुट और जरी की किशतीदार टोपी व ताज । इसके सिवा अनेक प्रकार की प्राचीन काल की पोशाकें, भिन्न भिन्न अवस्थाओं की प्रादेशिक नर-नारियाँ की मूर्तियाँ और शृङ्ग-पानपात्र (Drinking horns) देखने को मिले । लाप लोगो का जीवन प्रत्यक्ष दिखाने के लिए अवरख की नकली बर्फ बनाकर उसके ऊपर यह दिखलाया गया है कि बर्फ के ऊपर बे-पहिये की गाड़ी (Sledge) किस तरह चलती है । इसके सिवा बर्फ पर चलने के जूते, लाप लोगो के कुत्ते, भोपडे, करघे और हाडों के बर्तन वगैरह सजाये रक्खे हैं । इनके साथ ही ग्रीनलैंड (Greenland) की कुत्तों की गाड़ियाँ (Dog Sledge), डोंगी नाव आदि, भी रक्खी हुई हैं । भिन्न भिन्न कमरों में प्राचीन राजों की पोशाकें, अनेक अत्यन्त प्राचीन हस्त-लिपियाँ, ५,००० एंग्लो सैक्सन (Anglo-Saxon) और २०,००० से ऊपर अरबी और बाइजन्टियन सिक्के रक्खे हैं । पूर्व समय में इस देश के अन्तर्गत गाथलैंड (Gothland) टापू बहुत देशों के बनिज का केन्द्र-स्थल था । बाइजन्टियन सिक्के वहाँ मिले हैं ।

अद्भुत डुएल-मूर्ति । उक्त न्यूजियम के बाहर एक चतुष्कोण पत्थर का स्तम्भ है । उसके चारों ओर चार घटनाओं के रिलीफ चित्र हैं । स्तम्भ के ऊपर द्वन्द्वयुद्ध कर रही दो मूर्तियाँ स्थापित हैं । इसमें यह दिखाया गया है कि प्राचीनकाल में स्त्री और शगव्र के साथ आमोद-प्रमोद करते करते कनक का सूत्रपात होने पर अन्त की दोनो आदमी छुंर लेकर किस तरह युद्ध करने लगते थे । युद्ध

के समय दोनो के हाथों मे एक एक छुरा देकर सख्त चमड़े की पेट से दोनों की कमरें इस तरह बाँध दी जाती थी कि एक के मरे बिना वह बन्धन छूट नहीं सकता था । इस दृश्य से हमारे पाठक अनुमान कर सकते हैं कि उस समय उस देश की अवस्था कैसी भयानक थी ।

नार्डिस्का-म्यूजियम (Nordiska Museet) । यहाँ बहुत सी देखने की चीजें हैं । उस समय व्यभिचार करने पर औरतो का किस तरह गधे पर उलटे बैठा कर शहर घुमाया जाता था और कौदियों को किस तरह अपना जीवन व्यतीत करना पड़ता था—ये बातें मूर्तियों के द्वारा यहाँ दिखलाई गई हैं । इसके सिवा उस देश के बहुत से ग्रन्थकारों और पण्डितों के चित्र और हस्तलिपियाँ, एक उसी देश के सुप्रसिद्ध शरीरतत्त्ववेत्ता और एक रासायनिक पण्डित के इस्तेमाल में आनेवाले यन्त्र और चार पाँच राजा-रानियों की हस्तलिपियाँ और इस्तेमाल में आनेवाली सामग्री रक्खी है । वहाँ अनेक मूर्तियाँ हैं । उनमें निम्नलिखित दृश्य बहुत ही सजीव और भावपूर्ण हैं । बर्फ के भीतर एक बालक और एक हरिण (Reindeer) मरा पड़ा है । पुत्रशोक से पीड़ित रो रही माता पुत्र के पास बैठी है । इस देश में, सर्दियों की ऋतु में, बर्फ में पड़ कर अनेक गरीबों के बच्चे और जीवजन्तु इसी तरह मर जाते हैं ।

मोम के पुतलों का घर (Panoptikon) । यहाँ मोम की बनी हुई अनेक देशों के अनेक प्रसिद्ध पुरुषों की भिन्न भिन्न अवस्थाओं की मूर्तियाँ हैं । १८ पुरुषों की मृत्युकाल की मूर्तियाँ हैं । उनमें नेपोलियन, फ्रेंच-पण्डित वाल्टेयर और भूतपूर्व जर्मन-सम्राट् प्रथम विलियम (William I) तथा उनके पुत्र फ्रेडरिक (Frederick) की मूर्तियाँ भी हैं ।

वस्था में सर्वत्र प्रायः एक से ही थे। वहाँ जो पुरानी चीजें रक्खी
 उनमें निम्नलिखित वस्तुएँ हमारे इस कथन को पुष्ट करनेवाली
 हैं। कुछ एक औरतो के गहने, चर्खा, सूत की कुकड़ी, पीलसोज,
 मोपक, इमामदिस्ता खरिल, बघना, पीतल के बेंट की छुरी, कुदाल,
 र का मुकुट और जरी की किशतीदार टोपी व तاج। इसके सिवा
 अनेक प्रकार की प्राचीन काल की पोशाकें, भिन्न भिन्न अवस्थाओं
 की प्रादेशिक नर-नारिया की मूर्तियाँ और शृङ्ग-पानपात्र
 (Drinking horns) देखने को मिले। लाप लोगो का जीवन प्रत्यक्ष
 देखाने के लिए अबरख की नकली बर्फ बनाकर उसके ऊपर यह
 देखलाया गया है कि बर्फ के ऊपर वे-पहिये की गाडी (Sledge)
 कैसे तरह चलती है। इसके सिवा बर्फ पर चलने के जूते, लाप
 लोगों के कुत्ते, भोपडे, करघे और हाडों के बर्तन वगैरह सजायें रक्खे
 हैं। इनके साथ ही ग्रीनलैंड (Greenland) की कुत्तों की गाडियाँ
 (Dog Sledge), डोंगी नाव आदि, भी रक्खी हुई हैं। भिन्न भिन्न
 कालों में प्राचीन राजों की पोशाकें, अनेक अत्यन्त प्राचीन हस्त-
 लेपियाँ, ५,००० ऐंग्लो सैक्सन (Anglo-Saxon) और २०,००० से
 ऊपर अरबी और वाइजन्टियन सिक्के रक्खे हैं। पूर्व मध्य में इस
 देश के अन्तर्गत गाथलैंड (Gothland) टापू बहुत देशों के बनिज
 का केन्द्र-स्थल था। वाइजन्टियन सिक्के वहीं मिले हैं।

अद्भुत डुएल-मूर्ति। उक्त म्यूजियम के बाहर एक चतुष्कोण
 पत्थर का स्तम्भ है। उसके चारों ओर चार घटनाओं के रिलीफ
 चित्र हैं। स्तम्भ के ऊपर द्वन्द्वयुद्ध कर रही दो मूर्तियाँ स्थापित
 हैं। इसमें यह दिखाया गया है कि प्राचीनकाल में स्त्री और शराव
 के साथ आमोद-प्रमोद करते करते कनह का सूत्रपात होने पर अन्त
 को दोनो आदमी छुर लेकर किस तरह युद्ध करने लगते थे। युद्ध

के समय दोनो के हाथों में एक एक छुरा देकर सख्त चमड़े की पे से दोनो की कमरें इस तरह बाँध दी जाती थी कि एक को मरे बिना वह बन्धन छूट नहीं सकता था । इस दृश्य से हमारे पाठक अनुमान कर सकते हैं कि उस समय उस देश की अवस्था कैसी भयानक थी ।

नार्डिस्का-म्यूजियम (Nordiska Museet) । यहाँ बहुत सँ देखने की चीजें हैं । उस समय व्यभिचार करने पर औरतो का किस तरह गधे पर उलटे बैठा कर शहर घुमाया जाता था और कौदियों को किस तरह अपना जीवन व्यतीत करना पड़ता था—ये बातें मूर्तियों के द्वारा यहाँ दिखलाई गई हैं । इसके सिवा उस देश के बहुत से ग्रन्थकारों और पण्डितों के चित्र और हस्तलिपियाँ, एक उसी देश के सुप्रसिद्ध शरीरतत्त्ववेत्ता और एक रासायनिक पण्डित के इस्तेमाल में आनेवाले यन्त्र और चार पाँच राजा-रानियों की हस्तलिपियाँ और इस्तेमाल में आनेवाली सामग्री रक्खी है । वहाँ अनेक मूर्तियाँ हैं । उनमें निम्नलिखित दृश्य बहुत ही सजीव और भावपूर्ण हैं । वर्ष के भीतर एक बालक और एक हरिण (Reindeer) मरा पड़ा है । पुत्रशोक से पीड़ित रो रही माता पुत्र के पास बैठी है । इस देश में, सर्दियों की ऋतु में, वर्ष में पड़ कर अनेक गरीबों के बच्चे और जीवजन्तु इसी तरह मर जाते हैं ।

मोम के पुतलों का घर (Panoptikon) । यहाँ मोम की बनी हुई अनेक देशों के अनेक प्रसिद्ध पुरुषों की भिन्न भिन्न अवस्थाओं की मूर्तियाँ हैं । १८ पुरुषों की मृत्युकाल की मूर्तियाँ हैं । उनमें नपोलियन, फ्रेंच-पण्डित वाल्टेयर और भूतपूर्व जर्मन-सम्राट् प्रथम विलियम (William I) तथा उनके पुत्र फ्रेडरिक (Frederick) की मूर्तियाँ भी हैं ।

राज-शवागार । यहाँ देश के सब राजों के शव (लाशें) बक्स में बन्द किये वाल्ट मे रक्खे हैं । चारों ओर युद्धों मे जीत कर छीनी हुई बहुत देशों की पताकायें टँगी हुई हैं । यह घर जमीन के नीचे और इसी लिए विशेष रूप से ठडा है ।

फ्रेञ्च जगी जहाज । हम लोग जब नगर मे उपस्थित हुए तब कई एक फ्रेञ्च जहाज, रूस जाने की राह मे, यहाँ ठहरे हुए थे । इसी लिए राजधानी के हर एक घाट में फ्रेञ्च-जहाजों के सम्मानार्थ फ्रांस की तिनरङ्गी पताकायें फहरा रही थीं । एक दिन मैं एक जहाज देखने गया । उसका नाम था फिडरिओ (Fidraux) अर्थात् भयानक । एक फ्रेञ्च सैनिक ने हम लोगो को सब दिखलाया । कुछ तो मैंने अन्दाज से समझ लिया और कुछ किसी तरह समझ में ही न आया । असल बात यह है कि मनुष्य-हत्या के लिए उसमें अनेक कल-कारखाने बने हुए थे । दो अजगर तोपें भी उस पर थीं । घाट के किनारे एक सुन्दर फूलबाग है । उसमें नित्य तीसरे पहर अनेक बालक गाते और बाजे बजानेवाले लोग बाजे बजाते हैं । वहाँ साधारणरूप से खाने-पीने का भी प्रबन्ध है । वहाँ भी तिनरङ्गी फ्रांस की पताका फहरा रही थी ।

साधारण स्नानागार । नगर में अनेक स्नानागार या हम्माम हैं । उनकी व्यवस्था से मुझे सुरुचि का परिचय नहीं मिला । पहले पर्यटकों के ग्रन्थों में यहाँ का हाल पढा था, पर मुझे विश्वास नहीं होता था । कम से कम यह खयाल जरूर था कि प्राचीन काल में लोगो की वैसे सुरुचि रही होगी, अब के जमाने में वैसे होना असम्भव है । पर अपनी आँखों से देखने पर मालूम हुआ कि अभी तक वही हाल है । हम्माम मे जाने का टिकिट एक खो बैठी बेचती है । इस देश में सब जगह स्त्रियाँ ही सब काम करती हैं ।

स्नान करने के कमरे में घुस कर वस्त्र उतार कर टब के पानी में बैठ गया । थोड़ी ही देर में एकाएक दर्वाजा खोल कर एक हृष्ट-पुष्ट जवान स्त्री आई । वह स्पष्ट से मेरा बदन मलने लगी । मैं तो जैसे सन्नाटे में आ गया । उसी वात्रा आदम की अवस्था में टब से उठा कर कई गर्म ठंडे झरनों के नीचे अच्छी तरह नहला कर सूखे तैलियं से सब शरीर पोछ कर एक आरामकुर्सी पर उसने मुझे लिटा दिया और ऊपर से कम्बल डाल दिया । फिर अपनी भापा में उसने पूछा—‘ सब काम ठीक हो गया न ?’ । वह चली गई । मैं पडे पडे इस बारे में सोचता रहा । फिर बाहर आकर मैंने एक स्थानीय भद्रपुरुष से इस बारे में बातचीत की । उनसे मालूम हुआ कि इन हम्मामों में स्नान के उपरान्त अनेक घृणित व्यापार होते हैं । उन्होंने मुझसे स्पष्ट ही कह दिया—‘ आप क्या समझते हैं कि कोई अच्छे चरित्र की स्त्री ऐसे काम की नौकरी कर सकती है ? आप सरीखे अनजान विदेशी की बात जाने दीजिए, जो इस देश के नौ जवान वहाँ जाते हैं वे क्या ऐसी अवस्था में इस तरह अपने को सँभाले रह सकते हैं ?’ इस भद्रपुरुष के साथ इस देश की और और बातों पर वार्तालाप हुआ । उससे जान पडा कि सुप्रसिद्ध यात्री वेपार्ड टेलर का लिखना बहुत ही ठीक है । उक्त महात्मा का मन्तव्य नीचे उद्धृत किया जाता है ।

“ Stockholm has been called the most licentious city in Europe, and I have no doubt, with the most perfect justice. Vienna may surpass it in the amount of conjugal infidelity, but certainly not in general incontinence. Very nearly half the registered births are illegitimate, to say nothing of the illegitimate children born in wedlock. Of the servant girls, and seamstresses in the city, it is very safe to say that scarcely ten out of a hundred are chaste, while as rakish

young Swedes have coolly informed me, many girls of respectable parentage, belonging to the middle class, are not much better. The men, of course, are much worse than the women, and even in Paris one sees fewer physical signs of excessive debauchery. Here the number of broken down young men, and blear-eyed hoary sinners, is astonishing. I have never been in any place where licentiousness was so open and avowed—and yet, where the slang of a sham morality was so prevalent. There are no houses of prostitution in Stockholm, and the city would be scandalized at the idea of allowing such a thing. A few years ago two were established, and the fact was no sooner known than a virtuous mob arose, and violently pulled them down. All the baths in Stockholm are attended by women (generally middle aged and hideous, I must confess) who perform the usual scrubbing and shampooing with the greatest nonchalance. One does not wonder when he has seen Berlin and Paris, and have come at last to Stockholm to be ruined"—Bayard Taylor

टेलर साहब के कथन में केवल यही अन्तर देस पडा कि इस समय हम्मामों में "अधेड और कुत्सित" स्त्रियों के बदले जवान और साफ सुथरी औरते काम करती हैं । इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह समयोचित उन्नति है ।

अन्यान्य दृश्य । नगर के होटलों में ग्रैंडहोटल प्रधान है । इसके ऊपर से सामने की खिडकी से सन्ध्याकाल का दृश्य बहुत ही सुन्दर देस पडता है । नगर की प्रकाशमाला का प्रतिबिम्ब जल में दिखाई पड रहा है, छोटे छोटे स्टीमर इधर-उधर दौड रहे हैं, दूसरी और भारी राजमहल कुछ कुछ दिखाई दे रहा है । स्वच्छ ओष्मन्तु का सन्ध्याकाल हृदय में जैसे एक प्रकार के अद्भुत रस का सन्धार करता है । घागों में तीमरे पहर से ही भीड हो जाती है । ड्यू र्गाडेंन (Diurgarden) टापू का हासेल-शाकेन (Hassel-


backen) अद्भुत प्रधान है । यहाँ नित्य तीसरे पहर और शाम को बहुत लोग इकट्ठे होते हैं । खुली जगहों में बैठकर कोई केवल वाजा सुन रहा है, कोई काफी या शराब पी रहा है, कोई मामूली जलपान ही कर रहा है । और कोई अच्छी तरह से बैठा भोजन कर रहा है । नगर के निचले हिस्से से अपेक्षाकृत ऊँचे हिस्से पर चढ़ने के लिए मोजबाक (Mozebacke) में एक कल (Lift) है । उस कल के द्वारा अनेक लोग चढ़ते उतरते रहते हैं । यूरोप के प्रधान प्रधान नगरों की तरह स्टाकहोल्म में भी जाकर हर एक यात्री मन्तुष्ट हो जाता है । प्रतनतत्त्व के पण्डितो म्यूजियमो में विशेष करके जानने योग्य विषय मिलेंगे । साहित्य, धर्म और मनोविज्ञान के प्रेमी लोग भुवनविख्यात महात्मा सुईडेनबर्ग (Swedenborg) के घर और पाठभवन को देख कर अपने को कृतार्थ समझेंगे । रंगीले और हँसमुख लोग देहाती लोगों की मजेदार रंगीन पोशाकें देख कर प्रसन्न होंगे और शरीर और मन का स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए केवल जलवायु बदलना जिनका उद्देश्य है वे यात्री यहाँ ऐसे सुन्दर दृश्य देखेंगे जो शायद और कहीं देखने को नहीं मिल सकते । वास्तव में यह नगर सर्वथा “वाल्डिक की रानी” (Queen of the Baltic) नाम के योग्य है । यहाँ ढाई लाख से अधिक लोग रहते हैं ।

राज्य की साधारण अवस्था । स्वीडेन और नार्वे दोनों देश एक ही राजा के अधीन हैं । पहले कहा जा चुका है कि वर्तमान राजा द्वितीय अस्कार नेपोलियन के प्रसिद्ध सेनापति मार्शल बर्नाडोट के पोते हैं । बर्नाडोट को राज्य मिलने का हाल भी लिखा जा चुका है । राजा द्वितीय अस्कार एक पण्डित आदमी हैं । उन्होंने अनेक कवितायें लिखी हैं और कवि गेटे (Goethe) के फाउस्ट (Faust)

का अनुवाद किया है । यह मल्लाही का काम बहुत अच्छा जानते हैं और सदा अपने याट (yacht) में राज्य के बन्दरों के पर्यवेक्षण के समय गरीब मछुओं से बातचीत करना पसन्द करते हैं । इनको स्वीडेन से ७४,३३३ पौण्ड और नार्वे से २४,१०६ पौण्ड सालाना वृत्ति मिलती है । इसके सिवा और एक मद में राजकोष से इनको १६,६६६ पौण्ड मिलते हैं । सन् १८६२ से राज्य के हर एक गाँव और नगर में स्वायत्त-शासन की प्रथा प्रचलित हो गई है । पञ्चायत और पादरियों के द्वारा सब स्थानीय मामलो की व्यवस्था हुआ करती है । सन् १८१० की मनुष्य-गणना के अनुसार ५५,२१,८४३ आदमी स्वीडेन में रहते हैं । इनमें ७,००० लापलैंड के (Lapp) और १८,००० फिनलैंड के (Finn) असभ्य लोग हैं । इस पर भी विद्या-प्रचार की व्यवस्था बहुत अच्छी और अधिक है । यहाँ २ यूनिवर्सिटी, ७८ कालेज, २५ हाई स्कूल, १२ नार्मल स्कूल, २ बड़े और ५ छोटे शिल्पविद्यालय, ८ नौ-विद्यालय, ८ गूँगे और बहरों के स्कूल और कई एक चिकित्साशास्त्र के विद्यालय हैं । साधारण प्राथमिक शिक्षा मुफ्त दी जाती है । आईन के अनुसार सबको अपने बच्चे सरकारी स्कूलों में भेजने पडते हैं अथवा यह प्रमाण देना पडता है कि घर में ही उनको शिक्षा दी जा रही है । सन् १८८८ में ६,५०,४५४ पौण्ड खर्च करके १०,१६३ प्राथमिक स्कूलों से १३,११० शिक्षको के द्वारा ५,८५,२१२ छात्रों को खैरात में शिक्षा दी गई थी । इस देश के रुपये का नाम है क्रोना । वह १ शिलिंग १३ पेंनी का होता है । उसमें लिखा रहता है "(Biodar folken's val") (भ्रातृजातिगण का मंगल) अर्थात् परोसी जातियों का मङ्गल हो । पैसे का नाम है ओरो (Oro) । १०० ओरो का एक क्रोना (Krona) होता है ।

५, १०, २० क्रोना तक का सोने का सिक्का प्रचलित है । क्रोना के ऊपर के लेन-देन में सोने के सिक्के का व्यवहार होता है ऐसा ही वहाँ आईन है । स्वीडेन, नार्वे और डेनमार्क इन तीनों देशों में तीनों जगह के सिक्के बराबर चलते हैं । सन् १८१३ में डेनमार्क करोड पौण्ड से कुछ अधिक राज कर वसूल हुआ था । इसी साल प्राय ३३ करोड पौण्ड का ऋण था । इस राज्य की एक व्यवस्था बहुत अच्छी है । हर एक महल्ले (Commune) में पन्द्रह वर्ष से कम अवस्था के असहाय बालक-बालिका रोगी बूढ़े और अपाहिज लोग जितने होते हैं उनका पालन-पोषण उस महल्ले के लोगों को करना पड़ता है । अन्यान्य प्रकार के दीन-हीन जनों की व्यवस्था का भार एक सास सभा (Communal Poor Board) को ऊपर है । गरीब आदमी जिनमें मजदूरी करके पेट पालें, इसके लिए १८१८ कारखाने (Work-house) हैं । साधारणत यह कहा जा सकता है कि स्वीडेन के लोग भले आदमी, आमोदप्रिय और बुद्धिमान् जान पड़ते हैं । यहाँ के अधिकांश लोग शिक्षित हैं, किन्तु उनमें तत्परता या कार्यकुशलता के लक्षण उतने नहीं देख पड़ते । सेना दो लाख के लगभग है । जङ्गी जहाज ६० हैं, उनमें १७ लौहयान हैं ।

रूस ।


फि नलैंड (Finland) । स्वीडेन से मैं रूस को रवाना हुआ ।
 जहाज पर केवल दस यात्री थे । ३ बजे के समय स्टाक्होल्म
 छोड़ कर यात्रा की और दूसरे दिन शाम के ६ बजे
 फिनलैंड की राजधानी हेल्सिंगफोर्स (Helsingfors) में जहाज
 पहुँचा । हम लोग नगर देखने के लिए चले । उस समय भी २।३
 घंटे दिन होगा ।

हेल्सिंगफोर्स । सन् १८३३ में रूस-सम्राट् के शुभागमन का
 स्मारक एक भारी स्तम्भ समुद्र-तट पर स्थापित किया गया था । इस
 की चोटी पर एक राजमुकुटधारी दो सिर के ईगल पत्ती (Double
 headed Eagle) की मूर्ति शोभायमान है । यही रूस का राजचिह्न
 है । यहाँ की किराये की गाड़ियों के गाडीवानों को अचानक देख
 लीजिए तो रोमन-कैथलिक पादरियों का धोखा हो जायगा । घाँघरा,
 फमरबन्द और टोपी उसी ढङ्ग की होती है । बन्दरगाह के ऊपर
 खुले मैदान के ढग का स्थान है । वहाँ बहुत से गरीब आदमी दिन
 भर मेहनत करने के बाद मिट्टी के प्यालों में चने की दाल ऐसी कोई
 चीज खा रहे थे । निकट ही एक भारी गिर्जा है । गिर्जे का गुम्बद
 नीले रंग का है । इसमें बहुत कुछ एशियाई ढङ्ग नजर आता है ।
 रास्ते में देखा, लोग ५, ७, १० पावरोटियाँ छेदकर रस्सी में लटकाने
 लिये चले जा रहे हैं । गिर्जे के पास ही यूनिवर्सिटी और पार्लियामेंट

के भवन हैं । यह जगह छोटी है, उसी के अनुसार यहाँ म्यूजियम, पाग, चित्रशाला आदि सब कुछ है । एक भली और प्रतिष्ठित क्लब मुझे साथ लेकर दो एक स्थान दिखा लाई । यह सब अँगरेजी जानती थी और कुछ दिन लन्दन में रह चुकी थी । इन्होंने मेरा परिचय पान पर विनीत भाव से रूढ़ा—“आप लोग आर्य्य—ककेशियन (Caucasian) जाति के हैं, हम मंगोलियन (Mongolian) जाति के हैं । आप लोग बहुत दिनों से उन्नत और सभ्य हैं, हम लोग अभी अभी सभ्य हुए हैं” । उक्त रमणी के विनीत वचनों के सिवा और कोई विशेष मंगोलियन जाति का चिह्न उसमें मुझे नहीं देख पड़ा । मैंने उससे कहा—“अन्यान्य यूरोपियनों में और आपमें तो किसी तरह का मामूलो फर्क भी नहीं देख पड़ता । किसी समय आप लोग मंगोलियन जाति के होंगे, मगर अब युगयुगान्तर से यूरोप में रहने और यूरोपियन लोगों के साथ व्याह-शादी और घनिष्ठता हो जाने के कारण आप लोगों के पूर्व-पुरुषों से शारीरिक लक्षण और अन्यान्य भाव आप लोगों में विल्कुल ही नहीं रहे । रास्ते गली में नीची श्रेणी के बहुत से लोगों में कुछ कुछ मंगोलियन जाति का आभास अवश्य देख पड़ा, लेकिन भले आदमियों में वह बात नहीं पाई जाती थी । पार्क में एक छोटा सा थियेटर है, वहाँ तीसरे पहर नाटक का अभिनय होता है । उसके सामने समुद्र में सुन्दरी नौजवान स्त्रियाँ छोटी छोटी नावों पर बैठी आप ही डाँड खेकर गा रही थीं । इस प्रकार उन्हें जलविहार के साथ व्यायाम (कसरत) करते देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई । फिनारे की एक बेच पर बैठ कर बहुत देर तक मैं इस दृश्य को देखता रहा । रात के दस बजे जहाज पर लौट आया । इस नगर में डेढ़ लाख से कुछ अधिक आदमी रहते हैं ।

डाक्टर रायटर और डाक्टर मित्र । यहाँ से मैं रूस गया ।

वहाँ से लौटने पर फिर एक दिन हेल्सिंगफोर्स में ठहरना हुआ । जहाज़ पर डाक्टर रायटर (Dr. Reuter) मेरे सहयात्री थे । यह हेल्सिंगफोर्स की यूनिवर्सिटी में भाषातत्त्व के अध्यापक (Professor of Philology) थे । परिचय के बाद बातों-ही-बातों में इन्होंने पूछा कि “आपके देश के पण्डित राजेन्द्रलाल मित्र, जान पड़ता है, अच्छी तरह सस्कृत नहीं जानते । खोज का काम शायद पण्डित लोग करते हैं और वे उनकी महायत्ना से उसे अँगरेजी भाषा में प्रकाशित करते हैं । उनके लेख देख कर मुझे सन्देह होता है कि प्रवृत्त के सम्बन्ध में उनका ज्ञान दूसरे के द्वारा प्राप्त है । आप इस बारे में क्या जानते हैं ?” मैं तो अवाक् हो गया । फिनलैंड में बैठे बैठे इस आदमी ने दूसरे के लेखों को पढ़कर ठीक बात जान ली ! यह तो सहज काम नहीं है । उत्तर और क्या देता ? कहा—“हाँ, उनकी मातृहृती में अनेक पण्डित काम करते हैं । एक पण्डित को खास तौर पर तनख्वाह देकर इन्होंने अपने पास रक्खा है । खोज इत्यादि के काम में वह उनसे अवश्य सहायता लेते हैं ।” यूरोपियन लोग धन्य हैं । ऐसी ज्ञान-लालसा हुए बिना क्या कभी उन्नति होती है ? इसी ज्ञान की प्यास को बुझाने के लिए वे लोग मसुद्र में घुसते, पहाड़ों की चोटियों पर चढ़ते, आकाश के ग्रहों को देखते-भालते और तमाम कठिन कामों से नहीं हटते । कहीं मित्र महाशय, और कहीं फिनलैंड । धन्य उद्यम और धन्य उत्साह ! मैंने अन्त में उनको समझा दिया कि सस्कृत-भाषा पर पूरा अधिकार न रहने पर भी प्रस्तरफलों के लेखों और बाहरी अनेक बातों से अनुसन्धान और गवेषणा के द्वारा बहुत से प्राचीन तत्वों के आविष्कार के लिए मित्र महाशय ने सब दिमाग लड़ाया है ।

आबो (Abo) । हेल्सिंगफोर्स से आधी रात को यात्रा करके

दूसरे दिन तीसरे पहर फिनलैंड की प्राचीन राजधानी आवो के नीचे का छोटी नदी में जहाज घुसा । नदी के मुहाने पर ८०० बरस का पुराना एक किला है । वही पर विलासभवन (Villas) और वृक्ष-पक्षिशोभित बहुत से छोटे छोटे टापू हैं । जहाज के पास पहुँचने पर वहाँ के लडके-लडकी रूमाल उडा उडा कर हम लोगों की अभ्यर्थना करने लगे । समुद्रतट से थोड़ी ही दूर पर नगर है । नदी के इस पार से उस पार जाने के लिए खैराती खेवा आता जाता है । पैसा नहीं देना पडता । सारे यूरोप भर में यही यह बात देख पडी । यहाँ के अधिकांश नर-नारी मगोलियन भाव-युक्त हैं । यहाँ के मान-मन्दिर (Observatory) में एक भारी गोलक (Globe) है । पेरिस की विश्वप्रदर्शिनी में दिखलाये गये गोलक से यह गोलक छोटा है । नागरिक गिर्जे में देशीय इतिहास के अनेक सुन्दर चित्र (Fresco) हैं ।

देश की माधारण अवस्था । फिनलैंड की शासनप्रणाली साधारण रूसी साम्राज्य से भिन्न है । यहाँ की पार्लियामेंट, राजाना, जातीय बैंक और सिक्का आदि सब अलग है । सारे रूस-राज्य में केवल इसी देश को सम्पूर्ण रूप से साधारण-तन्त्र के द्वारा स्वायत्त-शासन प्राप्त है । कई लाख रुपये धार्मिक 'कर' की तरह रूस-सम्राट् को दिये जाते हैं सही, किन्तु उन रुपयों को रूस सम्राट् उस देश के खैराती कामों की सहायता के फण्ड में दे दिया करते हैं । रूस-सम्राट् के सलाहकारों और मुसाहवों की आँखों में यह प्रथा अवश्य ही खटकती है, पर करें क्या, लाचार हैं । स्वीडेन-राज्य से अलग होकर यह देश जब से रूस के हाथ में आया तब से यह प्रथा चली आती है । अब इसके बदलने का कोई उपाय नहीं है । यहाँ की प्रज मुक्त-कण्ठ से स्वीकार करती है कि स्वीडेन की अधीनता की अपेक्षा

रूस की छत्रछाया में उनको अधिक सुख प्राप्त है । ज़ार (Ozar) "फिनलैंड के ग्रैंड ड्यूक (Grand Duke) कहलाते हैं । सरकारी दफ्तरो के कागजों को युगयुगान्तर तक सुरक्षित रखने के लिए यहाँ, सारे यूरोप की अपेक्षा, अधिक यत्न देखा गया । ऐसा उत्तम कागज और ऐसी पक्की स्याही और कहीं नहीं काम में लाई जाती । इस देश के रुपये का नाम है मार्का (Markka) एक मार्का ६१ पेनी का होता है । पैसे को पेनी (Penni) कहते हैं । सरकारी बैंक के ५ से ५० मार्का तक के नोट चलते हैं । फिनलैंड में ३२,००,००० आदमी बसते हैं । तीस लाख पैण्ड से कुछ अधिक कर वसूल होता है । राज्य का ऋण आधे करोड़ के ऊपर है ।

क्रानस्टेड Cronstadt । इसके चारों ओर के छोटे छोटे टापुओं में भी ७८ किले हैं । पानी उधला होने के कारण यहाँ से राजधानी तक ६ कोस लंबी, ७०० फुट चौड़ी और २२ फुट गहरी एक नहर निकाली गई है । इसके दोनों किनारे पत्थर से पुख्ता बने हुए हैं । इसमें होकर बड़े बड़े जहाज मजे में नगर के नीचे तक चले जाते हैं । यह नहर सन् १८८५ में खोली गई थी । मैं हेल्सिंगफोर्स से चल कर दूसरे दिन दो बजे के समय क्रानस्टेड द्वीप के निकट पहुँच गया । जहाज पहुँचते ही एक छोटे स्टीमर पर पुलिस का कर्मचारी आया और हम सबसे "पासपोर्ट" लेकर चला गया । क्रानस्टेड सेन्टपीटर्सबर्ग (St Petersburg) रूसी भाषा में Petersburg का बन्दरगाह है । यहाँ पर पीटर-दि ग्रेट का बनवाया एक किला है । उसमें राजधानी की रक्षा के लिए २५,००० सेना रहती है । इसके सिवा यहाँ ५०,००० आदमियों की वस्ती भी है । इसके निकट ही १० रूसी जमी जहाज आनेवाले फ्रेड-जहाजों

की अभ्यर्थना के लिए अपेक्षा कर रहे थे। उन जहाजों के आने पर बड़ी धूमधाम से उनकी अभ्यर्थना की गई।

सेन्ट पीटर्सबर्ग। तीसरे पहर राजधानी के बन्दरगाह में उतर कर अपने अपने ठहरने के होटल का नाम लिखा कर बन्दरगाह के आफिस से अपना अपना पासपोर्ट वापस लिया। इसके बाद सब लोग अपनी अपनी जगह चले गये। यहाँ पासपोर्ट पर बड़ी कड़ी नजर रखी जाती है। होटल में रोज तीन बार पासपोर्ट दाखिल करना पड़ता है। रात को, घूमना हा तो उसे साथ रखो, नहीं तो मुफस्सिल में स्थानीय पुलिस के पास और राजधानी में होटल के मैनेजर के पास जमा कर देना पड़ता है।

डाकूर प्राट्। तीन अमेरिकन भद्रपुरुषों के साथ होटल में ठहरा। इनमें प्राट् नामक एक पुराने डाकूर भी थे। अब ये अपना काम छोड़ कर देशभ्रमण में ही शेष जीवन बिताना चाहते हैं। सर्दी के महीनों में दक्षिण यूरोप में वे रहे थे। अब घूमने निकले हैं। वे दो दफे भारत में भी हो गये हैं। एशिया और दक्षिण-अमेरिका के बहुत देशों की सैर में इन्होंने अनेक कष्ट सहे हैं। ये पृथ्वी के अनेक दुर्गम मार्गों का वर्णन किया करते हैं। डाकूर प्राट् हमसे हमेशा कहा करते थे कि “यहाँ दीवारों के भी कान हैं, सावधानी से बातचीत करना”। वहाँ सदा जासूस छिपे तौर से पता लगाया करते हैं। जरा भी अपने राज्य के विरुद्ध कोई बात रुही कि आप गिरफ्तार हुए। प्राट् हमारे इस दल के मुख्नी से थे। वह ज्ञानी और बहुदर्शी थे, हम लोग सानन्द उनके उपदेशों को अगीकार करते थे।

भाषा। होटल में जाकर देखा, यहाँ धन्यवाद का वाक्य सूब लवा चौड़ा है। अँगरेजी के (“Thank you sir”) का तर्जुमा

यहाँ की भाषा में “ब्लाघोदार्यु भ्यास्” होगा । वाक्य कुछ अटपटा सा भी जान पड़ा । रूसी भाषा में यह शब्द यो लिखा जायगा (“Blaghodaryvas) यहाँ Y का उच्चारण “यु” होता है । जैसे “र्युब्ल” — Ryble । नार्वे की भाषा का भी यही नियम है । जैसे “ओलफ क्युरे” — (Olaf kyrre) । धन्यवाद के लिए फ्रेंच लोग अँगरेजी Thank you su की जगह “मेयार्सि मोसिओ”, जर्मन लोग “डाङ्कसे हार्”, इटलियन स्पेनिश और पोर्चुगीज़ लोग “ग्रासिया सिनिओरे”, फिनलैंड के लोग “कितोक्सिया” और ग्रीक लोग “एफकाविस्तो किरिय” इत्यादि कहते हैं । नार्वे, स्वीडेन और डेन्मार्क की भाषा के साथ जर्मन-भाषा का विशेष मेल है । “हाँ” के अर्थ में रूस में दा — Dah, जर्मनी में या — ya, नार्वे आदि देशों में यो — yo, फिनलैंड में ओनी — Om, इटली आदि में सी — Si, और ग्रीस में नि — Ne शब्द का व्यवहार होता है । ‘न’ अक्षर के द्वारा सम्मति प्रकाशित करने की प्रथा केवल ग्रीस में ही देखी । वहाँ ‘ओथी’ के माने हैं ‘नहीं’ ।

नगर और राज्य का भाव । नगर में घूमने के लिए निकलने पर देखा कज़ाक (Cossack) सेना के पहरे में कुछ हथकड़ी-बेड़ी पहने कैदी साइबेरिया (Siberia) प्रदेश को भेजे जा रहे हैं । कैदियों की पहचान के लिए उनका आधा सिर मूड दिया जाता है । कज़ाक सवारों का जैसा नाम सुना था वैसा कुछ देखने में आया । हाँ, यह हो सकता है कि वे हमारे यहाँ के गोरो की तरह कष्ट सह सकते हों । यहाँ के लोगों को कबूतर उड़ाने का बड़ा शौक है । कहा जाता है कि कबूतर का रूप रख कर पवित्रात्मा ईसा के निकट आई थी । इसी से यहाँ के लोग कबूतर को पवित्र और पूज्य समझते

हैं । ट्रामगाडी पर या पैदल जाते समय देखा कि कोई गिर्जा सामने पडते ही लोग टोपी उतार कर नमस्कार करते और उँगली से मुख और हृदय पर तीन बार क्रूस का आकार अंकित करते हैं । यहाँ के साधारण लोग मूर्तिपूजक ही जान पडते हैं । बड़े बड़े गिर्जों में जाकर देखा, मेरी और ईसा की मूर्ति के सामने बड़ी बड़ी बत्तियाँ जल रही हैं, धूप सुलग रही है । बालक बूढ़े और जवान, सब आकर साष्टाङ्ग प्रणाम करते और वहाँ की धूल मस्तक में लगाने हैं । गिर्जों के बाहर बड़े पत्थर के पात्रों में मन्त्रपूत जल रक्खा हुआ है । देश विदेश के रोगी लोग आकर उस जल को चरणामृत की तरह पीते हैं । एक बड़े गिर्जे (Kazan Cathedral) में बहुत प्यास लगने के कारण मैंने इस जल को पी लिया । डाक्टर प्राट् ने बहुत ही सींभ कर कहा—“मैं तुमको अपने साथ होटल नहीं ले जाऊँगा । यह जहरीला जल जरूर तुमको बीमार कर देगा” । इसके उत्तर में मैंने उनको समझाया कि जिस जल को पूरे विश्वास के साथ इतने लोग छूते हैं उसमें अवश्य ही ऐसी शक्ति आ गई है कि उसके पीने से हानि नहीं, लाभ ही की सम्पूर्ण सम्भावना है । सारे गिर्जों की चोटी पर मुसलमानी धर्म-चिह्न अर्धचन्द्र के ऊपर क्रूस स्थापित है । इसका मतलब यह है कि मुसलमानी धर्म को दबा कर विजयी ईसाई क्रूस अवस्थित है । तुर्कों से शत्रुता ही इसका कारण है । नगर की सड़कें सब चौड़ी और सुन्दर हैं । एक सड़क तीन मील लम्बी और १२० फुट चौड़ी है । इसके किनारे एक बड़ा भारी बाजार है । नेवा (Neva) के किनारे की राह पर सडे होकर देखने से इस पार और उस पार का दृश्य बहुत ही मनोहर देख पडता है । सचमुच सेन्टपीटर्सबर्ग एक सुन्दर नगर है । नगर का सौन्दर्य और समृद्धि देखने से इस राज्य की आर्थिक अवस्था घुरी

नहीं जान पड़ती । सब सोना चारो ओर से घसीट कर गिर्जे और राजमहल में ढेर कर दिया गया है । प्रजा की अवस्था पर कुछ ध्यान नहीं दिया गया । रास्तों में जो साधारण श्रेणी के लोग देख पड़ते हैं उनकी पोशाक बहुत कुछ एशियाई ढंग से मिलती-जुलती होती है । सिर पर टोपी (Cap), अँगरेजी हैट (Hat) नहीं, शरीर पर पैरा तक लम्बा ढीला काले रंग का कोट, घुटनो तक का घूट जूता, यही उनकी पोशाक है । बहुत लोग कोट के बदले पजाबियों के ऐसे लम्बे कुर्तों के ऊपर केवल फतुही पहने घूमते हैं । बाल सबके मुसलमानो के ऐसे लम्बे होते हैं । पुस्तक आदि की दूकानो में फ्रेंच पुस्तकें ही अधिक देख पड़ों । बड़े लोग सदा फ्रेंच-भाषा का ही इस्तेमाल करते हैं । दूकानदार बड़े ही ठग हैं, हर एक चीज का दसगुना मोल कहते हैं और कम से कम दूनी कीमत लेते हैं । इस बारे में उनको यह गर्व है कि पृथ्वी के किसी देश का आदमी चालाकी में उनकी बराबरी नहीं कर सकता । हजार सियाना विदेशी हो तो भी वे उसे जरूर ठग लेंगे, इत्यादि । राह में लोग अपरिचित लोगो को भी “भाई” कहकर सम्बोधन करते हैं । हमारे यहाँ भी प्रायः ऐसा ही देखा जाता है । ‘भाई’ ‘भैया’ आदि शब्दों का प्रयोग यहाँ भी किया जाता है । राजधानी खूब साफ-सुथरी है । किन्तु उपनगर बड़े ही गंदे हैं । साधारण लोगो में सफाई और सजावट कम पाई जाती है । एक दिन तीसरे पहर मैं एक उपनगर (Alexandrowski) देखने गया । वहाँ जाकर देखा, घर का सारा कूड़ा सबके दरवाजों के पास ढेर है, इसलिए कि सर्दी की बर्फ के साथ बह जायगा । शाम के ८½ बज गये थे, उस समय भी हर एक घर के सामने मडक के किनारे घेंचें डाले खियाँ और लडके सब हवा खा रहे थे । सेन्टपीटर्सबर्ग में अनेक नहरें हैं । नगर में बिजली

की रोशनी है। साधारण वागों में अनेक श्रेणी के लोग बहुत रात गये तरु बेंचों के ऊपर बैठे हँसी दिखगी और बातचीत किया करते हैं। इन सब स्थानों में एकत्र अनेक तरह की पोशाके देखकर जान पड़ता है जैसे यूरोप खण्ड के बाहर की किसी जगह पर खडे हैं। रास्ते में बहुत से छोटे लोग कंधे पर लाठी रखे और उस लाठी के सिरे पर भोली मे छोटे बच्चे को लटकाये जाते देख पड़ते हैं। होटलों में तो खाने-पीने की व्यवस्था यूरोप भर में सब जगह एक सी हो गई है। किन्तु साधारण लोग मशरूम (Mushroom) खूब खाते हैं। रोटी फिनलेन्ड की ऐसी गोल होती है। बर्फ का सब खर्च है। जल, चाय, वियर-शराब आदि सब पीने की चीजों में बर्फ डाली जाती है। स्त्री और पुरुष दोनों ही तम्बाकू पीते हैं। शराब पीने को बुरा समझना कैसा, छोटे लोग तो प्रायः हर एक काम में उसे बहुत जरूरी चीज समझते हैं। लोगों में उत्साह और उद्यम की मात्रा बहुत नहीं देख पड़ती। हमों लोगों का ऐसा अलसभाव उनमें भी देख पड़ता है। हर शनिवार को बहुत लोग साधारण हम्मामों में स्नान करने जाते हैं। वहाँ जले पत्थर में पानी डाल कर भाप तैयार करके उससे एक प्रकार का स्नान कराया जाता है। यूरोप के हर एक देश में एक-न-एक प्रकार का साधारण-तंत्र प्रचलित है। अर्थात् प्रजा की राय लेकर सब राज-काज किये जाते हैं। किन्तु यहाँ उस तरह की कोई व्यवस्था नहीं है। सम्राट् और पार्षद लोग जो अच्छा समझते हैं वही करते हैं। जन-साधारण की इच्छा या सलाह पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया जाता। एक विचित्र बात वहाँ यह है कि सम्राट् तो लोगों को जो धन देंगे उतने के नोट मिलेंगे और लोग जो सकार को रुपया देंगे उन्हें उतने के सोने के सिक्के देने पड़ेंगे। प्रजा को जा

राजा के यहाँ से नोट मिलते हैं उनको अगर कोई सरकारी सृजाने में भुना कर रुपया या सोने का सिक्का लेना चाहे तो नहीं पा सकता । इसी कारण वहाँ चाँदी के एक रयुब्ल (Rouble) का मूल्य ३६ शिलिंग है । और एक रयुब्ल के नोट का मूल्य केवल २६ शिलिंग है । यह कैसा भयानक जुल्म है । इसी को “जबर्दस्ती सिक्का चलाना (Forced currency) कहते हैं । यह राजनियम का घोर अत्याचार है । इसके सिवा शासन-सम्वन्धी भिन्न भिन्न विभागों की व्यवस्था और कर्मचारी इतने खराब हैं कि होटल में टिके हुए किसी विदेशी आदमी की कोई चीज अगर चोरी जाय तो उसे छिपा डालना ही सब तरह अच्छा, क्योंकि पुलिस में खबर देने से पहले तो घूस देते देते चीज से चौगुने दाम खर्च हो जायेंगे । इसके बाद चोर पकड़ा जाने पर अगर आप साबित न कर सके तो दस चौस रुपये खर्च किये बिना आपका छुटकारा पाना कठिन है । हम लोगों में से जो लोग रूस के शासन को अच्छा समझते हैं उन्हें इन सब बातों पर विचार करके देखने से मालूम हो जायगा कि ब्रिटिश-गवर्नमेन्ट की अधीनता रूस के शासन की अपेक्षा कितनी अच्छी और फायदा पहुँचानेवाली है । मेरी समझ में रूसी साम्राज्य की व्यवस्था अगर बदल जाय और वहाँ प्रजा-परतन्त्र शासन-प्रणाली स्थापित हो जाय तथा राज्य में एक मध्यवित्त लोगों की जबर्दस्त मण्डली बन कर बड़े लोगों के अत्याचारों की जड़ उखाड़ डाले तो रूस निस्सन्देह एक उन्नतिशील प्रभावशाली राष्ट्र बन सकता है । अनेक सुसभ्य अँगरेज पण्डितों को भी यह स्वीकार करना पड़ा है कि ससार के नियम के अनुसार इस बार रूस के उठने की बारी है । सभी जातियाँ जगत् में एक बार अपने भुजबल और प्रताप के द्वारा अपनी प्रधानता का डका पीट चुकी हैं, स्तैव

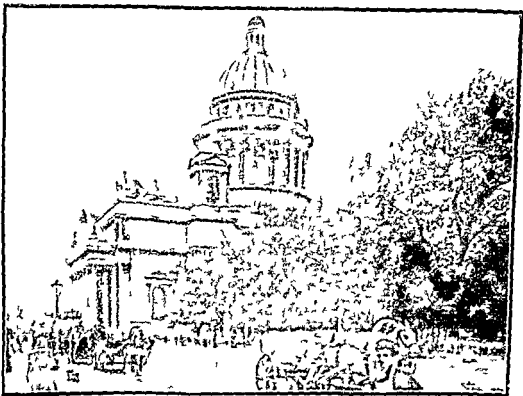
(Slavs) जाति कभी ऐसा नहीं कर सकी । अतएव अब की दफा रूस की चारों है । किन्तु ऐसा होने की राह में जो रुकावटें हैं उन्हें पहले हटा देना चाहिए । केवल राक्षसी शक्ति से कहीं भी कुछ नहीं हुआ । उदारनीति और धर्म-प्रभाव के बिना सत्कार में प्रधानता प्राप्त करना सर्वथा असम्भव है । आशा होती है कि जापान से लड़ाई में हार कर रूस ममभूत गया है कि पाश्चिमी शक्ति सब जगह काम नहीं आती । आन्तरिक जल के बिना सिद्धि पाना असम्भव है । यद्यपि नाउट (Knout) दण्ड आदि अनेक पैशाचिक प्रथाएँ उठ गई हैं तथापि अब तक कुछ एक असभ्यों के ऐसे नियम प्रचलित हैं जैसे सैनिकों में डुएल-युद्ध (Duel) की व्यवस्था । अगर किसी सैनिक का कोई अपमान करे तो उसके साथ सैनिक को डुएल-युद्ध करना ही पड़ेगा, नहीं तो फौज से उसका नाम काट दिया जायगा । यहाँ तक भी गनीमत थी, किन्तु नियम तो यह है कि अगर वह सैनिक पुरुष अपने साथ दूसरे के उस वर्ताव को, जिसे और लोग 'अपमान' समझते हों, अपमान न समझते भी उसे डुएल-युद्ध करना होगा । उदाहरणस्वरूप एक घटना का उल्लेख यहाँ पर किया जाता है । एक कप्तान एक भद्र महिला के साथ किसी थियेटर में जाकर बैठे । थोड़ी देर के बाद दोनों उठ कर बाहर आये । लौट कर, वहाँ जाकर, उन्होंने देखा कि उनकी दोनों कुर्सियों पर एक और भले आदमी तथा उन्हीं के एक मित्र बैठे हुए हैं । अनेक अनुरोध करने पर भी उन लोगों ने जब स्थान न छोड़ा तो कप्तान भले आदमी की तरफ थियेटर से चले गये । यह बात जब ऊँचे अफसरों के कान तक पहुँची तो उन्हीं के ऊपर हुक्म जारी किया कि वह या तो अपमान करने के साथ युद्ध करें और या नौकरी से इस्तीफा दे दें । कप्तान बेचारे ने बहुत कुछ समझाया कि उस भले आदमी ने

किसी तरह के बुरे वर्ताव से उन्हें ऐसा दुःख नहीं पहुँचाया जिसके लिए मैं उसे मार डालूँ या उसका कोई अङ्ग नष्ट कर दूँ । उसके इस साधारण अपराध को माफ कर देना ही मेरी समझ में उचित है । परन्तु कप्तान के कहने का कुछ असर नहीं हुआ । अन्त को कप्तान ने खुशी के साथ नौकरी छोड़ दी । अब पाठक लोग विचार करके देखें कि ऐसे असभ्यों के ऐसे निष्ठुर नियम कहाँ तक समायोजित कहे जा सकते हैं ? क्या यह दारुण धारणा नहीं है ? इंग्लैंड में भी एक समय यह पैशाचिक प्रथा प्रचलित थी । सत्रहवीं शताब्दी भर, अर्थात् घोर पण्डित-मूर्ख प्रथम जेम्स (James I "the greatest learned fool in Christendom") के सिंहासनारोहण से लेकर द्वितीय चार्ल्स (Charles II) के शासन काल के अन्त तक, इज्जतदार लोगो में भी डुएल-युद्ध का बहुत प्रचार था । प्रधानो (Principals) में तो परस्पर यह युद्ध होता ही था, किन्तु उनके नौकर पेशेदार पहलवानो (Seconds) को भी परस्पर यह युद्ध करना पड़ता था । इन युद्धों की समाप्ति प्रायः एक की जान जाने पर ही होती थी । द्वितीय चार्ल्स खुद तो घोर व्यभिचारी और लम्पट थे ही, किन्तु अपने मुसाहबों और सभासदों को भी ऐसे असत् कामों में बराबर उत्साहित किया करते थे । इन्हीं के राज्यकाल में बकिंघम के ड्यूक (Duke of Buckingham) ने एक दूसरे ड्यूक (Duke of Shrewsbury) को डुएल-युद्ध में मारा था । दूसरे से अनुचित सम्बन्ध रखनेवाली राक्षसी (Shrewsbury) के ड्यूक की स्त्री प्रसन्नतापूर्वक तमाशा देखने के लिए सर्जिस के वेष से उपपति के साथ युद्धभूमि में गई और युद्ध के समय उपपति का घोड़ा पकड़े रही थी । युद्ध में वेचारे Shrewsbury के ड्यूक को मार कर बकिंघमराजमहल में सुसंवाद देने को जब

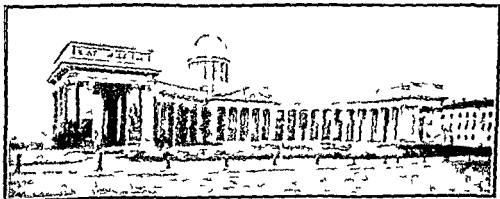
वकिघम का ड्यूक गया तब रानी के हजार मना करने पर भी राजा ने उस खनी को सादर गले लगा लिया, मानो वह राज्य-रक्षा के लिए कोई बड़े वीरो का ऐसा कर आया था । कोई नियम चलाने के समय सर्वसाधारण की राय न लेने से ही इस तरह के वाहियात नियम प्रचलित हो गये थे । आज भी जिन राज्यों में ऐसे नियम प्रचलित हैं वहाँ ऐसे क्षमताशाली लोगों का अभाव है जो निरपेक्ष-भाव से सब अवस्थायो पर विचार करके दोष-गुण बतलावें । इसमें कोई सन्देह नहीं कि किसी तरह का अपमान न सहना वीर का धर्म है । केवल इसी मूल पर यह नियम चला है । किन्तु इन बातों की भी तो कुछ विवेचना करनी थी कि कौन अपमान अत्यन्त साधारण है, कौन अपराध उपेक्षा के योग्य है, किस अवस्था में बदला लेना वीरो के लायक काम है और किस अवस्था में ऐसा करना कायर का काम है । केवल इस मोटी बात पर लक्ष्य रखकर बदला लेने की प्रवृत्ति को उत्तेजित करना कि “अपमान सहना वीर पुरुष के योग्य नहीं” पशुओं या पागलों का ही काम है । बहुत लोग यह जानते हैं कि पहले इंग्लैंड में ऐसा नियम प्रचलित था कि उसके द्वारा पलटन के बड़े बड़े श्रेहदे रुपया खर्चकर खरीदे जा सकते थे । जिस समय यह नियम प्रचलित हुआ था उस समय साधारण प्रजा की राय की अपेक्षा कुछ धनाढ्य लोगों के मतलब पर अधिक ध्यान रखकर नियम बनाये जाते थे । क्रमशः ऐसे बुरे नियम के अनेक विपैले फल फलने पर सर्व-साधारण प्रजा की प्रबल प्रार्थना से यह नियम एक-दम रद्द कर दिया गया । यदि उस समय धनी लोगों की क्षमता वैसी ही प्रबल बनी रहती तो उनके ऐसे सुभीते का नियम कभी रद्द न हो सकता । किन्तु उस समय प्रजा का प्रभाव अन्यान्य श्रेणियों की क्षमता की अपेक्षा इतना प्रबल हो उठा था कि हजार पित्र माधा

रहने पर भी निरपेक्ष विचार के शस्त्र से इस नियम का बन्धन अनायास ही कट गया । इन्हीं सब कारणों से सब लोगों को स्वीकार करना पड़ता है कि इंग्लैंड की वर्तमान शासन-प्रणाली अत्यन्त उत्कृष्ट है । जिससे इष्टसाधन सहज और अनिष्ट-सम्पादन कष्टसाध्य हो वही शासन-प्रणाली अच्छी समझी जाती है । शासको का कर्तव्य है कि केवल विधाता के बताये मार्ग पर, उसी की कृपादृष्टि के सहारे, चलें । इसमें उन्हें हजारों विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ेगा, निन्दा भी सुननी पड़ेगी । पर उन्हें चाहिए कि वे किसी राजसम्प्रदाय या श्रेणी के स्वार्थ पर कुछ भी दृष्टि न रखकर सर्वसाधारण के मङ्गल और भलाई पर ही ध्यान दें । प्रजागण की इच्छा या सम्मति ही उनके उच्चपद की नींव है और प्रजा की प्रीति भक्ति और श्रद्धा के ऊपर उनका सिंहासन स्थापित है । इस तरह न्याय, प्रेम और दया के साथ सुशासन प्रचलित होने पर राष्ट्र में एक महान् बल उत्पन्न हो जाता है, जिसके मामले, किसी एक श्रेणी या सम्प्रदाय की तो कोई बात ही नहीं, सारी पृथ्वी सिर झुकाती है ।

सेन्ट आइजक-गिर्जा (St Isaac's Church) । राजधानी में अनेक छोटे और बड़े गिर्जे हैं । उनमें दो प्रधान हैं—एक तो आइजक-गिर्जा और दूसरा काजन-गिर्जा (Kazan Cathedral) । आइजक-गिर्जे के ठीक सामने हमारा होटल होने के कारण उसमें मैं दो-तीन बार गया । चारों ओर फिनलैंड से लाये गये उत्तम पालिश किये हुए एक एक टुकड़े पत्थर (Highly polished granite monoliths) के ११२ स्तम्भ हैं । स्तम्भ कितने बड़े और भारी हैं, बिना देखे इसका अनुभव होना बहुत ही कठिन है । सामने के १६ स्तम्भ ६० हाथ के लगभग ऊँचे हैं । हर एक का घेरा १४ हाथ का है । एक एक पत्थर के टुकड़े को इतने बड़े बड़े खम्भे ! इस गिर्जे के बनने में तीन



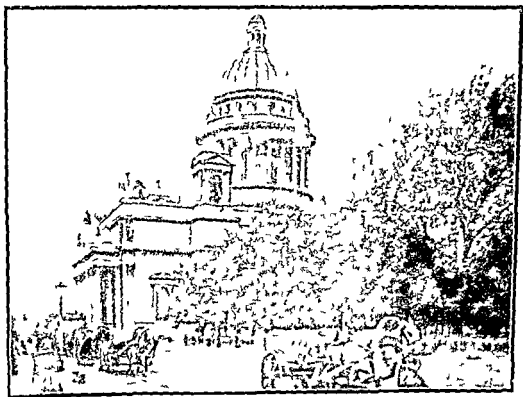
सेन्ट आइजक गिर्जा—पृ० ४१०



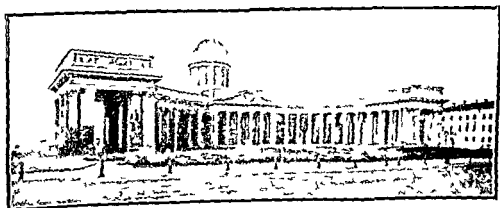
काजत गिर्जा—पृ० ४११

रहने पर भी निरपेक्ष विचार के शब्द से इस नियम का बन्धन अनायास ही कट गया । इन्हीं सब कारणों से सब लोगों को स्वीकार करना पड़ता है कि इंग्लैंड की वर्तमान शासन-प्रणाली अत्यन्त उत्कृष्ट है । जिससे इष्टसाधन सहज और अनिष्ट-सम्पादन कष्टसाध्य हो वही शासन-प्रणाली अच्छी समझी जाती है । शासको का कर्तव्य है कि केवल विधाता के बताये मार्ग पर, उसी की कृपादृष्टि के सहारे, चलें । इसमें उन्हें हजारों विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ेगा, निन्दा भी सुननी पड़ेगी । पर उन्हें चाहिए कि वे किसी खास सम्प्रदाय या श्रेणी के स्वार्थ पर कुछ भी दृष्टि न रखकर सर्वसाधारण के मङ्गल और भलाई पर ही ध्यान दें । प्रजागण की इच्छा या सम्मति ही उनके उच्चपद की नींव है और प्रजा की प्रीति भक्ति और श्रद्धा के ऊपर उनका सिंहासन स्थापित है । इस तरह न्याय, प्रेम और दया के साथ सुशासन प्रचलित होने पर राष्ट्र में एक महान् बल उत्पन्न हो जाता है, जिसके सामने, किसी एक श्रेणी या सम्प्रदाय की तो कोई बात ही नहीं, सारी पृथ्वी सिर झुकाती है ।

सेन्ट आइज़क-गिर्जा (St Isaac's Church) । राजधानी में अनेक छोटे और बड़े गिर्जे हैं । उनमें दो प्रधान हैं—एक तो आइज़क-गिर्जा और दूसरा काज़न-गिर्जा (Kazan Cathedral) । आइज़क-गिर्जे के ठीक सामने हमारा होटल होने के कारण उसमें मैं दो-तीन बार गया । चारों ओर फ़िनलैंड से लाये गये उत्तम पालिश किये हुए एक एक टुकड़े पत्थर (Highly polished granite monoliths) के ११२ स्तम्भ हैं । स्तम्भ कितने बड़े और भारी हैं, बिना देखे इसका अनुभव होना बहुत ही कठिन है । सामने के १६ स्तम्भ ६० हाथ के लगभग ऊँचे हैं । हर एक का घेरा १४ हाथ का है । एक एक पत्थर के टुकड़े को इतने बड़े बड़े रसमें । इस गिर्जे के घनने में तीन



सेन्ट आइज़क गिर्जा—पृ० ४२०



काज्ज गिर्जा—पृ० ४२१

समाधियाँ और उनके द्वारा युद्धों में जीत कर लाई गई बहुत सी सामग्री यहाँ रक्खी है । समाधियों पर ढेर के ढेर सोने की सजावट देखने ही योग्य है ।

पीटर-कुटीर । उक्त किले के पास ही महात्मा पीटर की प्राचीन भेदीपडी है । सुरक्षित रखने के लिए उसके ऊपर से एक और मरुान बना दिया गया है । इसके एक हिस्से में 'भजन' होता है और दूसरे हिस्से में पीटर की अपने हाथ की बनाई एक छोटी नाव और कई एक लकड़ी की चीजें रक्खी हैं ।

नेवा । नेवा नदी के दोनों किनारों पर सेन्ट पीटर्सबर्ग नगर बसा हुआ है । इस पर दो पक्के और कई एक उतराते रहनेवाले पुल हैं । लकड़ी के पुल सर्दियों में हटा दिये जाते हैं । आग न लग जाय, इसलिए इन पर चुरट बगैरह पीने की मनाही है । अक्टूबर से अप्रैल तक नदी का पानी बर्फ बन जाता है । जिस दिन बर्फ गलना शुरू होता है उसी दिन तोप की आवाज से यह समाचार नगर में सूचित कर दिया जाता है और किले का प्रधान कर्मचारी राजा के सामने एक पात्र में पानी उपस्थित करता है । पहले नियम था कि राजा इस शुभ समाचार के लानेवाले को पुरस्कार में वही वर्तन अशर्कियों से भर कर दे देते थे । लोभ के मारे धीरे धीरे वर्तन का आकार बढने लगा । अब ऐसा नियम होगया है कि हजार स्वर्णमुद्रायें दे दी जाती हैं ।

नेवा द्वीप । किले के दक्षिण ओर पास ही एक छोटे टापू पर विश्वविद्यालय का भवन और अन्यान्य विद्याओं की शालायें हैं । खनि-विद्यालय (School of Mines) के अन्तर्गत न्यूजियम दर्शनीय है । पृथ्वी में शायद ऐसा खनि विद्यालय दूसरा न होगा । उसमें एक टुकड़ा एक कीमती पत्थर (Malachite) का रक्खा

है । वह ५० मन के लगभग वजन में होगा । उसका मूल्य २०,००० पौण्ड के लगभग है । विज्ञान-विद्यालय के म्यूजियम में प्रसिद्ध प्राचीन साइबेरिया के भारी मामघ हाथी (The great Siberian Elephant Mammoth) का कंकाल रक्खा हुआ है । इस हाथी के चमड़े का एक टुकड़ा लन्दन के सर्जन कालेज (Royal College of Surgeons', London) के म्यूजियम में रक्खा हुआ है । यह हाथी का शरीर बरफ खोदते में मिला था । न-जाने कितने युगयुगान्तरों से यह इसी तरह बरफ के नीचे दबा हुआ था । इस जाति के हाथी के रोएँ होते थे ।

पशुशाला आदि । यहाँ की पशुशाला भी बुरी नहीं है । यहाँ दो सफेद मोर बड़े ही सुन्दर हैं । वनस्पति-भवन में गर्म देशों के वृक्षों के घर (Palm-houses) देखने योग्य हैं । राजपुस्तकागार में १० लाख छपी हुई और २५,००० हाथ की लिखी पुस्तकें हैं । रास्ते में पीटर-दि-ग्रेट की पत्थर की घुड़सवार मूर्ति, अलेक्जण्डर स्तम्भ, निकोलस की मूर्ति, विजय-फाटक (Triumphal Arch), द्वितीय अलेक्जण्डर की मूर्ति आदि अनेक स्मारक चिह्न दर्शनीय हैं ।

टौरिडा-महल (Taurida Palace) द्वितीय कैथराइन ने यह महल बनवाया था । किन्तु इस समय यह नाचघर के काम में आता है । बालरूम (Ball-room) ३३० X ७० वर्गफुट है । अर्थात् बारह बार उसमें घूम आने से एक कोस का चकर हो जाता है । इस महल से मिले हुए बाग की रोशनियाँ मिलाकर यहाँ सब २०,००० बत्तियाँ जलती हैं । एक एक भाड पहाड हो रहा है । इसके सिवा और भी अनेक राजमहल और बड़ी बड़ी इमारतें हैं ।

जाडे का महल । सब महलों से श्रेष्ठ यही सम्राट् का शीत-निवास है । सम्राट् के मणि-मुक्ता आदि रत्नों के ढेर यहीं रक्खे हुए

समाधियाँ और उनके द्वारा युद्धों में जीत कर लाई गई बहुत सी सामग्री यहाँ रक्खी है । समाधियों पर ढेर के ढेर सोने की सजावट देखने ही योग्य है ।

पीटर-कुटीर । उक्त क़िले के पास ही महात्मा पीटर की प्राचीन भेपडी है । सुरक्षित रखने के लिए उसके ऊपर से एक और मकान बना दिया गया है । इसके एक हिस्से में 'भजन' होता है और दूसरे हिस्से में पीटर की अपने हाथ की बनाई एक छोटी नाव और कई एक लकड़ी की चीजें रक्खी हैं ।

नेवा । नेवा नदी के दोनों किनारों पर सेन्ट पीटर्सबर्ग नगर बसा हुआ है । इस पर दो पक्के और कई एक उतराते रहनेवाले पुल हैं । लकड़ी के पुल सर्दियों में हटा दिये जाते हैं । आग न लग जाय, इसलिए इन पर चुरट वगैरह पीने की मनाही है । अक्टूबर से अप्रैल तक नदी का पानी बर्फ बन जाता है । जिस दिन बर्फ गलना शुरू होता है उसी दिन तोप की आवाज से यह समाचार नगर में सूचित कर दिया जाता है और क़िले का प्रधान कर्मचारी राजा के सामने एक पात्र में पानी उपस्थित करता है । पहले नियम था कि राजा इस शुभ समाचार के लानेवाले को पुरस्कार में वही बर्तन अशर्फियों से भर कर दे देते थे । लोभ के मारे धीरे धीरे बर्तन का आकार बढ़ने लगा । अब ऐसा नियम हो गया है कि हजार स्वर्णमुद्राये दे दी जाती हैं ।

नेवा द्वीप । क़िले के दक्षिण ओर पास ही एक छोटे टापू पर विश्वविद्यालय का भवन और अन्यान्य विद्याओं की शालायें हैं । खनि-विद्यालय (School of Mines) के अन्तर्गत म्यूजियम दर्शनीय है । पृथ्वी में शायद ऐसा खनि विद्यालय दूसरा न होगा । उसमें एक टुकड़ा एक कीमती पत्थर (Malachite) का रक्खा

है । वह ५० मन के लगभग वजन में होगा । उसका मूल्य २०,००० पौण्ड के लगभग है । विज्ञान-विद्यालय के म्यूजियम में प्रसिद्ध प्राचीन साइबेरिया के भारी मामघ हाथी (The great Siberian Elephant Mammoth) का कंकाल रक्खा हुआ है । इस हाथी के चमड़े का एक टुकड़ा लन्दन के सर्जन कालेज (Royal College of Surgeons', London) में म्यूजियम में रक्खा हुआ है । यह हाथी का शरीर बरफ खोदते में मिला था । न-जाने कितने युगयुगान्तरों से यह इसी तरह बरफ के नीचे दबा हुआ था । इस जाति के हाथी के रोएँ होते थे ।

पशुशाला आदि । यहाँ की पशुशाला भी बुरी नहीं है । यहाँ दो सफेद मोर बड़े ही सुन्दर हैं । वनस्पति भवन में गर्म देशों के वृक्षों के घर (Palm-houses) देखने योग्य हैं । राजपुस्तकालय में १० लाख छपी हुई और २५,००० हाथ की लिखी पुस्तकें हैं । रास्ते में पीटर-दि-ग्रेट की पत्थर की घुडसवार मूर्ति, अलेक्जण्डर-स्तम्भ, निकोलस की मूर्ति, विजय-फाटक (Triumphal Arch), द्वितीय अलेक्जण्डर की मूर्ति आदि अनेक स्मारक चिह्न दर्शनीय हैं ।

टौरिडा-महल (Taurida Palace) द्वितीय कैथराइन ने यह महल बनवाया था । किन्तु इस समय यह नाचघर के काम में आता है । बालरूम (Ball-room) ३३० × ७० वर्गफुट है । अर्थात् वारह वार उसमें घूम आने से एक कोस का चक्कर ही जाता है । इस महल से मिले हुए बाग की रोशनियाँ मिलाकर यहाँ सब २०,००० बत्तियाँ जलती हैं । एक एक भाड पहाड हो रहा है । इसके सिवा और भी अनेक राजमहल और बड़ी बड़ी इमारतें हैं ।

जाडे का महल । सब महलों से श्रेष्ठ यही सम्राट् का शीत-निवास है । सम्राट् के मण्डि-मुक्ता आदि रत्नों के ढेर यहीं रक्ते हुए

हैं। हर एक कमरे में अनेक प्रकार के अगणित विराट् चित्रपट शोभायमान हैं। यह प्रायः सम-चतुष्कोण आकृति का तिमञ्जिला बना है। इसका अप्रभाग ७०० फुट लम्बा है। सम्राट् की उपस्थिति में नौकर-चाकर मिलाकर ७,००० आदमी इस घर में रहते हैं। सुवर्ण-गृह (Golden Saloon) की सारी दीवारें सोने से मढ़ी हुई हैं। सिंहासन-गृह (Throne room) १४० × ६० वर्गफुट है। यही सोने के पेट पर बहुमूल्य रत्न-जटित एक घुग्घू, एक मोर और एक मुर्गा बैठा है।

हर्मिटज् (Hermitage) । उल्लिखित महल के अन्तर्गत म्यूजियम का नाम हर्मिटज् है। हर्मिटज् अर्थात् रानी कैथराइन का अन्तिम जीवन में रहने का आश्रम। अब यह रूस का प्रधान अजायब-घर बन गया है। सामने, जहाँ से भीतर जाते हैं वहाँ की छत खम्भों के बदले दस मूर्तियों के सिर पर रखी हुई है। ये मूर्तियाँ काले पत्थर की और १२ हाथ ऊँची हैं। पत्थर पर पालिश की हुई है। इस नगर की सभी चीजें भारी और बड़ी देख पड़ती हैं। यह घर ५१५ × ३७५ वर्गफुट है। इसके भीतर जितनी सामग्री है उसके केवल नाम गिनाना भी सर्वथा असम्भव है। ३६ कमरे केवल चित्रपटों से भरे पड़े हैं। ऐतिहासिक, स्वाभाविक और कारीगरी की कीमती नई पुरानी असंख्य चीजें यहाँ रखी हुई हैं। पृथ्वी के अनेक सभ्य और असभ्य राज्यों के बहुत से आधुनिक और प्राचीन पदार्थ यहाँ इकट्ठे किये गये हैं। रालिस सोने का १५ ३ सेर के वजन का कवच यहीं देखने को मिला। पीटर-दि ग्रेट की मूर्ति और उनके हाथ की बनाई और काम में लाई बहुत सी चीजें यहाँ पर रखी हैं। उन चीजों में पीटर की तग्वार, चश्मा, पुस्तकें और हाथ की छड़ी अधिक महत्व की चीजें हैं।

अच्छी तरह हर्मिटज् को सैर करने के लिए बहुत समय की आवश्यकता है । यह विशाल साम्राज्य का विराट् म्यूजियम है ।

पीटर-हफ् (Peterhof) । पीटर-हफ् सम्राट् का प्रीष्मनिवास है । भारत में, शिमले में, जो लाट-भवन है उसका भी यही नाम रखा गया है । यह राजधानी से कुछ दूर पर समुद्र के किनारे बना हुआ है । पीटर-दि-ग्रेट ने इसे बनवाया था । यहाँ अनेक श्रेणी के मनोहर दृश्य हैं । उनमें देशी पोशाक पहने रूसी सुन्दरियों के ३६८ चित्रपट देखन के योग्य हैं । महल के भीतर शाही बाग है । उसमें अनेक वृक्ष और लतायें, बहुत सी मूर्तियाँ और फुहारे दर्शनीय हैं ।

सिक्का । इंग्लेड के सिवा यूरोप में सब जगह दशमिक प्रथा प्रचलित है । रूस के पैसे का नाम है कोपेक (Kopeck) । १०० कोपेक का एक रूब्ल होता है । चाँदी का रूब्ल शायद ही कहीं देख पड़ता हो । मैले नोट-रूब्ल भरे पड़े हैं ।

सम्राट् । यूरोप के अन्यान्य राजा वृत्ति पाते हैं, लेकिन रूस के जार वृत्ति-भोगी नहीं हैं । साम्राज्य का सर्वस्व उन्हीं के हाथ में है । इस हिसाब से अगर देखा जाय जार के बराबर धनी पृथ्वी में और कौन होगा ? इस राज-रुत की आमदनी के सिवा बंगाल-विहार-उड़ीसा के इतनी इनकी अपनी जमाँदारी भी है । यहाँ यह प्रश्न हो सकता है कि स्वेच्छाचारी सम्राट् की तो सभी जमाँदारी है, फिर उसकी अलग अपनी भू-सम्पत्ति कैसी ? उसके उत्तर में केवल इतना ही वक्तव्य है कि जार के स्वेच्छाचारी होने के माने यह नहीं है कि वह भी मुसल्मान बादशाहों की तरह दिनरात भोगविलास में लिप्त और काण्डाकाण्डज्ञानरहित रहते हैं । रूस के जार हजार यथेच्छाचारी हों लेकिन फिर भी वह सभ्य जगत् के राजा हैं ।

प्रजा के कल्याण और देश के हित पर सब रूसी राजों का ध्यान रहा है। केवल आमोद-प्रमोद में किसी ने अपना जीवन नहीं बिताया। पीटर-दि-ग्रेट बड़े ही प्रजावत्सल, न्यायपरायण और काम-काजी राजा थे। वह जिस तरह विदेश गये और वहाँ बहुत कष्ट उठाकर अनेक विद्यायें और शिल्प सीख आये तथा प्रजा को पढाया-सिखाया उस तरह प्रजा-हितैषणा शायद ही कभी कहीं के राजा ने दिखलाई हो। बहुत दिनों तक मास्को नगरी रूस की राजधानी रही। समुद्र के किनारे आन से, सुसभ्य यूरोप के ससर्ग से, राज्य की उन्नति होगी—यही सोचकर राजा पीटर ने वर्तमान स्थान पर राजधानी स्थापित की। उस समय यहाँ मिट्टी या पत्थर कुछ नहीं मिलता था। चारों ओर गीली जमीन और जलाशय थे। ऐसी जगह पर सेन्टपीटर्स-बर्ग ऐसा भारी नगर बसाना कैसा कठिन काम था, सो सहज ही समझा जा सकता है। उस समय वह जिस कुटी में रहते थे वह इस समय तीर्थ की तरह समझी जाती और किले के पास एक इमारत से सुरक्षित कर दी गई है। महात्मा पीटर मजदूरों से ही काम नहीं कराते थे, वह भी उनके साथ काम करते थे। कितने ही दूर दूर के देशों से घर बनाने का माल-मसाला यहाँ लाया गया है। इस नगर के बनाने में घोर परिश्रम किया गया है और वेशुमार धन खर्च हुआ है। इस काम में एक लाख आदमियों की तो जानें ही चली गई। महात्मा पीटर प्रजा-हित के लिए इस तरह का परिश्रम ही नहीं, बल्कि सुविचार और सुशासन के लिए अलक्षित-भाव से राज्य में सब तरफ घूम फिर कर विचारालय आदि की देख-रेख भी किया करते थे। शायद यह बात हमारे बहुत से पाठक भी जानते होंगे कि रूस के सम्राट् द्वितीय अलेक्जंडर ने एक ही बात पर राज्य के सम्पूर्ण क्रीतदास

किसानों को दुर्दशा से छुड़ा कर स्वार्थीन कर दिया । वर्तमान सम्राट् जार के पिता तृतीय अलेक्जंडर अत्यन्त धीर, गभीर और शान्ति पसन्द करनेवाले आदमी थे । तृतीय अलेक्जंडर के पिता प्रजा के हाथों मारे गये थे, इसलिए उनको भी अपनी जान बचाने की—सुरक्षित रहने की—चिन्ता लगी रहती थी । तथापि वह बराबर राजकाज में दत्तचित्त रहते थे । वे प्रायः रात के दो तीन बजे तक बैठ कर राजकाज के कागज देखते और विचार करते थे । बहुत लोगों की धारणा है कि इतना अधिक मानसिक परिश्रम करने से ही उनकी अकालमृत्यु हुई । १८७७-७८ सन् के रूस-टर्की युद्ध में वे स्वयं उपस्थित थे । वे अक्सर बालको के आगे उस युद्ध का वर्णन करके—युद्ध की भयानकता का हाल समझा कर—उन्हें कभी युद्ध न करने का उपदेश दिया करते थे । युद्ध की सलाह देनेवाले कुछ कु-मन्त्रियों की सोहबत और सलाह से बचाने के लिए उन्होंने पुत्र को पृथ्वी की प्रदक्षिणा करने के लिए भेज दिया था । वे लडार्ड-भगडे के ऐसे विरोधी थे, तथापि उन्हीं के राज्यकाल में भारत पर रूस की चढाई की भूठी अफवाह हमारे देश में अनेक बार उड़ चुकी है । सुना जाता है कि वर्तमान जार भी शान्तिप्रिय, प्रजावत्सल और उदार नीति के पक्षपाती हैं । सब राज्यों से मित्रता रखकर शान्ति से राज्यशासन करना ही इन्हें पसन्द है । अब्बल तो रूस भारत पर चढाई करेगा ही नहीं, और अगर करे भी तो अंगरेज लोग सहज में हिन्दुस्तान उनको सौंपकर चले जानेवाले ही नहीं । एक अंगरेज का यह कथन विल्कुल ठीक है ।

“Whilst I question it one shot will ever again be fired from a British cannon or one bullet from a British musket to prevent the voluntary secession

चार होगा तो सारा ससार रूसी शासन को बदनाम करेगा महावीर टाल्स्टाय के आत्मीय स्वजनों को सदा इस बात की शक लगी रहती थी कि टाल्स्टाय पर न-जाने कब क्या अत्याचार हो लेकिन टाल्स्टाय को पुलिस या सरकारी आज्ञा की कुछ परवाह न थी । रूस में विदेश से कोई पुस्तक या अखबार बिना जाँचे हुए नहीं आने पाता । अखबारों और पुस्तकों को आप पुस्तक बेचने वालों से खरीद सकते हैं या पोस्टऑफिस में रुपया जमा कर दीजिए तो पोस्टऑफिस मँगा देगा । विदेश से आये हुए आदर्शों के पास कोई अखबार होता है तो उसे राज्य की सीमा पर पासपोर्ट के साथ वह अखबार भी दे देना पडता है । रूस के सम्बन्ध में एक अँगरेज पण्डित ने जो अपनी राय लिखी है उसे यहाँ उद्धृत कर देने से रूसी साम्राज्य का सम्पूर्ण सक्षिप्त वर्णन हो जायगा उन्होंने लिखा है—“If any intelligent will study the present state of Russia, financial, political, and domestic, the difficult nature of the country to be annexed and subjugated, the enormous number of troops that would be required, and other incidental impediments to the carrying out of such a programme, he must rise with the conviction that he has been perusing the narration of nightmare”

सेन्टपीटर्सबर्ग से मास्को जाने की बड़ी इच्छा थी, किन्तु जिन भारतीय बन्धु के साथ स्टाकहोल्म से जाने-आने का एक टिकट लिया था उनकी इच्छा न होने से और टिकट बदला जा सकने से मैं मास्को न जा सका । रूस से बाहर होने के दिन सबेरे अपनी इच्छा प्रकट करके हीटल को कर्मचारी को मैंने पासपोर्ट दिया । उसने नियमानुसार राजकर्मचारी से मजूर कराकर

पासपोर्ट फेर दिया । शाम के समय बन्दरगाह के आफिस में पासपोर्ट दिखा कर जहाज पर सवार हुआ ।

जर्मनी-यात्रा । पहले कहा जा चुका है कि रूस से हेल्सिग-फोर्स होकर मैं आबो आया । आबो से लगातार कुछ दूर तक चारों ओर पूर्वोक्त प्रकार के टापू मिले । हमारा जहाज उनके भीतर हो कर चला । यह स्थान बडाही मनोहर था । जल तालाव का ऐसा स्थिर था । स्टाकहोल्म में फिर कई दिन रहकर एक दिन तीसरे पहर जर्मनी को रवाना हुआ । रात भर ऐसा तूफान रहा कि जहाज पर के सब लोगों की तवीयत बेचैन होगई । किसी को भी नोंद नहीं पडो, सब कय करते रहे । सौभाग्यवश मेरी तवीयत कहीं खराब नहीं हुई, लेकिन इस रात को बहुत कष्ट हुआ ।

विस्वी (Wisby-Gothland) । अन्त को किसी तरह, जब कि सब लोग मुर्दे से हो रहे थे, नव बजे हमारा जहाज हाथलेड द्वीप के प्रधान नगर विस्वी में पहुँचा । यह द्वीप स्वीडेन-राज्य के अधीन है । इस समय तूफान थम गया था, मगर हवा जोर ही से चल रही थी । इस तरफ के जहाजों में सेवक का काम औरतें ही करती हैं । वे रात भर सम्पूर्ण यात्रियों की सेवा लगातार करती रही थीं । द्वीप की मिट्टी पर पैर रखते ही जैसे जान में जान आई । एक होटल में जाकर भोजन किया । एक भारी फल-फूल के बाग के भीतर यह होटल था । बडो आराम की जगह थी । भोजन के उपरान्त नगर की कुछ सैर करके जहाज पर लौट आया । विस्वी बहुत पुराना नगर है । पूर्व समृद्धि के अनेक चिह्न इस समय भी देखने को मिलते हैं । गिर्जे बहुत से हैं, उनमें कई एक बहुत बुरी दूटी-फूटी हालत में हैं । नगर की चहारदीवारी और उसके टावर (Towers) आदि का कुछ अंश अभी तक बना हुआ है ।

जर्मनी ।



निमण्डे (Swinemunde) और स्टाटिन (Stetin) ।

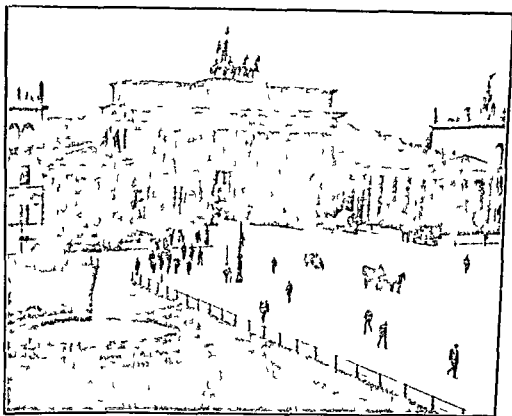
समुद्र तूफान के उपरान्त एक आइने की तरह समुद्र विलकुल शान्त हो गया । बाहर डेरू के ऊपर टेबिलों पर यात्री लोगों ने बड़े आराम के साथ भोजन किया । सन्ध्या के समय जर्मन-बन्दरगाह स्वीनिमण्डे

में जहाज जाकर लगा । कोई कोई लोग यहीं से रेल पर चढ़ कर अपने अपने गन्तव्य स्थान को चले गये । हम लोग कुछ देर तक समुद्र के किनारे की सड़क पर टहलते रहे । उसके बाद जहाज पर फिर चढ़ कर ओडर (Oder) नदी के ऊपर बने हुए स्टाटिन-बन्दर में पहुँचे । रास्ते में एक जगह ओडर नदी के मुहाने पर देखा कि एक जहाज बनाने का कारखाना है और उसमें कई साधारण और दो जगी जहाज बन रहे हैं । स्टाटिन इस प्रदेश का प्रधान नगर है । यह नगर राजधानी से ८४ मील है । इसमें एक लाख से अधिक लोग रहते हैं । समुद्रतट के स्वीनिमण्डे बन्दर में खूब बड़े बड़े जहाज रहते हैं । उनके सिवा साल में हजारों जहाज यहाँ आते जाते रहते हैं । रात को जरा देर शहर में घूमकर होटल में विश्राम किया । सबरे कलेवा करके रेल पर चढ़कर बरलिन (Berlin जर्मन लोगों का उच्चारण "बेयर्लिन्" है) को खाना हुआ । स्टाटिन में पहले-पहल कुत्तों की गाड़ी देखी । जर्मनी और आस्ट्रिया में माल से भरी हुई

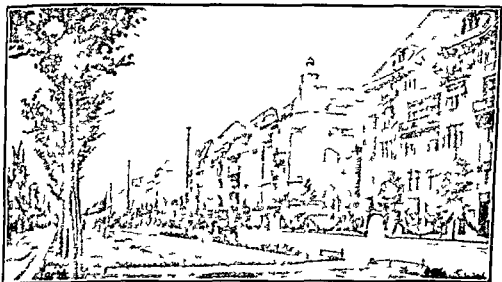
छोटी छोटी गाड़ियों को बड़े बड़े कुत्ते घसीटते हैं । अँगरेज लोग कुत्तों से ऐसा काम लेना अच्छा नहीं समझते । वे इसे अत्यन्त निठुराई का काम समझते हैं । जर्मन लोग ऐसे बनिये हैं कि वे शौक की चीज कुत्ते को भी बिठलाकर खिलाना नहीं चाहते । हमारे देश की तरह जर्मनी में भी रेलगाड़ियों के चार दर्जे हैं । हर एक ट्रेन में खियों और सिगरेट-चुरट न पीनेवालों के लिए अलग अलग गाड़ियाँ रहती हैं । यूरोप में और कहीं चार दर्जे की गाड़ियाँ नहीं हैं ।

बर्लिन । बर्लिन प्रुशिया-राज्य और जर्मन-साम्राज्य ((Deutshland) = इंग्लैंड, यह जर्मनी का देशी नाम है) की राजधानी है । इसे छोटा लन्दन कहना चाहिए । बर्लिन में २१ लाख के लगभग आदमी रहते हैं । थोड़े समय में बर्लिन की सब चीजें या दृश्य देखे नहीं जा सकते और जो देखे जा सकते हैं उनका वर्णन लिखना भी सहज काम नहीं है । आठ नव दिन यहाँ रहकर जो मैंने देखा उससे मुझे मालूम हुआ कि जर्मन लोगों ने स्व उन्नति की है और वे बड़े उद्योगी हैं । जर्मन लोग दिनों दिन उन्नति करते चले ही जाते हैं । जर्मन कारीगरों के हाथ की बनी चीजों न पृथ्वी भर को छा लिया है । यहाँ तक कि जर्मनी की चीजों की आमदनी और खपत ने इंग्लैंड के कारीगरो तरु को चिन्ता में डाल दिया है । मामूली खर्च से खाना-पीना चलाकर अधिक काम कर सकने के कारण जर्मन लोग अपनी चीजों को औरों से सस्ते भाव पर बाजार में बेच सकते हैं । इसी कारण कोई उनकी बराबरी नहीं कर सकता । सन् १८७० ७१ में फ्रांस के साथ जर्मनी की लड़ाई हुई थी । उसमें जय पाने के उपरान्त से ही इस राज्य की विशेष उन्नति और राजधानी की श्रीवृद्धि होने लगी है । नगर की प्रधान सड़क का नाम है “अन्टर डेन लिडेन” (Unter den Linden) “अर्थात् लाइम-पेड के नीचे” ।

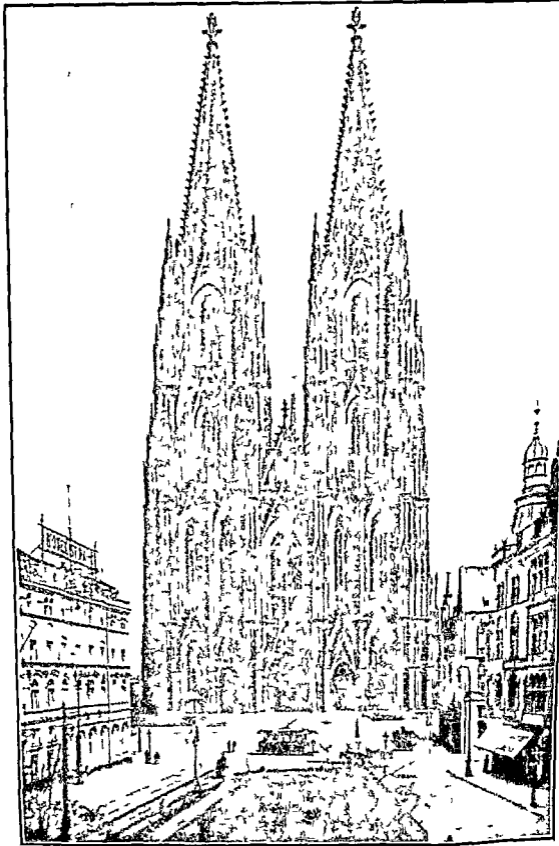
ऐसी नये ढंग की चौड़ी सड़क और कहीं नहीं है । यूरोप के सभी नगरों में पत्थर के टाइल अथवा किसी तरह के जमे हुए मसाले के पक्के फुटपाथ बने हुए हैं । इस प्रकार के फुटपाथों के बाद दोनों ओर दो गाड़ी के मार्ग हैं । उसके बाद दोनों बगलों में पेटों के कतार के भीतर दो मार्ग हैं । दोनों फुटपाथों के बीच में चौड़ा साधारण मार्ग है । बर्लिन की इस सड़क के बीच में एक ऊँची वेदी के ऊपर महात्मा राजा फ्रेडरिक (Frederick the Great) की भारी घुडसवार मूर्ति है । प्रथम नेपोलियन ने जब बर्लिन में प्रवेश किया तो उन्होंने इस धातु की बनी मूर्ति के सामने खड़े होकर कहा था कि “तुम अगर जीवित होते तो इस तरह यहाँ मेरा आना कभी न हो सकता ।” नेपोलियन के अनेक कामों से फ्रेडरिक के ऊपर उनकी विशेष श्रद्धा प्रकट होती है । पहले के महान् वीरों के प्रति नेपोलियन सदा समुचित सम्मान दिखाते थे । इसी सड़क के किनारे विश्वविद्यालय-भवन के द्वार पर इधर-उधर दो हुम्बोल्ड भाइयों (Wilhelm and Alexander Von Humboldt) की सफेद पत्थर की मूर्तियाँ हैं । एक समय ये दोनों भाई जर्मनी के दो प्रधान रत्न समझे जाते थे । ब्रान्डेनबर्ग-थुकोर (Brandenburger Thor) बड़ा भारी शाही फाटक है । २०० फुट चौड़े रास्ते पर पाँच खम्भों के भीतर होकर गाड़ियाँ आती-जाती हैं । खम्भों की छत के ऊपर चार घोड़ों के रखे हुए हैं, जो रहीं विजया देवी की मूर्ति है । इसके ऊपर और आस-पास का थर्वर्गिरी का काम प्रशंसा के योग्य है । इस फाटक के भीतर से नगर के प्रधान विहार-कानन सुविस्तृत थियेरगार्टेन (Thiergarten) को सड़क गई है । इस उद्यान में अनेक जातियों के बड़े बड़े पेड़ सुरुचि के साथ कायदे से लगाये गये हैं । यहाँ पर कई एक बड़ी बड़ी मूर्तियाँ हैं । उनमें उन्नीसवीं शताब्दी



ग्राण्डेनबर्ग फाटक—पृ० ४६४



शालटिनबर्ग—पृ० ४७२



कोलोन गिर्जा—पृ० ३८४

के प्रधान लोकशिक्षक महात्मा कार्लाइल और महामहोपाध्याय गेटे (Goethe) की मूर्तियाँ सुन्दर हैं । इसी के भीतर पशुशाला है । उसमें पशुओं के लिए इतनी जगह है कि वे जरा हाथ-पैर फैला कर विचर सकते हैं । इसी के पास एक और ४५ बीघे जमीन के ऊपर एक स्थायी प्रदर्शनी स्थापित है । दूसरी ओर फ्रेंच-युद्ध का स्मारक-चिह्न एक १-६० फुट ऊँचा जयस्तम्भ है । नीचे की वेदी और उसके ऊपर का गोलाकार चौड़े बरामदेवाला घर कलकत्ते के मनुमेंट के निचले हिस्से की अपेक्षा बहुत बड़ा है । स्तम्भ की चोटी पर विजया देवी की भारी धातु की मूर्ति है । इस पर सोने का पानी फिरा हुआ है । इस उद्यान के अन्तर्गत खाने-पीने और गाने-बजाने का अड्डा (Siegess saule) अत्यन्त रमणीय और लंबा चौड़ा है । इसका नाम है क्रोल गार्टेन (Kroll Garten) । सन्ध्या के समय विजली की रोशनी से सुशोभित और वृक्ष-लता-मण्डित निकुञ्ज के भीतर कुर्सियों टेबिलों पर बैठ कर अनेक लोग ग्रामोद-प्रमोद किया करते हैं । नित्य यहाँ पर बहुत से लोग जमा होते हैं । टेक्निकल स्कूल (Polytechnikum) में जाने के लिए वहाँ के अध्यक्ष से अनुमति लेनी पडी । उसके बाद एक कर्मचारी की सहायता से इस स्कूल की सब इमारत देखी । तदनन्तर वहाँ कई एक प्रक्रियायें (जैसे कागज की शक्ति की परीक्षा, तेल को पानी ऐसा पतला बनाना, बड़ी बड़ी लोहे की छड़ों को मूली की तरह काटना इत्यादि) देखी । प्रक्रिया-विज्ञान (Experimental Science) आदि सिखलाने के लिए अनेक विभाग हैं । इमारत भी वैसी ही भारी है । अनेक तरह के यन्त्र और कल-कारखाने यहाँ देख पडे । राज-वानी में अनेक राजभवन हैं । उनमें से प्रधान महल को “रास राजमहल (Königliche Schloss [Royal Castle]) कहते हैं ।

सर्वसाधारण लोग आधा 'मार्क' देने से १० वजे से १ वजे तक इस राजमहल को देख सकते हैं। यह आमदनी सर्वसाधारण के हित के किसी काम में खर्च हांती है। टिकिट लेने के उपरान्त दरवाजे पर कुछ अपक्षा करनी पडती है। बीस-पचीस दर्शक जमा होने पर एक कर्मचारी साथ ले जाकर दिखला लाता है। महल के फर्श वार्निश की टुई अच्छी लकडी के बने हुए हैं। इसलिए दर्शको को आप ही अपने बूट जूते उतार कर वहाँ रक्खी हुई स्लीपरें पहननी पडती हैं। पहले कमरे में अनेक कोमती पत्थर के स्तम्भ और प्रथम नेपोलियन का एक सुन्दर चित्रपट है। और एक भारी चित्र मे सन् १८७१ की १८ वीं जनवरी को वेयार्मेइल अभिनीत दृश्य दर्शनीय है। प्रथम जर्मन-सम्राट् वृद्ध विलियम मन्त्रियों और मुसाहवों के साथ उपस्थित हैं। प्रधान मन्त्रो प्रिंस बिस्मार्क (Prince Bismarck) घोषणा-पत्र पढ रहे हैं। यह घोषणा जर्मनसाम्राज्य की स्थापना की थी। देश के सब स्वाधीन राजो ने एक सम्राट् की अधीनता स्वीकार कर ली। फ्रान्स की राजधानी मे जर्मन-साम्राज्य की घोषणा निस्सन्देह एक अद्भुत बात थी। इस महल के अन्तिम कमरे में चाँदी के चबूतरे पर सगमरमर के खंभे बहुत ही अच्छे लगते हैं। यहाँ ३७ राजमुकुट रक्खे हैं। सम्राट् का मुकुट सधमें श्रेष्ठ है। इस महल मे ६०० कमरे हैं। महल के आँगन में दो बडे बडे फुहारे हैं। राज-परिवार का गिर्जा इसी के भीतर है।

आर्सेनल अर्थात् युद्ध की सामग्री का भवन। इसमें बहुत से कमरे हैं और उनमें अच्छे ढग से अनेक अस्त्र-शस्त्र, साज-सरजाम और अन्यान्य देखने की चीजें रक्खी हैं। उनमे से सोलहवीं सदी की कई तोपें, युद्धों में जीत कर लाई गई पताकायें, युद्ध में काम

आनेवाले आङ्किक यन्त्र आदि (Mathematical Instruments), विजली के कल-कारखाने, पीतल के रुवच, तयू-रुनात, सेनापतियों की मूर्तियाँ, कई एक युद्धचेत्रों की हूबहू नकलें, बारह राजों की पीतल की मूर्तियाँ, विजया और इतिहास की सगमरमर की मूर्तियाँ, कनिग्राज (Koniggratz 1866), सीडन (Sedan 1870), लिप्जिक (Leipsic 1813) और वाटर्लू (Waterloo 1815) के युद्धों के चित्र और फ्रेंच-युद्ध की ३८ तौपें और पताकाओं की माला, ये विशेषरूप से देखने की चीज हैं ।

जलजन्तुशाला (Aquarium) । यहाँ असंख्य प्रकार के जूफाइट (Zoophytes), मगर, मछली आदि पानी के जीव बड़ी ही सुव्यवस्था के साथ सुरक्षित हैं ।

होहेन जोलारेन म्यूजियम (Hohenzollern) । प्रुशिया के राजों का पहला राजमहल इसी नाम के एक छोटे से पहाड़ पर बहल बना था । उसी के नाम पर इस भवन का नाम रक्खा गया है । इस म्यूजियम में बहुत से धीशक्तिसम्पन्न महात्मा लोगों के चित्रपट हैं । फ्रेडरिक-दि-ग्रेट की कैंची, छुरी, लडकपन की गद्दी, लॉग, विछौना, उनके हाथ की जलाई एक मोमपत्ती, दो बक्स पर कर तरह तरह की बसियों (राजा को बसी बजाने का बड़ा पीक था), उनके खाने-पीने के बर्तन, हस्तलिपियाँ, बन्दूक, तरवार, राजा के प्यारे घोड़े का ढाँचा (Stuffed) आदि अनेक सामग्रियाँ गार कमरो में भरी पड़ी हैं । यहाँ राजों के वचपन की मोम की मूर्तियाँ और राजा-रानियों की पोशाकें भी देखने लायक हैं । प्रथम

इस युद्ध की जर्मन लोग Belle Alliance और फ्रेंच लोग Mont St Jean युद्ध कहते हैं । वाटर्लू और ये छोटे गाँव विस्कुट स ही पास हैं ।

सम्राट् विलियम और उनके पुत्र की लिटाई हुई, पतली चादर से ढकी हुई, मोम की मूर्तियाँ और उनकी वेपभूषा बहुत ही मनोहर हैं। बूढ़े विलियम की लडकपन की एक छोटी गाड़ी तक यहाँ रक्खी हुई है। प्रथम विलियम की २६ तरवारें और १८ टोपियाँ यहाँ रक्खी हैं। उनके पुत्र की भी एक तरवार यहाँ है।

बर्लिन^१ में अनेक छोटे-बड़े म्यूज़ियम हैं। उनमें से नवीन म्यूज़ियम के मानव सामाजिक (Ethnological) विभाग में इस तरह की अनेक देखने योग्य वस्तुएँ हैं जो साधारणतः बहुत कम देखने को मिलती हैं। भारत के बहुत से वाजे और प्राचीन गौड-नगर में प्राप्त एक टुकड़ा नकाशीदार पत्थर और बड़ी भारी बुद्ध-देव की मूर्ति, जगन्नाथ-बलभद्र-सुभद्रा-सहित एक रथ, बैलगाड़ी, कोल्हू और पट्टे चीरने के आरे आदि के दृश्य रक्खे हुए हैं। ससार की प्राथमिक अवस्था में लोह और पत्थर के बनाये गये बहुत से अस्त्र-शस्त्र भी यहाँ जमा हैं। भूगर्भ से निकले हुए अत्यन्त प्राचीन काल के सात मनुष्य-शरीर के ढाँचे और उस समय इस्तेमाल में आनेवाले पत्थर के अस्त्र-शस्त्र, जिस तरह जिस पृथ्वी की तह में मिले हैं वही तरह उस तह की मिट्टीसहित, काच के बक्खों में रक्खे हुए हैं। अमेरिकाखण्ड की प्राचीन समय की अनेक चीजें और जावा द्वीप में मिली हुई पद्मपाणि, गणेश, दुर्गा, महिषमर्दिनी और विष्णु की मूर्तियाँ तथा उसी द्वीप के बाँस के चोंगे पर लिखी हुई बटक (Batak) लिपि देखने की चोज़ हैं।

नगर का उद्भिद्-उद्यान भी जर्मन-राजधानी के योग्य ही है। इसमें २०,००० तरह के पेड़ हैं। पूर्वोक्त राजमहल के पास ही प्रधान गिर्जा है। यह ३३७ फुट लंबा है। इस नगर की मोम-मूर्ति-शाला सान्ध्य-विहार का एक अड्डा है। बर्लिन में तीन चित्र-

शालाये हैं । उनमें से प्रधान चित्रशाला में ३७ कमरे हैं । उनमें स्वदेशी, विदेशी, प्राचीन और आधुनिक चित्रकारों के १,४०० कीमती तैलचित्र रक्ते हैं । एक एक चित्र के दाम इतने हैं कि हमारे यहाँ के बहुत लोग सुन कर चौकन्ने होंगे । राफेल (Raphael), मुरिलो (Murillo) आदि चित्रकारों के हाथ के बने एक एक चित्र समय समय पर चार चार पाँच पाँच लाख रुपये तक के बिक गये हैं । इसका कारण एक यह भी है कि इन चित्रकारों के हाथ के बने चित्र इस समय बहुत दुर्लभ हैं । पृथ्वी के चौदह स्थानों की चित्रशालाओं में वर्लिन को सातवाँ नम्बर मिला है । इन चौदह में चार चित्रशालायें (Florence, Naples, Venice, Turin) इटली में और दो (Versailles, Louvre in Paris) पेरिस में हैं । सातवाँ नम्बर वर्लिन की चित्रशाला का है । शेष सात का नम्बर इसके नीचे है । अब्बल नम्बर पेरिस की (Versailles) चित्रशाला का है । क्रोध लोग बड़े शौकीन होते हैं और इटलियन लोग चित्रण-कला में अपना सानी नहीं रखते । इस बात में इन दोनों देशों की प्रधानता का यही कारण है । जितनी का वर्णन किया जा चुका है उनके सिवा अन्यान्य अनेक रमणीय बड़ी बड़ी इमारतें, मूर्तियाँ, स्तम्भ और स्कायर (Square) आदि वर्लिन की शोभा बढ़ा रहे हैं । हमारे यहाँ की इमारतों और यूरोप की इमारतों में आकाश-पाताल का अन्तर है । यूरोप के साधारण मकान (Public buildings), स्कायर, स्मारक स्तम्भ और मूर्तियाँ लाखों—करोड़ों की लागत के हैं । रावण की मूर्छें जैसे ताड़ के पेड़ की इतनी थीं वैसे ही यूरोप की साधारण चीजें भी बड़ी और भारी हैं । यूरोप के एक साधारण दूकानदार की जैसी इमारत है वैसी इमारत यहाँ के हर एक राजा-महाराजा के यहाँ न निकलेगी । यूरोप के बम्पुलिस भी सौन्दर्य सजावट और

सफ़ाई में हमारे यहाँ के महलों से अच्छे हैं । यूरोप और भारत की अनेक बातों में ऐसा ही आकाश-पाताल का अन्तर है । आप अपने यहाँ के एक मैले कुचैले कृष्णकाय रोगी दुर्बल भिखारी पुरुष के पास एक सुन्दर पोशाक पहने सुस्थ सबल सुढौल डीलडौल-वाले अँगरेज को सडा करके दोनों में जैसा अन्तर पावेगे वैसा ही अन्तर भारत और यूरोप की दशा में है । यूरोप में ऐसे महान् सुन्दर दृश्य चारों ओर हैं कि उनसे शरीर और मन में फुर्ती लानेवाली तथा चित्त को उन्नत बनानेवाली शिक्षा प्राप्त होती है । वहाँ छोटे से लेकर बड़े तक का ध्यान इस ओर रहता है कि किसी प्रकार का कुत्सित भाव दर्शक की आँखों के आगे उपस्थित होकर उसके मन में घृणा उत्पन्न करके उसे कष्ट न दे—उसे उससे कुरुचि का परिचय न प्राप्त हो । सब लोग अपने शरीर, सामान और घर को सदा साफ रखते हैं । हमारे यहाँ के बाजारों और सडको पर आपको देख पडेगा कि कहीं कूडे का ढेर लगा है, कहीं धूल उड रही है, कहीं दंगा-हगामा हो रहा है, कहीं गाली-गलौज लडाई-भगडा हो रहा है, फटे चीथडे पहने भिडुक राह चलनेवालों को तड्ड कर रहे हैं । हमारे यहाँ अगर कोई उत्साह से कोई काम करने के लिए घर से निकलता भी है तो बाहर के इन दृश्यों का उसके हृदय पर ऐसा असर पडता है कि उत्साह की मात्रा बहुत कुछ घट जाती है । इस पुण्यभूमि भारत की आज-कल ऐसी ही हालत है । उधर यूरोप की सडको पर देखिए, जवान-बच्चे-बूडे औरत-मर्द सब स्वस्थ और सबल हैं । वे सुन्दर साज-सज्जा से विभूषित होकर हृदय के उछास से हँसते हुए अपना अपना काम करने के लिए तेजी से चले जा रहे हैं । उनकी पुष्प-शोभित सुगन्ध-सिक्त पोशाकों का दृश्य और सुवास चारों ओर फैलकर राह

चलनेवालों के मन में दूना उत्साह उपजा रहे हैं । यदि विल्कुल मुर्दे की हालत में भी आप घर से निकलिये तो भी सड़क पर पैर रखते ही आपकी सारी शिथिलता दूर हो जायगी और एक नई शक्ति सी हृदय में आजायगी ।

बर्लिन के भीतर होकर एक रेलवे-लाइन निकली है । राह में खभे बना कर उनके ऊपर यह लाइन गई है । खभों के निचले भाग में अनेक चीजों की दूकानें हैं । अमेरिका की उच्च रेलवे लाइन (Elevated Railway) की अपेक्षा यह बन्दोवस्त बहुत अच्छा है । इस प्रबन्ध से सड़कों की कोई चिन्ता नहीं हुई ।

नगर के दृश्यों में निम्नलिखित दृश्य प्रधान हैं—प्राचीन प्रुशियन राजमहल, सम्राट् का महल, म्यूजियम, युवराज का महल, ब्राण्डेनबर्ग युयोर, जातीय चित्रशाला, रायल थियेटर, रायल अपेरा-भवन, बैंक, एक्सचेञ्ज, ग्लोरी-हाल, (Glory Hall), प्रधान गिर्जा, बड़ा रेलवे स्टेशन, टाउनहाल, पार्लियामेंट-भवन, युद्धसामग्री-भवन, पैसेज (Passage), बड़ा डाकघर, कैसर-होटल, सेन्ट्रल-होटल, फ्रेडरिक-दि ग्रेट, गेटे, ब्लूशर, शिलर आदि पाँच सेना-पतियो, सात राजा और एक रानी की मूर्तियाँ, सेन्ट जार्ज (St George) और ड्रागन (Dragon) की मूर्तियाँ, जयस्तम्भ, शान्ति-स्तम्भ (१-६७ फुट का), लौह स्तम्भ (१२० फुट का), म्यूजियम में रक्खी हुई सिंहहन्ता और आमाजन (The Lion-killer and Amazon) की घुडसवार मूर्तियाँ, विहारकानन, प्रमोदकानन, शिलर-प्लाज और बेल-अलायन्स प्लाज ।

बर्लिन के घरवार सब खूब साफ सुथरे हैं । जरा अच्छी स्थिति के गृहस्थ के यहाँ भी आप देखेंगे कि भीतर और बाहर दो तापमान-यन्त्र (Thermometer) रक्खे हुए हैं । होटल आदि सर्वसाधारण

के रहने के स्थानों में भी परिच्छन्नता (Sanitation) की व्यवस्था बहुत अच्छी है। जर्मन-साम्राज्य की राजधानी में यह व्यवस्था देखी कि हर जगह हवा साफ करनेवाली (Deodorizing and disinfectant) एक ऐसी वैज्ञानिक वस्तु का इस्तेमाल किया जाता है कि हवा आप ही आप साफ होती रहती है।

शार्लोटेंबर्ग (Charlottenburg) । यह स्थान बर्लिन से तीन मील पर है। रेल की राह है। इस स्थान को बर्लिन का उपनगर भी कह सकते हैं। इस देश के लोग इसे तीर्थस्थान के समान मानते हैं। जिन प्रुशियन राजा और रानी (King Frederick Wilham III and his Excellent Queen Louisa) का यहाँ मसोलियम अर्थात् समाधि-मन्दिर है उन्हें प्रुशियन लोग विशेष श्रद्धा और भक्ति के साथ स्मरण करते हैं। समाधि-मन्दिर के भीतरी भाग को शोक के भाव से युक्त करने के लिए नीले रंग के काच की छत बनाई गई है। घर के भीतरी भाग में नीली आभा छाई रहती है। बीच में दो सगमरमर के ऊँचे चबूतरों पर राजा और रानी की सगमरमर की मूर्तियाँ लट्टी हुई हैं। एक लम्बी-चौड़ी बगिया के भीतर यह मन्दिर बना हुआ है। इस उद्यान के सामने ही राजमहल है। यह २०० वर्ष से भी पहले का बना हुआ है। यहाँ पर एक बड़े भारी शीशे के घर में बहुत से गर्म देशों के वृक्ष और लतायें लगी हुई हैं। इस महल के अन्तर्गत एक थियेटर-भवन भी है।

पाट्सडम (Potsdam) । बर्लिन से सोलह मील की दूरी पर हेवेल (Havel) नदी के किनारे यह छोटी सी नगरी है। यही जगह फ्रेडरिक-दि-ग्रेट की लीला-भूमि और समाधि-स्थान है। यह नगर शार्लोटेंबर्ग की तरह छोटा है। मगर यहाँ अनेक बड़े बड़े

मकान और गिर्जे आदि देखने लायक हैं । प्रमोद-कानन से घिरे हुए राजमहल के भीतर फ्रेडरिक-दि-ग्रेट की लाइब्रेरी, मार्बल-हाल (Marble Hall) आदि कमरों में फ्रेडरिक-दि ग्रेट का बहुत सा सामान रक्खा है । जिस डेस्क पर बैठ कर फ्रेडरिक लिखते थे उसके ऊपर की बनावत का एक टुकड़ा, उनके स्मारकचिह्न की तरह अपने पास रखने के लिए, प्रथम नेपोलियन फाड़ ले गया था । यहाँ पर फ्रेडरिक के भोजन के टेबिल पर उनके चाय पीने की प्यालियाँ तक रक्खी हुई हैं । जिस कमरे में बैठ कर वह प्रजा की प्रार्थना सुनते थे वहाँ उन्हीं का भँगाया हुआ बम्बई के पालिश किये हुए ग्रेनाइट पत्थर का एक टेबिल रक्खा है । एक कमरा वह भी देखा, जिसमें सम्राट् नेपोलियन ने एक रात बिताई थी । यहाँ भी एक नगर का फाटक है । उसका नाम है ब्राण्डेन बर्ग फाटक । सन् १७७० में यह स्थापित हुआ था । इसके भीतर से फ्रेडरिक के प्यारे रमण-बाग और विलास-भवन साँसुसी (Sans Souci) को सडक गई है । फ्रेडरिक के बतलाय नकशे के माफिक यह उद्यान और भवन बना है । पार्क में टहलने के अनेक रमणीय स्थान (Promenade), मूर्तियाँ और फुहारे हैं । एक फुहारे का जल १२० फुट ऊँचा जाता है । महल के सामने की १०० के लगभग सीढियों के दोनों ओर, उसी तरह नीचे-ऊँचे ढँग से, वृक्षों की सुन्दर सजावट है । महल में २०० से अधिक कमरे, ४०० से ऊपर दरवाजे और छत के ऊपर ४५० के लगभग मूर्तियाँ स्थापित हैं । यहाँ भी फ्रेडरिक-दि-ग्रेट का लिखन का डेस्क, दावात और हस्तलिपि रक्खी है । जिस दरवाजे के पास जिस कुर्सी पर फ्रेडरिक मरे वह भी वहाँ रक्खी हुई है । दो वज के बीस मिनट पर वह मरे थे, इसकी सूचना देने के लिए एक घड़ी वहाँ रक्खी है जिसमें वही समय दिखलाया

गया है । फ्रेंडरिक का प्रसिद्ध बालक नौकर जिस आराम-कुर्मी पर एकाएक सो गया था, वह भी वहाँ रक्खी थी । सुप्रसिद्ध फ्रेंच दार्शनिक वाल्टेयर कुछ दिन राजा के पास रहे थे । वह जिस घर में रहते थे वह इस समय भी 'वाल्टेयर-भवन' के नाम से यात्रियों को दिखलाया जाता है । इस घर में वाल्टेयर का एक तैल-चित्र और एक अर्द्ध-मूर्ति (bust) स्थापित है । इस शाही बाग के पास ही एक हवाईकल (Windmill) है । यह कल बाग और महल के बहुत पहले से यहाँ पर स्थापित है । फ्रेंडरिक ने इस कल को उठा देने की बहुत चेष्टा की । परन्तु उसके मालिक ने किसी कीमत पर वह मिल नहीं उठानी चाही, और इसी से वह अब तक वही पर स्थापित है । अब देश विदेश के लोग उसे "ऐतिहासिक मिल" (The Historic mill) कहते हैं । राजा भी धन्य है । प्रजा भी धन्य है । और यूरोप महा-देश भी धन्य है । यदि दिल्ली के बादशाह के विलास-भवन के पास इस तरह की कल रहकर दिन रात अपनी घरघराहट से बादशाह को बेचैन करती और उसका मालिक इच्छापूर्वक उसे बंद न करना चाहता तो आपही बतलाइए, उस कारखाने की क्या दशा होती ? प्रजा का भी साहस और स्वाधीनता का तेज तो देखिए । केवल इसी घटना पर विचार करने से यूरोप और एशिया का अन्तर मालूम पड़ जाता है । यह घटना सौ बरस से भी पहले की है । उस समय हमारे यहाँ दिल्ली के बादशाह की कौन कहे, साधारण जमींदार के साथ भी प्रजा की ऐसी अनबन होने से तो उस प्रजा की न-जाने क्या दुर्दशा होती । सौ बरस पहले की बात जाने दा, इस बीसवीं शताब्दी के सुसभ्य समय में अगर कोई काला आदमी ऐसे स्थान पर किसी गोरे का कहना न माने और उसके आराम में बाधा डाले तो न-जाने क्या आफत खड़ी हो जाय ।

पाट्सडम में मर्मरमहल (Marmor Palais), नीचू बाग (Orangerie), टाउनहाल आदि अन्यान्य चीजें देखकर मैं यह खोज करने लगा कि महात्मा फ्रेडरिक की समाधि किस गिर्जे में है। बहुत घूमने-घामने पर वह गिर्जा मिला भी तो उसका दर्वाजा बन्द था। एक फ्रेंच भद्रपुरुष और उनकी स्त्री भी, दोनों, मेरी तरह खोजते खोजते वही पहुँचे। वह भद्रपुरुष तो विल्कुल अँगरेजी न जानते थे, मगर उनकी स्त्री अच्छी तरह अँगरेजी बोलती और समझ लेती थी। स्त्री से मालूम हुआ कि वह भद्रपुरुष फ्रांस के आवकारी महकमे के अफसर हैं और छुट्टी लेकर देश-पर्यटन करने निकले हैं। अँगरेजी न जानने के लिए दुःखित होकर उन भद्रपुरुष ने बड़े विनीत भाव से अपनी स्त्री के द्वारा मुझसे अनेक बातें पूछीं। राह में सूब थक जाने पर भी मैं उस गिर्जे के तीन दरवानों को उनके घर से बुला लाया। उनके आने पर गिर्जे में प्रवेश किया। इस गिर्जे में पिता और पुत्र दोनों के शव टीन से जड़े हुए काठ के बक्म में फर्श पर रखे हैं। सन् १८६६ के आस्ट्रियन-युद्ध और सन् १८७० के फ्रेच-युद्ध की पताकाये चारों ओर टँगी हुई हैं। फ्रेडरिक की माता के हाथ का रेशमी कपड़े के ऊपर बना हुआ सुई का काम और रानी अगस्टा (Queen Augusta) का बुना हुआ कार्पेट यहाँ यत्रपूर्वक सुरक्षित है। सन् १८०६ में नेपोलियन यहाँ पर आय थे।

प्रुशिया-राज्य की साधारण अवस्था। खास प्रुशिया-राज्य में १२ विश्वविद्यालय और १०० से अधिक सरकारी स्कूल हैं। सन् १८९२ में बीस करोड़ पौण्ड से ऊपर राजकर वसूल हुआ था और उसी साल राज्य का ऋण अड़तालीस करोड़ पौण्ड था। राज्य की शासन-प्रणाली इंग्लैंड की ऐसी (Constitutional Monarchy) है। राजा और दो पार्लियामेंट सभाओं के द्वारा सब राजकाज होते हैं।

पहले एक जगह कहा जा चुका है कि सन् १८७०-७१ के फ्रेंचयुद्ध के अन्त में पेरिस के उपनगर वेयारसेइल के राजभवन में सन् १८७१ की १८ वीं जनवरी को प्रुशिया के तत्कालीन राजा विलियम सारे जर्मन-साम्राज्य के सम्राट् बने । तब से प्रुशिया-राज्य ही साम्राज्य का सञ्चालक ममभा जाता है । इसी साल के दिसम्बर महीने में जर्मनी के भिन्न भिन्न राज्यों के जुदे जुदे सिक्कों की जगह एक ही तरह का सिक्का सब जगह चलाया गया । इस समय भी यद्यपि जुदे जुदे राजों के जुदे जुदे पुराने सिक्के देश में चलते हैं, लेकिन नये सिक्के का ही चलन बहुतायत से है । यहाँ के चाँदी के सिक्के का नाम है मार्क (Mark) और वह अँगरेजी शिलिंग की कीमत का होता है । यहाँ का पैसा फेनिग (Pfennige) कहलाता है । ५, १०, २० मार्क के सोने के सिक्के भी हैं । नोट भी यहाँ बराबर पर चलते हैं । यहाँ ताँबे के पैसे नहीं होते । थोड़े दाम के पैसे आदि सिक्के निकेल (Nickel) और एक प्रकार की पीतल (Bronza) के बनते हैं ।

वितेनबर्ग (Wiltenberg) । बर्लिन से लिपजिक जाते समय यह छोटा सा नगर मिला । केवल यहाँ के गिर्जे में लूथर और उनके बन्धु मेलान्थियन (Melancthon) की समाधि देखने के लिए यहाँ जाना हुआ । दोनो समाधियाँ पास ही पास बनी हैं । सन् १५१७ की ३१ वीं अक्तूबर को लूथर ने इसी नगर में पोप की स्वर्ग की ठेकेदारी (Indulgences) के विरुद्ध बड़े बड़े विज्ञापन चिपकाये थे । उसी दिन से प्रोटेस्टेन्ट-धर्म में जान पड़ने लगी । बाजार में 'महात्मा लूथर की एक बड़ी भारी पीतल की मूर्ति खड़ी है । उसके पैरों के पास जर्मन-भाषा में लिखा है—“ईश्वर का काम होने से वह युगयुगान्तर तक बना रहेगा और अगर आदमी का

द्वयाल होगा तो वह शीघ्र ही भिट जायगा" । इसी मूर्ति के
 मेलान्धियन की भी मूर्ति है । यहाँ एक 'ओरु' का पेड़ है,
 के नीचे लूघर ने सन् १५२० को १० वीं दिसम्बर को पोप की
 नामरु घोषणाओ को जलाकर राख कर दिया था । यह नगर
 नदी के किनारे पर है । यहाँ की लोक-सख्या १३,००० के
 भग है ।

लिपजिग (Lipzig) । इसका स्थानीय नाम है "लाइपजिग" ।
 छोटी छोटी नदियों के सगम पर यह नगर बसा है । सन् १८७६
 युक्त जर्मन साम्राज्य को सुप्रीम-कोर्ट यहाँ पर है । नगर के
 र का सुन्दर घृत्तपत्तिशोभित अगस्टस् प्लाज (Augustus-platz)
 बहुत ही मनोरम है । इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह नगर
 र और रैनफ़दार है । गेटे ने अपन 'फाउस्ट' में छोटा पेरिस
 lem-Paris) कह कर इस नगर का वर्णन किया है । यहाँ साल
 तीन बार भारी मेला लगता है । यहाँ ३०० पुस्तको को दूकाने
 तीनों मेलों में मिला कर साल में यहाँ एक करोड पौण्ड के
 र माल को बिक्री होता है । एक मेले में तो सारे यूरोप के राज-
 यहाँ यहाँ पुस्तके खरीदने आते हैं । यहाँ का विश्वविद्यालय प्राचीन
 र प्रसिद्ध है । गेटे (Goethe), फिघ्टे (Fichte), शेलिंग
 helling) आदि विद्वान् इसी विश्वविद्यालय के छात्र थे । प्रसिद्ध
 र्निरु और गणितज्ञ लिब्वनिज (Leibnitz) और प्रसिद्ध संगीत-
 यिता वागनर (Wagner) इसी नगर में पैदा हुए थे । यहाँ के
 यों में न्यूजियम, आर्सेनल टाउनहाल, शीशमहल, १४ बीघे जमीन
 बना हुआ स्थविराश्रम, मानमन्दिर, 'फाउस्ट' में जिसका वर्णन
 या गया है वह भूगर्भस्थ गोदाम (Auerbach's Cellar), एक
 टे से खम्भे पर रखवा हुआ किसी प्रसिद्ध युद्ध का एक गोला,

मेण्डरब्रुनेन (Menderbrunnen) फुहारा और स्तम्भ, क्रीडा कर रहे इस पत्तियों से सुशोभित सोयन-भील, उसके सामने का थियेटर भवन, लूथर और मेलान्थियन की मूर्तियाँ, लिब्वनिज और होमि; ओपेथिक 'हानिमान' की मूर्तियाँ, पोल-राजवशावतस महावीर पोनियाटौस्की (Poniatowsky) * का मनुमेन्ट, प्लेजेनवर्गमहल (Schloss Peissenburg), गिर्जा और यहूदियों का भजनमन्दिर Synagogue), ये दृश्य प्रधान हैं। इनके सिवा और भी कई एक स्तम्भ, मनुमेन्ट और मनोहर इमारतें हैं। महात्मा लूथर के नाम का भी एक गिर्जा है। उपनगर का रोजेन्थाल (Rosenthal), नाम का वाग अत्यन्त मनोरम है। उपनगरो को भी लेकर यहाँ की जन-संख्या तीन लाख के लगभग है। ऐसे भी प्रमाण पाये गये हैं कि इस स्थान में प्रस्तर-युग से मनुष्यों का निवास है। नगर के छोर का प्रसिद्ध दृश्य है। सन् १८१३ के अक्तूबर महीने में होनेवाले महान् युद्ध का मैदान और उनका चिह्न-स्वरूप नेपोलियन-स्तम्भ (Napolean-Stein), स्तम्भ की चोटी पर एक लोहे की गद्दे के ऊपर नेपोलियन की टोपी और तरवार की लोहे की प्रतिमूर्ति स्थापित है। स्तम्भ में, जर्मनभाषा में, अन्यान्य युद्ध की बातों के साथ हार की तारीख "८ अक्तूबर १८१३" लिखी हुई है। इस महान् युद्ध को ऐतिहासिक लोग "Battle of Nations" अथवा "Battle of giants" कहते

यह नेपोलियन की ओर के एक भारी वीर पुरुष थे। प्रसिद्ध लिपजिग युद्ध के अन्त में नदीपार होने के समय घोंटे-सहित मृत्यु को प्राप्त हुए। इन महात्मा का हृदय ऐसा बच था कि समाधि देते समय शत्रु और मित्र दोनों ने समान सम्मान दिलाया था। इनके मरने से पोल-जाति की तो आग पर ही पानी फिर गया।

हैं । यह युद्ध अद्वितीय था । सृष्टि जब से हुई तब से उस समय तक और कोई ऐसा युद्ध नहीं हुआ था जिसमें इतनी शिथिल सेना दोनों ओर से लड़ी हो । यहीं पर नेपोलियन की कुछ सेना युद्ध के मैदान में नेपोलियन को छोड़ कर स्वाधीनता का उद्धार करनेवालों के साथ मिल गई और इसी युद्ध में हारने की चोट से नेपोलियन का हृदय भग्न हो गया । इसके पहले ही मास्को-विभ्राट् हो चुका था । उसकी ज्वाला इस हार से दूनी होगई और उससे फ्रान्स का वीरज जाता रहा । इसका फल यह हुआ कि सम्राट् नेपोलियन पदच्युत होकर एल्बा को गये । दैव की कृपा नेपोलियन पर थी, इसी से वह इस जगह से जान लेकर भाग सके, नहीं तो यहाँ वे कैद कर लिये जाते । यहाँ के चारों ओर का दृश्य देखकर हृदय में अनेक प्रकार के भाव उत्पन्न हुए । अन्त को पोनियाटौस्की के मृत्युस्थान को देखने गया ।

ड्रेस्टेन (Dresden) लिपजिग से ड्रेस्टेन पहुँच कर नदीतट का आठ दिन तक रहनेवाला मेला देखन गया । मेले में भले आदमी बहुत कम देख पडे । चारों ओर के देहाती निम्न श्रेणी के लोगों की ही भरमार अधिक थी । तीसरे पहर बैंक में नाट भुनाने गया । वहाँ से लौटकर होटल में प्रवेश करते समय गोष्ठा-नहर की यात्रा में जिनका साथ हुआ था वही पूर्वपरिचित हँसमुख प्रसन्नचित्त अमेरिकन रमणी अपने भावी स्वामी के साथ खड़ी हुई होटल के एक कर्मचारी से बातें करती देख पडी । मैं हैट उतार कर खडा होगया । बातचीत समाप्त करके जैसे ही अमेरिकन रमणी ने फिर कर मुझे देखा वैसे ही दौडकर मेरे दोनों हाथ अपने हाथों में ले लिये और बड़ी प्रसन्नता के साथ कुशल प्रश्न करके मुझे अपने साथ होटल में ले गई । वहा उनके साथ के अन्यान्य पूर्वपरि-

चित्त अमेरिकन खी-पुरुषो से भी मुलाकात हुई । सवने अत्यन्त आदर के साथ अमेरिका-यात्रा के समय अपने अपने घर मुझे बुलाया । ड्रेस्डेन शहर सैक्सनी (Saxony) राज्य की राजधानी है । यह एल्ब (Elbe) नदी के किनारे बसा हुआ है । इसकी जन-संख्या दो लाख के ऊपर है । यह ऐसा रमणीय शहर है कि इसे लोग जर्मनी का 'फ्लोरेन्स' (Florence) कहते हैं । नदी के दोनों किनारों पर शहर बसा है । इधर से उधर जाने के लिए नदी में दो पुल हैं । बाएँ किनारे की अपेक्षा दक्षिण-तट की सड़कें और गली-कूचे सीधे और चौड़े हैं, किन्तु बाएँ किनारे पर ही लोग अधिक बसते हैं । नदी-तट के उच्च स्थान के ऊपर कतार की कतार बाग और मकानात बहुत ही भले जान पड़ते हैं । यहाँ के राजमहल पर जो विजयादेवी की मूर्ति है उसके रथ में चार बाघ जुते हुए हैं । यहाँ सर्वत्र ऐसे स्थलों पर चार घोड़ों की चार बाघ स्थापित हैं । महल का टावर ३८७ फुट ऊँचा है । बाहर से तो यह महल उतना सुन्दर नहीं जान पड़ता लेकिन इसके भीतर का साज-सामान बहुत सुन्दर और उच्च-श्रेणी का है । महल के आठ कमरों में ३००० बहुमूल्य मणि-मुक्ता आदि रत्न और अम्बर (Amber), सुवर्ण, चाँदी और हाथीदाँत के बने सामान सुरुचि का परिचय देनेवाले सुन्दर ढङ्ग से सजाये हुए रक्खे हैं । इनमें एक ४३ वर्ग फुट की चाँदी की प्लेट के ऊपर मीने (Enamel) और सोने की बनी १३२ मूर्तियों के द्वारा वादशाह औरङ्गजेब का दरबार दिखलाया गया है । महल के इस खण्ड को अँगरेजी में "ग्रोनवाल्ड" और जर्मन-भाषा में ("Grüne Gewölbe") कहते हैं । इस समूह में ६३ × २३ वर्ग-इंच का एक ओनिक्स (Onyx) पत्थर है । उससे बड़ा यह पत्थर और ऊँची नहीं है । बौने की शरूल का एक मोती ४० करात भारी एक पन्ना भी यहाँ है ।

महल के और एक भरा में २,००० से अधिक अनेक प्रकार के अख-
शास्त्र रक्ते हुए हैं।

ब्रुंस्टेन के म्यूजियम की चित्रशाला का नम्बर सत्तार में दूसरा
है। जब वेयारसेइल की प्रधान चित्रशाला और लूव्रे का समूह
देखा था तब चित्रकला का उतना ज्ञान मुझे नहीं था, इसी से वहाँ
का देखना अन्धे के आँसू देखने के समान था। अनेक देशों के
चित्र-समूह देख कर यहाँ आया था इसी से चित्रकला की खूबियाँ को
हुछ हुछ जानने-पहचानने लगा था। यहाँ २,५०० चित्रों का समूह
और राफेल (Raphael) और टिटियन (Titian) आदि प्रधान
प्रधान इटलियन, पोर्च्युगोज प्लेमिश और फ्रेंच चित्रकारों के हाथ
के चित्र देखकर मैं तो मुग्ध सा हो गया। एक एक चित्र के सामने से
शीघ्र हटने की इच्छा नहीं होती थी। राफेल के बनाये माडोना के
चित्र और छोटे हाज़विन (Younger Holbein) के बनाये मेरी के
चित्र के लिए दो अलग अलग कमरे हैं। इनके सिवा उत्तर अन्तरीप
के मार्ग के मनोहर दृश्य इस प्रकार सजीव भाव से चित्रित हैं कि
उन्हे पहले देखकर मैं तो चौंक पडा। ब्रुंस्टेन की चित्रशाला का
वर्णन करना मनुष्य के लिए तो असम्भव ही है। इस तैलचित्रों के
समूह के अलावा म्यूजियम के दूसरे हिस्से में साठे तीन लाख से
अधिक अत्यन्त उत्कृष्ट एनग्रेविंग चित्रों का समूह है। म्यूजियम में
पुरानी चीजों और नक्काशी की कारीगरियों का भी प्रशस्तनीय
समूह है। गटेनबर्ग में बना हुआ पहला प्रेस भी यहाँ रक्खा है।

ब्रुंस्टेन की अन्यान्य प्रधान और दर्शनीय वस्तुएँ ये हैं—
जापानी भवन, थियेटर, राजकुमारों का महल, बुल-महल, विजया
की मूर्ति, जोहानियम म्यूजियम (इसमें चीन, जापान, भारत
और निरुद्वर्त्ता मिसेन नगर के मिट्टी के वर्तन आदि बहुत से

रक्खे हैं), जुइङ्गर-हर्म्यमाला और वाग (इसमें एक म्यूजियम है और उसमें राफेल, गेटे, डान्टे आदि की मूर्तियाँ और बहुत सी प्राचीन बन्दूकें तथा तोपें रक्खी हैं) और कई एक गिर्ज । इनके सिवा छोटे छोटे विहार-वाग और एक मय टापू के छोटी सी भील भी देखने योग्य है । नदी तट का स्थान बडी धाराम की जगह है । ड्रेस्टेन के निकट एक भारी युद्ध में नेपोलियन ने विजय पाई थी । इस नगर की आबादी साठे पाँच लाख के ऊपर है । यहाँ से मैं वोहेमिया की रवाना हुआ ।

मेर्याज (Mainz) । अँगरेजों में इसे मेयान्स (Mayence) कहते हैं । यूरोप में भ्रमण करते समय मैं तीन बार जर्मन-साम्राज्य में आया । एक बार स्वीडेन से, दूसरी बार स्वीजर्लेण्ड से और तीसरी बार हालेण्ड से । मैं बेजूल या बाल (Basle or Bale) नगर होकर इस बार यहाँ आया । रोमन-साम्राज्य के समय इस नगर का नाम था मागान्टियाकम् । यह नगर राइन (Rhine) नदी के किनारे अर्ध-चन्द्राकार होकर बसा है । नगर के दोनों किनारे सीधे और पिछला हिस्सा गोल है । यहाँ का प्रधान गिर्जा या "डोम" हजार वर्ष से अधिक पुराना है । स्थानीय म्यूजियम के ६ कमरों में चित्रों का संग्रह है । अन्यान्य कमरों में बहुत सी प्राचीन रोमन-चीजें, सिक्के और मेडल, नेपोलियन के डबल पुल की नकल, ज्योतिषी-घड़ी, एक लाख से अधिक छपे हुए ग्रन्थ और बहुत सी हस्तलिपियाँ रक्खी हुई हैं । लाइब्रेरी में विशेष रूप से देखने की चीज है महात्मा गटेन बर्ग (Gutenberg) की कीर्ति । इन्होंने ही पहले-पहल टाइप से छापने की रीति का आविष्कार किया था । उनकी अपने हाथ की छपी हुई बाइबिल की सामगाथा (Psalms) और पहले की छपी दो पूरी बाइबिलें यहाँ रक्खी हुई हैं । एक चित्र में यह दृश्य

जर्मनी ।

दिखाया है कि गटेनवर्ग छाप रहे हैं और उनके दोनों सहकारियों फास्ट और राफर—उनकी सहायता कर रहे हैं। अन्य एक में यह दृश्य है कि प्रेस के आविष्कार से ज्ञान-विस्तार की वि-सहायता देने के कारण यूरोप, एशिया, आफ्रीका और अमेरिका महादेश उनको प्रणाम कर रहे हैं। यह कहा जा चुका है उन्होंने पहले पहल जिस प्रेस में छपाई का काम किया था ड्रेस्टेन में रक्ता हुआ है।

में न्यूजियम आदि देखकर गटेनवर्ग का मकान और मूर्ति देख गया। उनका मकान बड़े यत्न के साथ सुरक्षित है। वहाँ इस समय एक पियर-क्लब या 'काजिनो' (casino) स्थापित है। इसी घर में गटेनवर्ग का जन्म हुआ था और यहीं उन्होंने छपाई का काम किया। मेरी सम्झ में ऐसे तीर्थस्थान में खाने पीने गाने-बजाने आदि का जगह कायम करना अच्छा नहीं। थियेटर के सामने जगत्प्रसिद्ध घरवाल्सडेन के हाथ की बनी गटेनवर्ग की मूर्ति स्थापित है। चबूतरों पर एक ओर वृद्ध गटेनवर्ग टाइप कपोज करने का तरीका बतला रहे हैं और दूसरी ओर छपाई का काम हो रहा है। एक ओर जर्मन-भाषा में और दूसरी ओर लैटिन-भाषा में लिखा है कि "सर्वसाधारण में ज्ञान फैलाने के मार्ग का इन्होंने ही आविष्कार किया।" इसी नगर में शिलर की भी एक मूर्ति है। नगर की जन-संख्या ७०,००० के लगभग है। यहाँ से राइन स्टीमर पर चढ़कर कोलोन को रवाना हुआ।

राइन नदी। यूरोप में यह एक प्रसिद्ध नदी है। ऐतिहासिकता और रमणीयता के खयाल से यह सर्वश्रेष्ठ नदी है। मेयाँज से वान (Bonn) तक इस नदी का दृश्य विशेषरूप से मनोरम है। हर साल गर्मियों में पृथ्वी के अनेक देशों से बहुत से यात्री इस नदी की शोभा

देखने आते हैं । इसे बिना देखे यूरोप की यात्रा अधूरी समझी जाती है । इसी नदी के द्वारा जर्मनी में रामन-सभ्यता फैली । मध्ययुग के इतिहास में यह नदी प्रसिद्ध है । इसी नदी-तट पर दो प्रधान जातियों में भारी युद्ध हुआ है । फ्रेच और जर्मन लोगों की लड़ाई की जगह आल्सेस-लॉरेन (Alsace-Lorraine) की सीमा पर यही नदी बहती है । मेर्याँज के बाद इस नदी का आकार एक झील का ऐसा हो गया है । बीच में कई एक टापू हैं । इस तरह के टापू इस नदी में आगे भी मिले । दोनों किनारों पर कहीं पहाड़, कहीं अगूर के खेत, कहीं कुछ बने हुए और कुछ टूटे-फूटे प्राचीन किले, महल, मनुमेन्ट आदि और कितने ही सुन्दर गाँव और मोजेल (Moselle) नदी के सगम-स्थल पर काब्लेञ्ज और धान नामक दो शहर देखते देखते नौ घंटे में हम लोग कोलोन पहुँचे ।

कोलोन । यहाँ आकर नदी-तट पर के एक होटल में एक सप्ताह तक मैंने विश्राम किया, क्योंकि निरन्तर यात्रा की थकावट से शरीर अस्वस्थ हो चला था । होटल के कमरे में बैठे बैठे सात दिन तक स्टीमर के यात्रियों का आना-जाना और राइन नदी की शोभा देखता रहा । यहाँ पहुँचने के समय मुझे कब्ज की शिकायत होगई थी । मैं तो समझता था कि अस्पताल की शरण लेनी पड़ेगी, लेकिन स्थानीय जल-वायु की उत्तमता और एक सप्ताह के विश्राम से शरीर और मन स्वस्थ हो गया—तबीयत साफ होगई । रास्ते में अनेक अमेरिकन और यूरोपियन यात्रियों ने कहा था कि लगातार इतना परिश्रम न करो, नहीं बीमार पड़ जाओगे । लेकिन मैं भारतवासी था, मेरे लिए फिर यूरोप आकर इन स्थानों को—इन दृश्यों को फिर देखना अस-भव ही था । इसी से मैं उनके इस हितोपदेश को नहीं मान सका । इस समय जिस जगह यह नगर है वहाँ पहले एक छोटी सी बस्ती

थी । उसी वस्ती में रोमन-सम्राट् छाडियस की पत्नी का जन्म हुआ था । अपनी पत्नी के ही अनुरोध से उक्त सम्राट् ने इस जगह रोमन-उपनिवेश स्थापित किया और रानी के नाम पर उसका नाम रक्खा "क्लोनिया आग्रियिना" । नगर के बाहर बहुत से अगूर के खेत और बाग हैं । उनके बाद सात मील की अर्धचन्द्राकार चहारदिवारी नगर को घेरे हुए है । यहाँ के रास्ते—कूचे और घर बहुत अच्छे नहीं हैं, किन्तु बनिज-वैपार के कारण इसमें समृद्धिशाली लोग रहते हैं । इसमें पौने तीन लाख आदमियों की वस्ती है । यहाँ मुख्य देखने की चीज है गाथिक चाल का बना हुआ जगत्प्रसिद्ध लाल पत्थर का सेन्ट-पीटर गिर्जा । इसका बनना सन् १२०८ में शुरू हुआ था । सन् १८४८ में बीस लाख पौण्ड की लागत का यह गिर्जा बन कर सम्पूर्ण हुआ और उसके बाद सन् १८८८ में सर्वाङ्गसम्पूर्ण हो गया । इसकी लम्बाई ४६० फुट और चौड़ाई २४८ फुट है । इसकी छत २५० फुट, मध्यचूडा ३५० फुट और आस पास की दो चोटियाँ ५२२ फुट ऊँची हैं । इसमें ६ घण्टे हैं । उनमें एक घंटे का बजन ३१२ मन है । सप्तपर्वत पर से शैतान का फेंका हुआ पत्थर का टुकड़ा यहाँ रक्खा है । प्रसिद्ध चित्रकार रूबेन्स (Rubens) का जन्म यहीं हुआ था । इस गिर्जे में इस चित्रकार के हाथ का बना पीटर की क्रूस-मृत्यु का अत्यन्त सुन्दर चित्र रक्खा हुआ है । गिर्जे का अन्यान्य कीमती सामान देखने योग्य है । यहाँ जमीन के नीचे भजन का कमरा बना हुआ है । अन्यान्य प्रधान नगरो की तरह कोलोन में भी म्यूजियम, पशुशाला, आर्सेनल, विस्मार्क और वान माल्क की मूर्तियाँ, फोरा अर्थात् गर्म मुल्को के वनस्पतियों का भवन, थियेटर, टाउनहाल, गुर्जेनिच-हाल (Gurzenich-Hall), यहूदियों का भजन मन्दिर और कई एक गिर्जे आदि अच्छे दृश्य हैं ।

नदी के ऊपर एक पन्टून (Pontoon) और एक रेल्वे का पुल है । दूसरे किनारे की बस्ती छोटी है । नगर के जिस भवन में सुगन्धित अर्क ओ-डी-कोलोन (Eau deecologne) निकलता है उसे भी देखा । उसमें इस समय भी सुगन्धित अर्क का कारखाना है । कोलोन में पाँच लाख से ऊपर आदिमियों की बस्ती है । यहाँ से मैंने वेल्जियम की यात्रा शुरू की ।

ब्रेमेन (Bremen) । यहाँ जर्मनी की अन्तिम सीमा शुरू हुई । हालेंड के ग्रानिङ्गोन (Groningen) नगर से यहाँ आया । राज्य की तीन फ्री-सिटियाँ या स्वाधीन नगरों में ब्रेमेन भी एक है । यह प्राचीन शहर और बन्दरगाह है । वेसर (Weser) नदी इसके भीतर बहती है । एक लाख से ऊपर लोग यहाँ रहते हैं । यहाँ के बड़े मकान प्रधान गिर्जे के चारों ओर बने हैं । गिर्जा पुराना है । इसी जगह पर पहले शार्लमेन का, लकडो का, एक गिर्जा था । गिर्जे के एक अश का नाम है ब्लेकेरल (Bleikeller) अर्थात् सीसे का वाल्ट । यहाँ कई एक रोगन-फिरे हुए शव रक्खे हैं । नगर का बूर्जर-पार्क (Buizer Park) खूब बड़ा है । रेल्वे-स्टेशन के पास सिटी-पार्क है । शहर की शोभा के लिए कई एक महात्माओं की मूर्तियाँ और सन् १८७० के फ्रेंच-युद्ध का मनुमेन्ट स्थापित है । यहाँ के साधारण घरों की ऐसी व्यवस्था है कि एक स्त्री-पुरुष के सिवा सारा परिवार एक घर में नहीं रह सकता । यहाँ से हम्बर्ग गया ।

हम्बर्ग (Hamburg) । स्थानीय उच्चारण है हम्बुर्ग । सम्राट् शार्लमेन ने सन् ८०५ में इस नगर को बसाया था । हम्बर्ग कन्टी-नेन्ट का सबसे प्रधान व्यापारी, बन्दरगाह है । सोलह उपनगरों को मिला कर यहाँ की जनसंख्या छ लाख के लगभग है । यह नगर

समुद्र से ६३ मील की दूरी पर एल्व नदी के ऊपर प्रसा जुधा है ।
 नगर के भीतर अल्स्टर भील (Alster) है । इसमें नदी स पानी
 आता है । इस भील के दो भाग हैं । बड़े भाग के किनार गरीब
 लोग बसते हैं । 'ज्वार' आने पर उनके घरों के भीतर पानी भर
 जाता है । 'भाटा' आने तक वे लोग भागे भागे रहते हैं । यह
 भील का छोटा भाग खूब मनोहर है । उसके आसपास मनोहर
 महल बने हुए हैं । भील के भीतर स्टीमर और नावें धीरे से धीरे
 तेजी से साथ नगर के अनन्क स्थानों को आ जा रही हैं, यह एक
 नया ही दृश्य देखा । एल्व नदी में तो जहाज तक आते हैं । भाग में
 स्टीमर चलते हैं । नगर में बहुत से कारखाने भी हैं । दुर्भाग्य शहर
 हर घड़ी गुलजार रहता है । यहाँ के सेंट निकोलस गिर्जे की
 चोटी ४७३ फुट ऊँची है । उँचाई में मिसर के प्रधान पिरामिड का
 वाद इसी का सम्वर है । किन्तु बहुत लोग इसका नाम भी नहीं
 जानते । एफेल-टावर में जो ऊँचे स्थानों की उँचाई की तुलना की जाती
 है उसमें भी भ्रम से इसका नाम नहीं दिया गया । सेंट निकोलस
 गिर्जे के बनने में दो लाख पौण्ड से अधिक रकम खर्च हुई थी ।
 यह सब रुपया सप्ताह में एक मार्क के हिसाब से लोगों के पास
 लेकर जमा किया गया था । यहाँ और भी कई एक बड़े मंदिर हैं ।
 यहाँ के 'बुर्ज' अर्थात् एक्सचेंज में नित्य न्यूनाधिक धन आता है,
 वैपारी जमा होते हैं । यहाँ की बशुशाला, बालिकाशाला, अस्पताल
 और म्यूजियम बगैरह देखने योग्य स्थान हैं । यहाँ के मंदिरों में
 अनेक सामग्रियाँ हैं । एक जगद्गात्रो की प्रतिमा, एक
 काली-पूजा का चित्र, रामलीला का दृश्य, बाग़ के पक्षियों का दृश्य
 की ध्वजा, रथ, दुर्गोत्सव का दृश्य, भिस्ती की ध्वजा, शिल्प
 स्तानी किवाड़े, सटिया, तबला, डोलक, भारत की ध्वजा, शिल्प

की मिट्टी की मूर्तियाँ, बुद्धदेव, पारस्य उपसागर में चलनेवाली खजूर की डालियों की बनी एक तरह की नाव और पेरू तथा बोलिविया देश की ममी (एक प्रकार के रोगन से सुरक्षित लोथ) भी यहाँ रक्खी हैं । फ्रेंच-युद्ध का विजय स्तम्भ, शिलर आदि महात्मा लोगों की मूर्तियाँ और अन्यान्य इमारते इस नगर में दर्शनीय हैं ।

हम्बर्ग में हर साल आठ करोड़ पौण्ड के लगभग माल की आमदनी और रफ्तगी होती है । यहाँ से हर साल पाँच लाख वैल और भेड़ें इंग्लैंड भेजी जाती हैं । बहुत से बड़े बड़े जहाज नगर के सामने आकर लगर डालते हैं । नगर के एक अश की सड़क पर वेश्यायें बड़ा उपद्रव करती हैं । कन्टोनेन्ट में सब जगह इन अभागिनियों के लिए कड़े कानून बने हैं तथापि कहीं वे काबू में नहीं रहतीं । एक बार सन् १८७६ की १७ वीं सितम्बर को इनको इनके भयानक अत्याचार का यह दण्ड दिया गया था कि रात के समय सब वेश्यायें खाली-हाथ करके घरो से निकाल दी गई थीं । हम्बर्ग के प्रधान अस्पताल में ४,००० रोगियों के रहने की व्यवस्था है । एक दिन आल्टोना-उपनगर और ब्लाङ्कानिज (Blankanz) नामक विहार-वाग देखने गया । यहाँ जाने से चित्त बहुत ही प्रसन्न हुआ । दोनो जगह जल के किनारे का दृश्य मनोहर है । एल्ब-नदी के किनारे के पहाड पर बने हुए आल्टोना के होटलों में भोजन करने से एक नये तरह का मजा मिलता है । भोजन के टेविल पर से सामने और नीचे का सुन्दर दृश्य देख पडता है । यहाँ के नदी-तट पर बने हुए वाग बहुत ही सुन्दर हैं । आल्टोना में एक तोपों का मनुमेन्ट है । चार बड़े युद्धों में जीती हुई तोपें सजा कर यह स्मारक-स्तम्भ खड़ा किया गया है । मनोहरता में हम्बर्ग एक आदर्श-नगर है । आस-पास के देहातो में रहनेवाले लोगों के कपडे यूरोपियन ढङ्ग के नहीं

हैं। उनमें एक प्रकार की विचित्रता देख पड़ती है। इस नगर में नी लाख से ऊपर लोग बसते हैं।

लुबेक (Lubeck)। यह जर्मनी का एक स्वाधीन नगर ट्रावे (Trave) और वाकेनिज (Wakenitz) नदियों के सगम पर बसा हुआ है। इसकी जन-संख्या ६०,००० के लगभग है। ट्रावे नदी छोटी है, पर उसका जल गहरा होने के कारण सब जहाज विलकुल नगर के नीचे तरु आ सकते हैं। लुबेक एक प्राचीन नगर है और किसी समय विशेष समृद्धिशाली था। इस बात के अनेक चिह्न इस समय भी वहाँ मौजूद हैं। इस समय जिसे “रथहाउस” (Rathhaus), अर्थात् टाउनहाल, कहते हैं उसका नाम पहले “हन्साहाल” था। हन्सा समिति (Hanseatic League) वाणिज्य-व्यवसाय की रक्षा के लिए स्थापित हुई थी। उत्तर-जर्मनी के कई एक राजगारी नगरों की प्रजा ने मिलकर व्यापारी जहाजों की रक्षा और देखरेख के लिए एक यह समिति बनाई थी। नगर के चार फाटक थे। उनमें दो अब तक वैसे ही बने हैं। नगर का प्रबन्ध अधिकांश प्राचीन ढंग का है। यहाँ के आदमी भी बड़े सीधे जान पड़ते हैं। ट्राम-गाड़ी में टिकट बेचने और पैसा लेनेवाला कोई कर्मचारी नहीं रहता। गाड़ी के भीतर एक छोटा सा बक्स रहता है उसी में लोग किराये के पैसे डाल देते हैं। लन्दन के किसी किसी छोटे महल्ले की आधी पेंनी किराये की अग्निबसेा में भी ऐसा प्रबन्ध है। पर वह प्रबन्ध अब धीरे धीरे उठता जाता है। हम्बर्ग, ब्रेमेन और लुबेक, इन तीनों स्वाधीन नगरों की हाईकोर्ट लुबेक में है। सन् १८०६ में जेना (Jena) युद्ध में हारे हुए सेनापति ब्लुशर (Blucher) ने भाग कर यहाँ जान बचाई थी। उसके बाद भयानक युद्ध के उपरान्त इसी नगर में नेपोलियन ने उन्हें कैद कर

लिया । हन्वर्ग से डेन्मार्क (Denmark) जाते समय यहाँ आया था । यहाँ से जर्मनी की सीमा समाप्त होगई ।

जर्मनी की साधारण अवस्था । उस देश के लोग जर्मन-साम्राज्य को डूशलेड (Deutschland) और जर्मन-सम्राट् को डूशर-कैसर (Deutscher Kaiser) कहते हैं । २६ प्रदेशों के मिलने से यह साम्राज्य सगठित हुआ है । इनमें ४ राज्य, ८ लुद्ध राज्य (Principality), ग्रैंड-डुची (Grand-Duchy), ५ डुची और ३ स्वाधीन नगर थे । सम्राट् का अधिकार सर्वोपरि है । वह केवल आत्म-रक्षा के लिए अपनी आज्ञा से युद्ध ठान सकते हैं । दूसरे देश पर चढ़ाई करने के लिए उन्हें प्रादेशिक राजों की सलाह लेनी पडती है । इटली एक तरह से विखरी हुई थी और जर्मनी दूसरी तरह से अनेक भागों में बँटी हुई थी । सन् १८७१ से एक सम्राट् की अधीनता में 'एक' होकर जर्मन लोग बहुत ही प्रभावशाली और समृद्धि-सम्पन्न बन गये हैं । राजकाज में सम्राट् की सहायता के लिए रेशरथ (Reichsrath) और रेशटग (Reichtag) नाम की दो सभायें हैं । इन्हीं सभाओं की सहायता से सम्राट् साम्राज्य का सब काम करते हैं । प्रादेशिक शासन आदि स्थानीय व्यवस्था के अनुसार होता है । किन्तु आईन-कानून, सिका, व्यापार, रेल्वे, डाक व तार, उप-निवेश और जहाजो लडाई के बारे में उक्त सभाओं की सहायता से सम्राट् जो निर्णय कर देंगे उसे प्रादेशिक राजा मानने के लिए बाध्य हैं । जर्मनी जब चाहे तब ५४ लाख सेना समर-भूमि में भेज सकती है । साम्राज्य में कान्क्रिप्शन्-प्रथा प्रचलित है । सब तरह के मिला कर, जर्मनी के ३५७ युद्ध-जहाज हैं । साम्राज्य में साठे छ करोड आदमियों की वस्ती है । सन् १८१३ में साठे अठारह करोड पौण्ड 'कर' वसूल हुआ था । ऋण तेरह करोड पौण्ड था । जर्मनी के जिस

नगर में गया, वहाँ देखा, सैनिकों को यत्नपूर्वक युद्ध की शिक्षा दी जा रही है। अन्यान्य धनी देशों की तरह जर्मनी में भी सोन के सिक्के का खप चलन है। इसी से जान पड़ता है कि दिन दिन देश का धन बढ़ता जाता है। यह बात तो पहले ही कही जा चुकी है कि जर्मन कारीगरों के हाथ की बनी चीजें तमाम दुनिया के बाजारों में फुर्ती के साथ फैलती जा रही हैं। ज्ञान-विज्ञान में हमेशा से जर्मनी का पहला नम्बर है। आईन के अनुसार वहाँ हर एक बालक बालिका को साधारण शिक्षा ग्रहण करनी पड़ती है। हजार आदमियों में डेढ़ सौ पढ़नेवाले विद्यार्थी मिलते हैं। साम्राज्य भर में २१ विश्वविद्यालय हैं। उनमें न्यूनाधिक ३२,००० विद्यार्थी पढ़ते हैं। शिक्षा-विभाग में यह एक बड़ा सुन्दर नियम प्रचलित है कि हर एक विद्यार्थी को कम से कम एक विदेशी भाषा पढ़नी पड़ती है। अनेक जर्मन-विद्यार्थी आज कल अँगरेजी पढ़ते हैं। कालेज बगैरह के अलावा बहुत सी पब्लिक-लाइब्रेरियाँ और विज्ञान तथा उपयोगी ज्ञान का प्रचार करनेवाली सभा-समितियाँ भी साम्राज्य में बहुत हैं। उनसे भी वहाँ के सर्वसाधारण का विशेष उपकार होता है। जर्मनी में २२ मान-मन्दिर बहुत अच्छी तरह अपना काम करते हैं। जर्मनी के सभी नगर साफ सुधरे हैं। प्रधान नगरों में, चौराहे पर, ऊँचे चबूतरे के ऊपर, शीशे के भीतर स्थानीय नक्शा रक्खा रहता है, जिसमें कोई नया आया हुआ विदेशी अगर राह भूल जाय तो उस नक्शे से अपने जाने की जगह का पता लगा लेगा। जर्मनी में प्रोटेस्टेन्ट मत की प्रधानता है। परन्तु बहुत से रोमन कैथलिक और यहूदी भी बसते हैं। यहूदी लोग बड़े ही धनाढ्य हैं। बहुत से अखबारों के वे स्वामी हैं। किन्तु साम्राज्य का कोई प्रतिष्ठित—खास कर सैन्य-विभाग का कोई पद—वे नहीं पा सकते। यूरोप जाने के

पहले मैं सुनता था कि जर्मनी में बहुत से लोग वेद पढ़ते हैं। दुःख है कि बहुत खोज करने पर भी इस बात की सचाई का कोई प्रमाण मुझे नहीं मिला। वलिकु वहाँ के बहुत स्थानों के शिचित लोग भी भारत के बारे में कुछ नहीं जानते। हम्बर्ग में एक भद्र पुरुष से बहुत देर तक बातचीत होने के बाद उन्होंने मुझसे मेरा निवास स्थान पूछा। 'इण्डिया' 'इस्ट इण्डिया' 'हिन्दोस्तान' कहने पर भी जब वह नहीं समझ सके तब मैंने उनको 'ब्राह्मणों का देश' कह कर समझाया।

एल्ब नदी। ड्रेसडेन से मैं वोहेमिया को गया। सीमान्त-नगर वोडेन-बाथ (Bodenbach) तक एल्ब-स्टीमर की यात्रा में बड़ा आनन्द मिला। जर्मनी के इस अंश को "सैक्सन-स्वोजरलैंड" कहते हैं। नदी के दोनों किनारों पर पर्वतमाला है। पर्वतमाला के निचले हिस्से में दो रेल्वे लाइनें हैं। दोनों ही ओर का दृश्य समान सुन्दर है। बीच-बीच में पहाड़ों के ऊपर मकानात भी बने हैं। नदी में हमारे देश के ऐसे 'बेड़े' देख पड़े।

आस्ट्रिया-हंगेरी ।



डेनवाय् । यहाँ से आस्ट्रिया-साम्राज्य शुरू होता है । कर्मचारी के द्वारा असवाव की जाँच हुए बिना आगे बढ़ने का उपाय न था । रेल छूटने में भी देर थी । इस कारण कुछ देर नगर में घूम आने का अवकाश मिल गया । एक अँगरेजी जाननेवाले बोहेमिया के यात्री को साध लेकर नगर देखने गया । वहाँ से लौटकर रेल पर सवार हुआ । नगर बहुत छोटा है । किन्तु दो साम्राज्यों की सीमा पर होने के कारण जरा गुलजार है ।

प्राग् (Prague) । बोडेनवाय् से रेल पर सवार होकर प्राग् आया । रास्ते में हमारे देश के ऐसे खेवा-घाट और ग्वेवा ले जानेवाली नावें देख पड़ी । साधारण श्रेणी के देहाती लोगों की पोशाक भी बदली हुई है । यहाँ साफ जान पड़ा कि क्रमशः पाश्चात्य-सभ्यता की मात्रा कम होती आती है । नदी के किनारे जगल ऐसे भारी सेव (Apple) और अमरुद (Pear) के बाग हैं । कई एक पुराने कैसल (दुर्ग-प्रासाद) और गिर्जे, रेल की सडक के किनारे कहीं कूस के ऊपर ईसा और कहीं ईसा की गोद में मेरी तथा कई एक सेन्टो की मूर्तियाँ देखकर जान पड़ा, जैसे मध्य युग के यूरोप में आगया हैं । सब मिलाकर यह कहा जा सकता है कि बोहेमिया-प्रदेश के

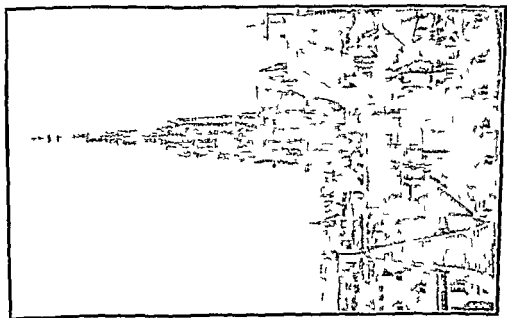
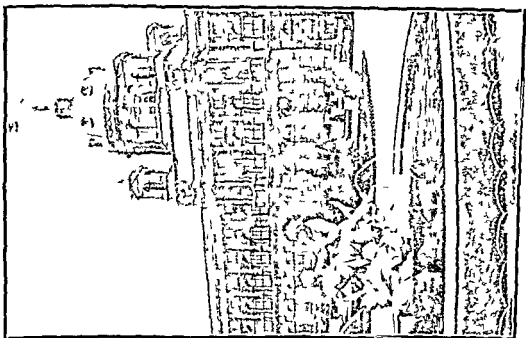
दृश्य कुछ दूरे नहीं हैं । शाम होने से कुछ पहले प्राग में पहुँचा । नगर मोल्डाव्रो नदी के ऊपर बसा हुआ है । नदी के दोनों किनारों में बस्ती है । इस शहर को अँगरेज लोग 'प्रेग' और जर्मन तथा फ्रेञ्च लोग 'प्राग' कहते हैं । किन्तु स्थानीय लोगों का उच्चारण है 'प्राहा' । यहाँ तीन लाख से अधिक लोग बसते हैं । अधिकांश निवासी रोमन-कैथलिक-धर्मावलम्बी हैं । पहले यह शहर बोहेमिया राज्य की राजधानी था । इस समय केवल प्रादेशिक प्रधान-नगर समझा जाता है । शाम को होटल के निकट ही टहलता रहा । दूसरे दिन सबेरे प्राग की सामयिक प्रदर्शनी देखने गया । इस देश के लोगों का कहना है कि सन् १७६१ में सबसे पहले उन्होंने ही प्रथम प्रदर्शनी खोली थी । उसी के सौ बरस पूरे होने के उत्सव में यह प्रदर्शनी खोली गई थी । प्रदर्शनी बुरी नहीं थी । थोड़े में बहुत सी देखने लायक चीजें और जानने लायक बातें दिखलाई गई थीं । ऐतिहासिक समय के पहले के कई एक मनुष्य शरीर के ढाँचे, अस्त्रशस्त्र और यन्त्र आदि तथा उस देश की प्राचीन युद्ध-मज्जा आदि देखने की चीजें थीं । मेले में एक दर्शक की अद्भुत दाढ़ी देखी, घुटनों तक लंबी थी । प्रदर्शनी-मेले के सामने के बाग में दर्शकों के बैठने के लिए कलदार कुर्सियाँ बड़े मजे की चीज थी । उनमें एक छेद रहता है, उममें पैसा डालने से कुर्सी खुल जाती है । दर्शक बैठ जाते हैं और उनके उठते ही वह फिर बन्द हो जाती है । मेले में बोहेमिया का मधुर बाजा सुनते सुनते रात हो गई । बाहर निकल कर होटल की राह भूल गया । बड़ी मुश्किल हुई । कोई मेरी बात नहीं समझता था और न मेरी ही समझ में किसी की बात आती थी । धीरे धीरे मेरे आसपास दस बारह औरत-मर्द जमा हो गये । उनमें से एक आदमी टूटी-फूटी अँगरेजी जानता था । वे लोग ऐसे

दयालु और भद्र पुरुष थे कि मुझे साथ लेकर होटल तक पहुँचाने के लिए चले । मैंने उन लोगों से कई वार किराये की गाड़ी पर बैठने के लिए कहा, पर उन्होंने “मेरा व्यर्थ पैसा खर्च होगा” कह कर अस्वीकार कर दिया । एक कोस के लगभग चलना पडा तब होटल तक पहुँचे । इन लोगों ने अपने व्यवहार से मुझे मोल ले लिया । इस देश के लोग अत्यन्त सरल और भले आदमी जान पड़ते हैं । दूसरे दिन कई भापायें जाननवाले दुभापिये के साथ नगर की सैर करने गया । प्राकृतिक हिसाब से नगर बहुत अच्छी जगह पर बसा हुआ है । देश के मध्यस्थल में मोल्डाव्रो नदी के किनारे नगर के योग्य ऐसा लम्बा चौड़ा स्थान और नहीं है । नगर और उसके आसपास के पर्वतों पर भी अनेक मनोहर इमारते, टावर, घरों की चोटियों आदि का दृश्य बहुत ही विचित्र जान पड़ता है । शहर के भीतर बाग और पार्क भी अनेक हैं । नदी के भीतर-वाले टापुओं में भी बागों की कमी नहीं है । नदी के ऊपर सात पुल हैं । एक पुल के दोनों सिरो पर मध्य-युग के दो टावर हैं । सन् १३६३ की १६ वीं मई को राजा की आज्ञा से राजपुरोहित नेपोम्युसेनो (अँगरेजी उच्चारण ‘नेपोमक’ है) इसी पुल पर से नदी में डाल दिये गये थे । उक्त पादरी का अपराध यही था कि रानी ने उनके आगे जिन जिन अपराधों को स्वीकार किया था उन्हें उन्होंने राजा के आगे नहीं प्रकट किया । उक्त महात्मा ने प्राण दे दिये पर विश्वासघात नहीं किया । इसी गुण पर रोभ कर परवर्ती राजवंश ने उन्हें सेन्ट पदवी से विभूषित किया । जिस दिन वह मरे थे उस दिन आज तक उनके मन्दिर में बहुत से यात्री पूजा करने के लिए आते हैं । पुल के नुक्कड़ पर ही उनका मन्दिर बना हुआ है । प्राचीन राजमहल में पचास

नगर की रक्षा की थी। यह सम्भ उसी का स्मारक-चिह्न है। नगर के पास के पहाड़ के ऊपर एफेल-टावर के अनुकरण पर एक छोटा सा लोहे का टावर इन लोगों ने खड़ा किया है। एक पहाड़ के ऊपर प्राचीन राजमहल और उसके अन्तर्गत गिर्जा आदि है। इस महल के बड़े हाल में सप्ताह की सबसे पहली प्रदर्शनी खोली गई थी। यह भी मालूम हुआ कि एक समय राजा की आज्ञा से यहाँ के एक दरवाजे से नीचे गिराकर दो मन्त्रियों को जानें ली गई थी। राजकुमारियों के हाथ के रेशम के फूल और कई एक चित्र यहाँ बड़ी हिफाजत से रक्खे हुए हैं। यहाँ का राजनैतिक कैदियों का जेलखाना बड़ी ही भयानक जगह है। उसमें २० फुट गहरा एक कुआँ है। कुछ दिन जेल में रहने के बाद राजनैतिक कैदी उसी कुएँ में डाल दिये जाते थे। खून धुआँ भर देने के कारण घुट घुट कर उनका दम निकलता था। सन् १६०६ में, कैदियों के हाथ का बना हुआ एक ताश का जोड़ा यहाँ रक्खा है। यहाँ का म्यूजियम और चित्रशाला इस शहर के लायक हैं। नगर में जगह जगह पर बहुत सी मूर्तियाँ भी स्थापित हैं। प्राग् नगर आठवीं सदी में बसाया गया था।

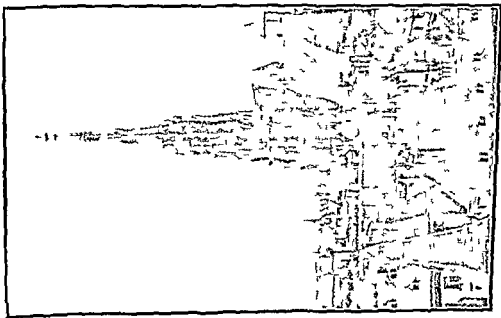
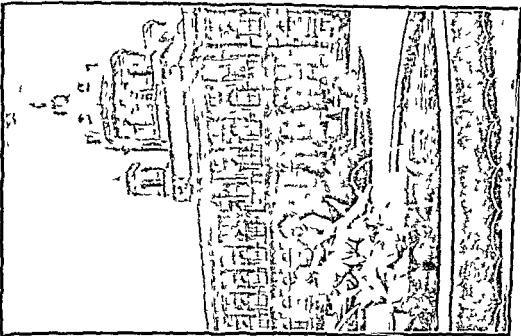
वियेना। प्राग् से रेल पर चढ़ कर आस्ट्रिया-राज्य की राजधानी वियेना को खाना हुआ। इस मार्ग में दोनो किनारों पर अनेक सुन्दर प्राकृतिक दृश्य देखने को मिले। एक स्टेशन के चारों ओर पहाड़ों की शोभा अत्यन्त गम्भीर और विचित्र देख पड़ी। उसके बाद एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर सुन्दर 'विला' अर्थात् विलास-भवन देख पड़ा। एक जगह देखा, दो पहाड़ों पर पुल बाँधकर रेल चलाई गई है। पुल के नीचे नदी बहती है। इसी तरह अनेक प्राकृतिक और कृत्रिम दृश्यों को देखते देखते सन्ध्या के समय वियेना में पहुँच

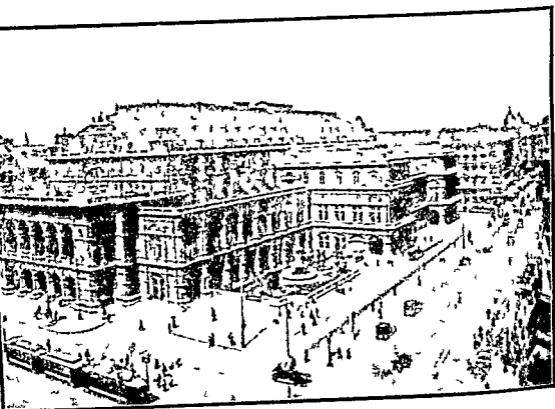
मन के लगभग चाँदी का बना हुआ उनका समाधि-मन्दिर है । पुल के बीच में एक खम्भा है । उसमें अनेक युद्धों के गोलों के निशान बने हुए हैं । उस स्तम्भ के ऊपर क्रूस पर ईसा की मूर्ति है । नगर के सामने की नदी में एक बनावटी भूना बना कर उसकी शोभा बढ़ाई गई है । यहाँ का विश्वविद्यालय बहुत पुराना है । पुराने जर्मन-साम्राज्य में सबसे पहले यही यूनिवर्सिटी स्थापित हुई थी । इसमें बोहेमियन और जर्मन, दोनों भाषाये सिखलाई जाती हैं । बोहेमियन छात्रों के द्वारा सन् १३४८ में स्थापित यूनिवर्सिटी स्थापित करनेवाले राजा चतुर्थ चार्ल्स का स्मारक-स्तम्भ भी दर्शनीय है । एक गिर्जे में जगत्प्रसिद्ध ज्योतिषी लाप्लास (Laplace) के गुरु टाइको-ब्राही (Tycho-Brahe) की समाधि है । बोहेमिया के प्रसिद्ध सुधारक हस (John Huss) और उनके शिष्य जिरम (Jerome) का जन्म इसी नगर में हुआ था । यहाँ पण्डितवर हस का घर इस समय भी दर्शकों को दिखलाया जाता है । तेरहवीं शताब्दी में मुसलमानों ने इस नगर पर आक्रमण किया था । उनके अत्याचार और उपद्रव के चिह्न इस समय भी यहाँ जगह जगह देख पड़ते हैं । इस नगर में बहुत से यहूदी रहते हैं । इनके लिए एक महल्ला अलग है । यह महल्ला और महल्लों की अपेक्षा गदा और निराले में है । यहाँ की ज्योतिषी-घड़ी विचित्र है । यह सन् १८६० में बनी थी । इसके नीचे और एक घड़ी है, जो साल के दिन और राशि बतलाती है । एक जगह दिखला कर बतलाया गया कि यहाँ बहुत से प्रोटेस्टेन्ट ईसाइयों की बलि दी गई थी । इसके पास ही एक स्तम्भ है । सत्रहवीं शताब्दी में स्वीड लोगों ने जब नगर पर आक्रमण किया था तब चौदह मसाले तक स्कूल-कालेजों के विद्यार्थियों ने उनसे लड़ कर



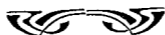
गया । सामान सब होटल में रखकर 'डान्यूब' देखने के लिए चला । नगर के भीतर एक वियेन (Wien) नाम की छोटी नदी और डान्यूब-नहर है । उक्त नदी के नामानुसार नगर का भी स्थानीय नाम है वियेन । असल डान्यूब को "ग्रोसेडोनाओ" (Grosse Donau) अर्थात् बड़ा डान्यूब कहते हैं । लडकपन में भू-गोल में पढा था कि वियेना नगर डान्यूब-नदी के किनारे है । किन्तु यहाँ आकर देखा, डान्यूब नगर से बहुत दूर पर है । इस कारण उम्र दिन डान्यूब की सैर करने वहाँ तक नहीं जा सका । दूसरे दिन कलेवा करने के बाद कुक-कम्पनी के आफिस में गया । वहाँ मुझे मेरे नाम की बहुत सी चिट्ठियाँ और अखबार वगैरह मिले । वियेना नदी के किनारे पर से रेल पर चढ़ कर डान्यूब के किनारे पहुँचा । डान्यूब के किनारे की भारी रती नाँघने पर एक पक्का घाट मिला । पुस्तक में पढा था नील-डान्यूब, किन्तु यहाँ आने पर डान्यूब का जल बहुत ही उज्ज्वल देखा । यह बहुत ही एकान्त स्थान है । सामने नदी हाहाकार करती हुई बहती चली जा रही है । बहुत ही आनन्ददायक दृश्य है । डान्यूब के किनारे बैठ कर लन्दन के और भारत के पत्र, अखबार, मासिकपत्र आदि पढे । फिर कुछ देर तक रती पर टहलता रहा ।

रोमन नगर विण्डेबोना (Vindebona) के पहले भी यहाँ आदिमियों की बस्ती थी । उस समय की एक वृक्ष की शाखा (Stump) अभी तक मौजूद है । सन् १२७८ से १८०६ तक यह नगर पुराने जर्मन-साम्राज्य की राजधानी रहा और अब आस्ट्रिया-हंगेरी के सम्मिलित साम्राज्य की राजधानी है । इसके आसपास ३४ उपनगर हैं । उपनगरों सहित इस नगर की जन-संख्या चौदह लाख के लगभग है । नगर का भीतरी भाग ठीक बीच





नाट्य शाला, वियेना—पृ० १०१



मे है । उसी में राजमहल, प्रतिष्ठित नगरनिवासियों के मकानात और सरकारी दफ्तर हैं । इस नगर के चारों ओर जो किले-बन्दी थी वह अब दो मील लम्बे और एक सौ पचास फुट चौड़े “बुलवार्ड” के रूप में होकर नगरनिवासियों का विहार-स्थान बन गई है । नगर के भीतरी भाग के रास्त टेढ़े और तग हैं, लेकिन गन्दे नहीं हैं । यहाँ बारहवीं शताब्दी का सेन्ट स्टीफेन का गिर्जा है । इसकी चौटो ४५४ फुट ऊँची है । इसके भीतर सगमरमर के ३८ चबूतरे हैं । पहले सम्राट् लोग इसी गिर्जे में गाढे जाते थे । यहाँ का बडा घण्टा ५०० मन का होगा । युद्ध मे जीती हुई तुकों की तोपें गलाकर यह घण्टा ढाला गया था । नये बाजार के एक गिर्जे में राज परिवार के अनेक व्यक्तियों की लोथें सीसे के बने सन्दूको में रक्खी हैं । इनमे सन् १६१६ तक की पुरानी लोथें हैं । इन लोथो मे रानी मेरिया थेरेसा (Maria Theresa), राज-कुमारी मेरी लुइस (Marie Louise) और उनके पुत्र द्वितीय नेपोलियन के भी मृत-देह देख पडे । नगर में सब मिला कर १० बडे गिर्जे और एक यहूदियों का भजनमन्दिर है । सेन्ट-स्टीफेन-गिर्जे के पास ही ३० बीघे जमीन पर बना हुआ एक नागरिक राजमहल (Hofburg) है । यहाँ की लाइब्रेरी मे साढे चार लाख छपे हुए ग्रन्थ, बीस हजार हस्तलिपियाँ और तीन लाख एन्ग्रेविग-चित्र हैं । महल के तोशेखाने मे अनेक ऐतिहासिक बहुमूल्य चीजों और सिक्कों का सग्रह देखने की चीज है । इसके सिवा इस राजमहल मे और भी अनेक देखने योग्य वस्तुयें हैं । यहाँ दो प्रधान म्यूजियम हैं । एक मे तरह तरह के शिल्प आदि और दूसरे में अन्यान्य विविध सामग्रियाँ हैं । दोनों ही स्थानो मे भारी सग्रह है । अनेक प्रकार की देशी और विदेशी कारीगरी की चीजों के सग्रह मे वियेना अन्यान्य प्रधान

नगरों से कम नहीं है । पहले न्यूजियम में भारत की चूड़ो, खड़ाऊँ, हुक्का, गुडगुडो तरु रक्खी हुई है । पालिश की हुई लकड़ी पर चित्र और काच के ऊपर सुनहला काम यहाँ बहुत सुन्दर बनता है । भूतपूर्व सम्राट् जोजैफ़ का एक बहुमूल्य पात्र भी यहाँ रक्खा है । यह बहुमूल्य पत्थर का बना हुआ है और वत्तक के अण्डे के आकार के कई एक उज्ज्वल पत्थर के टुकड़े इसकी शोभा बढ़ा रहे हैं । यह पात्र ४ हाथ के लगभग ऊँचा है । इसका घेरा ४^१ हाथ का है । यहाँ का टर्की-भवन बड़ा मनोहर है । दूसरे न्यूजियम में और अनेक दर्शनीय चीजें हैं । भवन बहुत ही अच्छे ढंग से सजाया हुआ है । दीवारों में बड़ी बड़ी सुन्दर मूर्तियाँ शोभायमान हैं । बीच के हाल में चढने की जगह पर केंपुर, न्यूटन, कुबोर आदि विद्वानों की, सगमरमर की, आठ मूर्तियाँ हैं । गुम्बद के भीतर की छत जिस सुन्दर चित्र से सुसज्जित है उसके इतना बड़ा चित्र पृथ्वी पर और कहीं नहीं है । अंगरेज लोगो ने स्वीकार किया है कि (" Hans Makart's painted dome in the Natural history Museum of Vienna is the largest pictorial canvas in the world ") यहाँ सीपी के भीतर प्रस्तर-गठन (Silicated formation) के पचास साठ तरह के नमूने मौजूद हैं । जुदे जुदे समयों की चीजों के लिए जुदे जुदे कमरे बने हुए हैं । बुद्धदेव की मूर्ति तो यूरोप में सभी जगह है । इन महा-पुरुष का यूरोप में ऐसा ही आदर है कि वहाँ के साधारण से साधारण न्यूजियम में भी इनकी मूर्ति रक्खी हुई है । इसके सिवा भारत के दूल्हे का भौर, वाजे, गोल गञ्जीफा, अर्घा-सम्पटो, गिलौरीदान आदि बहुत सी सामग्री इस न्यूजियम में रक्खी है । पेरू आदि कई देशों की प्राचीन ममी (Mummy), सबसे

पहले पृथ्वी-परिक्रमा करनेवाले कप्तान कुक को इकट्ठे किये हुए २६० नमूने, अनेक प्रकार की धातुओं की चीजें, देशी और विदेशी बहुत से पुराने सिक्के और पथम चार्ल्स का दण्ड व मुकुट आदि बहुत से मूल्यवान् आभूषण (Regali) आदि इस म्यूजियम में देखने की चीजें हैं । दोनों म्यूजियमों के मकान सब बातों में ठीक एक से हैं । दोनों के बीच के आंगन में सुप्रसिद्ध वीराङ्गना रानी मेरिया धरेसा की विशाल मूर्ति सहित भारी मनुमेन्ट है । वियेना की प्रसिद्ध चित्रशाला का, ससार में, आठवाँ नम्बर है । यहाँ १५०० बहुमूल्य चित्र रक्खे हैं । उनमें रुबेन्स (Rubens), डुरर (Durer) और कई एक वेनिस के चित्रविद्याविशारद कारीगरों के हाथ के चित्र यहाँ जितने हैं उतने और कहीं नहीं हैं । इस चित्रशाला के अन्तर्गत एक स्थायी प्रदर्शनी खोली गई है । उसमें आधुनिक चित्रकारों के हाथ के बने चित्रों का समूह है । इसके सिवा स्थानीय तीन बड़े आदमियों की अलग तीन चित्रशालायें भी हैं । वे भी बुरी नहीं हैं । एक बड़े आदमी की चित्रशाला में, ८ कमरों में, १५०० चित्रों का समूह है । वियेना का विश्वविद्यालय, खास कर उसका चिकित्साशास्त्र-सम्बन्धी विभाग, बहुत प्रसिद्ध है । चिकित्साशास्त्रवाले विभागों में विद्याध्ययन करने के लिए बहुत दूर दूर से विद्यार्थी आते हैं । प्रधान अस्पताल में २,५०० रोगियों के रहने का प्रबन्ध है । उसमें ५० डाक्टर और ४०० सेवा करनेवाली धाये हैं । अस्पताल में रहनेवाले रोगियों के टहलने के लिए हर एक सपड में एक सुन्दर वाग लगा हुआ है । वियेना का लडके जनाने का अस्पताल (Obstetric Hospital) भी बुरा नहीं है । आस्ट्रिया में व्याह के बारे में राजकीय और धार्मिक व्यवस्था इतनी कड़ी है कि निम्नश्रेणी के स्त्री-पुरुषों के लिए व्याह एक बहुत ही कठिन काम है । इसी कारण

नगरों से कम नहीं है । पहले न्यूजियम में भारत की चूड़ो, खड़ाऊँ, हुक्का, गुडगुडो तक रक्खी हुई है । पालिश की हुई लकडो पर चित्र और काच के ऊपर सुनहला काम यहाँ बहुत सुन्दर बनता है । भूतपूर्व सम्राट् जोजेफ का एक बहुमूल्य पात्र भी यहाँ रक्खा है । यह बहुमूल्य पत्थर का बना हुआ है और वक्तक के अण्डे के आकार के कई एक उज्ज्वल पत्थर के टुकड़े इसकी शोभा बढा रहे हैं । यह पात्र ४ हाथ के लगभग ऊँचा है । इसका घेरा ४^१ हाथ का है । यहाँ का टर्की-भवन बडा मनोहर है । दूसरे न्यूजियम में और अनेक दर्शनीय चीजें हैं । भवन बहुत ही अच्छे ढंग से सजाया हुआ है । दीवारों में बडी बडो सुन्दर मूर्तियाँ शोभायमान हैं । बीच के हाल में चढने की जगह पर कैप्पर, न्यूटन, कुबोर आदि विद्वानों की, सगरमर की, आठ मूर्तियाँ हैं । गुम्बद के भीतर की छत जिस सुन्दर चित्र से सुसज्जित है उसके इतना घडा चित्र पृथ्वी पर और कहीं नहीं है । अँगरेज लोगो ने स्वीकार किया है कि (" Hans Makart's painted dome in the Natural history Museum of Vienna is the largest pictorial canvas in the world ") यहाँ सीपी के भीतर प्रस्तर-गठन (Silicated formation) के पचास साठ तरह के नमूने मौजूद हैं । जुदे जुदे समयों की चीजों के लिए जुदे जुदे कमरे बने हुए हैं । बुद्धदेव की मूर्ति तो यूरोप में सभी जगह है । इन महा-पुरुष का यूरोप में ऐसा ही आदर है कि वहाँ के साधारण से साधारण न्यूजियम में भी इनकी मूर्ति रक्खी हुई है । इसके सिवा भारत के दूल्हे का मौर, धाजे, गोल गञ्जीफा, अर्धा-सम्पटी, गिलौरीदान आदि बहुत सी सामग्री इस न्यूजियम में रक्खी है । पेरू आदि कई देशों की प्राचीन ममी (Mummy), सबसे

fibres into every domestic circle in the land, has an object in countenancing illegitimacy—it is that of checking over-population, as those who are informed upon the subject of population well know it has the power to do, by decreasing the number of births and increasing the infantile mortality”—Wilde

सक्रामक रोगों को रोकने के लिए यहाँ की छावनी और शहर में खास तौर पर कड़ा कानून जारी है । लन्दन आदि शहरों की सड़कों पर वेश्याओं का जैसा उपद्रव है वैसा वियेना में नहीं देखा जाता । इस बात के लिए अँगरेज भी वियेना की प्रशंसा करते हैं । रात को एक निर्दिष्ट समय के बाद जिन पर मन्देह होता है उन स्त्रियों को सड़क पर टहलते देख कर पुलिस गिरफ्तार कर लेती है । जाँच करने से अगर उसके कोई रोग मालूम होता है तो वह अस्पताल भेज दी जाती है । इस सम्बन्ध में वाइल्ड साहब लिखते हैं कि पाप को प्रकाश्यरूप से दिखलाना गार्हस्थ्य पवित्रता का चिह्न है । इसका प्रमाण एक ओर रोम और वियेना और दूसरी ओर डबलिन है ।—“Notwithstanding the apparent moral condition of the city after nightfall, which must at once strike a foreigner, I am much inclined to think that the public exhibition of vice is often a test of private morality, as instances pro and con I might adduce the cities of Rome and Vienna on the one hand, and Dublin on the other”) विख्यात यात्री टेलर साहब भी यही बात कहते हैं । उनकी राय में वियेना की विवाहिता स्त्रियाँ सतीत्व के बारे में बहुत ही बदनाम हैं ।

वियेना में सब मिला कर ६ पार्क हैं । उनमें से प्रेटर (Prater)

अन्यान्य यूरोप के देशों की तरह यहाँ भी भले लोगो में व्यभिचार से सन्तान पैदा करना कोई भारी अपराध नहीं गिना जाता । इस कारण राजधानी में इस श्रेणी के एक बड़े अस्पताल की बड़ी जरूरत है । गरीब स्त्रियाँ व्यभिचार से गर्भिणी होती हैं तो सातवें महीने में बिना किसी आपत्ति के वे अस्पताल में ले ली जाती हैं । अपने पति से गर्भ धारण करनेवाली स्त्रियों के सम्बन्ध में कुछ तहकीकात की जाती है । प्रसव के बाद दो महीने तक बच्चा माता के पास रहता है । उसके बाद सरकारी खर्च से देश के किसी स्थान में भेज दिया जाता है । अगर लडका होता है तो किसान लोग बड़े आदर से उसे ले लेते हैं । क्योंकि अठारह वर्ष का हो जाने पर कान्ट्रिक्-पशन-आईन के अनुसार वे अपने बड़े लडके को बदले उसे फौज के काम में दे सकते हैं । अस्पताल में रहने के समय व्यभिचारिणी गर्भिणी के नाम-धाम के बारे में कोई कुछ पूछताछ नहीं करता । ऐसा सुभीता होने से ही वियेना नगर में व्यभिचार से उत्पन्न सन्तानों की संख्या आधे के लगभग है । इस बात में आस्ट्रिया पृथ्वी के सभ्य देशों में निकृष्ट है और दरिद्र व मूर्ख आयरलैंड उत्कृष्ट है । आस्ट्रिया के फी हजार बच्चों में व्यभिचार से उत्पन्न बच्चों की औसत १४६ है । स्वीडेन और जर्मनी में ऐसे बच्चों की औसत, हर एक हजार में, १०० से १४० तक है । फ्रान्स और स्काट्लैंड में ८२, इटली में ७४, इंग्लैंड में ४८, हालैंड में ३२, रूस में २८ और आयरलैंड में २६ की औसत है । यूरोप के अन्यान्य देशों की तुलना मालूम नहीं । वाइल्ड साहब ने अपनी पुस्तक में आस्ट्रिया के बारे में लिखा है—“The Austrian State, whose political web extends not only into the paths of literature and science, but sends its stretching

आदि देखने के लिए हर रविवार को बहुत से लोग जमा होते हैं ।

वियेना के अन्यान्य दृश्य आदि साम्राज्य की राजधानी के योग्य ही हैं । वियेना की आब-हवा और स्वास्थ्य अच्छा है । साल में एक हजार मनुष्यों में २३।२४ मौतें होती हैं । नगर की म्यूनिसिपलिटि की सालाना आमदनी पन्द्रह लाख पौण्ड है । वियेना के निवासी सुश, आमोदप्रिय, सरल और हेलमेल पैदा कर लेनेवाले जान पड़ते हैं । नगर में गन्दगी और सड़को पर शराबी विल्कुल नहीं देख पड़ते । इसके लिए अँगरेज-यात्री भी इस नगर की खूब प्रशंसा करते हैं । यहाँ निम्नश्रेणी के लोग मजे में हैं । यद्यपि छोटे दर्जे के आदमियों की आमदनी उतनी अधिक नहीं है, तो भी लन्दन, पेरिस और न्यूयार्क के समान दारिद्र्य की भयानक भूर्त्ति यहाँ नहीं देख पड़ती । गरीबों के घर भी सूर साफ सुथरे हैं । एक प्रेँच लेखक लिखता है “Vienna is bounded on the North and South by love, on the East by music, and on the West by the dance” सचमुच गाने बजाने नाचने आदि के लिए वियेना प्रसिद्ध है । स्थानीय सुप्रतिष्ठित नृत्य-वाद्य रचयिता स्ट्रास (Strauss) की रचनायें (Dancing composition) सभ्य-समाज में विशेष रूप से परिचित और आदर को प्राप्त हैं । नगरनिवासी लोग सम्राट् पर विशेष श्रद्धा भक्ति रखते हैं । वर्तमान सम्राट् फ्रान्सिस जोसेफ (Francis Joseph) और उनकी रानी को वियेना-वासी बहुत ही प्यार करते हैं । राजमुकुट धारण करनेवाली महिलाओं में यह रानी अत्यन्त भाग्यहीन हैं । इन्हें अब तक बहुत से आत्मीय-स्वजनों की अफालमृत्यु का शोक सहना पड़ा है । पुत्र-शोक भी यह उठा चुकी हैं । वियेना की जन-संख्या बीस लाख से अधिक है ।

नामक विहार-बाग ६,००० बोधे में है । उसके भीतर से डान्यूव की एक नहर निकली है । अँगरेज लोग इसे वियेना का हाइड-पार्क कहते हैं । समाज की सर्वोच्च श्रेणी से लेकर नीच श्रेणी तक के आदमी इस पार्क में जमा होते हैं । सन् १८७३ में, इस नगर में जो महाप्रदर्शनी हुई थी उसके अन्तर्गत एक भवन यहाँ स्थायी रूप से स्थापित कर दिया गया है । इसका नाम है रोटण्डे (Rotunde) अर्थात् गोलघर । इसमें 'दक्षिण-आफ्रिका में असभ्य जातियों का जीवन' प्रत्यक्ष दिखलाया गया है । लोगों की मिट्टी की मूर्तियों सहित एक छोटा सा गाँव बना हुआ है । उसमें राजवैद्य का भोपडा, नाव, मछली पकड़ने का जाल, अलावु देव की पूजा, भारी भारी हाथी के दाँत, मनुष्य की खोपड़ी समेत वृक्ष, पहाड़ के ऊपर हाटेन्टाट (Hottentot) लोगों की चित्र बनाने की व्यवस्था, फदा आदि बहुत सी चीजें देखने योग्य हैं । इस घर का घेरा ६६० हाथ के लगभग है । इस घर के ऊँचे टावर पर चढ़ने के लिए लिफ्ट (Lift) नामक कल का प्रबन्ध है । ऊपर एक दूरवीन द्विफाजत के साथ रक्खी हुई है । उससे सारे नगर का दृश्य बहुत अच्छी तरह दिखलाई पडता है । स्टाडपार्क (Stadtpark) के भीतर एक घर में बड़े बड़े थर्मामेटर, बैरोमेटर आदि अनेक यन्त्र रक्खे हुए हैं । यहाँ ऐसा प्रबन्ध है कि जिसमें साधारण लोग पृथ्वी के प्रधान प्रधान स्थानों का समय और दूरी तथा आकाश-तत्त्व (Meteorology) सम्बन्धी बहुत से समाचारों को सहज में जान सके । और और पार्क भी सब सजे हुए हैं । एक पार्क में २० हाथ के लगभग ऊँची और ४-५ हाथ चौड़ी दरख्तों की सुन्दर दीवार एक नई चीज है । नगर के बाहर सम्राट् का शोनब्रन (Schonbrunn) नामक प्रोप्म-निवास, उससे मिला हुआ बाग, भरना, चिडियाखाना

कमिश्नर अब तक मेरे पास ही बैठे थे । हम दोनो ही चुप थे । सन्ध्या के समय उनसे बातचीत शुरू हुई । हम दोनो मे से हर एक की यही धारणा थी कि जहाज पर अँगरेजी जाननेवाला कोई आदमी नहीं है और इसी से अब तक चुप बैठे हुए थे । वह छुट्टी के बाद कुस्तुनियुनिया देख कर नौकरी पर लौट जाने के अभिप्राय से इधर जा रहे थे । इन्होंने लन्दन से पासपोर्ट नहीं लिया था । बुडा में किस तरह पासपोर्ट मिलेगा, यह मुझसे पूछ कर वह जहाज से उतर गये ।

बुडा-पेस्ट । नदी के पश्चिम तट पर बुडा और पूर्व-तट पर पेस्ट है । दोनों के मिलने से बुडा-पेस्ट नगर बसा है । यहाँ की जन-सख्या ६ लाख के लगभग है । बुडा का स्थानीय नाम हे ओफेन (Ofen) । पहले इस जगह एक रोमन नगर (Transaquincum) था । डान्यूब नदी के दोनो तटों पर बसा हुआ बुडा-पेस्ट नगर यूरोप का एक परम सुन्दर दृश्य है । नदी पर तीन पुल हैं । उनमें झूलना-पुल (Suspension bridge) श्रेष्ठ है । इसमें ४,४०,००० पौण्ड लगे हैं । एक अँगरेज इंजीनियर की देख-रेख में यह पुल बना है । इसका काम सन् १८४२ से शुरू होकर सन् १८४६ में पूरा हुआ । बुडा नगर छोटी छोटी पहाडियों पर बसा है । पीछे अग्र के खेतों से शोभित पर्वतमाला है । पेस्टनगर समतल भूमि पर बसा है । उसकी सुन्दर श्वेतवर्ण इमारतें नदी-तट पर बड़ी बहार दिखलाती हैं । बुडा के मध्य-स्थल में श्लोसबर्ग (Schlossberg) नामक छोटे पहाड पर राजमहल, गवर्नमेट हाउस, आर्सेनल आदि हैं । यह स्थान देखने में एथेन्स के "आक्रोपालिस" के समान है । राजमहल में हंगरी के राजों के अनेक बहुमूल्य अलङ्कार आदि रक्ते हैं । यहाँ दो प्रधान पार्क हैं । एक नगर के भीतर है,

हगेरी-यात्रा । आठ दिन से अधिक वियेना में रह कर एक दिन सबेरे डान्यूव-स्टीमर पर हगेरी (Hungary) की राजधानी बुडा-पेस्ट (Budapesth) नगर को रवाना हुआ । डान्यूव एक बहुत भारी नदी है । यूरोप की अधिकांश नदियाँ दुबली-पतली हैं । पर डोनाओ (डान्यूव) वैसी नहीं है । इसमें ४०० छोटी बड़ी नदियाँ आकर मिली हैं । इसके दोनों किनारों का दृश्य कई जगह पर वगाले की पद्मा नदी के समान है । किसी किसी जगह किसान लोग नहाते भी देख पड़े । हगेरी की सीमा में प्रवेश करने पर किसानों की पोशाक विल्कुल बदली हुई देखने को मिलती है । सादा ढीला पाय-जामा, कुर्ता, उसके ऊपर किसी प्रकार का कमरबन्द और साधारण टोपी, यही यहाँ के किसानों की पोशाक है । यूरोप में कोई काम की चीज बेकार नहीं पड़ी रहती । डान्यूव के दोनों तटों पर प्रवाह-शक्ति से बहुत सो मिलें चलती हैं । रास्ते में अनेक सुन्दर वस्तियाँ देख पड़ें । उनमें प्रेसबर्ग (Presburg) शहर प्रधान है । सन् १७४१ में, प्रसिद्ध रानी मेरिया-थेरेसा घोर विपत्ति में पड़ कर छोटी सी बच्ची को गोद में लिये हगेरी प्रजा से सहायता माँगने को जिस कैसल में उपस्थित हुई थीं वह प्राचीन इमारत, और हगेरी की राजधानी होने के समय जिस गिर्जे में राजा का अभिषेक होता था वह गिर्जा, तथा लाट-पादरी का महल नदी-तट से अच्छी तरह देख पड़ा । कहीं पर हरे-भरे खेतों से सुशोभित पहाड़ों की चोटियों पर प्राचीन किले और कैसल, कहीं गाँव, नगर, पुराने महल आदि के भग्नावशेष और कहीं हजार वर्ष से भी अधिक पुराने भारी गिर्जे आदि देखते देखते एक पहर रात गये मैं बुडा नगर में पहुँचा । जहाज पर अनेक जाति के यात्री लोग इतना कोलाहल मचाते थे कि दिन-रात डेक के ही ऊपर रहना पड़ता था । धर्मा के एक

महाशय के पास जाने पर उन्होंने विशेष आग्रह के साथ वह दान-पत्र मुझे दिखाया और रजिस्टर में मेरे हस्ताक्षर करा लिये । नगर की शोभा के लिए अनेक मूर्तियाँ स्थापित हैं । उनमें पिटोफी (Petofi) की मूर्ति बहुत साफ है । स्वर्ग की ओर दृष्टि किये हाथ उठाकर गभीर भाव से वे मानो ईश्वर के नाम का प्रचार कर रहे हैं । देखने से हृदय में शक्ति पैदा होती है । सन् १२४१ में तातार लोगों ने इस नगर को बड़ी हानि पहुँचाई थी । उसके बाद सुल्तान सुलेमान ने सन् १५४१ में इस नगर पर अधिकार कर लिया । तब से सन् १६८६ तक एक तुर्क पाशा इसका शासन करता रहा । मुसलमानों को भगाकर जब फिर क्रिश्चियनो ने इस पर कब्जा कर लिया तो उन्होंने मसजिदें तोड़कर गिर्जे बना लिये । इसके चिह्न इस समय भी दराने को मिलते हैं । नगर के कुछ निवासी स्लोवक (Slovak) जाति के हैं । यहाँ भाषा भी तीन तरह की बोली जाती है । यहाँ के अधिवासी साधारणतः कोमल स्वभाववाले, शौकीन, आडम्बरप्रिय और विदेशियों पर श्रद्धा रखनेवाले जान पड़ते हैं । बहुतों के हाथों में ताबीज बँधे देख पड़े । यहाँ से एक प्रकार से एशियाई भाव की खिचड़ी शुरू हो गई है । एक यात्री ने लिखा है—

“As regards scenery, architecture, and ethnographical features Budapesth is a city in which extreme types do not only occur, but are so obvious and striking as to attract the notice of the most superficial observer”

यहाँ के बाजारों में जहाँ देखिए शोर-गुल मच रहा है । तरबूज और बैंगन भी यहाँ बिकते हैं । बैंगन तो वियेना में भी देख पड़े थे । सड़कों पर म्यूनीसिपलिटी की ओर से छिड़काव नहीं होता ।

उसमें मनोहर भील और अनेक प्रकार के वृक्ष हैं। दूसरे पार्क नदी के भीतर एक टापू में है। यह अँगरेजी पार्क के बराबर का है। इसमें कई एक विलास-भवन (विला) और हम्माम भी हैं। नगर में अनेक गिर्जे और यहूदियों का एक भारी भजन मन्दिर (सिनेगाग) है। पहले कभी मैं यहूदियों के भजन-मन्दिर में भीतर नहीं गया था। इसी से यहाँ एक दिन 'सिनेगाग' में गया उपासना करनेवाले बहुत थोड़े थे। सब सिर पर टोपी दिये बैठे थे। वे आपस में ससार के कामकाज की बातें कर रहे थे। पुरोहित बेचारा किसी तरह अपना काम पूरा कर रहा था। नदीपार होकर पेस्ट में प्रवेश करनेवाले को एक 'टानेल' के भीतर होकर जाना पड़ता है। पेस्ट के अधिकांश मकान एक ही सण्ड के हैं। यहाँ का क़िला एक पहाड के ऊपर है। क़िले पर से इस पार और उस पार का दृश्य बहुत ही सुन्दर मालूम पड़ता है। दुर्गरक्षक सिपाहियों की जैसी पोशाक है वैसा ही चेहरा है। देखकर मुझे तो उन पर कुछ श्रद्धा नहीं हुई। पेरिस जैसे फ्रान्स का सर्वस्व है वैसे ही बुडा-पेस्ट हंगेरी का सर्वस्व है। देश का सारा बौपार यहाँ होता है। यहाँ विश्वविद्यालय, उच्च श्रेणी का कालेज, वाणिज्य-विद्यालय, ५ नार्मल स्कूल, नक़शा सोखने का स्कूल (School of design), संगीत-विद्यालय, मानमन्दिर, धातवीय स्नानागार (Mineral Baths), विज्ञान-शिक्षालय, व्यावहारिक शिल्पविद्यालय, (Polytechnic School), म्यूजियम और चित्रशाला भी है। विश्वविद्यालय का कार्यविवरण मागियर (Magyar) भाषा में प्रकाशित होता है। स्नानागारों में से दो तुर्कों के हैं। म्यूजियम के भारी सभ्रह में हजारों प्राचीन 'दलीलें' रक्खी हैं। उनमें मार्टिन लूथर का बसीयतनामा (Will) भी है। अनेक अनुसन्धान के बाद म्यूजियम के डाइरेक्टर

के लगभग प्रतिष्ठित परिवार बसते हैं । प्रिन्स लिथ्टेनस्टिन, जिनकी वियेना की चित्रशाला प्रसिद्ध है, उनके केवल बोहेमिया प्रदेश के इलाके में ऐसे १,१०० नौकर हैं जो सिर्फ शिकार के पशु-पक्षियों और जङ्गलों की हिफाजत करते हैं । अभिमानी होने पर भी इन लोगों में एक बड़ा गुण यह है कि लोभ में न पडकर, देश के मङ्गल के लिए, बहुत सी पूँजी लगाकर, इन लोगों ने बहुत से कल-कारखाने खोल रखे हैं । इनमें कुछ हमारे देश के ऐसे 'बड़े आदमी' भी हैं जो कोई उद्यम नहीं करते और अपव्यय करने में जरा भी नहीं हिचकते । ये लोग शीघ्र ही गरीब होकर अपना धन सबको वॉट देते, और उससे निस्सन्देह परोपकार करते हैं । जैसा कवि पोप ने कहा है—

"Wealth in the gross is death, but life diffused,
As poison heals in just proportion used,
In heaps, like ambergris, a stink it lies,
But well dispersed is incense to the skies"—Pope

प्रसिद्ध यात्री हाइटमैन साहब ने इन लोगों को "An endless ocean of stupidity" बतलाया है । आस्ट्रिया का मध्यवर्त्त समाधि प्रशंसा के योग्य है । ये लोग विदेशियों से बहुत ही अच्छा व्यवहार करते हैं । ये न जुआ खेलते हैं और न शराब पीते हैं । पोलो बावूगीरी इनमें विल्कुल नहीं देख पडती । गृहस्थों के लडके-लडकी गाने-बजाने में ऐसे होशियार हैं कि गानेबजानेवालों को हरा दें । यहाँ मामूली दूकानदार से भी हेलमेल करने में भले आदमी कुछ सकोच नहीं करते । क्योंकि यहाँ किसी श्रेष्ठी के आदमी में गँवारपन नहीं है । आस्ट्रिया की औरतें समाज का केन्द्र हैं । जर्मनी में औरतें केवल गृहस्थी के कामकाज में ही लगी रहती

दूकानदार लोग खुद अपनी अपनी दूकान के सामने छिडकाव कर लेते हैं ।

आकुइनकुम (Aquincum) । एक दिन रेल पर चढ़कर भू-भ्रम से निकाले गये प्राचीन रोमन नगर आकुइनकुम देखने गया । स्टेशन पर उतर कर पता लगाते लगाते कुछ दूर पर जाकर देखा, खेत में बैठा हुआ एक किसान विश्राम कर रहा है । बड़ी मुश्किल से, इशारों से, वह मेरा अभिप्राय समझा । उससे पता पाकर मैं अभीष्ट स्थान पर पहुँच गया । वहाँ जाकर देखा, जमीन के नीचे अभी नगर का बहुत सा अंश दबा पड़ा है । उस समय भी 'सफाई' का काम जारी था । पम्पियाई के ऐसे मकानात निकल रहे थे । स्टेशन में लौट कर आया तो वहाँ एक भी आदमी न था । गाड़ी आने-जाने के समय भर स्टेशन के कर्मचारी वहाँ रहते हैं, उसके बाद क्वार्टर में चले जाते हैं । पेस्ट में, लौटकर, आते समय बहुत प्यास लगी । राह में एक बुढिया से तरबूज मँगल लिया और वहीं बैठ कर खाया । तरबूज बहुत ही मीठा था ।

आस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य की साधारण अवस्था । साम्राज्य की जनसंख्या चार करोड़ के ऊपर है । उनमें एक करोड़ जर्मन-भाषा-भाषी और दो करोड़ स्लैव (Slavs) जाति के हैं । इस साम्राज्य में स्लैव-जाति ही धीरे धीरे प्रबल होती चली जाती है । इनका प्रधान गुण यही है कि ये लोग जाति-हित के लिए व्यक्तिगत स्वार्थ को छोड़ देना खूब जानते हैं और उसके लिए सदा प्रस्तुत रहते हैं । आस्ट्रिया के प्रतिष्ठित (Nobles) लोग इस समय भी मध्य-युग की अवस्था में पड़े हुए हैं, उन्हें बीसवीं शताब्दी की जानकारी से उतना सरोकार नहीं है । इनमें अनेक वीर पुरुष पाये जाते हैं, किन्तु आत्माभिमान ने उनको मिट्टी कर रक्खा है । इस समय आस्ट्रिया-प्रदेश में ३००




प्रजा के साथ मिल कर देश की राजनैतिक स्वाधीनता के लिए उद्योग करने लगे । इस महान् स्वार्थत्याग से उन लोगों की कोई हानि नहीं हुई । उनकी मान-मर्यादा पहले से दस-गुनी बढ़ गई और वे जिस ऊँचे पद पर थे उसी पर बने हुए हैं । इस देश के मैग्ना-चार्टा (Magnacharta) का नाम है “गोल्डेन-बुल” (Golden Bull) । आश्चर्य की बात तो यह है कि “मैग्नाचार्टा” और गोल्डेन-बुल” दोनों, एक ही समय में एक ही ढंग से बलपूर्वक प्रजा ने राजा से लिखवा लिये । इस साम्राज्य में रोमनकैथलिक धर्म का बड़ा जोर है । केवल हंगरी में ही इस सम्प्रदाय की ५० लाख बोधे जमीन की जर्मीदारी है । सारे साम्राज्य में १०,००० ‘माक’ (Monk) और १२००० ‘नन्’ (Nun) हैं । हंगरी के लाटपादरी की सालाना आमदनी एक लाख पौण्ड है । वर्तमान लाट-पादरी के पिता तीस लाख पौण्ड के लग-भग सम्पत्ति छोड़ कर मरे थे । साम्राज्य के जर्मन अधिवासी उक्त सम्प्रदाय के विरोधी हैं । इसी से पादरी लोग भरसक उस देश से जर्मन-भाषा की दूर करने की कोशिश करते रहते हैं ।

शान्ति के समय साम्राज्य में साढ़े तीन लाख सेना रहती है, किन्तु युद्ध के समय १८ लाख तक जमा हो सकती है । २,००० से ऊपर तापें हैं । जगो जहाज १४० हैं । उनमें १४ लौहयान, १२ टारपीडो-जहाज और ६२ टारपीडो-डोंगियाँ हैं । मेरी यात्रा के साल साम्राज्य की आमदनी १३ करोड़ पौण्ड से ऊपर हुई थी । खर्च की भी तादाद इतने ही के लगभग थी । ऋण साढ़े इक्कीस कराड पौण्ड था । हंगरी का हिसाब इससे अलग है । हंगरी की ६ करोड़ पौण्ड के लगभग आमदनी और २२.१ करोड़ पौण्ड के ऊपर ऋण है । यहाँ के चाँदी के सिक्के का नाम है फ्लोरिन या गुल्डेन (Florin or

हैं, पर यहा वह बात नहीं है । यहाँ की स्त्रियाँ सब कामों में स्वामी की सहायता करती हैं । गृहस्थी के कामकाज में भी उनको कोई हरा नहीं सकता । इन्हीं सब कारणों से बहुत लोगों का कहना है कि इस देश का गार्हस्थ्य जीवन सुखपरिपूर्ण है । अँगरेज यात्री लोग यहाँ की निम्नश्रेणी की महिलाओं की भी बहुत प्रतिष्ठा करते हैं । हगेरी की आमदनी और खर्च और शासन-व्यवस्था आदि बिल्कुल अलग है । इस देश का राजनैतिक इतिहास बहुत कुछ इंग्लैंड के इतिहास से मिलता-जुलता है । इस देश में ३१ लाख से अधिक प्रोटेस्टेन्ट क्रिस्तान हैं । ये ही लोग राज्य का बल और भरोसा हैं । देश की नैतिक और आर्थिक उन्नति इन्हीं पर निर्भर है । मागियर जाति, नवौं शताब्दी के शेषभाग में, एशियाखण्ड से यूरोप में जाकर बसी थी । ये लोग लाप (Lapps) और फिन् (Finns) लोगों की तरह मंगोलियन जाति के हैं । भाषा इनकी फिन् लोगों की भाषा से मिलती हुई है । प्रकृति में ये लोग आयरिश लोगों से मेल खाते हैं—“Impetuous, impulsive and imaginative, patriotic and courageous, vain of their country, and passing from one extreme of joyous elation to the other of sadness and depression”

बहुत लोग कहते हैं कि हगेरियन लोग आमोदप्रिय और भविष्य पर ध्यान न देनेवाले हैं । किन्तु पचीस बरसों में उन्होंने ने रेल्वे निकाली हैं, मिलें खड़ी कर ली हैं और वाणिज्य, साहित्य, विज्ञान, सङ्गीत, चित्रकला आदि विषयों में एक अद्भुत उन्नति करके सारे यूरोप की दृष्टि अपनी ओर आकृष्ट करली है । इससे तो वे बड़े ही होशियार जान पड़ते हैं । हगेरियन प्रतिष्ठित-समाज (Nobility) अत्यन्त उदार और महामनस्वी है । सन् १८४८ में इन लोगों ने आप ही अपनी कुल परम्परा की वशमर्यादा और स्वत्व छोड़ दिये और साधारण

सर्विया ।

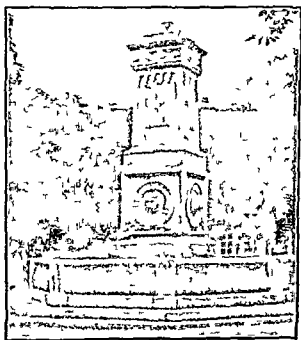

 डा से रेल पर चढ़कर सर्विया (Servia) की यात्रा की ।

बु जितना ही आगे बढ़ता जाता था उतना ही यूरोपियन

 सभ्यता की कमी और एशियाई भाव की बढ़ती देख पड़ती
 थी । पाश्चात्य पोशाक, रहनसहन, चालचलन की जगह एशियाई
 वेशभूषा और रीति-रस्म देख पड़ने लगे । बैल, भेंडा, बकरी, यहा तक
 कि मिट्टी तक बदल गई । रेल की लाइन के दोनों तरफ बहुत सी
 तमाखू की खेती देख पड़ी ।

वेलग्नेड् (Belgograd) । इसका स्थानीय उच्चारण है “वियेलगो-
 रोड” अर्थात् श्वेत नगर । रात को रेल से उतर कर होटल जाने के
 रास्ते मे मुझे स्पष्ट मालूम पड़ने लगा कि यूरोप से विदा हो रहा हूँ ।
 सबेरे उठकर “शानकर-कम्पनी” के आफिस में गया । लन्दन से
 चलते समय सकल्प था कि बुडा-पेस्ट से लौट आऊँगा । किन्तु
 वियेना मे जब था तब एक दिन पार्क में सन्ध्या के समय बैठे बैठे
 मैंने सोचा कि इतनी दूर आकर प्रीस और टर्की को देखे बिना चले
 जाना ठीक नहीं, यात्रा करने की लालसा अत्यन्त प्रबल होने
 पर भी तन्दुरुस्तो ठीक न थी । परन्तु विधाता के सहारे उसी
 रात को लन्दन के बैंक को कुछ रुपया वेलग्नेड में ‘शानकर
 कम्पनी’ के पते पर भेजने के लिए लिखकर मैंने प्रीस और
 टर्की देखने का इरादा पक्का कर लिया । इस कम्पनी का नाम

gulden) । उनकी कीमत है एक शिलिंग और आठ पेनी । पैसे का नाम है क्राजिया (Kienzei) । यहाँ भी दशमिक-प्रथा प्रचलित है । चाँदी-सोना कम देख पड़ता है, केवल नोट ही अधिकतर चलते हैं । नोटों की संख्या कम करके चाँदी का सिक्का अधिक चलाने की चेष्टा हो रही है ।

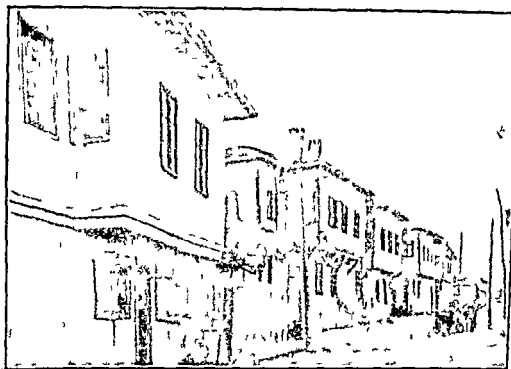


सर्विया—एक सडक—पृ० ५१६

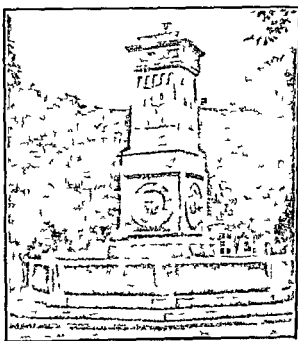


भिसमाइकेल का स्मारक-स्तम्भ—पृ० ५१७

भी पहले मुझे नहीं मालूम था । वेलग्रेड में कुक-कम्पनी का कोई प्रबन्ध न होने के कारण पता लगाने से मुझे इस कम्पनी का परिचय प्राप्त हुआ था । वेलग्रेड में जब मैं आया तो 'शानकर कम्पनी' के दफ्तर में रुपये आने न-आने का समाचार पूछने गया । मालूम हुआ कि इस सम्बन्ध का कोई पत्र या रुपया अभी तक इस कम्पनी में नहीं आया । यहाँ से नगर की सैर करने के लिए चला । नगर छोटा है; ५५,००० के लगभग लोग बसते हैं । यह देश ४०० बरस से भी अधिक समय तक टर्की के अधीन रह चुका है । इसी से यहाँ कुछ कुछ मुसलमानी भाव अब तक देख पड़ता है । सन्धि-पत्र में मसजिदों को तोड़ने का निषेध है, इस कारण दो मसजिदें अभी तक बनी हुई हैं । एक में स्थानीय मुसलमान लोग उपासना करते हैं और दूसरी में गैस का कारखाना खुला है । सड़कों पर गैस की रोशनी का प्रबन्ध नहीं हुआ है । दूर दूर पर क्लोरोसिनतेल की एक एक लास्टेन टिमटिमाया करती है । राजमहल के लिए यह गैस का कारखाना खुला है । बाजार में जाकर देखा, हम लोगों के देहाती की तरह घाट लगी हुई है । जमीन में चटाइयों के ऊपर ढेर के ढेर आलू, प्याज, परवल आदि रक्खे हैं, दूकानदार लोग बेंच रहे हैं । आस-पास के देहाती निम्नश्रेणी के बहुत से औरत-मर्द मामूली कपड़े पहने नगे पैरों सौदा खरीदने आये हैं । कुछ लोग काबुलियों के ऐसे कपड़े पहने थे, उनके पैरों में बस्किन (Buskin) जूते थे । रास्ते में भद्रमहिलायें नगे पैरों में मरमली पतले स्लीपर पहने सैर करने निकली हैं । उनके सिर पर तुर्की टोपी और उसके ऊपर जूड़ा एक नया ही दृश्य था । जूड़ों में रुपयों की मालायें गुथी हुई थीं । यहाँ मिसरी और घी की बड़ी खपत है । हमारे देश की ऐसी बैलगाडियाँ और टट्टू यहाँ बहुत हैं । कनेर के



सर्विया—एक सड़क—पृ० २१६



प्रिसमाइकेल का स्मारक स्तम्भ—पृ० २१७

भी पहले मुझे नहीं मालूम था । वेलग्रेड में कुक-कम्पनी का कोई प्रबन्ध न होने के कारण पता लगाने से मुझे इस कम्पनी का परिचय प्राप्त हुआ था । वेलग्रेड में जब मैं आया तो 'शानकर कम्पनी' के दफ्तर में रुपये आने न-आने का समाचार पूछने गया । मालूम हुआ कि इस सम्बन्ध का कोई पत्र या रुपया अभी तक इस कम्पनी में नहीं आया । यहाँ से नगर की सैर करने के लिए चला । नगर छोटा है, ५५,००० के लगभग लोग बसते हैं । यह देश ४०० बरस से भी अधिक समय तक टर्की के अधीन रह चुका है । इसी से यहाँ कुछ कुछ मुसलमानी भाव अब तक देख पड़ता है । सन्धि पत्र में मसजिदों को तोड़ने का निषेध है, इस कारण दो मसजिदें अभी तक बनी हुई हैं । एक में स्थानीय मुसलमान लोग उपासना करते हैं और दूसरी में गैस का कारखाना खुला है । सड़कों पर गैस की रोशनी का प्रबन्ध नहीं हुआ है । दूर दूर पर क्लिरोसिनतेल की एक एक लास्टेन टिमटिमाया करती है । राजमहल के लिए यह गैस का कारखाना खुला है । बाज़ार में जाकर देखा, हम लोगों के देहाती की तरह घाट लगी हुई है । जमीन में चटाइयों के ऊपर ढेर के ढेर आलू, प्याज, परबल आदि रक्ते हैं, दूकानदार लोग वेंच रहे हैं । आस-पास के देहाती निम्नश्रेणी के बहुत से औरत-मर्द मामूली कपड़े पहने नगे पैरों सौदा खरीदने आये हैं । कुछ लोग काबुलियों के ऐसे कपड़े पहने थे, उनके पैरों में बस्किन (Buskin) जूते थे । रास्ते में भद्रमहिलायें नगे पैरों में मरमली पतले स्लीपर पहने सैर करने निकली हैं । उनके सिर पर तुर्की टोपी और उसके ऊपर जूहा एक नया ही दृश्य था । जूहों में रुपयों की मालायें शुधी हुई थीं । यहाँ मिसरी और ची की बड़ी खपत है । हमारे देश की ऐसी वेलगाडियाँ और टट्टू यहाँ बहुत हैं । कनेर के

been able to produce, and which no pen could ever hope to describe She appeared most statuesquely, divine, who would not risk everything to gratify her slightest whim ? ” “अर्थात् राजा को देख कर मैं चकित हो गया, केन्तु उनकी माता का चेहरा देख कर तो मैं सन्नाटे में ही आगया । यह अवश्य है कि मैं एक विशेष प्रकार का सौन्दर्य देखने की आशा से आया था, लेकिन जैसा स्वर्गीय सौन्दर्य देख पडा उसकी तो पहले में कल्पना भी नहीं कर पाया था । उस सौन्दर्य को कोई चित्रकार प्रद्वित करके दिखाना नहीं सकता, किसी की लेखनी उसका वर्णन नहीं कर सकती । जान पडता था, जैसे कोई स्वर्गीय चित्र सामने उपस्थित है । उन्हें यथाशक्ति प्रसन्न करने के लिए कोई क्या नहीं कर सकता ? ”

नेटालिया के पुत्र अलेक्जडर और उनकी रानी सन् १८०३ में विद्रोहियों के हाथ से मरे ।

इस देश के चादी के सिक्के का नाम है दीनार और कोमत में यह फ्रान्स के फ्रेरु के बराबर है । परन्तु यह देश 'लैटिन यूनियन' के अधीन नहीं है । पैसे को पारा कहते हैं । १०० पारा का एक दीनार भुनता है । यहाँ भी दाशमिक-प्रथा प्रचलित है ।



म्यूजियम आदि भी हैं । वल्कि कालेज वगैरह की सख्या नगर के देखते अधिक ही है । यहाँ कुछ अधिक एक लाख आदमी रहते हैं ।

सर्विया-राज्य की साधारण अवस्था । राज्य बहुत ही छोटा—केवल १८७६० वर्गमील का—हमारे देश के ८।१० जिलों के बराबर—है । तीस लाख के लगभग आवादी होगी । यूराप के अनेक देशों की अपेक्षा यहाँ की जन-सख्या शीघ्रता के साथ बढ़ती जाती है । इस देश का जल-वायु सर्दियों में जैसा विषम रहता है वैसा ही या उससे भी अधिक बुरा गर्मियों में हो जाता है । सन् १८८२ से यहाँ पार्लियामेन्ट स्थापित हुई है । उसको स्थानीय भाषा में “स्कुप्टिना” (Skupstehina) कहते हैं । प्रजा के चुने हुए १६० सभासद सब काम करते हैं । सन् १८१२ में कुछ अधिक ४८ लाख पौण्ड राज-कर वसूल हुआ था और २१ करोड पौण्ड के ऊपर राज्य पर ऋण था । शान्ति के समय १८,००० और युद्ध के समय एक लाख तक सेना का प्रबन्ध है । विशेष प्रयोजन पडने पर दो लाख तक जमा की जा सकती है । सन् १३८८ से बराबर टर्की की अधीनता में रहने के उपरान्त, रूस-टर्की युद्ध होने पर, सन् १८७८ में, रूस की कृपा से इस राज्य ने स्वाधीनता पाई है । वर्त्तमान राजा पीटर को, सन् १८०३ की १५ वीं अप्रैल को, प्रजा ने अपना राजा स्वीकार किया था । इनके पूर्ववर्ती राजा की माता नेटालिया (Queen Natalie) अद्वितीय सुन्दरी थीं । एक अँगरेज यात्री ने उनको देखा और देख कर वह मुग्ध हो गया था । वह यात्री लिखता है—“The King's appearance surprised me, that of his mother overwhelmed me I had expected great beauty, but not such transcendent beauty as this It is a beauty which no pencil has

कर स्वतन्त्र हो गई। तभी से यह नगर बलगेरिया की राजधानी है। इस प्रदेश के शासक तुर्की पाशा लोगो ने भी इसी नगर को प्रधानता दी थी। कई एक बाग़ और 'मिनारेट' से नगर की कुछ शोभा हो गई है। रास्तों में उतनी सफ़ाई नहीं है। गलियाँ टेढ़ी-मेढ़ी हैं। अधिकांश घर लकड़ो के, बहुत ही मामूली ढंग के, बने हुए हैं। नगर के बाहर चारो ओर उदास मरुभूमि का दृश्य देख पडता है। पूर्व बाज के उपनगर में राजमहल है। उसके बनने में चालीस लाख फ़्रँक लगे हैं। इसके पास ही नया यूरोपियन-मोहल्ला है। नगर में बहुत सी मसजिदें हैं। बुयुरु जमी मसजिद में ६ धातुओ का बना हुआ गुम्बद शोभायमान है। सोफिया-मसजिद, जो पहले ईसाइयों का गिरजा थी, भूकम्प में गिर गई और वैसी ही पडी हुई है। एक भारी मकान में सर्वसाधारण के लिए हम्माम बना है। उसमें भिन्न भिन्न धर्मावलम्बियों के लिए अलग अलग खण्ड बने हुए हैं। सन् १८२६ में तुर्क सूबेदार मुस्तफा पाशा ने अलबानिया (Albania) से आकर यहाँ ऐसी भयकर लूटपाट और अत्याचार (Bulgarian atrocities) किया कि आज भी यहाँ के बच्चे 'अलबेनियन' का नाम सुनकर भय से सिटपिटा कर चुप हो जाते हैं। लन्दन में एक जगह इस अत्याचार के अनेको दृश्य मोम की मूर्तियों के द्वारा ऐसे सजीव भाव से दिखलाये गये हैं कि देखते देखते आँसो से आँसू बहने लगते हैं। बच्चों और उनकी माताओ से जैसी पशुओ की ऐसी निडुराई की गई है उसे सभ्य या असभ्य कोई भी जाति नहीं कर सकती। यहाँ गुलाब का बहुत अच्छा इत्र बनता है।

फिलिप-पोली (Philippopolis) । महान् वीर अलेकजडर के पिता फिलिप ने यह नगर बसाया था। इसका बलगेरियन नाम है

बल्गेरिया ।



लूब्रेड् से रेल पर 'सोफिया' (Sophia) को खाना हुआ । रास्ते में, पिराट (Pilot) स्टेशन पर, बल्गेरिया (Bulgaria) का अधिकार आरम्भ होने के कारण यात्रियों को गाड़ी पर से उतर कर अपना अपना पासपोर्ट दिखाना पडा । मोहर करके पासपोर्ट फेर दिये गये । बल्गेरिया एक मामूली राज्य है, किन्तु इस वारे में वहाँ खूब कडाई की जाती है । सर्बिया में यह कुछ उपद्रव नहीं है ।

सोफिया । यह बल्गेरिया राज्य की राजधानी है । यहाँ पहुँचने के पहले ही मुझे वही छप्पर के घर, सागपात की बेलें, ढेंकी, सराय, पाचजामा, मिर्जई, साफा और छोटे छोटे गाँव-पुरखे आदि अपने देश के ऐसे दृश्य देख पडने लगे । प्राचीन सार्डिका (Sardica) नगर की जगह पर सोफिया नगरी बसी है । कुस्तुनुनिया बनने और बसने के पहले सम्राट् कान्स्टन्टाइन कहा करते थे कि "सार्डिका ही मेरा रोम है ।" इस समय एक लाख के ऊपर आदमी यहाँ बसते हैं । उनमें दस चारह हजार तुर्क, उनसे भी अधिक यहूदी, और एक हजार से अधिक 'जिप्सी' लोग रहते हैं । किसी समय यहाँ डेढ़ लाख आदमियों की घस्ती थी । रूस-टर्की-युद्ध के बाद, सन् १८७८ में, बल्गेरिया तुर्कों के हाथ से निकल

यहाँ का गुलाब-जल और गुलाब का इत्र प्रसिद्ध है। नगर के दृश्यों में सुल्तान का महल (भग्नावस्था में है), पुल, चहारदीवारी, फाटक, हेड्रियन स्तम्भ का टुकड़ा, आकिडाकू आदि रोमन-समय की कीर्तियाँ प्रधान हैं। इस शहर में ४० मस्जिदें, २५ मदसे, अनेक फुहारे और हम्माम हैं। मस्जिदों में सुल्तान सलीम की मस्जिद श्रेष्ठ है। साइप्रस-द्वीप के 'फामागोस्टा' के प्राचीन भग्नावशेष से माल-मसाला लाकर यह मस्जिद बनाई गई है। इसका गुम्बद प्रसिद्ध सेण्टसोफिया-मसजिद से दो फुट ऊँचा है। ३७८ सीढियाँ चढ़कर लोग प्रधान बालकनी-बरामदे में पहुँचते हैं। इसमें १४० फुट ऊँचे चार 'मिनारट', सगमरमर के फर्शवाले कई आँगन और 'कालोनेड' तथा ६६६ दर्वाजे हैं। मुसल्मानों का यह सुप्रसिद्ध उपासना-मन्दिर है। इसके सिवा सुल्तान मुराद की मसजिद (यह पहले ईसाइयों का गिर्जा था), वाजिद-मसजिद, महम्मद-मसजिद और ग्रीक, आर्मेनियन तथा यहूदियों के भजन-मन्दिर भी बुरे नहीं हैं। प्रधान बाजार का नाम है अलीपाशा बाजार। इसमें सफेद और लाल रंग की ईंटे लगी हैं। यह बाजार थियेटर हाल की तरह ६०० फुट का लम्बा बना है। अनेक प्रकारके महीन कपड़े, कौमती गहने और इत्र आदि एशिया की सामग्रियाँ यहाँ बिकती हैं। भारी आकिडाक्ट के द्वारा नगरवासियों के पीने के लिए दूर से पानी मँगाया जाता है। सन् १८२६ की २० वीं अगस्त को इस नगर पर दखल हुआ और पर-वर्ती १४ वीं सितम्बर को यहाँ पर जिस सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर हुए उससे टर्की के कई प्रदेश उसके हाथ से जाते रहे। सुल्तान को इस सन्धि में ग्रीस, मोल्डाविया, वालाचिया और सर्बिया की स्वाधीनता स्वीकार करनी पड़ी और रूस को भी कुछ अधिकार देने पड़े। किन्तु उस समय भी वेल्सेड का क़िला एक तुर्क पाशा और पल्दन के

टर्की ।



ड्रियानोपुल के पूर्ववर्ती स्टेशन 'मुस्तफ़ा-पाशा' से टर्की का खास इलाक़ा शुरू हो जाता है। 'पिरोट' की तरह वहाँ भी यात्रो उतारे गये और उनके पासपोर्ट की जाँच हुई। यहाँ के कर्मचारी बड़े ही उद्धत हैं, सभ्यता का लेश भी उनमें नहीं पाया जाता।

एड्रियानोपुल। रोमन-सम्राट् हेड्रियन ने इस नगर को स्थापित किया था, इसी से इसका यह नाम पडा है। तुर्क लोग इसे 'एड्रेने' कहते हैं। यह रूमेली वा रूमेलिया प्रदेश का प्रधान नगर है। तुर्क-साम्राज्य के नगरो में इसका दूसरा नम्बर है। सुल्तान मुराद ने सन् १३६० में इस पर अपना अधिकार कर लिया था। तब से सन् १४५३ में कान्स्टेन्टिनोपुल (कुस्तुन्तुनिया) जीतने तक यही नगर तुर्कों की राजधानी बना रहा। उसके बाद भी कई सुल्तान अधिकाश समय इसी नगर में बिताते थे। पहले यहाँ दो लाख आदमी रहते थे, पर अब ७०,००० के लगभग लोगो की बस्ती है। तुर्क-साम्राज्य ने सभी बातों में इसी तरह की उन्नति की है। नगर का कुछ हिस्सा एक पहाड़ के ऊपर और कुछ हिस्सा एक छोटी नदी पर बसा हुआ है। इसी जगह पर और एक नदी ने मिलकर सुन्दर सगम का दृश्य दिखला दिया है। नगर के रास्ते टेढ़े, तग और गन्दे हैं। रात को मच्छडो का भी बडा उपद्रव रहता है।

नेकट-सम्बन्ध और कहीं भी नहीं देखने को मिलता । वास्कोरस (Bosphorus) प्रणाली की एक शाखा राजधानी के भीतर चली गई है । उसका नाम है 'गोल्डेन हार्न' (Golden Horn) अर्थात् सुवर्ण-शृंग । यह शृंग के आकार की समुद्र शाखा चार मील के लगभग लंबी और ऐसी चौड़ी तथा गहरी है कि इसमें हजारों भारी भारी जहाज खड़े हो सकते हैं । समुद्र और नगर के मध्यभाग के बीच में बालू, नदी, नहर, डक कुछ भी नहीं हैं । समुद्र और नगर, दोनों, परस्पर एक दूसरे को गले से लगा रहे हैं । वेनिस में बराबर सब जगह 'गण्डोला' देस पडते हैं, यहाँ उस जगह पर १२० तोपोंवाला जहाज रास्ते के किनारे खड़ा रहता है । प्राचीनकाल में वेनिस के राजा (Doge) साल के अन्त में एक दिन आदर-अभ्यर्थना-सहित समुद्र को ब्याहने के लिए बड़ी धूमधाम से जाते थे । किन्तु यहाँ प्रचण्ड सागर निल सुल्तान की पैरों पर लोटा करता है, पृथ्वी के धन-रत्न उनके चरणों पर लाकर चढाता है, उनको एक महल से दूसरे महल में पहुँचाता है, चौबीसों घण्टे मृदु-मन्द पवन के हिलकारों से उनके पङ्खा झलता है, उनके प्रमोद-बाग के द्वार तक जगी जहाजों को पहुँचाता है और सबसे बड़ी सम्पत्ति अन्त पुर (अन्दर-महल) में पहरा देता है । गोल्डेन-हार्न के दक्षिण तट पर प्राचीन शहर है । इसी को इस समय 'खास इस्तम्बोल' कहते हैं । उत्तर-तट पर 'गलाटा' और 'पेरा' नाम की दो यूरोपियन ढग की बस्तियाँ हैं । वहाँ के निवासी प्राय यूरोपियन ही हैं । सुल्तान का नया महल भी उत्तर तट पर है । सुन्दर ढग से ऊँचे से ऊँचे कई एक पहाड़ों पर नगर बसने के कारण गोल्डेनहार्न से देखने किनारे सा दृश्य, एम्फी-थियेटर की तरह चकर पर चकर बहुत ही मनोहर जान पडता है ।

अधिकार में ही था। यहाँ एक थियेटर और एक इम्पीरियल-वैक है।

कान्स्टेन्टिनोपुल (कुस्तुन्तुनिया)। एड्रियानोपुल से रेल पर तुर्क-साम्राज्य की राजधानी कुस्तुन्तुनिया में पहुँचा। यहाँ १२ लाख के लगभग लोगो की बस्ती है। मुसलमान लोग इसे कुस्तुन्तुनियाँ और 'इस्तम्बोल' भी कहते हैं। ममरा(Marmora) सागर के किनारे पर से रेल की लाइन बस्ती के भीतर घुसती गई है। कहीं कहीं गृहस्थों के घर का भीतरी दृश्य तक रेल पर से देख पड़ता था। स्टेशन में उतरते ही राजकर्मचारी ने यात्रियो के पासपोर्ट देखे। मेगारियन (Megarian) वीर बाइजस (Byzas) ने ईसा से ६६० वर्ष पहले इस जगह पर एक नगर बसाया था। उसका नाम बाइजन्टियम (Byzantium) था। सन् ७३ में रोमन लोगो ने जब इस स्थान पर दखल कर लेने के बाद, सन् ३२८ में, सम्राट् कान्स्टन्टाइन ने सुविशाल रोमन-साम्राज्य के एशियाई हिस्से की राजधानी बनाने के इरादे से रोम-नगर के अनुकरण पर सात पहाडों के ऊपर इस सुन्दर शहर की नींव डाली थी। सन् १२०४ में वेनिसियन लोगो ने और उसके बाद सन् १४५३ में सुल्तान दूसरे मुहम्मद ने चढाई करके इस नगर पर अपना दखल कर लिया। मुसलमानो ने एस-टेन-पोली [अर्थात् "नगर"] ("Es-ten-poli"—The city) इन ग्रीक शब्दों से इसका "इस्तम्बोल" नाम निकाला है। रोमनों के अधिकार में जब यह नगर था तब इसे बहुत लोग 'नया रोम' कहते थे। इसी से इस प्रदेश को आज भी रूमेलिया और यहाँ के सुलतान को 'रूम का बादशाह' कहते हैं। इस्तम्बोल पृथ्वी के नागरिक दृश्यों में सर्वोत्कृष्ट न होने पर भी एक 'सास जगह' अवश्य है। समुद्र और राजधानी का ऐसा

आर्मेनियन और प्रोरु प्रजा ने पड़्यन्त्र रचा और विदेशी महाजन देश का खन (धन) सोंखन लगे । इन्हीं सब कारणों से सुल्तान दुखी बने रहते हैं । उनकी अपनी आर्थिक अवस्था अच्छी है । नौकर-चारूरो, मुसादिवो को मिलाकर सुल्तान के महल में ७,००० आदमी रहते हैं । वहाँ का सध सालाना खर्च १४,६०,००० पौण्ड है । यह रुपया सुल्तान को शाहीखजाने से मिलता है । इसके सिवा आधा युगदाद-प्रदेश और जार्डन-उपत्यका की सारी भूमि सुल्तान की निज की जमींदारी है । लेकिन धन बहुत पाम होने से क्या होता है ? उनको हर घडी जान का खटका बना रहता है । अब्दुल-हमीद की माँ पहले उनका खाना पकाया करती थी । उनके मर जान पर सुल्तान की रुन्या यह काम अपने हाथ से करती है । यह रुन्या उसमान पाशा को ब्याही है । सुल्तान का एक खास मित्र उनकी दवा करता है । सुल्तान उसी की बताई व्यवस्था के अनुसार रहते और उसी के हाथ की दवा खाते हैं । शुक्रवार के दिन महल के ही भीतर बनी हुई मसजिद में प्रार्थना करने जाते हैं, सो भी बड़ी सावधानता से । एक दिन किसी मुसाहब ने सलाह दी कि “हुजूर बीच बीच में अगर दूसरी जगह जाकर आब-हवा बदल आया करें तो तन्दुरुस्ती अच्छी रहे” । उस मुसाहब के चले जाने पर सुल्तान ने और सब मुसाहबो से रुहा कि “जान पडता है, यह आदमी चाहता है कि जल्दी ही मैं मर जाऊँ; नहीं वो ऐसा खटके का काम करने की सलाह क्यों देता” । सुल्तान के बहुत से सोने के घर हैं, वे सब सुरचित्त हैं । निरुट नगीची आदमी के सिवा और कोई नहीं जान सकता कि वह अब किस घर में सोते हैं । वर्त्तमान सुल्तान अब्दुलहमीद को कुछ कुछ यूरोपियन भाव पसन्द है और उनके पहले के कई सुल्तानों को भी यूरोपियन भाव पसन्द

सुल्तान । * वर्तमान सुल्तान का नाम है दूसरे अब्दुलहमीद । तीस बरस के लगभग हुए, अपने छोटे चचा सुल्तान अब्दुलअजीज के साथ यह इंग्लैंड की सैर कर आये हैं । सन् १८७६ में एक गहरा कुचक्र रचा गया । उसका फल यह हुआ कि सुल्तान अब्दुलअजीज सिहासन से उतार दिये गये और अब्दुलहमीद को भाई मुराद को गद्दी मिली । किन्तु वह राज-काज के अयोग्य ममके गये, इससे तीन महीने बाद अब्दुलहमीद सिहासन पर विठलाये गये । सुल्तान अब्दुलअजीज प्राण के भय से पकाये अण्डो के सिवा और कोई चीज नहीं खाते थे । राज्यभ्रष्ट होने के कुछ ही दिनों बाद उनकी मृत्यु हो गई । बहुत लोगों की धारणा है कि वह मार डाले गये । किसी किसी का यह भी कहना है कि उन्होंने आत्म-हत्या कर ली । अन्त को खून का मामला खडा करके 'काजी का विचार' भी हुआ था । उसमें मुराद और उसकी माता पर ही विशेष भोंक थी । किन्तु मुराद पहले ही से पागल हो गया था और बेगम का उतना अपराध न था । इस कारण दोनों छूट गये । यह सब देख कर अब्दुलहमीद ने पहले सिहासन पर बैठना नामजूर किया । उस समय चारों ओर की अवस्था भी अच्छी न थी । रजाने में कौड़ी न थी, साम्राज्य भर में विद्रोह मचा हुआ था, और रूस-राज्य पर चढ़ाई करने का उद्योग कर रहा था । सिहासन पर बैठने के पहले सुल्तान को जिनका खटका था वही सब वाते हुई । रूस से द्वार कर सुल्तान को अपमान सहना पडा और राज्य भी कट-छँट गया, यूरोप के निकट सदा के लिए कुण्ठित भाव हो गया,

* यह लेख सन् १८६१ का है । कई साल हुए, सुल्तान अब्दुलहमीद सिहासन पर से उतार दिये गये हैं । वर्तमान सुल्तान पाँचवें महम्मद का राज्याभिषेक सन् १९०२ में हुआ है । इस समय इनकी ७० वर्ष की अवस्था है ।

बादशाहों ने आप ही खुदा को सबसे बढ कर प्यार है, नहीं तो वह यूरोप की कुजी यह इस्तम्बोल शहर आपके हाथ में न रखता" ।

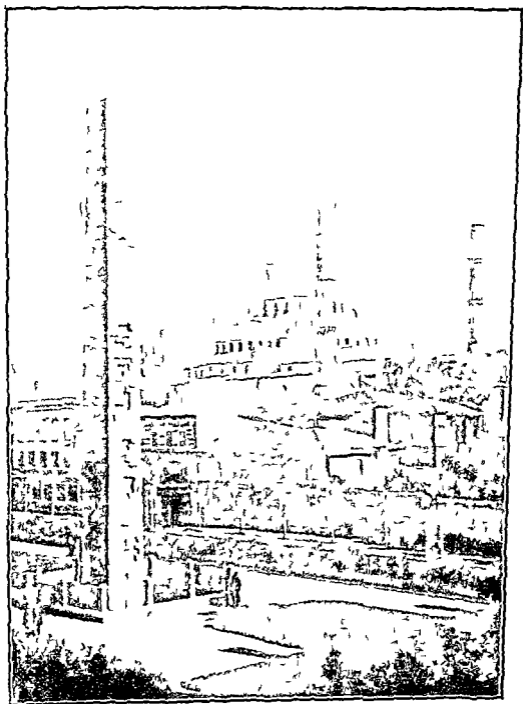
विल्दिज्ज क्रियोस्क । पुराना महल 'सिरालिओ' जल जान पर सन् १८६५ में यह नया महल बनना शुरू हुआ । यह पुराने इस्तम्बोल शहर से डेढ कोस पर खूब साफ जगह में बना है । पैरा की सड़क पर पैदल चलते चलते बहुत पता लगाने पर इस महल तक पहुँचा । फाटक में घुसते ही दरवान लोग "कापा कापा" अर्थात् "छाता बन्द करो!" कह कर चिछाने लगे । तब मालूम पडा कि अब एशिया में आ गया हूँ, राजमहल में छाता लगाकर जाने का हुक्म नहीं है । यहाँ छाता लगाकर जाना बडी भारी गुस्ताखी समझी जाती है । छाता बन्द करके ड्योही पर पहुँचने पर एक जमादार को किसी तरह मैं समझाया कि मैं हिन्दोस्तान का रहनेवाला हूँ । राजमहल देखना चाहता हूँ । यूरोप में सब जगह यात्रियों को हर एक राजमहल देखने को मिलता है । मैं समझाया कि यहाँ भी कुछ न कुछ देखने को मिलेगा । इसी आशा से गया था । लेकिन यहाँ इस मेरे मतलब को समझ कर वह व्यक्ति हँसने लगा । उसके बाद मेरा हाथ पकड कर वाग के भीतर से एक और फाटक पर ले जाकर उसने तुर्की भाषा के दो चार शब्दों में यह बात जाहिर की कि बस यहीं तक तुम महल की सैर कर सकते हो । उसके बाद हाथ के इशारे से उसने मुझ से चले जाने के लिए कहा । मैंने यही अपना भाग्य समझा कि धके नहीं खाने पडे । महल के भीतर कुछ देखने को नहीं मिला, लाचार इधर-उधर घूम कर बाहर से कुछ देखा । महल को एक छोटा सा नगर ही कहना चाहिए । वह दोपहर की नमाज का समय था । महल

था । अब्दुल-हमीद के बाबा सुल्तान महमूद की बड़ी इच्छा थी कि टर्की में यूरोपियन भाव भर दे । कुस्तुन्तुनिया के साम राजमहल का नाम है “यिल्दिज़-कियोस्क” । यहाँ के दरबार-खास में मुसल्मान और काफिर (मुसल्मानों के मतानुसार उनके धर्म को न माननेवाले) समान आदर पाते हैं । विश्वासघात न करने और वश्यता स्वीकार करने की हलफ़ पढ़ते समय ‘जौर’ अर्थात् काफिर “महम्मद रसूलिह्ला” छोड़ कर “लाइलाह इल्लिह्ला”-मात्र कहते हैं । इन्हीं कारणों से क़दर मुसल्मान इन सुल्तान से खुश नहीं हैं । और उधर उन्नतिशील नौजवान तुर्क जिस परिवर्तन और सुधार की प्रार्थना करते हैं उस भी सुल्तान सोलहो आने मजूर नहीं कर सकते, इस कारण वे भी सुल्तान से नाराज हैं । सुल्तान बेचार के लिए दोनो ओर सकट का सामना है । सुल्तान हमीद नियमित रूप से अपना जीवन व्यतीत करते हैं । मबरे ६ बजे उठकर १० बजे तक सेक्रेटरी के साथ राजकाज करते हैं । उसके बाद भोजन करते हैं । भोजन के बाद गाड़ी पर घूमने जाते हैं । घूम आकर लांगो से मुलाकात करते और अर्जियाँ लेते हैं । रात को आठ बजे प्रायः अकेले ही भोजन करते हैं । उसके बाद कुछ देर लडको को खिलाते और पियानो बजाते हैं । जो कोई कहीं से मिलने आता है उससे सीधे सादे भाव से मुलाकात करते हैं । उसे पास ही कुर्मी पर बिठलाते हैं और आप सिसारेट पीते पीते उससे बातचीत करते हैं । सुल्तान प्रेच-भाषा अच्छी तरह जानते हैं । किन्तु दरबार के कायदे के मुताबिक़ मुलाकात करनेवाले के साथ टुर्की या अरबी के सिवा अन्य भाषा में बातचीत की नहीं जा सकती । इस कारण टुभापिये के द्वारा बातचीत करनी पड़ती है । सुल्तान के मुसाहब लोग मदा उनको यही बात समझाया करते हैं कि “पृथ्वी के

follow that, not questioning it, obeying it as unquestionable ' यदि महम्मद ने इसी धर्म का प्रचार किया है तो इसे सार्वभौमिक मनातन धर्म मानने में किसे आपत्ति होगी ?

सुल्तान के हरम (अन्दर-महल) में सब मिला कर १,५०० स्त्रियाँ हैं । उनमें व्याही, रखैल और बाँदी, ये तीन दर्जे हैं । बाँदिया पर कृपादृष्टि हो जाने से वे रखैलों की श्रेणी में हो जाती हैं । किन्तु महल में सभी दासों के रूप में प्रवेश करती हैं । कुछ खरीदी हुई और कुछ लूट कर लाई गई होती हैं । सौभाग्यवश सुल्तान के नुक्के से जिनके गर्भ रह जाता है उन्हें वेगम की उपाधि मिलती है और वे बादीपने से छुटकारा पा जाती हैं । जिस वेगम का लडका सुल्तान की गद्दी पर बैठता है उसे "वाल्दये-सुल्तान" कहते हैं । उसका सम्मान सुल्तान के बराबर होता है । हरम में ईसाई औरतें भी हैं । उन्हें अपना धर्म नहीं छोड़ना पडा । किन्तु यहूदी औरतें हरम में नहीं दाखिल हो सकतीं, क्योंकि यहूदी लोग घोर महम्मद-विद्वेषी होते हैं । हरम की सब औरतें मेमो की पोशाक पहनती हैं । केवल वाल्दये-सुल्तान के पास जाने के समय खास तुर्की पोशाक पहननी पडती है । हरम की औरतें बुर्का डाल कर बाजार बगैरह में जा सकती हैं । 'थास्फोरस' के दोनों तटों पर गाडियों पर बहुत सी हरम-निवासिनी हवा खाते देख पडती हैं । इन लोगों के आमोद-प्रमोद के लिए महल के भीतर एक बाग और एक थियेटर भी है । थियेटर में ये औरतें ही अभिनय करती हैं । सुल्तान को कुत्तों का बडा शौक है । कई कुत्ते अन्दर-महल में-पहरा दिया करते हैं । सुल्तान इस बात को खूब जानते हैं कि मनुष्य पहरेदार की अपेक्षा कुत्ता अधिक विश्वासपात्र और चौकसी करने-वाला होता है ।

के भीतर की मसजिद के 'मिनारट' पर खड़े होकर मुल्ला अजान दे रहा था । कुछ देर तक खड़े होकर मैं सुनता रहा । वैसे मीठे स्वर से वैसा सुन्दर आवाहन मैंने कभी नहीं सुना था । कुछ न समझन पर भी मेरे हृदय में उसकी मधुरता और सुन्दरता की जैसे छाप पड़ गई । इस प्रकार से दिन में पाँच बार जो लोग चारों ओर के अपने भाइया को भगवान की उपासना के लिए बुलाते हैं उनका धर्म चिरकाल तक सजीव बना रहे तो आश्चर्य ही क्या है । इस धर्म के विषय में महात्मा कार्लाइल लिखते हैं—*Allah Akbar* God is great—and then also '*Islam*,' that we must submit to God. That our whole strength lies in resigned submission to Him whatsoever He do to us For this world, and for the other! The things He sends to us, were it death or worse than death, shall be good, shall be best, we resign ourselves to God—'If this be *Islam*' says Goethe 'do we not all live in *Islam*?' Yes all of us that have any moral life, we all live so It has ever been held the highest wisdom for a man not merely to submit to Necessity,—Necessity will make him submit,—but to know and believe well that the stern thing which Necessity had ordered was the wisest, the best, the thing wanted there To cease his frantic pretension of scanning the great God's world in his small fraction of a brain, to know that it had verily, though deep beyond his soundings, a Just Law, that the soul of it was Good,—that his part in it was to conform to the Law of the whole, and in devout silence



सेन्ट-सोफिया मसजिद—पृ० १३४

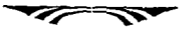
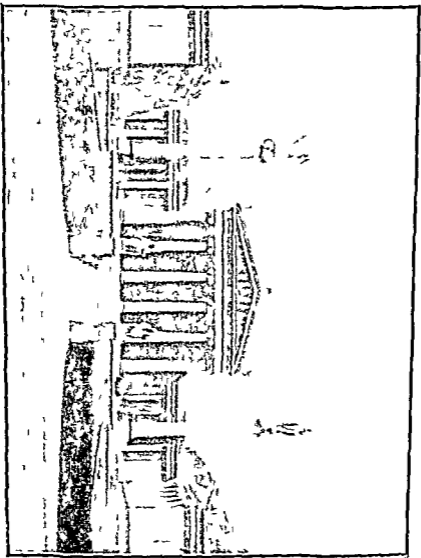
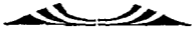
इस नगर में ४०० मसजिदें, ४० यहूदियों के उपासना-मन्दिर और अनेक ईसाइयों के गिर्जे हैं। अर्मान्नी किस्तान-सम्प्रदाय के सर्वश्रेष्ठ गुरु यहीं रहते हैं। सन् १२०२ में, कान्स्टेन्टिनोपुल में, ईसाइयों के ५०० गिर्जे थे। उनमें ५० के लगभग इस समय भी बने हुए हैं। इन पचास में ६ गिर्जे ईसाइयों के अधिकार में हैं; उनमें वे उपासना आदि करते हैं। ६ गिर्जे प्रधान, मसजिद बना डाले गये हैं। बाकी गिर्जों में कई एक टूटे-फूटे पड़े हैं, कई एक और और कामों में लगा दिये गये हैं और कई एक ने छोटी छोटी मसजिदों का रूप धारण कर लिया है। मसजिदों में “सेण्ट-सोफिया” मसजिद प्रधान है। यह भी पहले गिर्जा था। सम्राट् जस्टिनियन ने, सन् ५३२ में, बाइजन्टाइन ढग का यह उपासना-मन्दिर बनवाया था। एक सौ इन्जीनियरों ने दस हजार मजदूरों के द्वारा इस मन्दिर को तैयार किया था। इसके बनने में दस लाख पौण्ड खर्च हुए थे। इसके लिए एथेन्स, इफिसस आदि ६ प्रधान नगरों के देवमन्दिरों से माल-मसाला लिया गया था। इमारत ईंट की है; भीतर की दीवारों में कीमती सगमरमर जड़ा हुआ है। इसके स्तंभों का घेर देखने से डर लगता है। ४६ फुट गहरे गुम्बद का घेर और भी बड़ा है। गुम्बद का घेर २६७ फुट का है उँचाई १८० फुट है। इसमें चारों ओर ४० दर्वाजे हैं। भीतर अनेक रङ्ग के खम्भों की कतार देखने की चीज है। मसजिद में प्रवेश करते समय अपने जूते उतार कर नगे पैरों या किराये की स्लीपरे पहन कर जाना पड़ता है। उच्च श्रेणी के तुर्क लोग प्रायः जूते के ऊपर दूसरा जूता पहनने हैं। किसी घर में प्रवेश करते समय ऊपर के जूते बाहर उतार देते हैं।

सिरालिम्पो (Seraho) । यह पुराना महल सन् १८६५ में

भाग लगन से जल गया था । कुस्तुनुनिया के मात पहाड़ों में से एक पहाड़ के ऊपर यह है । प्राचीन समय में ठीक इसी जगह पर बाइजन्टाइन-राज्य-काल का राजमहल था । इसके प्रधान फाटक का नाम है “बावे-हुनार्यु” । यूरोपियन लोग इसे सब्लाइम-पोर्ट (Sublime Porte) अर्थात् प्रधान-फाटक कहते हैं । इस महल के भीतर मीनार, मसजिद, दरवार भवन, हम्माम आदि की अनेक इमारतें हैं । इस महल के एक कमरे में महम्मद का झण्डा, पोशाक, दाढ़ी, दात और चरण-चिह्न बड़ी हिफाजत से रक्खे हुए हैं ।

गलाटा और पेरा । पहल कहा जा चुका है कि गोल्डेन-हार्न के उत्तर-तट पर ये दोनों यूरोपियन ढग की वस्तियाँ हैं । नगर का इतना अंश यूरोप की भूमि जान पड़ता है । पार्क में गैस की रोशनी और होटल है । यूरोपियन लोग, सब देशों के राज-दूत और बड़े बड़े सौदागर यहाँ रहते हैं । समुद्रतट से खड़े पहाड़ पर चढ़ने के लिए बहुत अच्छा रास्ता बना हुआ है । यहाँ टानेल के भीतर भीतर एक छोटी सी रेल्व-लाइन चलती है । गलाटा से पेरा तक इस लाइन की सीमा है । यहाँ के रास्ते बहुत तंग हैं । गाड़ी-घोड़े बड़ी सावधानता से चलाये जाते हैं ।

बास्फोरस । यह प्रसिद्ध खाड़ी २० मील लम्बी है । स्टीमर पर इस पार से उस पार जान में १५ मिनट लगते हैं । इस पार से उस पार या इम छोर से उम्-छोर जाने के लिए हमेशा स्टीमर मिलते हैं । यूरोपियन-तट में कृष्णसागर तक ये दृश्य देखने योग्य हैं—सुल्तानी तोपखाना, डोलमा-बगीचा-महल, चेरगान-महल, अत्यन्त मनोहर ओटीकेनी मसजिद, एक यूरोपियन बस्ती, पहाड़ के ऊपर अमेरिकन कालेज (इसी जगह पर डेराइम उर्फ दारा बादशाह नाव के पुल से पार हुए थे), मिसर के खदीव



एकाडेमी विद्यालय—पृ० ५४८

आग लगने से जल गया था । कुस्तुन्तुनिया की मात पहाडो मे सं
 एक पहाड के ऊपर यह है । प्राचीन समय मे ठीक इसी जगह पर
 वाइजन्टाइन-राज्य-काल का राजमहल था । इसके प्रधान फाटक
 का नाम है “गवे-हुमायूँ” । यूरोपियन लोग इसे मव्लाइम-पोर्ट
 (Sublime Porte) अर्थात् प्रधान-फाटक कहते हैं । इस महल
 के भीतर मजिद, दरबार भवन, हम्माम आदि की अनेक
 इमारतें हैं । इस महल के एक कमरे मे महम्मद का झण्डा, पोशाक,
 दाढी, दात और चरण-चिह्न बडी हिफाजत से रक्खे हुए हैं ।

गलाटा और पेरा । पहल कहा जा चुका है कि गोल्डेन-हार्न
 के उत्तर-तट पर ये दानों यूरोपियन ढग की वस्तियाँ हैं । नगर का
 इतना अश यूरोप की भूमि जान पडता है । पार्क मे गैस की
 रोशनी और होटल है । यूरोपियन लोग, सब देशों के राज-दूत
 और बड बड सौदागर यहा रहते हैं । समुद्रतट से खडे पहाड पर
 चढने क लिए बहुत अच्छा रास्ता बना हुआ है । यहाँ टानेल के
 भीतर भीतर एक छोटी सी रेल्व-लाइन चलती है । गलाटा से
 पेरा तक इस लाइन की सीमा है । यहाँ के रास्ते बहुत तग हैं ।
 गाडी-घोडे बडी सावधानता से चलाये जाते हैं ।

वास्फारस । यह प्रसिद्ध खाडी २० मील लम्बी है । स्टीमर
 पर इस पार से उस पार जाने मे १५ मिनट लगते हैं । इस पार
 से उस पार या इस छोर से उस छोर जाने के लिए हमेशा स्टीमर
 मिलते हैं । यूरोपियन-तट मे कृष्णसागर तक ये दृश्य देखने
 योग्य हैं—मुल्तानी तापखाना, डोलमा-बगोचा-महल, चेरगान-
 महल, अत्यन्त मनोहर ग्रेटीकेनी मसजिद, एक यूरोपियन बस्ती,
 पहाड के ऊपर अमेरिकन कालेज (इसी जगह पर डेराइस उर्फ
 दारा वादशाह नाव के पुल से पार हुए थे), मिसर के खदीव

का महल और यूरोपियन राजदूतों के ग्रीष्म-निवास । सुल्तान के हदायाना और बाग के सिवा बहुत स्थानों में वेनिस-नगर की तरह समुद्र के ऊपर बाग और बैठके बनाई गई हैं । खाड़ी के दोनों किनारों पर जगह जगह तोपें चढ़ी हुई हैं । कृष्णसागर के मुहाने पर इस पार मोर्चा है और उम पार प्राचीन बाइजन्टाइन-किला है । वहाँ से कृष्णसागर का दृश्य बहुत ही मनोहर जान पड़ता है । किले के बाद क्रमशः सुल्तान का ग्रीष्म निवास, अँगरेजों का एक गाँव, क्रीमिया के युद्ध में काम में लाया गया अस्पताल, बाग और एक यहूदियों का गाँव मिलता है । उसके बाद स्कुटारी-नगर है । खाड़ी के दोनों तटों पर काठ के विलास-भवन आदि अनेको बने हुए हैं ।

स्कुटारी और हैदरपाशा । एशिया-तट के इन दोनों स्थानों को देखने के लिए मैं दो दिन गया । स्कुटारी की आबादी ५०,००० से कुछ अधिक है । वहाँ एक कोस भर के घेरे का तुर्की कवरिस्तान है, उसमें साइप्रेस-वृक्ष का बाग देखने में बड़ा ही सुन्दर है । एशियाखण्ड में पैर रखते ही देख पड़ा कि जूते और कपड़ों की दूकाने कतार की कतार लगी हुई हैं, भडभूजा सत्तू बेच रहा है और बनिये-बकाल दूकानें लगाये बैठे हैं । यहाँ के 'बर्गुलू' पहाड़ के ऊपर से वास्फोरस, मारमोरा-सागर और कान्स्टेन्टिनोपुल का दृश्य बहुत अच्छा मालूम पड़ता है । स्कुटारी से कोस भर पर हैदरपाशा नगर है । यहाँ से मारमोरा-सागर का आरम्भ होता है । यहाँ की सलीम-बारिक में क्रीमियन युद्ध (Crimean War) के समय अस्पताल स्थापित हुआ था और उसमें प्रातः स्मरणीया मिस फ्लोरेन्स नाइटिंगेल् (Miss Florence Nightingale) सुध बुध बिसारे चायलो की सेवा कर रही थीं । यही उनकी

अलौकिक कौर्त्ति और स्वर्गीय प्रेम का प्रधान स्थान है । यहाँ क
 अँगरेजों के गोरस्थान में ८,००० शव गडे हुए हैं ।

अन्यान्य दृश्य । यहाँ नाम लेने भर को एक न्यूजियम है ।
 इसमें प्रोफ अचरो की लिपि जिन पर लुदी हुई है ऐसे कई एक
 पत्थर के टुकडे, नहान के लिए ६ हाथ लम्बा ३ हाथ गहरा और
 गीच में ६ हाथ चौडा सगमरमर के एक ही टुकड का बना हुआ
 एक पुराना टव, एक बुद्धदेव की मूर्त्ति, प्राचीन टर्की की ममा
 आदि का मामूली समूह है । तुर्क लोगों ने प्रोस से “अर्धचन्द्र-
 तारा-चिह्न” पाया है । अनक प्राचीन वाइजन्टाइन सिक्कों में ऐसा
 ही चिह्न देखा जाता है । जिस जगह वाइजन्टाइन-सम्राटो का
 अभिषेक होता था उस जगह पर अभी तक सुल्तान का अन्तिम
 अभिषेक होता है । ६ महलों और ५ स्तम्भों के भग्नावशेष मौजूद
 हैं । सब लम्बा आकिडाकृ और चहारदीवारी भी टूटी-फूटी पडी
 है । चारो ओर १३ मील की दीवार थी । अब समुद्र की ओर
 बिल्कुल नहीं है । इसके सिवा २६ बडे और ७ छोट फाटक हैं ।
 बडे फाटक टूटे-फूटे हैं । १,२४८ फुट लम्बे आकिडाकृ को तुर्क लोग
 “बसदोघान् केमिरी” कहते हैं । पानी इस समय भी है, लेकिन
 बहुत ही बेमरम्मत हालत में पडा हुआ है । हेड्रियन और कान्स्ट-
 न्टाइन नाम के दो सम्राटो ने इसे बनवाया था । सुल्तान सुलेमान
 ने एक बार जीर्णोद्धार भी किया था । रोमन और वाइजन्टाइन
 अमल के कई एक कीर्त्तिस्तम्भ हैं । उनमें दो बहुत ही ऊँचे टावर
 विशेष रूप से देखने योग्य हैं । यहाँ ५०० मदर्स, १३० हम्माम
 और ३०० इमारतें हैं । हर एक मसजिद में अस्पताल और गरीबो
 के रहने के लिए स्थान है । शहर में शराब की दूकानें और काफो-
 खाने अनेक हैं । मुसलमानी मजहब में मदिरा पीने की मनाही है,

मगर खास खलीफा की राजधानी में खुल्लमखुल्ला शराब की विक्री हो रही है । यह मुझे जरा असंगत जान पडा । काफ़ीखानों में गुडगुडियो पर लोग चिलम पीते हैं । उस तमाखू को 'नारगिली' कहते हैं । वहाँ की तमाखू यहाँ की ऐसी कडवी नहीं होती । उसमें कुछ मिठास मिली होती है । एक पैसे की काफ़ी और एक पैसे की तमाखू पीते अनेक लोग देखे जाते हैं । तुर्की भाषा में 'महाशय' की जगह 'शामोली' कहते हैं । रास्ते-गली में शामोली-शब्द की भारी भरमार देख पडती है । मैंने देखा कि बाल-बच्चों को चाकरानी के साथ हवा खाने के लिए भेजते समय मातायें द्वार पर थुकथुका कर उनकी शरीर-रक्षा करती हैं । बाजारों की सजावट बहुत अच्छी है । भिन्न भिन्न जाति के दूकानदार जुदे जुदे स्थानों में दूकानें रखते हैं । प्रधान बाजार का नाम है । "वेजेस्टोन" । इसमें बहुत सी छोटी छोटी दूकानें हैं । इस बाजार में जाने-आने के लिए ३२ फाटक हैं । बाजार में हमारे ही देश का ऐसा कालाहल मचा रहता है । मोल तोल खूब बढ़-चढ़ कर किया जाता है । नगर में २०० के लगभग सरायें हैं । उनमें चारों ओर मकान, बीच में दो एक पेड़ और एक कोने में एक फुहारा और काफ़ीखाना बना हुआ है । ये सब सरायें सौदागरों को किराये पर दी जाती हैं । 'तोपकायू' फाटक और कासिमपाशा-वस्ती में, सप्ताह में दो बार, प्रसिद्ध दरवेशा का नाच हुआ करता है । दो बजे के समय बीस आदमियों के लगभग एक साथ नाचते हैं । टर्की सुन्नियो का ही मुल्क है, परन्तु राजधानी में बहुत से 'शिया' भी रहते हैं । मोहम्मद में ये लोग वेदर्दी के साथ अग कूटना, मातम में अपने शरीर से खून बहाना 'सबाव' समझते हैं । प्राचीन शहर इस्तम्बोल में बहुत से कुत्ते इधर-उधर मारे मारे फिरा करते हैं । यहाँ सरेशाम से ही दूकाने बन्द हो जाती हैं ।

इस देश में चार तरह की तारीखें और दो तरह का समय प्रचलित है । साधारण यूरोपियन नियम से, ग्रेक-चर्च के नियमानुसार, महम्मदी और एास तुर्की हिसाब से महीनें और दिन गिने जाते हैं । तुर्की-समय में प्रातःकाल के एक वजे से दिन का आरम्भ माना जाता है और यूरोपियन नियम के अनुसार नव्वेरे ६ वजे से नया दिन शुरू होता है । कुस्तुन्तुनिया के हर एक अच्छे मकान में एक बाग है । भारत की तरह यहाँ भी गर्म दूध और मलाई बिकती है । यहाँ मुसलमानों के घरों में इधर उधर कोई खिडकी नहीं होती, अगर होगी भी तो उसमें चिक पडो होगी या पट भिडे होंगे । क्रिस्तानों के घरों में कोई पर्दा नहीं है, खिडकियाँ और दरवाजे सब खुले रहते हैं ।

टर्की की साधारण अवस्था । सन् १८५१ में, राजधानी में दस लाख के ऊपर आवादी थी, अब सात लाख रह गई है । साम्राज्य के सभी विभागों की ऐसी ही दशा है । पहले डाकघर के प्रबन्ध में बड़ी गड़बड़ी थी । उससे असन्तुष्ट होकर प्रधान प्रधान यूरोपियन जातियों ने कान्स्टेन्टिनोपुल में अपने अपने अलग अलग डाकघर बना लिये हैं । पहले पत्र पहुँचाने का इन्तिजाम बिल्कुल ठीक न था । सिके का भी यही हाल है । सोने का सिक्का तो देखने को नहीं मिलता । बहुत छोटा—दुअत्री से भी छोटा चाँदी का सिक्का है । उसे 'पियास्टर' कहते हैं । पैसे का नाम है 'पारा' । ४० पारा का एक पियास्टर होता है । यहाँ का पैसा न-जाने किस धातु का है । उसका आकार भी वैसा ही हीन है । विदेशी लोग स्थानीय सिक्का बहुत रुम अपने पास रखते हैं । देसी दूकानदार भी अँगरेजी, फ्रेंच और अमेरिकन सोने-चाँदी के सिक्कों को बड़े आग्रह और आदर के साथ लेते हैं ।

यहाँ के कर्मचारी ऐसे घूसखोर हैं कि शायद भारत के सिवा और कहीं न मिलेंगे । नगर से निकल कर यात्रा करते समय चुगी के कुर्क ने पास-पोर्ट जल्द मजूर करने के लिए एक फ्रैंक (सात आठ आने के लगभग) की घूस बड़ी खुशी से माग ली । साम्राज्य की आर्थिक अवस्था बहुत ही खराब है । सन् १८७६ में यह राज्य दिवालिया हो गया था । किन्तु महाजनो ने कुछ बन्दोबस्त करके किसी तरह वह आफत टाल दी । साम्राज्य ने रूस की लड़ाई में प्रजा से और रूस से जो ऋण लिया था वह अभी तक अदा नहीं हुआ । तीन करोड़ पौण्ड से ऊपर की रकम अभी देना बाकी है । सन् १८६० में पौने दो करोड़ पौण्ड के लगभग 'कर' वसूल हुआ था । किन्तु खर्च हुआ था दो करोड़ पौण्ड । सब मिलाकर अब १६ करोड़ पौण्ड के लगभग ऋण है । दो लाख स्थलसेना और डेढ़ लाख जलसेना है । १०२ स्टीमर हैं, उनमें १७ लौहयान हैं । इनके सिवा २५ टारपीडो बोट भी हैं । साम्राज्य की जन-संख्या १,६३,३३,००० है । इसमें १,२०,००,००० मुसलमान हैं । यूरोप में टर्की का राज्य बहुत थोड़ा रह गया है, उसमें २८ लाख के लगभग प्रजा रहती है । पहले शासनप्रणाली अनियन्त्रित थी, अब शासन के काम में प्रजा भी पूरा भाग लेने लगी है । सुल्तान के नीचे मदर आजम अर्थात् प्रधान वजीर हैं । 'उल्मा' नाम की धर्मसभा के अध्यक्ष "शेख उल्-इस्लाम" को भी अधिकार प्रधान मन्त्री से कम नहीं हैं । सुल्तान का इरादा अच्छा होने पर भी वह मुसाहबों की राय पर चलने के लिए लाचार हैं । सुल्तान के मुसलमान मुसाहब कैसे स्वार्थपर हैं, इसका प्रमाण साम्राज्य की दुर्दशा है । सुल्तान के सिंहासन पर कैसा खटका है, इसका अनुमान केवल उनके शयन-गृह की रखवाली के प्रबन्ध में ही किया

जा सकता है । महल के अन्यान्य अश लोहे के सीकचो-द्वारा शयन गृह से अलग कर दिये गये हैं । शयन-गृह के कमरो के दर्वाजों में रात को जो जो ताले बन्द किय जाते हैं वे फरमाइश देकर खास तरह के बनवाय जाते हैं । सोने के ५० कमरो के भीतर अँगरेज-इञ्जीनियरो के द्वारा ऐसी कलें लगा दी गई हैं कि एका-एक उनमें भीतर छिप जाने से कोई भी खोजकर पा नहीं सकता । इन कलों का रहस्य सुल्तान के सिवा और कोई नहीं जानता । इतन पर सुल्तान निश्चिन्त नहीं हैं । बड़े बड़े 'सेन्ट-बर्नार्ड' कुत्ते रात को छांड दिय जाते हैं, वे चारो ओर घूम कर पहरा देते हैं । उनके आगे चौखट के भीतर रुदम बढान की भी हिम्मत नहीं पढ सकती ।

यूरोप में मुसलमानी राज्य । सुसभ्य यूरोपखण्ड में असभ्य मुसलमान एक समय अपनी विजय-भेरी बजाते फिरे हैं और इस समय हजारो विद्रो-नाथाये रहते हुए भी यूरोप के एक हिस्से में प्रभुत्व कर रहे हैं । यह जरा असङ्गत सा जान पडता है । लेकिन जरा विचार कर देखने से हममें कोई अस्वाभाविकता नहीं नजर आती । बाइजन्टाइन साम्राज्य कभी प्रजा को प्यारा नहीं रहा । पृथ्वी पर के अन्यान्य समसामयिक राज्यों की अपेक्षा इस साम्राज्य की शासन प्रणाली अनेक बातों में उत्कृष्ट थी, और इसी कारण कई शताब्दियों तक इस साम्राज्य का प्रताप अखण्ड बना रहा, तथापि प्रजा के हृदय की श्रद्धा और भक्ति इसने नहीं पाई । पीछे मुसलमानों की चढाई के समय उक्त साम्राज्य की नैतिक अवस्था बहुत ही हीन हो चली थी । इतिहासज्ञ अँगरेज पण्डित फ्रीमैन और फिन्ले साहब ने मुसलमानी शक्ति की नैतिक प्रधानता को स्वीकार किया है । पण्डितवर


यहाँ के कर्मचारी ऐसे घूसखोर हैं कि शायद भारत के सिवा और कहीं न मिलेंगे । नगर से निकल कर यात्रा करते समय चुगी के छुर्क ने पास-पोर्ट जल्द मजूर करने के लिए एक फ्रैंक (सात आठ आने के लगभग) की घूस बड़ी खुशी से माँग ली । साम्राज्य की आर्थिक अवस्था बहुत ही खराब है । सन् १८७६ में यह राज्य दिवालिया होगया था । किन्तु महाजनो ने कुछ बन्दोबस्त करके किसी तरह वह आफत टाल दी । साम्राज्य ने रूस की लड़ाई में प्रजा से और रूस से जो ऋण लिया था वह अभी तक अदा नहीं हुआ । तीन करोड़ पौण्ड से ऊपर की रकम अभी देना बाँकी है । सन् १८६० में पौने दो करोड़ पौण्ड के लगभग 'कर' वसूल हुआ था । किन्तु खर्च हुआ था दो करोड़ पौण्ड । सब मिलाकर अब १६ करोड़ पौण्ड के लगभग ऋण है । दो लाख स्थलसेना और डेढ़ लाख जलसेना है । १०२ स्टीमर हैं, उनमें १७ लौहयान हैं । इनके सिवा २५ टारपीडो बोट भी हैं । साम्राज्य की जनसंख्या १,६३,३३,००० है । इसमें १,२०,००,००० मुसलमान हैं । यूरोप में टर्की का राज्य बहुत थोड़ा रह गया है, उसमें २८ लाख के लगभग प्रजा रहती है । पहले शासनप्रणाली अनियन्त्रित थी, अब शासन के काम में प्रजा भी पूरा भाग लेने लगी है । सुल्तान के नीचे मदर आजम अर्थात् प्रधान वजीर हैं । 'उल्मा' नाम की धर्मसभा के अध्यक्ष "शेख उल्-इस्लाम" के भी अधिकार प्रधान मन्त्री से कम नहीं हैं । सुल्तान का इरादा अच्छा होान पर भी वह मुसाहबों की राय पर चलने के लिए लाचार हैं । सुल्तान के मुसलमान मुसाहब कैसे स्वार्थपर हैं, इसका प्रमाण साम्राज्य की दुर्दशा है । सुल्तान के सिंहासन पर कैसा खटका है, इसका अनुमान केवल उनके शयन गृह की रखवाली के प्रबन्ध से ही किया

“Diplomatists have taught us that the maintenance of the Ottoman Empire is a political necessity”

उस जहाज पर के अन्यान्य सब यात्री और कर्मचारी लोग एक-स्वर से यही कह रहे थे कि “सुल्तान का यहाँ से वगदाद या बसरा में भेज देना चाहिए। स्कुटारी, हैदरपाशा आदि किसी निकट के स्थान में भी उन्हें नहीं रहन देना चाहिए”। मेरी समझ में तो यही आया कि सब यूरोपियन जातियाँ मिलकर कान्स्टेन्टिनोपुल की सुव्यवस्था का प्रबन्ध करें, इसमें सुल्तान को कोई आपत्ति न होगी। नौजवान तुर्कों का दल शीघ्र ही उन्नति करेगा। बस, फिर सब ठीक हो जायगा। पार्लियामेण्ट के द्वारा शासन होने लगेगा तो फिर ‘शिकायत’ का कोई कारण नहीं रह जायगा। वर्तमान सुल्तान का स्वभाव तो बड़ा अन्ध है। किन्तु करें क्या, मन्त्रियों के मारे वे कुछ कर नहीं पाते। पुराने खयाल के बुड्ढों के न रहने पर “थग-टर्की” के अ-यु-दय में अवश्य इस देश के दिन फिरेंगे।

ग्रीक लोगों के घोर क्रुसस्कार प्रस्त होने की बात सुनी थी, उसका प्रमाण जहाज पर ही मिल गया। डेक के ऊपर एक तीसरे दर्जे के ग्रीक मुसाफिर का लडका धूम रहा था। मैंने प्यार के मारे उसके शरीर पर हाथ फेर दिया। उस पर उस अच्चे का बाप दोड़ कर मेरे पास आया और रफा होने लगा। मैं तो सत्राटे में आ गया। पीछे से कप्तान ने आकर मुझे समझा दिया कि कोई अपरिचित आदमी अगर इन लोगों के बच्चा को छू लेता है तो ये लोग उसे अन्ध नहीं समझते। इनको शका होती है कि उससे बालक का कुछ अमगल न हो जाय। डार्डनेल्स (Dardanelles) खाड़ी के भीतर होकर जब जहाज चला तब कप्तान ने मुझे बह

ग्रीस ।


 या । इस्तम्बोल से इटलियन स्टीमर पर ग्रीस को
 रवाना हुआ । स्टीमर में पहले दर्जे के हम सब
 यात्री एक जगह बैठ कर बहुत देर तक कान्स्टे-
 न्टिनोपुल और तुर्क-साम्राज्य के सम्बन्ध में
 बातचीत करते रहे । उन लोगों का कहना यह था कि शीघ्र ही
 किसी तरह किसी यूरोपियन जाति का यहाँ अधिकार हो जाना
 चाहिए । सचमुच इस्तम्बोल ऐसे सुन्दर स्थान में प्रबन्ध की ऐसी
 गडबडी देखकर बड़ा ही दुःख होता है । अभी बन्दोवस्त ठीक न
 होने से जो कुछ गडबडी और दुर्दशा है वह सब किसी यूरोपियन
 शक्ति का अधिकार होने से फौरन जाती रहती और नगर का
 सौन्दर्य दसगुना बढ़ जाता । किन्तु बात यह है कि टर्की की राज
 धानी को कोई एक यूरोपियन जाति हडप नहीं कर सकती, क्योंकि
 ऐसा समय उपस्थित होने पर यूरोप की अन्यान्य जातियाँ, अपने
 स्वार्थ से, ऐसा न होने देंगी । जिनसे इस धारे में बातचीत हो रही
 थी उन्होंने कहा कि “एक बार जर्मनी के प्रधान मन्त्री बिस्मार्क ने
 कहा था कि पोप को रोम से लाकर बास्फोरस-तट पर रखना
 चाहिए, लेकिन वह ‘वाटिकन’ और ‘सेन्ट-पीटर’ छोड़ कर कभी
 न आना चाहेंगे । अतएव इस्तम्बोल तुर्की के पास ही रहेगा, और
 कोई उपाय नहीं है” । एक अँगरेज पण्डित का कथन है—

“Diplomatists have taught us that the maintenance of the Ottoman Empire is a political necessity” उस जहाज पर के अन्यान्य सब यात्री और कर्मचारी लोग एक-स्वर से यही कह रहे थे कि “सुल्तान को यहाँ से बगदाद या बसरा में भेज देना चाहिए। स्कुटारी, हैदरपाशा आदि किसी निकट के स्थान में भी उन्हें नहीं रहन देना चाहिए”। मेरी समझ में तो यही आया कि सब यूरोपियन जातियाँ मिलकर कान्स्टेन्टिनोपुल की सुव्यवस्था का प्रबन्ध करें, इसमें सुल्तान को कोई आपत्ति न होगी। नौजवान तुर्कों का दल शीघ्र ही उन्नति करेगा। बस, फिर सब ठीक हो जायगा। पार्लियामेण्ट के द्वारा शासन होने लगेगा तो फिर ‘शिकायत’ का कोई कारण नहीं रह जायगा। वर्तमान सुल्तान का स्वभाव तो बड़ा अच्छा है। किन्तु करे क्या, मन्त्रियों के मारे वे कुछ कर नहीं पाते। पुराने खयाल के बुड्ढे के न रहने पर “यंग-टर्की” के अभ्युदय में अवश्य इस देश के दिन फिरेंगे।

ग्रीक लोगों के घोर क्रुसस्कार प्रसन्न होने की बात सुनी थी, उसका प्रमाण जहाज पर ही मिल गया। डेक के ऊपर एक तीसरे दर्जे के ग्रीक मुसाफिर का लडका घूम रहा था। मैंने प्यार के मारे उसके शरीर पर हाथ फेर दिया। इस पर उस उच्चे का बाप दौड़ कर मेरे पास आया और खफा होते लगा। मैं तो सन्नाटे में आ गया। पीछे से कप्तान ने आकर मुझे समझा दिया कि कोई अपरिचित आदमी अगर इन लोगों के बच्चों को छू लेता है तो ये लोग उसे अच्छा नहीं समझते। इनकी शका होती है कि उससे बालक का कुछ अमंगल न हो जाय। डार्डनेल्स (Dardanelles) खाड़ी के भीतर होकर जब जहाज चला तब कप्तान ने मुझे वह

ग्रीस ।



या

त्रा । इस्तम्बोल से इटलियन-स्टीमर पर ग्रीस को
रवाना हुआ । स्टीमर में पहले दर्जे के हम सब
यात्री एक जगह बैठ कर बहुत देर तक कान्स्टे-
न्टिनोपुल और तुर्क-साम्राज्य के सम्बन्ध में

बातचीत करते रहे । उन लोगों का कहना यह था कि शीघ्र ही
किसी तरह किसी यूरोपियन जाति का यहाँ अधिकार हो जाना
चाहिए । सचमुच इस्तम्बोल ऐसे सुन्दर स्थान में प्रबन्ध की ऐसी
गडबडी देखकर बड़ा ही दुःख होता है । अभी बन्दोवस्त ठीक न
होने से जो कुछ गडबडी और दुर्दशा है वह सब किसी यूरोपियन
शक्ति का अधिकार होने से फौरन जाती रहती और नगर का
सौन्दर्य दसगुना बढ़ जाता । किन्तु बात यह है कि टर्की की राज-
धानी को कोई एक यूरोपियन जाति हडप नहीं कर सकती, क्योंकि
ऐसा समय उपस्थित होने पर यूरोप की अन्यान्य जातियों, अपने
स्वार्थ से, ऐसा न होने देगी । जिनसे इस धारे में बातचीत हो रही
थी उन्होंने कहा कि “एक बार जर्मनी के प्रधान मन्त्री बिस्मार्क ने
कहा था कि पोप को रोम से लाकर वास्फोरस-तट पर रखना
चाहिए, लेकिन वह ‘वाटिकन’ और ‘सेन्ट-पीटर’ छोड़ कर कभी
न आना चाहेंगे । अतएव इस्तम्बोल तुर्कों के पास ही रहेगा, और
कोई उपाय नहीं है” । एक अंगरेज पण्डित का कथन है—

यहा एक छोटा म्यूजियम, मिलिटरी कालेज और-कई एक सरकारी बाग हैं। बन्दर मे दो जड़ी जहाज खडे थे। मालूम हुआ कि इंग्लैण्ड से दो जड़ी जहाज और भी शीघ्र बन कर आनेवाले हैं। यहाँ के निवासियों में बहुत से घाँघरा पहने देख पडे। यह बात ग्रीस के सिवा पृथ्वी पर शायद और कहीं न देख पडेगी।

एथेन्स । उक्त बन्दरगाह से रेल पर चढकर इस प्राचीन नगर मे आया। उक्त बन्दरगाह के एव कर्मचारी के साथ आने पर भी रहने के लिए स्थान ठीक करने मे अधिक प्रयत्न करना पडा। “धूलिमय ग्रीस” की धूल-भरी राजधानी मे धूप खुर कडी होती है। होटलों मे खाने की सामग्री बहुत बहुत अच्छी मिलती है और दाम भी थोडे खर्च होते हैं। यूरोप मे इतने कम दामो मे ऐसा अच्छा खाना कहीं नहीं मिलता। एथेन्स को स्थानीय लोग ‘आथ्नेई’ कहते हैं। आधुनिक राजधानी और प्राचीन नगर का भग्नावशेष अलग अलग हैं। आधुनिक राजधानी विल्कुल नई बनी है और प्राचीन नगर यूरोप में सबसे पुराना नगर है। जिस समय लोगों की धारणा थी कि “समुद्र विपत्ति-पूर्ण स्थान है, उसके किनारे रहना विपत्ति भोल लेना है, परोसियो से कोई सम्बन्ध रखने की जरूरत नहीं है, बल्कि एकान्त स्थान में उनसे जितना ही अलग रह सकें उतना ही अच्छा, अतएव नदी के किनारे भी बसना ठीक नहीं।” उस समय का बसाया हुआ यह नगर है। चारो ओर इसके पहाड हैं और बीच में एक पहाड के ऊपर और उसके नीचे की जमीन पर यह नगर बसा हुआ है। एथेन्स नगर यूरोप-खण्ड के पाण्डित्य की जन्मभूमि है। एथेन्स में एक लाख से अधिक आदमी बसते हैं। आधुनिक नगर मे निम्नलिखित दृश्य प्रधान हैं। १—सन् १८३८ में पाँच लाख पौण्ड खर्च करके बनवाया गया राजमहल।

स्थान दिखाया जहाँ से अलेक्जंडर की सेना पार हुई थी। यहाँ खाड़ी बहुत तंग है। खास कर अलेक्जंडर के पार उतरने के स्थाने खाड़ी एक मामूली नहर ऐसी जान पड़ती है।

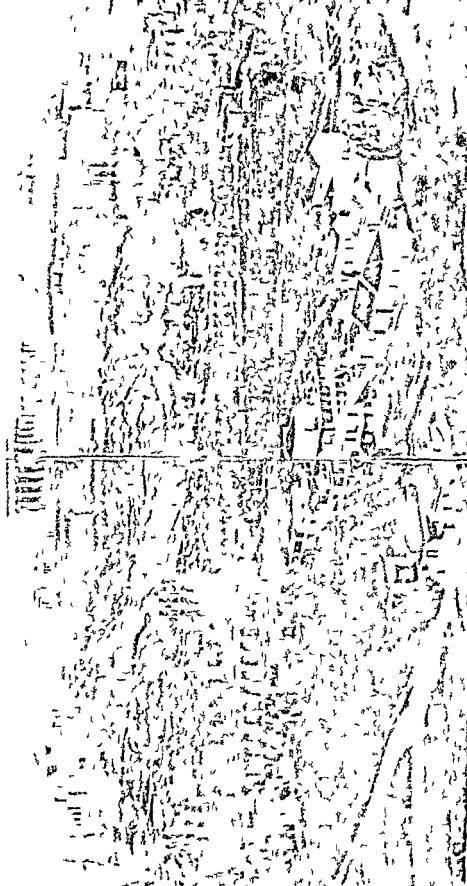
पाइरिउस (Piræus) । यह एथेन्स (Athens) का समुद्री बन्दरगाह है। इस्त्रम्बोल छोड़ने के बाद तीसरे दिन सवे यहाँ पहुँचा। एक बड़्ठे दुभापिये के साथ यहाँ की प्राचीन इमारतें आदि देखन गया। ग्रीस (Greece) में पैर रखते ही एक नए प्रकार के आनन्द का अनुभव मुझे हुआ। न जाने क्या क्या देखने की आशा ने मन को प्रफुल्लित कर दिया। बन्दरगाह के घाट पर ही महावीर आलिसबाइडिस (Alcibiades) की मूर्ति है। उसके पास ही थोड़ी दूर पर एक पहाड़ (Rockyblow) देख पडा। यहाँ बैठ कर प्रसिद्ध पर्शिया के राजा जरक्सिस (Xerxes) ने ईसा से ४८० वर्ष पहले के प्रसिद्ध सालामिस (Salamis) युद्ध देखा था। यहाँ थेमिस्टोक्लिस (Themistocles) का एक स्मारक-स्तम्भ है। यहाँ उनकी मृत्यु हुई थी। इनकी समाधि समुद्र-तट पर बनी हुई है। ज्वार के समय उस पर घुटनों घुटनों भर पानी चढ़ आता है। यह समाधि ग्रीम-राज के सामुद्रिक विलास-भवन (Seaside Villa) के अन्तर्गत और चहारदीवारी से घिरा हुआ है। इसके उपरान्त राजधानी से मिली हुई प्राचीन समय की दीवार का भग्नावशेष देखकर गाड़ी पर प्राचीन मुनीकिया (Munychia) के निकटवर्ती एक प्राचीन मन्दिर और थियेटर का भग्नावशेष देखने गया। जिस समय एथेन्स को गैरव प्राप्त था उस समय यह बन्दरगाह भी खूब गुलजार था। बीच में इसकी विस्फुल हीन अवस्था हो गई थी, पर अब फिर कुछ उन्नति हुई है। नगर में २०,००० के लगभग लोग रहते हैं। रास्ते और गली-कूचे वैसे बुरे नहीं हैं।

यहाँ एक छोटा म्यूजियम, मिलिटरी कालेज और कई एक सरकारी बाग़ हैं। बन्दर में दो जड़ी जहाज खड़े थे। मालूम हुआ कि इंग्लैण्ड से दो जड़ी जहाज और भी शीघ्र बन कर आनेवाले हैं। यहाँ के निवासियों में बहुत से घोंघरा पहने देख पड़। यह बात ग्रीस के सिवा पृथ्वी पर शायद और कहीं न देख पड़ेगी।

एथेन्स। उक्त बन्दरगाह से रेल पर चढ़कर इस प्राचीन नगर में आया। उक्त बन्दरगाह के एक कर्मचारी के साथ आने पर भी रहने के लिए स्थान ठीक करने में अधिक प्रयत्न करना पड़ा। “धूलिमय ग्रीस” की धूल-भरी राजधानी में धूप खूब कड़ी होती है। होटलों में खाने की सामग्री बहुत बहुत अच्छी मिलती है और दाम भी थोड़े खर्च होते हैं। यूरोप में इतने कम दामों में ऐसा अच्छा खाना कहीं नहीं मिलता। एथेन्स को स्थानीय लोग ‘आथ्नेई’ कहते हैं। आधुनिक राजधानी और प्राचीन नगर का भग्नावशेष अलग अलग हैं। आधुनिक राजधानी विल्कुल नई बनी है और प्राचीन नगर यूरोप में सबसे पुराना नगर है। जिन समय लोगों की धारणा थी कि “समुद्र विपत्ति-पूर्ण स्थान है, उसके किनारे रहना विपत्ति मोल लेना है, परोसियों से कोई सम्बन्ध रखने की जरूरत नहीं है, बल्कि एकान्त स्थान में उनसे जितना ही अलग रह सकें उतना ही अच्छा, अतएव नदी के किनारे भी बसना ठीक नहीं।” उस समय का बसाया हुआ यह नगर है। चारों ओर इसके पहाड़ हैं और बीच में एक पहाड़ के ऊपर और उसके नीचे की जमीन पर यह नगर बसा हुआ है। एथेन्स नगर यूरोप-खण्ड के पाण्डित्य की जन्मभूमि है। एथेन्स में एक लाख से अधिक आदमी बसते हैं। आधुनिक नगर में निम्नलिखित दृश्य प्रधान हैं। १—सन् १८३८ में पाँच लाख पौण्ड खर्च करके बनवाया गया राजमहल।

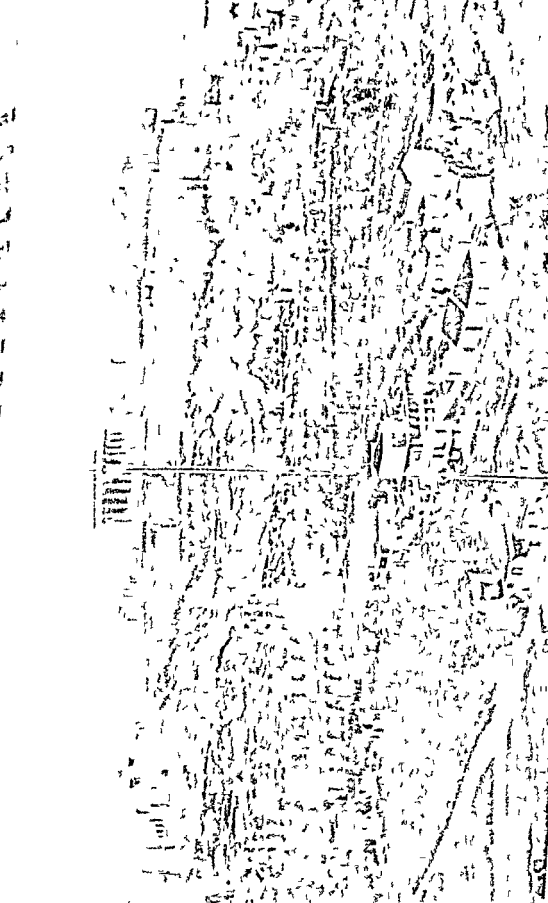
यह बड़ी भारी चतुष्कोण इमारत सुन्दर बाग के भीतर बनी है इमारत में चूने की अस्तरकारी है । २—स्थायी-प्रदर्शनी-भवन यह भी सृव लम्बी चौड़ी और साफ सुथरी इमारत है । इसके सामने एक फुहारा और एक छोटा सा बाग है । ३—एकाडेमी विद्यालय और कई एक स्कूल । एकाडेमी-विद्यालय के द्वार पर दो चिन्ताशील पण्डितों की बैठी हुई मूर्तियाँ हैं । उनके दोनों ओर दो ऊँचे मत्स्यो की चोटियों पर दो खड़े मनुष्यों की मूर्तियाँ हैं । ४—विश्वविद्यालय । ५—मानमन्दिर । ६—पुराने खुदाई और नकाशी के काम का म्यूजियम । ७—डाक्टर श्लीमैन (इनसे त्रिपिटसी में मुलाकात और जान-पहचान हुई थी) का सगमरमर का घर और म्यूजियम । एथेन्स में ज्ञानोपार्जन का यह एक खासा स्थान है । यहाँ बहुत सी सुवर्ण की बनी प्राचीन सामग्रों रक्ती हुई है । उसमें कुछ लिके और मेडल, एक चेहरा, कुछ गहने, सोने के काम की एक तरवार और साइप्रेस-द्वीप की समाधियों में पाई गई बहुत सी सोने की चीजें और गहने देख कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई । महात्मा श्लीमैन ने इस पुरातत्त्व-सम्बन्धी सामग्रों के संग्रह में बड़ा परिश्रम किया है । इसके लिए ग्रीस देश और ग्रीस देश के पुरातत्त्व का अनुसन्धान करनेवाले विद्यार्थी उनके निकट चिर-कृतज्ञ रहेंगे । एथेन्स में ढाई लाख के लगभग लोग रहते हैं ।

प्राचीन एथेन्स । राजमहल से आक्रोपोलिस (Acropolis-Acropolis) तक सड़क के दोनों ओर गोल मिर्च के पेड़ हैं । प्राचीन काल की जो कुछ बची बचाई कीर्ति है वह सब आक्रोपोलिस के ऊपर और उसके आस पास है । यह पथरीला भूमिरण्ड ३७० फुट ऊँचा, १,२८० फुट लम्बा और ५५० फुट चौड़ा है । इसके चारों ओर नकाशीदार और मादे सगमरमर के टुकड़े



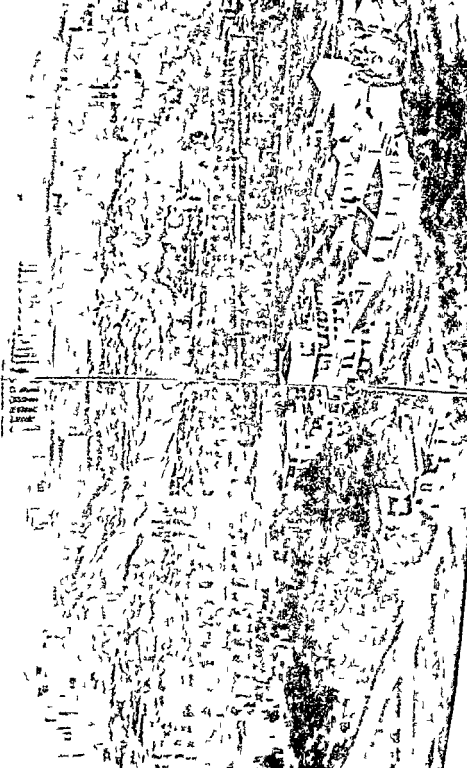
यह बड़ी भारी चतुष्कोण इमारत सुन्दर बाग के भीतर बनी है। इमारत में चूने की अस्तरकारी है। २—स्थायी-प्रदर्शनी-भवन। यह भी गृह लम्बी चौड़ी और साफ सुथरी इमारत है। इसके सामने एक फुहारा और एक छोटा सा बाग है। ३—एकाडेमी विद्यालय और कई एक स्कूल। एकाडेमी-विद्यालय के द्वार पर दो चिन्ताशील पण्डितों की बैठी हुई मूर्तियाँ हैं। उनके दोनों ओर दो ऊँचे स्तम्भों की चौटियों पर दो गड़े मनुष्यों की मूर्तियाँ हैं। ४—विश्वविद्यालय। ५—मानमन्दिर। ६—पुराने खुदाई और नक्शाशो के काम का न्यूजियम। ७—डाक्टर श्लीमैन (इनसे त्रिपिटसी में मुलाकात और जान-पहचान हुई थी) का सगमरमर का घर और न्यूजियम। एथेन्स में ज्ञानोपार्जन का यह एक वासा स्थान है। यहाँ बहुत सी सुवर्ण की बनी प्राचीन सामग्रियाँ रक्की हुई हैं। उसमें कुछ सिक्के और मेडल, एक चेहरा, कुछ गहने, सोने के काम की एक तरवार और साइप्रेस-द्वीप की समाधियों में पाई गई बहुत सी सोने की चीजें और गहने देख कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। महात्मा श्लीमैन ने इस पुरातत्त्व-सम्बन्धी सामग्री के सग्रह में बड़ा परिश्रम किया है। इसके लिए ग्रीस देश और रोम देश के पुरातत्त्व का अनुसन्धान करनेवाले विद्यार्थी उनके निकट चिर-कृतज्ञ रहेंगे। एथेन्स में ढाई लाख के लगभग लोग रहते हैं।

प्राचीन एथेन्स। राजमहल से आक्रोपोलिस (Acropolis-Acropole) तक सड़क के दोनों ओर गोल मिर्च के पेड़ हैं। प्राचीन काल की जो कुछ बची बचाई कीर्ति है वह सब आक्रोपोलिस के ऊपर और उसके आस पास है। यह पथरीला भूमिरण्ड ३७० फुट ऊँचा, १,२८० फुट लम्बा और ५५० फुट चौड़ा है। इसके चारों ओर नक्शाशीदार और सादे सगमरमर के डुकड़े



यह बड़ी भारी चतुष्कोण इमारत सुन्दर बाग के भीतर बनी है। इमारत में चूने की अस्तरकारी है। २—स्थायी-प्रदर्शनी-भवन। यह भी खूब लम्बी चौड़ी और साफ सुथरी इमारत है। इसके सामने एक फुहारा और एक छोटा सा बाग है। ३—एकाडेमी विद्यालय और कई एक स्कूल। एकाडेमी-विद्यालय के द्वार पर दो चिन्ताशील पण्डितों की बैठी हुई मूर्तियाँ हैं। उनके दोनों ओर दो ऊँचे स्तम्भों की चौटियों पर दो खड़े मनुष्यों की मूर्तियाँ हैं। ४—विश्वविद्यालय। ५—मानमन्दिर। ६—पुराने खुदाई और नक्शाओं के काम का म्यूजियम। ७—डाक्टर श्लीमैन (इनसे त्रिण्डिसी में मुलाकात और जान-पहचान हुई थी) का सगमरमर का घर और म्यूजियम। एथेन्स में ज्ञानोपार्जन का यह एक गंसा स्थान है। यहाँ बहुत सी सुवर्ण की बनी प्राचीन सामग्रियाँ रखी हुई हैं। उसमें कुछ सिक्के और मेडल, एक चेहरा, कुछ गहने, सोने के काम की एक तरवार और साइप्रेस-द्वीप की समाधियों में पाई गई बहुत सी सोने की चीजें और गहने देख कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। महात्मा श्लीमैन ने इस पुरातत्त्व-सम्बन्धी सामग्री के संग्रह में बड़ा परिश्रम किया है। इसके लिए ग्रीस देश और ग्रीस देश के पुरातत्त्व का अनुसन्धान करनेवाले विद्यार्थी उनके निकट चिर-कृतज्ञ रहेंगे। एथेन्स में ढाई लाख के लगभग लोग रहते हैं।

प्राचीन एथेन्स। राजमहल से आक्रोपोलिस (Acropolis-Acropole) तक सड़क के दोनों ओर गोल मिर्च के पेड़ हैं। प्राचीन काल की जो कुछ बची बचाई कीर्ति है वह सब आक्रोपोलिस के ऊपर और उसके आस पास है। यह पथरीला भूमिखण्ड ३७० फुट ऊँचा, १,२८० फुट लम्बा और ५५० फुट चौड़ा है। इसके चारों ओर नक्शागीदार और सादे सगमरमर के टुकड़े



और ३६ फुट चौड़ी छत के नीचे तीन देवालय थे । कई एक स्तम्भ और कुछ दीवार सहित इसका फाटक अभी वैसे ही खड़ा है । फाटक की छत पत्थर की पुतलियों के सिर पर रखी हुई है । इसके बाद नाइकी-मन्दिर (Temple of Nyke) देखा । चार खम्भों पर एक बरामदा रक्खा है, उसके ऊपर बहुत सी मूर्तियाँ स्थापित हैं । इस मन्दिर का इतना ही अंश और कुछ दीवार बची है । इस मन्दिर का ग्रीक नाम है "नाओम आप्टराय निख्स" (Naos Apteroy Nikhs), अर्थात् "पक्ष-हीन विजया देवी" (Wingless Victory) का मन्दिर । माराथन (Marathon) युद्ध में जीतने के बाद यह मन्दिर स्थापित करते समय एथेन्स के अधिवासियों ने विशेष उत्साह और गर्व के साथ यह सोचा था कि परकटी विजया-देवी या विजय-लक्ष्मी और कहीं उड़कर न जा सकेंगी, चिरकाल तक उन्हीं के यहाँ स्थापित रहेगी । किन्तु विधाता ने ठीक इसके विपरीत किया । वेनिसियन-लोगों के आक्रमण के समय इस मन्दिर के पत्थरों की गिराकर तुर्कों ने मोर्चा बनाया था । उसमें कोई पत्थर टूटा नहीं, सब समूचे ही रखे रहे । पीछे से ग्रीस जब स्वाधीन हुआ तब सब मिलाकर पहले की तरह फिर मन्दिर खड़ा कर दिया गया । यहाँ सबसे अधिक देखने की चीज है 'पार्थेनन' (Parthenon) अर्थात् नगर की अधिष्ठात्री मिनर्वा देवी का मन्दिर । यह २३० फुट लम्बा, १०० फुट चौड़ा और ७० फुट ऊँचा है । आठ वर्ष परिश्रम करके, ईसा से ४३६ वर्ष पहले, पेरिक्लिस (Pericles) ने इसे बनाया था । सन् १६८७ तक यह मन्दिर वैसे ही खड़ा था । उसी साल, वेनिसियन लोगों के आक्रमण के समय तुर्कों ने इस मन्दिर के सेला (Cella) अर्थात् मध्य-भाग में बारूद की मेगजीन (Magazine) बनाया था । शत्रुओं को जब

यह खबर लगी तो उन्होंने गोले मार कर इसमें आग लगा दी, उससे मन्दिर का एक अंश उड़ ही गया। इस समय पूर्व ओर का अंश तो बिलकुल ही नहीं है। इसका पश्चिम ओर का हिस्सा, पिछले हिस्से (Posticum) के दस सभूचे खभे और मध्य-भाग के ५८ खभों में से सामने के ८ और बगल के १७ खभे खड़े हुए हैं। छत और दीवार का कुछ हिस्सा भी मौजूद है। एक यात्री ने इस मन्दिर के सम्बन्ध में लिखा है— There are few more maddening thoughts than those inspired by the knowledge that two centuries ago the Parthenon was almost perfect, and has been shattered, not during the darkness of the middle ages, but in the full light of modern times” इस मन्दिर के प्राचीन साज सामान का वर्णन असम्भव है। और और चीजों को छोड़कर प्रसिद्ध पत्थर पर खुदाई का काम करनेवाले फीडियस (Phidias) के हाथ की कारीगरी यहाँ वैशुमार थी। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में इस्तम्बूल में रहनेवाले तत्कालीन इंग्लैंड के राजदूत लार्ड एलिगन ने सुल्तान की अनुमति लेकर अनेक पत्थर की कारीगरियाँ ब्रिटिश-म्यूजियम में लाकर रख दीं। वे इस समय उक्त म्यूजियम में “एल्गिन मार्बल्स” (Elgin Marbles) नाम से प्रसिद्ध हैं। इस मन्दिर के सम्बन्ध में अधिक न लिखकर केवल दो विद्वानों की राय यहाँ पर उद्धृत की जाती है। एक लिखते हैं— ‘Parthenon—the finest edifice on the finest site in the world, hallowed by the noblest recollections that can stimulate the human heart’—अर्थात् जिन सब स्मृतियों के द्वारा मनुष्य का हृदय उत्तेजित हो उठता है वैसे महत्तम स्मृति या से पवित्र पृथ्वी के अत्यन्त उत्कृष्ट स्थान में बहुत ही उत्तम मन्दिर यह है।

दूसरे लिखते हैं—“The Parthenon is universally admitted to have been the most beautiful building ever reared by Hellenic genius” इस मन्दिर के सम्बन्ध में सैकड़ों ग्रन्थ लिखे जा चुके हैं । इस पार्थेनन-मन्दिर के बाद आक्रोपोलिस के पूर्व छोर पर अनंक छोटे देवालय, बलिस्थान (Altar) आदि थे । इस समय उनके ध्वसावशेषों के ढेर जगह जगह पड़े हुए देख पड़ते हैं । इस उच्च भूमिखण्ड (आक्रोपोलिस) पर से चारों ओर का दृश्य बहुत ही सुन्दर जान पड़ता है । इसके उत्तर ओर दो पर्वतमालाये (Parnes and Cithocion), पश्चिम ओर ऊँचा पर्नासस (Parnassus), और पूर्व-दक्षिण ओर दो पहाड़ (Pentelicus and Hymettus) हैं । पश्चिम ओर आधुनिक राजधानी के बाद बना जङ्गल और उसके बाद समुद्र का नील जल है ।

आक्रोपोलिस के दक्षिण-पूर्व ओर पहाड़ के नीचे ही बेकस्थियेटर (Theatre of Bacchus—Theatron Bakhoy) का भग्नावशेष है । यहाँ खुली छत के नीचे साफोक्लिस (Sophocles), यूरिपाइडिस (Euripides) आदि जगत्प्रसिद्ध ग्रन्थकारों के नाटकों का अभिनय एथेन्स-वासियों को दिखलाया जाता था । कई एक सगमरमर के आसनों की लाइने (Rows of marble seats), आर्केस्ट्रा (Orchestra) और स्टेज का मामने का हिस्सा (Proscenium) बुरी हालत में नहीं है । पहले का थियेटर-भवन नष्ट हो जाने के बाद सम्राट् हेड्रियन ने दुबारा यह भवन बनवाया था । इसकी सब कारीगरी रोमन-राज्य के समय की है । इसके कुछ उत्तर ओर हट कर हिरोडस-थियेटर (Theatre of Herodes Atticus the Rhetorician) (Ilissus) का भग्नाव-

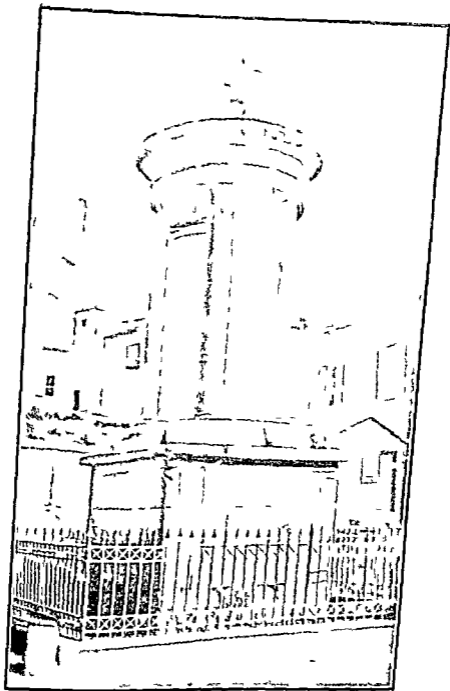
जोप है । इन दोनों धियेटरों में परस्पर गान-वजाने की लाग उठ रही करती थी । विख्यात ग्रीक अलङ्कार-शास्त्रज्ञ हीरोडस आटिकस ने अपने भारी ऐश्वर्य से एथेन्स के बहुत स्थानों को सुसज्जित किया था । यह धियेटर-भवन उन्हीं का बनवाया हुआ था । इसकी पत्थर की दीवार का कुछ हिस्सा और उसके अन्तर्गत कई एक फाटक अभी तक मौजूद हैं । पूर्व ओर सूखे हुए इलाइसस नदी-गर्भ और आक्रोपोलिस के बीच में सगमरमर का बना हुआ हेड्रियन का फाटक (Hadrian's Arch) [फाटक के ऊपर कई स्तंभों पर एक छत पटी हुई है ।] और ओलिम्पियन जूपिटर (Olympian Jupiter) के मन्दिर का ध्वसावशेष है । यह विराट् देवमन्दिर बनना शुरू होने के बाद बीच में ७०० वर्ष तक अधबना ही पड़ा रहा । पीछे सम्राट् हेड्रियन ने बनवा कर पूरा किया । इसके प्लेटफार्म का घेरा आधे मील का था । १२८ में से इस समय केवल १८ स्तंभ खड़े हैं, बाकी नष्ट हो गये । प्राचीन काल में इस देवालय के दक्षिण-पूर्व ओर इलाइसस नदी बड़े वेग से बहती थी । अब बरसात के महीनों भर उसमें पानी रहता है । इस नदी के दूसरे किनारे पर वृत्त-लता मण्डित अनेक बाग थे । वहीं पिसिस्ट्रैटस (Pisistratus) ने लाइसियम (Lyceum) स्थापित किया था, उसी में अरिस्टोटल (Aristotle) और भ्राम्यमाण दार्शनिकगण (Peripatetic Philosophers) विद्यार्थियों को शिक्षा देते थे । इसके उत्तर ओर लाइनोसार्जेस् (Lynosarges) था । यहाँ डायोजेनिस (Diogenes) छात्रों को अपने सीनिक (Cynic) का उपदेश देते थे । अब वहाँ इन सब स्थानों का कोई चिह्न नहीं है । इसी अंश में धनकुबेर हीरोडस ने दो छोटे पहाड़ों के मध्य की सारी कुदरती नीची भूमि (Natural hollow) पर सगमरमर जड़वा

दूसरे लिखते हैं—“ The Parthenon is universally admitted to have been the most beautiful building ever reared by Hellenic genius ”इस मन्दिर के सम्बन्ध में सैकड़ों ग्रन्थ लिखे जा चुके हैं । इस पार्थेनन-मन्दिर के बाद आक्रोपोलिस के पूर्व छोर पर अनंक छाटे देवालय, बलिस्थान (Altar) आदि थे । इस समय उनके ध्वसावशेषों के ढेर जगह जगह पड़े हुए देख पड़ते हैं । इस उच्च भूमिखण्ड (आक्रोपोलिस) पर से चारों ओर का दृश्य बहुत ही सुन्दर जान पड़ता है । इसके उत्तर ओर दो पर्वतमालाये (Parnes and Cithocion), पश्चिम ओर ऊँचा पर्नासस (Parnassus), और पूर्व-दक्षिण ओर दो पहाड़ (Pentelicus and Hymettus) हैं । पश्चिम ओर आधुनिक राजधानी के बाद घना जङ्गल और उसके बाद समुद्र का नील जल है ।

आक्रोपोलिस के दक्षिण-पूर्व ओर पहाड़ के नीचे ही बेकस्थियेटर (Theatre of Bacchus—Theatron Bakho) का भग्नावशेष है । यहाँ खुली छत के नीचे साफोक्लिस (Sophocles), यूरिपाइडिस (Euripides) आदि जगत्प्रसिद्ध ग्रन्थकारों के नाटकों का अभिनय एथेन्स-वासियों को दिखलाया जाता था । कई एक सगमरमर के आसनो की लाइने (Rows of marble seats), आर्केस्ट्रा (Orchestra) और स्टेज का सामने का हिस्सा (Proscenium) बुरी हालत में नहीं है । पहले का थियेटर-भवन नष्ट हो जाने के बाद सम्राट् हेड्रियन ने दुबारा यह भवन बनवाया था । इसकी सब कारीगरी रोमन-राज्य के समय की है । इसके कुछ उत्तर ओर हट कर हिरोडस-थियेटर (Theatre of Herodes Atticus the Rhetorician) (Ilissus) का भग्नाव-

शेष है। इन दोनों थियेटरों में परस्पर गान-बजाने की लागू डाली
 रहा करती थी। विख्यात ग्रीक अलङ्कार-शास्त्रज्ञ हीरोडस आटिकस्
 ने अपने भारी ऐश्वर्य से एथेन्स के बहुत स्थानों को सुसज्जित
 किया था। यह थियेटर-भवन उन्हीं का बनवाया हुआ था। इसकी
 पत्थर की दीवार का कुछ हिस्सा और उसके अन्तर्गत कई एक
 फाटक अभी तक मौजूद हैं। पूर्व और सूखे हुए इलाइसस
 नदी-गर्भ और आक्रोपोलिस के बीच में सगमरमर का बना
 हुआ हेड्रियन का फाटक (Hadrian's Arch) [फाटक के ऊपर
 कई स्तंभों पर एक छत पटी हुई है।] और ओलिम्पियन
 जूपीटर (Olympian Jupiter) के मन्दिर का ध्वसावशेष
 है। यह विराट् देवमन्दिर बनना शुरू होने के बाद बीच में ७००
 वर्ष तक अधबना ही पड़ा रहा। पीछे सम्राट् हेड्रियन ने बनवा कर
 पूरा किया। इसके प्लेटफार्म का घेरा आधे मील का था। १२८ में
 से इस समय केवल १८ स्तंभे खड़े हैं, बाकी नष्ट हो गये। प्राचीन
 काल में इस देवालय के दक्षिण-पूर्व और इलाइसस नदी बड़े वेग से
 बहती थी। अब बरसात के महीने भर उसमें पानी रहता है। इस नदी
 के दूसरे किनारे पर वृक्ष-लता मण्डित अनेक बाग थे। वहीं पिसि-
 स्ट्रटस (Pisistratus) ने लाइसियम (Lyceum) स्थापित किया
 था, उसी में अरिस्टोटल (Aristotle) और भ्राम्यमाण दार्शनिकगण
 (Peripatetic Philosophers) विद्यार्थियों को शिक्षा देते थे।
 इसके उत्तर और लाइनोसार्जेस् (Lynosarges) था। यहाँ
 डायोजेनिस् (Diogenes) छात्रों को अपने सीनिक (Cynic) का
 उपदेश देते थे। अब वहाँ इन सब स्थानों का कोई चिह्न नहीं है।
 इसी अंश में धनकुबेर हीरोडस् ने दो छोटे पहाड़ों के मध्य की सारी
 कुदरती नीची भूमि (Natural hollow) पर सगमरमर जड़वा

दिया था । उसी जगह नौजवान लोग तरह तरह की कसरते करके शरीर और मन को फुर्तीला बनाते थे । उक्त स्थान का नाम है पानाथेनेइक स्टेडियम (Panathenaic Stadium) । यह ६७५ फुट लम्बा है । इतने दिनों बाद सन् १८७५ से इस जगह पर फिर ओलम्पिक (Olympic Games) आदि खेल होना शुरू हुआ है । आक्रोपोलिस के दक्षिण-पश्चिम ओर म्यूजियम पहाड़ (Museum Hill) है । इसके ऊपर सोक्रेटिस (Socrates) का कैदखाना और फिलोपेपस (Philopapos) का समाधि-मन्दिर खड़ा हुआ है । आक्रोपोलिस और म्यूजियम महल के बीच की नीची जमीन में आगोरा (Agora) अर्थात् बाजार था । इस बाजार की बस्ती में प्रिटेनियम (Pnythaneum) अर्थात् शासन-सभा-भवन और तीन स्टाआ (Stoa) अर्थात् नाट-मन्दिर के ऐसे खुले मकान थे । उनमें अधिवासी लोग गर्मियों के दिनों में दोपहर को आराम करते थे और साधारण बातों पर तर्क-वितर्क तथा आलोचना होती थी । इसी अंश में साक्षात् भोगविलास की मूर्ति 'इपीक्यूरस' के विहार-बाग थे । इन बागों का कोई चिह्न इस समय देख नहीं पड़ता । आगोरा के पश्चिम छोर पर निक्स (Pnyx) नामक अर्द्धगोलाकार ऊँचा भूमिखण्ड है । यहीं पर इक्लीजिया (Ecclesia) अर्थात् साधारण समिति की बैठक होती थी और डेमोस्थिलस, डिमास्थिनोज (Demosthenes) आदि वाग्मियों की वक्तृताये सुनकर श्रोतागण मुग्ध होते थे । नगर और राज्य के सम्बन्ध के बड़े बड़े मामलों पर विचार भी यहीं होता था । निक्स के सामने आरीओपेग्स या मार्सहिल (Areopagus or Mars Hill) है । यहाँ डायोनिसियस (Dionysius) आदि विचारक बैठकर 'विचार' का काम करते थे और यहीं महात्मा सेन्टपाल ने एन्थियन लोगों में ईसाई-धर्म का



लीसिस्ट्रेटिस का स्मारक स्तम्भ—पृ० १११



प्रचार किया था। इसी जगह पर पेरीक्लिस ने अपने राजनैतिक व्याख्यान दिये हैं, डायोडोटस (Diodotos) ने ओजस्वी व्याख्यानों से दया के पक्ष का समर्थन किया है और महात्मा सेक्रेटिस व्यवस्था का नियम तोड़ना अस्वीकार करके सारे एथेन्स के बुरे वनकर भी अपनी 'निष्ठा' की रक्षा करने पर तुले रहे हैं। इसको उत्तर-पश्चिम में थोसियस-मन्दिर (Temple of Theseus) है। यह ईसा से ४६६ वर्ष पहले का बना हुआ है। क्लकत्ता-यूनिवर्सिटी की इमारत के ढङ्ग का यह भारी मकान अभी समूचा खड़ा है। ३६ खम्भे हैं, उनमें से एक आध किसी किसी जगह साधारण तौर पर टूट-फूट गया है। फाटकों के ऊपर रक्खी हुई छत अवश्य जगह जगह पर नष्ट हो गई थी, सो उसकी सब जगह मरम्मत हो गई है। अब इस जगह प्राचीन वस्तुओं का एक म्यूजियम है।

आधुनिक नगर के भीतर लीसिक्रेटिस (Lysicrates) का स्मारक-स्तम्भ है। नाट्याचार्य के कार्य में निपुण होने के कारण प्रचलित प्रथा के अनुसार इनको पीतल का त्रिपद (Bronze Tripod) मिला था। वही इस सगमरमर के स्मारकस्तम्भ पर स्थापित है। इससे थोड़ी ही दूर पर ७ खम्भों सहित हेड्रियन के फाटक का भारी भग्नावशेष खड़ा हुआ है। पास ही हवाई टावर (Tower of winds) है। वहाँ पर पत्थर के फर्श पर कई नालियाँ बनी हुई थीं। मध्यस्थान से 'कल' के द्वारा जल चलता था और वह निर्दिष्ट नाली से वह कर धडी की तरह समय बतलाता था। यहाँ पर एक पुराने जमाने की सूर्य-घड़ी इस समय भी मौजूद है। नगर के इस अंश में सभी जमानों की कीर्तियाँ एकत्र देखने को मिलती हैं। नगर के उत्तर-पूर्व में धनियों के भवन और बड़े बड़े

वीर चोद्धात्रों के स्मारक-चिह्न थे । उनके बाद ही लतामण्डपों और अनंक मूर्तियों से सुशोभित बाग के भीतर प्लेटो की एकाडेमी (Plato's Academy) थी, जिससे बहुत से विद्यार्थियो ने ज्ञान और उपाधियाँ पाई हैं । एथेन्स के अन्य दो प्राचीन मन्दिरों का कुछ हाल मालूम नहीं हो सका । इयोल-मनूमेन्ट और सेन्ट-इल्यूथिरियस-गिर्जा । पहला तो सगमरमर का बना हुआ एक अष्टकोण मन्दिर है । यह मन्दिर रोमन-समय का जान पड़ता है । क्योंकि यह यदि ग्रीक इयोलस (पवन-देव) के सम्बन्ध का कोई स्थान होता तो मनुमेन्ट न कहला कर देवालय या मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध होता । इसके सिवा पवन-देव का मन्दिर (Temple of Æolus or Tower of Winds) अलग बना हुआ है । सेन्ट-इल्यूथिरियस-गिर्जा यूरोप का सबसे पुराना गिर्जा है । दोनों ही स्थान बहुत अच्छी हालत में हैं । गिर्जे में इस समय भी नियमित रूप से नित्य उपासना होती है ।

एथेन्स और रोम । रोम-यात्रा के बाद एथेन्स आया, इसी से जितनी आशा थी उससे कुछ कम ही यहाँ जान पडा । असल बात तो यह है कि रोम में बहुत से स्थानों में अनेकानेक बड़े बड़े दर्शनीय दृश्य भरे पडे हैं । बहुत दिनों तक सैर करने पर भी जी नहीं भरता । किन्तु एथेन्स के सब दृश्य एक ही दिन में देख डाले जा सकते हैं । रोम की समृद्धि की सरवर एथेन्स नहीं ही कर सकता । रोम ने दो समयों में दो रूपों से सागर-द्वीप-समेत पृथ्वी के ऊपर एकाधिपत्य किया है, एथेन्स को यह बात कभी नहीं नसीब हुई । किन्तु पृथ्वी के किसी हिस्से पर प्रत्यक्ष रूप से अपना आधिपत्य स्थापित न कर सकने पर भी एथेन्स ने रोम और सारे सभ्य-जगत् के ऊपर अप्रत्यक्षरूप से जो प्रधानता पाई है उसे कौन मिटा सकता है ?

इस एथेन्स ने एक समय यूरोप भर को अनेक प्रकार के ज्ञान दिये हैं । यूरोप को सभ्य जगत् ने साम्य और स्वाधीनता की शिक्षा एथेन्स से ही पाई है । सर्व-साधारण में वक्तृता देना, प्रजा परतन्त्र-शासन-प्रणाली, सर्वनाधारण के वोटों से शासन-सभा के मेम्बरो का चुनाव इत्यादि श्रेष्ठ सभ्यता के कामों की राह एथेन्स ने ही सबसे पहले यूरोप को दिग्वलाई है । इस धरती ने—इस एथेन्स ने बहुत से बहुत ही उच्च श्रेणी के विद्वानों को पैदा किया है और सुसभ्य यूरोप खण्ड भर इसका ऋणी है ।

कोरिन्थ (Corinth) यात्रा । एथेन्स से कोरिन्थ को रवाना हुआ । राह में मेगारा (Megara) मिला । यह स्थान यूक्लिड (Euclid) का जन्मस्थान कहलाता है । स्टेशन के पास ही गाँव है । पूर्वसमृद्धि का साधारण चिह्न भी मुझे यहाँ नहीं देख पड़ा । रहनेवाले बहुत ही गरीब जान पड़े । कोरिन्थ पहुँचने के कुछ पहले नई नहर मिली, उस समय कुछ अश बनना बाकी था । ग्यारह बरस मेहनत करके यह चार मील की नहर बनाई गई है । इसके बनने में २० लाख पाँड खर्च हुए हैं । रेलवे लाइन के किनारे के अनेक पहाड़ों में मनुष्यों के रहने लायक अनेक सुन्दर रुन्दरायें देख पड़ीं । किसी किसी के मुँह से सुनने में आया कि पहले इन रुन्दरायों में अनेक ज्ञानी सन्यासी रहते थे ।

कोरिन्थ । नया कोरिन्थ जहाँ बसा हुआ है उस जगह पहले कई मछुओं के भोपड़े पड़े थे । सन् १८५८ के भयानक भूकम्प में पुरानी बस्ती नष्ट हो जाने से वहाँ के रहनेवाले इस जगह उठ आये । एथेन्स से पाट्रास (Patras) तक रेल खुल जाने के बाद से इस स्थान की कुछ उन्नति हुई है । यह इस प्रदेश के शासक का हेडक्वार्टर

वीर चोद्धात्रों के स्मारक-चिह्न थे । उनके बाद ही लतामण्डपों और अनेक मूर्तियों से सुशोभित बाग के भीतर प्लेटो की एकाडेमी (Plato's Academy) थी, जिससे बहुत से विद्यार्थियो ने ज्ञान और उपाधियाँ पाई हैं । एथेन्स के अन्य दो प्राचीन मन्दिरों का कुछ हाल मालूम नहीं हो सका । इयोल्-मनूमेन्ट और सेन्ट-इल्यूथिरियस-गिर्जा । पहला तो सगमरमर का बना हुआ एक 'अष्टकोण मन्दिर है । यह मन्दिर रोमन-समय का जान पड़ता है । क्योंकि यह यदि ग्रीक इयोल्स (पवन-देव) के सम्बन्ध का कोई स्थान होता तो मनुमेन्ट न कहला कर देवालय या मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध होता । इसके सिवा पवन-देव का मन्दिर (Temple of Æolus or Tower of Winds) अलग बना हुआ है । सेन्ट-इल्यूथिरियस-गिर्जा यूरोप का सबसे पुराना गिर्जा है । दोनों ही स्थान बहुत अच्छी हालत में हैं । गिर्जे में इस समय भी नियमित रूप से नित्य उपासना होती है ।

एथेन्स और रोम । रोम-यात्रा के बाद एथेन्स आया, इसी से जितनी आशा थी उससे कुछ कम ही यहाँ जान पडा । असल बात तो यह है कि रोम में बहुत से स्थानों में अनेकानेक बड़े बड़े दर्शनीय दृश्य भरे पड़े हैं । बहुत दिनों तक सैर करने पर भी जी नहीं भरता । किन्तु एथेन्स के सब दृश्य एक ही दिन में देख डाले जा सकते हैं । रोम की समृद्धि की सरवर एथेन्स नहीं ही कर सकता । रोम ने दो समयों में दो रूपों से सागर-द्वीप-समेत पृथ्वी के ऊपर एकाधिपत्य किया है, एथेन्स को यह बात कभी नहीं नसीब हुई । किन्तु पृथ्वी के किसी हिस्से पर प्रत्यक्ष रूप से अपना आधिपत्य स्थापित न कर सकने पर भी एथेन्स ने रोम और सारे सभ्य-जगत् के ऊपर अप्रत्यक्षरूप से जो प्रधानता पाई है उसे कौन मिटा सकता है ?

इस एथेन्स ने एक समय यूरोप भर को अनेक प्रकार के ज्ञान दिये हैं । यूरोप के सभ्य जगत् ने साम्य और स्वाधीनता की शिक्षा एथेन्स से ही पाई है । सर्व-साधारण में वक्तृता देना, प्रजा-परतन्त्र-शासन-प्रणाली, सर्वसाधारण के वोटों से शासन-सभा के सदस्यों का चुनाव इत्यादि श्रेष्ठ सभ्यता के कामों की राह एथेन्स ने ही सबसे पहले यूरोप को दिखलाई है । इस धरती ने—इस एथेन्स ने बहुत से बहुत ही उच्च श्रेणी के विद्वानों को पैदा किया है और सुसभ्य यूरोप खण्ड भर इसका ऋणी है ।

कोरिन्थ (Corinth) यात्रा । एथेन्स से कोरिन्थ को रवाना हुआ । राह में मेगारा (Megara) मिला । यह स्थान यूक्लिड (Euclid) का जन्मस्थान कहलाता है । स्टेशन के पास ही गाव है । पूर्वसमृद्धि का साधारण चिह्न भी मुझे यहाँ नहीं देख पड़ा । रहनेवाले बहुत ही गरीब जान पड़े । कोरिन्थ पहुँचने के कुछ पहले नई नहर मिली, उस समय कुछ अश बनना बाकी था । ग्यारह बरस मेहनत करके यह चार मील की नहर बनाई गई है । इसके बनने में २० लाख पाँड खर्च हुए हैं । रेलवे लाइन के किनारे के अनेक पहाड़ों में मनुष्यों के रहने लायक अनेक सुन्दर रुन्दरायें देख पड़ीं । किसी किसी के मुँह से सुनने में आया कि पहले इन रुन्दरायों में अनेक ज्ञानी सन्यासी रहते थे ।

कोरिन्थ । नया कोरिन्थ जहाँ बसा हुआ है उस जगह पहले कई मछुओं के झोपड़े पड़े थे । सन् १८५८ के भयानक भूकम्प में पुरानी बस्ती नष्ट हो जाने से वहाँ के रहनेवाले इस जगह उठ आये । एथेन्स से पाट्रास (Patras) तक रेल खुल जाने के बाद से इस स्थान की कुछ उन्नति हुई है । यह इस प्रदेश के शासक का हेडक्वार्टर

या प्रधान स्थान है । इस जगह २,००० के लगभग आदिमियों की बस्ती है । यहाँ एक छोटा सा होटल भी है ।

प्राचीन कोरिन्थ । इधर जाने की राह में, एक गाँव में, मसजिद का भग्नावशेष और पास के पहाड पर पुरानी किले की दीवार देख पडी । प्राचीन कोरिन्थ एक समय बडा, समृद्धिशाली नगर था किन्तु इस समय उजाड पडा हुआ है । यहाँ सुसज्जित मिनरवादेवी का मन्दिर के ७ डोरिक (Doric) स्तम्भ खडे हुए हैं । यह मन्दिर २,६०० वर्ष का पुराना है । इसके खम्भे एक ही एक ठुक्रुडे पत्थर के बने हुए हैं । स्तम्भों का घेर २० फुट और उँचाई २१ फुट है । यहाँ पहले की कीर्तियों में और है एक 'आक्विडाक्ट' का भग्नावशेष । इस स्थान में और नई बस्ती में ३ मील का फासिला है । रेलवे-स्टेशन से दिन भर के लिए एक गाडी किराये की कर ली थी । उसी पर यहाँ तक आया और यहाँ से आक्रोकोरिन्थ के पहाड पर गया । जिसके बारे में "वायरन" ने लिखा है—

" Stranger, with thou follow now,
And sit with me on Acro-Corinth's brow "
—Byron

यह वही आक्रो-कोरिन्थ नामक अर्द्धगोलाकार कुदरती पहाडी किला है । यह १,६०० फुट उँचा है । किले की चहारदीवारी और सब टावर अभी बहुत अच्छी हालत में हैं । चहारदीवारी के घेरे में तो मजे से एक बडा नगर बस सकता है । प्राचीन थोक-गड की नीव के ऊपर रोमन समय और मध्ययुग में यह सब बना है । चोटी पर प्रसिद्ध पाइरिन-स्प्रिंग (Pyrene Spring) है । यहीं बेलरफोन (Bellerophon) ने अपने परदार घोडे पेगासस (Pegasus) को गिरफ्तार किया था । यहाँ से राज्य के चारों ओर का दृश्य बहुत

सुन्दर जान पड़ता है । किले की दीवार के अलावा वीनस-देवी के मन्दिर और कई एक वेनिसियन और तुर्की मकानों के ध्वसावशेष भी यहाँ देख पड़े । पहाड़ से दोपहर की धूप में उतरने के कारण बड़ी प्यास लगी । पानी के लिए पास के एक गाँव में गया । जाकर देखा, गाँव के एक हिस्से में एक बड़े पंख के चारों ओर कई मकान हैं । पंख नीचे बड़ई अपना काम कर रहे थे । एक घर के सामने गाँव का पादरी चार पाँच आदमियों के साथ ठण्डे में बैठा हुआ बातचीत कर रहा था । सब लोग छोटी छोटी मचियों पर बैठे हुए थे । सब लोग रुई के मादे और ढीले कपड़े पहने हुए थे । और सबके सिर खुले थे, केवल पादरी के सिर पर एक काले रङ्ग की ऊँची टोपी थी । अनेक यूरोपियन भाषाओं के शब्दों-द्वारा उनसे जल माँगा, पर उनमें से कोई भी कुछ न समझा । अन्त में इशार से बतलाने पर पादरी ने कहा—“आपा ? नीरो ?” मैंने कहा—“हाँ” । एक आदमी उठकर प्याले में जल ले आया । पूर्वोक्त दोनो जलवाचक शब्द संस्कृत ‘आप’ और ‘नीर’ शब्द से बिल्कुल मिलते हुए देखकर मुझे कुछ आश्चर्य हुआ । गाँव में कुछ औरते अगूर सुखा रही थीं, कुछ ऊन के डोरे कात रही थीं । एक छोटा सा स्कूल था, उसमें लड़के पल्थी मारे बैठे पढ़ रहे थे । टर्की से ही यह ‘बैठक’ शुरू हो जाती है । हुक्के पर तमाखू पीना ग्रीसवालों ने तुर्कों से सीखा है । ग्रामवासियों के लिए एक छोटा सा गिर्जा भी है । उसी के पास ही एक मस्जिद का भग्नावशेष है । गाँव के भले आदमी पैरों में बस्त्रिन् जूते और बदन पर लेगिंग (Legging) घाँघरे के ऊपर फतुही पहनते हैं । फतुही की दोनो बाँहे अलग हिलगा करती हैं । उनमें सुई का काम बना होता है और अग्रभाग में दो फुदने (Tassel) लगे रहते हैं । सिर पर टर्की टोपी और कमर में चमड का

इटली, स्वीजलैंड और ग्रीस ने आपस में शर्तें करके एक ही कीमत के चाँदी के सिक्के ढाले हैं और इन पाँचों देशों में बराबर बिना किसी रुकावट के हर एक सिक्का चलता है। किन्तु इस समय इटली और ग्रीस की आर्थिक अवस्था अच्छी न होने के कारण इन दोनों देशों के सम्बन्ध में गड़बड़ी आ पड़ी है। ग्रीस में सोना तो देख ही नहीं पड़ता। चाँदी के सिक्के का भी उतना चलन नहीं है। मैंने पहले अँगरेज़ी पौण्ड भुना कर 'ड्राक्मा' लिये थे। पीछे दुभाषिये की सलाह से पौण्ड के नोट लिये। उससे मुझे लाभ हुआ। जिससे मैंने पहले पौण्ड भुनाया था उसे चाहिए था कि वह मुझे सोने की दर के अनुसार चाँदी के सिक्के देता, क्योंकि यहाँ का सिक्का सोने के निखर (Gold basis) से नहीं बना। किन्तु मुझे विदेशी देख कर उसने एक पौण्ड के केवल २५ ड्राक्मा दिये थे। पीछे जब पौण्ड के नोट लिये तो ३६ ड्राक्मा के नोट मिले। मुझे प्रसन्नता भी हुई और आश्चर्य भी हुआ। कभी कभी एक पौण्ड के ३८ नोट (एक एक ड्राक्मा के) भी मिल जाते हैं। बाजार में चाँदी का सिक्का और इतने ही का नोट देना एक ही कीमत पर चलते हैं। नोट छोटे आकार के और इतने मँले और कटे-फटे होते हैं कि हाथ में लेते भी घृणा मालूम होती है। हर्फ एक भी पढा नहीं जाता। यहाँ की चीजों के सग्रह में इस तरह का एक नोट भी मैं भारत में ले आया हूँ। यहाँ के साधारण निवासी सफाई वगैरह की ओर बिल्कुल ध्यान नहीं देते। इसका प्रमाण है यहाँ के रेल्वे-स्टेशनों के पाखाने। उनकी ऐसी बुरी हालत है कि उनके भीतर जाने में बड़ा ही कष्ट होता है। यहाँ से बहुत गाँवों के रहनेवाले जानते ही नहीं कि साबुन क्या चीज है।

पहले रोमन लोगों ने ग्रीस को पराधीन बनाया। उसके बाद

गोलमाल में कुछ दिनों तक ग्रीस एक प्रकार की अधूरी स्वाधीनता का उपभोग करता रहा । उसके उपरान्त सोलहवीं शताब्दी के आरम्भ से तुर्क लोगो का अधिकार हो गया । अन्त को सन् १८३० की ३ री फरवरी के दिन लन्दन में प्रकाशित प्रोटोकल-पत्र (Protocol of London) द्वारा अँगरेज, फ्रेंच और रूसियों के आश्रय में निकट के पाँच द्वीपो सहित ग्रीस के वर्तमान स्वाधीन राज्य की स्थापना हुई । इसके बाद सन् १८३२ में यूरोप की प्रधान शक्तियों ने एक जर्मन प्रिन्स को ग्रीस का सिंहासन दिया । ३० वर्ष राज्य करने के बाद उस प्रिन्स को राज्य-शासन के अयोग्य बतला कर ग्रीक लोगों ने अपने देश से भगा दिया । इसी समय भारतेश्वरी विक्टोरिया के सँभले पुत्र को ग्रीक लोगो ने एकमत होकर अपना राजा बनाना पसन्द किया, किन्तु अनेक कारणों से डेन्मार्क के एक राजकुमार को ग्रीस का सिंहासन दिया गया । यही प्रथम जार्ज नाम से ग्रीस के वर्तमान राजा हैं । इनको केवल ४,०००० पौण्ड की सलाना वृत्ति मिलती है । उसमें बड़े कष्ट से अपने पद की मान-भर्यादा की रक्षा करते हुए यह अपना गुजारा करते हैं । राज-काज के लिए सात विभागों के सात मन्त्री हैं । वे भी बहुत मामूली—साल में ४२८ पौण्ड—वृत्ति पाते हैं । राजा अक्सर अकेले ही छाता सिर पर लगाये बैदल टहलने जाया करते हैं । रविवार को प्राय तीसरे पहर वह अपने परिवार सहित ट्रामगाडी पर चढ़ कर घूमने निकलते हैं । राजा और उनके सारे परिवार के आदमी बहुत ही अच्छे स्वभाव के और नम्र हैं । प्रजा अपने राजा के बर्ताव से बहुत खुश है । वर्तमान समय के एक ग्रीक तत्त्व का अनुसन्धान करनेवाले यात्री ने इस सम्बन्ध में लिखा है—“The King appears to be extremely popular The Greeks believe they have

drawn a prize in the lottery of royalties, and seem to have an absolute conviction that their King is wise enough to get them out of any hole, the politicians may take into ”

यूरोप खण्ड में ग्रीस अत्यन्त 'डेमक्रटिक' देश है । यहाँ के समाज में सम्भ्रान्त या प्रतिष्ठित कहलानेवाली कोई श्रेणी नहीं है । ग्रीक-तत्त्ववेत्ता पण्डित महाफ़ी (Mahaffy) कहते हैं—
 “ Every common mule-boy is a gentleman and fully your equal, sitting in the room at meals, and joining in the conversation at dinner ” इन्होंने यह भी लिखा है कि ग्रीक लोगों को यह दृढ विश्वास है कि वे अनेक बातों में—खासकर विद्या और बुद्धि में अन्यान्य जातियों की अपेक्षा श्रेष्ठ हैं । इस देश में साम्यवाद इतना प्रचलित है कि एक आदमी ने महाफ़ी महाशय से स्पष्ट कहा था कि “ विदेशी राजा पसन्द करने का प्रधान कारण यह है कि हम लोग अपने में से किसी का इस तरह का प्रभुत्व कभी सह नहीं सकते ” । मुसलमानों के राज्य-काल में ग्रीस एक प्रकार से मुर्दे की हालत में था । इन बहुत दिनों तक किसी सभ्य जाति के ससर्ग में न आने के कारण यहाँ की प्रजा के मानसिक भावों में विशेष हीर फेर हो गया । प्रथम राजा के अमल में प्राण-दण्ड की व्यवस्था चलाने में शासकों को बड़ी चेष्टा करनी पड़ी थी । ग्रीक लोग समझते हैं कि मनुष्य के प्राण लेने का मनुष्य को कुछ भी अधिकार नहीं है । इस समय इस विषय को ग्रीक लोग बहुत कुछ समझ गये हैं, तथापि वहाँ ऐसा नियम प्रचलित है कि प्राण-दण्ड की आज्ञा होने के बाद दो बरस धीत जाने पर उसकी तामील होती है । इस देश के आईन के अनुसार किसी भा अपराधी को एक अनिर्दिष्ट समय तक बिना विचार के जेल में रक्खा जा

नरुता है । यहाँ की अधिकांश प्रजा ग्रीक-चर्च के ईसाई-मम्प्रदाय की अनुयायिनी है । राज्य में यहूदियों के भजन-मन्दिर और मुसलमानों की मसजिदे भी हैं । रोमन-कैथलिक के साथ ग्रीक-चर्च की सब धाते मिलती हैं । केवल दो तीन धातों में अन्तर है । प्रधान मतभेद है पवित्रात्मा के सम्बन्ध में । ग्रीक-चर्च के अनुयायियों का मत है कि पवित्रात्मा केवल 'पिता' से प्रकट है, 'पुत्र' के साथ उसका कुछ सम्बन्ध नहीं । राजधानी में रोमन-कैथलिक और यहूदी लोग एक साथ एक क़रिस्तान में गाड़े जाते हैं । इटली के दक्षिण भाग की तरह इस देश में भी वाल्य-विवाह का चलन है । १३ से १५ तक में लड़कियों का और १६ से २० तक में लड़कों का व्याह कर दिया जाता है । पिता माता ही व्याह ठोक करते हैं और लड़कोंवाले को कुछ अधिक दहंज देना पड़ता है । कौरी लड़कियाँ अक्सर अपनी सारी सम्पत्ति आभूषण के रूप में सिर पर पहने रहती हैं । पहले कहा जा चुका है कि आयरलैण्ड में सब देशों की अपेक्षा 'दोगले' कम हैं, परन्तु ग्रीस इस बात में आयरलैण्ड से भी श्रेष्ठ है । किन्तु बहुत लोग ग्रीस और टर्की को यूरोप-खण्ड के बाहर बतलाते हैं । ग्रीस में जार-ज सन्तानों की औसत एक हजार में चौदह के हिसाब से है । इस देश की और एक विशेषता यह है कि यूरोप भर में केवल यहाँ स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों की संख्या अधिक है । ग्रीक लोग बहुत कम शराब पीते हैं, और इसलिए वे विशेष प्रतिष्ठा पाने के योग्य हैं । देश में बहुत शराब बनती है, लेकिन स्थानीय लोग बहुत ही कम शराब का इस्तेमाल करते हैं । खाने पीने पर भी ये सदा समय की दृष्टि रखते हैं । गरीब लोग एक दफा और धनी लोग दो दफा भोजन करते हैं । एक अँगरेज किसान एक दफा में जितना भोजन करता है उतने में ग्रीक-परिवार के ६ आदमी गुजर कर

लेंगे। गरीब लोग अधिकतर फल-मूल पर ही गुजर करते हैं। राज्य में जमींदार पहले विलकुल थे ही नहीं, अब दो चार हो गये हैं। तुर्क लोगों की अमलदारी में राज्य की दो-तिहाई जमीन पर सुल्तान का खास अधिकार था। जब ग्रीस स्वाधीन हुआ तो वह जमीन प्रजा के हाथ वेच डाली गई। जमीन का लगान अब भी मुसलमानी रीति के अनुसार फसल का दसवाँ हिस्सा लिया जाता है। कोई कोई नकद देता है, नहीं तो अधिकांश लगान फसल में पैदा हुई चीज से ही अदा किया जाता है।

शिक्षा के सम्बन्ध में ग्रीस अनेक राज्यों से अच्छी स्थिति में है। सामान्य प्राइमरी शिक्षा से लेकर कालेज की शिक्षा तक सर्वसाधारण को मुफ्त दी जाती है। आईन के अनुसार सात से लेकर बारह बरस तक के बच्चों को स्कूल में भेजना हर एक का कर्तव्य है। यहाँ के बच्चे खुद पढ़ने के बड़े शौकीन हैं। हजार अटकाव होने पर भी वे स्कूल में गैरहाजिर नहीं होते। कालेज के लड़के तो ठीक हमारे देश के प्रेजुएटों की तरह तन-मन से पढ़ने में तत्पर देख पड़ते हैं। इसका फल यह हुआ है कि शिक्षित लोगों के मारे सारे देश के नाको दम है। यहाँ एक कारीगर मिलना मुश्किल है, मगर कालेज के सनदयाफ़्त सज्जनों की भरमार है। यहाँ के बहुत लोग कहते हैं, अब शिक्षा की जरूरत नहीं है, अन्त को देश में खेती होना विलकुल बन्द हो जायगा। शिक्षित बहुत से हैं, नौकरियाँ कम हैं। बहुत से बेकार शिक्षित लोग हमारे देश की तरह जमा हो होकर राजनैतिक व्याख्यानवाजी में लग जाते हैं। एक तो व्याख्यानवाजी और तरुकों की तेजी थीक लोगों को बपौती ही है, दूसरे अब उस पर यूरोप का रङ्ग चढ़ गया है। फल यह हुआ है कि जहाँ देखो तहाँ चार थीक जमा

होकर राजनीतिक तर्क-वितर्क कर रहे हैं । एक ग्रीक पण्डित ने दुःख के साथ लिखा है—“ We manufacture nothing but professors and writers, whilst what Greece requires are men to cultivate her waste lands, artisans and engineers ” ठीक हमारी ही ऐसी दशा है । अन्तर यही है कि ग्रीस देश का चरवाहा तरु तर्कशास्त्री है । यह बात ग्रीस के लिए दोष हो गई है, लेकिन हमारे यहाँ होती तो गुण हो जाती । राज्य भर में कुल एक लाख के लगभग विद्यार्थी हैं । उनमें कुल २०००० स्त्रियाँ हैं । इससे जान पड़ता है कि स्त्री-शिक्षा के बारे में ग्रीस कुछ पिछड़ा हुआ है । १८०० के लगभग प्राइमरी स्कूल हैं । उनके लिए देश की सब म्यूनीसिपैल्टियाँ अपनी आमदनी का छठा हिस्सा देती हैं । इन स्कूलों के समर्थ छात्रगण १० से ५० लेप्टा तक मासिक वेतन देते हैं । इनके सिवा ६०० के लगभग ग्रामर-स्कूल (छोटे विद्यालय) और ३०० से ऊपर हेलेनिक अर्थात् उच्च श्रेणी के स्कूल हैं । ३३ जिम्नेसियम (Gymnasium) अर्थात् कालेज और एथेन्स के विश्वविद्यालय हैं । विश्वविद्यालय के अन्तर्गत चिकित्सा शास्त्र के विभाग में विद्यार्थिनी स्त्रियाँ भी भर्ती की जाती हैं । यूरोप के अनेक राज्यों में स्त्री-जाति को यह अधिकार अभी तक नहीं प्राप्त हुआ । ग्रीस में सभी विभागों में तनख्वाह कम मिलती है । विश्वविद्यालय में ५२ प्रोफेसर और १२ फेलो (Fellow) हैं । सालाना २०० पाँण्ड से अधिक तनख्वाह किसी को नहीं मिलती । ग्रीस की प्रजा में हर सत्रह आदमियों में एक छात्र मिलेगा । गृहस्थों के नौकर-चाकर छुट्टी पाते ही पुस्तक पढ़ते या हिसाब सीखते हैं ।

जल वायु के सम्वन्ध में इटली, स्पेन आदि के इस लाटीट्यूड

प्रदेश से ग्रीस विलकुल विभिन्न है। जाड़े में जैसी कड़ी सर्दी पड़ती है वैसे ही गर्मियों में करारी गर्मी होती है। मरु-भूमि का पास होना ही शायद इसका कारण है। ग्रीस को लोग “धूलिमय” कहते हैं, लेकिन यह बदनामी ग्रीस के उत्तर-भाग को ही दी जा सकती है। दक्षिण-भाग में अनेक जलसम्पन्न प्रदेश हैं। बहुत जगह पानी के निकास का अच्छा प्रबन्ध न होने के कारण मलेरिया फैला करता है। उसमें अनेको बच्चे नष्ट होते हैं और नौजवान लोग दुबले व कमजोर हो जाते हैं। मुझे तो इस अञ्चल के नगर, गाँव या राह में शायद एक भी मोटा आदमी देखने को नहीं मिला। ग्रीस में तरह तरह के फल-मूल मिलते हैं, लेकिन यहाँ का पीले रंग का ‘पिच्’ फल बहुत ही स्वादिष्ट और मीठा होता है।

दक्षिण-उपद्वीपों के साधारण नियमानुसार ग्रीक लोग सुस्त होते हैं, वे समय की क़दर करना कम जानते हैं। रेल की गाड़ी जब किसी बड़े स्टेशन में कुछ देर के लिए ठहरती है तब जल-पान करने के लिए यात्री लोग गाड़ी पर से उतर जाते हैं, बाद को गाड़ी छूटने का घटा दो-तीन बार बजने पर भी—एजिन के सीटी देने पर भी वे लोग फुर्ती नहीं करते। जब देखते हैं कि गाड़ी धीरे धीरे खिसकने लगी तब जरा जल्दी से लपक कर गाड़ी पर चढ़ते हैं। ग्रीस के सब निवासी ग्रीक नहीं हैं। राज्य में अधिकतर तीन जातियों के मनुष्य रहते हैं—ग्रीक, अलबेनियन और वालाचियन। इनकी भाषा, पहनाव और आचार-व्यवहार जुदा जुदा है और परस्पर हेल-मेल भी कम है। वालाचियन और अलबेनियन लोग ग्रीकों की लडकी ले लेते हैं, परन्तु अपनी लडकियाँ उनको नहीं देते। इस जाति के लोग पहले “ट्रिगाण्ड” अर्थात् दस्यु व्यवसायी थे। ग्रीक लोग नीदण-बुद्धि, उत्सुक, क्षानोपार्जननिरत, शिचाचतुर, मानसिक तेज रखने-

वाले, देशद्वितीय, स्वाधीनताप्रिय, साम्यवादी, सभ्य, भव्य और सदा प्रसन्न मुख रहते हैं। आत्म-हत्या और उन्माद को वे शायद जानते ही नहीं। पराधीनता-विशेष कर तुर्की अत्याचार की अधीनता-के कारण कई एक भारी दोष भी ग्रीक लोगों में घुस गये हैं। उनमें दुष्ट उच्चाभिलाषा, धूर्तता, आत्म-गौरव, दम्भ, अर्थलोलुपता, अन्याय से अर्थोपार्जन की चेष्टा और कायरता ये दोष प्रधान हैं। अब पाठक लोग विचार कर देखें कि हमारे साथ पहले जैसी इस जाति की दशा मिलती थी, वैसी ही समता, युगयुगान्तर बीत जाने पर भी, इस समय भी है या नहीं। हममें और उनमें अन्तर केवल इतना ही है कि वे लोग यूरोप की आब-हवा के कारण इस समय भी कुछ मनुष्यत्व के सहारे खड़े हुए हैं और हम विलकुल लटे हुए हैं। इसके सिवा दोनों की एक दशा है। दोनों की स्वाधीनता चार आदमियों के अनुग्रह पर निर्भर है। हम जैसे आर्य वंश से उत्पन्न हैं किन्तु हमारे शरीर और मन में कुछ भी आर्यों की बात नहीं देख पड़ती वैसे ही वही हाल ग्रीकों का है। जो प्रतापी ग्रीक लोग साधारण सप्तर में और मानसिक राज्य में महान् वीरों के योग्य कार्यों के द्वारा अमर हो गये हैं उनका कोई भी चिह्न उनकी वर्तमान पौध में नहीं देख पड़ता। बहुत दिनों से वे चिह्न इस जाति से विदा हो गये हैं। अनेक जातियों के मेल से आधुनिक ग्रीक लोग एक विल्कुल नई ही जाति बन गये हैं। इसके सिवा कई शताब्दियों तक विदेशियों-प्रासकर तुर्कों-के अत्याचार से ग्रीक लोगों की ठीक हमारी ही ऐसी दशा होगई है। अब तक ग्रीक लोग हमारी ही तरह पूर्व-गौरव की खुमारी में चूर थे। समझते थे कि भूतकाल का सब कुछ अच्छा था और वर्तमान का सब कुछ बुरा है। पण्डित फ्रीमेन ने लिखा है—“ Among the Greek themselves a vague re-

membrance of days long past—of days whose direct practical effect on modern affairs is slight indeed—has stood in the way of the development of a true and healthy national life” इसी रोग मे ग्रीक लोग इतने दिनों तक अवनति की यातना भोग रहे थे । सुख की बात है कि अब यह भाव बहुत कम होगया है । एथेन्स, कोरिन्थ आदि स्थानों मे मैंने जिन अँगरेजी-पढ़े चिन्ताशील लोगों से बातचीत करते समय उन लोगों की पहले की उन्नत अवस्था और भारत के साथ उनके सम्बन्ध की चर्चा चलाई, उन्होंने ही कहा कि “इतने दिनों तक इन सब बातों की आलोचना मे हमारा समय नष्ट हुआ है । अब हम इस ओर ध्यान नहीं देते । अन्य चार जातियों के अनुग्रह से इस समय हम स्वाधीन हो सके हैं, अब हम लोग इसी के लिए पूरी चेष्टा करेंगे कि यूरोपियन जातियों में हमें भी कुछ जगह मिले । हमारी जाति की साधारण मूर्ख-श्रेणी को विश्वास है कि ईसाई-धर्म के प्रताप से प्राचीन काल के देवी देवता पहाड़ों आदि पर भाग गये और वहीं छिप कर रहते हैं । देवतों के अस्तित्व के सम्बन्ध मे उनकी ऐसी दृढ़ धारणा है, किन्तु उन देवतों के दूर हो जाने से किसी प्रकार के ‘अभाव’ का अनुभव भी उन्हें नहीं होता । उसी तरह हम लोग पूर्वज महापुरुषों के प्रति समुचित भक्ति और श्रद्धा होने पर भी एक प्रकार से उन्हें भूल ही गये हैं । प्राचीन काव्यों मे वर्णित वीर-कथाओं को कवि की कल्पना-मात्र समझ कर हम लोगो ने उन्हें वैसा ही स्थान दे रक्खा है । प्राचीन भारत के साथ हमारा घनिष्ठ सम्बन्ध था, अथवा तुम्हारे साथ किस किस ज्ञान-विज्ञान का लेन-देन हमने किया है, इन बातों से इस समय पेट नहीं भर सकता । इत्यादि ।” साधारण शिचित मद्र पुरुषों ने

प्राचीन-भारत के साथ प्राचीन-ग्रीस की बन्धुता की बात सुनकर धन्यवाद देकर ही टाल दिया। इसी से जान पड़ता है कि अब प्राक जाति के दिमाग से प्राचीन गौरव की वृ बहुत कुछ निकल गई है। निस्सन्देह यह उस जाति के लिए शुभ लक्षण है। दुःख की बात है कि हम लोग अभी तक उक्त प्रकार के मोह से छुटकारा नहीं पा सके हैं। ग्रीक लोग जैसे वर्तमान के अनुगामी हो रहे हैं वैसे वही हमारा भी कर्तव्य है। इसके सिवा, बातें बनाना, अप्राकृतिक अभिनव उपायो से जीर्णोद्धार का आन्दोलन करना, पङ्कोद्धार का परामर्श देना, तालियाँ पीट कर—रफू करके—मान-मर्यादा बनाये रखने की चेष्टा करना सब व्यर्थ है। केवल प्राचीन गौरव की स्मृति पर अकडना अपने को आप मिट्टी बनाना है। कवि कहता है—

“Are we not creatures of one hand divine,
Formed in one mould, to one redemption born,
Kindred alike where'er our skies may shine
Where'er our sight first drank the vital morn”

—*Manzon*

भगवान् के यहाँ से कोई आर्य या अनार्य की छाप लेकर नहीं आया। सभी नर शरीर-धारी जीव मनुष्य नाम के अधिकारी और रमात्मा की प्रधान प्रिय वस्तु हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि गण्डार्य तो यहाँ कल्पित हुई हैं। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि भेद-बुचक शब्द भी विधाता के निकट घृणित हैं। इस पृथ्वी गृह में उन्होंने निरनुष्य-मात्र को स्थान दिया है। सबको चाहिए कि मिल कर ज्ञान, शान्ति और पुण्य की उन्नति करे। भगवान् की कभी यह इच्छा या अभिप्राय नहीं कि हम सब लोग आपस में भेद-भाव की कल्पना करके एक दूसरे को हीन-दृष्टि से देखे। सृष्टि उत्पन्न करनेवाला एक

है और सारी मनुष्यमण्डली उसका एक परिवार है । इस सत्य पर दृष्टि देने से हर एक को यही जान पड़ेगा कि सारी पृथ्वी को मनुष्यो को मिलकर उन्नति करनी चाहिए । एक अंश को बढ़ कर दूसरा अंश उन्नति करेगा तो किसी समय उस उन्नत अंश को अवश्य विपत्ति का सामना करना पड़ेगा । यदि स्थानीय अथवा अवस्थागत किसी कारण से एक अंश उठने में समर्थ हो तो अपनी रक्षा के लिए उसका कर्त्तव्य है कि उस अंश को लोग अपने आस-आप के असमर्थ भाइयो को भी हाथ का सहारा देकर उठाने की चेष्टा करे । यदि इस कर्त्तव्य के पालन में वे कुछ त्रुटि करते हैं तो फिर उनका अध पतन अनिवार्य हो जाता है । प्राचीन हिन्दू, ग्रीक और रोमन लोग इसका प्रमाण हैं । हिन्दुओं की म्लेच्छों के प्रति, ग्रीको की कार्थेजियनो के प्रति और रोमनो की पेरिथिनियो के प्रति विजातीय उपेक्षा रहने के कारण उक्त तीनों जातियाँ प्रकृति के कठोर नियम के अनुसार घोर अवनति को प्राप्त हो चुकी हैं । यदि हिन्दू-लोग अनार्य-शूद्रों को, ग्रीक लोग परोसी भिन्न जातीय जीवो को और रोमन लोग परदेशी पराजित लोगो को क्रमश अपने साथ मिलाकर उनको समान उन्नत पद का अधिकारी बनाने की चेष्टा करते तो इनमे से किसी का भी ऐसा अध पतन न होता ।


स्वीजर्लेण्ड ।

The mountains of this glorious land
Are conscious beings to mine eye

—O ye everlasting hills !

Can there be eyes that look on you,
Till tears of rapture make them dim ?

—Montgomery


 ल्प्स (Alps) । सन् १८६१ की यात्रा मे कर्पर्यु
 आ से त्रिण्डिसी, नेपल्स, रोम, पलोरेन्स ' और
 मिलन होता हुआ स्वीजर्लेण्ड गया । मिलन की
 सडक पर जगह जगह थर्मामेटर लगे देख कर मैं समझ गया
 कि आल्प्स की आब-हवा मे पहुँच गया । मिलन से सवेरे खाना
 होकर लम्बार्डी (Lombardy) के अन्तर्गत कामो (Como)—
 भील के किनारे बने हुए कामो नामक प्रथम स्टेशन पर पहुँचा ।
 रेल पर से भील की मनोहर शोभा देखते देखते इटली की सीमा के
 बाहर निकल गये । शियासो (Chiasso) स्टेशन से चिर-तुपारावृत
 पहाडो का सिलसिला मिला । शियासो मे खडे पहाड पर चढने
 की रेल का एक नया ही ढङ्ग देखा । तीन लाइन पटरी के ऊपर
 छोटी छोटी गाडियाँ चलती हैं । बीच की लाईन मे डबल पटरी रहती
 है । एजिन के अगल बगल और नीचे छोटे-बडे अनेक पहिये होते

हैं । इस देश की रेलवे में पैन्ट्समैन का काम सब औरते ही करते हैं । उनके हाथ में झडी और कमर में धिगुल लटकता रहता है । पैरो में काठ का जूता चमड़े से बँधा रहता है । शियासो के बाग्लुगानो (Lugano) भील मिली । उसके किनारे कुछ देर तक चल कर हमारी गाडी पुल के द्वारा उस भील के पार पहुँची । यहाँ पर अनेक पहाडी भरने थे । भील में एक स्टीमर खडा था । अब धीरे धीरे हमारी गाडी पहाड पर चढने लगी । दोनो ओर नदी और रापिड्स बह रहे हैं और भरने जोर से गिर रहे हैं । उनके बीच से होकर गाडी पहाड पर चढ रही है । देख कर आनन्द और विस्मय के मारे शरीर में रोमाञ्च हो आया । भील के किनारे की पर्वत माला पर गाँव आदि के मनोहर दृश्य देखते देखते जब खूब ऊँचे पर पहुँच गये तब वहाँ से नीचे नदी, भील, गाँव, बाग और उपत्यका आदि का दृश्य एक परम सुन्दर चित्र के समान जान पडने लगा । इसके बाद बेलिञ्जोना (Bellinzona) स्टेशन मिला । स्टेशन के चारों ओर अगणित भरने थे । नीचे से पहाड के ऊपर तक एक मोटा तारो का रस्सा लगा हुआ था । बेलिञ्जोना स्टेशन के बाद ध्यान देकर मैंने देखा, आगे पीछे दो एजिन हैं । इसके बाद दो दफा पहाड की प्रदक्षिणा करके ऊपर रेल चढी । यहाँ की इञ्जीनियरी अद्भुत है । इसके बाद एइरोलो (Airolo) स्टेशन मिला । उसके बाद १० मील का सेन्ट-गाथार्ड (St Gothard) टानेल देख पडा । इतना लम्बा टानेल पृथ्वी पर और कहीं नहीं है । अबसे पहले अनेक टानेल पार हुए थे, किन्तु अब की बार विशेष बन्दोबस्त के साथ सब रिडकियाँ बन्द कर दी गई । बीच बीच में जलती हुई लालटेने लुप से निकल जाती थीं, ऊपर से टप-टप करके पानी टपक रहा था । इसी तरह २० मिनट तक गाडी

चलती रही । इसके बाद गोसेनेन (Goeschenen) स्टेशन पर आने पर प्रकाश मिला । यहाँ पर भोजन का समय हो जाने के कारण बहुत देर तक गाड़ी खड़ी रही । उतर कर मैंने कुछ जल-पान किया और वहाँ की कुछ चीजें (Curiosities) खरीदी । जरा देर स्टेशन में इधर उधर घूम भी आया । सामने बर्फ से ढका हुआ पर्वत का शिखर था और इधर उधर भीषण गर्जन शब्द के साथ कई एक रापिड (Rapid) बह रहे थे । कई एक यात्रियों और स्टेशन के कर्मचारियों के सिवा और कोई सनकता भी न था । मानो यह स्थान पृथ्वी से अलग ही था । यह स्टेशन ७,००० फुट के लगभग जमीन की सतह से ऊँचा है । सुना कि पास ही एक आश्रम (Hospice) है, उसमें यात्रियों की बड़ी खातिरदारी होती है । यहाँ से रेल बड़े वेग से नीचे उतरने लगी । अन्त को तीसरे पहर लूजर्न (Luzern) झील के किनारे बने हुए फ्लूलेन (Fluelen) स्टेशन पर पहुँचने पर स्टीमर मिला । यहाँ पर झील शुरू होने के कारण मुसाफिर लोग अपनी इच्छा के अनुसार लूजर्न नगर तक रेल पर अथवा स्टीमर पर जा सकते हैं । झील की सैर करने की इच्छा रखनेवाले लोग स्टीमर पर बैठ गये ।

लूजर्न झील । यहाँ का नौका विहार एक बड़े मजे का मनोरञ्जन है । चारों ओर बर्फ से ढकी हुई पर्वत माला है । उसके भीतर सुन्दर छोटे छोटे नगरो से शोभित किनारेवाली झील में स्टीमर पर जाना बहुत ही आनन्ददायक होता है । यह झील २५ मील लम्बी और ५१० फुट गहरी है । इसके चारों ओर का दृश्य बहुत ही सुन्दर है । एक अँगरेज यात्री लिखता है—“It is distinguished above every lake in Switzerland, perhaps in Europe, by the beauty and sublime

grandeur of its scenery" इसी के किनारे स्वीजर्लेण्ड की स्वाधीनता का सूत्रपात हुआ और जगत्प्रसिद्ध विलियम टेल (William Tell) की वीरता प्रकाशित हुई । इन सब विषयों के प्रधान अँगरेजी के ग्रन्थ में लिखा है—“The lake of—Lucerne has extraordinary interest for the physical geographer, for the lover of natural scenery, and for all who feel sympathy with the story of Swiss independence”—*Encyclopædia Britannica*

इस प्रसिद्ध झील को विदेशी लोग लूर्जर्न या लूसर्न कहते हैं । किन्तु इसका स्थानीय नाम है “वियेर्वाल्डस्टाटर्सी” (Vierwaldstattersee)

लूर्जर्न । यह कान्टन (Canton) अथवा खण्ड का प्रधान नगर है । झील से रयूस (Reuss) नदी निकली है । उस नदी के दोनों तटों पर और झील के किनारे नगर बसा हुआ है । २२,००० के लगभग लोगों की बस्ती है । पहले इस नगर में चहारदीवारी और उसके टावर थे । उनके कुछ कुछ भग्नावशेष अभी तक सहे हुए हैं । जैसा छोटा सा नगर है वैसी ही छोटी सी लाइब्रेरी, म्यूजियम, टाउन हाल आदि सब कुछ हैं । नदी के ऊपर दो छाये हुए और दो खुले हुए पुल हैं । यहाँ प्रधान देखने की चीज है नगर के सिरे पर पहाड़ में ढाल बल्लम से चोट खाये हुए सिद्ध की खुदी हुई मूर्ति । मन् १७६२ की १० वीं अगस्त को फ्रैन्च-विप्लव के आरम्भ में राजा के जो भक्त और विश्वासी स्वीस-रक्षक (Swiss Guards) विद्रोही प्रजा के हाथों मारे गये थे उनका यह स्मारक-चिह्न है । प्रसिद्ध कारीगर थर्वाल्डसन ने इसका डिजाइन बना दिया था । और एक देखने की चीज है ग्लेसियर वाग (Glacier Garden) । यहाँ युगयुगान्तर

की नहरे, निशान, गढे आदि सब ग्लेसियर-चिह्न पत्थर पर अंकित हैं। सभी पर्यटक स्वीकार करते हैं कि—

“ The position of the town is singularly beautiful ”
 होटल में जिस जगह खड़े होकर देखो, सामने सुन्दर दृश्य देख पड़ेगा। जिस सिडकी से बाहर भाँकी, प्रकृति की मनोहर छटा मन को मोहित कर लेगी। नगर को जिस स्थान पर जाकर देखो, रमणीयता के सिवा कुछ भी कुत्सित नजर नहीं आता। इस प्रदेश का सूर्योदय और सूर्यास्त, दोनों ही, समान सुखदायक हैं। दोनों ही दृश्य चित्ताकर्षक हैं। बर्फ से ढकी हुई सफेद चोटियों-वाले पहाड़ों सिलसिले के पीछे से ऊपर चढ़ने के समय सूर्यदेव जैसे वहाँ विपरीत ओर के और आसपास के श्वेत शिखरों पर और भील के पानी पर स्वर्णवर्ण किरणें छिटका कर दर्शकों को पुलकित कर देते हैं वैसे ही अस्त के समय भी।

बाजेल (Basel)। यद्यपि इसका स्थानीय नाम है बाजल, किन्तु फ्रेंच लोग इसे बाख् कहते हैं और इसी से कन्टिनेन्ट में यही नाम प्रचलित है। राईन नदी के दोनों तटों पर बसे हुए इस वाणिज्य-प्रधान नगर का नम्बर देश भर में दूसरा है। यह स्वयं एक कान्टन या जिला है। स्थानीय विश्वविद्यालय के अध्यापक महामति इरास्मस (Erasmus) ने यहाँ पर पोप की शक्ति के साथ घोर सत्राम किया था। अँगरेज लोग कहते हैं—“Erasmus sipped a solemn oiled with a solemn sneer बाजल में ही इरास्मस का देहान्त हुआ था और नगर के प्रधान गिर्जें (मिन्स्टर) में वह गाड़े गये। बहुत लोग इस स्थान को तीर्थस्वरूप समझते हैं। चित्रकार हालिन इसी नगर में पैदा हुए थे। इस गिर्जें में उनके हाथ के कई चित्र सुरोभित हैं।

यह नगर ईसाई-धर्म-प्रचार के काम का एक प्रधान स्थान है। यहाँ से ईसाईमत के प्रचारक लोग देश-विदेश में भेजे जाते हैं। नदी के ऊपर का प्रधान पुल सुन्दर और चौड़ा है। राईन नदी जैसी अन्य स्थानों में है वैसी ही यहाँ भी है। सौन्दर्य से दोनों किनारों को सुशोभित किये हुए मदविह्वल भाव से यह नदी सागर की ओर बहती चली जा रही है। यह नगर कई पण्डितों का जन्मस्थान होने के कारण प्रसिद्ध है। नगर की लाइब्रेरी में दो लाख से अधिक छपे ग्रन्थों और पाँच हजार हस्तलिपियों का सग्रह है। इसके सिवा स्थान के माफिक न्यूजियम, चित्रशाला, पशुशाला और कई एक सुन्दर गिर्जे नगर की शोभा बढ़ा रहे हैं। यहाँ की लोकसंख्या एक लाख के लगभग है।

स्वीजर्लैण्ड की साधारण अवस्था। देश प्राचीन है। रोमन अमलदारी में इस देश को 'हेल्वेशिया' कहते थे। राज्य का परिमाण १६,४६६ वर्ग मील का अर्थात् हमारे यहाँ के चार बड़े जिलों के बराबर है। राज्य में २२ विभाग या कान्टन हैं। ३७½ लाख से कुछ ऊपर लोग यहाँ बसते हैं। उनमें दो हिस्से रोमन कैथलिक, तीन हिस्से प्रोटेस्टेन्ट और बहुत थोड़े यहूदी और अन्यान्य सम्प्रदायवाले हैं। धर्म-विश्वास के सम्बन्ध में सब लोग स्वतन्त्र हैं। राज्य के तीन ओर की तीन जातियाँ (जर्मन, फ्रेंच, इटलियन) देश में रहती हैं और इसी कारण देश के तीन अशों में तीन भाषायें प्रचलित हैं। राज्य का शासन साधारण परतन्त्र-प्रथा के अनुसार होता है। एक प्रेसीडेन्ट होता है, वह सात मेम्बरों के साथ राज्य के साधारण कार्यों का सम्पादन करता है। प्रेसीडेन्ट की सालाना तनख्वाह ५४० पौण्ड और मेम्बरों की सालाना तनख्वाह ४८० पौण्ड होती है। सन् १८१२ में ४१ लाख पौण्ड के लगभग राज्य

की आमदनी हुई थी और खर्च आमदनी से कुछ अधिक ही हुआ । इस साल राज्य पर ऋण ५० लाख पौण्ड से कुछ अधिक था । हर एक कान्टन (जिले) पर उसकी आमदनी, खर्च और ऋण का भार रहता है । भिन्न भिन्न जोन (Zone) की तरह तराई की लताओं और वृक्षों के साथ तम्बाकू, पाट और सन इस देश में पैदा होता है । धातुओं में आस्फाल्ट (Asphalt) धातु अधिकता से पाई जाती है । जङ्गल बहुतायत से हैं । लकड़ी अधिक होन के कारण यहाँ के मकान अधिकतर लकड़ी के ही बने हुए हैं । शिक्षा के सम्बन्ध में स्वीजर्लेण्ड को उच्च स्थान प्राप्त है । प्राथमिक शिक्षा मुफ्त दी जाती है, और बच्चे शिक्षा हर एक प्रजा को अवश्य ग्रहण करनी पड़ती है । देश के किसी किसी अंश में पाँच से लेकर सोलह बरस तक हर एक बालक को आईन के अनुसार अवश्य स्कूल में पढ़ना पड़ता है । छात्र और छात्रियों की सख्या प्रायः बराबर ही है । प्रति वर्ष न्यूनिसिपेलिटी और राज्य की ओर से शिक्षा-विभाग के लिए न्यूनानधिक १३ करोड़ फ्रैंक खर्च किये जाते हैं । हर एक छात्र की शिक्षा में ३५ फ्रैंक के लगभग लगता है । प्राथमिक विद्यालयों के सिवा हर एक कान्टन में एक एक कालेज है । देश के चार प्रधान नगरों में चार यूनिवर्सिटियाँ स्थापित हैं । इनके सिवा बच्चों और बालिग लोगों की शिक्षा के लिए जुदे जुदे स्कूल हैं । यूरोप के सभी देशों में थोड़े बहुत पहाड़ हैं, लेकिन स्वीजर्लेण्ड को तो पर्वतमय रूढ़ सकते हैं । पहाड़ों पर हमेशा चढने उतरने के कारण यहाँ के मनुष्य मजदूर और कष्ट सह करनेवाले होते हैं । पहाड़ी जातियाँ सभी देशों में सुस्थ और सजल हैं । यहाँ की फौज १३ लाख के लगभग है । यहाँ का सिक्का फ्रांस के सिक्के के अनुसार है । पैसे को रापेन (Rappen) कहते हैं । दस रापेन का एक बाजेन

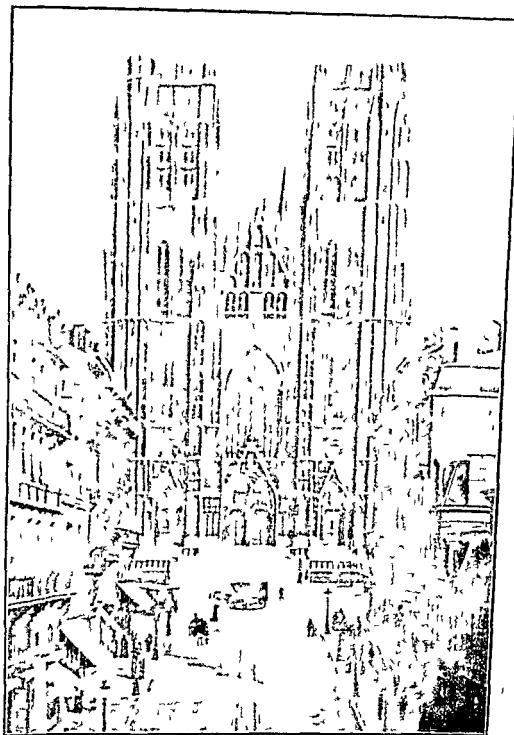
(Batzen) अर्थात् छोटा सा चाँदी का सिक्का भी चलता है । राज्य को ३४ बैंक नोट जारी करते हैं । सिक्के पर हेल्वेशिया (Helvetia) की मूर्ति और नाम अंकित है । यह बात किसी तरह अस्वीकार नहीं की जा सकती कि आल्प्स आदि पर्वतो नं यूरोप को सजीव बना रक्खा है । चारों ओर गम्भीर दृश्य देखते रहने से हृदय कुछ-न-कुछ उन्नत होगा ही । पण्डितवर रास्किन ने जो लिखा है वह गम्भीर उपदेश देनेवाला है । वह लिखते हैं—

“The feeding of the rivers and the purifying of the winds are the least of the services appointed to the hills To fill the thirst of the human heart with the beauty of God's working,—to startle its lethargy with the deep and pure agitation of astonishment,—are then higher missions They are as a great and noble architecture, first giving shelter, comfort and rest, and covered also with mighty sculpture and painted legend,”—Ruskin सारे यूरोप में स्वीजलैण्ड ऐसे छोटे देश को साधारणतन्त्र की स्वाधीनता शायद वृद्ध आल्प्स की कृपा से प्राप्त है ।

बेलजियम ।

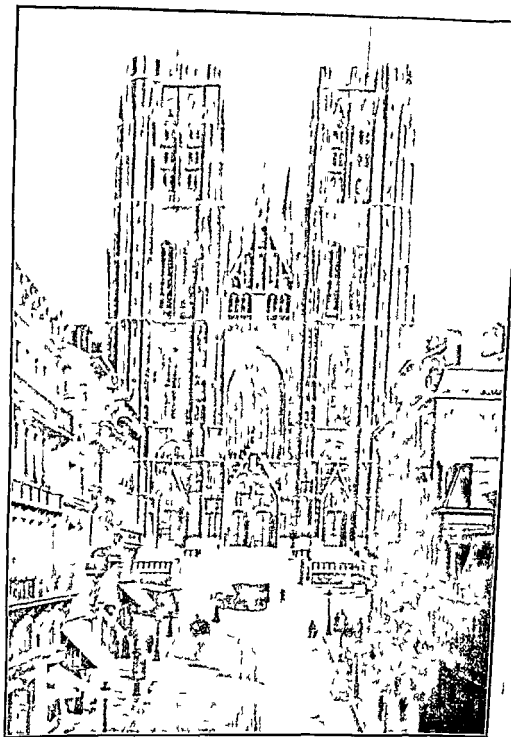
ब्रुसेल्स (Brussels) । वालू या वाजेल् से ब्रेयॉज्, कोलोन होकर बेलजियम (Belgium) की राजधानी ब्रुशल्स में पहुँचा । फ्रेंच लोग इस नगर को ब्रुसेल्स कहते हैं । यह नगर सेईन नदी के किनारे पर बसा हुआ है । तीन प्रधान अँगरेज-कवियों (वायरन, स्काट और सदी) ने ब्रुशल्स को बड़ी तारीफ की है । नगर का घेरा ७ मील का है । जन-सख्या कुछ अधिक दो लाख है । यह नगर दो हिस्सों में बँटा हुआ है । एक को ऊँचा या नया शहर और दूसरे को नीचा या पुराना शहर कहते हैं । ऊँचा शहर सूखा और स्वास्थ्यकर है । नीचे शहर की पुरानी बस्तियों में सीलन बड़ी है । गर्मियों में यहाँ अनेक रोग फैल जाते हैं । नगर नदीतट पर बसा हुआ है, यह बात पहले कही जा चुकी है । नदी पर अनेक लम्बे खड़े करके उनके ऊपर ब्रुलवर्ड स्थापित किये गये हैं । पुराना ब्रुशल्स पञ्चकोण और ब्रुलवर्डों से घिरा हुआ है । रास्ते सन पक्के, साफ और रात को स्व प्रकाशित रहते हैं । नगर की सफाई और शोभा देखकर बहुत लोग उसे छोटा-पेरिस कहते हैं । शहर सचमुच ही एक चित्र के समान मनोहर है । नगर में १४ स्ववायर हैं । हर एक स्ववायर एक बाजार है । ये स्थान अत्यन्त सुन्दर और सुरुचि का परिचय देनेवाले हैं । यात्रियों की राय में यहाँ की आलीवर्टी (Allee Verte) और पार्क से बढ कर डवा खाने की जगह यूरोप भर में और नहीं है ।

ग्रालीवर्टी के दोनो किनारे पर पेडो की तीन तीन कतारे हैं । पार्क ५२ बीघे जमीन पर बना हुआ है । मनोहर रास्तों में थोड़े थोड़े फासले पर पत्थर की बनी हुई अनेक मूर्तियाँ रखी हैं । नगर में अनेक प्रकार की मूर्तियों के फुहारे हैं । उनमें प्रसिद्ध (Manneken Pis) नामक फुहारे में एक छोटी सी मनुष्य-मूर्ति के मूत्र द्वार से जल की धारा निकलती है । सन् १,५०० में स्थापित टाउनहाल की भारी इमारत का टावर ३६४ फुट ऊँचा है । उसकी चोटी पर १७ फुट चौड़ी सेन्ट माइकेल की तॉवे की मूर्ति खड़ी है । गिर्जों में दो गिर्जे प्रवान हैं, एक तो गुडुल (St Gudule) और दूसरा नट्टडाम दोनो ही गिर्जे अत्यन्त सुन्दर और सुसज्जित हैं । गुडुल गिर्जे के अन्तर्गत १६ चैपेल, चित्रसमूह, भार्तर-कार्य और प्रसिद्ध नकाशीदार लकड़ी की वेदी देखने की चीज है । यहाँ के विचारालय की भारी पत्थर की इमारत ६५६ × ५५४ वर्ग फुट की है । उसका बीच का 'हाल' २७६ फुट ऊँचा है । इसके भीतर छोटे-बड़े २७० 'हाल' और ८ धर्माधिकरण बने हुए हैं । यह इमारत बनने में २० लाख पौण्ड खर्च हुए हैं । नगर के किनारे कोस भर का एक मनोहर उपवन (Bois de la Cambie) बहुत ही सुन्दर विहार-स्थान है । रविवार को बहुत लोग वहाँ जाकर खाने-पीने और मनोरञ्जन में ही दिन बिता देते हैं । यहाँ अनेक प्रकार के प्राचीन घृत्त, सरोवर और ऊँचे-नीचे अनेक भूमि-खण्ड हैं । इसके सिवा राजमहल, राजा के भाई का महल, आरेन बर्ग के ड्यूक (Duke of Aienberg) का महल, पार्लियामेन्ट भवन, उच्च श्रेणी का बटानिकल गार्डन, पशुशाला, न्यूजियम, न्यूजियम के अन्तर्गत तीन लाख छपे प्रन्थों और बीस हजार हस्तलिपियों से सुसज्जित लाइब्रेरी, उत्कृष्ट चित्र-शाला, आधुनिक चित्रावली, मूर्तियों का सग्रह,

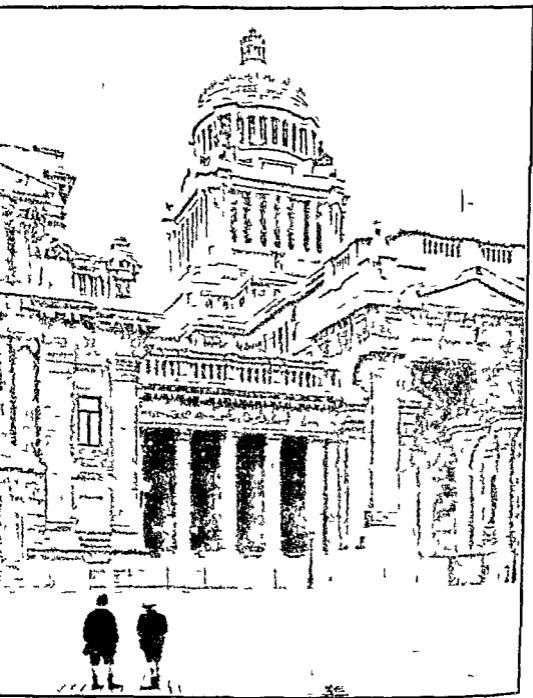


सेन्ट गुडल गिर्जा—पृ० १८२

आलीवर्टी के दोनो किनारो पर पेडो की तीन तीन कतारें हैं । पार्क ५२ बीघे जमीन पर बना हुआ है । मनोहर रास्तों में घाडे घाडे फासले पर पत्थर की बनी हुई अनेक मूर्तियाँ रखी हैं । नगर में अनेक प्रकार की मूर्तियो के फुहारे हैं । उनमें प्रसिद्ध (Manneken Pis) नामक फुहारे में एक छोटी सी मनुष्य-मूर्ति के मूत्र-द्वार से जल की धारा निकलती है । सन् १,५०० में स्थापित टाउनहाल की भारी इमारत का टावर ३६४ फुट ऊँचा है । उसकी चोटी पर १७ फुट चौड़ी सेन्ट माइकेल की तॉवे की मूर्ति खड़ी है । गिर्जों में दो गिर्जे प्रवान हैं, एक तो गुडुल (St Gudule) और दूसरा नट्टडाम दोनो ही गिर्जे अत्यन्त सुन्दर और सुसज्जित हैं । गुडुल गिर्जे के अन्तर्गत १६ चैपेल, चित्रसमूह, भास्कर-कार्य और प्रसिद्ध नकाशीदार लकड़ी की वेदी देखने की चीज है । यहाँ के विचारालय की भारी पत्थर की इमारत ६५६ X ५५४ वर्ग फुट की है । उसका बीच का 'हाल' २७६ फुट ऊँचा है । इसके भीतर छोटे-बड़े २७० 'हाल' और ८ धर्माधिकरण बने हुए हैं । यह इमारत बनने में २० लाख पौण्ड खर्च हुए हैं । नगर के किनारे कोस भर का एक मनोहर उपवन (Bois de la Cambie) बहुत ही सुन्दर विहार-स्थान है । रविवार को बहुत लोग वहाँ जाकर खाने-पीने और मनोरञ्जन में ही दिन बिता देते हैं । यहाँ अनेक प्रकार के प्राचीन वृक्ष, सरोवर और ऊँचे-नीचे अनेक भूमि-खण्ड हैं । इसके सिवा राजमहल, राजा के भाई का महल, आरेन बर्ग के ड्यूक (Duke of Arenberg) का महल, पार्लियामेन्ट भवन, उच्च श्रेणी का बटानिकोल गार्डेन, पशुशाला, म्यूजियम, म्यूजियम के अन्तर्गत तीन लाख छपे ग्रन्थो और बीस हजार हस्तलिपियो से सुसज्जित लाइब्रेरी, उत्कृष्ट चित्र-शाला, आधुनिक चित्रावली, मूर्तियों का समूह,



सेन्ट गुडुल गिर्जा—पृ० १८२



विचारालय—पृ० १८२

जन्तु-शव धातु-समूह और शिल्प आदि की स्थायी प्रदर्शनी, २४५ फुट का कांग्रेस-स्तम्भ (Congress Column), जगत्प्रसिद्ध भूगोल के जानकार मार्केटर (Gerardus Mercator) आदि कई प्रसिद्ध विद्वानों की स्मारक-मूर्तियाँ, सन् १८३० में देश की स्वाधीनता के लिए युद्ध में मरे हुए वीरों की समाधि के ऊपर स्थापित पैट्रिया (Patia) अर्थात् स्वाधीनता देवी की मूर्ति (इस मूर्ति के पैरों के ऊपर पराधीनता का कटा हुआ सिर पड़ा हुआ है), और अन्यान्य बड़े आदमियों के महल-मकान आदि इस नगर की शोभा बढ़ाते हैं। इस नगर में एक विचित्र ढङ्ग देखा गया। बियर शराब की गाड़ियाँ फेरी लगाती फिरती हैं, रास्ते में लोग खड़े खड़े शराब लेंते और पी लेते हैं। इस नगर के जिस घर में वाटर्लू-युद्ध की पहली रात को डचेज आफ रिचमण्ड ने बाल-नाच का उत्सव कराया था वह घर भी यात्रियों को दिखलाया जाता है। इस उत्सव का उल्लेख करते समय इतिहासवेत्ता एलिसन ने लिखा है—“Many brave men were there assembled amidst scenes of festivity, and surrounded by the smiles of beauty, who were ere long locked in the arms of death”—Alison और कवि बायरन ने अपनी मनोमोहिनी भाषा में गाया है—

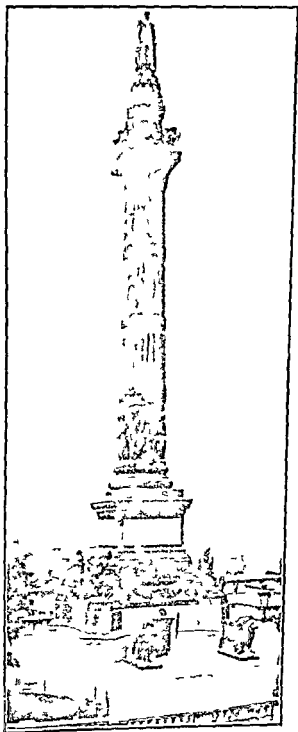
“Did ye not hear it? No, 'twas but the wind,
 ‘Or the car rattling o’er the stony street,
 “On with the dance! let joy be unconfined,
 “No sleep till morn, when youth and pleasure meet
 “To chase the growing hours with flying feet,
 “But, hark!—that heavy sound breaks in once more,
 “As if the clouds its echo would repeat,
 “And nearer, clearer, deadlier than before!
 “Arm! arm! it is! it is!—the cannon’s opening-roar”

यहाँ के भले आदमियों के घर के ऊपरी खण्ड में खिड़-

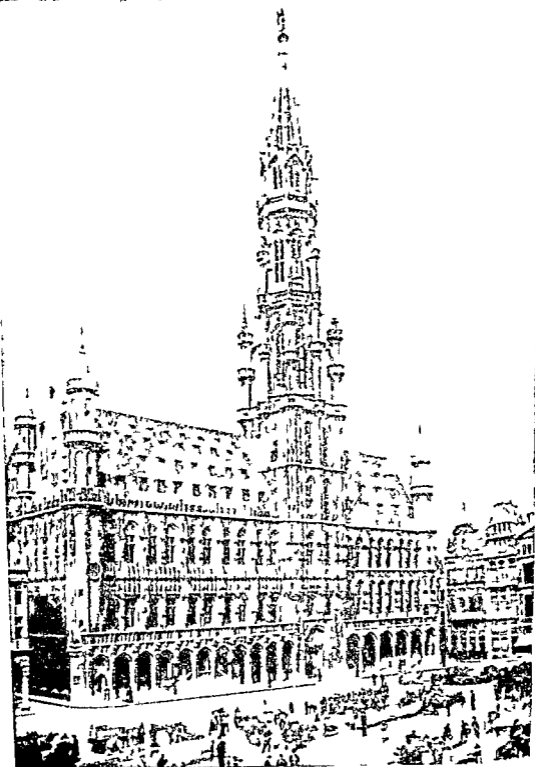
क्रियो के बाहर इधर-उधर दो घड़े घड़े आईनें रक्खे रहते हैं । जान पडता है, रास्ते में आने जानेवाली गाडियां आदि को देखने के लिए ही यह व्यवस्था की गई है । बेलजियम की राजधानी और अन्यान्य नगरों में वेश्याओं के लिए घड़े कड़े नियम जारी हैं । उनसे टेक्स लिया जाता है । अब तो रुम हो गया है, लेकिन कुछ दिन पहले इस नगर में भयानक व्यभिचार फैला हुआ था, व्यभिचार को अनेक रूप देख पडते थे ।

वाटर्लू का मैदान । एक दिन सवेरे इस यूरोपखण्ड के कुरु-क्षेत्र को देखने गया । यद्यपि खास वाटर्लू में स्टेशन है, लेकिन मैं ब्रानलालू (Brian l'Allend) स्टेशन में उतरा । क्योंकि युद्धक्षेत्र यहीं से निकट पडता है । स्टेशन पर उतरते ही बहुत औरत-मर्द, दुभापियो ने आकर यात्रियों को घेर लिया । हम लोगो ने उनमें से किसी की भी सहायता नहीं ली, म्यूजियम-होटल* की गाडी पर बैठ कर उक्त होटल में पहुँचे । वहाँ के बूढ़े दुभापियो को साथ लेकर मैदान में गये । मैदान के बीच में एक स्तूप (Mound) है । उसके ऊपर "बेलजियन्-सिंह" मूर्ति (Belgian Lion) सुशोभित है । छोटे पहाड ऐसे एक ऊँचे ढूह के ऊपर पीतल की यह भारी सिंह-मूर्ति युद्ध के स्मारकचिह्न-रूप से स्थापित है । मन् १८३२ में एण्टवर्प नगर पर आक्रमण करने के लिए फ्रेञ्च पल्टनें इधर से गई थीं । उन्होंने इसकी पूँछ तोड डाली थी, किन्तु अब फिर उसकी मरम्मत हो गई है । इस स्तूप पर चढ कर चारो ओर देखने लगा ।

सार्जण्ट-मेजर काटन साहय वाटर्लू-युद्ध में ७ न० (Hussars) पट्टन में थे । युद्ध समाप्त होने पर मत्र सामान इकट्ठा करके उन्होंने यह म्यूजियम स्थापित किया था । उन्हीं की एक आत्मीय महिला इस होटल और म्यूजियम की मालकिन है ।



कांग्रेस-स्तम्भ—पृ० १८३



इयूक थाफ आरेनवर्ग का महल—पृ० १८०

न मे एक अभूतपूर्व भाव का उदय हो आया । मैं सोचन लगा के यही उस महासमर का मैदान है जिसे कवि वायरन ने 'The first and last of fields, king-making victory' कहा है । दुभापिया उँगली के इशारे से भिन्न भिन्न स्थान दिखा कर वरजवान सबकु की तरह सब युद्ध का वर्णन करने लगा । यथा— इस स्थान पर से वेलिङ्गटन ने आक्रमण किया था, इधर से ब्लूशर पहुँचे थे, इस अश से नेपोलियन ने अन्तिम धावा किया था, इस जगह पर से फ्रेंच सैनिक चिह्ना उठ थे— "Tout, est perdu la Garde repoussee!" (अर्थात्—सर्वनाश ! गार्ड पल्टन हट गई), इस जगह पर सेनापति वारट्टों से "Tout le present est fini! Savons nous" (अर्थात्—सब समाप्त हो गया, अब अपनी अपनी जान बचाओ) कह कर, विदा होकर, घोड़े पर नेपोलियन भागे थे । इस सुविस्तृत मैदान में युद्ध-सम्बन्धी दृश्य अनेक हैं । यथा Church of Waterloo, Farms of St Jem, La Haie Sainte, Cailloz and Fuschemont, Hongoumont, Belle Alliance, Prussian Monument, Su Alexander Gordon Monument (Aid-de-camp of Wellington Died 18th June, 1815) इत्यादि । कुछ को पास जाकर देखा, कुछ को दूर ही से देख लिया । इस प्रकार मैदान की सैर करके होटल में लौट आये । कुछ विश्राम करके न्यूजियम देखने लगे । न्यूजियम में नेपोलियन के नाम और मुकुट चिह्न से सुभोभित bulls नेपोलियन के हाथ का बनाया एक पुल का नक्शा, कई एक खोपडियाँ और अन्न-शख आदि बहुत सा सामान देखा । यहाँ उस समय का एक टाइम्स अखबार शीशे के भीतर रक्खा हुआ है । उसमें युद्ध के कई दिन पहले प्रकाशित नेपोलियन के घोषणापत्र का अविकल अनुवाद छपा हुआ है । कैसी तेजी और

घमण्ड के साथ वह लिखा गया था यह दिखाने के लिए उसकी नकल नीचे दी जाती है ।

PARIS, 17th June,

General Order,

Avesnes, June 14th, 1815

Soldiers! This day is the anniversary of Marengo and of Friedland, which twice decided the destiny of Europe. Then as after Austerlitz, as after Wagram we were too generous. We believed in the protestations and in the oaths of Princes whom we left on the throne. Now however coalesced among themselves, they would destroy the independence and the most sacred rights of France. They have commenced the most unjust aggressions, let us march then to meet them. Are they and we no longer the same men?

Soldiers! at Gena, against these same Prussians, now so arrogant you were one against three, and at Montmirail one against six. Let those among you who have been prisoners of the English, detail to you the hulks and the frightful miseries they suffered. The Saxons, the Belgians, the Hanoverians, the soldiers of the confederation of the Rhine, lament, that they are compelled to lend their arms to the cause of the Princes, the enemies of justice and the rights of all nations, they know that the coalition is insatiable! After having devoured twelve millions of Poles, twelve millions of Italians, one million Saxons, six millions Belgians, it must devour the second rank of Germany. The mad men! a moment of prosperity blinds them.

The oppression and humiliation of the French people are beyond their power. If they enter France they will find their tomb. Soldiers! we have forced marches to make, battles to fight, dangers to encounter, but with steadiness victory will be ours, the rights, the honour, the happiness of the

country will be reconquered To every Frenchman who has a heart, the moment has arrived to conquer or perish

NAPOLION

The marshal Duke of Dalmatia, Major-General

इस घोषणापत्र को पढ़ कर मुझे सेनापति कैम्बेल की याद आ गई। सिपाही-विद्रोह के समय लखनऊ-उद्धार के लिए आलम-बाग पहुँच कर उन्होंने ६३ न० हाइलेण्डर पल्सन को जिन चुन हुए शब्दों के द्वारा स्वाभाविक उद्वेग के साथ करुणा पूर्ण भाव से उच्चैःश्रित किया था उनके साथ तुलना करने से जाना जा सकता है कि नेपोलियन का यह घोषणापत्र कैसा दम्भ से भरा और असार है। सेनापति कैम्बेल का भी घोषणापत्र नीचे उद्धृत किया जाता है।

After a prolonged cheer of rather a sort of welcome—Sir John Campbell to the 93rd (Highlanders) at (Allumbagh) on their march to Lucknow

Ninety-third, when I took leave of you in Portsmouth, I never thought I would see you again I expected the bugle, or may be the bagpipes, to sound a call for me to go somewhere else long before you would be likely to return to our dearly loved home But another commander has decreed it otherwise, and here I am prepared to lead you through another campaign And I must tell you, my lass, there is a world of difficulty and danger before us, harder work and greater dangers than any we encountered in the Crimea But I trust to you to overcome the difficulties and brave the dangers The eyes of the people at home, I may say, the eyes of Europe and of the whole of christendom are upon us, and we must relieve our countrymen, women, and children, now shut up in the Residency of Lucknow The lives at stake are not merely those of soldiers, who might well be expected to cut themselves out, or to die sword in hand But we have to

rescue helpless women and children from a fate worse than death. When you meet the enemy you must remember that he is well armed and well provided with ammunition, that they can play at long bowls as well as you can, especially from behind loopholed walls. So when we make an attack you must come to close quarters as quickly as possible, knock them well together and use the bayonet. Remember that the cowardly sepoy who is eager to murder women and children, cannot look an European in the face when it is accompanied with a bayonet steel. Ninety-third, you are my own lads. I rely on you to do this work.

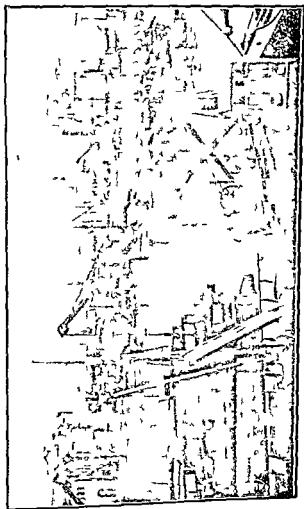
A voice from the ranks called out in reply

"Aye, aye, Sir Colm, ye ken us and we ken you, we will bring the women and children out o' Lucknow or die in the attempt."

The whole regiment burst into another ringing cheer which was taken up by the whole line.

पाठकगण, देखिए, यह दृश्य कैसा वीरों के योग्य और मनोहारी है। दुःख और विपत्ति की भयानकता समझाकर असहाय अबलाओं और बच्चों के लिए सैनिकों के हृदय में करुणा-सञ्चार करने वाले सेनापति ने कैसा महत्त्व का परिचय दिया। गोरों की फौज ने अपने सेनापति की बात सुनकर उल्लास के साथ समर में साहस दिखाने का प्रयत्न किया। यही है ब्रिटिश लोगों की वीरता और महानुभावता। अंगरेजों का स्वभाव ही यह होता है कि काम करते हैं, ब्रूते नहीं हैं।

वाटर्लू-युद्ध के सम्बन्ध में अनेक जातियों के अनेक मनुष्यों के अनेक मत हैं। विदेशी समालोचकों को जाने दीजिए, हम लोगों में जो सज्जन नेपोलियन के पक्ष का समर्थन करते हैं उनसे मेरे अकेले यही निवेदन है कि साधारण पैदल का पता तक जब विधात



पुस्तकपुं बन्दरगाह—पृ० ५८६



rescue helpless women and children from a fate worse than death When you meet the enemy you must remember that he is well armed and well provided with ammunition, and that they can play at long bowls as well as you can, especially from behind loopholed walls So when we make an attack you must come to close quarters as quickly as possible, keep well together and use the bayonet Remember that the cowardly sepoy who are eager to murder women and children, cannot look an European in the face when it is accompanied with cold steel Ninety-third, you are my own lads I rely on you to do this work

A voice from the ranks called out in reply

"Aye, aye, Sir Colin, ye ken us and we ken you, we will bring the women and children out o' Lucknow or die wi' you in the attempt "

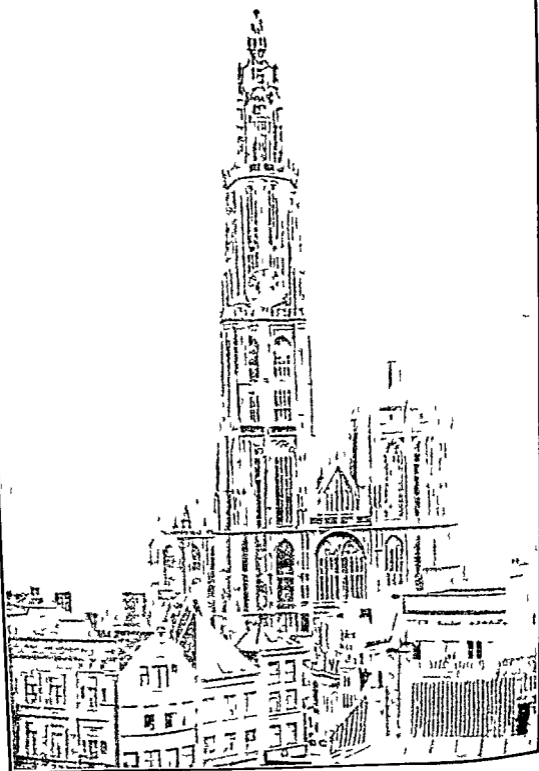
The whole regiment burst into another ringing cheer, which was taken up by the whole line

पाठकगण, देखिए, यह दृश्य कैसा वीरों के योग्य और मनोहर है । दुःख और विपत्ति की भयानकता समझाकर असहाय अवलाओं और बच्चों के लिए सैनिकों के हृदय में करुणा-सञ्चार करने में सेनापति ने कैसा महत्त्व का परिचय दिया । गोरो की फौज ने भी अपने सेनापति की बात सुनकर उल्लास के साथ समर में सच्चा साहस दिखाने का प्रण किया । यही है ब्रिटिश लोगों की वीरता और महानुभावता । अँगरेजों का स्वभाव ही यह होता है कि वे काम करते हैं, बकते नहीं हैं ।

वाटर्लू-युद्ध के सम्बन्ध में अनेक जातियों के अनेक मनुष्यों के अनेक मत हैं । विदेशी ममालोचकों को जाने दीजिए, हम लोगों में जो सज्जन नेपोलियन को पक्ष का समर्थन करते हैं उनसे मेरा केवल यही निवेदन है कि साधारण पैदल का पता तब जब विधाता

की इच्छा बिना नहीं हिलता तब यह मानना ही पड़ेगा कि यह इतनी बड़ी घटना भी विधाता की इच्छा के अनुसार ही हुई है । नेपोलियन की अगर जय होती तो यूरोप की जो दशा होती उसकी कल्पना से रोमाञ्च हो आता है । नेपोलियन से कई भारी भूलें हुई और उन भूलों से सौभाग्यशाली दूसरे पक्ष ने लाभ उठाया । विधाता की इच्छा के अनुसार ऐसी अघटन-घटनायें सदैव हुआ करती हैं । साराश यह कि धर्म-नीति सं भ्रष्ट हुए बिना कहीं कभी कोई नहीं हारा । रामायण और महाभारत के समय से लेकर आज तक इतिहास यही साक्षात् दे रहा है कि “यतो धर्मस्ततो जय”, अधर्म के मामले में हाथी भी मन्छड़ के द्वारा, चाहे जिस तरह हो, मारा जाता है । वाटर्लू-युद्ध में तो मनुष्य मनुष्य की लड़ाई थी । धर्म की जय ही ईश्वर की इच्छा है ।

एन्टवर्प (Antwerp) ब्रुसल्स से यहाँ आया । यह राज्य का प्रधान बन्दरगाह शेल्ड (Scheldt) नदी के किनारे पर है । इसका स्थानीय नाम है अँवेर (Anvers) । यहाँ २½ लाख आदमी रहते हैं । नगर के भीतर अनेक नहरे हैं, उनके द्वारा जहाज एक-दम शहर के भीतर आकर माल उतारते और लादते हैं । यहाँ के लम्बे चौड़े हार्बर में भाटे के समय भी २८ फुट पानी रहता है । यहाँ नेपोलियन ने कई एक उत्कृष्ट ‘डेक्’ बनवाये थे । उनमें २,००० जहाज ठहर सकते हैं । चालीस लाख पौण्ड खर्च करके दो मील का लम्बा बन्दर-घाट बनवाया गया है । अनेक पण्डित और कई चित्रकार इस नगर में पैदा हुए हैं । यहाँ की चित्रशाला प्रसिद्ध है । पृथ्वी भर में उसका तेरहवाँ नम्बर है । रुवेन्स के हाथ के ‘मृत ईसा और मेरी’ आदि तथा वान्डाइक के ‘क्रूस पर ईसा’ और ‘क्रूस पर से ईसा को उतारना’ आदि ७०० उत्तम चित्रों से यह चित्रशाला सुशोभित है ।



नट्टहाम गिर्जा—पृ०-२६०

इच्छा विना नहीं हिलता तब यह मानना ही पड़ेगा कि यह नौ बड़ी घटना भी विधाता की इच्छा के अनुसार ही हुई है । नेपोलियन की अगर जय होती तो यूरोप की जो दशा होती उसकी स्पना से रोमाश्व हो आता है । नेपोलियन से कई भारी भूलें हुईं । उन भूलों से सौभाग्यशाली दूसरे पक्ष ने लाभ उठाया । विधाता इच्छा के अनुसार ऐसी अघटन-घटनायें सदैव हुआ करती हैं । मारा यह कि धर्म-नीति से भ्रष्ट हुए विना कहीं कभी कोई नहीं आता । रामायण और महाभारत के समय से लेकर आज तक इति-स यही साक्षी दे रहा है कि “यतो धर्मस्ततो जय”, अधर्म मामले में हाथी भी मच्छड़ के द्वारा, चाहे जिस तरह हो, मारा जाता है । वाटर्लू-युद्ध में तो मनुष्य मनुष्य की लड़ाई थी । धर्म की ही ईश्वर की इच्छा है ।

एन्टवर्प (Antwerp) ब्रुशल्स से यहाँ आया । यह राज्य का प्रधान दरगाह शेल्ड (Scheldt) नदी के किनारे पर है । इसका स्थानीय नाम है अँवेर (Anvers) । यहाँ २½ लाख आदमी रहते हैं । नगर भीतर अनेक नहरें हैं, उनके द्वारा जहाज एक-दम शहर के भीतर कर माल उतारते और लादते हैं । यहाँ के लम्बे चौड़े हार्बर में भाटे समय भी २८ फुट पानी रहता है । यहाँ नेपोलियन ने कई एक छूट ‘डेक्’ बनवाये थे । उनमें २,००० जहाज ठहर सकते हैं । तीस लाख पौण्ड खर्च करके दो मील का लम्बा बन्दर-घाट बन-या गया है । अनेक पण्डित और कई चित्रकार इस नगर में पैदा हैं । यहाँ की चित्रशाला प्रसिद्ध है । पृथ्वी भर में उसका हवाँ नम्बर है । रुवेन्स के हाथ के ‘मृत ईसा और मेरी’ आदि आठान्वाइक के ‘क्रूस पर ईसा’ और ‘क्रूस पर से ईसा को उतारना’ आदि ७०० उत्तम चित्रों से यह चित्रशाला सुशोभित है ।

स्थानीय प्राचीन नट्टू-डाम् गिर्जा यूरोप में एक प्रथम श्रेणी का उपासना मन्दिर है । डममे ६ आइल (Aisle) और १२५ स्तम्भ हैं । ६ आइल का गिर्जा यूरोप भर में दूसरा नहीं है । यह ५०० × २५० वर्ग-फुट का है । इसकी दो चोटियाँ हैं, उनमें एक अभी तक असम्पूर्ण पड़ी हुई है । दूसरी चोटी ४०३ फुट ऊँची है । गिर्जे में भीतर रवेन्स, मुरिलो आदि चित्रकारों के कई एक अत्यन्त उत्कृष्ट चित्र हैं । पश्चिम द्वार के बाहर एक लोहे का बना कुआँ देखने की चीज है । उसके पास ही रवेन्स की मूर्ति खड़ी है । इसके सिवा उत्तम चित्र आदि से सुमज्जित और भी तीन बड़े गिर्जे हैं । सोलहवीं शताब्दी की बनी हुई टाउनहाल की इमारत भी बड़ी भारी है । एकसचेञ्ज अथवा (Boues) भवन भी यहाँ का यूरोप भर में श्रेष्ठ था, दुख है कि १८५८ में आग लगने से वह नष्ट होगया । अब जो दूसरा बना है वह भी बुरा नहीं है । बीच का फर्श १७० × १३५ वर्ग-फुट है । चारों ओर ७० स्तम्भों पर रक्खी हुई डबल आर्केड्-दालाने हैं । नया किला और पशुशाला भी देखने लायक हैं । इस नगर का सजेत-चिह्न (Aims) दो हाथ हैं । इसी से इसका एण्टवर्प (Ant = हाथ, werp = छोड़ना) अर्थात् 'हस्त-निक्षेप' नाम है । इसके सम्बन्ध में प्राचीन कहावत यह प्रसिद्ध है कि एन्टिगोनस (Antigonus) नामक दैत्य पहले यहाँ का स्वामी था । जो कोई उसे 'कर' नहीं देता था उसके दोनों हाथ काट कर वह शेल्ड नदी में छोड़ देता था । पीछे से बार्बो (Barbo) नामक एक दूसरे दैत्य ने उसे मार डाला, और तब से वह आफत टली । हमारे यहाँ द्वारका-माहात्म्य में भी गोमती और कुश दैत्य के सम्बन्ध में ठीक ऐसे ही अत्याचार का वर्णन पाया जाता है । अब तक वहाँ गोमती में स्नान करनेवालों से वहाँ का राजा 'कर' लेता है ।

बेलजियम की साधारण अवस्था । सन् १७६५ तक यह देश आस्ट्रिया के अधीन रहा । सन् १८१५ में नेपोलियन ने इसे हालेण्ड के साथ जोड़ दिया । अन्त को सन् १८३० में फ्रेञ्च-विप्लव के समय नेशनल कांग्रेस (जातीय सभा) ने राज्य की स्वतन्त्रता और स्वाधीनता की घोषणा कर दी । वर्त्तमान राजा अलबर्ट सन् १९०६ में सिंहासन पर बैठे थे । राज्य की शासन प्रणाली बहुत ही अच्छी है । सारी चमता प्रजा के हाथ में है और पार्लियामेण्ट सभा के द्वारा यहाँ का सब राज-काज होता है । साम्य और स्वाधीनता के सम्बन्ध में तो बेलजियम एक आदर्श राज्य है । अपराधी को माफी देने या उसकी सजा कम करने का चमता राजा को भी प्राप्त है । किन्तु यदि मन्त्रियों में से कोई अपराधी हो तो राजा केवल अपनी इच्छा से अपने उस अधिकार का व्यवहार नहीं कर सकता । राज्य में प्राणदंड की व्यवस्था नहीं है । जल-वायु के सम्बन्ध में बेलजियम इंग्लैंड से बहुत कुछ मिलता-जुलता है । केवल जाड़ा और गर्मी कुछ अधिक पडती है । देश के अधिकांश लोग बालून-फ्रेञ्च (Balloon) और फ्लेमिश (Flemish) भाषा का व्यवहार करते हैं । जर्मन-भाषा बोलनेवाले भी थोड़े से हैं । राज्य का घेरा ११,३७३ वर्ग मील, अर्थात् हमारे यहाँ के बीस बाईस बड़े जिलों के बराबर होगा । उसमें ७५ लाख से कुछ अधिक आदमियों की बस्ती है । आवादी खूब घनी है, प्रत्येक वर्गमील में ५०० के लग-भग लोग बसते हैं । अधिकांश प्रजा रोमन कैथलिक धर्म की मानती है । थोड़े से प्रोटेस्टेण्ट सम्प्रदाय के ईसाई और यहूदी भी हैं । सब धर्मों को राज्य एक ही दृष्टि से देखता है, किसी धर्म का पक्षपात नहीं किया जाता । सब धर्मों को राजकोष से समान सहायता मिलती है । सर्वसाधारण में शिक्षा-प्रचार के लिए यहाँ की सरकार

विशेष धेधटा करती है । राज्य के चार विश्वविद्यालय हैं । उनके सिवा शिल्प-शिक्षा और युद्ध-विद्या आदि की शिक्षा की व्यवस्था अलग है । यहाँ चार श्रेणी के स्कूल हैं—प्राथमिक, मध्य, उच्च और विशेष । प्राथमिक स्कूल ६,००० के लगभग हैं । अन्यान्य श्रेणी के स्कूल भी इसी हिमाव से स्थापित हैं । आईन के अनुसार हर एक म्यूनिसिपैलिटी को अपने इलाके में कम से कम एक प्राथमिक स्कूल अवश्य रखना पडता है । राज्य के और कम्यून अथवा म्यूनिसिपैलिटी के स्कूलों के अलावा बहुत से स्कूल पादरियो ने खोल रखे हैं । स्वीजर्लेण्ड और वेलजियम मे दूध का कारोबार खूब है । वेलजियम से ईंग्लेण्ड को साल मे २१ लाख पौंड का मक्खन रवाना किया जाता है । यहाँ ११ लाख फौज है । युद्ध के समय एक लाख और जमा की जा सकती है । जहाजी सेना नहीं है । यहाँ आईन के अनुसार सभी को समर-विभाग मे कुछ दिन काम करना पडता है । राज में एन्टवर्प को सबसे श्रेष्ठ और दृढ ममका जाता है । इसके सिवा और भी कई किले नये बनवाये गये हैं । सन् १९१२ मे ३ करोड पौंड के लगभग राज-कर वसूल हुआ था । खर्च भी लगभग उतना ही हुआ । इस साल राज्य पर ६ करोड पौंड के लगभग ऋण था । यहाँ का मिक्का ठीक फ्रान्क के हिसाब से चलता है । सोने का भी सिक्का है । देश की राजधानी और अन्यान्य ६ नगरों मे बडे बडे सरकारी दफ्तरखाने (Archives) हैं । उनमें राज्य के इतिहास से सबन्ध रखनेवाले बहुत से प्रमाण-लेख बडे यत्र से रखे हुए हैं । वृशल्स और एन्टवर्प के दोनों दफ्तरखानों मे ऐसे दो लाख के लगभग प्रमाण-लेख हैं । आर्च, दरिद्र, बूढे, अवाहिज, अनाथ बच्चे आदि असहाय प्रजा की सहायता के लिए राज्य में तरह तरह के बहुत से अन्तर्व्यवस्थान हैं । ये

कम्यून (Commune) को द्वारा चलाये जाते हैं । किन्तु पूरा न पडने पर उस प्रदेश के सरकारी खजाने से और अन्त को राज्य के खजाने से आर्थिक सहायता मिलती है । दुखी और बेकार लोगों के लिए राजा और बड़े लोगों ने ऐसे अनेक कारखाने खोल रखे हैं जिनमें काम करते और खाने-पहरने को पाते हैं । इनके सिवा कुछ एक अनुष्ठान (Farm-hospitals) ऐसे हैं जिनमें असहाय बूढ़े और बच्चे परिश्रम-द्वारा एक दूसरे को सहायता पहुँचाते और इस प्रकार जीविका चलाते हैं । उन्होंने अपने मेहनताने के रुपये से इन अनुष्ठानों को खोला है । खेती-पाती ही उनका प्रधान काम है ।



हालेण्ड

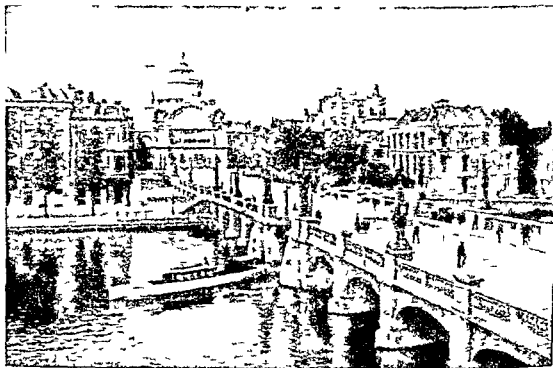
रट्टरडाम (Rotterdam)। एन्टवर्प से रेल पर चढ़ कर
 र हालेण्ड (Holland) राज्य के द्वितीय नगर रट्टरडाम
 में पहुँचा। नगर नहर-मय है। नहरों के ऊपर पुल
 बने हुए हैं। एक तरह का वेनिस नगर जान पड़ता है। बड़े बड़े
 जहाज सड़क के किनारे खड़े रहते हैं। गाड़ी, घोड़े, नावें और
 जहाज पास ही पास चला करते हैं। यह नगर म्यूज (Meuse)
 नदी के किनारे अवस्थित और उस नदी की रट्ट (Rotte) नामक
 शाखा पर डाम अर्थात् बाँध बाँध कर बसाया गया है। इसी से इस
 का नाम रट्टरडाम पड़ा। वृत्तों की छाया से सुरक्षित सड़क सहित
 नदी-तट को बूमप्येस (Boompjes) कहते हैं। नगर का यह अंश
 भारी भारी लट्टे (Piles) गाड़ कर उनके ऊपर बनाया गया है।
 शहर में बड़े बड़े चार पाँच छ खण्ड के लाल ईंटों के मकान बने
 हैं और उनकी खिड़कियों के आस पास झुशल्स की तरह बड़े
 बड़े शोशे रक्खे हुए हैं। स्थानीय स्त्रियाँ मस्तक पर सींग ऐसा एक
 सोने का विचित्र गहना पहनती हैं। गूट-कर्क (Groot Kerk)
 अर्थात् बड़ा गिरजा (यहाँ प्रसिद्ध नाविक एड्मिरल डि विट्
 Admual De Witt आदि कई लोगों के स्मारक स्थापित हैं)
 आदि कई एक सुन्दर भजनालय, एक्सचेञ्ज (Beuis), एकमात्र
 स्कायर गूट मार्केट (Grooto Market) अर्थात् बड़ा बाजार, बाजार में



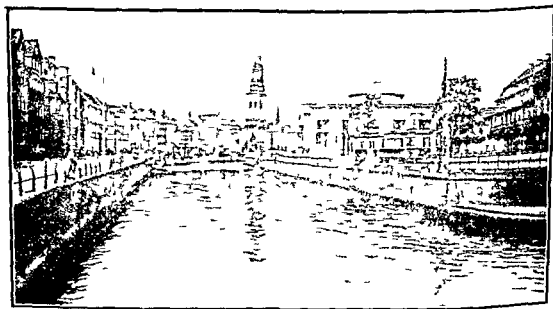
रहरडाम—पृ० ५६२



हृग—पृ० ५६५



शीश-महल—पृ० ५६६



नहर और म्यूजियम, कोपेनहेगेन—पृ० ६०७

स्थापित इरास्मस्की मूर्ति, नाविरु-निवास (Sailors' Home), प्रचीन ओलन्दाजी चित्र-कला के उस्तादों के हाथ के चित्रों का संग्रह (Boyman's Museum), वटानिकेल और जिओलोजिकेल गार्डन, कर्क-स्ट्राट (Kerk Straat) में अवस्थित इरास्मस्का जन्म-स्थान और रहने का घर [इसमें इस समय पान-भवन (Tavern) स्थापित है], म्यूज नदी के ऊपर का भारी पुल—ये इस नगर के प्रधान दृश्य हैं । यहाँ दो लाख के लगभग आदमी बसते हैं । साल में एक बार एक सप्ताह तक रहनेवाला मेला (Kermis) यहाँ लगता है ।

हेग (Hague) । इस नगर का स्थानीय नाम है श्रावनहग (S' Gravenhage) । किन्तु अँगरेजी में हेग और फ्रेंच डग से कन्टिनेन्ट के सब लोग इसे हग, अथवा ला-हग कहते हैं । स्थानीय नाम का अर्थ है काउन्ट का पार्क (Counts' Park) । काउन्ट द्वितीय विलियम ने यहाँ शिकार का अड्डा स्थापित करके गाँव बसाया था । यूरोप-खण्ड के सारे प्राचीन नगर चहारदीवारी से घिरे हुए थे । किन्तु इस नगर में कभी चहारदीवारी नहीं रही । इस कारण अनेक स्थलों पर “यूरोप में सर्वप्रधान ग्राम” कह कर इसका वर्णन किया गया है । नेपोलियन का भाई जिस समय इस देश का राजा था उस समय उसने इस की विशेष उन्नति की थी । हालेण्ड में यह “the handsomest the most fashionable, and the most modern-looking town” है । सचमुच साफ सुथरी चौड़ी-सीधो सड़कों, वृक्ष-राजि-शोभित स्कायरो और मनोहर सुन्दर इमारतों ने नगर की शोभा को विशेष रूप से बढ़ा रक्खा है । नगर में नहरें भी हैं । यहाँ के रायल म्यूजियम आदि कई स्थानों में प्राचीन ओलन्दाजी चित्रकारों के हाथ के बहुत से चित्र रक्खे हैं । हाग्श (Hagsch) म्यूजियम में कुछ

ऐतिहासिक सामान है । उसमे राजा तीसरे विलियम की कमीज, वेस्टकोट और काँटेदार एक लकडो का गोला रक्खा है । गोले का सम्बन्ध स्पेन के विरुद्ध किसी ऐतिहासिक घटना से है । दुभाषिये को अच्छी तरह मालूम न होने के कारण वह ठीक ठीक बतला नहीं सका । यहाँ प्राचीन समय मे राजा को स्टार्डहोल्डर (Stadtholders) अथवा नगराधिप कहते थे । उनके महल को इस समय पुगना महल कहते हैं । नगर के विशेष रूप से रमणीय अश विवरबर्ग (Vyerberg) स्कायर और विवर-भील के पास यह महल बना हुआ है । यहाँ पर अनेक सुन्दर मकानात हैं । इस महल के अन्तर्गत रायल लाइब्रेरी मे तीन लाख ग्रन्थ, अनेक प्राचीन सिक्के और रत्न रक्खे हुए हैं । बड़ा हाल १३० × ६२ वर्ग फुट का है । इसकी ऊँचाई ६६ फुट है । इसी हाल में देश के प्रधान आदमियो ने स्पेन की स्वाधीनता के विरुद्ध कृतम ली थी । नये महल में रानी थी । इसलिए उसे नहीं देख सका । रानी वगैरह जब अन्यत्र चली जाती हैं तब सर्व-साधारण उस महल को देख सकते हैं । इस राज्य की राजधानी आम्स्टर्डाम (Amsterdam) होने पर भी राजा हेग में ही रहते है । इसलिए पार्लियामेण्ट-भवन और राज-मन्त्रियों के दफ्तर आदि सब इसी जगह हैं । हेग मे एक जिम्ब्रो-लोजिकेल-गार्डेन और एक ओपेरा-भवन है । नगर में अनेक मूर्तियाँ स्थापित हैं । उनमे से नहर के किनारे स्थापित यूरोप के प्रसिद्ध अद्वैवादी दार्शनिक यहूदी कुल तिलक स्पिनोजा (Spinoza) की मूर्ति बहुतो के लिए तीर्थ स्थान से बढकर है । सामने कागज है, एक हाथ में कृतम लिये दूसरे हाथ पर गाल रक्खे पण्डितवर जैसे कुछ सोच रहे हैं । स्पिनोजा का जन्म आम्स्टर्डाम में हुआ था । पेण्डुलम-घडी का आविष्कार करनेवाले प्रसिद्ध

ज्योतिषी हाइयेन्स (Christian Huygens) इसी नगर में पैदा हुए थे । किन्तु उनके सम्बन्ध का कोई चिह्न यहाँ नहीं देख पडा । यहाँ का 'बश' (Bosch [Bush]) अर्थात् वन भवन एक मनोरम स्थान है । टापुओंवाली भौलों के चारों ओर बड़े बड़े वृक्षों का जङ्गल है और उसके भीतर यह भवन बना है । बाहर से तो यह घर सादा देख पडता है, किन्तु इसका भीतरी हिस्सा देखने के योग्य है । रास्ते-सड़कों, मरुतानात और स्थानीय सौन्दर्य में हेग यूरोप का एक उत्कृष्ट नगर है । दो लाख से अधिक लोग यहाँ रहते हैं ।

शेव्निङ्गेन (Scheveningen) । हेग से तीन मील के फासले पर जर्मन समुद्र के किनारे यह छोटा सा नगर सैर करने लायक है । यहाँ जान-आने के लिए हेग में रेल और गाडियाँ भी मिलती हैं । जाने के समय राजमहल से निकल कर दोनों ओर वृक्ष श्रेणी से सुशोभित सुन्दर सीधी सड़क पर घौडागाडी पर गया । किन्तु लौटते समय रेल पर आया । यहाँ कई एक भारी इमारतें हैं । उनमें समुद्र तट पर बना हुआ कुरहुइस (Kuihuys) विहार-भवन अत्यन्त रमणीय है । वहाँ अनेक प्रकार के तमाशे और मनब-हलाच हुआ करते हैं । सामने रेती पर तम्बू के नीचे अनेक कुरसियाँ रक्खी रहती हैं, लोग पैसे देकर उन पर बैठते हैं और समुद्र की लहरों की लीला देखते देखते ताजी हवा खाते हैं । यहाँ मछलियों का खून कारोबार होता है । जहाज भी यहाँ बनते हैं । यहाँ का डाइक (Dyke) देखन से मालूम पडा कि समुद्र की सतह के नीचे शहर बसा हुआ है । यहाँ से विलियम और मेरी इंग्लैण्ड के सिद्दासन पर बैठने के लिए गये थे और द्वितीय चार्ल्स अज्ञातवास के बाद फिर राज्य पाकर अपने देश को आये थे ।

आम्स्टर्डाम । सन् १२०० में इसके पास मछुआ का एक छोटा

सा गाँव था । क्रमशः नगर बस गया और सन् १५७६ में शुरू हुए भारतीय वाणिज्य-सम्बन्ध से इस नगर की समृद्धि का सूत्रपात हुआ । जुइडर-जी (Zuyder Zee) की शाखा वाई (IJ) की प्रशाखा आम्स्टेल (Amstel) को बाँधकर उस पर यह नगर बसाया गया है; इसी से इसे आम्स्टेल-डाम या आम्स्टर्डाम कहते हैं । पहले यहाँ ६० फुट गहरी कीचड़ और बालूवाली गीली जमीन थी । वाई के ऊपर डाइक बाँध कर और इस जमीन पर लट्टे गाड़ कर यह नगर बनाया गया है । दो बहुत बड़ी नहरे हैं, उन्हीं से जहाज बगैरह यहाँ आते हैं । वाई के मुहाने (Ymuden) पर अँगरेज इंजिनियरो ने जो हार्बर बनाया है उसमें २५ लाख पौण्ड की लागत आई है और उसका मुख ८५० फुट चौड़ा है । आस-पास के पियर (Piers) ५,००० फुट लम्बे हैं । नगर के भीतर से चार बड़ी नहरे निकली हैं । ३०० के लगभग पुलों से परस्पर संयुक्त ६० टापुओं पर लोग बसते हैं । आम्स्टेल के ऊपर का पुल ६१० फुट लम्बा है । यहाँ का राज-भवन पहले टाउन हाल था, लुई नेपोलियन जब यहाँ के राजा हुए तब सन् १८०८ में उन्होंने उसे राज-भवन बना डाला । इसके बनने में ७६ लाख पौण्ड खर्च हुए हैं और सन् १६४८ से बनना शुरू होकर सन् १६७५ में यह बन कर तैयार हुआ है । १४,००० गडे हुए लट्टों के ऊपर यह इमारत बनी है । यह भवन २८२ फुट लम्बा और २३५ फुट चौड़ा है । इसकी चोटी १६० फुट ऊँची है और उस पर एक मुलम्मा किया हुआ छोटा सा जहाज स्थापित है । इसके अन्तर्गत फेस्टिव हाल (Festive Hall) [सभा गृह] १२० × ५७ वर्ग-फुट का है । उसकी ऊँचाई १०० फुट है । छत के महारे के लिए कोई खर्चा बगैरह नहीं है । इटलियन सगमरमर से सुशोभित हाल में बहुत से फ्रेस्को (Fresco) चित्र हैं । उनमें सिहासन

पर स्पेनिश नाइटों (Knights) की पताका और ग्लोब कन्धे लिये अटलास (Atlas) की मूर्ति बनी है। उस मूर्ति के नीचे बैठी हुई न्याय-देवी की मूर्ति है। यहाँ के प्रधान न्यूजियम द्वार पर बुद्ध देव और गणेश की पत्थर की मूर्तियाँ और चीन देश के दण्ड विधान के दृश्य आदि हैं। भीतर भी एक बुद्ध देव की मूर्ति, बंगाली फल बेचनेवाला, माडवारी, वेहना और जाव द्वीप की बरात की निकासी आदि बहुत से एशियाई व्यापारों के नकलें हैं। इन सबको छोड़कर बहुत सी अन्यान्य सामग्रियाँ हैं। उनमें प्राचीन ओलन्दाज चित्रकारों के हाथ के अनेक चित्र हैं। नगर में और भी कई न्यूजियम हैं। उनमें से एक (Tribpenhui Museum) में ४०० चित्र-पटों और ४,००० एनमेविग चित्रों का अलावा बहुत से देश-विदेश के प्राचीन सिक्के रक्खे हैं। सिक्कों का समूह के सम्बन्ध में यह न्यूजियम एक पृथ्वी भर में प्रधान प्रदर्शित है। यहाँ की पशुशाला में पशुओं का समूह भी बुरा नहीं है। अत्यन्त सुन्दर चमरी गऊ, माता के साथ खेल रहे तीन सिह के बच्चे, सफेद मृग और चिगडो मछली के समान एक भारी जीव यहाँ पहले-पहल देखा। यहाँ का शीशमहल (Paleis voor Volksvult) ४४० × २८० वर्ग-फुट का है। उस का गुम्बद २०० फुट ऊँचा है। यहाँ हमेशा रँग-तमाशा हुआ करता है। इसके अन्तर्गत बाग भी मनोहर है। रोनेवालों का टावर (Scheepsterm [Oilers' Tower]) यहाँ पहले समुद्र यात्रा करनेवाले लोग पृथिवी के अनेक देशों में जाने के लिए जहाज पर चढ़ते समय आत्मीय बन्धु-गण से रोते रोते विदा होते थे। स्थानीय गिर्जों में चार गिर्जे खूब बड़े, प्राचीन और सुसज्जित हैं। दो में कई एक प्रसिद्ध एडमिरलों के स्मारक स्थापित हैं। यहाँ यहूदी कारीगरो

के हीरा तराश कारखाने बहुत हैं । इस काम को १०,००० के लगभग आदमी करते हैं । किसी किसी कारखाने में हीरा तराशने का चक्र (Cutting-wheel) मिनट में २,००० धार के हिसाब से घूमता है । पहले जमाने में इस नगर के लोग बरसाती पानी जमा कर रखते थे और वही पिया करते थे, अब जल-कल के द्वारा दूर से पानी लाया गया है । चारों ओर जल रहने से यहाँ की हवा हमेशा ठंडी रहती है, जिससे लोगों को बुखार-पाँसी की शिकायत हो जाती है । किन्तु स्थानीय लोग खूब सबल और स्वस्थ देख पड़े । विदेशियों के लिए इस नगर का जल-वायु उतना अच्छा नहीं है । यहाँ के अन्यान्य दृश्यों में वाण्डेल-पार्क (Vondel-Park), उत्कृष्ट सेलर्स-होम (नाविक-भवन), बड़ा डाकघर, कचहरी और रोगी, बूढ़े, अपाहिज, अंधे, गूँगे-बहरे, सिडी, विधवा तथा ब्रे-मा-बाप के बच्चे आदि के लिए अस्पताल और आश्रम प्रधान दृश्य हैं । समुद्र की शाखा आम्स्टेल नदी नगर के भीतर होकर बही है । उसके पश्चिम तट पर नया शहर है । वहाँ की इमारतें और वृत्त-श्रेणियों से शोभित सड़कें सराहने योग्य हैं । आईन के अनुसार २० से ५० वर्ष तक के नागरिक आग बुझानेवाले कर्मचारियों और नगर-रक्षक पुलिस के आदमियों में गिने जाते हैं । राज्य के सर्वसाधारण का हित करने के लिए यहाँ एक सभा स्थापित है । यह बिना किसी पक्षपात के सारी प्रजा की शिक्षा और उन्नति की चेष्टा में लगी रहती है । इस सभा की शाखायें देश के हर एक गाँव और नगर में स्थापित हैं । आम्स्टर्डाम में ६ लाख के लगभग आदमी बसते हैं ।

जान्डाम (Zaandam) और न्यूएन्डाम (Nieuwendam) ।
आम्स्टर्डाम और उसके आस पास के स्थान देखने में दस दिन

लग गये । उसी बीच में एक दिन जान्डाम और एक दिन न्यूएण्डाम जाना हुआ । जान्डाम को अँगरेज लोग सार्डाम (Saardam) कहते हैं । जहाज बनाने की शिक्का के समय महात्मा पीटर जिस घर में रहते थे वह घर कारुगेटेड लोहे के आवरण-द्वारा यत्नपूर्वक सुरक्षित है । इस घर में पीटर की छटिया, कुर्सी, टेबिल, उनका और उनकी स्त्री का चित्र एक छोटा सा पत्थर का जहाज रक्खा है । दीवार पर बड़े बड़े अक्षरों में लिखा है—
 “Niets is den Grooten Man be Klein” अर्थात् महान् पुरुष किसी प्रकार के व्यावहारिक काम को हीन नहीं समझते । जान्डाम में दोपहर को सब भोजन के सामान में मछलियों ही की भरमार थी ।

न्यूएण्डाम अथवा नये बॉध में थोड़े दिन हुए डाइक बॉध कर उसके देना और लोग बसे हैं । बीच का हिस्सा सड़क के काम में आता है । बस्ती छोटी, लेकिन साफ-सुथरी है । यह समलम्ब आकृति का गाँव एक अद्भुत दृश्य है, एक और पानी है और दूसरी और की नीची जमीन में खेत और गाय-बैलों के चरने के मैदान हैं । गाँव की बस्ती पानी की सतह से कुछ नीची है । यहाँ अन्दाजन एक हजार आदमियों की बस्ती है ।

हार्लिङ्गेन (Harlingen) । वर्तमान समय में नया डाइक बनते मैंने कहीं नहीं देखा था । बड़े बड़े प्राचीन नगरों में डाइक पहचानना भी कठिन है, क्योंकि उनके ऊपर और चारों ओर घर बन जाने से उनका असली रूप छिप गया है । अनुसन्धान करने से मालूम हुआ कि हार्लिङ्गेन में नया डाइक बन रहा है । इसीलिए आम्स्टर्डाम से जुडर-जी पार हो कर हार्लिङ्गेन में आया और आकर डाइक बनना देखा । पत्थर डालकर बहुत सा

पानी घेर लिया जाता है, उसके बाद पानी उलच कर वहीं प
जुड़ाई का काम होता है । यहाँ इसके सिवा और कोई प्रयोज
नहीं था, लेकिन भूख अधिक लग आने से भोजन मिलने के
स्थान खोजने की आवश्यकता पड़ी । छोटी जगह थी, अँगरेज
जाननेवाला आदमी भी कोई नहीं मिला । अन्यान्य भाषाओं
अपना प्रयोजन सिद्ध करना चाहा, पर सफलता नहीं हुई । अन्
को हार कर एक कुली को हाथ के इशारे से समझाया और त
भोजन मिला । नगर छोटा है, १०,१२ हजार के लगभग लो
रहते हैं । प्राचीन नगर सन् ११३४ में समुद्र में डूब गया था
उसके बाद यह वर्तमान नगर बसाया गया है ।

ग्रनिङ्गेन (Graningen) । हार्लिङ्गेन में केवल छ सात घं
ठहर कर रेल पर सवार हुआ और वहाँ से चलकर आध
रात को ग्रनिङ्गेन पहुँचा । दूसरे दिन नगर की सैर करने
यासकर लूथर की बाइबिल देखने बाहर निकला । यहाँ के विश्व
विद्यालय के अन्तर्गत एक न्यूजियम और लाइब्रेरी है । वह
जाकर अध्यक्ष की अनुमति लेकर लूथर की बाइबिल देखी । यह
बाइबिल की पुस्तक इराम्मस की है और लैटिन भाषा में लिखी
हुई है । लूथर ने इराम्मस से लेकर इस पुस्तक के हाशिया प
अनेक नोट करते हुए आदि से अन्त तक पढ़ा और जिल्द के बा
के मफे पर अपने हाथ से लिखा है—“Pestis est vivens,
moriens ero, tua Papa” D M Luth इसका अर्थ यह
है कि हे पाप, अगर जिन्दा रहूँगा तो तुम्हारे उत्पात का कारण
होऊँगा, और अगर मर जाऊँ तो तुम्हारे लिए यमराज बनूँगा ।
मैं भारतवर्ष से लूथर की बाइबिल देखने आया हूँ, यह सुनकर
टाइरेक्टर महाशय ने मेरी विशेष खातिर की और अन्त को एक

खाता निकाल कर उस पर मेरे दस्तख़त करा लिये । बातचीत में मैंने कहा कि मैं बुडापेस्ट में लूथर का दान-पत्र देख आया हूँ यह सुनकर उन्होंने खेद के साथ कहा कि यह सौभाग्य मुझे अभी तक नसीब नहीं हुआ ।

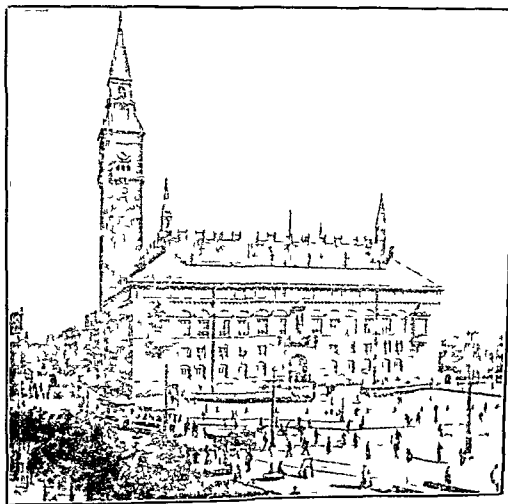
हालेण्ड की साधारण अवस्था । इस राज्य का स्थानीय नाम है नेदरलेण्ड (Nederland) । इस राज्य की जमीन की माप ठीक बताई नहीं जा सकती, क्योंकि हर साल कहीं पर कोई समुद्र तट का स्थान जल-मग्न हो जाता है और कहीं पर समुद्र को बाँध कर नई जमीन बनाई जाती है । इस समय न्यूनाधिक १२½ हजार वर्ग मील का इसका घेरा होगा । इस राज्य में ६१ लाख से कुछ अधिक लोग बसते हैं । उनमें ३ ओलन्दाजी संस्कृत सम्प्रदाय (Dutch Reformed Church) के प्रोटेस्टेण्ट क़स्तान हैं, शेष दस श्रेणी के प्रोटेस्टेण्ट, रोमन कैथलिक और यहूदी हैं । ग्रीक-चर्च के अनुयायी लोग भी ४०,५० आकर बसे हैं । वेलजियम की तरह यहाँ भी सब पर राजा की समान दृष्टि और अनुग्रह है । सब धर्मों को राज्य से बराबर सहायता मिलती है । शिक्षा-प्रचार के सम्बन्ध में राज्य की ओर से पूरा प्रयत्न होता है । १० में ८ के हिसाब से यहाँ पढ़नेवाले विद्यार्थी पाये जाते हैं । विद्यार्थियों में स्त्रो और पुरुषों की संख्या बराबर के लगभग होगी । राज्य में ५,००० प्राइमरी स्कूल, १०० से अधिक प्रथम और द्वितीय श्रेणी के स्कूल, ५० टेक्निकल स्कूल और १० जहाजी काम सिखाने के स्कूल हैं । चार प्रधान नगरों में चार यूनिवर्सिटियाँ स्थापित हैं । दो लाख से ऊपर सेना है । १२१ जहाज हैं । उनमें २१ लौहयान हैं । सैनिक विभाग में हर एक प्रजा को कुछ दिन काम सीखना पड़ता है । सन् १८१३ में २३ करोड़ गिल्डर राज-कर वसूल हुआ, खर्च इससे कुछ अधिक हुआ ।

इसी साल ऋण था ११५ करोड गिल्डर । सोने और चाँदी का तथा नोट बराबर के भाव पर चलते हैं । चाँदी के सिक्के को गिल्डर (Guilder) या फ्लोरिन (Florin) कहने हैं । एक गिल्डर कीमत में दो फ्रैंक के बराबर होता है । यहाँ भी सिक्के में दायमिक प्रथा प्रचलित है । इंग्लैंड की तरह इस देश में भी स्त्रियाँ राजगद्दी पर बैठ सकती हैं । वर्तमान रानी विल्हेलिमना (Wilhelmina) सन् १८८० की ३१ वीं अगस्त को पैदा हुई थीं । जिस समय मैं इस देश में गया उस समय वह नाबालिग थीं । उनकी और से उनकी माता राज-काज चलाती थीं । वह सालाना १२, हजार पौण्ड की वृत्ति पाती थीं । रानी की सालाना वृत्ति इस समय ३२, हजार पौण्ड थी । रानी को उच्च शिक्षा दी जा रही थी । चाहे जो कोई रानी और उनकी माता से मुलाकात कर सकता है । पाँच दिन पहले महल के दरवान के पास रक्खी हुई एक किताब पर अपना नाम लिख आना पडता है । उसके बाद कोई विशेष आपत्ति अगर न उर्पास्थित हुई तो नियत दिन को उनकी मुलाकात होती है । इनके दरबार में राजसी रोब-दाब उतना नहीं है । इस कारण प्रजा भी रानी को हृदय से चाहती है । राज्य विशेष रूप से सर्वसाधारण के हाथों में ही है । प्रजा के प्रतिनिधि शासन करते हैं । तथापि अन्यान्य राज्यों की अपेक्षा यहाँ के राजा को कुछ खास अधिकार प्राप्त हैं । ओलन्दाज लोगों के सम्बन्ध में अँगरेजी में एक कहावत है "They speak little, laugh less" अर्थात् बातचीत कम, हँसी और भी कम । किन्तु मुझसे जिन ओलन्दाज भद्र पुरुषों से बातचीत हुई उनमें यह बात नहीं पाई गई । हार्लिङ्गने जाते समय जहाज पर दो ओलन्दाज भद्र पुरुषों से कई घण्टे तक बातचीत होती रही । उन्होंने दुःख के साथ कहा कि

“अंगरेज लोग कन्टीनेन्ट की जातियों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं और उन्होंने हर एक जाति का एक एक घृणित नाम रख छोड़ा है । किन्तु हम लोग तो उनको गाली नहीं देते । हो सकता है कि वे लोग यूरोप की अन्यान्य जातियों की अपेक्षा अनेक बातों में श्रेष्ठ और चमत्ताशाली हों, लेकिन उसके लिए इतना अहङ्कार कोई अच्छी बात नहीं है” । बातचीत और हँसी के सम्बन्ध में अंगरेजी कहावत ठीक भी हो सकती है, क्योंकि बहुत दिनों से बराबर अपनी प्रकृति और विदेशी शत्रुओं के साथ सग्राम करते हुए जिन्दगी बिताने के कारण उनका ऐसा स्वभाव हो गया है । जमीन की अवस्था के अनुसार ये लोग परिश्रमी और कम खर्च करनेवाले हैं । जल से भी सदा इन लोगों को भिडना पड़ता है, इसी से ये साहसी और सयत् हैं । जो कुछ हो, इस बात को सभी स्वीकार करते हैं कि ये लोग स्वाधीनताप्रिय, सरल और न्यायपरायण हैं । कन्टीनेन्ट के निवासियों के माफिक यहाँ के भी बहुत लोगों को यह आक्षेप करते देखा गया कि “अंगरेजों के पास बड़ी दौलत है, हमारे पास धन नहीं है” ।

डेन्मार्क।

* * * * * पेनहेगेन (Copenhagen)। जर्मनी की शेष सीमा
 * * * * * को * * * * * लुवेक से विदा होकर स्टोमर पर डेन्मार्क की इस
 * * * * * राजधानी में पहुँचा। यहाँ १२ दिन रहा। इसका
 स्थानीय नाम है क्योवेनहावन् (Kjobenhavn)। अँगरेज लोग
 कोपेनहेगेन कहते हैं। इसका फ्रेंच नाम कोपेनहागेन ही कन्टीनेण्ट
 में सर्वत्र प्रचलित है। यह नगर दो टापुओं पर बसा और प्राकृतिक
 तथा कृत्रिम सौन्दर्य से सर्वथा सुशोभित है। हालेण्ड की ठंडी आब-
 हवा से यहाँ आने पर जैसे विशेष गर्मी मालूम पडी। इस नगर में
 एक बडा और कई छोटे छोटे किले हैं। उनमें १,७०० तोपें रक्खी हैं
 चारो ओर के रम्पर्ट (Rumpart) की लम्बाई ५ मील है। सामने
 ही हार्बर है। उसमें ५,००० जहाज मजे में खडे हो सकते हैं। नगर
 में १६ स्कायर हैं। उनमें एक अष्टकोण बना हुआ है, और उसके
 चारो ओर चार राजभवन हैं। बीच में १,२०० मन वजन की राजा
 पश्वम् फ्रेडरिक की घुडसवार मूर्ति है। अन्य एक स्कायर से १३
 सडकें तेरह ओर को निकली हैं। वहाँ पर से शहर के अनेक स्थानो
 में जाने के लिए ट्रामगाडियाँ मिलती हैं। यहाँ की ट्रामगाडियाँ दो
 खण्ड की हैं। नगर के भजन-मन्दिरों में से कई एक के गुम्बद रुसी
 ढंग के बने हैं। प्रधान भजन-मन्दिर (Frue Kirke) के प्रवेश-
 द्वार के इधर-उधर डेविड और मोजेस की मूर्तियाँ हैं। आल्टर
 के पीछे भास्कर-कार्य के उस्ताद थरवाल्डसन (Thorvaldsen) की

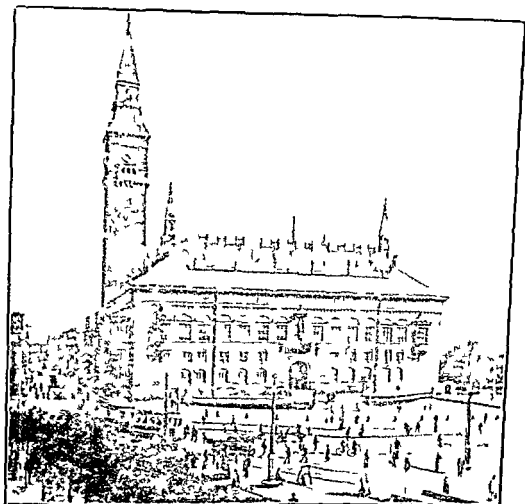


टाउनहाल कोपेनहेगेन—पृ० ६०७



डेन्मार्क ।

***कोपेनहेगेन (Copenhagen) । जर्मनी की शेष सीमा
 को लुबेक से विदा होकर स्टीमर पर डेन्मार्क की इस
 ***राजधानी में पहुँचा । यहाँ १२ दिन रहा । इसका
 स्थानीय नाम है क्योबेनहावन् (Kjobenhavn) । अँगरेज लोग
 कोपेनहेगेन कहते हैं । इसका फ्रेंच नाम कोपेनहागेन ही कन्टीनेण्ट
 में सर्वत्र प्रचलित है । यह नगर दो टापुओं पर बसा और प्राकृतिक
 तथा कृत्रिम सौन्दर्य से सर्वथा सुशोभित है । हालेण्ड की ठंडी आब-
 हवा से यहाँ आने पर जैसे विशेष गर्मी मालूम पड़ी । इस नगर में
 एक बड़ा और कई छोटे छोटे किले हैं । उनमें १,७०० तोपें रक्खी हैं
 चारों ओर कै रम्पर्ट (Rampart) की लम्बाई ५ मील है । सामने
 ही द्वार्वर है । उसमें ५,००० जहाज मजे में रखे हो सकते हैं । नगर
 में १६ स्कायर हैं । उनमें एक अष्टकोण बना हुआ है, और उसके
 चारों ओर चार राजभवन हैं । बीच में १,२०० मन वजन की राजा
 पश्वम् फ्रेडरिक की घुडसवार मूर्ति है । अन्य एक स्कायर से १३
 सड़कें तेरह ओर की निकली हैं । वहाँ पर से शहर के अनेक स्थानों
 में जाने के लिए ट्रामगाडियाँ मिलती हैं । यहाँ की ट्रामगाडियाँ दो
 सण्ड की हैं । नगर के भजन-मन्दिरों में से कई एक के गुम्बद रूसी
 ढंग के बने हैं । प्रधान भजन-मन्दिर (Frue Kike) के प्रवेश-
 द्वार के इधर-उधर डेविड और मोजेस की मूर्तियाँ हैं । आल्टर
 के पीछे भास्कर-कार्य के उस्ताद थरवाल्डसन (Thorvaldson) की

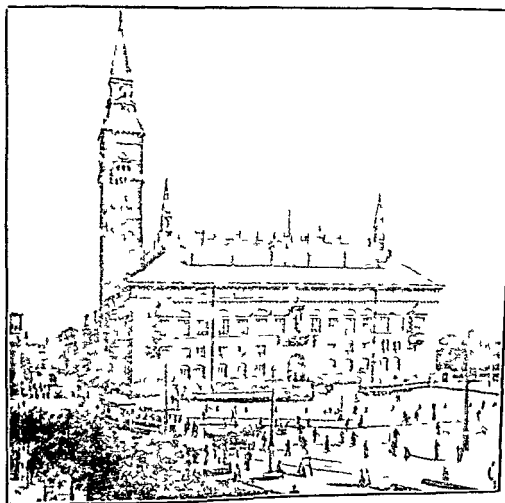


टाउनहाल कोपेनहेगेन—पृ० ६०७



डेन्मार्क।

* * * * * पेनहेगेन (Copenhagen) । जर्मनी की शेष सीमा
 * * * * * को * * * * * लुबेक से विदा होकर स्टीमर पर डेन्मार्क की इस
 * * * * * राजधानी में पहुँचा । यहाँ १२ दिन रहा । इसका
 स्थानीय नाम है क्योबेनहाव्न (Kjobenhavn) । अँगरेज लोग
 कोपेनहेगेन कहते हैं । इसका फ्रेंच नाम कोपेनहागेन ही कन्टीनेण्ट
 में सर्वत्र प्रचलित है । यह नगर दो टापुओं पर बसा और प्राकृतिक
 तथा कृत्रिम सौन्दर्य से सर्वथा सुशोभित है । हालेण्ड की ठडी आब-
 हवा से यहाँ आने पर जैसे विशेष गर्मी मालूम पडी । इस नगर में
 एक बडा और कई छोटे छोटे किले हैं । उनमें १,७०० तोपें रक्खी हैं
 चारों ओर के रम्पर्ट (Rampart) की लम्बाई ५ मील है । सामने
 ही हार्वर है । उसमें ५,००० जहाज मजे में रखे हो सकते हैं । नगर
 में १६ स्कायर हैं । उनमें एक अष्टकोण बना हुआ है, और उसके
 चारों ओर चार राजभवन हैं । बीच में १,२०० मन वजन की राजा
 पञ्चम फ्रेडरिक की घुडसवार मूर्ति है । अन्य एक स्कायर से १३
 सड़के तेरह ओर को निकली हैं । वहाँ पर से शहर के अनेक स्थानों
 में जाने के लिए ट्रामगाडियाँ मिलती हैं । यहाँ की ट्रामगाडियाँ दो
 खण्ड की हैं । नगर के भजन-मन्दिरों में से कई एक के गुम्बद रूसी
 ढंग के बने हैं । प्रधान भजन-मन्दिर (Frue Kirke) के प्रवेश-
 द्वार के इधर-उधर डेविड और मोजेस की मूर्तियाँ हैं । आल्टर
 के पीछे भास्कर-कार्य के उस्ताद थरवालडसन (Thorvaldsen) की

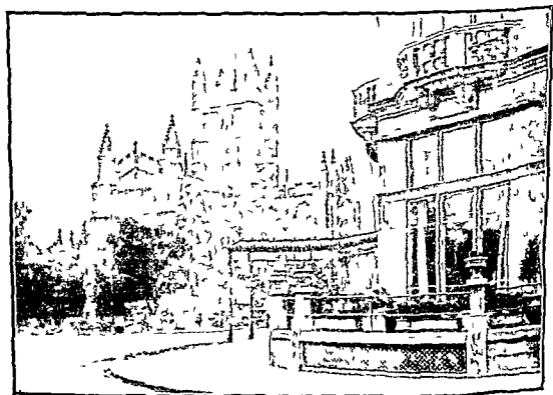


टाउनहाल कोपेनहेगेन—पृ० ६०७





बर्मिंघम—पृ० ६३४



एक गिर्जा—वाय शहर—पृ० ६३६

बनाई सगमरमर की भारी लम्बी-चौड़ी ईसा और द्वादश प्रेरित की मूर्ति लड़ी है। एक देव-मूर्ति घुटनो के बल बैठी है। अन्यत्र सोलह "टेरा-फाटर" की मूर्तियाँ हैं (इस दृश्य में यह दिखलाया गया है कि जान-दि-वप्टिस्ट जङ्गल में प्रचार कर रहे हैं)। गिर्जों के ऊपर से चारों ओर का दृश्य बड़ा ही मनोहर जान पड़ता है। नगर, हार्बर, पश्चिम ओर कई जङ्गल और भोलें, पूर्व ओर तरह तरह के जहाजों से शोभित समुद्र-खंड और दूर पर स्वीडेन का उपकूल दृष्टि-गोचर होता है। भास्कर-कार्य की कारीगरी में डेन्मार्क एक श्रेष्ठ देश है। उस पर भास्कर-विद्या के आचार्य थरवालडसन ने जन्म लेकर इस देश को एक विशेष उच्च पद पर पहुँचा दिया। थरवालडसन न्यूजियम के फाटक के ऊपर चार घोड़ों (Quadriga) को हाँक रही पीतल की बनी विजया देवी की मूर्ति स्थापित है। यह न्यूजियम-भवन २३० × १२५ वर्ग-फुट का है। यह भवन दो खण्ड का और ४६ फुट ऊँचा है। बीच में १ ६ × ५० वर्ग-फुट के खुले आँगन में महात्मा थरवालडसन की समाधि बनी है। जिस वाल्ट (Vault) में उनकी लाश का सन्दूक रक्खा है वह उनके जीवन-काल में उन्हीं की इच्छा के अनुसार सजाया गया था। बाहर और भीतर की दीवारें सुन्दर उज्ज्वल वर्ण के चित्रों से सुशोभित हैं। यहाँ पर थरवालडसन के हाथ के ३०० काम और अन्यान्य बहुत से चित्र-पट आदि रक्खे हैं। एक कमरे में वह असबाब उसी तरह सजाया रक्खा है जो जिस तरह उनके मरने के समय उनके कमरे में रक्खा था। ऊपर की खिडकी के नीचे 'प्रतिभा' की मूर्ति है, जो इस तरह बनाई गई है कि मानो बहुत सी बाधाओं और विघ्नों को नॉधती-फाँदती गाड़ी पर अपने गन्तव्य स्थान को जा रही है। वेस्टाविडल में ज्योतिर्विद् कोपर्निकस,

पोल-कुल-तिलक महावीर पार्नियाटौस्की, कवि शिलर, प्रसिद्ध गटे-नवर्ग और अन्य तीन महात्माओं की मूर्तियाँ खडो हुई हैं। इन सब स्वनामधन्य महापुरुषों के देशों के लोग थरवाल्डमन से उक्त महात्माओं की मूर्तियाँ बनवा ले गये थे। ये मूर्तियाँ उन्हीं मूर्तियों के नमूने हैं। भीतर थरवाल्डसन, नेपोलियन, बायरन आदि की अर्द्ध-मूर्तियाँ स्थापित हैं। ईसा और उनके अनुचरों की मूर्तियाँ अलग एक कमरे में रक्खी हैं। यहाँ की इस ईसा की मूर्ति की नकल नार्वे के अन्तर्गत ट्राब्जेम नगर के गिर्जे में रक्खी है। यहाँ इसी तरह के ५२ कमरों में अनेकानेक दृश्य देखने को मिलते हैं। पहले जिस इमारत में राजकुमार रहते थे उसी में अब प्रधान म्यूजियम है। इसमें तीन विभाग हैं। एक यूरोप के उत्तर-रुड के प्राचीन तत्वों से सम्बन्ध रखता है। दूसरा शिल्प आदि से सम्बन्ध रखता है। तीसरा एथ्नेोग्राफिकल अर्थात् मानव-समाज से सम्बन्ध रखता है। जीव तत्व-सम्बन्धी एक चौथा विभाग भी है। वह अन्यत्र स्थापित है। प्रथम विभाग में १२,००० से भी अधिक चीजों का समूह है। इस विषय का ऐसा सुन्दर श्रेणीबद्ध भारी समूह पृथ्वी पर और कहीं नहीं है। स्कैंडिनेविया में जो इम विषय का समूह देखा था उसकी अपेक्षा यह बहुत अधिक है। १ नं० के कमरे में प्रस्तर-युग के सब अस्त्र-शस्त्र, वर्तन वगैरह रक्खे हैं। २ नं० के कमरे में पित्तल-युग की ढालें, तरवारे और तरह तरह के पात्र रक्खे हैं। ३ नं० के कमरे में लौह-युग के अनेक सामान रक्खे हैं। इनके सिवा और भी बहुत सी चीजें यहाँ रक्खी हैं। जैसे एक प्रकार का कम्बल, बकाल की डिविया और छुरे की म्यान, लकड़ी की डोंगी, पीतल की तुरही, तोप, ढाल, कवच, छारू-घड़ी, वाच-घड़ी, ताला तथा हाथीदाँत के काम वगैरह। मानव-समाज-सम्बन्धी विभाग

बुध और शनिवार के सिवा और दिन नहीं खुलता, इस कारण उसे देखने के लिए दुबारा आना पड़ा । तितलने पर ये ३५ कमरे हैं, इनमें एरिकमो जाति के लोगो की चमड़े की पोशाक, चमड़े की भापडों में भिछो का पर्दा, और दक्षिण-अमेरिका के असभ्य स्त्री-पुरुषों की मूर्तियाँ, जेम् जङ्गल में तीर-क्रमान लिये कुत्तों के साथ घूम रही बनाई गई हैं, देखने से सचमुच ही डर मालूम पड़ता है । इनके सिवा जावा में मिली हुई बुद्धदेव और गणेश की मूर्ति, बुद्ध-चरणाङ्कित ३१ × २ फुट का पत्थर भारतीय दसो अवतारों के चित्र, बँगला-भापा की पञ्जिका (पञ्चाङ्ग) और पहली किताब, मिट्टी की बनी सन्यासी की मूर्ति, रुद्राक्ष की माला हाथ में लिये ब्राह्मण की मूर्ति, हमारे यहाँ के पाजेब, चन्द्रहार आदि अलङ्कार, मृदङ्ग, नूपुर, ककण, मिट्टी का चूल्हा और बर्तन और हिन्दुस्तानी-खासकर बङ्गाल की-‘घाट’ की नकल देखकर मुझे बड़ी ही प्रसन्नता हुई । म्यूजियम से बाहर निकलने के बाद द्वार पर के आफिस में कोई घात पूछने गया । वहाँ डाइरेक्टर महाशय से जान-पहचान होगई । मैं भारतवर्ष से कोपनहेगेन देखने आया हूँ, यह सुनकर उन्होने बहुत प्रसन्नता प्रकट की और उसके बाद नृसिंहावतार के सम्बन्ध की चर्चा शुरू कर दी । उन्होंने अनेक पुराणों में वर्णित नृसिंहावतार का वर्णन कह सुनाया । मैं तो जैसे सन्नाटे में आगया । क्या कहता, किसी तरह पीछा छुड़ाकर चल दिया । उन्होने अपना पता बताकर मकान पर मेरा निमन्त्रण किया, लेकिन मैं इस भय से फिर नहीं गया कि कहीं यह कोई ऐसी चर्चा न छेड़ दें जिसके सम्बन्ध में मैं कुछ उत्तर न दे सकूँ । धन्य हैं ये लोग, जो इतनी दूर कोपनहेगेन में बैठे बैठे प्राचीन भारत के तत्त्वों की गवेषणा में ऐसा परिश्रम कर रहे हैं । ज्ञान जहाँ

से जिस तरह प्राप्त हो उसे उसी तरह बिना किसी आपत्ति के ये लोग प्राप्त कर लेते हैं । उसे पाने के लिए तन-मन से ये सर्वदा तैयार रहते हैं । अनुसन्धान करने से मालूम हुआ कि यह महा-शय असीरिया, बैबिलन और मिसर आदि के पुरातन्त्र के भी भारी जानकार हैं । यहाँ की पशुशाला में एक सुन्दर नील-गाय देखी, इसके शरीर के रोँ तक खूब लम्बे थे । और एक नया पक्षी देखा, इसका आकार गिद्ध का ऐसा था, पर यह सुन्दर था । वटानिकोल-गार्डेन और गर्म देशों के उद्भिदों के लिए शीशे का महल भी देखने लायक है । इसमें कई एक नई तरह की घासें देखीं । सन् १६०४ में बना हुआ रोजेनबर्ग (Rosenborg) महल देखने के लिए एक दिन पहले टिकट लाना पडा । दूसरे दिन सब दर्शकों के जमा होने पर एक कर्मचारी अपने साथ ले जाकर सब दिखला लाया । यहाँ के सिक्के और मेडलों का सग्रह, वेनिस की धनी काँच की चीजों का सग्रह, शाही रत्न, अलङ्कार, आभरण आदि (Reglana), प्रसिद्ध चाँदी का बना पान-शृङ्ग (Oldenburg Drinking-horn), पुराने टेविल-चेयर आदि सामान देखने के योग्य हैं । इसके अन्तर्गत हाल (Riddersaal) कपडे पर छपे हुए चित्रों (Tapestry) के द्वारा सुशोभित हैं । इसके एक कोने में भारी चाँदी का सिंहासन रक्खा है । और भी एक चीज यहाँ दर्शनीय है । ब्रह है राजा पञ्चम चार्ल्स को उनके जिस प्यारे घोड़े ने पानी में डूबने से बचाया था उसका दो सौ वर्ष का पुराना शव, जो बड़े यत्न के साथ रक्खा हुआ है । यह दूर से विलकुल जिन्दा जान पडता है । उसके शरीर के रोँ और पूँछ के बाल खूब लम्बे हैं । इस महल के पीछे सुन्दर वाग है । उसमें डेन्मार्क देश के प्रसिद्ध पण्डित अण्डरसन (Hans Andersen) की मूर्ति स्थापित है । विश्वविद्यालय,

खास राजमहल (Christiansborg), और भी कई एक भारी राज-भवन, ग्लिप्टोथिक (Glyptothek) भास्कर-कार्य का संग्रह, लुइस-ब्रु (Louises Bro), दो लम्बे चौड़े थियेटर-भवन, एक्सचेञ्ज (Boisen)-भवन, समुद्र-तट पर स्थित लागेलिनी (Langelinie), मोन्यूमेन्ट और एशियाई ढग का टीवोली राजभवन (Bazarbygnengen-i-Tivoli), ये यहाँ के प्रधान दृश्य हैं । यहाँ की जन सख्या पाँच लाख के लगभग है ।

डेन्मार्क की साधारण अवस्था । किसी समय यह राज्य यूरोप में विशेष चमताशाली था, पर अब इसकी अवस्था साधारण है । इस देश में कुछ नये प्रकार के पेड़ हैं । यूरोप में अन्यत्र वैसे पेड़ साधारणत नहीं देख पड़ते । राज्य की अधिकांश प्रजा लूथर-सम्प्रदाय को माननेवाली (Lutheran) है । अन्यान्य सम्प्रदाय के ईसाई बहुत कम हैं । उनमें २,००० से अधिक मर्मन् (Mormons) और ४०० के लगभग अर्विगदल के (Livingites) हैं । बप्टिज्म, पूर्ण सस्कार और टीके (Baptism, Confirmation and Vaccination) के सर्टीफिकेट के बिना यहाँ कोई अप्रेन्टिसी, नौकरी या व्याह नहीं कर सकता । राज्य में शिक्षा का प्रचार खूब है । प्रजा को आईन के अनुसार शिक्षा प्राप्त करनी पड़ती है, अर्थात् सात से चौदह वर्ष की अवस्था तक सबको स्कूल जाना पड़ता है । असमर्थ छात्रों से सरकारी स्कूलों में फीस नहीं ली जाती । राज्य में १३ कालेज हैं । शिक्षा-कार्य के सम्बन्ध में सब स्कूल कालेज कोपनहेगेन-यूनिवर्सिटी के अधीन हैं । शिक्षा-विभाग का काम चलाने के लिए एक कमेटी है, जिसकी देख-रेख स्वयं राजा करता है । इस कमेटी के सब सभासद् सम्पूर्ण स्वाधीनता के साथ अपने कर्तव्य का पालन करते हैं । इस देश में बहुत से छोटे छोटे

जमींदार (Bondes) हैं। जमीन का यहाँ स्थायी प्रबन्ध है। इससे इन जमींदारों की अवस्था अच्छी है। लेकिन ये किसानों से कुछ कुछ निर्दयता का भी व्यवहार करने लगे हैं। किसानों की दशा पर भी ये लोग कुछ ध्यान नहीं देते। तथापि ये लोग सुशिक्षित, खास कर राजनैतिक विषयों के जानकार हैं। डेन्मार्क देश के लोग प्रफुल्लित और शौकीन होते हैं। बहुत लोग फ्रेंच फैशन आदि को बहुत पसन्द करते हैं। यहाँ की सेना १ लाख २६ हजार है। जहाजी सेना १,३०० के लगभग है। ३७ जड़ी जहाज हैं। उनमें ४ लौहयान हैं। वर्तमान राजा दशम क्रिश्चियन (Christian X) सन् १९१२ में सिंहासन पर बैठे थे। यूरोप के अनेक राज्यों से इनकी नातेदारी है। सन् १८६४ में ३२ लाख पौण्ड राज-कर वसूल हुआ था। खर्च इससे कुछ अधिक हुआ था। इसी साल राज्य पर एक करोड़ पौण्ड का ऋण था। छः सात लाख पौण्ड की रकम राज्य के रिजर्व-फण्ड में रहती है। सिक्का नार्वे-स्वीडन का ऐसा है।

स्काटलेण्ड (Scotland) की यात्रा। कोपनहेगेन से स्टीमर पर स्काटलेण्ड को रवाना हुआ। राह में काटिगेट (Cattogat) के प्रवेश-द्वार के इस पार हेमलेट (Hamlet) का एलसिनोर (Elsinore) कैसल देख पड़ा। इसका स्थानीय नाम है हेल्सिगोर (Helsingor)। उस पार स्वेडिश नगर हेलसिगबोर्ज (Helsingborg) है। खाड़ी बहुत तड़ है। स्टीमर पर से दोनों किनारे बहुत अच्छी तरह देख पड़ते हैं। हमारा स्टीमर एलसिनोर कैसल के पास ही होकर गया। इस स्टीमर पर अन्यान्य यूरोपियन यात्रियों में दो स्काच भद्र महिलाएँ भी थीं। उनमें जो वृद्धा थीं वह भारत के भूतपूर्व लाट लार्ड डफरिन की कोई नातेदार थीं। जब उक्त लाट


साहब भारत में थे तब वह महिला कलकत्ते में आई और लाट साहब के भवन में रहीं थीं। एक दिन तीसरे पहर चाय पीते समय उन्होंने भारत की चर्चा चला कर लार्ड रिपन की व्यर्थ निन्दा के साथ ही लार्ड डफरिन की भारी सराहना शुरू कर दी। मैंने दुःखित होकर कहा—“हम लोग महात्मा लार्ड रिपन को देवतुल्य जानते और मानते हैं”। इसके उत्तर में उन्होंने भारत में आत्मशासन के प्रचार का उल्लेख करके कहा—“तुम लोग अब भी अपने शासन की बागडोर अपने हाथ में नहीं ले सकते। कारण सत्य-प्रियता अभी तक तुम लोगो में देख नहीं पड़ती”। उस महिला की यह कड़ा चावुक खा कर मैं तो जैसे सन्नाटे में आ गया, मुझसे तो कुछ कहते ही न बन पड़ा। अन्यान्य यात्रियों में से एक दो ने मेरा पक्ष लेकर कुछ कहा। उसके उत्तर में उस महिला ने कहा—मेरे एक आत्मीय बन्धु भारत में एक उच्च पदस्थ सैनिक कर्मचारी थे। कुछ दिनों के लिए उनको कई एक राजकुमारों को पढ़ाने का काम करना पड़ा। एक दिन एक बालक से बातचीत करते समय यही बात उन्होंने कही कि तुम लोगों में सत्यप्रियता नहीं देख पड़ती! बालक ने विशेष दुःखित होकर इसका प्रतिवाद किया तब उन्होंने उस बालक से कहा कि “तुम अपने माता-पिता से पूछना कि वे तुम लोगों को बचपन में भ्रूठ बोलने की शिक्षा देते हैं या नहीं? पुत्र के सामने घर के बाहर अगर पिता कोई अनुचित काम करता है तो पुत्र को उपदेश देता है कि ‘बेटा, मा के पास जाकर यों नहीं यों कहना’। ऐसे ही घर में माता से कुछ नुक्सान या अनुचित कार्य हो जाता है तो वह पुत्र से कहती है, ‘बेटा, अपने बाप के आगे इस बात को जाहिर न करना, अगर पूछें तो इस तरह कह देना’। इसी तरह तुम्हारे मा-बाप तुमको भ्रूठ बोलना सिख-

लाते हैं ।” दूसरे दिन बालक ने घर से आकर उनका कहना स्वीकार कर लिया ।

बुद्धा को इस कथन का उत्तर क्या देता । केवल इतना ही कहा कि केवल एक उदाहरण से सारी जाति पर दोषारोप करना ठीक नहीं ।

यात्रियों में दा “रेडिकल” (Radical) स्काच थे । वे जब अँगरेजों के दोषों की घोषणा करने लगते थे तब दूसरी जवान स्काच-महिला अत्यन्त शान्त भाव से उनको समझाती थीं कि “हम और अँगरेज एक जाति हैं, आपस में भेदभाव स्थापित करना उचित नहीं । इंग्लैंड के साथ जब से मिला तब से स्काटलैंड की अनेक प्रकार से आर्थिक उन्नति हुई है । इत्यादि ।”

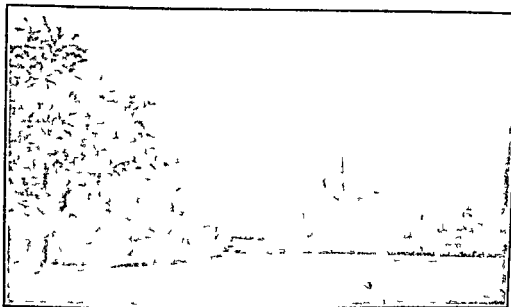
स्काटलेण्ड ।


 थ (Leith) । यथासमय एडिनबरा (Edinburgh) ली के बन्दरगाह लीथ नगर में पहुँचा । बीच में एक छोटी नदी बहने से नगर की बस्ती दो भागों में बँट गई है । नई सड़कें बहुत अच्छी बनी हैं , लेकिन पुराने रास्ते तड़क हैं । यहाँ के अधिकांश घर पुराने ढङ्ग के हैं । हार्बर के दोनों पियर साठे तीन तीन हजार फुट के हैं । मुहाना ढाई सौ फुट चौड़ा है । नगर में ३७ गिर्जें हैं । यहाँ के चारों 'डू १३० बीघे में बने हुए हैं । उनके बनने में दस लाख पाँड से भी अधिक खर्च हुआ है । बारह नागरिक बोर्ड-स्कूलों (Board School) में ७,००० के लगभग विद्यार्थी पढते हैं । पृथ्वी के अनेक देशों के जहाज इस बन्दर में आते जाते रहते हैं । यहाँ ७०,००० के लगभग आदमी बसते हैं ।

इडिन्बरा । यह स्काटलैंड की प्राचीन राजधानी और वर्त्तमान प्रधान नगर लीथ से दो मील पर है । रेल पर लीथ से यहाँ आया । यह नगर खूब ऊँची-नीची जगह पर बसा है और दो पहाड भी हैं । इससे नगर की एक विचित्र ही शोभा होगई है । बहुत ऊँचे स्थान पुलों के द्वारा परस्पर सयुक्त हैं । एक प्रसिद्ध स्काच चित्रकार ने कन्टोनेन्ट-भ्रमण के बाद यहाँ फिर आकर कहा था कि बहुत से सुन्दर नगरों का दृश्य यहाँ एक ही जगह

देखने को मिलता है । यथा—“ What the tour of Europe was, necessary to see elsewhere I now find congregated in this one city Here are alike the beauties of Prague and of Salzburg, here are the romantic sights of Orvietto and Tivoli, and here is all the magnificence of the admired bays of Genoa and Naples Here indeed to the poetic fancy may be found realized the Roman Capital and the Grecian Acropolis ” *Sir David Wilkie*

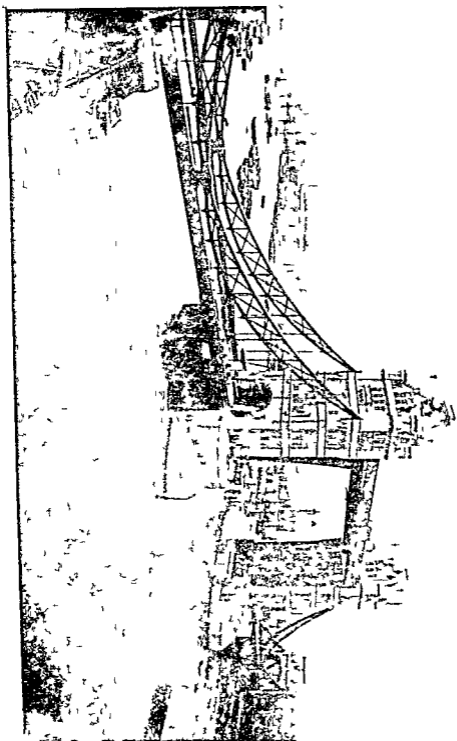
एथेन्स की शोभा दिखाने के लिए यहाँ के काल्टन (Calton) पहाड़ पर पार्थेनन का नकली महल बनाने को एक बार चेष्टा की गई थी । यात्रियों का कथन है कि ईजियन-सागर (Ægean Sea) से एथेन्स का और फोर्थ, समुद्रशाखा (Firth of Forth) से एडिनबरा का दृश्य दूर से एक ही तरह का देख पड़ता है । एक पहाड़ पर २१ बीघे जमीन के ऊपर प्राचीन कैसल बना हुआ है । पर्वत की चोटी पर सबसे पुरानी इमारत सेन्ट मार्गरेट गिर्जा बना हुआ है । कैसल में राजमहल का भग्नावशेष और उसके अन्तर्गत एक 'हाल' मौजूद है । यहीं इंग्लैण्ड के राजा पहले जेम्स का जन्म हुआ था । प्राचीन राजों के रत्न, आभूषण आदि, स्काट्लैण्ड के राजा चौथे जेम्स की पोप की दी हुई एक सुन्दर तरवार, अनेक समयों के बहुत से अख-शस्त्र, और पन्द्रहवीं शताब्दी में बनी हुई एक भारी तोप (Mons Meg) इस कैसल में रक्खी है । इस पहाड़ के पास की नीची जमीन पहले पानी से भरी हुई थी । इस समय उस पर एक सुन्दर बाग लग गया है । नगर का एक हिस्सा पुराना और दूसरा हिस्सा नया है । प्राचीन खण्ड के पूर्व-प्रान्त में हालीरूड (Holyrood) महल है । यहीं पर प्रसिद्ध रानी मेरी रहती थीं । इसी के अन्तर्गत



सजर्न भील (स्वीजलैंड)—पृ० १७६



हालीरूड महल, स्काटलेण्ड—पृ० १७६



गिर्जे में उनका ब्याह हुआ था । उनका प्रिय सचिव रिजियो (Rizzio) सन् १५६६ में इसी भवन में मारा गया । भारतेश्वरी विकोरिया की एक मूर्ति यहाँ स्थापित है । नगर के बीचोबीच पार्लियामेन्ट-भवन है । इस समय उसमें प्रधान-विचारालय हैं । जिस भारी हाल में पार्लियामेण्ट के अधिवेशन होते थे उसमें इस समय रैरिस्टर, बकील और उनके मवफिल बैठते हैं । इसके अन्तर्गत एक लाइब्रेरी है, उसमें तीन लाख पुस्तकों का समूह है । राज्य में पाँच पुस्तकालय ऐसे हैं जिन्हें कापीराइट के नियमानुसार प्रकाशकों और प्रकाशकों से हर एक पुस्तक की एक एक कापी पाने का अधिकार राज्य से प्राप्त है । यह लाइब्रेरी भी उन्हीं में से एक है । इस पुस्तकालय से मिला हुआ रजिस्ट्रॉ आफिस है । उसमें कई कमरे Fireproof हैं । उनमें आग नहीं लग सकती । उन्हीं कमरों में देश के आदमियों की कीमती दलीलें-लेख आदि बड़े यत्न से सुरक्षित हैं । एडिनबरा में दो न्यूजियम हैं । जातीय पुरातत्त्व के न्यूजियम में लोहे, पत्थर और पीतल की बहुत सी प्राचीन सामग्रियाँ, अस्त्र-शस्त्र, यन्त्र आदि और सोने, चाँदी और पीतल के तरह तरह के अलङ्कारों का समूह है । सामने लिखा है—
 “Look and learn ” अर्थात् देखो और सीखो । शिल्प और विज्ञान के न्यूजियम में नियमित रूप से लेक्चर दिया जाता है । वहाँ ८०० आदमियों के बैठने की व्यवस्था है । इसके सिवा काल्टन पहाड़ पर का मानमन्दिर, चिकित्सा-विद्यालय, विश्व-विद्यालय, विज्ञान-सभा, बटानिकोल और जिओलोजिकोल गार्डन आदि बहुत से ज्ञानोपार्जन के उपाय मौजूद रहने और मनोविज्ञान की आलोचना के सम्बन्ध में जगद्व्यापिनी सुख्याति होने के कारण एडिनबरा को लोग “आधुनिक एथेन्स” कहते हैं । ट्रिनिटी-अस्पताल नामक

सैरातखाने में १७२ गरीब नगर-निवासियों (Burgesses) को और उनकी स्त्रियों या सन्तानों को दस से बीस पौंड तक सालाना पेन्शन दी जाती है। पचास या इससे अधिक अवस्थावालों को ही पेन्शन मिलती है। पहले ये लोग अस्पताल की इमारत में रहते भी थे, लेकिन अब वह व्यवस्था उठ गई है। एक यहूदी भजन-मन्दिर को मिलाकर नगर में १२६ गिर्जे हैं। उनमें से अधिकांश गिर्जे स्काच-सम्प्रदाय के हैं। एडिनबरा नगर ह्यूम (David Hume), स्टेवार्ट (Dugald Stewart), बर्न्स (Burns), स्काट (Sir Walter Scott), नाक्स (John Knox) आदि बहुप्रसिद्ध मनीषी मनुष्यों की लीलाभूमि है। महात्मा नाक्स के घर में उनकी हस्तलिपि, उनकी इस्तेमाली बहुत सी चीजें और कई एक निर्यातनयन्त्र (Instruments of torture)* यत्नपूर्वक रक्खे हुए हैं। स्काट जिसे घर में रहते थे वह भी दिखलाया गया। नगर की एक बस्ती में बहुत से मार्टिरों (Martyrs) की कबरें हैं। सत्रहवों शताब्दी में धर्म-सम्बन्धी मत-विश्वाम को विभिन्नता के कारण २०,००० के लगभग आदमी यहाँ मारे गये थे। उनमें से कुछ की समाधियाँ यहाँ हैं। एक स्थान पर सडक के किनारे एक स्वामि-भक्त कुत्ते की कबर और मूर्ति है। स्मारक मूर्तियाँ और स्तम्भ एडिनबरा में बहुत हैं। काल्टन पहाड़ की चोटी पर महात्मा नेल्सन की और प्रधान सडक के किनारे पर उपन्यास-तत्त्ववेत्ता स्काट की मूर्ति है। स्काट की मूर्ति २०० फुट ऊँचे मन्दिर में है। इसी तरह दार्शनिक ह्यूम, स्टेवार्ट व्यवस्था-शास्त्र के ज्ञाता मकेञ्जी (Sir George Mackenzie), गणितज्ञ प्लेफेयर (John Playfair), प्रसिद्ध कवि बर्न्स, मन्त्री

* धर्मसम्बन्धी मत विश्वास जिनका जुदा होता था उन्हें कष्ट पहुँचाने के लिए इस यन्त्र का प्रयोग होता था।

मेलविल (Viscount Melville), विकूोरिया के स्वामी प्रिन्स अलबर्ट, राजा चौथे जार्ज, मन्त्रिवर पिट, कवि रामजे (Allan Ramsay), पण्डितवर विल्सन (John Wilson), वेलिङ्गटन-ड्यूक आदि प्रसिद्ध पुरुषों के स्मारक स्तम्भ और मूर्तियाँ इस नगर में हैं । मन्त्री मेलविल की मूर्ति १३६ फुट ऊँचे खम्भे के ऊपर है । प्रिन्स अलबर्ट की घुडसवार मूर्ति के पैरों के पास और भी कई मूर्तियाँ हैं ।

फोर्थ-सेतु (Forth Bridge) । एडिनबरा से एक दिन यह पुल देखने गया । यह पुल सन् १८८६ की १५ वीं नवम्बर को बन कर समाप्त हो गया था । कन्टीलिवर-प्रणाली (Cantilever principle) से यह भारी पुल बना है । चीना लोग इस हिसाब का व्यवहार बहुत दिनों से करते आते हैं, लेकिन उक्त प्रणाली से इतना भारी काम और कहीं नहीं किया गया । इञ्जीनियर एफेल ने लोहे पर लोहा रख कर एक भारी स्तूप अवश्य खड़ा कर दिया है, परन्तु यहाँ की कारीगरी और ही है । ८,२६६ फुट अर्थात् पौने दो मील के लगभग लम्बा रेल्वे का पुल है । बीच के पाये सत्रह सत्रह सौ फुट लम्बे हैं । पानी से १०० फुट की ऊँचाई पर पुल का मार्ग है । उसके ऊपर ३५० फुट लोहा है । सब लोहे के टुकड़ों को जोड़ने में ८० लाख रिवेट (Rivet) लगे हैं । सब मिला कर ३५ लाख पौण्ड के लगभग खर्च हुआ है । प्रिन्स आफ वेल्स ने इस पुल की स्थापना की थी । और एफेल आदि देश-विदेश के अनेक इञ्जीनियरों ने उपस्थित रहकर इसके निर्माता विश्वकर्मा फ़ाव्लर (Sir Henry Fowler) महोदय को अभिवादन किया था ।

इंग्लैंड ।



न् १८६० की गर्मियों में इंग्लैंड के मुफस्सिल की सैर करने निकला । पहले तो क्रिक (Crick) ग्राम में महात्मा स्मिथ George Smith of Coalville) के घर में मेहमान होकर महीने भर रहा । इस

महान् सेवक (Philanthropist) पुरुष के जीवन के सम्बन्ध में दो चार बातें लिखकर फिर आगे का हाल लिखूँगा । कई वर्ष हुए, उनके पुत्र के पत्र से मालूम हुआ कि उनकी मृत्यु हो गई । उस समय स्मिथकी अवस्था साठ वर्ष की होगी । किन्तु उस समय भी वह खूब तन्दुरुस्त सबल और जवानों की तरह परिश्रम में लगे रहते थे । वह गरीबों के लडके थे, इस कारण उन्हें लडकपन से ही मजदूरी करने के लिए लाचार होना पडा । इसी अवस्था में किसी तरह अक्षर पहचान कर उन्होंने खूब विद्योपार्जन किया । रात के समय उन्हें लिखने-पढने के लिए अवकाश मिलता था । धीरे धीरे एक भारी ईंट के कारखाने के यह मैनेजर हो गये; सालाना ७०० पाँड की तनख्वाह मिलने लगे । कुछ दिनों तक यह काम करके कुछ रुपया जमा हो जाने पर नौकरी छोड दी । उनका उद्देश्य उच्च था । पर-दुःख-कातर स्मिथ ने पहला उद्योग उन बालक-बालिकाओं के उद्धार के लिए किया जो ईंट के कारखानों में मजदूरी करते थे । इस महाव्रत के पालन में इस सत्य-सन्ध वीर पुरुष ने विषम प्रलोभन को पद-दलित कर दिया । अन्त

को जान पर आ बनी । सब ईंट के कारखानों के मालिकों ने पहले धन, उद्योग आदि के प्रलोभन से उन्हें सकल्प-धृष्ट करना चाहा, पर जब उनका यह उद्योग सफल न हुआ तब उन्होंने छिपे तौर से उन्हें मरवा डालने तरु की चेष्टा की । 'किन्तु जिसका सहायक ईश्वर हो उसका मनुष्य क्या कर सकता है ?' उन्होंने "The cry of the children from the Brickyards of England" नामक एक ग्रन्थ लिखकर उसके द्वारा उन लड़कों के कष्टों की ओर देश की दृष्टि फेरी और अन्त को उनका उद्योग सफल हुआ । जिस रात को पार्लियामेन्ट में उनकी भारी चेष्टा के बल से ईंट के कारखानों में बालक मजदूर न रखने का आर्डिन पास हो गया उस दिन वह बहुत ही प्रसन्न हुए । स्मिथ का पहले का जमा किया हुआ ढाई हजार पाँड के लगभग धन इस 'विल' के पीछे खर्च हो गया । उस रात को, जिस दिन विल पास हुआ, स्मिथ के पास केवल एक पेंनी थी । इस स्वार्थत्याग को तो देखिए ! यह रात जब मैंने अस्पताल में पढी तब दस मिनट तक मेरी आँखों से आनन्द के आँसू बहते रहे । उस समय स्मिथ महाशय से मुझसे जानपहचान नहीं थी । इस प्रकार प्रथम उद्योग में सफलता प्राप्त करने पर धर्मवीर ने दूने उत्साह के साथ काम शुरू कर दिया । कुछ दिन के बाद नहर में काम करनेवाले बालक-बालिकाओं की शिक्षा और स्वास्थ्य आदि की देखरेख के सम्बन्ध में उन्होंने एक आर्डिन पास कराया । इसके बाद जिप्सी लोगों के बालक-बालिकाओं के उद्धार के लिए उद्योग करवे ही करते महात्मा ने शरीर-त्याग कर दिया । उस

इंग्लैंड में अनेक नहरें हैं । उनमें जो नावें चलती हैं उनके मल्लाह सपरिवार सदा नावों पर ही रहते हैं । उनके लड़के और उनकी मातहतों में काम करनेवाले लड़की-लड़के ।

समय राज्य के समाचारपत्रों में इस प्रकार आन्दोलन हुआ था यथा—“ What Mr George Smith did for the Buckyard and Canal children is now a matter of history, and many will be interested in the effort he has been making to bring the Gypsy children within reach of legislation. We wish Mr Smith's Bill every success ”

स्मिथ स्वयं एक भिक्षुक थे । अपने और परिवार के पालन के लिए भारत देश के ऊपर उन्हेने छोड़ रक्खा था । कहाँ से कौन भोजता था । इसका कुछ ठीक न था, किन्तु अक्सर डाक-द्वारा २० पौंड के नोट उनके नाम आते थे । उनकी छी और लडकी-लडके बहुत ही सुन्दर और सुखी हैं । स्मिथ सदा निश्चिन्त और प्रसन्न रहते थे । वह कभी कभी परिवार में आकर आराम करते थे, नहीं तो अक्सर गरीबों की सेवा और सहायता के लिए लन्दन और देहातो में घूमा करते थे । स्मिथ महाशय इसी शरीर से स्वर्गभोग कर गये । मैंने कभी उनको उदास या अप्रसन्न नहीं देखा । सर्वदा भगवान् का नाम लेते थे और विधाता के विधान पर निर्भर रहते थे । दीन-दुखियों की सेवा करना ही उनका काम था । ऐसा आदमी शायद ही कोई हो जो उनसे प्रेम न करता हो । राजराजेश्वरी तक उनको इस तरह पत्र लिखती थीं ।

Buckingham Palace, January 17th, 1876

Sir,—I am desired to acknowledge your letter to the Queen and to say that Her Majesty takes much interest in the endeavours which you make to ameliorate the condition of this class of the labouring population

I have &c,

Thos Biddulph

बहुत लोगों ने स्मिथ का जीवनचरित लिखा है । ऐसा कोई सप्ताह नहीं बीतता था जिसमें उनकी कुछ न कुछ प्रशंसा अखबारों में न छपती हो । उनके अपने लिखे कई एक सुन्दर ग्रन्थ हैं । स्मिथ का और एक भारी काम यह है कि वह शिक्षा, धर्मोपदेश, परस्पर-सहानुभूति इत्यादि स्थायी उपायों के द्वारा दुःख-दरिद्रता दूर करने की चेष्टा के लिए एक "प्रेम का दल" (Band of Love) स्थापित कर गये हैं । भारतेश्वरी और उनकी कन्या वियेट्रिस इस दल के साथ सहानुभूति रखती थीं । स्मिथ महाशय ने मुझे भी इस दल में शामिल कर लिया था । क्रिक में रहते समय कई दिन मैं उनके साथ इस दल के काम में शरीक हुआ था । नार्दम्पटन के दो अखबारों में उसके सम्बन्ध में ये लिखा गया था—

"On Sunday and Monday the George Smith of Coalville Band of Love at the Cavin, Cuck, and Buckby Wharf were honoured by the visit of M₁ —a high-caste native from India His addresses were most interesting, and many cheers were given when he referred to the reverence the people of India have for their great mother Queen Victoria His reference also to the manners and customs of India brought forth much laughter and cheering The love-room was on the two occasions crowded almost to suffocation, and no doubt great will be the result of M₁ —having become a "brother" M₁ —has been initiated into the Band of Love He will no doubt return to India with pleasant memories of his visit to the founder of the Band and Rugby School Dr Percival, the Head Master of Rugby School and Mrs Percival kindly invited Messrs —and Smith

to lunch, and they were shown over the Art Museum and extensive premises of the Rugby School, world-wide reputation as the first in many respects of the public schools in England"—*Northampton Mercury — Herald*

महात्मा स्मिथ के जीवन में अनेक अद्भुत घटनायें हुई, जिन द्वारा विधाता की विशेष कृपा उन्हें इतनी दूर अग्रसर कर सका इस जगह पर उन सब बातों की आलोचना करने की जरूरत नहीं यहाँ पर केवल इतना ही कहना है कि महात्मा स्मिथ का जीवन एक यथार्थ या सच्चे जीवन का सजीव उदाहरण है। स्मिथ के मा का कुछ भी अनुसरण कर सकें तो हमारे आत्मा और देश विशेष कल्याण हो। जितने दिनों तक महात्मा स्मिथ का मेहमान बनकर उनके घर में रहा उतना समय बड़े सुख से बीता। उसे हमेशा स्मरण करता रहूँगा। मैंने उनके कार्य में सहायता के लिए कई बार कुछ देना चाहा, पर उन्होंने किसी तरह उसे खोकार नहीं किया। हमारे देश के अनेक लोगों की धारणा है कि अँगरेज लोग आतिथि-सत्कार करना नहीं जानते। पर यह कोरा भ्रम है। महल के आदमी तक मेरा खूब सत्कार करते थे।

क्रिक (Crick)। स्मिथ का गाँव क्रिक बहुत छोटा है। किसी समय यह गाँव खूब समृद्धिशाली था। स्थानीय गिर्जा और उसके पादरी की सालाना ६०० पाँड की तनख्वाह इसका प्रमाण है। गाँव के रास्तों में रोशनी नहीं है। केवल एक दूकान, एक सराय (Roadside Inn) और एक छोटा सा डाकघर है। रेलवे स्टेशन १ मील के फासले पर है। चारों ओर मैदान और खेत हैं। पाँच छ सौ से अधिक आदमी नहीं बसते। उनमें से अधिकांश गृहस्थ किसान हैं। पुराने ढङ्ग के छप्परदार एक खण्ड और दो खण्ड

मरानात हैं । मुझे वहा लोग लन्दन-निवासी जानते थे । रास्ते में सभी लोग मुझे अभिवादन करते थे । स्मिथ को बाल-बच्चों के साथ जिसके घर या (farm) में घूमने जाता था वही खूब सत्कार करता था । जिस समय वहाँ मैं था उस समय एक अमेरिकन यात्री स्मिथ के घर में मेहमान हुआ था । उसका उद्देश्य केवल स्मिथ का वृत्तान्त जानकर उसे अमेरिका के समाचार-पत्रों में छपाना था । स्मिथ का नाम ऐसा ही जगत्प्रसिद्ध है । यहाँ से स्मिथ के साथ नार्दम्पटन (Northampton) और रग्बी (Rugby) गया । उनके बाल-बच्चों के साथ फिर वारविक (Warwick), लेमिंगटन (Leamington), आशबी (Ashby St Ledger) और शेक्सपियर की जन्मभूमि स्ट्रेटफोर्ड (Stratford-upon-Avon) देखने गया । आशबी में प्रसिद्ध विद्राही गार्डफाक्स (Guy Fawkes) का घर और जिस घर में बैठकर कुचक्र रचा गया था वह भी देख आया ।

नार्दम्पटन । नेन (Nen) नदी के किनारे पर के छोटे से पहाड और उसकी चोटी पर यह नगर बसा है । जन-सख्या ६०,००० के ऊपर है । उत्तर दक्षिण और पूर्व-पश्चिम को दो बड़ी सडके गई हैं । उनसे नगर चार समान भागों में बट गया है । एक प्राचीन कैसल, दो नई बनावट के गिर्जे और सन् १४५० में बना हुआ प्रसिद्ध टामस बेकेट (Thomas Becket) नामक अस्पताल, ये प्राचीन दर्शनीय कीर्तियाँ हैं । दोनो गिर्जों में एक तो नार्मल राजा विलियम के समय का है और दूसरा नाइट-टेम्पलर लोगो न जरुस्त-लेम के अनुकरण पर बनवाया था । इमारतो में टाउनहाल, जेल-खाना और पागलखाना देखने योग्य और प्रधान हैं । इंग्लेण्ड में यहाँ जूते बनाने के प्रधान कारखाने हैं । उनके सिवा धनक पियर

शराब की भट्टियाँ, मैदा और कागज की मिलें, ईट के कारखाने, भेड़ों के बाजार आदि नगर को गुलजार बनाये हुए हैं। नगर के बीच में एक लम्बा-चौड़ा बाजार और उसके बीच में एक फुहारा है।

जिप्सी जाति (Gipsy) । नार्दम्पटन नगर के बाहर इस समय जिप्सी लोगो ने दो चार दिन के लिए अपना अड्डा क़ायम किया था। स्मिथ के साथ उनकी मडली देखने गया। जिप्सी लोग इंग्लेण्ड में कहाँ से आये, इस बारे में इतिहास साफ़ साफ़ कुछ नहीं बताता। किन्तु उन लोगो की भाषा के द्वारा जान पड़ता है कि वे भारतवर्ष के उत्तर-पश्चिम अंश से निकल कर यूरोप के अनेक देशों और आफ्रिका के उत्तर खंड में पहुँच गये। ईसा की पन्द्रहवीं शताब्दी में वे इंग्लेण्ड में जाकर बसे। वे अपने को 'डोम' कहकर अपना परिचय देते हैं। मेरी समझ में यह 'डोम' भारत का 'डोम' शब्द ही है। यूरोप में उन्हें ईजिप्ट से आया जानकर लोग जिप्सी नाम से पुकारने लगे। उनकी भाषा में आठ कारक और भारत के अनेक शब्द पाये जाते हैं। जैसे घर—घेर, एक—येक, करा—केरा, ते—ते, ऊपर—अप्रो, अन्दर—अन्द्र, सत्ता—ताते, जाना—जावा इत्यादि। हमारे देश के नट-बाजीगर आदि असभ्य गृह-हीन लोग जिस प्रकार अपना जीवन व्यतीत करते हैं उसी ढङ्ग से ये लोग भी रहते हैं। यूरोप में रहने के कारण इन लोगो में यह अन्तर होगया है कि जिप्सी लोग गर्म कपड़ों का इस्तेमाल करते हैं और सारी गृहस्थी एक घोड़े की गाड़ी में लादकर इधर-उधर घूमते-फिरते हैं। इनका सारा परिवार और सामान उसी गाड़ी के भीतर रहता है। यूरोप की आब-हवा के कारण इनका रङ्ग भी सुन्दर होगया है, किन्तु आँखें और बाल

अभी तक हिन्दुस्तानियों के ऐसे घने काले होते हैं। भारतीय डोमों का डिलिया बनाने-बेचने का रोजगार अभी तक इनसे नहीं छूटा। ये लोग गाँव के बाहर मैदान में गाड़ी-घोड़ा-सहित ठहरते हैं। चोरी करने में भी ये बंद नहीं हैं। इन सब कारणों से विश्वास होता है कि ये लोग भारतीय नट बाजीगर आदि का ही सशोधित संस्करण हैं। इंग्लैण्ड में ये लोग २,००० से अधिक हैं। इनमें एक राजा या दलपति और रानी होती है। कभी कभी डिलिया-टुफूनी बेचने के लिए जिप्सी लोग लन्दन की सबकों पर गाड़ी-घोड़े लिये धीरे धीरे जाते देखे जाते हैं। इनकी खियाँ भोली-भाली अँगरेज-महिलाओं को हस्तरेखा देखने आदि का ढोंग करके खूब ठगती हैं। साल के भिन्न भिन्न समयों में इंग्लैण्ड और वेल्स अनेक स्थानों में हजारों मेले लगते हैं। उनमें ये लोग जाते और अनेक असत् उपायों से खूब पैसा पैदा करते हैं।

रग्बी स्कूल (Rugby School)। यह छोटा सा नगर एवन (Avon) नदी के किनारे पर है। यहाँ १२,००० के लगभग लोगों की बस्ती है। यहाँ का प्रधान दृश्य स्कूल है। स्कूल के हेडमास्टर डाक्टर पर्सीवाल (Dr Percival) और उनकी दयामयी पत्नी ने मध्याह्न भोजन का निमन्त्रण दिया था, इसी से रग्बी जाना पड़ा। भोजन के बाद मास्टर साहब ने सब स्कूल दिखाया और उसका सारा वृत्तान्त कह सुनाया। एक छात्र (स्मिथ के लडके) ने भी बहुत सी बातें बतलाईं। रानी इलिजाबेथ के राज्य-काष्ठ में, सन् १५६७ में, शेरिफ (Laurence Sheriffe) नामक उनके एक अनुचर ने इस स्कूल को स्थापित किया था। रग्बी के निकटस्थ ब्राउन-सोवर (Brownsover) ग्राम में शेरिफ का जन्म हुआ था। यहाँ

की सम्पत्ति, उनका रगूषी ग्राम में बना हुआ महल और लन्दन की चौबीस बीघे जमीन (इसकी सालाना आमदनी ५,००० पौण्ड है) शेरिफ उक्त स्कूल के लिए दान कर गये हैं । २० वीं अक्तूबर को उनके नाम का खास दिन (Founder's Day) माना जाता है । स्कूल चलाने का काम १२ ट्रुम्टिया के हाथ में है । इस भारी विद्यालय के एक खण्ड का नाम है "नया बड़ा स्कूल" (New Big School) यह सन् १८८५ में बना था । कोई धूमधामी उत्सव होने पर यहाँ सब लोग जमा होते हैं । नहीं तो केवल बुधवार और शुक्रवार को प्रातः काल यहाँ "प्रार्थना" की जाती है । इस हाल में २० चित्रपट हैं, उनमें स्काटलेण्ड की रानी मेरी का चित्र सबसे श्रेष्ठ है । लडको की शिक्षा के लिए स्कूल के हितैषी सज्जनों ने जो नया आर्गन बाजा (Organ) दिया है वह यहाँ रक्खा है । यहाँ से भारी फाटक होकर छोटी श्रेणी के घर (Sixth form Room) में जाना होता है । इस घर के द्वार के ऊपर एक भारी शीशा है । उसमें सन् १६०० से जितने हेडमास्टर हुए हैं उनके चित्र अंकित हैं । अनेक प्राचीन ग्रन्थों का यहाँ संग्रह है । हर एक विद्यार्थी के लिए अलग अलग एक एक छोटा डेस्क है । पुराने चौक के आँगन के दक्षिण ओर बड़ा स्कूल है । यहाँ केवल मङ्गल, वृहस्पति और शनिवार को छात्रों के नाम की पुकार होती है और कभी कभी कोई "श्रेणी" बैठती भी है । इसके एक कोने में कंन्ट्रिज और थाक्सफोर्ड से वृत्ति पाये हुए छात्रों के नामों की सूची और दूसरी ओर एक प्राचीन टूटा हुआ आर्गन बाजा रक्खा है । इस कमरे में स्कूल का एक नकशा टंगा हुआ है । उसमें छात्रों के दहलने के लिए निर्दिष्ट स्थान दिखलाये गये हैं । स्कूल का गिर्जा सन् १८२० में बना और सन् १८६७ में बढ़ाया गया । इस गिर्जे

की दीवार १७ चित्रित शीशो से आवृत है और दश शीशो स्मारकचित्त हैं। उनमें से एक शीशा क्रोमिया के युद्ध में मरे हुए ३३ आदमियों का और एक शीशा भारत के सिपाही-विद्रोह में मरे हुए १२७ रग्वी छात्रों का स्मारक है। इस गिर्जे में प्रसिद्ध शिक्षक डाक्टर आर्नाल्ड (Thomas Arnold) की समाधि है। यहाँ के बड़े आर्गन की कौमत् ३०० पौण्ड है। इसके सिवा एक बड़ी लाइब्रेरी, म्यूजियम, कारखाना (Workshop), मानमन्दिर, तैरना सीखने के लिए छाया हुआ जलाशय और कसरत आदि का जिम्नेसियम (Gymnasium) भी इस स्कूल के अन्तर्गत है। छात्रों को नित्य विविध काम करने होते हैं। छ वजे जगने की घटी होती है। सब छात्र उठ बैठते हैं। सात बजे दस मिनट होने पर पाँच मिनट तक और एक घटी बजती है। सवा सात पर सब लडके अपने अपने क्लास में आकर बैठ जाते हैं। ठोक सात बजे एक और भी घटी हो जाती है। वह घटी गिर्जा में उपस्थित होने की है। गिर्जे में हेडमास्टर एक प्रार्थना का गीत गाते हैं, लडके भी उसमें शामिल होते हैं। पीछे विधिपूर्वक प्रार्थना पूर्ण करके अपने अपने क्लास में आकर आठ बजे तक पढते हैं। उसके बाद कलेवा करने की छुट्टी होती है। इस समय कुछ लडके ऐसी खाने की चीजें खरीदने बाजार जाते हैं जो स्कूल में नहीं मिलतीं। कलेवा करने के बाद सवा नौ बजे से सवा बजे तक क्लास में पढना पढता है। डेढ बजे दोपहर को भोजन की घटी बजती है। मङ्गल, वृहस्पति और शुक्रवार को छोड कर तीसरे पहर तीन बजे से छ बजे तक फिर स्कूल लगता है। इन तीन दिनों में, उक्त समय में, सब लोग खेलते कूदते हैं। विशेष कारण के सिवा अगर कोई छात्र खेल में शरीर नहीं होता तो उसे दण्ड मिलता है। छ बजे चाय पीने के बाद और गर्मियों में सवा सात बजे के बाद फिर

कोई लडका घाहर निकलने नहीं पाता । साढे सात बजे से नव बजे तक पाठ याद करके मामूली भोजन के बाद सब सो रहते हैं । बडे दिन की छुट्टियो के बाद स्कूल खुलने पर पश्चाद्घावन (Paper-chasing) और स्रोतोलङ्घन (Book-jumping) के खेल शुरू होते हैं । कई छोटे छोटे स्रोत इस जगह से बहकर एवन नदी में गिरे हैं । क्रमशः इन भरना के तद्ग हिस्से से चौडे हिस्से को नाँघते नाँघते आगे-पीछे छोटे-बडे सब बालक कीचड और जल से लथ-पथ हो जाते हैं । अगर कोई इस खेल से भागता है तो सब मिल कर उसे पानी मे डाल देते हैं । उसकी दुर्दशा देखकर रास्ता चलनेवाली बुढियो के दया प्रकट करने पर भी वह खुद खुश होता है । ईस्टर-टर्म के समय दो तीन दिन बालिग लडके एक एक करके पाँच सात कोस दौड जाते हैं । कई साल हुए, इस दौड के खेल मे एक आदमी चौदह माइल एक घटे चार मिनट में गया था । उक्त टर्म के अन्तिम समय में तरह तरह की कसरतें होती हैं । एवन के किनारे तम्बू डालकर एक अड्डा स्थापित होता है । वहाँ एक मील लम्बा सर्पाकार टेढा-मेढा एक स्रोत है । उसे बारम्बार नाँघकर समाप्त करना (Steeple-chase) पडता है । दूसरे टर्म में क्रिकेट का खेल शुरू होता है । इसमे सबको शरीक होना पडता है । स्कूल के आठ राड हैं । उनमे परस्पर लाग डॉट रहती है । अन्त को लन्दन के लार्ड-मैदान में मार्लबरो कालेज के छात्रों के साथ मैच (Match) खेलकर क्रिकेट का खेल समाप्त होता है । इसके बाद फुटबाल शुरू होता है । इसमें अनेक लडके विशेषरूप से चोट खा जाते हैं । रग्बी-खेल यहीं का आविष्कार है । इस खेल के सवन्ध में हेडमास्टर ने कहा—“No foreigner who once sees a Rugby foot-ball match can ever forget it, for it instils into his mind a

determination which has brought the English nation to its present position " खेलों में बिना किसी विशेष कारण के अनुपस्थित होने पर बेंत तक की सजा दी जाती है । हेडमास्टर के अलावा ३२ शिक्षकों और दो निरीचको (Marshal) के द्वारा स्कूल का सब काम होता है । हेडमास्टर का पद ऊँचा होता है और उसे अच्छी वनख्वाह मिलती है । ये लोग प्रायः विशप या आर्च-विशप के उँचे पद को पा जाते हैं । पर्सीवाल महाशय, थोडे दिन हुए, ४,२०० पाँड वार्षिक वेतन पर हरफोर्ड (Hereford) के विशप का पद पा गये हैं । यह सुशिक्षित हैं और छात्रों की नैतिक उन्नति के सबन्ध में विशेष यत्न करते थे । छात्र और शिक्षक गण सभी इन पर बड़ी श्रद्धा रखते थे । यहाँ के शिक्षक लोग विश्वविद्यालय का गाउन और टोपी (College-Cap) पहन कर स्कूल में आते हैं ।

वारिक । यहा का एवन नदी के तट के पहाड पर बना हुआ प्राचीन कौसल प्रसिद्ध है । उसके सबन्ध में एक आदमी ने लिखा है—
 "The most magnificent of the ancient feudal mansions of English nobility still used as a residence " ऊँचेस्थान पर होने के कारण यह बहुत दूर से देख पडता है । १४ वीं शताब्दी में बने हुए इसके तीनों टावरों में एक १४७ फुट ऊँचा है । इसके अन्तर्गत बड़ा हाल और पारिवारिक कमरे आदि सन् १८७१ में आग में जल गये थे । वे फिर से बनाये गये हैं । लकडो का बना हुआ एक स्थानीय अस्पताल विचित्र ढङ्ग का है । नगर में १४,००० आदमी रहते हैं ।

लेमिगटन । वारिक से दो मील के फासले पर, लीम और एवन नदी के सगम पर, यह नगर बसा हुआ है । यह नगर धातुओं के

भरने (mineral spring) के लिए प्रसिद्ध है । इससे मिले हुए हम्माम मे नहाने के लिए बहुत से स्थानों से रोगी आते हैं । अनेक वृद्ध लोग अन्त को यहीं आकर रहते हैं । चारो ओर शिकार का स्थान रहने से बहुत से बड़े आदमी भी आया करते हैं । यहाँ के घर और रास्ते सब साफ हैं । नगर मे दो सुन्दर बाग हैं । २०,००० से अधिक आदमी यहाँ रहते हैं ।

स्ट्रेटफोर्ड (Stratford-upon-Avon) । अँगरेजी जाननेवाले लोगो के लिए यह स्थान तीर्थ-स्वरूप है । यात्रियो में फ्री सैकडे नब्बे अमेरिकन यहाँ आते हैं । उन लोगो ने ५।७ हजार पौंड की लागत से नगर के बीचों बीच चौराहे पर एक फुहारा स्थापित किया है । उसमे लिखा है—“Honest Water which ne'er left man i' the mine” शेक्सपियर के घर मे उनका जन्मस्थान, बैठने की जगह और कुर्सी दिखलाई जाती है । सब लोग एक एक बार उस कुर्सी पर बैठे । पृथ्वी के प्रधान तमाशा दिखलानेवाले बर्नम ने इस घर को खरीद कर समूचा उठाकर अमेरिका ले जाने का विचार किया था और उस के लिए खूब धन भी देने के लिए तैयार थे । किन्तु अँगरेज उसे क्यों देने लगे ? तभी से यह घर विशेष यत्न के साथ सुरक्षित है । नदी-तट पर गिर्जें मे शेक्सपियर की समाधि देखने गया । यह स्थान निर्जन है । गिर्जा छोटा नहीं है । सामने नदी बहती है । गिर्जे के चैन्सेल (Chancel) मे कवि का शव गडा है । ऊपर के पत्थर पर बड़े बड़े अक्षरों मे खुदा है—

Good friend for Jesus' sake forbear,
To dig dust enclosed here,
Blese be y spares thes stones,
And cursè be he y moves, my bones

इस लेख की तीसरी लाइन की पहली y के सिर पर एक o और दूसरी तथा चौथी लाइन को y के ऊपर एक एक s है। यहाँ के मोनूमेन्ट में शेक्सपियर की एक अर्द्धमूर्ति है। हाथ में कलम और कागज है। चोटी के ऊपर एक मनुष्य की रोपड़ी है। आस पास दो बच्चोंकी बैठो हुई मूर्तियाँ हैं। एक बच्चे के पास और एक रोपड़ी है। मोनूमेन्ट के नीचे लिखा है—

Indigio Pylym, genio Socratem, arte Maronem
Terra tegit, Populus meret, Olympuss habet
Stray Passenger why goest thou by so fast ?
Reid if thou canst, whom envious Death hath plast
Within this monument Shakespeare with whome,
Quick nature dide Whose name doti decky iombe,
Far more ten cost Sichally He hatu writt,
Leaves living art, But page to servf his witt

Obibat mo do 1616

Ætatis 53 Die 23 7p

नागरिक टाउन हाल के सामने शेक्सपियर की स्मारक मूर्ति है। पैरे के पास चारों ओर कई काल्पनिक मूर्तियाँ स्थापित हैं। टाउन हाल के भीतर शेक्सपियर और नाट्याचार्य गैरिक के दो चित्रपट रखे हैं। पहले के फ्रेम के ऊपर और नीचे लिखा है—

"This case was made from a portion of the waste wood, which formed part of the 'old structure of Shakespeare's house"

उसके नीचे लिखा है—

"This portrait of Shal espeare after having been in the possession of Mr William Oakes Hunt, Town-cherk of Stratford-upon-Avon and his family for upwards of a century, was

एक बुद्धदेव की एक जन्तु की पीठ पर बैठी हुई मूर्ति । यह गगतट पर बने हुए किसी टूटे हुए बुद्ध-मन्दिर से सन् १८६३ में मिली थी । सन् १८६२ में सुल्तानगञ्ज में मिली हुई उक्त महापुरुष की एक और मूर्ति । दिल्ली के अन्तिम बादशाह की हीरा मोती-मानिक-टकी टोपी । उक्त बादशाह की बेगम के ऐसे हार्न कीमती कडे, अँगूठी, अँगुशताना आदि । दिल्ली-पति की सुवर्ण-रत्न-खचित तरवार की मूठ । चन्द्रहार, चिक आदि औरतों के गहने । पञ्जाब के भरोखे-जालियाँ । भारत की तरह तरह की पुरानी बन्दूकें और भैसे के सींग, हाथी-दाँत, चन्दन की लकड़ी की अनेक प्रकार की कारीगरियाँ । चीन और जापान का मीने का काम (Enamel) जैसा कि यूरोप में अनेक चेष्टा करने पर भी नहीं बन सका । बर्हिधम से पाँच दैनिक और दो साप्ताहिक अखबार निकलते हैं । शिच्चा के सम्बन्ध में यहाँ अनेक 'अनुष्ठान' हैं । सन् १५५२ में जो ग्रामर-स्कूल स्थापित हुआ था उसकी सम्पत्ति की आमदनी उस समय केवल इक्कीस पौण्ड थी । अब उसी सम्पत्ति की आमदनी १५,००० पौण्ड हो गई है । इस ३०० वर्ष से अधिक समय में नगर की कौसी उन्नति हुई है, सो केवल इतने ही से जान लिया जा सकता है । हाई स्कूल बनने में ७१,००० पौण्ड खर्च हुए हैं । इसमें ६०० और इसके मातहत चार छोटे स्कूलों में १,५०० लड़के पढते हैं । 'मध्य देश के अनुष्ठान' (Midland Institute) नामक शिच्चालय में विज्ञान, भाषा, साहित्य, इतिहास आदि बहुत से विषयो का ज्ञान कराया जाता है । विज्ञान के विद्यार्थी ६०० और अन्यान्य विषयो के विद्यार्थी १,६०० यहाँ शिच्चा पाते हैं । कीन्स-फालेज को विश्वविद्यालय की ऐसी उमता प्राप्त है । अब वहाँ केवल चिकित्सा और धर्मशास्त्र

पढाया जाता है । मेसन का वैज्ञानिक कालेज नया खुला है । इसके लिए महात्मा मेसन (Sir Jostah Mason) एक लाख पौण्ड की सम्पत्ति दे गये हैं । विज्ञान आदि की शिक्षा और आलोचना के लिए यूरोप में अनेक लोग ऐसा दान कर गये हैं । इसके सिवा अनेक छोटे स्कूलों में ५०,००० फें लगभग विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं । नवीन नियम के अनुसार बहुत से थर्ड-स्कूलों की स्थापना हुई है । उनमें दो लाख पौण्ड का खर्च और १६,००० बालकों की शिक्षा का प्रबन्ध है । इस नगर में धनकुनेर कोई नहीं है, मगर थोड़ी बहुत सम्पत्ति सबके पास है । जो लोग इस समय अपने कारखानों में सैकड़ों लोगों से काम कराते हैं उनके बाप-दादों ने एक समय खुद मजदूरी की थी । कहन का मतलब यह कि स्थानीय मध्यवित्त श्रेणी के साथ उच्च और नीच की समान घनिष्ठता है और उसके द्वारा सब लोगो में परस्पर प्रेम भी सूव है । स्वामी और सेवरु में यहाँ ऐसा सद्भाव है कि वर्त्तमान सभ्य जगत् के अन्यान्य स्थानों की तरह यहाँ के मजदूर हड़ताल (Strike) बहुत कम करते हैं । नगर-निवासी लोग भले, भव्य और राजनीति में निपुण हैं । उच्चारण की विलक्षणता के कारण यहाँ की निम्न श्रेणी की बातें समझने में मुश्किल पडी थी, किन्तु फोर्थ-त्रिज के निकटस्थ गाँव की तरह नहीं । वहाँ की बातचीत तो किसी तरह समझ में ही नहीं आती थी । बर्मिंघम से महापुरुष राममोहन राय की समाधि देखने के लिए ब्रिस्टल को रवाना हुआ ।

ब्रिस्टल (Bristol) । एवन और फ्राम (Avon and Frome) नदियाँ मिल कर ब्रिस्टल के भीतर से बही हैं । यहाँ आने का प्रधान उद्देश्य था राजा राममोहन राय की समाधि देखना । होटल में उतरते ही आर्नो-वेल नामक कनरिस्तान (Arno's Vale Ce-

एक बुद्धदेव की एक जन्तु की पीठ पर बैठी हुई मूर्ति । यह गगतट पर वने हुए किसी टूटे हुए बुद्ध-मन्दिर से सन् १८६३ में मिली थी । सन् १८६२ में सुल्तानगञ्ज में मिली हुई, उक्त महा-पुरुष की एक और मूर्ति । दिल्ली के अन्तिम बादशाह की हीरा-मेती-मानिक-टकी टोपी । उक्त बादशाह की वेगम के ऐसे ही कीमती कडे, अँगूठी, अँगुशताना आदि । दिल्ली-पति की सुवर्ण-रत्न-सचित्र तरवार की मूठ । चन्द्रहार, चिक आदि औरतों के गहने । पञ्जाब के भरोखे-जालियाँ । भारत की तरह-तरह की पुरानी बन्दूकें और भैसे के सींग, हाथी-दाँत, चन्दन की लकड़ों की अनेक प्रकार की कारीगरियाँ । चीन और जापान का मीने का काम (Enamel) जैसा कि यूरोप में अनेक चेष्टा करने पर भी नहीं बन सका । बर्मिंघम से पाँच दैनिक और दो साप्ताहिक अखबार निकलते हैं । शिच्चा के सम्बन्ध में, यहाँ अनेक 'अनुष्ठान' हैं । सन् १५५२ में जो ग्रामर-स्कूल स्थापित हुआ था उसकी सम्पत्ति की आमदनी उस समय केवल इक्कीस पौण्ड थी । अब उसी सम्पत्ति की आमदनी १५,००० पौण्ड हो गई है । इस ३०० वर्ष से अधिक समय में नगर की कैसी उन्नति हुई है, सो केवल इतने ही से जान लिया जा सकता है । हाई स्कूल बनने में ७१,००० पौण्ड खर्च हुए हैं । इसमें ६०० और इसके मातहत चार छोटे स्कूलों में १,५०० लड़के पढते हैं । 'मध्य देश के अनुष्ठान' (Midland Institute) नामक शिच्चालय में विज्ञान, भाषा, साहित्य, इतिहास आदि बहुत से विषयों का ज्ञान कराया जाता है । विज्ञान के विद्यार्थी ६०० और अन्यान्य विषयों के विद्यार्थी १,६०० यहाँ शिच्चा पाते हैं । कीन्स-कालेज को विश्वविद्यालय की ऐसी चमत्ता प्राप्त है । अब वहाँ केवल चिकित्सा और धर्मशास्त्र

पढाया जाता है । मेसन का वैज्ञानिक कालेज नया खुला है । इसके लिए महात्मा मेसन (Sir Tostiah Mason) एक लाख पौण्ड की सम्पत्ति दे गये हैं । विज्ञान आदि की शिक्षा और आलोचना के लिए यूरोप में अनेक लोग ऐसा दान कर गये हैं । इसके सिवा अनेक छोटे स्कूलों में ५०,००० के लगभग विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं । नवीन नियम के अनुसार बहुत से बार्ड-स्कूलों की स्थापना हुई है । उनमें दो लाख पौण्ड का खर्च और १६,००० बालका की शिक्षा का प्रबन्ध है । इस नगर में धनकुवेर कोई नहीं है, मगर थोड़ी बहुत सम्पत्ति सबके पास है । जो लोग इस समय अपने कारखानों में सैकड़ों लोगो से काम कराते हैं उनके बाप-दादों ने एक समय खुद मजदूरी की थी । कहन का मतलब यह कि स्थानीय मध्यवित्त श्रेणी के साथ उच्च और नीच की समान घनिष्ठता है और उसने द्वारा सब लोगो में परस्पर प्रेम भी सब है । स्वामी और सेवक में यहाँ ऐसा सद्भाव है कि वर्त्तमान सभ्य जगत् के अन्यान्य स्थानों की तरह यहाँ के मजदूर हड़ताल (Strike) बहुत कम करते हैं । नगर-निवासी लोग भले, भव्य और राजनीति में निपुण हैं । उच्चारण की विलक्षणता के कारण यहाँ की निम्न श्रेणी की बातें समझने में मुश्किल पडी थी, किन्तु फोर्थ-त्रिज के निकटस्थ गाँव की तरह नहीं । वहाँ की बातचीत तो किसी तरह समझ में ही नहीं आती थी । बर्मिंघम से महापुरुष राममोहन राय की समाधि देखने के लिए ब्रिस्टल को रवाना हुआ ।

ब्रिस्टल (Bristol) । एवन और फ्राम (Avon and Frome) नदियाँ मिल कर ब्रिस्टल के भीतर से बही हैं । यहाँ आने का प्रधान उद्देश्य था राजा राममोहन राय की समाधि देखना । होटल में उतरते ही आर्नो-वेल नामक कगरिस्तान (Arno's Vale Ce-

कारण अनेक तरह के रोगियों के लिए यहाँ का जल विशेष लाभ दायक है। इस कारण स्वास्थ्य-प्राप्ति के लिए बहुत से लोग यहाँ आया करते हैं। सब मिला कर साल में दस पन्द्रह हजार आइर्मा आते हैं। स्थानीय लोगों की संख्या ५०,००० के लगभग है। यहाँ का गिर्जा प्रसिद्ध है और थियेटर मुफरिसल के थियेटरों में श्रेष्ठ है। स्थानीय निम्नश्रेणी के लोगों में बहुत लोग s की जगह १ का उच्चारण करते हैं। जैसे सोमसेंड को जोमर्जेट।

बोर्नमाउथ (Bournemouth)। इंग्लैण्ड के उपकूलस्थ नगर गर्मियों में खूब गुलजार रहते हैं। बालक बूढ़े जवान सब आकर दस पन्द्रह बीस दिन खूब आनन्द से रेती के टीलो पर विहार कर जाते हैं। बोर्नमाउथ एक ऐसा ही छोटा स्थान (Watering Place) है। ६,००० आदमी यहाँ रहते हैं। यह नगर हेम्पशायर (Hampshire) के उपकूल में अवस्थित है। पीछे पहाड और सामने समुद्र रहने से हवा इतनी कोमल है कि यहाँ के लोग कहते हैं कि उन्होंने कभी बर्फ गिर कर जमीन पर जमते नहीं देखी। दमा खाँसी के बहुत से रोगी यहाँ रहते हैं। उनके लिए यहाँ कई आश्रम भी स्थापित हैं। यहाँ का पियर (Pier) ८०० फुट लम्बा है। पहाड के ऊपर घर और समुद्र-तट की जगली सडक बहुत ही मनोहर है।

एन्फील्ड (Enfield)। लन्दन से एक बार घूमता हुआ यहाँ आया और कई दिन रहा। नगर छोटा है। २०,००० के लगभग लोग रहते हैं। यहाँ पर एक पुराने महल का अवशेष है। अधिकांश स्थानीय लोग यहाँ के प्रसिद्ध बन्दूक के कारखाने में काम करते हैं। मार्टिनी-हेनरी (Martini-Henry) बन्दूक यहीं बनती है। इसके पास पहले शिकार का जङ्गल था। इस समय जंगल

फाट कर लन्दन के बहुत से सौदागरों ने विहार-बाग और विलास-भवन बनवाये हैं । उनमें से एक में लन्दन-प्रसिद्ध फाटक टेम्पल-वार (Temple-Bar) स्थापित किया गया है । रास्ते में टूटे प्राचीन फाटक का रहना ठीक न समझ कर लन्दन के एक प्रसिद्ध वियर-कारखाने के अधिकारी (Brewer Sir W Meux) ने इसे खरीद लिया और यहाँ लाकर लगवा दिया । उन्होंने इस फाटक को यहाँ अच्छी हालत में रक्खा है । नगर में न रह कर कई दिन तक जरा दूर पर बने हुए सराय-होटल (Inn) में ठहरा । वहाँ की मालकिन सदा मेरी सेवा-शुश्रूषा पर ध्यान रखती और कहती थीं कि “आप लन्दन के भद्र पुरुष हैं, हम लोग देहाती हैं । हमारा भोजन आपको कैसे पसन्द आ सकता है ?” साफ मैदान के बीच ट्रंक-रोड (Trunk Road) के किनारे इस होटल में मैं बड़े मजे से रहा ।

राम्जगेट (Ramsgate) । अस्वस्थता के कारण सन् १८६० के शीतकाल में महीने भर से अधिक समुद्र-तट पर रहा । यहाँ और निकटस्थ मार्गेट नगर (Margate) में कई एक समुद्र-जल के हम्माम हैं । वहाँ ओजन (Ozone) मिले पानी में स्नान करने से रोगियों को विशेष लाभ होता है । नगर समुद्र से उठे हुए खड़े पहाड़ पर बसा है । वॉर्नमाउथ की तरह गर्भियों में अनेक स्थानों से बहुत से लोग आब हवा बदलने के लिए इस स्थान में आकर दो चार सप्ताह रहते हैं । उसी से यहाँ के होटल और बोर्डिंग-हाउसों का काम साल भर चलता है । एक १,५०० और दूसरे १,२०० फुट के दो पियरो से १५० बीघे पानी घेर कर एक कृत्रिम हार्बर बनाया गया है । इसमें ४०० जहाज ठहर सकते हैं । इंग्लैण्ड के कृत्रिम हार्बरों में यही सबसे बड़ा है । पियरों पर टहलने

से खूब आराम मिलता है । एक पियर के मुहाने पर रोशनी-घर (Light-house) है । वहाँ से समुद्र का सुन्दर दृश्य और साफ दिन में दूसरे किनारे पर फ्रेंच-उपकूल देख पडता है । इस बन्दर गाह में नावे और जहाज बनते हैं और अनेक मछली के पकडने-वाले रोजगारी जहाज (Fishing Smacks) भी रहते हैं । यहाँ की लोक-सख्या २५,००० के लगभग है । इस साल का बडा दिन यहाँ हुआ था । लन्दन मे इस समय दूकाने और बाजार बहुत गुलजार रहते हैं । किसी किसी बडो दूकान के सामने विचित्र पोशाक पहने एक आदर्मा पिता-क्रिसमास (Father Christmas) बन कर तीसरे पहर फुटपाथ पर टहलता है । यहाँ दो तीन दिन पहले ही से सन्ध्या के समय छोटे छोटे बालक-बालिकाओं के भुण्ड भले आदमियों के द्वार पर “क्रिसमास-केरोल *” गाकर भिन्ना माँगते हैं । २५ दिसम्बर का दिन ईसा का जन्म दिन माना जाता है । लेकिन यह ठीक नहीं मालूम कि उनका जन्म-दिन कौन है । प्राचीन काल मे जब जूलियन (Julian) प्रथा के अनुसार साल गिनना शुरू नहीं हुआ था तब ६ ठी जनवरी को ईसा का जन्मदिन माना जाता था । पीछे से रोमन-सम्राट् प्रथम जूलियस के द्वारा वर्त्तमान नियम प्रचलित होने पर वह महोत्सव दिसम्बर की २५ तारीख को मनाया जाने लगा । परन्तु बाइबिल के वर्णन के अनुसार

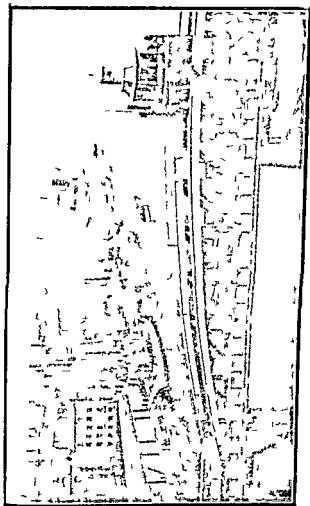
-
- Hark! the herald angels sing,
 Glory to the newborn King,
 Peace on earth and mercy mild,
 God and sinners reconciled,
 Hark! the herald angels sing
 Glory to the newborn King—(Christmas Card)

जून या जुलाई महीने में अर्थात् पालस्टाइन प्रदेश की प्रीम्पन्शु के मध्य समय में ईसा का जन्म-काल होना चाहिए । क्योंकि उक्त ग्रन्थ में ऐसा लिखा है कि उस समय भेड़ चरानेवाले रात को साफ आकाश के नक्षत्रों की रोशनी में भेड़ें घरा रहे थे । जूडिया-भूमि में गर्भियों में सूर्य की गढी फढी धूप होती है, दिन को जानवरों को मैदान में निकालना माना उन्हें मार डालना होता है । इसी कारण वहाँ इन दिनों रात को भेड़ें चराई जाती थीं । यह ईसा का जन्म-दिन गर्भियों से सर्दियों में कैसे चला गया, यह बतलाना कठिन है । हाँ, यह निश्चित है कि ईसा से पहले यूरोप में सूर्य देव के उद्देश्य से इस समय एरू महापर्व होता था । उसी की जगह पर अब यह त्योहार मनाया जाने लगा है । बड़े दिन को सूर्योदय के अनुसार अब भी साल के फलाफल का अनुमान किया जाता है । किन्तु साधारण मनुष्यों में यह विश्वास है ।

राज्य के लाइफ-बोट-स्टेशनों (Life-boat station) में रान्ज़-गंट एरू प्रधान स्थान है । नावों के सिवा एक स्टीमर यहाँ के बन्दरगाह में हमेशा काम पडने पर उसे करने के लिए तैयार रहता है । उसमें २४ घण्टे भाफ बना करती है । राज्य का उपकूल ५,००० मील है । साल में पृथ्वी के अनेक स्थानों से सात आठ सौ करोड़ पीण्ड के दाम की तरह तरह की तिजारती चीजों और अगण्य यात्रियों से भरे छ लाख से अधिक तरह तरह के जलयान यहाँ आते जाते हैं । उनमें दो लाख से अधिक माँझी मत्साह काम करते हैं । उन जहाजों में साल भर में २,००० के लगभग जहाज सम्पूर्ण नष्ट हो जाते हैं या टूट फूट जाते हैं । इन दुर्घटनाओं से सात आठ सौ के लगभग जाने भी जाती हैं । इस प्रकार की विपत्तियों से रक्षा करनवाले कई इन्स्टीत्यूट भी राज्य में हैं । ३०० के लगभग

नावे उनके पास हैं। जर्मनी, फ्रान्स और अमेरिका में भी ऐसे इन्स्टीट्यूट बहुत काम कर रहे हैं। किन्तु इस काम में पहला नम्बर इंग्लैण्ड का ही है। साल में कम से कम तीन जहाजों और ६०० के लगभग जाने इंग्लैण्ड के द्वारा बचाई जाती हैं। नावों की ऐसी व्यवस्था है कि किसी तरह उनके डूबने की सम्भावना नहीं। जहाँ पहाड़ में टफ़र लगने की आशङ्का से नाव नहीं जा सकती वहाँ राकेट (Rocket) छोड़ कर उसके साथ डबल रस्सी विपत्ति में पड़े हुए जहाज पर पहुँचाई जाती है। इस रस्सी के द्वारा (Life-buoy) भोज कर उनकी सहायता से लोग किनारे पर लाये जाते हैं। इस उपाय से भी साल में छ. सात सौ जाने बचाई जाती हैं। थोर तूफान या कठिन कुहासे के अन्धकार में सकट में पड़े हुए, जीवन की आशा छोड़ कर दीन दृष्टि से देख रहे, विदेशी जहाजों के मल्लाह प्रश्न-द्वारा जब कप्तान के मुख से सुन पाते हैं कि वे ब्रिटिश-उपकूल के पास हैं तब तुरन्त जीवन की आशा से उनके चेहरे खिल उठते हैं और वे दृढ विश्वास के साथ उच्च स्वर से कह उठते हैं कि “अब भय नहीं है, हम इंग्लैण्ड के निकट हैं, इशारा करो, अभी सहायता मिलेगी।” यह क्या इंग्लैण्ड के लिए कम गौरव की बात है ?

मार्गेट । यह राम्जगेट के बहुत ही पाम है। बीच बीच में यहाँ घूमने आता था। कभी कभी तो दिन भर यहीं बीत जाता था। नगर के पुराने हिस्से के रास्ते अच्छे नहीं हैं। किन्तु नये हिस्से के रास्ते और घर साफ-सुधरे हैं। चारों ओर गाड़ियों पर या पैदल टहलने के रास्ते सुन्दर हैं। यहाँ का पत्थर का ६०० फुट लम्बा और ६० फुट चौड़ा पियर ६०,००० पौण्ड की लागत से बना है। पियर के बाद लकड़ी की ‘जेटी’ (Jetty) है, उसके मोहरे पर



न्यूकसल—पृ० ६४५





चाहगो—पृ० ६७३



बाडाहस—पृ० ६७५

रोशनी-घर है ॥ समुद्र से खड़े पहाड़ के ऊपर २,५०० फुट लम्बा टेरेस (Terrace) है । उसके ऊपर से सामने समुद्र का दृश्य बहुत ही मनोहर जान पड़ता है ।

टाइन के तट पर बना हुआ न्यू कैसल (Newcastle upon Tyne) । सन् १८६१ में एडिनबरा से यहाँ आया । रोमन-साम्राज्य को अमलदारी में यहाँ एक पल्टन की छावनी थी । उसके बाद सन् १०२० में नार्मन-नरपति विलियम ने कैसल बनवाकर नगर बसाया । नदी से तीन पहाड़ निकलें हैं । उन्हीं के ऊपर और उनकी चोटियों पर बस्ती है । पुराने रास्ते और गलियाँ अच्छी नहीं हैं । नये रास्ते चौड़े और साफ हैं । यहाँ का प्रधान गिर्जा (St Nicholas Church) सन् ११५६ में बना था । इसकी मुकुटाकार चोटी देखने में बड़ी सुन्दर है । यह चोटी नगर की सब इमारतों से ऊँची है । अदालत का मकान एथेन्स के न शीसियस-मन्दिर के अकरण पर बना है । एक सड़क पर अर्ल ग्रे (Earl Grey) का मोन्यूमेन्ट स्थापित है । ऊँचे स्तम्भ की चोटी पर उनकी खड़ी मूर्ति है । एक पहाड़ पर प्राचीन कैसल का भग्नावशेष है । उसका ८० फुट ऊँचा टावर व्यास में ६२ × ५४ वर्ग फुट है । उसकी दीवार १४ फुट घन है । उद्भिद् और मास आदि खाने की चीजों का बाजार ६ बीघे में बहुत ही सुन्दर बना है । नदी के ऊपर तीन पुल हैं । उनमें एक डबल है, अर्थात् जल के ऊपर ८६ फुट की ऊँचाई पर पैदलों और घोडागाड़ियों का रास्ता है । उसके २५ फुट ऊपर रेल चलती है ॥ नदी-तट की 'की' (Quay) सुन्दर बनी है । साहित्य और विज्ञान से सम्बन्ध रखनेवाले कई इन्स्टीट्यूट, कालेज, स्कूल, अस्पताल, पागलखाना, जेलखाना, मान्शन-हाउस, एक्सचेञ्ज आदि की कई यहाँ की इमारतें देखने लायक हैं ।

कोयला, नोन और जहाज बनाने के स्थानीय कारखाने प्रसिद्ध हैं । जन-संख्या डेढ़ लाख से ऊपर है ।

इंग्लैण्ड की साधारण अवस्था । सन् १८६६ में १० करोड़ से अधिक राज-कर वसूल हुआ था । साढ़े नव करोड़ के लगभग इसी साल खर्च भी हुआ । इस साल जातीय ऋण था न्यूनाधिक ६८ करोड़ । एकसाल से साल में अन्दाजन एक करोड़ पाँच के सोने के सिक्के बनकर निकलते हैं । विक्टोरिया का खर्च था ३,८५,००० पाँच । उसमें ६०,००० पाँच उन्हें अपने लिए मिलता था । शाही-महल के नौकर-चाकरो की तनखाह साल में १,३१,२६० पाँच होती है । उनकी गृहस्थी का सालाना खर्च १,७२,५०० पाँच था । प्रिन्स आफ वेल्स की वृत्ति सालाना ४०,००० पाँच थी । प्रिन्स की स्त्री की वृत्ति १०,००० पाँच और सन्तानों की वृत्ति ३६,००० पाँच थी । विक्टोरिया की बड़ी लडकी (जर्मन-सम्राट् की माता) की वृत्ति ८,००० पाँच थी । द्वितीय राजकुमार (ड्यूक आफ् एडिनबरा) की वृत्ति २५,००० पाँच थी । जब की बात मैं लिख रहा हूँ तब १०,००० पाँच ही रह गई थी । जर्मन-साम्राज्य के अन्तर्गत पैतृक सम्पत्ति के अधिकारी होने पर उन्होने १५,००० पाँच छोड़ दिये । तृतीय पुत्र (ड्यूक आफ् कनाट) की वृत्ति २५,००० पाँच थी । चतुर्थ राजकुमार की विधवा स्त्री और अन्य राजकुमारियों में से हर एक की वृत्ति ६,००० पाँच थी । विक्टोरिया के छोटे चाचा की दो लडकियाँ थीं । एक (यह स्वामी के साथ इंग्लैण्ड में रहती थीं) की वृत्ति ५,००० पाँच और दूसरी (इनके स्वामी एक जर्मन प्रिन्स थे और यह सुसराल में ही रहती थीं) की वृत्ति ३,००० पाँच थी । राज कोष से १२ पण्डितों को १,१५० पाँच सालाना पेन्शन दी जाती थी । इस जगह पर एक बार इंग्लैण्ड के साथ फ्रान्स का

मिलान कीजिए । वहाँ एक वर्ष एक करोड़ सैंतालीस लाख पौंड राज-कर वसूल हुआ था । पृथ्वी के और किसी देश में इतने टेक्स नहीं हैं । खर्च भी आमदनी के बराबर ही हुआ था । ऋण था १२४ करोड़ पौंड । इसका सूद ही सालाना २५ करोड़ पौंड से अधिक देना पड़ता है । ऐसा भारी ऋण कभी किसी राज्य पर नहीं हुआ । ऋण का प्रधान कारण है सन् १८७० में जर्मनी की लड़ाई । उसमें ३७,१५,००,००० पौंड खर्च हुए थे और २,३०,००,००० पौंड विजेता लोगों को दण्ड देना पड़ा था । ब्रिटिश सरकारी आफिसों का खर्च इस प्रकार है—लार्डसभा का सालाना खर्च ४१,५५६ पौंड । कामन-सभा का ५२,०३५ पौंड । ट्रेजरी का ६०,५५३ पौंड । होम-डिपार्ट का ३२,२२६ पौंड । फारेन आफिस का ६०,०५० पौंड । औपनिवेशिक विभाग का ४१,६६४ पौंड । इंडिया आफिस का १,३३,८०८ पौंड । कर्मचारियों का वार्षिक वेतन इस प्रकार है—प्रधान मन्त्री के दो पदों का अलग अलग १०,००० पौंड । अन्य चार मन्त्रियों का अलग अलग ५,००० पौंड । आयर्लेण्ड के लार्ड लेफ्टिनेन्ट का २०,००० पौंड । प्रधान प्रधान सेनापतियों का ६,६३२ पौंड । लार्ड चैंसलर का १०,००० पौंड । एटर्नी-जेनरल (Attorney General) [हिन्दास्तान का एडवोकेट जेनरल] का ८,२२७ पौंड । (इसके सिवा फीस ५०,००० पौंड की औसत से) । चार साधारण अपील अदालतों के जजों का अलग अलग ६,००० पौंड । सुप्रीमकोर्ट के अपील-विभाग के “मास्टर आफ् दि रोल्ल्स” (Master of the Rolls) का ६,००० पौंड । पाँच जजों का अलग अलग ५,००० पौंड । हाईकोर्ट के चान्सरी (Chancery) विभाग के पाँच जजों का अलग अलग ५,००० पौंड । हाईकोर्ट के क्वीन्स बेन्च (Queens Bench) विभाग के लार्ड चीफ जस्टिस का ८,००० पौंड

और अन्य चौदह जजों का अलग अलग ५,००० पाँड [सन् १४६६ में लार्ड चीफ़ जस्टिस का वेतन १६० पाँड मात्र था] । खास लन्दन शहर के रेकार्डर (Recorder) अथवा प्रधान जज का ४,००० पाँड । लन्दन नगर के भिन्न भिन्न खण्डों की नीचे की दीवानी अदालतों के जजों में से एक का १,८०० पाँड और दस का अलग अलग १,५०० पाँड । पच्चीस नागरिक फौजदारी अदालतों के मजिस्ट्रेटों में से एक का १,८०० पाँड, टेईस का अलग अलग १,५०० पाँड और एक का १,००० पाँड । कटर्वरी के आर्च-विशप का १५,००० पाँड और यार्क के आर्चविशप का १०,००० पाँड । इंग्लैण्ड के भिन्न भिन्न स्थानों के ३३ विशपों का १,८०० से १०,००० पाँड तक । दोनो ब्रिटिश टापुओं के शिच-विभाग का खर्च एक करोड पाँड से अधिक है । डाक-विभाग का खर्च सात लाख पाँड के लगभग है । राजकीय पार्क और विहार-भाग का खर्च १०,००० पाँड और ब्रिटिश-न्यूजियम का खर्च डेढ़ लाख पाँड से अधिक है । Pound सेना अफसरों को मिलाकर, एक लाख पैंतीस हजार है । इसके सिवा मिलिशिया (Militia) फौज एक लाख चालीस हजार है । जहाजों सेना पचपन हजार (फ्रान्स की जल-सेना से कुछ अधिक) है । ५०० जड़ी जहाजों में से अस्सी लौहयान हैं । दूसरे के लिए फ्रेञ्च-प्रजा बनना जैसा कठिन है वैसे ही ब्रिटिश-प्रजा का स्वत्व पाना सहज है । इस सम्बन्ध में इंग्लैण्ड खूब उदार है । राज्य के आईन के अनुसार निम्नलिखित व्यक्तिगण ब्रिटिश-प्रजा के सब स्वत्वों को पा सकते हैं । एक, जिन लोगों ने ब्रिटिश-साम्राज्य के किसी अंश में जन्म लिया हो, उनके पिता-माता विदेशी हो तो कोई हानि नहीं । दूसरे, ब्रिटिश-द्वीप में उत्पन्न व्यक्तियों की सन्तान और सन्तान की सन्तान,

उसका जन्म चाहे जिस देश में हुआ हो । तीसरे, आईन की प्रथा के अनुसार जिन विदेशी प्रजाओं ने स्वदेश छोड़ कर ब्रिटन की अधीनता स्वीकार कर ली हो । इस सम्बन्ध में केवल हम लोगो का ही भाग्य बुरा है । किन्तु भारत में भेद-भाव या अलगाव रहने पर भी दोनों ब्रिटिश द्वीपों में पैर रखते ही हमारा रंग का दोष मिट जाता है, वहाँ हममें और ब्रिटिश-प्रजा में कोई अन्तर नहीं रह जाता । देहातों के किसान आदि साधारण श्रमजीवी लोगों के शिचि न होने पर भी उनमें भव्यता और एक प्रकार का वैर-भाव विशेष रूप से देख पडता है ।—

“ Honour and shame from no condition rise,
Act well thy part, there all the honour lies ”

—यह महावाक्य उनमें से अनेक का आदर्श सा हो रहा है । सुशिचितों के उच्च गुण निम्नश्रेणी में भी पहुँच गये हैं । इसके प्रमाण में यहाँ पर दो घटनाओं का उल्लेख किया जाता है । लङ्का-शायर (Lancashire) की किसी खान के नीचे से कल के द्वारा पिता और पुत्र ऊपर निकल रहे थे । इतने में उन्होंने देखा कि उनके बोझ से तेहरी रस्सी की दो लड़ें टूट गई हैं । तीसरी लड़ भी टूटने ही को है । वह केवल एक आदमी का बोझ सह सकती है, दो का नहीं । ऐसी विपत्ति के समय बिना किसी प्रकार की चिन्ता के पिता ने पुत्र को सम्बोधन करके इतना कहा कि “ God bless thee, lad, sit thee still, it we'ant had two Don't fret, I shall soon be with Jesus ” (अर्थात्, ईश्वर तुमको आशीर्वाद करें, स्थिर होकर बैठो, यह दो आदमियों को चढानहीं सकती, शोक न करना, मैं शीघ्र ही ईसा के पास उपस्थित होऊँगा ।) और नीचे के गहरे अन्धकार में फाँदकर प्राण

दे दिये । धर्म की शिक्षा और अभ्यास के बिना ऐसे संकट के समय कि कर्त्तव्य-विमूढ न होकर कर्त्तव्य स्थिर कर लेना कभी सम्भव नहीं । एक घटना और इस प्रकार है । एक समय केन्शाम और त्रिस्टल के बीच के टानेल के निकट दो कुली रेल के बाँध के ऊपर पत्थर सजा कर रख रहे थे । अचानक एक भारी शिला लुढ़क कर रेल-लाइन के ऊपर आ गई । इसी समय टानेल के भीतर मेल-ट्रेन का शब्द सुन कर सैकड़ों जाने बचाने के उद्देश्य से एक कुली दौड़ता हुआ लाइन पर से उस पत्थर को हटाने गया । दूसरा कुली "Quick for your life, Jim!" कहने भी न पाया था कि पत्थर हट गया, किन्तु वह उच्च हृदय का कुली गाडी के नीचे पड़ कर मर गया । परार्थपरता और कर्त्तव्यबोध रूब प्रबल न होने से घड़ी भर की देर न करके इस तरह पराये के लिए जान देना बहुत ही कठिन है । यहाँ के किसान आदि थोड़ा पढ़े-लिखे लोग भी कहते हैं कि "ईसा ने हमारे लिए प्राण दे दिये, इस कारण पराई सेवा में प्राण तक दे देना सर्वथा हमारा कर्त्तव्य है" । यूरोप के अन्यान्य देशों की अपेक्षा इंग्लैण्ड के किसान मुझे उन्नत और उदार जान पड़े । लन्दन या बड़े बड़े शहरों के मजदूर जितना राजनैतिक आन्दोलन करते हैं उतना वहाँ के देहाती आदमी नहीं । साधारण लाइब्रेरी और पाठागार इंग्लैण्ड में बहुत हैं । वे भी सर्वसाधारण प्रजा को शिक्षित बनाने में बहुत कुछ सहायता करते हैं । इस बात में ब्रिटिश-द्वीप सब देशों से श्रेष्ठ है । लन्दन में १०० के लगभग ऐसे अनुष्ठान हैं, और, सारे राज्य में ३०० से भी अधिक हैं । फ्रान्स में ८० से अधिक न होंगे । उनमें भी पेरिस में शायद ही २० हो । सारे जर्मन-साम्राज्य में १०० से कुछ ऊपर हैं । इटली में ७० से अधिक न होंगे । रूस में केवल १६ हैं ।

अमेरिका के यूनाइटेड स्टेट्स (United States) में १०० के लगभग हैं ।

कुसस्कार यहाँ भी कम नहीं हैं । गण्डमाला रोग (Scrofula) के सम्बन्ध में पहले यहाँ विश्वास था कि राजा या रानी के उस पर हाथ फेर देने से वह अच्छा हो जाता है । राजा दूसरे चार्ल्स को इसके लिए एक लाख रोगिया के शरीर पर हाथ फेरना पड़ा था । पण्डितवर जान्सन को भी उक्त रोग वचपन में था और उनके शरीर पर रानी अने (Anne) ने हाथ फेरा था । इस तरह के अनेक कुसस्कार या अन्धविश्वास इस समय भी अनेक शिश्तियों और अशिश्तियों में देख पड़ते हैं । पाठरूग्ण की जानकारी के लिए दो श्लोक यहाँ पर उद्धृत किये जाते हैं । किस वार में जन्म लेने से लडका कैसा होता है, इसका विवरण इन श्लोकों में है—

“Monday's child is fair of face,
Tuesday's child is full of grace,
Wed'day's child is full of woe,
Th'day's child has far to go,
Friday's child is loving and giving,
Sat'day's child works hard for its living,
But the child that's born on the Sab'th day,
Is blythe and bonnie and good and gay ”

लडके जब सोने जाते हैं तब उनकी मातायें आदि यह मन्त्र (Go-to-bed rhyme) पढ़ती हैं—

“Mathew, Mark, Luke and John
God bless the bed I lie on'
Four corners to my bed,
Four angels lying spread,
Two to foot and two to head,
Four to guard me when I'm dead ”

लोकचरित सभी जगह समान है । हम लोग जैसे अपने परासियो को “डरपोक माडवारी,” “हुज्जती बङ्गाली” आदि शब्दों से दूषित ठहराने में नहीं शरमाते वैसे ही इंग्लैण्ड में भी अनेक लोगों के मुख से “Canny Scotch,” “Silly Irish” “Lying Welsh” आदि वाक्य सुन पडते हैं । भिन्न भिन्न कौंटी या जिलों में भी परस्पर इसी तरह के श्लेष वाक्यों का प्रयाग किया जाता है । इसके प्रमाण में नीचे एक कविता उद्धृत की जाती है—

“Cheshire for men, Derbyshire for lead,
Berkshire for dogs, Devonshire for tin,
Belfordshire for naked flesh Wiltshire for hunting plumes,
And Lincolnshire for boys, And Middlesex for sin”

अब लन्दन के निकट मुर्दे जलाने के लिए एक कारखाना स्थापित हुआ है । इंग्लैण्ड में सबसे पहले सन् १७६६ की २६ वीं सितम्बर को शव-दाह किया गया था । लन्दन की एक विधवा ने वसीयतनामे में अपनी यह इच्छा प्रकट की थी कि उस की लाश जलाई जाय । श्राद्ध-भोज की रीति भी अब प्रचलित नहीं है, किन्तु सन् १७६० में “फार्मेर केल्ड” (Farmer Keld) के श्राद्ध के उपलक्ष में १,३२० रोटी, ८ टुकड़े हैम-मांस, ८ टुकड़े के पश्चाद्भाग, ३ मन मांस, ३ मन भेड का मांस, उससे भी अधिक पनीर और १,२०० बोतल बियर शराब के द्वारा ६ पेनी दक्षिणा सहित १,००० गरीबों को भोजन कराया गया था । विवाह में हम लोगों के यहाँ जैसे बर और बधू को प्रतिज्ञा करनी पडती है, इंग्लैण्ड में भी ३०० वर्ष पहले वैसे ही प्रतिज्ञा करने की रीति प्रचलित थी । यथा—“J N undersygnethe N to my wedded wyfe, for better, for worse, for richer, for-porer, yn sickness and in helthe, tyl deth us departe as holy churche

hath ordeyned, and thereto plygth the my trowthe ”
 स्त्री इतना न कह कर साधारण भाव से कहती थी—“To be
 honere and buxom in bedde and at the boorde ”
 (अर्थात् वर कहता था कि “अच्छे में, बुरे में, अमीरी में, गरीबी
 में, तन्दुरुस्तों की हालत में और बीमारी में धर्म की आज्ञा के
 अनुसार मैं इसे व्याहता स्त्री समझूंगा और इससे वैसा ही
 व्यवहार करूँगा । यह शपथ मैं अपनी मृत्यु तक के लिए करता
 हूँ” । स्त्री साधारणतः अधीनता स्वीकार करके कहती थी कि
 “शय्या में और भोजन के टेबिल पर मैं सदा प्रकृत और सुन्दर
 भाव से रहूँगी” ।)

जङ्गल-महल । ससार में जङ्गल की विशेष उपयोगिता है ।
 जङ्गल हमसे पहले पृथ्वी पर उत्पन्न हुए थे, मनुष्य जब निराश्रय
 अवस्था में पृथ्वी पर आया तब जङ्गल ने ही उसे आश्रय दिया ।
 किसी किसी जगह इस समय भी जङ्गल ही मनुष्य के लिए आश्रय
 है । पशुओं के लिए तो कहना ही क्या है ? लट्टे, जलाने का ईंधन
 और औषध-पत्र आदि अत्यन्त प्रयोजनीय सामग्री तो हमको
 हमेशा जंगल से ही मिलती है । इसके सिवा जङ्गल के द्वारा हवा
 की गर्मी और जाड़े की कमी तथा धरती की उपजाऊ शक्ति बढ़ती
 है । पहले इंग्लेण्ड में बहुत से जङ्गल थे । उनमें से बहुत से
 इस समय कट गये हैं । जो कुछ जंगल हैं उनमें से कुछ तो राजा
 की खास सम्पत्ति हैं और कुछ स्थायी बन्दोबस्त के अनुसार ठेके पर
 दिये हुए हैं । लन्दन के निकटवर्ती एपिंगवन (Epping Forest)
 देखने के लिए उसके पास के बुचस्ट्राम बुचमस्ट हिल (Bucchurst Hill) में
 जाकर एक दिन रहा । जंगल १०।१२ मील का लम्बा है ।
 चौड़ाई तीन मील से अधिक न होगी । जगह जगह पर यह जंगल

लोकचरित सभी जगह समान है । हम लोग जैसे अपने परासियों को “डरपोक माडवारी,” “हुज्जती बङ्गाली” आदि शब्दों से दूषित ठहराने में नहीं शरमाते वैसे ही इंग्लैण्ड में भी अनेक लोगों के मुख से “Canny Scotch,” “Silly Irish” “Lying Welsh” आदि वाक्य सुन पडते हैं । भिन्न भिन्न कौंटी या जिलों में भी परस्पर इसी तरह के श्लेष वाक्यों का प्रयोग किया जाता है । इसके प्रमाण में नीचे एक कविता उद्धृत की जाती है—

“Cheshire for men, Derbyshire for lead,
Berkshire for dogs, Devonshire for tin,
Belfordshire for naked flesh Wiltshire for hunting plumes,
And Lincolnshire for boys, And Middlesex for sin”

अब लन्दन के निकट मुर्दे जलाने के लिए एक कारखाना स्थापित हुआ है । इंग्लैण्ड में सबसे पहले सन् १७६६ की २६ वीं सितम्बर को शव-दाह किया गया था । लन्दन की एक विधवा ने वसीयतनाम में अपनी यह इच्छा प्रकट की थी कि उस की लाश जलाई जाय । श्राद्ध-भोज की रीति भी अब प्रचलित नहीं है, किन्तु सन् १७६० में “फार्मेर केल्ड” (Farmer Keld) के श्राद्ध के उपलक्ष में १,३२० रोटी, ८ टुकड़े हैम-मांस, ८ टुकड़े के पञ्चाङ्गाग, ३^१/_२ मन मांस, ३ मन भेड का मांस, उससे भी अधिक पनीर और १,२०० बोतल बियर शराब के द्वारा ६ पेनी दक्षिणा सहित १,००० गरीबों को भोजन कराया गया था । विवाह में हम लोगों के यहाँ जैसे वर और बधू को प्रतिज्ञा करनी पडती है, इंग्लैण्ड में भी ३०० वर्ष पहले वैसे ही प्रतिज्ञा करने की रीति प्रचलित थी । यथा—“J N undersygnethe N for my wedded wyfe, for better, for woise, for richer, for-porer, yn sickness and in helthe, tyl doth us departe as holy chuche

officered and manned, it should not be possible for a serious expedition to leave the enemy's port without a British fleet being immediately in pursuit"—*T. A.*

Brassey

बहुत तग है । जङ्गल का बहुत हिस्सा घूमकर देख आया । भीतर खूब सफाई है । जगह जगह बेञ्चें रक्खी हैं ।

वाणिज्य और सामुद्रिक शक्ति । ऐसा वाणिज्य-प्रधान देश पृथ्वी पर और दूसरा नहीं है । ३७,००० के लगभग जहाज़ खास ब्रिटिश-पताका उडाते हुए दिग्दिगन्तर में भ्रमण करते फिरते हैं । समुद्र-मार्ग का आधे के लगभग माल (तीस वर्ष के लगभग हुए इस माल की कीमत १२० करोड पौंड कूती गई थी । इसमें से ७५ करोड पौंड का माल ब्रिटिश-द्वीप के हिसाब में आता है ।) ब्रिटिश-साम्राज्य के जहाज लादते हैं । केवल स्टीमरों का हिसाब लगाने से और भी अधिक पत्ता पडता है । अर्थात् सब जातियों के स्टीमरों पर जितना माल लदता है उसका दो-तिहाई विशाल ब्रिटिश साम्राज्य के स्टीमरों पर चालान होता है । इंग्लैण्ड में मुक्त-वाणिज्य (Free Trade) की प्रथा प्रचलित है । चिकोरी, काफी, कोको, शराब, तम्बाकू, समूची धातुएँ और सूखे फल, इन्हीं चीजों पर चुङ्गी है । इंग्लैण्ड के कारीगर विदेशी बनी हुई चीजों (Manufacture) के ऊपर महसूल लगवाने के लिए अनेक बार चेष्टा करके भी सफलमनोरथ नहीं हुए । ब्रिटिश-साम्राज्य की रक्षा के लिए इंग्लैण्ड को ३३ करोड पौंड से भी ऊपर सालाना खर्च करना पडता है । उसमें २ करोड से अधिक स्थल-सेना में (इसमें से अधिकांश खर्च भारत को देना पडता है ।) और १३ करोड जल-सेना में खर्च होता है । समुद्र में इंग्लैण्ड की बड़ी जवर्दस्त ताकत है । जिब्राल्टर, माल्टा, अदन आदि स्थान हाथ में रहने से भूमध्यसागर में तो उसका एकाधिपत्य ही देख पडता है । एक महाशय कहते हैं—“As long as our Navy is maintained at its proper strength, and is efficiently

अनायास ही एक से दो गिनी तक फीस मिलेगी । साधारणतः डाक्टर लोग रोगी की अवस्था के अनुसार फीस लेते हैं । जो मनुष्य जितना घर का किराया देता है उससे उसी हिसाब से फीस ली जाती है । इस तरह एक एक डाक्टर को २१ शिलिंग से १०१ शिलिंग तक फीस मिल जाती है । रात को सब डाक्टर डबल-फीस लेते हैं । जो बाहर जाने का नियत समय है उसके अलावा दूसरे समय में दिन को बुलाने से ड्यूटी फीस देनी पड़ती है । एक घर में एक से अधिक रोगी देखना पड़ता है तो प्रति रोगी आधी फीस देनी पड़ती है । छ महीने या एक साल बाद डाक्टर लोग फीस वसूल करने के लिए बिल भेजते हैं । उसमें फीस और दवा के दाम एक ही में जोड़कर लिख दिये जाते हैं । किसी को अगर कुछ सन्देह हो तो वह उस डाक्टर की डिस्पेन्सरी में जाकर अपना हिसाब देख सकता है ।

महान् पुरुषों का सम्मान । महात्मा रेनन का कथन है कि—
 “La valeur morale de l'homme est en proportion de la faculté d'admirer” (The moral worth of the man is in proportion to his faculty to admire)—*Ernest Renan* अर्थात् मनुष्य की असली कीमत ठीक करने में देखना चाहिए कि उसमें गुण की प्रशंसा करने की वृत्ति कितनी विकसित है, अर्थात् हम जितना और के गुण की प्रशंसा जी खोलकर कर सकते हैं उतना ही हम उन्नत हैं । लन्दन में रहते समय मुझे इस बात के अनरु प्रमाण मिले हैं कि अँगरेज जाति का इस बात में अद्बल नम्बर है । हर साल पहली मई को सभ्य-ससार के अनेक स्थानों में श्रमजीवी लोग किसी प्रकाश्य स्थान में एकत्र होकर परस्पर की उन्नति की आलोचना करते हैं । लन्दन में कार्य

लन्दन ।

लन्दन का हाल पहले ही यथाशक्ति लिखने की चेष्टा ल जा चुकी है । सब हाल लिख सकना तो मनुष्य शक्ति के बाहर ही है । तथापि और दो-एक वहाँ पर लिखकर इंग्लैण्ड और लन्दन से विदा होने इच्छा है ।

वाईकौन्ट हिन्टन (Viscount Hinton) । यह लार्ड पुलोट (Earl Poulett) के बड़े लडके और उत्तराधिकारी हैं । पिता की इच्छा के विरुद्ध अपनी प्रतिष्ठा के अयोग्य लडकी से शादी कर लेने के कारण पिता ने कुपित हो इनको घर से निकाल दिया था । उसके बाद जीविका चलाने के लिए इन्होंने कुछ दिन थियेटर में काम किया । पीछे से हमने उनको राह में साधारण भिच्चुकी की तरह अर्गन बजाकर भीख माँगते देखा । अर्गन के सामने उनका नाम और वश-मर्यादा लिखी हुई थी । रास्ते में अगर कोई उनसे कुछ राजनैतिक प्रश्न करता था तो वह उसे उसका भी उत्तर देते थे ।

डाक्टर का मेहनताना या फीस । डाक्टरो की फीस के सम्बन्ध में इंग्लैण्ड में बहुत अच्छा नियम है । जो डाक्टर गुरीबो की बस्ती पूर्व-विभाग अर्थात् ईस्ट-एण्ड में २१ या ३१ शिलिंग फीस लेते हैं वे ही वेस्ट-एण्ड (पश्चिमविभाग) में धन-कुबेरो में आकर रहें तो उन्हें

यह स्वभाव किसी तरह दोष में नहीं गिना जाता । बल्कि इसके न होने से ही अनेक जगह अनेक अनिष्ट हो जाया करते हैं । जिस जाति या सम्प्रदाय में वीर-पूजा की प्रवृत्ति है ही नहीं या कम है वह जाति नैतिक जीवन में निस्सन्देह उतनी ही गिरी हुई है । इसका सजीव उदाहरण हमारा देश है, जहाँ किसी की प्रशंसा सुन पडना बहुत कठिन है । दस जनों के सामने जी भर कर किसी की भी प्रतिष्ठा करना हमारे देश से उठ सा ही गया है । अगर कोई उदार-चेता पुरुष कहीं किसी पुरुष की सोलहो आने प्रशंसा करता है और वह प्रतिष्ठित पुरुष सम्पूर्ण रूप से उस प्रकार की प्रशंसा के योग्य होता है तो भी उसे सुनकर कम से कम दो चार आदमी “किन्तु” लगाकर उस पुरुष की दो एक साधारण त्रुटियों को अतिरञ्जित करके बखानते हैं और उस प्रशंसा करनेवाले को लज्जित करने के लिए पूर्ण चेष्टा किये बिना नहीं रहते । छिद्रानुसन्धान की अत्यन्त नीच वृत्ति हम लोगो में इतनी प्रबल हो उठी है कि हम किसी की सोलहो आने प्रशंसा सुन नहीं सकते । किसी प्रतिष्ठित और गुणो पुरुष में यदि एक-दो सामान्य दोष भी हो तो उन पर ध्यान न देना ही धर्म है । पानी छोड़ कर दूध पी लेनेवाले हस की तरह दोष की ओर दृष्टि न करके केवल अवश्य अनुकरणीय गुणों की जी खोल कर प्रशंसा करना ही उच्च वृत्ति है । केवल स्वजातीय मनुष्यो पर ही हमारा यह कोप नहीं है । हममें से कुछ लोगों में परो-त्कर्षासहिष्णुतारूपी यह कुसस्कार ऐसी घृणित अवस्था को पहुँच गया है कि हम किसी की भी कोई अच्छी बात देख कर भी उसकी प्रशंसा करना कैसा, यदि किसी तरह उसमें कोई नुक्स नहीं निकाल पाते तो बहुत व्यथित होते हैं । इस बारे में यूरोप—खास कर इंग्लैण्ड—का पद बहुत ऊँचा है । वहाँ किसी को आप कोई चीज या कोई

होता है । उस दिन कलेवा करने के बाद अनेक सम्प्रदायों के लोग अपना अपना झंडा लिये बाजे गाजे के साथ हाइड पार्क के सुविस्तृत मैदान में जाते हैं । सन् १८६० की इसी तारीख को १० लाखों के लगभग आदमी वहाँ जमा होकर सारे दिन लेकूचर आदि देहों के बाद निकल रहे थे । इसी समय सपत्नीक महात्मा ग्लाडस्टोन गाड़ी पर सवार छिपे तौर से सामने से आ रहे थे । अचानक एक व्यक्ति की दृष्टि उधर पड़ गई । उसने जैसे टोपी उतार कर ग्रैंड ओल्ड मैन (Grand old man) कहा वैसे ही सब लोगों ने टोपी उतार कर उच्च स्वर से यही कहना शुरू किया । यह दृश्य बड़ा ही मनोहर था । बहुत लोगों को मालूम होगा कि वृद्ध मन्त्रिपरिवार की पुस्तकों का बड़ा शौक था । किसी पुस्तक की दूकान में वह जाते थे तो उस दूकान के द्वार पर उन्हें केवल एक बार देखने के लिए इतने लोग जमा हो जाते थे कि पुलिस की सहायता के बिना उनका बाहर निकलना कठिन हो जाता था । जब मैं लन्दन में था उस समय भारतवन्धु जान ब्राइट, धर्मात्मा कार्डिनल मैनिंग (Cardinal Manning), जगत्प्रसिद्ध पादरी स्पार्जन (Rev'd Spurgeon) कई बड़े आदमियों की मृत्यु हुई । उनकी इस जीवन की अन्तिम अवस्था उपस्थित होने पर लोगों में जैसी घबराहट और चिन्ता थी तथा उनके मरने पर लन्दनवासियों ने उनके प्रति असामान्य सम्मान दिखाकर जैसे महत्त्व का परिचय दिया उससे हम विशेष ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं ।

वीर-पूजा करना मनुष्य का स्वभाव है । केवल मनुष्य ही का स्वभाव क्यों, जीव जगत् में सर्वत्र ही श्रेष्ठ का सम्मान और समर्थ की पूजा होते देखी जाती है । सिंह पशुओं का राजा है । मधुमक्खियों में भी रानी होती है । धानरों का भुण्ड सरदार के बिना नहीं रहता ।

यह स्वभाव किसी तरह दोष में नहीं गिना जाता । बल्कि इसके न होने से ही अनेक जगह अनेक अनिष्ट हो जाया करते हैं । जिस जाति या सम्प्रदायमें वीर-पूजा की प्रवृत्ति है ही नहीं या कम है वह जाति नैतिक जीवन में निस्सन्देह उतनी ही गिरी हुई है । इसका सजीव उदाहरण हमारा देश है, जहाँ किसी की प्रशंसा सुन पडना बहुत ऋठिन है । दस जनों के सामने जी भर कर किसी की भी प्रतिष्ठा करना हमारे देश से उठ सा ही गया है । अगर कोई उदार-चेता पुरुष कहीं किसी पुरुष को सोलहो आने प्रशंसा करता है और वह प्रतिष्ठित पुरुष सम्पूर्ण रूप से उस प्रकार की प्रशंसा के योग्य होता है तो भी उसे सुनकर कम से कम दो चार आदमी “किन्तु” लगाकर उस पुरुष की दो एक साधारण त्रुटियों को अतिरञ्जित करके बयानते हैं और उस प्रशंसा करनेवाले को लज्जित करने के लिए पूर्ण चेष्टा किये बिना नहीं रहते । छिद्रानुसन्धान की अत्यन्त नीच वृत्ति हम लोगो में इतनी प्रबल हो उठी है कि हम किसी की सोलहो आने प्रशंसा सुन नहीं संकते । किसी प्रतिष्ठित और गुणो पुरुष में यदि एक-दो सामान्य दोष भी हो तो उन पर ध्यान न देना ही धर्म है । पानी छोड़ कर दूध पी लेनेवाले हंस की तरह दोष को और दृष्टि न करके केवल अवश्य अनुकरणीय गुणो की जी खोल कर प्रशंसा करना ही उच्च वृत्ति है । केवल स्वजातीय मनुष्यो पर ही हमारा यह कोप नहीं है । हममें से कुछ लोगो में परो-त्कर्षासहिष्णुतारूपी यह कुसरकार ऐसी घृणित अवस्था को पहुँच गया है कि हम किसी की भी कोई अच्छी बात देख कर भी उसकी प्रशंसा करना कैसा, यदि किसी तरह उसमें कोई नुकस नहीं निकाल पाते तो बहुत व्यथित होते हैं । इस बारे में यूरोप—खास कर इंग्लैण्ड—का पद बहुत ऊँचा है । वहाँ किसी को आप कोई चीज या कोई

लेख दिखलाइए तो वह देखनेवाला निस्सङ्कोच “बहुत उत्तम है” कह कर उसकी प्रशंसा करेगा । यहाँ तक कि वहाँ का अँगरेज परम शत्रु की भी प्रशंसा सुन कर उसका अनुमोदन करने में पश्चात्पद न होगा । आत्मीय समझ कर उत्साह, पाने की आशा से अगर कोई आनन्द के साथ अपनी कोई कृति या चीज दिखलाता अथवा किसी विषय का उल्लेख करे तो उसकी उलटे निन्दा करना या दांप दिखाकर उसे हीन बनाने की चेष्टा करना निस्सन्देह बड़े नीच पुरुष का काम है ।

यहाँ पर एक घटना मुझे याद आगई । एक मेरे मित्र ने बड़े प्यार के साथ दो बहुत ही सुन्दर कुत्ते मुझे उपहार में दिये । कुत्ते ऐसे सुन्दर और वढिया थे कि देखनेवाला तारीफ किये बिना नहीं रह सकता था । उन कुत्तों के मेरे घर आने के दूसरे दिन सयोगवश दो तीन अँगरेज-रमणियाँ और एक अँगरेज मुझसे मिलने के लिए आये । सवने कुत्तों को देख कर “बहुत अच्छे हैं” “बड़े ही सुन्दर हैं” “ऐसे कुत्ते कम देख पडते हैं” इत्यादि वाक्यों से बारम्बार उनकी प्रशंसा की । उसके कईदिन बाद मेम की पोशाक पहने, अच्छी तरह अँगरेजी पढी-लिखी, किन्तु मातृभाषा को भूली हुई, एक ईसाइन होगई प्रतिष्ठित वंग-महिला ने मेरे यहाँ पदार्पण किया । मेरी स्त्री ने वैसे ही आनन्द के साथ अन्य अँगरेज महिलाओं के समान इस महिला को भी वे कुत्ते दिखाये । कुत्ते देखकर उस रमणी ने कुछ भी नहीं कहा । मेरी स्त्री ने कुछ चुन्ब होकर कहा—“कल अमुक अमुक मेम और साहब इन्हें देख कर इनकी खूब बडाई कर गये हैं । आपकी क्या राय है ?” । इसके उत्तर में उस देशी मेम ने कहा—“हमारे यहाँ भी इनसे अच्छे कुत्ते थे । कुत्ते पालना भ्रष्ट है । इसी से अब मैं कुत्ते नहीं रखती” । इसके बाद घर-गृहस्थों की बात-चीत शुरू हुई ।

वह—आपका लड़का कैसा पढता-लिखता है ?

मैरी स्त्री—अपनी परीक्षा में उसका दूसरा नम्बर आया है ।

वह—क्लास में शायद चार ही पाँच लड़के हैं ?

मैरी स्त्री—नहीं जी, चालीस पचास के लगभग होंगे ।

इस पर भी उस रमणी को विश्वास नहीं हुआ । लड़के को बुलाकर पूछा कि क्लास में कितने लड़के हैं । और, जब मालूम हुआ कि क्लास के ४०।५० लड़कों में उसका दूसरा नम्बर आया है, तब मनही मन दुःखित हुई ।

यह हाल मुझे सुना कर मैरी स्त्री ने कहा—“केवल मेमो की ऐसी पोशाक पहन लेने से कुछ नहीं होता, उनकी ऐसी बुद्धि और सूझ बूझ भी तो चाहिए” । इसी से मैं भी कहता हूँ कि, परश्रीकातरता, डाह आदि भाव हमारी अस्थि-मज्जा में ऐसे घुस गये हैं कि सहज में उनको हृदय से दूर कर सकना असम्भव ही है । यहाँ तक कि बचपन से विलायत में शिचित आज-कल के बड़े नामी “भारतवाद्धार करनेवाले” स्वजाति-वत्सल” एक दो हिन्दुस्तानी भाइयों को भी इस ईसाइन रमणी से भी नीच-प्रकृति का मैंने पाया !

लन्दन के कई एक दृश्य । लन्दन के दृश्यों का कुछ कुछ हाल पहले कहा जा चुका है । पुस्तक बढ जाने के खयाल से बहुत कुछ छोड दिया है । तथापि यहाँ पर और दो एक बातों का उल्लेख आवश्यक प्रतीत होता है । रायल-एकोयेरियम में मोम की मूर्तियों के द्वारा फ्रेञ्च-विप्लव की कुछ घटनायें दिखाई जाती हैं । उन घटनाओं में से राजा रानी की हत्या के बाद मोची साइमन के घर में पिटू-माट्ट-हीन राज-कुमारकी दुर्दशा का दृश्य देख कर दर्शक के आँसू नहीं रुक सकते ।

लेख दिखलाए तो वह देखनेवाला निस्सङ्कोच “बहुत उत्तम है” कह कर उसकी प्रशंसा करेगा । यहाँ तक कि वहाँ का अँगरेज परम शत्रु की भी प्रशंसा सुन कर उसका अनुमोदन करने में पश्चात्पद न होगा । आत्मीय समझ कर उत्साह, पाने की आशा से अगर कोई आनन्द के साथ अपनी कोई कृति या चीज दिखलाता अथवा किसी विषय का उल्लेख करे तो उसकी उलटे निन्दा करना या दोष दिखाकर उसे हीन बनाने की चेष्टा करना निस्सन्देह बड़े नीच पुरुष का काम है ।

यहाँ पर एक घटना मुझे याद आ गई । एक मेरे मित्र ने बड़े प्यार के साथ दो बहुत ही सुन्दर कुत्ते मुझे उपहार में दिये । कुत्ते ऐसे सुन्दर और बढ़िया थे कि देखनेवाला तारीफ किये बिना नहीं रह सकता था । उन कुत्तों के मेरे घर आने के दूमरे दिन सयोगवश दो तीन अँगरेज-रमणियाँ और एक अँगरेज मुझसे मिलने के लिए आये । सवने कुत्तों को देख कर “बहुत अच्छे हैं” “बड़े ही सुन्दर हैं” “ऐसे कुत्ते कम देख पडते हैं ” इत्यादि वाक्यों से वारम्बार उनकी प्रशंसा की । उसके कई दिन बाद मेम की पोशाक पहने, अच्छी तरह अँगरेजी पढी-लिखी, किन्तु मातृभाषा को भूली हुई, एक ईसाइन होगई प्रतिष्ठित बंग-महिला ने मेरे यहाँ पदार्पण किया । मेरी स्त्री ने वैसे ही आनन्द के साथ अन्य अँगरेज महिलाओं के समान इस महिला को भी वे कुत्ते दिखाये । कुत्ते देखकर उस रमणी ने कुछ भी नहीं कहा । मेरी स्त्री ने कुछ चुन्च होकर कहा—“कल अमुक अमुक मेम और साहब इन्हें देख कर इनकी खूब बडाई कर गये हैं । आपकी क्या राय है ?” । इसके उत्तर में उस देशी मेम ने कहा—“हमारे यहाँ भी इनसे अच्छे कुत्ते थे । कुत्ते पालना भ्रष्ट है । इसी से अब मैं कुत्ते नहीं रखती” । इसके बाद घर-गृहस्थी की बात-चीत शुरू हुई ।

वह—आपका लडका कैसा पढता-लिखता है ?

मेरी स्त्री—अब की परीक्षा में उसका दूसरा नम्बर आया है ।

वह—क्लास में शायद चार ही पाँच लडके हैं ?

मेरी स्त्री—नहीं जी, चालीस पचास के लगभग होंगे ।

इस पर भी उस रमणी को विश्वास नहीं हुआ । लडके को बुलाकर पूछा कि क्लास में कितने लडके हैं । और, जब मालूम हुआ कि क्लास के ४०।५० लडकों में उसका दूसरा नम्बर आया है, तब मनही मन दुःखित हुई ।

यह हाल मुझे सुना कर मेरी स्त्री ने कहा—“केवल मेमो की ऐसी पोशाक पहन लेने से कुछ नहीं होता, उनकी ऐसी बुद्धि और सूझ बूझ भी तो चाहिए” । इसी से मैं भी कहता हूँ कि परश्रीकातरता, डाह आदि भाव हमारी अस्थि मज्जा में ऐसे घुस गये हैं कि सहज में उनको हृदय से दूर कर सकना असंभव ही है । यहाँ तक कि वचपन से विलायत में शिचित्त आज-काल के बड़े नामी “भारतोद्धार करनेवाले” स्वजाति-वत्सल” एक दो हिन्दुस्तानी भाइयों को भी इस ईसाइन रमणी से भी नीच प्रकृति का मैंने पाया ।

लन्दन के कई एक दृश्य । लन्दन के दृश्यों का कुछ कुछ हाल पहलें कहा जा चुका है । पुस्तक बढ जाने के खयाल से बहुत कुछ छोड दिया है । तथापि यहाँ पर और दो एक बातों का उल्लेख आवश्यक प्रतीत होता है । रायल-एकोयोरियम में मोम की मूर्तियों के द्वारा फ्रेश्व-विप्लव की कुछ घटनाये दिखाई जाती हैं । उन घटनाओं में से राजा रानी की हत्या के बाद मोची साइमन के घर में पितृ-मातृ-हीन राज-कुमारकी दुर्दशा का दृश्य देख कर दर्शक के आँसू नहीं रुक सकते ।

“नायेगारा” का दृश्य भी बहुत सुन्दर देखा । जान पड़ता था, जैसे सचमुच ही सामने जल गिर रहा है । जिस युद्ध के सम्बन्ध में वेलिंगटन ने कहा था कि “The hardest battle I ever fought and the greatest victory I ever won” उसी युद्ध में कैसे उद्देग के साथ केवल टोपी के इशारे से “Up, Guards, and at 'em”, कह कर उन्होंने सेना को धावा करने का हुक्म दिया । यह दृश्य भी बहुत अच्छे ढंग से दिखलाया गया था । फ्रेंच-सेना की आशु-पराजय देखकर किकर्तव्य-विमूढ़ अवस्था में घोड़े पर कठपुतली की तरह निस्तब्ध खड़े हुए नेपोलियन का दृश्य भी बहुत ही शिक्ताप्रद था । एक घण्टे में दर्शक की सहायता से फ्रेंच-विप्लव की घटनाओं के दृश्य देखे । इस युद्ध में जय पाने के बाद समरभूमि में बैठ कर वेलिंगटन ने राजा के पास जो लम्बा-चौड़ा पत्र लिख कर भेजा था वह सन् १८१५ की २२ जून के टाइम्स में विस्तार के साथ प्रकाशित हुआ था । सन् १८८५ की ७ नवम्बर के टाइम्स में ट्राफलार-युद्ध के घृतान्त सहित लार्ड कलिंगडल का पत्र प्रकाशित हुआ था । इन दोनों टाइम्स की सख्याओं को मैं लन्दन से खोज कर अपने साथ लेता आया हूँ । लेकिन स्थानाभाव से वे पत्र यहाँ पर प्रकाशित नहीं किये जाते । ऊपर लिखे दृश्य आदि के सिवा “वाइल्ड ईस्ट” (Wild East) देखा । ओलिम्पिया के भारी मैदान में अलजीरिया, मरको आदि देशों के कुछ मर्द, औरते और लडके मँगा कर अरब आदि असभ्य मुसलमान-राज्यों का जीवन प्रत्यक्ष-रूप से दिखलाया गया था । अर्थात्, उसी तरह दल के दल घुड़-सवार लुटेरों की लोला, गृहस्थों के दैनिक आचार-व्यवहार वहीं के निवासियों के द्वारा दिखलाये गये थे । पेरिस के हिपोड्राम में

एम व्फा इसी तरह “वाइल्ड वेस्ट” (Wild West) देखा था। वहाँ वफेलो-बिल (Buffalo Bill) नाम से प्रसिद्ध एक अमेरिकन तमाशे-वाले ने अनेक अमेरिका के आदिमनिवासियों के द्वारा घोड़े की पीठ पर से भैंसे का शिकार आदि दृश्यों से उनका जगली जीवन दिखलाया था ।

विज्ञापन के सम्बन्ध में यूरोप में, खास कर इंग्लैण्ड में, जो कुछ देखा उससे मुझे मालूम हो गया कि ये लोग रोजगार जमाने के लिए जी खोल कर पैसा खर्च करने में कुछ भी कसर नहीं रखते । लब्धप्रतिष्ठ अर्थात् प्रसिद्ध हो चुके रोजगारी तक विज्ञापन-प्रचार के लिए, लोगो का ध्यान विज्ञापन की ओर आकृष्ट करने के उद्देश्य से, नित्य नये नये ढंग निकालते हैं—रग-तमाशे, विचित्र गाड़ी-घोड़े और सवार निकाल कर विज्ञापन का प्रचार करते हैं । एक दिन देखा, एक बाल बढाने की दवा बेचनेवाले की दूकान में शीशेदार दरवाजे के पास लम्बे लम्बे बाल खोले तीन सुन्दरी युवती बैठी हैं । फुटपाथ पर खड़े हुए अनेक आदमी उनके बालों की तारीफ कर रहे हैं । अद्भुत विज्ञापन था । यूरोप के, खास कर इंग्लैण्ड के, बालक बूढे जवान औरत मर्द सबको पृथ्वी के भिन्न भिन्न भागों के सिक्के, डाक टिकट आदि आधुनिक चीजों और प्राचीन विचित्र चीजों तथा प्रसिद्ध आदिमियों के हस्ताचरों के समूह का बडा शौक है । अपन अपने सामर्थ्य के अनुसार इन चीजों का समूह सभी करते हैं । एक मध्यवित्त श्रेणी की गृहस्थ-महिला के पास अनेक देशों के नये-पुराने सोने के सिक्के इतने देखे कि उनका समूह करने में उसके एक लाख से कम रुपये न खर्च हुए होंगे । उसी महिला के घर में भारत की ३०० से अधिक जातियों के लकड़ों के बने सिर रखे हैं और उन पर भिन्न भिन्न प्रकार की पगड़ियाँ

बंधी हैं । लन्दन में एक पारसी ने हिन्दुस्तानी चीजों की दूकान खोली है । वह मोटे पैसे को ३ पेनी का, मामूली खस का पखा १ शिलिंग को, इसी तरह सब चीजें बेचता है ।

लन्दन के इष्ट-मित्र । ब्रिटिश-न्यूजियम के कई एक मित्रों में से पादरी लायन्स (Rev'd Ponsonby A. Lyons) एक भारी पण्डित थे । एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका का १४ सफ का "डिक्शनरी" (Dictionary) शीर्षक लेख उन्हीं का लिखा हुआ है । पृथ्वी की सारी भाषाओं के कोषों का सारा विवरण उसमें विस्तृतरूप से लिखा गया है । इतने बड़े पण्डित होने पर भी वह ऐसे सरल और विनीत थे कि मैं कभी कभी अपने अँगरेजों लेखों को सशोधन के लिए उनके पास ले जाता था तो वह कहते थे कि "अच्छा लिखा है, हाँ, अगर मैं होता तो इस बात को इस तरह लिखता या इस शब्द की जगह यह शब्द लिखता, इत्यादि ।" किसी वारे में प्रश्न करने पर उस सम्बन्ध में सुन्दर उपदेश देते थे, अथवा उस विषय की किसी पुस्तक का नाम लेकर उसे देखने को कहते थे । मैंने एक बार उनसे पूछा कि "आप देश-पर्यटन करने क्यों नहीं जाते?" इसके उत्तर में उन्होने कहा—"मैं इस न्यूजियम में ही पृथ्वी के भूत भविष्य, वर्तमान की सबर पाता रहता हूँ । और कहाँ जाऊँ?" थोड़े दिन हुए, इनकी मृत्यु हो गई । दूसरे मित्र थे राबिन्सन (William Robinson), यह भी बहुत बड़े थे । राबिन्सन की जिन्दगी भारतवर्ष के वेद, पुराण और दर्शनों की आलोचना में ही बीती । राजनैतिक दृष्टि से अत्यन्त फन्सवेटिव होने पर भी आदमी बड़े अच्छे थे । विदा होते समय और अमेरिका में जो दो पत्र मैंने उनके पाये थे उनमें से एक सम्पूर्ण और दूसरे का अश-विशेष यहाँ पर उद्धृत किया जाता है ।

पढकर पाठरुगण आप समझ लेंगे कि वह आदमी कैसे थे । इंग्लैण्ड के "नेटिव" हम लोगो के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, इसका भी आभास इन पत्रों के द्वारा प्राप्त हो जायगा ।

" My dear friend,—As you were not at your seat to receive my farewell when I had to leave the Reading room this afternoon, and as there is a possibility of some hindrance to my seeing you before you start on your hemispheric journey tomorrow, I write this note to express my best wishes and prayers for your safe and pleasant journey, leading to a happy return to your distant home, and a long and prosperous career after your arrival there—I am sure that after our extremely pleasant and unclouded friendship of the past three years, you will need neither words nor letter of mine to assure you of my regret at parting, nor of the warm interest I shall always take in hearing of your future welfare. Yet such words are always pleasant to receive, although there is somewhat of pain in giving them utterance. I have no doubt your recollections of your neighbour at L 2 (यह उनके आसन का नम्बर था) will be a life-long pleasure to you, and I shall always recollect with equal pleasure the pleasant intercourse I have had with L 3 (यह मेरे आसन का नम्बर था) from the first day he spied some Devanagari characters on my paper and opened up a conversation with me —You will not forget, I hope, that my interest in you extends also to your country just as much now as it did then, and I am hoping and trusting for more established health, more means, more leisure to resume and carry on to an end, my several works on Indian subjects which you know of, and which I trust may prove of benefit to the good cause

of India's prosperity But there—you must not think that in this farewell note I want to speak of more than personal friendship and attachment, which I trust will ever endure until we find ourselves (though not at present of exactly on faith) yet received with welcome to happiness with our common God and Father, whom I am sure both desire (according to the light he has given us) to serve truly for the rest of our lives—And now, if I do not see you again, Farewell As our great poet writes,—

'If we do meet again, we shall smile —If not,—why then this parting was well made'—your very sincere and affectionate friend "

दूसरा पत्र अमेरिका, न्यूयार्क, में मिला था । उतका कुछ अंश यो है—

"I hope you will have had a pleasant voyage across the Atlantic, following in some part there of the possible track of the great Columbus himself * * * Americanisms are to be avoided by every *good and true Englishman such as you and I are* * * * When you publish your impressions of all your travels in English, you must be sure to give me the opportunity of reading them, for I am sure there is no one of your friends here who will follow them with more sincere interest, and more personal regard for yourself

इन मित्रों के अलावा सौभाग्यवश चार पाँच ऐसे मित्र, मिल गये थे कि उनसे विदा होते समय सचमुच ही मुझे बहुत कष्ट हुआ ।

उनमें दो 'विचार' सरल और सहृदय थे । ये केम्ब्रिज, लन्दन में आकर

रहे थे तब देखने-सुनने आदि में मुझसे मामूली सहायता इनको मिली थी । इसके लिए उक्त दोनों युवकों की मातायें लन्दन में मुझसे मिलने और कृतज्ञता प्रकट करने के लिए आईं । यह देखकर मुझे वास्तव में लज्जा लगी और विस्मय भी हुआ * । इसी से कहना पड़ता है कि अंगरेजों की सी जाति पृथ्वी पर दूसरी नहीं है । लन्दन के बाहर सैर करते समय कुछ दिन मुझे एक परिवार के

अकेम्ब्रिज के B A और लन्दन की डाक्टरी सनद पाये हुए युवक डफ्टन (Dufton) और उनकी माता के पत्रों के कुछ अंश देखने से पाठकों को अंगरेजों का चरित समझने में बहुत कुछ सुभीता होगा । डफ्ट के साथ परिचय होने के तीन महीने बाद एकाण्ड लीड्स (Leeds) से उनकी माता का निम्नलिखित पत्र पाकर मेरे विस्मय की सीमा नहीं रही ।

Dear Sir,—Will you favour me with your autograph in both your own and English characters, to be placed with other notable ones Allow me to thank you for your *kind interest* in my dear son, which I appreciate *very much* With kind regards

—ESQ
Pundit

I remain,
your s very sincerely
Sarrah Tempest Dufton

इसके बाद थोड़े दिन हुए यहाँ इसी वृद्धा विधवा का एक उम्मा चौड़ा पत्र मुझे मिला है । उसमें एक जगह पर वह लिखती है—“The other day while waiting for my son at the British museum my thoughts reverted to the day when I had the honour and pleasure of meeting you in the same spot, and I thought of you for a long time as my son did often tell me about your life and friendship which, I am sure, he values highly for

साथ रहना पडा । उसी अवसर में अचानक पैर में चोट लग जाने से दो तीन दिन मुझे खटिया सेनी पडी । उसी समय घर के मालिक, पुरखा, युवक-युवती, पुत्र-कन्या-आदि सबने मेरी जैसी सेवा की उसका वर्णन एक मुख से नहीं किया जा सकता । मुझे किसी प्रकार की कमी न जान पडे, इस खटके के मारे घर का एक आदमी हर घडी मेरे पास बैठा मुझसे बातचीत करता रहता था । घर के सब आदमी मुझसे यही कहा करते थे कि “तुम्हारा जो जी चाहे, तुम्हें जो दरकार हो, सो निःसकोच होकर हमसे कहो, इसे तुम अपना ही घर समझो” । मैं साहस के साथ कह सकता हूँ कि

many reasons—you wonderful kind nature and deep sympathies would be a treasured remembrance always that can never be forgotten by my son You seem to have the art of fully expressing your heart's thoughts—a life with a power which few have My dear husband would have much appreciated your gifts and friendship, had he known you ” डफ्टन के भेजे अनेक सुन्दर पत्र मुझे मिले है । उनमें के कुछ अवतरण यहाँ पर उद्धृत कर देने से पाठकगण अँगरेजों की उच्च श्रेणी की कृतज्ञता का भाव समझ सकेंगे ।
 “In reply I am sorry to say I have not yet been able to read more than two books of Carlyle I agree with you and call them excellent I now really do admire everything he has written ”

“ * * * It was a great trial to me, but I often think of your words and sayings to me, many of them have sunk into my heart so as not to be forgotten * * * ”

वैसा अवस्था में अगर घर पर होता तो भी इससे अधिक मेरी सेवा नहीं की जा सकती थी। जब मैं उन लोगों से विदा हुआ तो परिवार के सब आदमी बच्चों की तरह रोने लगे। यह क्या स्वर्गीय दृश्य नहीं है? विदा होने के समय बप्टिस्ट (Baptist) मतावलम्बी एक सम्प्रदाय (Congregation) ने मुझसे अंगरेजों के धर्म के सम्बन्ध में प्रकाशय वक्तृता के द्वारा अपनी सम्मति प्रकट करने के लिए अनुरोध किया। उनके मत-विश्वास आदि के सम्बन्ध में मुझे जो कुछ भ्रम या प्रमाद जान पडा उसे भी मैंने देखटके प्रकट कर दिया। इससे वे लोग अत्यन्त सन्तुष्ट हुए। वहाँ से आते समय अनेकों आदमियों ने यही पूछा कि “आपने हममें क्या क्या दोष देखा, सो बतलाते जाइए।” इसके उत्तर में मैंने कहा—“दोष क्या देखूँ? तुम्हारे विशेष गुण देख कर ही मैं मुग्ध हूँ”। मेरे जो कहने से सन्तुष्ट न होकर उन्होने कहा—“देखो, हममें जो गुण हैं वे तो हैं ही। उन्हें कोई छीन नहीं ले जा सकता। अब हमें अगर अपने दोष भी मालूम होंगे तो हम उन दोषों

You first opened my mind to the reception of ideas. Be assured I could never forget you. I wish I could see you at least once again” यह तो सच हुआ अंगरेजों की बातें और भाव, अब एक पारसी महिला की लिखावट देखिए। वह अपने हर एक पत्र में प्राय, लिखती है—“I am very much pleased to hear of you family, but you know how highly interested I am about all that interests you, and I think it is a pity you write to me without saying a word of yourself” इस महिला के साथ पेरिस में एक जगह महीने भर के लगभग रहना हुआ था। इससे केवल इतना ही सम्बन्ध था। सचमुच बातचीत में तो इन लोगों को कोई पान नहीं सकता।

को दूर करने की चेष्टा करेंगे । हम लोगों में अनेक दोष हैं" । वास्तव में यही यथार्थ महत्त्व और उन्नति का लक्षण है ।

विदाई । जिस दिन पहले यूरोप के नगर मेसिना में पदार्पण किया, जिस दिन नेपाली और विस्वूवियस देखा, जिस दिन साढो पार होकर डोवर में आया और लन्दन के असाधारण लोकारण्य में पहुँचा वह एक दिन था और आज भी एक दिन है । देखते ही देखते तीन वर्ष का समय बीत गया और मेरी यूरोप-यात्रा भी समाप्त हो गई । पहले-पहल यहाँ आने पर सोचता था कि कब फिर प्राणप्यारी जन्मभूमि के दर्शन होंगे, और आज भारी दुःख के साथ इंग्लैंड से—ब्रिटिश-म्यूजियम से—विदा हो रहा हूँ । पहले दिन और अन्तिम दिन में कितना अन्तर है ।


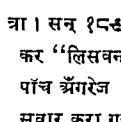
ब्रिटिश-म्यूजियम से विदाई का दिन । आज मन बड़ा ही व्याकुल है । हे म्यूजियम, तुमको छोड़ते सचमुच छाती फटी जाती है । तुम्हारे इस अक्षय ज्ञान-भाण्डार में आज कई वर्षों से ज्ञानो-पार्जन करके अपनी बुद्धि को पवित्र कर रहा हूँ । किन्तु हाय, मनुष्य की शक्ति तुम्हारे आगे विलकुल ही हेय है । इतने समय में मैं तुम्हारे ज्ञान-सागर का एक बूँद भी नहीं प्राप्त कर सका । मुझे अफसोस है कि मैं अपना सारा जीवन तुम्हारे इस परम पवित्र घर में क्यों नहीं बिता सका । सवेरे से एक पहर रात गये तक तुम्हारे पवित्र मन्दिर में रहने पर भी कभी जी नहीं उठा । किसी किसी दिन तो पढ़ने की धुन में यह भी नहीं मालूम हुआ कि कब दिन बीत गया । मैं इसके लिए परमपिता को हृदय से कोटिश धन्यवाद देता हूँ कि उसने मुझसे अयोग्य अधम को ऐसे महा-पवित्र तीर्थस्थान में पहुँचा दिया । सारांश यह कि "Ars longa, vita brevis" लाख वर्ष की आयु होने पर भी तुम्हारे मन्दिर में

ज्ञानमय की पूजा समाप्त करना असम्भव है । इस समय २० लाख के ऊपर ग्रन्थ हैं । उनके अलावा हर साल ४०,००० के लगभग नवीन ग्रन्थ तुम्हारे मन्दिर में जमा होते हैं । मनुष्य की चुद्र चमता इस योग्य कदापि नहीं कि वह इस दौड़ में तुम्हारे साथ दौड़ सके । अच्छा विदा ! कल से अब तुम्हारे दर्शन करने न आ सकूँगा । ससार के निष्ठुर नियम के अधीन होने के कारण तुमको छोड़ कर जाना ही पड़ेगा । तुमने केवल ज्ञान ही नहीं दिया, पृथिवी के चारों खण्डों के अनेक देशों के असंख्य प्रकार के जीवों के साथ परिचय भी करा दिया । तुमने कार्यत्व सार्वभौमिकता, प्रेम और भ्रातृभाव की शिक्षा दी है । तुम्हारे माहात्म्य का वर्णन मनुष्य से नहीं हो सकता । तुम्हें इस जगत् की राजधानी लन्दन में स्थापित करनेवाली ब्रिटिश-जाति धन्य है ।

इंग्लैण्ड से विदाई । हे इंग्लैण्ड, तुम्हारे गुणों का बखान बहुत दिनों से सुनता था । किन्तु उस पर विश्वास नहीं होता था । किन्तु यहाँ कई साल रह कर तुम्हारी यथार्थ महिमा आँसों से देखी और उससे मुझे एक नया जीवन प्राप्त हो गया । इसमें कोई सन्देह नहीं कि धन, मान और यश में तुम पृथ्वी के शिरोमणि हो । यह दूसरी बात है कि प्राकृतिक नियम के अनुसार तुम्हारे कुछ पुत्र बुरे चरित्रवाले भी हैं । किन्तु तुम्हारे पुत्रों में से अधिकांश अत्यन्त उत्कृष्ट चरित्रवाले हैं । बुरे चरित्र के पुत्रों की संख्या बहुत कम है । सच है कि तुम्हारे कुछ पुत्र तुमसे अलग होने पर बाहर जाकर विकारग्रस्त हो जाते हैं । किन्तु वह तुम्हारा दोष नहीं है, दोष है उनकी व्यक्तिगत मूढ़ता और स्थानीय जल-वायु का । तुम्हारा कलेवर छोटा है, पर तुम सारी पृथ्वी को अपने हृदय में स्थान देने के लिए तैयार हो । सारांश यह कि तुम्हारा अति उदार स्वाधीन सार्व-

भौमिक भाव जगत् की हर एक जाति के लिए आदर्श है । विदेशी लोगो के साथ तुम्हारे यहाँ के बालक, बूढ़े, जवान सब बहुत अच्छा व्यवहार करते हैं । तुम्हारी शासन-प्रणाली और राजकीय व्यवस्थायें पृथ्वी भर में सर्वश्रेष्ठ समझी जाती हैं, सब मेशीन का ऐसा काम होता है । तुम धन्य हो कि तुम्हारे वच्चे हर एक स्वदेशी और विदेशी अधिवासी को सब तरह की स्वाधीनता देने के लिए सब समय तैयार रहते हैं । तुम्हारे यहाँ की एक किराये की गाड़ी के कौचवान न एक बड़े भारी स्काचमैन से कहा था—“Whether you are a mackintosh or an umbrella, does'n't matter, I must have my fare” अर्थात् “आप चाहे बर्साती कोट हो चाहे छाता, मुझे इससे क्या मतलब, मैं अपना किराया चाहता हूँ” । ऐसी सरस स्वाधीन उक्ति और कहीं मैंने नहीं सुनी । सभी बातों में तुम जगत्पूज्य हो रहे हो । इस जड लेखनी के द्वारा तुम्हारे गुणों का वर्णन सर्वथा असम्भव है ।

स्पेन ।


 रा । सन् १८६२ के फरवरी महीने में लन्दन छोड़
 कर “लिसवन” जहाज पर सवार हुआ । चार-
 या पाँच अँगरेज मित्र ‘डक’ तक आकर जहाज पर

 सवार करा गये । जहाज चल दिया । मेरे मित्र
 किनारे पर खड़े खड़े रूमाल हिलाने लगे, मैं उदास मन से उनकी
 ओर तारुता रहा । जब तक जहाज दिखाई दिया तब तक वे किनारे
 खड़े रहे । क्रमशः टेम्स नदी पार होकर हमारा जहाज समुद्र में
 आगया । सध्या के समय वाइट (Isle of Wight) द्वीप की
 आलोकमाला देखते देखते कुछ दूर जाने के बाद इंग्लैण्ड हमारी
 नजरों से गायब हो गया । तब ठीक स्वदेश से विदेश जाने की ऐसी
 उदासी छा गई । मेरे साथ एक कुत्ता भी यात्री था । उसके साथ
 कोई आदमी न था, केवल गले में एक टिकट लटका कर वह छोड़
 दिया गया था । विस्के (Biscay) उपसागर में यात्रियों को कष्ट
 मिलने की बात पहले सुनी थी, किन्तु सौभाग्यवश मुझे कुछ भी
 कष्ट नहीं हुआ । चौथे दिन स्पेन के अन्तर्गत वाइगो (Vigo) बन्दर
 में हमारा जहाज पहुँच गया ।

वाइगो । यहाँ एक सौ के लगभग वैल जहाज पर चढाये गये ।
 उनके चढाने में तीन दिन लग गये । इसका कारण यह था कि एक
 तो वे ठीक समय पर वहाँ पहुँचे नहीं, दूसरे फल के द्वारा चढाये

गये । वाइगो बहुत पुराना नगर है । पहले इसका नाम था वाडकस स्पाकोरम (*Vicus Spacorm*) । शहर एक फियोर्ड के किनारे बसा है । सामने का प्राकृतिक दार्वर पहाड से घिरा होने के कारण बहुत ही सुरक्षित और सुन्दर है । आंधी तूफान के समय अनेक त्रिटिश-जंगी जहाज यहाँ ठहरते हैं । यह छोटा सा शहर पहाड पर बसा हुआ है । पुरानी चहारदीवारी का कुछ हिस्सा और नगर के पीछे के पहाड पर बने हुए पुराने जमाने के दो कैसल अभी तक मौजूद हैं । नगर के पुराने रास्ते तग, ऊँचे-नीचे और अत्यन्त टेढ़े-मेढ़े हैं । निवासियों की आँखें और बाल हम लोगों की तरह काले हैं । सुन्दरी स्त्रियाँ हमारे देश की तरह सिर पर जल-भरे पात्र लिये जाती देख पडें । समुद्र-तट पर बहुत से स्कालप (*Scallop*) ढेर के ढेर पड़े थे । इनका आकार ढकनदार वर्तन का ऐसा होता है । लन्दन में यह एक शिलिङ्ग का मिलता है और अनेक होटलों में इसमें भोजन परोसा जाता है । मैंने कई एक उठाकर अपने पास रख लिये । यहाँ के कई निवासी बास्क (*Basque*) भाषा में गाना गाते देख पड़े । यह भाषा किसी भी यूरोपियन भाषा से नहीं मेल खाती । मेरे सहयात्री एक अँगरेज से एक कुली बालक मजदूरी के लिए झगडा करने लगा । वह कुली उक्त अँगरेज को घडी ही अकथ्य भाषा में गाली देने लगा । वैसी गालिया यूरोप में और कहीं नहीं सुनने में आईं । वह अँगरेज स्पेन की इस भाषा को जानते थे । उन गालियों का मतलब मुझे समझा कर वह हँसने लगे । वाइगो में सब लोग रूसी से अँगरेजी सिक्का ले लेते हैं । यहाँ उत्कृष्ट शेरी-शराब बहुत ही कम दामों में मिल जाती है । नगर की जन-संख्या १५,००० के लगभग होगी । यहाँ से लिम्बन को रवाना हुआ ।

वाडाइस (Badajoz) अँगरेज लोग इसे वाडाजस कहते हैं । किन्तु स्पेन की भाषा में 'ज' का 'ह' उच्चारण करते हैं । लिसवन हो कर यहाँ आया । खाई, चहारदीवारी और पहाड पर बने छुपे किले आदि के द्वारा सुरचित यह नगर गोयाडियाना (Guadiana) नदी के किनारे पर बसा है । नदी के ऊपर २८ पायों का एक पुल है । यहाँ का प्रधान गिर्जा किले की तरह सुदृढ बना है । स्थानीय प्राचीन कन्वेल्ट मठो मे सरकारी दफ्तर वगैरह हैं । आर्सेनल, कई एक गिर्जे, अस्पताल और स्कूल आदि यहाँ के प्रधान अनुष्ठान हैं । वाडाइस रोमन अमलदारी के समय का बसा नगर (*Pua Augusta*) है । बहुत दिनों तक यह मुसलमानो के अधिकार में रह चुका है । उसका चिह्न-स्वरूप एक छोटे पहाड के ऊपर मूर-दुर्ग का भग्नावशेष इस समय भी देख पडता है । सन् १२३५ में यह मुसलमानो के हाथ से निकल कर ईसाई राजा के अधिकार में आया । सन् १८१२ में अँगरेजी सेना ने आक्रमण करके इस नगर को दो दिन तक लूटा । यह नगर चित्रकार मोरेल्स (Luis de Morales) का जन्म-स्थान है । यहाँ २५,००० ८ लगभग लोग रहते हैं ।

सिवील (Seville) । वाडाइस से प्रधान युद्धक्षेत्र टालाविरा (Talavera) और प्राचीन नगर मेरिडा (Merida) होते हुए सिवील मे आये । मेरिडा में गोयाडियाना नदी के ऊपर ८१ पायो का २,५७० फुट लम्बा रोमन अमलदारी का एक पुल है । प्राचीन समय के एक आक्विडक्ट का भग्नावशेष भी देख पडता है । रेल्वे लाइन के किनारे पहाड के ऊपर अनेक मूर-राज्य के समय के कौसल बने हुए देख पडे । सिवील स्पेन का एक प्रधान नगर है । यह गोयाडालक्विवर (Guadalquiver) नदी के किनारे बसा है । रोमन-समय मे इसका नाम था हिम्पालिस (Himpalis) । मुस-

लमान लोग इसे इपूरविलिया कहते थे । किन्तु वर्त्तमान स्थानीय नाम है सिवीला । नगर में आधा मुसलमानी ढङ्ग देख पडता है; मुसलमान साम्राज्य के चिह्न बहुत से बने हुए हैं । साधारण लोगों के घर लखनऊ शहर के ढग के हैं । बड़े आदमियों के घर भी हमारे पश्चिमोत्तर प्रदेश के ऐसे बने हैं । तथापि इन सब घरों में कुछ कुछ यूरोप का भाव मिला हुआ है । बड़े बड़े घरों के चौड़े आँगनों (Patios) में वृक्ष-लता और फुहारे देख पडते हैं । घरों की छतें हमारे देश की ऐसी बराबर और पुष्प-वृक्षों आदि से सुशोभित देख पडें । राह में एक दिन एक अन्धा "गिटर" (Guitar) के साथ गाना गा रहा था और उसके साथ एक लडका कास्टानेट (Castanet) बजा रहा था । सुर, तान, गिटकिरी वगैरह सब मुझे अपने देश का ऐसा जान पडा । अनेक मध्य और निम्नश्रेणी की महिलाये राजपूताने की स्त्रियों की तरह दोनों और पैर लडका कर घोड़े पर सवार होती हैं । घोड़े की पीठ पर अक्सर मुसलमानी जौन और रकाब लगाई जाती है । भारत के ऐसे टट्टू, खच्चर और गधे इस तरफ बहुत देख पडते हैं । भिंती और मशक का भी सूब चलन है । रात को चौकीदार लोग खूब जोर से चिल्लाते हैं । इसी तरह बहुत सी बातें ऐसी हैं जिनसे जान पडता है कि यह देश बहुत दिनों तक एशियाई जाति के अधिकार में रह चुका है । उधर जैसे बुडापेस्ट से मुसलमानी ढग शुरू होता है, वैसे ही उधर भी वही हाल देख पडता है । नगर के भीतर क मुसलमानी महल वगैरह के अलावा बाहर भी पहाड के ऊपर मूर लोगों के बनवाये कई किले हैं । पुल के पास नदी-तट पर बहुत काँकडे विकते हैं । यहाँ काँकडे को काँगरेहो कहते हैं । होटलो में भच्छडो का भारी उपद्रव है । मशहरी में एक नई किफायत देखी । वे ऐसी बनी हुई

होती हैं कि सारे शरीर को बदले केवल कमर तक उनके भीतर रहती है ।

नागरिक दृश्यावली । यहाँ का प्रधान गिर्जा बहुत बड़ा है । यद्यपि बाहर से वह इतना अच्छा नहीं मालूम पड़ता, किन्तु उसके भीतर की कारीगरी बहुत ऊँचे दर्जे की है । इसकी लम्बाई ४१५ फुट, चौड़ाई ३०० फुट और उँचाई १५० फुट है । गुम्बद जमीन से ७२ फुट ऊँचा है । घेरे में रोम के सेन्ट पीटर गिर्जे के बाद ही इस गिर्जे का नम्बर है । पहले यह मसजिद थी । बाहरी हिस्सा उसी मसजिद के १०० खम्भों पर रक्खा हुआ है । भीतर ७२ स्तम्भ और ६३ जोड़ी किवाड़े लगे हैं । यहाँ पर ईसा की माता मेरी की (एक चाँदी की और एक लकड़ी की) दो मूर्तियाँ स्थापित हैं । चाँदी के सिंहासन पर विराजमान दूसरी मूर्ति आदमकद है । उसके दोनों हाथ चलते हुए और केश सुवर्ण के बने हैं । अन्यान्य बहुत सी विचित्र सामग्रियों में एक भारी आर्गन बाजा और एक २५ फुट ऊँचा पीतल का शमादान (Candelabium) देखने लायक है । मुरिलो आदि चित्रकारों के हाथ के कई उत्कृष्ट चित्र भी यहाँ रक्खे हैं । इसके सिवा कोलम्बस-लाइब्रेरी (Columbus Library) और कोलम्बस के पुत्र फर्डिनण्ड (Ferdinand) की समाधि भी इस गिर्जे में है । सेन्ट फर्डिनण्ड की लाश इस गिर्जे में स्थापित है । वह लाश साल में तीन दफा खोली जाती है और उसके दर्शन करके उनके भक्त लोग सन्तुष्ट होते हैं । बहुत लोगों की धारणा यह है कि यहाँ जो कोलम्बस की समाधि बनी है वह असली नहीं है । कोलम्बस का शव क्यूबा (Cuba) द्वीप की राजधानी हावाना (Havannah) में गाड़ा गया था । गिर्जे में जो घण्टे का टावर है, वह ३४० फुट ऊँचा है । उसकी

मान लोग इसे इपूरविलिया कहते थे। किन्तु वर्त्तमान स्थानीय नाम सिवीला। नगर मे आधा मुसलमानी ढङ्ग देख पडता है, मुसलमान साम्राज्य के चिह्न बहुत से बने हुए हैं। साधारण लोगों के घर लखऊ शहर के ढग के हैं। बड़े आदमियों के घर भी हमारे पश्चिमोत्तर देश के ऐसे बने हैं। तथापि इन सब घरों मे कुछ कुछ यूरोप का भाव मिला हुआ है। बड़े बड़े घरों के चौड़े आँगनों (Patios) में चूल्हा और फुहारे देख पडते हैं। घरों की छतें हमारे देश की वसी वगैर और पुष्प-वृक्षों आदि से सुशोभित देख पडें। राह में एक दिन एक अन्धा "गिटर" (Guitar) के साथ गाना गा रहा था और उसके साथ एक लडका कास्टानेट (Castanet) गा रहा था। सुर, तान, गिटकिरी वगैरह सब मुझे अपने देश का ऐसा जान पडा। अनेक मध्य और निम्नश्रेणी की महिलाये राजपूताने की स्त्रियों की तरह दोनों और पैर लटका कर घोड़े पर सवार होती हैं। घोड़े की पीठ पर अक्सर मुसलमानी जूतियाँ और रकाम लगाई जाती है। भारत के ऐसे टट्टू, खच्चर और घोड़े इस तरफ बहुत देख पडते हैं। भिन्नी और मशक का भी खूब चलन है। रात को चौकीदार लोग खूब जोर से चिल्लाते हैं। इसी तरह बहुत सी बातें ऐसी हैं जिनसे जान पडता है कि यह देश बहुत दिनों तक एशियाई जाति के अधिकार में रह चुका है। उधर जैसे बुडापेस्ट से मुसलमानी ढग शुरू होता है, वैसे ही इधर भी वही हाल देख पडता है। नगर के भीतर एक मुसलमानी महल वगैरह के अलावा बाहर भी पहाड के ऊपर मूर लोगों के बनवाये कई किले हैं। पुल के पास नदी-तट पर बहुत कौंकडे विकते हैं। यहाँ कौंकडे को काँगरेहो कहते हैं। होटलों में भच्छड़ों का भारी उपद्रव है। मशहरी में एक नई किफायत देखी। वे ऐसी बनी हुई

होती हैं कि सारे शरीर को बदले केवल कमर तक उनके भीतर रहती है ।

नागरिक दृश्यावली । यहाँ का प्रधान गिर्जा बहुत बड़ा है । यद्यपि बाहर से वह इतना अच्छा नहीं मालूम पड़ता, किन्तु उसके भीतर की कारीगरी बहुत ऊँचे दर्जे की है । इसकी लम्बाई ४१५ फुट, चौड़ाई ३०० फुट और उँचाई १५० फुट है । गुम्बद जमीन से ७२ फुट ऊँचा है । घेरे में रोम के सेन्ट पीटर गिर्जे के बाद ही इस गिर्जे का नम्बर है । पहले यह मसजिद थी । बाहरी हिस्सा उसी मसजिद के १०० स्तम्भों पर रक्खा हुआ है । भीतर ७२ स्तम्भ और ६३ जोड़ी किवाड़े लगे हैं । यहाँ पर ईसा की माता मेरी की (एक चाँदी की और एक लकड़ी की) दो मूर्तियाँ स्थापित हैं । चाँदी के सिंहासन पर विराजमान दूसरी मूर्ति आदमकद है । उसके दोनों हाथ चलते हुए और केश सुवर्ण के बने हैं । अन्यान्य बहुत सी विचित्र सामग्रियों में एक भारी आर्गन बाजा और एक २५ फुट ऊँचा पीतल का शमादान (Candelabrum) देखने लायक है । मुरिलो आदि चित्रकारों के हाथ के कई उत्कृष्ट चित्र भी यहाँ रक्खे हैं । इसके सिवा कोलम्बस-लाइब्रेरी (Columbus Library) और कोलम्बस के पुत्र फर्डिनण्ड (Ferdinand) की समाधि भी इस गिर्जे में है । सेन्ट फर्डिनण्ड की लाश इस गिर्जे में स्थापित है । वह लाश साल में तीन रफा खोली जाती है और उसके दर्शन करके उनके भक्त लोग सन्तुष्ट होते हैं । बहुत लोगों की धारणा यह है कि यहाँ जो कोलम्बस की समाधि बनी है वह असली नहीं है । कोलम्बस का शव क्यूबा (Cuba) द्वीप की राजधानी हावाना (Havannah) में गाढ़ा गया था । गिर्जे में जो घण्टे का टावर है, वह ३४० फुट ऊँचा है । उसकी

तोटी पर १४ फुट ऊँची पीतल की बनी धर्म (Faith) की मूर्ति
 थापित है। नीचे का हिस्सा मुसलमानों का बनवाया है, लेकिन
 ऊपर का हिस्सा ईसाई-अमलदारी का बना है। ऊपर चढ़ने के
 लिए सीढ़ियों की जगह कई एक "इनक्लाइनेड प्लेनो" (Inclined
 plane) की व्यवस्था है। प्रधान गिर्जे के अलावा सिविल में अनेक
 गिर्जे हैं। उनमें से एक में मुरिलो के हाथ के कई एक अत्यन्त
 उत्कृष्ट चित्र रखे हैं। यहाँ का मुसलमानी अलथाजर (Alcazar)
 महल सन् ११८१ का बना हुआ है। इस महल का वर्णन यहाँ
 पर असम्भव ही है। इसके कमरे, हाल, आँगन, सगमरमर से
 अण्डित रास्ते आदि सबमें बादशाही कारखाने नजर आते हैं।
 दीवारों की कई दीवारों में, अर्वा अचरो में, कुरान के अश-विशेष
 अंकित हैं। इसी महल के अन्तर्गत एक सुन्दर दसकोना टावर
 (Torre del Ojo) नदी-तट पर विराजमान है। अलथाजर के सिवा
 और भी कई मुसलमानी महल हैं। उनमें से एक में ११ आँगन और
 ३ फुटारे हैं। अन्य एक महल का सगमरमर का "कालोनेड" भी
 खूबने लायक है। यहाँ की चित्रशाला भी अच्छी है। उसमें मुरिलो, वेला-
 सकोयेज़ (Velasquez), कास्टिलो (Castillo) आदि प्रधान प्रधान
 चित्रकारों के हाथ के बने बहुत से चित्र शोभायमान हैं। मुरिलो
 और वेलासकोयेज़ इसी नगर में पैदा हुए थे। इस चित्रशाला के
 अलावा सन टेल्मो (San Telmo) महल की चित्रशाला भी बुरी नहीं
 है। यहाँ के एकसचेख-भवन (Lonja) में 'स्पेनिश लोगो की युद्ध यात्रा'
 और 'कॉर्टेज़ (Cortez), पिज़ारो (Pizarro) आदि के द्वारा देश-
 वाय' से सम्बन्ध रखनेवाली ३०,००० पुस्तकें (Alcornoque de
 Indias) रक्खी हैं। सिविल का चुरट का कारखाना प्रसिद्ध है। इसमें
 ४ आँगन हैं। उसका घेरा ६६२ × ५२४ वर्गफुट का है। उसमें

५,००० के लगभग आदमी काम करते हैं । साल में २५,००० मन तन्म्याहू यहाँ काम में लाया जाता है । इस देश में हलकी शराब भी बहुत तैयार होती है । होटल में भोजन कीजिए तो भोजन के साथ जो शराब दी जाती है उसके दाम नहीं जोड़े जाते । यहाँ के वृष-युद्ध के धियेटर (Bull ring) * का देश में दूसरा नंबर है । इसमें १८,००० दर्शकों के बैठने के लिए जगह है । सिवोल में अनेक धियेटर, चार स्कायर, एक विश्वविद्यालय, कई स्कूल और अस्पताल हैं । नदी के किनारे किनारे सवा मील की लंबी सड़क (Paslo) टहलने लिए बड़ा ही सुन्दर स्थान है । नदी के दूसरे किनारे पर बसे हुए ट्रियाना (Triana) उपनगर में सम्राट्, ट्रेजन, हेड्रियन और थियोडोसियस का जन्म हुआ था । नगर के एक किनारे पर एक झील है । उसके किनारे दो प्राचीन स्तम्भ (Almeda de Hercules) खड़े हैं, उनकी चोटियों पर मूर्तियाँ शोभायमान हैं । नगर का टाउन हाल (Ayuntamiento) और पाइलेट महल (Casa de Pilato) दर्शनीय है । पाइलेट-महल ईसा के अभियोग का विचार करनेवाले पाइलेट के जेरुसलेम में बने हुए भवन के अनुकरण पर बना है । नगर के बाहर की वस्तियाँ बड़ी भन्दी हैं । रास्तों में जगह जगह ऐसी कीचड़ रहती है कि चलना भारू हो जाता है । हमारे देश के ऐसे मामूली कुत्ते रास्तों में घूमते फिरते हैं । सिवोल से थोड़े ही फासले पर होयेल्वा (Huelva) है । यहाँ

* बुल फाइट (Bull fight) देखने के लिए जी चाहता था । परन्तु यह दृश्य बड़ा ही निष्ठुर होता है, इसी से नहीं गया । पेरिस में नकली बुल-फाइट देखा था । उसमें और सब बातें दिखाई गई थीं । केवल अन्त को रंग की जान नहीं मारी गई । फ्रेंच आईन के अनुसार ऐसी निष्ठुर क्रीड़ा निषिद्ध है । स्पेन के सुप्रसिद्ध वृष-योद्धा मजान्टिनी (Mizantini) उस साल बुल फाइट में मर ही गये ।

चोटी पर १४ फुट ऊँची पीतल की बनी धर्म (Faith) की मूर्ति स्थापित है। नीचे का हिस्सा मुसलमानों का बनवाया है, लेकिन ऊपर का हिस्सा ईसाई-अमलदारी का बना है। ऊपर चढ़ने के लिए सीढ़ियों की जगह कई एक "इनक्लाइनेड प्लेनो" (Inclined plane) की व्यवस्था है। प्रधान गिर्जे के अलावा सिविल में अनेक गिर्जे हैं। उनमें से एक में मुरिलो के हाथ के कई एक अत्यन्त उत्कृष्ट चित्र रक्खे हैं। यहाँ का मुसलमानी अलथाजर (Alcazar) महल सन् ११८१ का बना हुआ है। इस महल का वर्णन यहाँ पर असम्भव ही है। इसके कमरे, हाल, आँगन, सगमरमर से मण्डित रास्ते आदि सबमें बादशाही कारखाने नजर आते हैं। भीतर की कई दीवारों में, अर्बों अक्षरों में, कुरान के अश-विशेष अंकित हैं। इसी महल के अन्तर्गत एक सुन्दर दसकोना टावर (Torre del Oro) नदी-तट पर विराजमान है। अलथाजर के सिवा और भी कई मुसलमानी महल हैं। उनमें से एक में ११ आँगन और ६ फुहारे हैं। अन्य एक महल का सगमरमर का "कालोनेड" भी देखने लायक है। यहाँ की चित्रशाला भी अच्छी है। उसमें मुरिलो, वेलासकोयेज (Velasquez), कास्टिलो (Castillo) आदि प्रधान प्रधान देशी चित्रकारों के हाथ के बने बहुत से चित्र शोभायमान हैं। मुरिलो और वेलासकोयेज इसी नगर में पैदा हुए थे। इस चित्रशाला के अलावा सन टेलमो (San Telmo) महल की चित्रशाला भी बुरी नहीं है। यहाँ के एक्सचेंज-भवन (Lonja) में 'स्पेनिश लोगों की युद्ध यात्रा' और 'कॉर्टेज (Cortez), पिजारो (Pizarro) आदि के द्वारा देश-जय' से सम्बन्ध रखनेवाली ३०,००० पुस्तकें (Archivo de Indias) रक्खी हैं। सिविल का चुरट का कारखाना प्रसिद्ध है। इसमें २४ आँगन हैं। उसका घेरा ६६० × ५२४ वर्गफुट का है। उसमें

५,००० के लगभग प्रादसी काम करते हैं । साल में २५,००० मनुष्य यहाँ काम में लाया जाता है । इस देश में हलकी शराब भी बहुत तैयार होती है । होटल में भोजन कीजिए तो भोजन के साथ जो शराब दी जाती है उसके दाम नहीं जोड़े जाते । यहाँ के वृष-युद्ध के थियेटर (Bull ring) * का देश में दूसरा नंबर है । इसमें १८,००० दर्शकों के बैठने के लिए जगह है । सिविल में अनेक थियेटर, चार स्कायर, एक विश्वविद्यालय, कई स्कूल और अस्पताल हैं । नदी के किनारे किनारे सवा मील की लंबी सड़क (Paseo) टहलने लिए बड़ा ही सुन्दर स्थान है । नदी के दूसरे किनारे पर वसे हुए ट्रियाना (Triana) उपनगर में सम्राट् ट्रेजन, हेड्रियन और थियोडोसियस का जन्म हुआ था । नगर के एक किनारे पर एक भील है । उसके किनारे दो प्राचीन स्तम्भ (Almeda de Hercules) खड़े हैं, उनकी चोटियों पर मूर्तियाँ शोभायमान हैं । नगर का टाउन हाल (Ayuntamiento) और पाइलेट महल (Casa de Pilato) दर्शनीय है । पाइलेट-महल ईसा के अभियोग का विचार करनेवाले पाइलेट के जेरुसलेम में बने हुए भवन के अनुकरण पर बना है । नगर के बाहर की बस्तियाँ बड़ी भन्दी हैं । रास्ते में जगह जगह ऐसी कीचड़ रहती है कि चलना भार हो जाता है । हमारे देश के ऐसे मामूली कुत्ते रास्तों में घूमते फिरते हैं । सिविल से थोड़े ही फासले पर होयेल्ला (Huelva) है । यहाँ

*-उल फाइट (Bull fight) देखने के लिए जी चाहता था । परन्तु यह दृश्य बड़ा ही निष्ठुर होता है, इसी से नहीं गया । पेरिस में नकली उल-फाइट देखा था । उसमें थोर सत्र रातों दिखाई गई थीं । फेबल अन्त को बल की जान नहीं मारी गई । फ्रेंच आइन के अनुसार पेसी निष्ठुर जीड़ा निषिद्ध है । स्पेन के सुप्रसिद्ध वृष-योद्धा मजान्टिनी (Mazantini) उस साल उल फाइट में मर ही गये ।

से कोलम्बस ने अमेरिका-यात्रा की थी । गोयाडालक्विबर नदी के किनारे पर घने हुए 'पासेत्रो-मार्ग' में गाड़ी पर एक दिन जी भर कर घूमा । 'उसके बाद शाम को किनारे पर बैठ कर सोचने लगा । मैंने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि इस नदी के किनारे बैठ कर भारत को पत्र लिखूँगा । शायद भारत का कोई आदमी उस दिन तक वहाँ नहीं गया होगा और शायद सिविल के डाकघर से मेरा यह पत्र ही पहला बगला-भाषा में लिखा पत्र खाना हुआ होगा । विधाता की लीला अपरम्पार है । इन्हीं सब बातों को देख कर कहना पड़ता है कि वह विश्व-बाजीगर हम लोगों को जिस तरह नचाता है हम उसी तरह नाचते हैं ।

कादिज (Kadiz) । अंगरेज लोग इसे केडिज़ कहते हैं । किन्तु स्थानीय नाम कादिज है । यह अत्यन्त प्राचीन नगर है । इसका पुराना नाम आगादिर (Agadir) या गदिस (Gades) है । वर्तमान जन-संख्या ७०,००० के लगभग है । सिविल से रेल की सवारी पर यहाँ आया । क्रमशः जितना ही नगर के पास पहुँचने लगा उतना ही दृश्य मनोहर जान पड़ने लगा । ५ मील लंबे, मगर चौड़ाई में तग, भूमिखण्ड के छोर पर हर्म्यमालाशोभित और समुद्र से घिरा हुआ नगर बसा है । जहाँ से उपद्वीप शुरू होता है वहाँ पर अनेक नोन के दूह और हमारे देश के ऐसे खपरहिल देख पड़े । ७ मील की चहारदीवारी से यह नगर घिरा हुआ है । फाटक ५ हैं । चहारदीवारी के बाहर समुद्र-तट पर बना हुआ प्रमानाड, खासकर आलामेदा (Alameda) नामक अश, टहलने के लिए बड़ा अच्छी जगह है । नगर की इमारतें ऊँची हैं और उन पर हमारे देश की ऐसी चूने की अस्तरकारी की हुई है । धनुष सी सबके तग भी हैं । प्रधान स्कायर (Plaza de San

.Antonio) के वृत्तादि शोभित मध्यस्थल में सगमरमर की बेंचों पर बैठ कर बहुत लोग समय बिताते हैं । यहाँ के निवासी बड़े ही आलसी और ठग जान पड़े । बहुतो का रंग गहरा-मैला है । मूर लोगों के साथ इनका बहुत कुछ मेल पाया जाता है । कादिज में निम्नलिखित स्थान देखन लायक हैं । दो गिर्जे, १००० रोगियों के रहने लायक अस्पताल, १२,००० दर्शको के बैठने लायक बुल-फाइट का थियेटर, पर्निट, १७२ फुट ऊँचा रोशनी-घर, सान-जुयान अस्पताल, जनाना अस्पताल, त्यागे हुए बच्चों के लिए आश्रम, मानमन्दिर, मेडिकल स्कूल, सामुद्रिक-विद्यालय, फ्री स्कूल, गणित और वाणिज्य सिखाने का स्कूल, जेलखाना, पागलखाना और दो रंगमञ्च आदि । यहाँ की चित्रशाला के चित्र अच्छे नहीं हैं । यही यूरोप की अन्तिम चित्रशाला है । इसे देख कर कवि ड्राइडन की यह उक्ति याद आगई—“ The pencil speaks the tongue of every land ” सुप्रसिद्ध इस देश के चित्रकार मुरिलो यहाँ के एक गिर्जे में चित्र अकित करते करते पाद पर से नीचे गिरकर बहुत ही घायल हो गये थे । उसी अवस्था में सिविल में जाकर उन्होंने शरीर-त्याग कर दिया । उनके हाथ का वह असम्पूर्ण चित्र अभी तक यहाँ सुरक्षित है । नारगिली में तम्बाकू पीने के सिवा इस स्थान का ग्रीस के साथ बहुत कुछ सादृश्य देख पड़ता है । बहुत दिनों तक मुसलमानों की अधोनता और ससर्ग के कारण इन दोनों स्थानों में, किसी किसी बात में, समान परिवर्तन देख पड़ता है । कवि की ग्रीस के सम्बन्ध में यह उक्ति—

“The Greece ? but living Greece no more !

“So coldly sweet, so deadly fair,

“We start—for soul is wanting there !”

स्पेन के इस प्रदेश में पूरी तौर से घटित होती है ।

कादिज-बन्दरगाह मे ठहरना पडा । उसके बाद तूफान कम होने पर मैं मरक्को को खाना हुआ ।

जिब्राल्टर (Gibraltar) —

कहीं नदिया, कहीं नाला, कहीं दरिया-किनारा है ।

कहीं जङ्गल, कहीं सहरा, कहीं मैदान वियाबां है ॥

अनेक स्थानो मे घूमघाम कर अन्त को जिब्राल्टर में उपस्थित हुआ । (यहाँ से अमेरिका की यात्रा शुरू हुई) यहाँ की खाडी के इस पार उस पार दो ऊँचे पहाड हैं । उन्हें “हरक्यूलिस का स्तम्भ” कहते हैं । अँगरेज लोग सचोप में इस स्थान को “जिब” कहते हैं । इसका प्राचीन नाम है “काल्पे” (Calpe) । मुसलमान लोग इसे “जेब-डल-तारीख” कहते थे । उनकी वनाई “तारीख” यहाँ के कैसल के भग्नावशेष में मौजूद है । यह भूमध्यसागर का द्वार है । इसी कारण इस नगर का चिह्न एक चाभी है । यह चिह्न नगर-प्रवेश के फाटक पर रक्खा है । यहाँ से आफ्रिका का अटलास पहाड और अन्य एक पर्वत देख पडता है । इस नगर पर अँगरेजों का अधिकार है । यहाँ सर्वदा सामरिक नियम (Martial Law) जारी रहता है । शाम के बाद ८ बजे तोप दगने पर फाटक बन्द हो जाता है । इसके बाद गवर्नर की आज्ञा बिना कोई विदेशी प्रजा नगर में रात नहीं बिता सकती । छोटे उपद्वीप के ऊपर जिब का पहाड है । डेढ मील लम्बी बालुकामय योजक-भूमि को “साधारण भूमि” (Neutral Ground) कहते हैं । उसके उम पार स्पेन का राज्य है । स्पेन की प्रजा के यहाँ आने में जैसी कडी जाँच होती है वैसी ही जाँच स्पेन के अधिकार में यहाँ की प्रजा के जाने पर भी होती है । जहाज से उतर कर डॉंगी

पर घबटे समय वहाँ के कर्मचारी ने रङ्ग से मुझे स्पेनिश समझ कर मेरी चोजों की जाच शुरू की । लेकिन जब उसे मालूम हुआ कि मैं ब्रिटिश-प्रजा हूँ तब उसने मुझसे माफी माँगी और बिना जाँच किये ही मुझे जाने दिया । जिव उत्तर-दक्षिण २½ मील लम्बा और पौन मील चौड़ा है । दूर से जिव का पहाड़ मरुभूमि जान पड़ता है । किन्तु पास पहुँचने पर उस पर बहुत से वृक्ष देख पड़ते हैं । यह पहाड़ ३ मील लम्बा और ½ मील चौड़ा है । कहीं कहीं पर इससे ड्यौढो चौड़ाई है । इसका सर्वोच्च शिखर १,६०० फुट ऊँचा है । पर्वत पर अनेक सुन्दर गुफायें होने के कारण इसे “गुफाओं का पहाड़” (Hill of caves) कहते हैं । उनमें १,१०० फुट की उँचाई पर बनी हुई २०० फुट लम्बी सेन्ट माइकेल की गुफा (St Michael's cave) बहुत ही विचित्र है । मालूम पड़ता है कि उसे किसी कारीगर ने बनाया है, लेकिन है वह कुदरती । प्राकृतिक स्वर्भों (Galleries) के ऊपर ७० फुट ऊँची छत है । इस गुफा के सवन्ध में कप्तान ब्रोम लिखते हैं—“Nothing can exceed the beauty of the stalactites, the form clusters of every imaginable shape—statuettes, pillars, foliages, figures Even the American visitors have been compelled to acknowledge that, as regards beauty and picturesqueness even the Nammoth Cave would not come near them.”—*Captain Brome*

इस पहाड़ पर एक तरह के बिना पूँछ के बन्दर रहते हैं । सन् १७०४ से इस स्थान पर ब्रिटानिया का अधिकार है । कई बार आक्रमण होने पर यह स्थान अँगरेजा के हाथ से नहीं गया । अन्तिम आक्रमण फ्रेंच और स्पेनिश लोगों ने मिलकर किया था और यह आक्रमण तीन वर्ष तक जारी रहा । यहाँ देखने लायक स्थान या

वस्तुएँ बहुत नहीं हैं । स्थान बहुत ही छोटा है । सेना वगैरह मिलाकर सब जन-संख्या २५,००० के लगभग होगी । यहाँ की समरसज्जा देखने योग्य है । पहाड पर खुदी हुई दो तीन मील लम्बी और चौडो गेलरियाँ (Galleries), जिनमे अनायास गाडो चल सकती है, बनी हैं और ऊपर नीचे भारी तोपें रक्खी हैं । यहाँ का हार्वर बहुत ही सुरचित है, चार-पाँच जगो जहाज हमेशा मौजूद रहते हैं । एक अँगरेज सज्जन लिखते हैं—

“Of all our coaling stations (Gibraltar, Malta, Aden, Ceylon, Singapore, Hongkong, Sierra Leone, Ascension, St Helena, Cape Town, Simons Bay, Port Castles, Port Royal, Bermuda, Falkland Islands), Gibraltar and Malta alone can be considered open to attack by a powerful fleet, and against such an attack they must be defended. The Straits of Gibraltar is by far the most important strategic point in the British Empire. Gibraltar is insecure and inconvenient in many respects as a port, but for want of a better in the immediate neighbourhood it is the base on which must rest that British fleet on which the main burden of the defence of the Empire will fall—

T A Brassey यहाँ के, सिन्ध-प्रदेश के, कुछ आदमी जिब्रास्टर मे बिसाती की दूकान रख कर खूब कमाई करते हैं । चारो ओर से अपने देश को जाते समय गोरे यहाँ आते हैं । वे इन दूकानदारों से बहुत सा एशियाई सामान खरीदते हैं । उनसे दसगुनी बीस गुनी कीमत ली जाती है । यहाँ अँगरेजों के और स्पेन के भी सिक्के चलते हैं । आठ दिन तक भारी तूफान आने के कारण सुभे दस दिन यहाँ ठहरना

पडा । मैं जिस होटल में ठहरा था उसमें चारो ओर के यात्री थे । उनमें एक पेंशनयाफ़ा भारतीय सेना के कर्नल भी थे । वह अक्सर मेरे पास बैठकर मुझसे बातचीत करते थे । मरको में गधे पर चढ़ने की रीति का प्रसंग उठाकर उन्होंने कहा—“जान पड़ता है, आप कभी गधे पर न चढ़ेंगे । क्योंकि वैतालपचीसी में लिखा है, घी के बिना भोजन, असंस्कृत भाषा और गधे की सवारी निन्दनीय है ।” मेरी और कर्नल साठव की यह बातचीत हिन्दी में ही हुई । वह अक्सर हँसी-तमाशे में ही समय बिताते थे । एक दिन दोपहर को केवल हम दोनों एक जगह बैठे हुए थे । उस दिन उन्होंने गभीर भाव से बातचीत करते करते कहा— “आप तो सारे यूरोप की यात्रा किये जाते हैं । देश में जाकर अपने भाइयो से कहिएगा कि खियों की स्वाधोनता और स्त्री-शिक्षा के बिना कोई देश उन्नति नहीं कर सकता । आशा है, यूरोप देखकर आप इस बात को अच्छी तरह समझ गये होंगे कि आपका देश हजार शिक्षित होने पर भी उसका आधा अंश गहरे अज्ञान में डूबा हुआ है* । हम लोग ये बातें कहे तो भारत के लोग हम पर चिढ़ सकते हैं, किन्तु आप अगर इस सत्य की साक्ष्य देंगे तो शायद वे सुनेंगे । मेरी यही हार्दिक कामना है कि आप लोग उन्नत होकर यूरोप के समकक्ष बनें । इत्यादि ।” जिब्राल्टर के स्पेनिश-निवासी बहुत सवरे से ही सबको और गलियों में ऐसा शोरगुल मचाते हैं कि एशिया का घोखा हो जाता है । अब जिब्राल्टर का कुछ माहात्म्य भी सुन लीजिए । जिब्राल्टर के सिर पर यूरोप, दाहनी ओर

*“No man ever lived a right life who had not been chastised by a woman's love, strengthened by her courage and guided by her discretion ”—*Rus 111*

अमेरिका, वाई और एशिया और नीचे आफ्रिका है। जिब्राल्टर की सीमा पर स्थित अन्तरीप यूरोपा प्वाइन्ट (Europa Point) पर खड़े होने से देख पड़ता है। सामने के किनारे पर आफ्रिका देश देख पड़ता है, दाहनी और जाने से अमेरिका में और वाई और जाने से एशिया में पहुँच सकते हैं। बीच में जल के सिवा कोई भूमि-खण्ड नहीं है। अतएव इस स्थान को चार महादेशों के चौराहे पर विद्यमान एक तीर्थस्थान कह सकते हैं। स्थानीय दौड़लों में चारों ओर के यात्री जमा होते हैं। ऐसे पवित्र तीर्थस्थान से बहुत दिनों की अभिलाषा * पूर्ण करने के लिए अमेरिका की ओर चला। इधर कई दिन का भयंकर तूफान देखकर यात्रा के समय मैंने सोचा कि अगर दुरन्त अटलान्टिक अथवा दुस्तर पासिफिक सागर में यह जीवन की नाव डूब जाय तो फिर जननी जन्मभूमि के दर्शन न होंगे। किन्तु यदि भवकर्मधार करुणावरुणालय की कृपा-कोर हुई तो फिर माता के दर्शन

इस यात्रा के वर्ष से २५ वर्ष पहले मैंने अमेरिका-यात्रा की चेष्टा की थी। कलकत्ते में उस समय अमेरिकन मिशनरी डाल साहब (Rev C H. A. Dall) ने मेरे प्रश्न के उत्तर में मुझे यह पत्र लिखा था—

Calcutta, 1st February, 1872

My Friend,—I have received your letter not without a feeling of gladness to see that there are men like you in India longing to run round this little world, and see the different rooms our Father has created for His one Family of man. The deluge of prejudices and difficulties you shall have to meet with and plunge through would fairly test your courage and sincerity, but would be trifles to look back upon when you once get into the Promised Land —The reward would be great the work being great too, the higher the wages you know the harder the work etc —C H A Dall

आज कितने ही दिनों के बाद विधाता की कृपा से वह इच्छा पूर्ण हुई।

करके जीवन को चरितार्थ कर सकूँगा । सितम्बर और मार्च में अटलान्टिक महासागर का भयानक रूप होता है । मेरी यह यात्रा मार्च महीने में हो रही थी । जहाज हिलकोरो के मारे विपरीत ओर—एशिया की तरफ—डूटता जाता था । अन्त में जहाज पर चढ़ कर भारत-माता की ओर सतृष्ण दृष्टि से देखते देखते मैं गाने लगा—

भासिलाम, भासिलाम, भासिलाम अकूले ।

यदि हरि देन कूल, पहुँचिवो कूले ॥

नतुवा एई जीवन तरी मा । डूविलो अतले ।

भासिलाम, भासिलाम, भासिलाम, अकूले ॥

स्पेन की साधारण अवस्था । स्पेन की कुछ रीतियाँ फ्रान्स की ऐसी हैं । माता या किसी बड़ी बूढ़ी परिवार की स्त्री (Duenna फ्रान्स में Bonne कहते हैं) के साथ विना युवती स्त्रियों रास्ते में नहीं निकलतीं । अगर बिलकुल अकेले ही जाने का मौका आ पड़ता है तो वे किसी से बातचीत नहीं करतीं । ब्याह आदि में भी फ्रान्स की चाल प्रचलित है, अर्थात् माता पिता के सामने के सिवा कोई ब्याह की इच्छा रखनेवाला युवक अपनी होनेवाली पत्नी के साथ बातचीत नहीं कर सकता । माता पिता या कन्या के अभिभावक के अनुमोदन विना ब्याह ठीक नहीं हो सकता । कन्यापक्ष को दहेज भी भारी देना पड़ता है । यहाँ की स्त्रियाँ बहुत सुन्दरी होती हैं । अधिकांश स्त्रियों की आँखें और बाल हमारे यहाँ के ऐसे काले होते हैं और स्वर भी मीठा होता है । अनेक स्त्रियाँ सिर पर छोटी चादर ऐसा कपड़ा (Mantilla) बाधती हैं । वह पीठ तक लटका रहता है । सबके हाथ में अक्सर एक पखा रहता है । इस कारण

देश में पंसे की दूकानें बहुत हैं । हम लोगो की तरह इस देश के पुरुषो का अधिकांश समय बाहर ही बीतता है । विदेशी लोगो के साथ विशेष घनिष्ठता रहने पर भी यहाँ के पुरुष अपनी स्त्रियों से उनका परिचय नहीं कराते । यूरोप भर में यहाँ यह प्रथा देखने में आई । होटलों में अक्सर एक तरह का पुलाव खाने को मिलता है । मास भी कुछ कुछ हमारे ही यहाँ का ऐसा बनता है । सरकारी के साथ छोटे छोटे मास के टुकड़े भी पकाये जाते हैं । प्राकृतिक नियम के अनुसार यहाँ के आदमी बहुत उद्यमशील नहीं जान पड़ते । दक्षिण इटली की तरह 'मिनियाना (Miniana) अर्थात् 'कल' शब्द का खूब प्रचार है । ओवरकोट (Overcoat) इस तरह बनाया जाता है कि उसे शाल की तरह ओढ भी सकते हैं । पल्टन के कप्तान तक इस तरह ओवरकोट में एक हाथ छिपा कर घूमते हैं । सड़को, काफ़ीखानो आदि में जुए और लाटरी का बड़ा चलन है । नाच-गाने-बजाने का यहाँ के लोगो को बड़ा शौक है । बुलफाइट में साल में २,५०० के लगभग बैल और ४,००० के लगभग घोड़े मरते हैं । यहाँ के आदमी बड़े क्रोधो और बदमिजाज हैं । घातघात में खून-खराबा और लडाई-भगडा हो जाता है । औरतों ही के लिए अधिकतर लडाई-दंगे होते हैं । कहीं कोई भगडा-बखेडा होने पर लोग पहले ही पूछते हैं कि इस भगडे का कारल रमणी कहाँ है ? वहाँ के लोगो की यही धारणा है कि स्त्रियो के ही कारण लडाई-भगडा हो सकता या होता है । यहाँ की आवहवा अच्छी है । जमीन में उपजाऊ शक्ति भी अच्छी है । कौले, जलपाई, अगूर, शहतूत, चावल, मटर की फलियाँ आदि चीजें कम पैदा होती हैं । दक्षिणा-श्चल में कार्क (Cork) के बहुत और घने जगल और रेशम के कारखाने हैं । न्यूनाधिक २५,००० सरकारी और ६,००० बे सर-

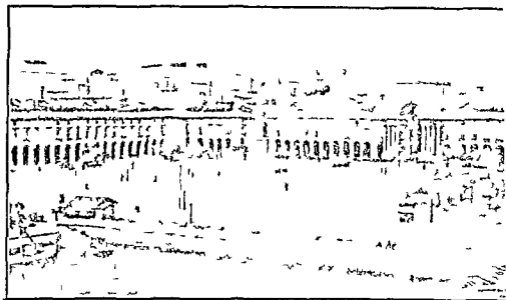
कारी प्राइमरी स्कूलों में सर्वसाधारण को आईन के अनुसार बाध्य कर शिक्का प्राप्त करनी पडती है । यहां के १० बड़े प्रदेशों में एक विश्वविद्यालय है । इसके सिवा खेती, इजिनियरी, चित्रकला और गाने-बजाने की शिक्का की व्यवस्था राज्य की ओर से है । सन् १८६५ में तीन करोड पौण्ड के लगभग राजकर वसूल हुआ था । खर्च इससे कुछ अधिक हुआ था । राज्य पर साढे सात करोड के लगभग ऋण था । शान्ति के समय एक लाख से अधिक सेना रहती है । युद्ध के समय पाँच लाख के लगभग जमा की जा सकती है । इसके सिवा उपनिवेशों से ढाई लाख के लगभग सेना मिल सकती है । जंगी जहाज १२० हैं । उनमें केवल ४ लौहयान हैं । राज्य की हर एक प्रजा को कुछ काल सेना-विभाग का काम सीखना पडता है । सेना की हालत कुछ बहुत अच्छी नहीं जान पडी । राज्य में रोमन-कैथलिक धर्म ही अधिक प्रचलित है । पृथ्वी भर में स्पेन में इस धर्म का जैसा आधिपत्य है वैसा अन्यत्र नहीं । पुरोहित-पादरियों का प्रजा पर एकाधिपत्य है । हर साल यहां से अनेक प्रकार से बहुत साधन पोप के भाण्डार में चला जाता है । इस देश के चाँदी के सिक्के का नाम 'पेसेता' (Peseta) है । आकार और कीमत में वह फ्रांस के फ्रैंक के समान होता है । किन्तु आज-काल सोने की दर के हिसाब से उसके दाम बहुत कुछ घट गये हैं । यहां भी दशमिक प्रथा प्रचलित है । यहाँ भी नोटों का खूब चलन है । स्पेन की आर्थिक अवस्था अच्छी नहीं जान पडती । शासन की व्यवस्था भी उतनी अच्छी नहीं है । रास्तों में अक्सर चोरियाँ-डकैतियाँ हो जाती हैं । मैं जब यहाँ गया था उसके कुछ दिन पहले की बात है कि एक गाव का मजिस्ट्रेट या मेयर (Mayor) अपने दो सहकारियों के साथ किसी गृहस्थ के घर चोर कह कर पकडे

गये थे । इस घटना का रहस्य सुनिए । एक गृहस्थ के घर में कई मेहमान आये थे । मेहमानों ने कई सैनिकों की सहायता से तीन चोर पकड़े और उनको पकड़ कर मेयर को खबर देने गये । घर में न मेयर थे और न उनके दोनों सहकारी ही अपने अपने घर में थे । सब लोग लौट आये । सवेरे चोरों की नकाब हटाने से मालूम हुआ कि मेयर साहब और उनके सहकारी ही खुद चोर हैं । इस देश में आईन बनाकर फार्सी की सजा उठा दी गई है । उस समय स्पेन की राज-गद्दी पर ११ वर्ष के बालक राजा अलफन्सो (Alphonso) थे । इनका जन्म सन् १८८६ में हुआ था । राजमाता इनके नाम से पार्लियामेंट की सहायता से राज-काज चलाती थीं । बालक राजा की तन्दुरुस्ती अच्छी न थी । उन्हें सदा डाक्टर की देख-रेख में रहना पड़ता था । किन्तु विलियर्ड (Billiards) खेलने में ये बड़े निपुण थे, अनेक स्याने खिलाड़ियों को भी हरा देते थे । स्पेन का घेरा १,६६,१७३ वर्ग मील का है । जन-संख्या दो करोड़ के लग-भग है । प्रायः सारा देश ७०० वर्ष तक मुसलमानों के अधिकार में रह चुका है । अमेरिका-याविष्कार के १०० वर्ष बाद तक यूरोप में यह श्रेष्ठ राज्य माना जाता था ।

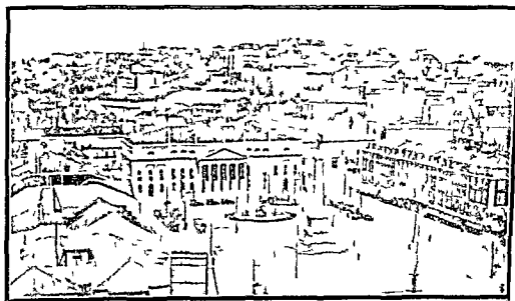
पुर्तगाल ।

सवन (Lisbon) । वाइगो से यहाँ आया । जहाज को
 लि लगर डालने पर यात्रियों के आत्मीय-स्वजन उनको
 लेने आये । गोल्डेन हार्न से कान्सेन्टिनोपुल का
 और टेगस (Tagus स्थानीय नाम है Tejo) से लिसवन का
 दृश्य बहुत ही मनोहर देख पड़ता है । टेगस नदी के दक्षिण और
 अर्द्धचन्द्राकार नगर बसा हुआ है । लिसवन नगर कई एक पहाड़ों
 के ऊपर बसा हुआ है, इस कारण सीढीनुमा ऊँचे सफेद मकानात
 नदी से देखने में बड़े ही सुन्दर जान पड़ते हैं । लिसवन का सा
 सौन्दर्य लिसवन के सिवा और कहीं नहीं देखने को मिल सकता ।
 दिन के उज्ज्वल सूर्य के प्रकाश में तो यह नगर सुन्दर जान ही
 पड़ता है, लेकिन चाँदनी में जो इसका सौन्दर्य देख पड़ता है वह
 वर्णन नहीं किया जा सकता । आकाश में चन्द्रमा है, नीचे धरों
 की रोशनी और नदी-तट की गैस पर की रोशनी है, नदी के भीतर
 विचित्र लैटिन (Lateen) नावे हैं । यह दृश्य अलिफलैला के
 अनैसर्गिक अद्भुत दृश्य के समान जान पड़ता है । नगर का स्थानीय
 नाम है लिसबोया (Lisboa) । यह पाँच मील लम्बा और तीन
 मील के लगभग चौड़ा है । यहाँ की जन-संख्या तीन लाख के
 लगभग है । पुराने रास्ते की व्यवस्था अच्छी नहीं है । किन्तु सन्
 १७५० के भूडोल के बाद बने हुए रास्ते सीधे और लम्बे हैं । उनके

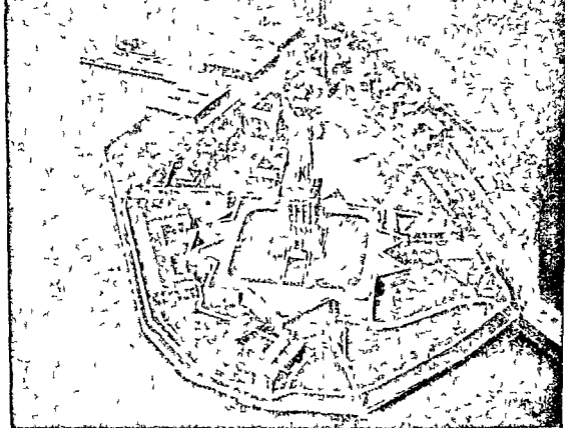
इधर-उधर ऊँचे और सुन्दर मकानात बने हुए हैं । लिसबन में चार प्रधान स्कायर हैं । उनमें जो नदी-तट पर बना हुआ है उस (Placa do Comercio) में राजा जोजेफ़ की, पीतल की, घुडसवार मूर्ति स्थापित है । इन्हीं के राज्यकाल में भूडोल आया था और नगर के नष्ट अंश फिर से बने थे । डामपेड्रो (Praça do Dom Pedro) स्कायर के मध्यस्थल में इस तरह रङ्गीन पत्थर जड़ा हुआ है कि उस पर चलने से, समतल होने पर भी, यह डर लगता है कि नीचे की ओर चले जा रहे हैं । इस स्कायर में एक फुहारा और एक स्तम्भ है । स्तम्भ की चोटी पर एक मूर्ति है । नीचे भी एक मूर्ति स्थापित है । नगर में सात थियेटर और एक "बुलरिंग" है । शहर के भीतर और बाहर कई एक छोटे-बड़े राजमहल बने हुए हैं । ३१ फुहारों के द्वारा नगरनिवासियों को पीने के लिए पानी मिलता है । यह जल १० मील लम्बे आक्लिडकू के द्वारा एक प्राकृतिक भरने से लाया जाता है । यह जल एक उपत्यका को जहाँ पर ३५ पायों के पुल पर से पार होता है वह २६३ फुट ऊँचा स्थान है । सन् १४९७ में वास्को-डि-गामा (Vasco da Gama) स्थानीय नाम है डा-गामा) ने भारत की ओर यात्रा की थी वहाँ पर मूर लोगों का बनवाया एक कैसल था । सन् १५०० में उक्त कैसल के साथ एक गिर्जा बनवाया गया । जिरोनिय गिर्जा और उसके अन्तर्गत अनाथाश्रम (Mosterio dos Geronymos) लिसबन का एक प्रधान दृश्य है । अर्धरत्न की अनुमति लेकर भीतर गया । वहाँ वे मा-त्राप के बालकों के पढ़ने और रहने की सुन्दर व्यवस्था देख कर चित्त को बड़ो प्रसन्नता हुई । यात्रा के पहले वास्को-डि गामा ने इसी भजनालय में कई रातें प्रार्थना करने में बिताई थीं । सेन्ट रोक (Igreja de S Roque)



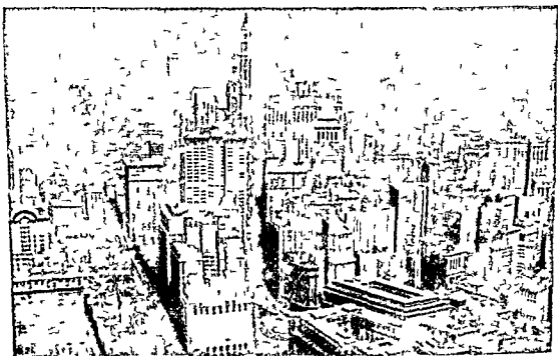
प्राका डो कमासियो—पृ० ६६४



डामपेडो—पृ० ६६४



स्वाधीनता देवी न्यूयार्क—पृ० ७०६



न्यूयार्क के ऊँचे मकानात—पृ० ७२३

गिर्जे' म वष्टिस्ट सेण्ट जान का सगमरगर और चाँदी का बना "चैपेल" बड़ा सुन्दर है । इसके बनने में डेढ़ लाख पौण्ड के लगभग खर्च हुआ था । पुर्तगाल की भाषा के 'इमिजा' शब्द से ही 'गिर्जा' शब्द निकला है । नगर के एक स्थान पर "स्वाधीनता की बस्ती" (Avenida da Liberdade) है । वहा सडक के बीच में एक भारी स्तम्भ की वेदी के ऊपर जञ्जीर से खुली हुई पुर्तगाल देश की मूर्ति स्थापित है । यहाँ के दृश्यों में न्यूनिसिपल महल, आर्सेनल, टेक्निकल स्कूल, भारी तम्बाकू का कारखाना, जूयोवाग, दो रेल्वे-स्टेशन, अनेक गिर्जे और मूर्तियाँ आदि प्रधान हैं । कान्स्टेन्टिनोपुल की तरह यहाँ भी ऊपर चढने के लिए एक रेल्वे-लाइन है । यहा चुङ्गी का अत्याचार अधिक है । जहाज पर से उतरते ही यात्रियों का सामान पुखानुपुल रूप से जाँचा जाता है । गोवा आदि स्थानों की बहुत सी काले रंग की प्रजा भी लिस-बन में देख पडी ।

सन् १७६५ की १ नवम्बर को भयानक भूकम्प से यह नगर नष्ट हो गया था । उसका चिह्न स्वरूप एक मकान का भग्नावशेष वसी अवस्था में रक्खा गया है । १० बजे के समय यह भयङ्कर भूडोल आया था । उसमें बहुत से लोग मकानों के नीचे दब कर मर गये । उसके साथ ही एकाएक नदी का पानी भी ५० फुट चढ आया और नगर उसी में जैसे तैरने लगा । अन्त को दुष्ट लोगो ने आग लगा दी । वह आग आठ दिन तक नहीं बुझी । उसमें क़रीब क़रीब सभी नगर नष्ट सा हो गया । किसी अँगरेज भद्रपुरुष ने अपनी आखो से सब हाल देख कर यो लिखा है—

"The terror of the people was beyond description, nobody wept,—it was beyond tears,—they ran

hither and thither, delirious with horror and astonishment—beating their faces and breasts—crying *miser cordia*, the world's at an end, mothers forgot their children, and ran about loaded with crucified images. Unfortunately many ran to the churches for protection, but in vain was the sacrament exposed, in vain did the poor creatures embrace the altars, images, priests, and people, were buried in one common ruin * * * The prospect of the city was deplorable. As you passed along the streets, you saw shops of goods with the shop-keepers buried with them, some alive crying out from under the ruins, others half buried, others with broken limbs, in vain begging for help, they were passed by crowds without the least notice or sense of humanity. The people lay that night in the field, which equalled if possible the horrors of the day, the city all in flames, (many thousands of trembling fugitives had collected in the great square, when it was discovered that flames were spreading in every quarter. Taking advantage of the universal panic and confusion, a band of miscreants had fired the city), and if you happened to forget yourself with sleep, you were awakened by the trembling of the earth and the howlings of the people. Yet the moon shone, and the stars, with unusual brightness. Long wished for day at last appeared, and the sun rose with great splendour on the desolated city in the morning. Some of the boldest, whose houses were not burnt, ventured home for clothes, the want of which they had severely felt in

the night, and a blanket was now become of more value than a suit of silk” लेखक महाशय कहते हैं कि “ऐसे समय भी चन्द्रमा और तारागण ने उदित होकर किरण जाल फैलाना बन्द नहीं किया और दूसरे दिन सूर्यदेव ने विशेष तेज के साथ इस विनष्ट नगर के ऊपर अपनी किरणों विकीर्ण करने में कुछ कसर उठा नहीं रखी ।” इन शब्दों के द्वारा दर्शक महाशय यह दिखाते हैं कि इस तरह की एक राजधानी ५०,००० के लगभग मनुष्यों-सहित नष्ट हो गई, लेकिन चन्द्र-सूर्य ने कुछ भी उधर ध्यान नहीं दिया । वास्तव में यदि यह सारी पृथ्वी चूर्ण हो जाय तो उससे ससार की अत्यन्त साधारण क्षति ही होगी, एक चींटी के मरने से बढ कर हानि न होगी । ये भूडोल आदि उत्पाव उस ईश्वर के विशेष विधान हैं । इन्हीं के द्वारा महामोह में डूबे हुए जीवों को चेत होता है । वर्षा, आंधी-तूफान आदि की अवाई जानने के लिए विज्ञान की सहायता से उपयोगी यन्त्रों का आविष्कार हुआ है । भूमिकम्प जानने के लिए भी एक यन्त्र बना है । लेकिन उससे ससार का कुछ उपकार नहीं होता, क्योंकि वह भूमिकम्प के आने की सूचना नहीं दे सकता । हाँ, भूमिकम्प शुरू होने पर मामूली से मामूली भूमिकम्प का पता चल जाता है । विसूवियस के मानमन्दिर में इस प्रकार का सर्वश्रेष्ठ यन्त्र स्थापित है । इसे (Electromagnetic Seismograph), कहते हैं । भूमिकम्प शुरू होते ही इसके द्वारा निकटस्थ कर्मचारी के घर का अलार्म-घंटा (Alarm-bell) बजता है और एक घड़ी लगी रहती है तो वह बन्द हो जायगी । और एक घड़ी रहती है, उसका लगर खिसक जाता है और उसकी गति से घोड़ा सा लिपटा हुआ कागज लुबक जाता है और उसक ऊपर

पेन्सिल का निशान बन जाता है । इस प्रकार अनायास भूकम्प का समय और उसका हलकापन या भारीपन केवल जाना जा सकता है । पहले से सावधान होकर प्राण बचाने का कोई उपाय अभी तक नहीं निकला । अचानक उपस्थित होकर मोहान्ध पुरुषों को ज्ञान देना ही भूकम्प का उद्देश्य जान पड़ता है । राजधानी से ६ कोस पर समुद्र है । इसी समुद्र जाने के मार्ग में नदी-तट पर एक पन्द्रहवीं शताब्दी का विचित्र ढग का टावर देख पड़ता है । नदी के किनारे और मुहाने पर कई एक छोटे छोटे किले स्थापित हैं । यहाँ से माड्रिड (Madrid) जाने का विचार था, लेकिन वहाँ शीतला-रोग फैलने और राह में अराजकता (Anarchists) का उत्पात सुनकर वहाँ जाने का साहस नहीं हुआ ।

पुर्तगाल की साधारण अवस्था । राज्य का घेरा ३४,६०६ वर्ग मील का है । जन-संख्या एक करोड़ के लगभग है । सन् १८८५ में एक करोड़ पौण्ड से कुछ अधिक राज्य की आमदनी और उतना ही खर्च हुआ था । ऋण १५ करोड़ के लगभग था । शान्ति के समय ४०,००० सेना रहती है और युद्ध के समय डेढ़ लाख तक जमा हो सकती है । जड़ी जहाजों में ३६ स्टीमर और १६ पाल-दार जहाज हैं । नौ-सेना ४,००० के लगभग होगी । यहाँ रोमन-कैथलिक धर्म ही प्रधान है । यहाँ का शिक्षा-विभाग धर्मसम्प्रदाय के हाथ में नहीं है । आईन के अनुसार लड़की-लड़को को स्कूल भेजने के लिए बाध्य होने पर भी अनेक लोग इस विषय में विशेष शिथिल पाये जाते हैं । इसी कारण प्रजा में सैकड़ा पीछे ८२ आदमी निरक्षर हैं । राज में न्यूनाधिक ४,००० सरकारी प्राइमरी स्कूल, २२ लाइसियम (उच्च विद्यालय) हैं । इनके सिवा अनेक वे सरकारी मध्य-श्रेणी के स्कूल हैं । राजधानी में एक युद्ध-संबन्धी स्कूल और २८ शिल्प और मजदूरी

सिद्धान्तों के स्थान हैं । राजा डोम-कार्लोस (Dom Carlos) की अवस्था उस समय चौतीस वर्ष की थी । सन् १८८६ में वह सिद्धान्त पर बैठे थे । तीन साल राज्य करने के बाद राज्य की आर्थिक अवस्था देखकर इन्होंने अपनी वृत्ति का १/२ हिस्सा आपसे छोड़ दिया । लेकिन उससे राज्य का कुछ विशेष उपकार नहीं हुआ । कारण, मन्त्री लोग केवल अपना ही घर भरने में लगे रहते हैं । फिर सुप्रबन्ध कौन करे ? ग्रीस-राज की तरह यह भी छाता लगाये पैदल या ट्रामगाड़ी पर घूमने निकलते हैं । (लेकिन अब पुर्तगाल में राजा नहीं है । राजा को प्रजा ने भगा दिया है और प्रजा-परतन्त्र-प्रणाली स्थापित होगई है) । यहाँ के रुपये का हिसाब विचित्र ही है । स्पेन में भी पहले यही हाल था । सारा हिसाब 'रेज्' के द्वारा होता है । लेकिन 'रेज्' नाम का कोई सिक्का नहीं है । एक रेज् १/२ पेनी के लगभग कीमत का होता है । ऐसा लुद्र आर्थिक मान (Monetary unit) पृथ्वी पर और कहीं नहीं है । राज्य की अवस्था शोचनीय है । सुवर्ण का नाम नहीं है चाँदी भी मुश्किल से देख पड़ती है और पैसा भी कम है, केवल नोटों से ही सब काम चलता है । दो पेनी तक के नोट बाजार में चलते हैं ।

यूरोप से विदा । जिब्राल्टर आकर यूरोप से विदा होना पडा । सारे यूरोप में पर्यटन करके मैंने यही देखा कि यूरोपियन लोग जाति, धर्म, आचार-व्यवहार आदि में साधारणत एक हैं । स्त्रियों का ये लोग यथोचित सम्मान करते हैं । ये कहते हैं—

“ Men make the laws, women make the manners of nations ” कवि ने भी कहा है—

“ Woman's cause is man's they rise or sink
Together dwarfed or God-like, bond or free ”

वास्तव में यह विलकुल ठीक है कि सुशिक्षिता माताओं ने ही यूरोप की वर्तमान उन्नति की है। इस बात पर ध्यान देना हमारा परम कर्तव्य है। यह बात किसी को बतानी न होगी कि सबकी अपेक्षा जुद्ध महादेश होने पर भी यूरोप सारी पृथ्वी पर हुकूमत कर रहा है। इतिहास के उल्लिखित रसेल लिखते हैं—

“Europe is the theatre on which the human character has appeared to the greatest advantage, and where society has attained its most perfect form, both in ancient and modern times Its history therefore will furnish us with everything worthy of observation in the study of men and kingdoms”

—W Russel

इस मन्तव्य को इतिहास के सभी विद्यार्थी अच्छी तरह समझ सकते हैं। भारतवर्ष के संबन्ध में यूरोप के लोगों को बहुत ही कम जानकारी हासिल है। अनेक यूरोपियों से बातचीत करके मुझे इस बात का परिचय प्राप्त हुआ है। यहाँ तक मेरे हिन्दू होने पर भी वे विश्वास नहीं करते थे। उनमें से कई लोगों ने इसी प्रकार की बातें कहीं कि “आपको तो हम ठीक अपने ही समान पाते हैं। केवल रङ्ग कुछ काला है। सो ऐसा रंग यूरोप के दक्षिण-अंश में अक्सर देखा जाता है। हमने सुना है कि भारत के लोग आधे असभ्य, आधे नगे और धोर कुसस्कारग्रस्त होते हैं। वे और किसी जाति से हेल-मेल बढ़ाना नहीं चाहते, अन्य जातियों के साथ खाते-पीते नहीं। फिर आप अपने को कैसे भारत का हिन्दू बतलाते हैं? हाँ, यह हो सकता है कि आपके पूर्व-पुरुष यूरोपियन थे। बहुत दिनों औष्म-प्रधान भारत में रहने के कारण आपका रंग कुछ काला पड़

मोल्वी के सामने चटाइयों पर पालथी मारे बैठे हिल हिल कर कुरान पढते हैं । भिश्ती पीठ पर पानी-भरी मशक लादे कटेरा बजा कर सबकों पर पानी पिलाते फिरते हैं । दूकान-पाट बाजार आदि का ढग हमारे ही देश का ऐसा है । खियाँ आँसो में और भोंह के बीच में काजल और हाथों में मेहँदी लगाती हैं । टर्की से इतनी दूर होने पर भी यहाँ टर्की की अनेक बातें देख पढती हैं । यहाँ के लोग अपनी सन्तान का उल्लेख “कुरिसत, कदाकार” आदि शब्दों में ही करते हैं और अगर कोई किसी के लडके की ओर अधिक देर तक देखता है तो उसकी माता या और कोई निकटस्थ अभिभावक, नजर से बचाने के लिए, फौरन उस बच्चे के सिर पर थुक थुका देता है । बच्चों के खिलाने-पिलाने का कोई नियम नहीं, वे जब जो कुछ पाते हैं वही खा लेते हैं और वोमार पड जाते हैं । मेरा जो दुभाषिया था वह जाति का मूर किन्तु यूरोपियन ढग का था । काम चलाने भर की अँगरेजी, फ्रेंच और स्पेनिस भाषा उसे मालूम थी । उसने नगर के सब प्रधान दृश्य दिखलाये और उनके सम्बन्ध की जानने योग्य बातें भी समझाई । नगर में देखने की चीज “कस्वा” क़िला और बाजार है । इसी क़िले में यहाँ का गवर्नर रहता है । यहाँ रास्ते को ‘बाब’, बन्दरगाह को ‘मासा’ और बाजार को ‘सक’ कहते हैं । नगर के बाहर मैदान में घूमते फिरते रहनेवाले सौदागरो की ऊँट और गधो की छावनी एक नया ही दृश्य है । इस शहर के एक तरफ समुद्र और तीन तरफ मरुभूमि है । मैं जिस होटल में ठहरा था वह ऐन समुद्र-तट पर था । वहाँ से बन्दरगाह और समुद्र देखने की बड़ी बहार थी । धन्य है यूरोपियन लोग, जिन्होंने ऐसी मरुभूमि में भी इन्द्रभवनतुल्य होटल स्थापित करके आनेवाले यात्रियों के आराम का ऐसा अच्छा प्रबन्ध कर रक्खा

मरको ।



खीर । इसका स्थानीय नाम है ताञ्जा । जन-संख्या २०,००० के लगभग है । उनमें ४०० के लगभग यूरो-पियन हैं । यह शहर पहले पुर्तगीज लोगों के अधि-कार में था । सन् १६६२ में इंग्लैण्ड के राजा ने व्याह के दहेज में पाया । परन्तु वहाँ का शासन व्ययसाध्य देखकर वह मूर लोगो को दे दिया गया । वर्तमान समय में इसके ऊपर वहुतो की नजर पडी है । परन्तु अभी तक कान्स्टेन्टिनोपुल की तरह इसकी भी दशा है । कोई इस पर हस्तक्षेप नहीं कर सकता । क्योंकि यह भू-मध्यसागर के प्रवेशद्वार पर बसा हुआ है । कादिज से जलमार्ग होकर एक बजे के समय यहाँ पहुँचा । उस समय खूब पानी बरस रहा था । जहाज से किनारे पहुँचानेवाली डोंगी का माँझी मेरी यूरो-पियन पोशाक देख कर अन्यान्य लोगो की अपेक्षा दसगुना किराया मुझसे माँगने लगा । उससे कम पर किसी तरह राजी होते न देख कर लाचार उतना ही दिया । समुद्र से ऊपर को अम्फी-थियेटर की तरह नगर उठा हुआ है । चारो ओर चहारदीवारी और एक छोटा सा किला भी है । यहाँ सभी बाते पूर्वी ढग की हैं । रास्ते बहुत ही बुरे हैं । यहाँ कई तरह के मनुष्य बसते हैं । असल मूर लोगो का डील-डौल बहुत ही सुन्दर और सुडौल होता है । पोशाक-पहनावा सबका करीब करीब मुसलमानी ढग का है । लडके


मोल्वी के सामने चटाइयों पर पालघों मारे बैठे हिल हिल कर कुरान पढ़ते हैं। भिरती पीठ पर पानी-भरी मराफ लादे कटोरा घजा कर सडकों पर पानी पिलाते फिरते हैं। दूकान-पाट बाजार आदि का ढग हमारे ही देश का ऐसा है। न्त्रियाँ धारो में और भाँठ के गोच में काजल और हाथों में मेहँदी लगाती हैं। टर्की से इतनी दूर होने पर भी यहाँ टर्की की अनेक बातें देख पड़ती हैं। यहाँ के लोग अपनी सन्तान का उल्लेख "कुत्सित, कदाकार" आदि शब्दों में ही करते हैं और अगर कोई किसी के लडके की ओर अधिक देर तक देखता है तो उसकी माता या और कोई निकटस्थ अभिभावक, नजर से बचाने के लिए, फौरन उस बच्चे के सिर पर युक्त युका देता है। बच्चों के रिलाने-पिलाने का कोई नियम नहीं, वे जब जो कुछ पाते हैं वही खा लेते हैं और बीमार पड़ जाते हैं। मेरा जो दुभापिया था वह जाति का मूर किन्तु यूरोपियन ढग का था। काम चलाने भर की अँगरेजी, फ्रेंच और स्पेनिस भाषा उसे मालूम थी। उसने नगर के सब प्रधान दृश्य दिखलाये और उनके सम्बन्ध की जानने योग्य बातें भी समझाई। नगर में देखने की चीज "कस्वा" किला और बाजार है। इसी किले में यहाँ का गवर्नर रहता है। यहाँ रास्ते को 'बाव', बन्दरगाह को 'मार्सा' और बाजार को 'सक' कहते हैं। नगर के बाहर मैदान में धूमते फिरते रहनेवाले सौदागरों की ऊँट और गधों की छावनी एक नया ही दृश्य है। इस शहर के एक तरफ समुद्र और तीन तरफ मरुभूमि है। मैं जिस होटल में ठहरा था वह ऐन समुद्र-तट पर था। वहाँ से बन्दरगाह और समुद्र देखने की बड़ी बहार थी। धन्य है यूरोपियन लोग, जिन्होंने ऐसी मरुभूमि में भी इन्द्रभवनतुल्य होटल स्थापित करके आनेवाले यात्रियों के आराम का ऐसा अच्छा प्रबन्ध कर रखा

है । ऐसे उद्धत राजा के राज्य में इस प्रकार के खाने-पाने और आराम के स्थान का होना सचमुच ही विस्मय की बात है । इस समय राज्य में कुछ गडबडी मच रही थी । इस वारे में होटल के अधिकारी से पूछने पर उसने मुझे अभयप्रदान किया । कहा, इस समय यहाँ इसीलिए अँगरेजो, फ्रेंच, इटलियन और स्पेनिस जंगी जहाज़ मौजूद हैं । होटल में भोजन के समय टेबिल सजाने के लिए टब में लगे हुए अन्यान्य छोटे वृत्तों के साथ फल-फूल-शोभित एक तरह का कौली का पेड भी रक्खा जाता था । मरक्को की खजूर खाकर चित्त बहुत प्रसन्न हुआ । तास्जीर रोमन अमलदारी का बसा हुआ शहर है । उस समय इसे "तिखिस" कहते थे । नगर से एक अँगरेजी का, एक फ्रेंच भाषा का और तीन स्पेनिस भाषा के अक्षर प्रकाशित होते हैं । यूरोपियन अधिवासी लोग अपने अपने प्रबन्ध से अपने अपने देश के जहाजों पर अपनी अपनी डाक भेजते हैं, यहाँ के सुल्तान का कोई प्रबन्ध नहीं है । घोड़े दिन हुए, राजधानी से बन्दरगाहों तक डाक जाने-आने का प्रबन्ध सुल्तान ने किया है । जो कुछ हो यूरोप की सीमा पर मुसलमानी राज्य का बना रहना साधारण बात नहीं । ऐसा भी एक समय हो गया है जब मरक्को और स्पेन के पश्चिम प्रान्त से गमा तीर तक मुसलमानों के घोड़े दर्प के साथ दौड़े हैं । महम्मद के धर्मबल का प्रत्यक्ष प्रमाण यूरोप में मूर और तुर्कों का प्रभाव है । उक्त पैगम्बर की अमित शक्ति के द्वारा अनुप्राणित होकर अरब लोग जो एक समय प्रबल प्रतापी हो उठे थे उसकी जेरवारी को यूरोप अभी तक नहीं मिटा सका । निम्नान-यूरोप में अब तक मुसलमान ओर से कुरान पढते हैं, और यूरोप की नदी गोयाडाव्किवर के किनारे कुरान के अक्षरों से सुशोभित राजमहल अभी तक विराजमान है ।

मरफो की साधारण अवस्था । अरबी नाम 'मर्राकुश' से मरफो शब्द की उत्पत्ति हुई है । देश का स्थानीय नाम 'मगरिव उल आक्सा' (अरब लोगो का पश्चिम प्रान्त) है । सहारा की और सीमा अनिर्दिष्ट रहने के कारण राज्य का परिमाण ठीक तौर से निश्चित नहीं है, अन्दाजन तीन लाख से अधिक वर्ग मील का घेरा होगा । जन-संख्या भी पचास लाख से अधिक न होगी । उसमें १,५०० के लगभग ईसाई, दो लाख कृष्णकाय हवशी, तीन लाख यहूदी और बाक़ी सुन्नी-सम्प्रदाय के मुसलमान हैं । ७० लाख पौण्ड के लगभग राज-कर वसूल होता है । यह राज-कर सुल्तान की गृहस्थी और राज्य-शासन में खर्च होता है । यह कर वसूल करने के लिए १०,००० के लगभग सिपाही नौकर हैं । छोटा या बड़ा कोई भी कर्मचारी नियमितरूप से तनखाह नहीं पाता । अतएव अनेक असत् उपायो से ये लोग पैसा पैदा करते हैं । पल्टन की रसद के सबन्ध में भी कमसरियट की कोई व्यवस्था नहीं है । इस कारण वे लोग भी कूच के समय गांव वगैरह लूट कर अपने खाने-पीने का प्रबन्ध करते हैं । समुद्र-तट की किसी किसी जाति की जीविका ही लूट-मार करना है । सेना ८०,००० है । उसमें १०,००० से सुल्तान की खास हवशियो की पल्टन में है । शेष सेना में आधी के लगभग तनखाह पाती है, और आधी के लगभग केवल युद्ध के समय जमा हो जाती है । सेना की देख-रेख और शिक्का का काम अंगरज, फ़्रेंच और इटलियन कर्मचारियों के हाथ में है । बन्दूक आदि के कारखाने भी इन्हीं के अधिकार में हैं । सुल्तान की उपाधि "अमीर उल मोमिन" (अर्थात् विश्वासियों के प्रधान) है । सुल्तान अपनी जिन्दगी में ही यह बतला जाते हैं कि उनके बाद राज-छत्र किसे मिलेगा । सुल्तान के मरने के बाद शुक्रवार को दोपहर की नमाज के समय सर्वसाधारण के अनु-

मोदन से वसी पुरुष के सिर पर सुल्तानी छत्र लगाया जाता है । तुर्कों के सुल्तान जैसे शेर-उल-इस्लाम के अधीन हैं और (कम से कम नाम-मात्र को) उनके जैसे “मजलिसे खास” (प्रिवी कौन्सिल) है वैसे यहाँ कुछ भी नहीं है । सुल्तान ही राज्य और धर्म के हर्ता-कर्ता हैं । वर्तमान सुल्तान का नाम अब्दुल अजीज है । सन् १८६४ में यह सिद्दासन पर बैठे थे । मूर लोग बड़े ही घमडी होते हैं । इसका कारण यही है कि वे घोर मूर्ख होते हैं । उनके मत से रेल, तार इत्यादि सामग्रियाँ काफ़िरो के लिए हैं, मुसलमान के लिए तो केवल कुरान पढ लेना ही काफ़ी है, विज्ञान आदि अन्य विषयों को सीखने की जरूरत नहीं है । मूर लोग बड़े लडाके होते हैं । “तेरा बाप बैल की तरह पलंग पर पड़े पड़े मर गया (अर्थात् युद्ध में नहीं मरा),” यह इनके यहाँ बड़ी भारी गाली है । स्थूल शरीर होना खियों का सुन्दरता में दारिल है । “ फुलों स्त्री इतनी सुन्दर है कि एक ऊँट के बराबर है,” यह यहाँ बड़ी तारीफ़ की बात समझी जाती है । व्याह की बातचीत पकी होने पर कन्या को बराबर ऊँट का दूध और अन्यान्य चर्बी पैदा करनेवाली चीजे खिलाई जाती हैं । मरको के रुपये का नाम है “मित्काल” । आकार में हमारे यहाँ की दुअन्नौ के बराबर होता है । इसका मूल्य तीन पेनी से कुछ अधिक है । पैसे को ब्लैकिन या मजूना कहते हैं । एक मित्काल के ४० ब्लैकिन मिलते हैं ।

अमेरिका ।


 अटलान्टिक (Atlantic) । पहले कहा जा चुका है कि जिनाल्टर से मैंने अमेरिका की यात्रा शुरू की । जहाज पर केवल हम चार जने फर्स्ट-क्लास के यात्री थे । बाकी ८०० के लगभग इटलियन और सिसिलियन (Sicilian) स्त्री पुरुष और बालक-बालिका निम्नश्रेणी के यात्री थे । इनमें से कुछ उपनिवेश में बसने के लिए और कुछ धनोपार्जन के लिए अमेरिका की ओर जा रहे थे । हम सब यात्रियों को न्यूयार्क (New York) ही जाना था, कारण, अटलान्टिक सागर में और कहीं जहाज के किनारे लगने की जगह नहीं है । कप्तान आदि अफसरों ने कहा— वारह, तेरह, अधिक से अधिक चौदह दिन में पहुँच जायेंगे । सन्ध्या के समय जहाज का लगर उठाया गया । खाड़ी होकर हमारा जहाज अटलान्टिक में पहुँच गया । कई दिन पहले भारी तूफान आ चुका था । दो तीन दिन अच्छी तरह बौते । उसके बाद धीरे धीरे हवा जोर पकड़ने लगी । सामने की तेज हवा के कारण जहाज की चाल धीमी पड़ने लगी । सबको यही आशङ्का हुई कि नियत समय पर जहाज न पहुँच सकेगा । अफसर लोगों की बातचीत से मालूम हुआ कि “मार्च और सितम्बर में अटलान्टिक का रूप भयानक रहता है, भारी उपद्रव होते हैं । क्या होगा, यह नहीं कहा जा सकता ।” अन्त को दो दिन (५२ घंटे तक) विपरीत पवन का

भारी तूफान सहना पडा। उस समय गल्फस्ट्रीम (Gulf Stream) में अटलान्टिक के बीचोबीच हमारा जहाज था। मेरे साथी अन्य तीन यात्री बराबर लेटे ही रहे। कप्तान, अफसर और मोंभी लोग दिन-रात घबराये से रहते थे। दो दिन मुझे अकेले ही बिताने पडे। दिन को कभी कभी ऊपर के डेक में चढकर भीतर की ओर दरवाजा पकडे खडे खडे तुरन्त समुद्र-रूपी भगवान् की लीला देखा करता था। चारो ओर और कुछ भी नहीं देख पडता था। केवल श्वेत बर्फ से आच्छादित शिखरवाली पर्वतमाला के समान फेने से भरी उत्ताल तरंगमाला की बहार नजर आती थी। जान पडता था, जैसे पर्वत समूह और उनके बीच की उपत्यकायें लगातार स्थान-परिवर्तन के साथ साथ अपना रूप बदल रही हैं। जहाज खडा हो होकर कभी इधर और कभी उधर झुककर मृदु मन्द-गति से बडी मुश्किल से अपने मार्ग पर जा रहा था। इम दृश्य को जीवन में कमसे कम एक बार अवश्य देखना चाहिए। अत्यन्त सुन्दर, अत्यन्त मनोहर, दारुण भयानक भाव के भीतर समुद्र की अत्यन्त मनोमोहिनी मूर्ति देख पडती है। तुमुल तूफान में अटलान्टिक का अतुलनीय अद्भुद वेष हो जाता है। आँधी शान्त होने पर नीसरे पहर इटली की खियों और बालिकाओं ने ईश्वर को वन्द्यवाद देकर ऐसे सुन्दर भाव से मिलकर गाना शुरू किया कि उनकी भाषा न समझ सकने पर भी सुननेवालों का मन मोहित हुए बिना नहीं रह सकता। इसके बाद थोडी बहुत प्रतिकूल वायु को झेलता हुआ हमारा जहाज चारह दिन की जगह अठारह दिन में न्यूयार्क पहुँचा। अटलान्टिक के जहाजों में जुए खेलने का खूब चलन है। हमारे इस जहाज पर भी जुआ हो रहा था। ऊपर निम्नश्रेणी के इटलियन लोग, सेलून पर कप्तान और दो यात्री अवकाश मिलते ही

जुआ खेलने लग जाते थे । इन दोनो यात्रियों में एक आयरिश और दूसरा अमेरिकन युवक था । अमेरिकन युवक नेपल्स का वाइस कमल था, छुट्टी लेकर घर जा रहा था । इस अमेरिकन भद्रपुरुष ने जहाज पर मुझसे कुछ कर्ज लिया था । उसे अदा न करके जहाज छोड़ने के समय और कुछ ठगने के लिए वारम्बार चेष्टा करते देखकर मैं सबके साथ जहाज से नहीं उतरा । जाने के समय उसने अपना पता बतला कर मुझे अपने घर में मध्याह्न भोजन का निमन्त्रण दिया । वहाँ भी कुछ ठगने की ही उसकी मशा थी ।

न्यूयार्क । बन्दरगाह के मुहान पर रोशनी का जहाज (Light Ship) एक देखने की चीज थी । पास के छोटे टापुओ में किले बने हुए हैं । उसके बाद समुद्र-तट पर स्वाधीनता-देवी की विराट् मूर्ति देखी । यह मूर्ति फ्रान्स ने अमेरिका को उपहार के तौर पर दी है । मूर्ति का घेरा इतना बड़ा है कि उसके उठे हुए हाथ (एक हाथ में एक पुस्तक सी है । उस पर लिखा है, चौथी जूलाई १७७६, और दूसरा हाथ उठा हुआ है ।) के अग्रभाग में विजली की रोशनी स्थापित है । हाथ पोला है और उसके भीतर सीढियाँ बनी हुई हैं । उन सीढियों पर चढ़कर लोग रोशनी तरु जाते हैं । मूर्ति के नीचे का चबूतरा और भी ऊँचा है । बन्दरगाह में पहुँच कर अस्पवारो में देखा कि गत तूफान में अनेक स्थानों में बहुत से जहाज नष्ट होगये । जहाज से उतर कर कहीं जाऊँगा, इसका कुछ निश्चय न होने के कारण साधारण वाहक-गाडी (Express) में अपना असबाब नहीं दे सका । अनेक कम्पनियों की ये गाडियाँ ही लोगो का असबाब लादकर यथास्थान पहुँचा देती हैं, कुलियों की व्यवस्था नहीं है । हडसन (Hudson) नदी के सेवा-घाट पर जाने के लिए कुली खोजकर हौरान होगया । वही मुश्किल

भारी तूफान सहना पडा। उस समय गल्फस्ट्रीम (Gulf Stream) में अटलान्टिक के बीचोबीच हमारा जहाज था। मेरे साथी अन्य तीन यात्री बराबर लेंटे ही रहे। कप्तान, अफसर और मॉन्ही लोग दिन-रात घबराये से रहते थे। दो-दिन मुझे अकेले ही बिताने पडे। दिन को कभी कभी ऊपर के डेक मे चढकर भीतर की और दरवाजा पकडे खडे खडे तुरन्त समुद्र-रूपी भगवान् की लीला देखा करता था। चारो ओर और कुछ भी नहीं देख पडता था। केवल श्वेत बर्फ से आच्छादित शिखरवाली पर्वतमाला के समान फेने से भरी उत्ताल तरंगमाला की बहार नजर आती थी। जान पडता था, जैसे पर्वत समूह और उनके बीच की उपत्यकयें लगातार स्थान-परिवर्तन के साथ साथ अपना रूप बदल रही हैं। जहाज खडा हो होकर कभी इधर और कभी उधर झुककर मृदु मन्द-गति से बडी मुश्किल से अपने मार्ग पर जा रहा था। इम दृश्य को जीवन मे कमसे कम एक बार अवश्य देखना चाहिए। अत्यन्त सुन्दर, अत्यन्त मनोहर, दारुण भयानक भाव के भीतर समुद्र की अत्यन्त मनोमोहिनी मूर्ति देख पडती है। तुमुल तूफान मे अटलान्टिक का अतुलनीय अद्भुद वेष हो जाता है। आंधी शान्त होने पर तीसरे पहर इटली की लियों और बालिकाओ ने ईश्वर को बन्धवाद देकर ऐसे सुन्दर भाव से मिलकर गाना शुरू किया कि उनकी भाषा न समझ सकने पर भी सुननेवालों का मन मोहित हुए बिना नहीं रह सकता। इसके बाद थोडी बहुत प्रतिकूल वायु को भेलता हुआ हमारा जहाज बारह दिन की जगह अठारह दिन मे न्यूयार्क पहुँचा। अटलान्टिक के जहाजों में जुए खेलने का खूब चलन है। हमारे इस जहाज पर भी जुआ हो रहा था। ऊपर निम्नश्रेणी के इटलियन लोग, सेलून पर कप्तान और दो यात्री अवकाश मिलते ही

जुआ खेलने लग जाते थे । इन दोनो यात्रियो में एक आयरिश और दूसरा अमेरिकन युवक था । अमेरिकन युवक नेपल्स का वाइस कंसल था, छुट्टी लेकर घर जा रहा था । इस अमेरिकन भद्रपुरुष ने जहाज पर मुझसे कुछ कर्ज लिया था । उसे अदा न करके जहाज छोड़ने के समय और कुछ ठगने के लिए बारम्बार चेष्टा करते देखकर मैं सबके साथ जहाज से नहीं उतरा । जाने के समय उसने अपना पता बतला कर मुझे अपने घर में मध्याह्न-भोजन का निमन्त्रण दिया । वहा भी कुछ ठगने की ही उसकी मशा थी ।

न्यूयार्क । बन्दरगाह के मुहाने पर रोशनी का जहाज (Light Ship) एक देखने की चीज थी । पास के छोटे टापुओं में किले बने हुए हैं । उसके बाद समुद्र-तट पर स्वाधीनता-देवी की विराट् मूर्ति देखी । यह मूर्ति फ्रान्स ने अमेरिका को उपहार के तौर पर दी है । मूर्ति का घेरा इतना बडा है कि उसके उठे हुए हाथ (एक हाथ में एक पुस्तक सी है । उस पर लिखा है, चौथी जूलाई १७७६, और दूसरा हाथ उठा हुआ है ।) के अग्रभाग में विजली की रोशनी स्थापित है । हाथ पोला है और उसके भीतर सीढियाँ बनी हुई हैं । उन सीढियो पर चढ़कर लोग रोशनी तक जाते हैं । मूर्ति के नीचे का चतुरा और भी ऊँचा है । बन्दरगाह में पहुँच कर अस्पवारो मे देखा कि गत तूफान में अनेक स्थानों में बहुत से जहाज नष्ट होगये । जहाज से उतर कर कहीं जाऊँगा, इसका कुछ निश्चय न होने के कारण साधारण वाहक-गाडी (Express) में अपना असबाब नहीं दे सका । अनेक कम्पनियों की ये गाडियाँ ही लोगो का असबाब लादकर यथास्थान पहुँचा देती हैं, कुलियो की व्यवस्था नहीं है । हडसन (Hudson) नदी के खेवा-घाट पर जाने के लिए कुली खोजकर दौरान होगया । वडी मुशिकूल

से एक आदमी मिला । उसने $\frac{1}{2}$ मील तक असबाब लेजाने के लिए आधा डालर (Dollar हमारे यहाँ के १॥ ४० से भी कुछ अधिक) माँगा । मैंने लाचार स्वीकर कर लिया । तब उसने दो चीजें आप लों और दो चीजें ले चलने के लिए, विना किसी सकोच के, मुझसे कहा—“ You can carry the other two ” मैं तो सुनकर दङ्ग होगया । इतने थोड़े रास्ते के लिए मामूली असबाब का भाड़ा १॥ ४० देकर भी दो चीजें मुझे लादनी पड़ीं । क्या करता ? स्वीकार कर लिया । उस कुली ने खेवाघाट में पहुँचा कर अत्यन्त साफ सुथरी ‘जेटी’ के ऊपर होकर एक सुन्दर लकड़ी के कमरे में विठला कर किराया मागा । मैंने उसे मुसाफिरखाना समझ कर कहा— “जहाज आने दो, इतनी जल्दी क्यों कर रहे हो ?” इसके उत्तर में कुली ने कहा—“ You are already on the boat, she will leave immediately ” अर्थात् “आप जहाज के ऊपर बैठे हैं, अभी छूटेगा,” मैं आप ही बेवकूफ बन गया । उसको भाड़ा देकर दूसरे दर्वाजे से कमरे के बाहर जाकर देखा, सचमुच ही मैं स्टीमर के ऊपर था । आश्चर्य यही है कि स्टीमर छूटने के पहले तक मैं जेटी (Jetty) और स्टीमर के सयोगस्थल को नहीं भाँप सका । उस पार जाकर फिर कुलियों की गडबड में पड गया । मेरे सकट और तरुलीफ को देखकर एक बालक ने ६ सेन्ट (Cent) लेकर मेरी सहायता की और मेरा असबाब ट्रामगाडी पर चढा दिया । कुक कम्पनी के आफिस से सवाद आदि लेकर होटल में असबाब रखकर सक्चूरल नोट (Circular Note) भुनाने के लिए एलिवेटेड रेल्वे (Elevated Railway) द्वारा वाल स्ट्रीट (Wall Street) में गया । लन्दन में धरती के नीचे रेल चलती है और यहाँ २५-३० से ७० फुट तक ऊँचे पर रास्ता चलनेवालों के सिर के ऊपर रेल

चलती है । स्टेशन वगैरह सब कारखाना ऊपर ही हैं । रेल के कारण नीचे के रास्तों में प्रकाश नहीं जा सकता । वे सदा भीगे और कीचड़ से भरे रहते हैं । इस रेल की सड़क पर निलय आफिस वगैरह खुलने के समय और उसके एक घंटे बाद तक बेंको की ओर एक ट्रेन के बाद दूसरी ट्रेन छूटा करती है । वालस्ट्रीट लन्दन की लम्बार्ड स्ट्रीट (Lombard Street) के समान है । धनवानों के समागम के सम्बन्ध में इसका नम्बर लम्बार्ड स्ट्रीट के नीचे ही है । बैंक में नोट भुना कर देखा कि दो विजली की मशीनों में बराबर फोते के समान कागज के टुकड़े छप छप कर बाहर निकल रहे हैं । पूछने से मालूम हुआ कि एक में एक्सचेंज से और दूसरी में ब्रेञ्चो से बराबर तरह तरह की सपरे आती हैं । एक रेलवे-स्टेशन में खड़ा हुआ मैं रेल की अपेक्षा कर रहा था, इतने में एक लेडी ने पास आकर मुझसे पेन्सिल माँगी और नोटबुक में न जाने क्या लिखकर पेन्सिल मुझे देकर चली गई । यूरोप में—खास कर इंग्लैण्ड में— अपरिचित स्थल पर ऐसा नहीं देखा जाता । यहाँ चारों ओर लोग जैसे विजली की तरह जाते आते देख पड़ते हैं [इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध पण्डित हर्बर्ट स्पेन्सर (Herbert Spencer) ने अमेरिका के लोगों को धनोपार्जन के लिए भारी परिश्रम करते देख कर प्रकाश्य वक्तृता द्वारा उन्हें लोभ की बाढ़ रोकने के लिए उपदेश दिया था । दुःख की बात है कि उनकी बात को कोई मान नहीं सका । क्योंकि अटलान्टिक सागर के उस पार जीवन सप्राप्त इतना तीव्र है कि शरीर और मन की भारी हानि देख कर भी वे सावधान होने में असमर्थ हैं] । दूकान पर कोई चीज खरीदिए तो इंग्लैण्ड के 'दूकानदार कहते हैं—

“Thank you, sir, very much obliged Anything else this morning?” किन्तु अमेरिका में यह कुछ नहीं है । सभी

जैसे लापवाह हैं, अपने धन्वे मे या घमण्ड में आप ही मस्त हैं, शिष्टाचार या लौकिकता दिखाने के लिए जैसे किसी को अवकाश ही नहीं है ।

दृश्य आदि । न्यूयार्क अमेरिका का सर्वोत्कृष्ट नगर है । राज-गार और सम्पत्ति मे इम नगर का पृथ्वी भर मे दूसरा नम्बर है । उपनगर वगैरह की आवादी मिलाकर यहाँ की जन-सख्या २५ लाख के लगभग है । उपनिवेश के लोगो मे से एक-तिहाई आदमी यहीं उतरते हैं । खास-नगर के दोनो ओर दो नदियाँ बहती हैं । दोनो में १४ वर्ग-मील के लगभग लम्बा जहाज ठहरने की जगह है । वन्दरगाह के एक जल-खण्ड (Upper Bay) मे चौदह और दूसरे जल खण्ड (Lower Bay) मे अठासी वर्ग-मील का जहाजो के ठहरने का स्थान है । अमेरिकन लोगो के मत से उनके देश में जहाँ जो है वह पृथ्वी भर मे सर्वोत्कृष्ट है । चमक-दमक और दिखावा अमेरिकन लोगो का खास स्वभाव है । किन्तु हार्वर वास्तव में सर्वोत्कृष्ट है । यह नगर सन् १६५६ मे बसा था और इसकी उन्नति सन् १८०७ से शुरू हुई है । तीन मील लम्बी सडक का नाम है ब्राड्वे (Broadway) । उसी से चारो ओर को सडकें निकली हैं । इस सडक और अन्य एक सडक के सिवा और सडकें इतने बडे प्रसिद्ध शहर के लायक नहीं हैं । दो एक भिन्न सख्याओं के द्वारा सारी सडकों के नाम रखे गये हैं । जैसे चतुर्थ आविनिऊ, पैंसठवां स्ट्रीट इत्यादि । यूरोपियन नगरो की तरह सडको में पेशाब आदि करने (Water-closet) के स्थान नहीं हैं । इसके लिए पब्लिकहाउसवालो (कलबरिया के मालिकों) के साथ सरकार ने प्रबन्ध कर लिया है । वहाँ रास्ते चलनेवाले लोग पेशाब आदि करते हैं । स्व्वाथर आदि मिलाकर छोटे-बडे ३० साधारण विहार-स्थान

हैं । उनमें मध्यपार्क (Central Park) में २५,००० बीघे से अधिक जमीन लगी है । अर्थात् वह २½ मील लम्बा और आध मील चौड़ा है । वहाँ की वृक्ष आदि सब सामग्री देखने लायक है । तीसरे पहर धनी लोग वहाँ आते हैं । उस समय यह स्थान सब गुलजार होता है । सब बड़े बड़े होटल एक स्कायर में हैं । उपनगर के एक टापू (Coney Island) में इतना बड़ा एक होटल है कि उसमें एक साथ ४,००० आदमी भोजन करने बैठ सकते हैं । मोन्यूमेन्टो में वॉशिंगटन, लाफेइट (Lafayette), और लिंकन (Abraham Lincoln) की मूर्तियाँ प्रधान हैं । ब्रुकलिन-ब्रिज (Brooklyn Suspension Bridge) अपने ढंग के पुलों में, पृथिवी भर में, श्रेष्ठ है । आधे मील से कुछ कम चौड़े पानी के ऊपर ५,६६६ फुट लम्बा और चौच में १,५६३ फुट का एक "स्पान" डेढ़ करोड़ डालर की लागत से बना है । पाँच कराड़ डालर की लागत से छोटे बड़े ५०० से अधिक गिर्जे बनवाये गये हैं । उन सबका सालाना खर्च ४० लाख डालर है और सबसे चार लाख से अधिक उपासना करनेवालों के बैठने की जगह है । इस नगर में आठ से लेकर दस बरस तक की अवस्था के बालक आईन के अनुसार शिक्षा प्राप्त करने के लिए बाध्य हैं । ६,००० के लगभग शिक्षक और चार लाख से अधिक विद्यार्थी हैं । २० लाइब्रेरियाँ हैं, उनमें तीन बड़ी हैं । इनके सिवा कूपर (Cooper) नामक एक व्यक्ति छ लाख डालर खर्च करके एक पाठ भवन और एक विज्ञान शिल्प का स्कूल स्थापित कर गये हैं । वहाँ बहुत से लोग मुफ्त ज्ञानोपार्जन करके कुतार्थ हुआ करते हैं । वह इस लाइब्रेरी को सालाना खर्च के लिए और भी दो लाख डालर दे गये हैं । इस नगर में ६०० से अधिक समाचारपत्र और सामयिक पत्र प्रकाशित होते हैं । उनमें ५०

दैनिक पत्र हैं। इस नगर से प्रकाशित “न्यू-यार्क हेरल्ड” नामक दैनिक पत्र की सात लाख के लगभग कापियाँ बिकती हैं। शायद ससार में इससे अधिक किसी अखबार की विक्री न होती होगी। लंदन में भी इसका एक संस्करण प्रकाशित होता है। इस समाचार-पत्र के दिये खर्च से महात्मा लिविंगस्टन की खोज के लिए स्टान्ले भेजे गये थे। ऐसे ऐसे महान् कार्यों की सहायता करना एक विशेष विज्ञापन समझना चाहिए। सन् १७८३ की २८ नवम्बर को ब्रिटिश सेना ने यहाँ से विदा होकर स्वदेश की यात्रा की थी और सन् १७८६ की ३० अप्रैल को वाशिङ्गटन इस नगर में राज्य के प्रेसी-डेण्ट चुने गये थे। इस नगर के समान धनी शहर पृथ्वी पर दूसरा नहीं है। पहले जर्माँदारो की यहाँ प्रधानता थी, किन्तु इस समय नगर के मुखिया सौदागर लोग हैं। विद्या-बुद्धि या और कोई गुण यहाँ नहीं पूछा जाता। यहाँ की सब तरह की मान-भर्यादा रुपया है। इस नगर के चालीस आदमी २ लाख से लेकर ३० लाख डालर की अस्थावर सम्पत्ति पर टेक्स देते हैं। स्थावर सम्पत्ति का तो शुमार करना ही कठिन है। वान्डर बिल्ट महल (Vanderbilt-Palace) बनने में ५० लाख डालर के लगभग रकम खर्च हुई है। अब खयाल कीजिए कि इस आदमी की सम्पत्ति कितनी होगी! वर्तमान समय में प्रधान धनी किरोसिन तेलवाले राकफेलर John D Rockefeller, the Standard Oil King) हैं। इनकी सम्पत्ति कितनी है, यह निश्चय करके बतलाना कठिन है। इनकी सालाना आमदनी दो करोड़ डालर है। इनके पास इतनी सम्पत्ति होने पर भी लोग इनकी बड़ी निन्दा किया करते हैं। समाचार-पत्रों में वह छप भी जाती है। धन के बल से बहुत से मध्यवित्त सौदागरों से लागडाँट करके इन्होंने उनको फकीर सा बना दिया है। स्वार्थसाधन के लिए अनेक

असत् उपायों का सहारा लेने में भी ये कुछ सकोच नहीं करते ।
 "एटिना" नामक मासिक पत्रिका में इनके विरुद्ध अनेक वार्ते प्रका-
 शित हुई हैं । जैसे—

Mr John D Rockefeller is supposed to be the richest man in the world His enormous wealth is alike his power and his curse It represents on the one hand the coercive force, the honeyed bribe, the stifling gag, on the other it marks blasted hopes, betrayed trusts, individual ruin, national degradation, and, withal a shrivelled soul The mental organisation of the "Great Oil King" is superlatively selfish, bold, keen, selfish calculation, almost brutal in its indifference to moral law or human weal or woe, planned the attack and aimed the fatal blow No consideration save that alone of ultimate safety before the law, no scruple between him and the desired end, to attain which he hallowed any means There are wiser men than Rockefeller, but there is probably not one, however, who typifies the grave and startling menace to the social order Men of conscience and noble purpose are beginning to all that to temporise and condone the principles and methods that he stands for is to invite the living death—Arena—Aust, 1905

पृथ्वी के प्रधान धनी आदमी के विरुद्ध ऐसा निन्दित अपवाद प्रकाशित होना निस्सन्देह बड़े ही दुःख की बात है । इनका शरीर, घृष्टावस्था में, अजीर्ण रोग में बहुत ही खराब हो गया है । अगर कोई इनका यह रोग अच्छा कर सके तो यह उसे तीस चालीस लाख डालर तक देने के लिए तैयार है । किन्तु बड़े बड़े वैज्ञानिक डाक्टर कहते हैं कि अत्यन्त लोभ और धनोपार्जन की चेष्टा से ही इनका स्वास्थ्य खराब हो गया है । यह पहले लडरूप में १५ रुपया मासिक वेतन पर किसी आफिस में मामूली नौकर का काम करते थे, किन्तु आज धनकुवेर हो रहे हैं । यह बात इनकी असाधारण बुद्धि और उद्योग

का परिचय देती है, इसमें कोई सन्देह नहीं । अब यह गिर्जों वगैरह में खूब दान करते हैं और प्रकाश्यरूप से कहते हैं कि धनोपार्जन की अपेक्षा धन देने में मुझे अधिक सुख मिलता है ।

न्यूयार्क का अद्भुत चोज है वहाँ की आत्महत्या-सभा (Suicide Club) । ऐसी सभायें पृथ्वी पर कभी कहीं स्थापित नहीं हुईं । यह खास अमेरिकन आविष्कार है । इस सभा के सभ्य लोग आत्महत्या में परस्पर एक दूसरे की सहायता करते हैं । अनेक चेष्टायें करके पुलिस उनके इस काम को घन्द नहीं कर सकी । दारुण जीवन-सग्राम में निराशा होना ही इसका एक खास कारण जान पड़ता है । सभा के सभ्यों का यह भ्रातृभाव वास्तव में बड़ा ही विचित्र है ।

नायेगारा * ।—

"Hail! Sovereign of the World of Floods! whose majesty and might

"First dazzles, then enraptures, then o'erawes the
aching sight

"The pomp of Kings and Emperors, in every clime
and zone,

"Grows dim beneath the splendour of thy glorious
watery throne "

J S Buckingham

* "Nature has many water-falls and cataracts, but only one Niagara. The power and majesty of the Almighty is here more grandly exhibited and realized than in any other scene on earth. The Falls cannot be described, there is too much sublimity, majesty and overwhelming grandeur for mortal to comprehend or explain"—*T Tugby*

न्यूयार्क से इस जगत्प्रसिद्ध स्थान में आया । सभी कहते हैं—
 “Niagara never disappointed my traveller ” वास्तव में यह
 बात सच है कि कल्पना करके इसके बारे में चाहे जितना सोच
 लीजिए, पर यहाँ आकर उससे कहीं अधिक दृष्टिप्राप्त होगा । कोई स्थान
 देखने के पहले मर्मा आदमी मन ही मन उसका चित्र कल्पित कर
 लेते हैं । परन्तु अक्सर ऐसा होता है कि वहाँ जाने पर आशा के
 अनुरूप दृश्य नहीं देख पड़ता । किन्तु यहाँ ठीक उसका उलटा है ।
 नायेंगारा-जलप्रपात अमेरिका का गौरव और विधाता की शक्ति और
 गाम्भीर्य के प्राकृतिक विकास का प्रधान दृश्य है । हर साल लाखों
 आदमी दूर दूर के देशों से आकर इस महातीर्थ में सर्वशक्तिमान् की
 अनन्त शक्ति की पूजा करते हुए नायेंगारा की प्रशंसा कर जाते हैं ।
 गाइड के साथ गाडी पर १४ मील घूम कर सब देखने में दिन भर
 लग गया । यहाँ के आदिम निवासी रड इंडियनों के ‘ओनायाकारा’
 शब्द से नायेंगारा शब्द की उत्पत्ति हुई है । इसका अर्थ है—भयानक
 शक्तिशाली जल-वज्र । ३१ मील लंबी और आधे मील से लेकर
 तीन मील चौड़ी नायेंगारा नदी समुद्र से ५७३ फुट ऊँची एराईए
 (Erie) झील से निकल कर उसकी अपेक्षा ३२८ फुट नीचे स्थित
 ओन्टारियो (Ontario) झील में गिरती है । जहाँ जल-प्रपात है वहाँ
 पर नदी का घेर ४,७५० फुट है । वहाँ पर जल के ऊपर ४० फुट

इसका जल १६,००० वर्ग-मील में है और गहराई ६० फुट । इसमें
 तीन बड़ी बड़ी झीलों का पानी आकर गिरता है । सुपीरियर (Superior)
 यह ३६,००० वर्ग-मील के घेरे में ६०० फुट गहरी झील है । मिसिगान
 (Michigan), यह २२,४०० वर्ग-मील के घेरे में १,२५० फुट गहरी झील
 है । ह्यूरोन (Huron), यह २,३०० वर्ग-मील के घेरे में १०,००० फुट
 गहरी झील है । यह सब जल-राशि नायेंगारा में गिरती है ।

ऊँचा और १,००० फुट चौड़ा छाग-द्वीप (Goat Island) है। उस पर १८२ वीधे घना जंगल भी है। यहाँ पर यह नदी बीच से फट गई है और दो धारायें हो गई हैं। यह द्वीप अमेरिकन तट से १४०० फुट और कनाडा (Canada) के तट से २,८०० फुट के अन्तर पर है। कनाडा के बड़े अथवा अश्वनाल* प्रपात (Horse-Shoe) की उँचाई १५० फुट और चौड़ाई १,८०० फुट तथा घेर चौड़ाई मील का है। अमेरिकन प्रपात १६४ फुट उँचा और ६०० फुट चौड़ा है। जिम गढे में पानी गिरता है उसका घेरा १,००० फुट है। गिर रहे पानी की चादर २० फुट मोटी और परिमाण हर मिनट में एक करोड़ अस्सी लाख (अमेरिकन लोगों के हिसाब से दो प्रपात में साठे अठारह करोड़ घन-फुट होता है। घन-फुट या साठे चार करोड़ मन के लगभग है। नायेगारा की प्रधान दर्शनीय चीज हैं, छाग द्वीप के पुल से प्रपात के पीछे के रापिड, उछलने के पहले बडाही भयानक वेग होता है। नीचे ताकने से जान पडता है कि अभी बहा ले जायगा। इस वेग की गति घटे में ३० मील के हिसाब से है। बीच में तीन वीधे का स्नान-द्वीप (Bath-Island) है। इस द्वीप में एक बड़ी भारी कागज की 'मिल' है, जिसमें प्रवाह की शक्ति से सब काम लिया जाता है। इसके बाद छोटा सा लुना-द्वीप (Luna Island) है। इसके ऊपर खडे होने से जान पडता है कि यह जैसे सचमुच काँप रहा है। यहाँ से थोड़ी दूर पर १३२ सीढियों से ८० फुट नीचे उतर कर वरसाती-कोट (Waterproof)

सन् १८२६ में यहाँ से एक निकम्मा जहाज "Detroit" रुई एक जीते हुए पशुओं (भैंसे, हरिण, भालू और अन्यान्य कई छोटे जीव) समेत छोड़ दिया गया था। कहना न होगा कि यह नीचे पड कर रापिड में चूर चूर हो गया था।

पहन कर पवन-गुहा (Cave of the Winds) में जाना होता है। यह गुफा १०० फुट ऊँची और १०० फुट की है। इसका व्यास ६० फुट है। सामने खच्छ चादर सा जलप्रपात है। प्रपात स और इस गुफा से ४० फुट का फासला है। गुफा के भीतर दमगा जैसे आँधी चला करती है। जल और हवा के शब्द के मार कुछ भी नहीं सुन पड़ता। जल के फुहारों (Spray) में सुन्दर दन्तवस्तु की शोभा देखने को मिलती है। यहाँ छोटे छोटे तीन द्वीप और उनके पुल हैं। नदी के किनारे किनारे प्रास्पेक्ट-पार्क (Prospect Park) की राह है। यह पार्क ३० बीघे का है। यह ठाढ़ के कटहरे से घिरा हुआ ऊँचा स्थान है। नीचे ही भयानक प्रवाह है। अनेक लोग यहाँ से गिर कर आत्महत्या कर चुके हैं। प्रवाह की शक्ति से चलनेवाली रेलगाड़ी से उतर कर नाप पर उम पार जानाने में यद्यपि अभी तक कोई दुर्घटना नहीं हुई, तथापि बहुत ही मालूम पड़ता है। चकरदार रापिड (Whirlpool Rapids) और जल के चकर एक जगह हैं। यहाँ पर प्रसिद्ध कैप्टन वेब (Captain Webb) साहब, सन् १८८३ की २४ वा जूलाई को, असीम साहस दिखाने में डूब कर मर गये थे। यहाँ पर एक बार एक छोटा सा स्टीमर (Maid of the Mist) चलाया गया था। इस समय और एक नया स्टीमर रक्ता गया है। यात्री ठाग चाहे तो किराया देकर उस पर से जल-विहार का मजा ले सकते हैं। उक्त परीक्षाओं के अलावा प्रसिद्ध बाजीगर ब्लॉन्डिन (Blondin) साहब और एक स्पेन की लेडी (Maria Spelterina) ऊँचे पर बँधी हुई रस्सी के ऊपर चल कर नदी-पार गये थे। एक व्यक्ति (Sam Patch) पवन-गुहा के ऊपर से दो बार फाँव था। दूसरी बार उनकी मृत्यु हो गई। सन् १८७६ की २१ वीं मई को एक आदमी

(Peel) नवीन मस्पेन्शन-बृज या भूलने-पुल से १६० फुट नीचे नदी में फाँदे थे । विशेष सौभाग्यवश वह मर नहीं । अनेक लोगो ने इस स्थान पर से भी फाँद कर आत्महत्या की है । समय-प्रवाह के फेर से नायेगारा की शकल बहुत कुछ बदल गई है । यहाँ तक कि पचाम साल पहले के टेविल-रक आदि कई दृश्य विलकुल ही गायब होगये हैं । यह बतलाना बहुत कठिन है कि कितन युग-युगान्तर से नायेगारा इसी तरह बह रहा है । भूतत्त्ववेत्ता लोगो के मत से हैमयुग के पहले से यह प्रपात मौजूद है । मि० टग्बी लिखते हैं कि इसे केवल वर्त्तमान अवस्था में पहुँचते पहुँचते कम से कम ३५,००० वर्ष लगे हैं । यथा—“It is roughly calculated that the Falls must have taken at least 35,000 years to cut their way from the escarpment of Queenston to their present position”—*T Tugby* प्रपात के पास ही एक म्यूजियम है । जगह जगह पर विचित्र वस्तुओं की दूकाने हैं । किन्तु वे चीजे बडो महँगी हैं । नायेगारा शहर और प्रपात के पास की दूकाने खियो ने रक्सी हैं । विदेशी भद्रपुरुषो को उगने के लिए वे खूब चेष्टा करती हैं । दृश्यावली के दो स्थानो में फोटोग्राफी की दूकानो में दृश्य-सहित अपनी दो तसवीरे उतरवाईं । प्रपात में एक तरह का सफ़ेद पत्थर (Spal) और पत्थर बन गया काठ (Petified wood) मिलता है । उस लकडी और पत्थर की बनी कई चीजे भी खरीदों । नायेगारा के सम्बन्ध में एक रमणी की कविता और एक पर्यटक का मत नीचे उद्धृत किया जाता है ।

“Thou dost speak

“Alone of God, who poured thee as a drop

“From His right hand—bidding the soul that looks

“Upon thy fearful majesty be still,

“Be humbly wrapped in its own nothingness,
“And lose itself in Him”—*Mrs Sigourney*

“It is a scene which poets and authors have tried for years but always failed to tell Niagara is still, and must always be, unprinted and unsung It has flowed for thousands of years as it thunders now, yet in its mighty rush fresh beauties may be seen every or the melting of Canadian snows ”

प्रपात के निकटवर्ती दो वस्तियों में ८,००० आदमी बसते हैं । स्थानीय दो बड़े बड़े होटल गर्मियों में खूब चलते हैं । जाड़ों में दो के सिवा और बन्द से रहते हैं । मैं जिस होटल में था उसके मैनेजर ने कहा कि गर्मियों में पजाब से एक मुसलमान सौदागर यहा आता और शाल रूमाल बेचकर बहुतसा रुपया कमा ले जाता है । शौक की चीजों की दूकानों को भी उसी समय अच्छा फायदा ही जाता है । निकटस्थ आदिमनिवासियों के गाँव, उनका विचित्र वेप और भोपडे (Wigwam) देखकर उनके हाथ की धनी दो एक चीजें खरीदीं । असभ्य-जीवन सब जगह एक सा है । बडन की स्त्रियाँ (Squaw) बच्चों (Pappoose) को पीठ में (छोटा नागपूर-प्रदेश की कोल जाति की तरह) बाँध कर धूमती हैं । पुरुषों में बहुत से कोट पतलून पहनने लगे हैं । इस जाति के स्त्री पुरुषों का रूप विकट होता है । इनका चेहरा मंगोलियन-जाति का विगडा हुआ चेहरा मालूम पडता है । नदी के दूसरे किनारे पर बसा हुआ क्लिफ्टन (Clifton) गाँव खूब साफ-सुथरा है । वहाँ के पार्क में विक्टोरिया की एक सुन्दर मूर्ति स्थापित है । एक भद्रपुरुष के साथ भागवतवर्ष और अमेरिका के सम्बन्ध में बहुत कुछ बातचीत हुई । यहाँ खेती की नई मेशीनें देखीं । इस पार उस पार नाम-मात्र के लिए दो किलो बने हैं ।

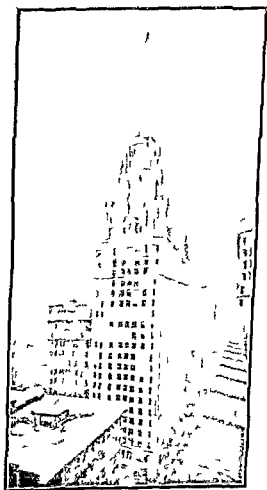
रेल के रास्ते में । नायेगारा से रेल पर चढकर शिकागो

(Chicago) गया। गाडी स्टेशन से चल कर प्रपात के पान दस मिनट खड़ी रही। यात्रियो में से बहुत से उतर कर देखन गये। हर एक ट्रेन यहाँ पर इसी तरह ठहरती है। नदी पार होकर कनाडा-राज्य के भीतर होकर कई घंटे तक रेल चली। इसी समय एक कनाडा के भद्रपुरुष के साथ बातचीत हुई। एक माम्राज्य की प्रजा होने के कारण उन्होने कुछ सहानुभूति प्रकट की। कनाडा की सीमा पर आधे मील से कुछ कम घेरे की डिट्रोया या डिट्रयेट नदी पार होना पडा। एकाएक एक यात्री ने कहा—“हम लोग नाव के ऊपर हैं।” गाडी से उतर कर देखा, सचमुच ट्रेन समेत हम लोग स्टीमर पर नदी पार हो रहे हैं। कब ट्रेन स्टीमर पर सवार हुई, इसकी खबर मुझे नहीं हुई। एक जर्मन चीत्कार करके धारस्वार अपना विस्मय प्रकट करने लगा। दूसरे किनारे पर पहुँच कर ट्रेन जब फिर पटरी पर चढाई गई उस समय सब मैंने अर्च्छा तरह देख लिया। पार जाकर, अगर स्टीमर की अपेक्षा ऊँचा जल हुआ तो अधिक पानी निकाल लिया जाता है और अगर नीचा हुआ तो आवश्यकता भर पानी भर कर, पानी बराबर कर लिया जाता है।

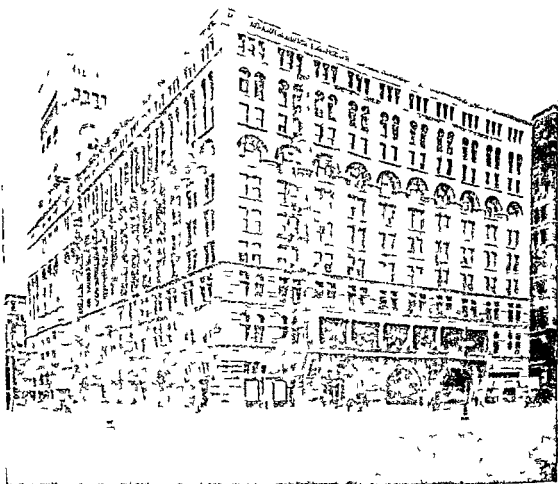
शिकागो। रात के दस बजे रेल से उतर कर होटल में गया। सवेरे होटल के जूते पर ब्रुश करनेवाला दरवाजे आकर पुकारने लगा। पूछने से उसने जूते पर ब्रुश करवाई १० सेन्ट (५ पेनी) माँगे। भारत में एक पैसे में और लन्दन में एक पेनी में, न्यूयार्क में तीन पेनी में और यहाँ पाँच पेनी से जूते पर ब्रुश होता है। पाठकगण, देखिए तो, भारत और अमेरिका में कितना अन्तर है। यूरोप के किसी भी होटल में होटल के जूते पर ब्रुश करनेवाले को कुछ भी नहीं देना पडता। किन्तु अमेरिका की सभी बात निराली है। सवेरे का भोजन कर चुकन के बाद मुलाटो (Mulatto) परोसनेवाले ने मुझे मेक्सिको



शिकागो—पृ० ५०३



डेवा गिर्जा—पृ० ७२५



ब्राटिडोरियाम भवन—पृ० ७२५



मान मन्दिर—पृ० ७२६

निवासी समझ कर वर्ण-भेद के सम्बन्ध में उस देश की बात पूछी और इस सम्बन्ध में अमेरिका में भी अत्याचार होता है, यह कहकर दुःख प्रकट किया । उसने कहा—“हमारे यहाँ रङ्ग का भेद बड़ा जवर्दस्त है । मेरे पिता स्काचमैन और माता निग्रो थीं । सम्पूर्ण काले या आधे काले लोग हजार विद्वान् या बुद्धिमान् हो तो भी वे किसी बात में गोरा के बराबर उन्नति करने नहीं पाते । हम लोग यहाँ बड़े कष्ट से रहते हैं । इत्यादि ।” शिकागो नगर २०,००० वर्ग-मील के घेरेवाली मिसिगान झील के किनारे बसा है । यह नगर ६ मील लंबा और ५ मील चौड़ा है । यहाँ की सब सड़कें शतरंज के खानों के समान सीधी हैं । शहर के भीतर शिकागो नदी (आदिम-निवासी इसे शाकाकोया, अर्थात् वज्र, कहते थे) और उसकी दो शाखाएँ बहती हैं । इनके ऊपर ३५ पुल बने हैं । यहाँ की जनसंख्या ८ लाख के लगभग है । इतनी जल्दी जल्दी पृथ्वी के किसी और शहर की उन्नति शायद न हुई होगी । सन् १८७१ में एक मामूली कारण से आग लग गई । उसमें २५० आदमी और २० करोड़ डालर की सम्पत्ति नष्ट होगई । इस प्रकार नगर का ध्वंस हाने पर यहाँ के निवासियों ने बहुत थोड़े समय में नया नगर बनवा लिया । एक अँगरेज दर्शक का कहना है कि “शिकागो नगर के निवासी उसे पृथ्वी का श्रेष्ठ नगर बनाने की चेष्टा में व्यस्त हैं । प्रत्येक नगरनिवासी का यही उद्देश्य है कि, जहाँ तक हो सके, शीघ्र धनसञ्चय करो ।” यथा—

“The collective purpose of Chicago is to become the biggest city on the earth. The individual purpose of every citizen of Chicago is to make the greatest possible number of dollars in the shortest possible space of time”—*Sir H T Wood*

यहाँ शूकर-मास के बेकन (Bacon) बनाने के बड़े कारखाने हैं। वहाँ बड़ी फुर्ती से काम होता है। मालिखानों को इस रोजगार से बड़ा मुनाफा है। इसके सिवा और अनेक प्रकार की चीजों के कारखाने नगर को समृद्धिशात बनाते हैं। पृथ्वी के अनेक स्थानों में घूमकर भी कहीं ऐसा ए अभिनव अनुभव नहीं प्राप्त हुआ। रात को यहाँ पहुँचा था। सबेरे और दिन भर देखा, नगर का हर एक स्थान अन्धकार से आच्छादित सा जान पड़ा। नित्य यही हाल रहा। मैं इसका कारण कुछ भी नहीं समझ सका। पीछे एनीवेसेन्ट की एक पुस्तक पढ़ने से जाना कि यहाँ नित्य जितनी जीव-हत्या होती है, उतनी और कहीं नहीं। इस कारण इस नगर के चारों ओर एक मील तक आकाश अन्धकार पूर्ण रहता है। साधारण भाव में इस गूढ़ सत्य को समझना कठिन है, किन्तु जो लोग भूलोक और भुवलोक के घनिष्ठ सम्बन्ध को जानते हैं वे अनायास ही इस तथ्य को समझ लेंगे। मारे गये पशुओं के भय-विद्वेष क्रोध से इस अन्धकार का सम्बन्ध है। शिकागो शहर राज्य के केन्द्र में जिस भील के किनारे है उस भील में दो भारी भीलों और मिली हैं। उन भीलों के दूसरे तट पर कनाडा का अधिकार है। इन सब कारणों से रोजगार के लिए शिकागो नगर एक विशेष सुभीते का स्थान है। बहुत लोगों के मत से ऐसी प्राकृतिक सुविधा अन्य किसी नगर को नसीब नहीं है। भील के किनारे समतल हैं। चारों ओर सैकड़ों मील के समतल मैदान के सिवा और कुछ नहीं देखा पड़ता। अतएव प्राकृतिक सौन्दर्य का तो वहाँ लेश भी नहीं है। किन्तु वहाँ के निवासी जिसे जान से बढ़कर चाहते हैं उस धन के कमाने के लिए वहाँ की सब सामग्री उपयुक्त है। नगर के मध्य-स्थ आधे वर्ग-मील स्थान में बहुत

से लोग जीविका प्राप्त करते हैं। इतने स्थान में इतने लोगो की जीविका और कहीं नहीं चलती। इस वारे में शिकागो का अब्जल नम्बर है अहकार और तडक-भडक इस देश का—खास कर शिकागो का—धर्म हो रहा है। जहाँ पर जो कुछ देखा वहाँ उसके सबन्ध में अमेरिकनो के मुँह से यही सुनने में आया कि उससे बड़ा या उत्तम स्थान अथवा वस्तु पृथ्वी भर पर और कहीं नहीं है। प्रदर्शनी की तैयारी देखता हुआ अन्यान्य स्थानों में गया। दस, बारह, चौदह खण्ड के मकान यहाँ बहुत से बने हुए हैं। अब सुनने में आता है कि १६-२० खण्ड तक के मकान बन गये हैं। आडिटोरियम भवन (Auditorium)। बाहर से भवन बड़ा भारी देख पड़ता है, किन्तु भीतर जाकर देखा तो थियेटर उसके उपयुक्त नहीं जान पड़ा। अन्त को पूछने से जान पड़ा कि ऊपर सब रन्द है। यहाँ सब कल का कारखाना है। जितने दर्शक जमा होते हैं उतनी छत खोलकर बैठने की जगह कर दी जाती है। इस मकान का साज-सामान भी विचित्र और कोमती है। थियेटर के एक शिला-खण्ड (Tablet) पर निम्नलिखित अवतरण खुदा हुआ है—

“I wish that this great building may continue to be to all your population that which it should be Opening its doors night to night, calling your people away from cares of business to those enjoyments and entertainments which develop the souls of men and inspire those whose lives are heavy with daily toil and in this magnificent and enchanted presence life then for a time out of dull things into those higher things where men should live” Benjamin Harrison, President of the U S at the dedication of the Auditorium December 9, 1889 इसी भवन के एक धोर

मानमन्दिर है । शिकागो में अनेक पार्क हैं । इतने पार्क बहुत ही थोड़े नगरो में होंगे । सबसे बड़ा पार्क १,८०० बीघे का, डेढ मील लम्बा, भील के किनारे पर है । इसके अलावा तीन से लेकर हजार बीघे तक के छोटे-बड़े चौदह विहार-स्थान भी इस नगर में हैं । नगर के अधिकांश लोग विजली की ट्रामगाड़ियों (Cable) पर चलते हैं । अब तो शायद एक भी घोड़ा सवारी के काम में न लाया जाता होगा । शिक्षा के सबन्ध में, अमेरिका भर में, शिकागो का अग्रवर्तनम्बर है । यहाँ एक भी निरक्षर आदमी नहीं है, यह कहना भी कुछ अत्युक्ति न होगा । विश्वविद्यालय के मानमन्दिर में एक २३ फुट लम्बी Focal length दूरबीन है । नागरिक जिर्जे २५० के लगभग हैं । उन सबकी सम्पत्ति डेढ करोड डालर के लगभग होगी । यहाँ ७ मेडिकल कालेज, १० अस्पताल, १०० से ऊपर अनेक प्रकार के आश्रम और दातव्य-सभायें, १६ थियेटर, २४ बड़े और छोटे होटल, ७ लाइब्रेरियाँ और १ उच्च श्रेणी की लाइब्रेरी है । व्यभिचारिणी स्त्रियाँ, त्यागे हुए बच्चे, आत्मीय-स्वजन विहीन, बुद्धे, अपाहिज, बेकाम होगये सैनिक, बे-मा बाप के लडकी लडके आदि बहुत से निराश्रय विपन्न व्यक्तियों की सहायता के लिए अलग अलग आश्रम भी यहाँ बने हुए हैं । १०० के लगभग दान-समितियाँ और अन्यान्य प्रकार के फायदे पहुँचानेवाली सभायें स्थापित हैं । ५०० से अधिक प्रोमिशन और अन्य श्रेणियों के गुप्त सम्प्रदायों की समितियाँ हैं । शिकागो से १०० के लगभग दैनिक और साप्ताहिक समाचार-पत्र प्रकाशित होते हैं । नगर के एक आमोद-भवन में मिली क्रिस्टाइन नाम की दो जुडवा निम्ना-महिलायें दिखलाई जाती हैं । उनके सिर और घड अलग अलग हैं । चार हाथ और चार पैर हैं । नितम्ब और कमर एक है । उनके

ऊपर से दोना के शरीर अलग अलग हैं । यूनाइटेडस्टेट के किसी प्रदेश में, सन् १८५१ में, इनका जन्म हुआ था। मस्तरु दो होने के कारण दोनो अलग अलग सोचती और बोल सकती हैं । वे चलती किस तरह हैं, यह मैंने नहीं देखा । क्योंकि जब तक हम बैठे रहे, वे बैठे बैठे बातचीत करती और गाना गाती रहीं । संगीत विद्या में पारदर्शिता और मधुर स्वर होने के कारण एक का "Two-headed Nightingale" पदवी मिली है । इंग्लैण्ड और अमेरिका के प्रसिद्ध डाक्टरों ने परीक्षा करके कहा है कि—

"Christine Millic is a phenomenon of the Siamese twin order, but far more wonderful, for instead of two bodies connected with a ligature, there is only one torso, the body separating a little above the waist. There are two distinct busts and pairs of shoulders, two heads, four arms, four legs. Anatomical examination has proved that the lady has two sets of lungs and two digestions. It is certain there are mentally two perfect individualities, for conversation may be carried on with each of the two persons mysteriously blended into one, and each having a very pretty gift of singing, they perform duets in parts. They also dance very gracefully, and appears to have no difficulty in moving about, and in no way differs in appearance from two animated ladies, who for short have agreed to pass an hour tied together nearly back to back." कितने ही स्थानों में कितनी ही ऐसी ऐसी विधाता की आश्चर्य-स्त्रिलाये होंगी । इंग्लैण्ड के त्रिस्टल नगर में दो जुड़वा भाई देखने में आये थे । उनका आकार-प्रकार, गठन, शरीर का बजन, हँसी, रोना, बातचीत, धुत्तियाँ, धर्म-

मत, रोजगार आदि तो ठीक तुला हुआ एक सा था ही, उसके अलावा उनकी स्त्री और सन्तान (एक के छ लड़कियाँ और छ लड़के थे, दूसरे के भी इतने ही बच्चे थे) भी बहुत कुछ मिलती जुलती थीं । शिकागो में और एक विचित्र बात देखी । लिबीप्रिजन (Libby Prison) नामक जेलखान की समूची इमारत (इसमें प्रसिद्ध घरेलू युद्ध या (Civil War) के समय क्रमश ४०००० कैदी रक्ते गये थे) रिचमण्ड (Richmond Va) से शिकागो लाई गई है । रिचमण्ड से शिकागो ६०० मील के लगभग है । यह इमारत १३२ फुट लम्बी और ११० फुट चौड़ी चार खण्ड की है । इस समय यहाँ एक म्यूजियम स्थापित है । उसमें इतनी देखने की चीजें हैं कि उनका वर्णन नहीं किया जा सकता । केवल कुछ चीजों के नाम यहाँ लिखे जाते हैं । सोलहवीं शताब्दी की एक घड़ी, उसी समय की युद्ध सजा और अस्त्र-शस्त्र आदि, पेरू देश के इनकास (Incas) मनुष्यों की कई सोपडियाँ, सभापति गारफील्ड लिङ्गन आदि महात्मा लोगो के अन्तिम समय की इस्तेमाली चीजें, प्रेसीडेन्ट का (गरीबी की हालत का) हल और आदिम अमेरिकानिवासियों के बनाये लौहविहीन छकडे । चित्रों में दो चित्र मुझे बहुत पसन्द आये । एक तो ओलन्दाज चित्रकार मोरो (San Antonio Moro) के हाथ का बनाया हुआ कोलम्बस का (जीवित अवस्था) चित्र और दूसरा क्रीतदास निग्रो का चित्र, जिसमें उसकी जजीरें कट गई हैं और वह गुलामी से छूट गया है । यहाँ असंख्य हस्तलिपियाँ हैं । उनमें स्वाधीनता के घोषणा-पत्र के दस्तखतो की हूँ बहू नकल (Facsimile) भी रक्ती है ।

अन्तिम रेल-यात्रा । यद्यपि जापान में जाकर फिर एक बार रेल पर चढ़ना पडा । किन्तु घर की ओर जाने के मार्ग में यही अन्तिम

रेल की सवारी थी। इसके पहले भी महल-गाड़ी (Palace or Pullman Car) में यात्रा की थी, किन्तु इस बार शिकागो से सान-फ्रानसिस्को (San Francisco) तक बराबर ६४ घंटे रेल पर ही बिताने पड़े। अमेरिका की रेलगाड़ी में एंजिन से गार्ड की गाड़ी तक जा सकने की व्यवस्था है। पुलमैन या पैलस-गाड़ियाँ सर्वोत्कृष्ट श्रेणी की गाड़ियाँ होती हैं। हर एक ट्रेन में चार पाँच पैलस-गाड़ियाँ होती हैं। इसका सब सामान वादशाही समझना चाहिए। दिन को हर एक दो आदमियाँ के लिए एक टेबिल और उसने देना और दो गद्दीदार कुर्सियाँ रखी रहती हैं। रात को मैशीन के द्वारा इस जगह पर दो पलंग बन जाते हैं। उनमें ऊपर से नीचे तक पर्दा पड़ा रहता है। मजे में कपड़े उतार कर सोइए। तकिया-विछौना-चादर सब आला दर्जे का होता है और नित्य बदल डाला जाता है। इसके सिवा बहुत ही सजा हुआ ड्राइंगरूम, चुरट पीने का कमरा (Smoking Saloon), पाखाना, नाई की दूकान, नहाने का प्रबन्ध, भोजन की गाड़ी आदि का ऐसा अच्छा प्रबन्ध है कि गाड़ी चलते रहने में भी आप किसी बात के लिए अटके नहीं रह सकते। इन सब स्थानों में हर एक बैठक में नीचे एक पीकदानी रखी रहती है। अमेरिकन लोग भी तमाकू खाते और खून थूकते हैं। बैठक के आस पास विजली की घटी (Electric-bell-button) रहती है। घटी बजाकर हर जगह आप कर्मचारियों को बुला सकते हैं। सब जगह छोटे छोटे आईने भी रखे रहते हैं। बीच बीच में स्टेशन पर बर्फ के बक्स में बर्फ भर दी जाती है। बक्स के ऊपर गिलास रखा रहता है। जब चाहो कल घुमा कर बर्फ का पानी पी लो। स्त्री-पुरुष और एक बालक मिलाकर हम दस यात्री एक गाड़ी में थे। यात्रा भर हम लोग एक परिवार के ऐसे आदमी जान

पडते थे। दिन में तीन वार भोजन के लिए बुलाये जाते थे, और होटल अथवा भोजन की गाडी (Dining Car) से भोजन कर आते थे। एक दूसरे का न्यौता भी करता था। तरह तरह की बातें और आलाचकार्यें भी होती थीं। रविवार के दिन यथाविधि उपासना भी हुई थी। जरूरत की सब चीजें तो गाडी में ही मौजूद थीं, उनके अलावा फल, फूल, चित्र, पुस्तक, टोपी, रुमाल, स्थानीय अखबार आदि भी गाडियों में विकते थे। ऐसी चीजों के बेचनेवाले ५० मील के बाद बदल जाते हैं। एक दिन दोपहर को चुरट पीने के कमर में मैं अकेला बैठा हुआ था। इसी समय एक अमेरिकन “फार्मर” (Farmer) अन्य गाडी से वहाँ आकर उपस्थित हुए और सहसा भोली भर अपना परिचय (मेरे इतने घोघे जमीन है, इतने बैल हैं, इतनी भेडे हैं, इतने आदमी नौकर हैं, इतने का रोजगार होता है, इत्यादि,) देकर मुझसे मेरे बारे में पूछने लगे। मैंने सच्चेप में टालने के लिए कह दिया कि मैं एक बेकार साधारण मुसाफिर हूँ। इसके बाद उन्होंने कहा—

“I see you speak American very well I am told, people in England speak American”)

अर्थात् आप तो अमेरिकन भाषा में खूब अच्छी तरह बातचीत करते हैं। मैंने सुना है कि इंग्लैण्ड के लोग अमेरिकन भाषा बोलते हैं। इसके उत्तर में मैंने कहा—“इंग्लैण्ड के लोग अमेरिकन भाषा नहीं बोलते, अमेरिकन लोग ही अँगरेजी बोलते हैं।” इस पर उन्होंने कहा—“क्या जाने, मैं अपने देश के बाहर की उतनी स्वर नहीं रखता।” इस मार्ग के अनेक स्टेशनों पर अमेरिका के आदिमनिवासी स्त्री-पुरुष और लाइन के किनारे किनारे जगह जगह पर उनके भोपडे देख पडे। मिसोरी (Missouri) नदी पार होकर कुछ देर बाद लाइन के किनारे एक जगह पर देखा, एक

भारी बोर्ड (Board) पर बड़े बड़े अक्षरों में "Divide of the Continent" (अर्थात् महादेश का मध्य स्थान) लिखा हुआ था। राकी पहाड़ (Rocky Mountain) के बाद जगह जगह पर बहुत दूर तक लकड़ी के बने घेरों (Snow-shed) के भीतर से रेल चलती थी। सर्दियों में यहाँ पर बर्फ से रेल का रास्ता रुक जाता है, इसलिए यह व्यवस्था की गई है। एक बार इसी तरह बर्फ से राह रुक जाने के कारण एक ट्रेन को कई दिन तक जङ्गल में ठहरना पड़ा था। उस अवस्था में यात्रियों को भोजन आदि का बड़ा कष्ट हुआ था। एक जगह देखा कि एक नदी (Humboldt) भू-गर्भ में प्रवेश करके गायब हो गई है। फिर वह कहीं जाकर निकली है, इसका पता आज तक अनेक अनुसन्धान करने पर भी नहीं लगा। वैसी दस बीस नदियों को रखने के लिए माता पृथ्वी के उदर में यथेष्ट स्थान है। अमेरिका की बहुत सी धरती मरुभूमि (Piarie) की तरह ऊसर पड़ी हुई है। उसका बहुत सा हिस्सा वास्तव में रहने लायक नहीं है। क्रमशः इसी प्रकार के घास फूस और वृक्ष से शून्य ऊमर के भीतर होकर चलते चलते जब कैलिफोर्निया (California) में रेल आई तब उज्ज्वल हरियाली और वृक्ष-लता आदि से शोभित स्थान देखकर चित्त प्रसन्न हुआ। सानफ्रान्सिस्को पहुँचने में और दो तीन घण्टे की देर थी। सब लोग चीज-वस्तु सँभाल सँभाल कर रख रहे थे। इसी समय अचानक एक उड़े जोर का धक्का लगा और गाड़ी रुक गई। अधिक चोट किसी को नहीं लगी। केवल एक लेडी के सिर में मामूली चोट आई। गाड़ी से सबने उतर कर देखा कि लट्टों से लदी सड़ी हुई एक खुली गाड़ी (Truck) के धक्के से हमारी गाड़ी का एजिन सराब हो गया है। यह छोटा स्टेशन था, यहाँ यह ट्रेन ठहरती नहीं।

साइडिंग (Siding) की स्विच (Switch) ठीक न रहने से यह दुर्घटना हो गई। यहाँ से साक्रामेण्टो (Sacramento) स्टेशन से तार देकर नया एजिन मँगाया गया, तब डेढ़ घण्टे के बाद वहाँ से गाड़ी चली। दोपहर के बाद एक खाड़ी (Carquinez Strait) पार होने के लिए दो एजिनों सहित सारी ट्रेन एक भारी जहाज (Solano) पर चढ़ाई गई। डिट्रायर स्टीमर की अपेक्षा यह बहुत बड़ा था। डिट्रायर स्टीमर पर भी ट्रेन के अलावा बहुत सी जगड़ थी, जिस पर हम टहले थे। किन्तु यह स्टीमर बहुत बड़ा था। केवल इस पार से उस पार ले जाने के लिए इतना बड़ा जहाज पृथ्वी पर और कहीं नहीं है। इसके बाद सानफ्रानसिस्को में पहुँचने के पहले छ मील घेरे का उपसागर (San Francisco Bay) पार होते समय सब यात्री परस्पर विदाई के दुःख का अनुभव करन लगे। जो बालक हम लोगों के साथ था वह इतने दिन साथ रहने से मुझे बहुत प्यार करने लगा था। उतरते समय उसने माता के साथ मुझे अभिवादन किया। उसकी आँखों में आँसू भरे देख कर मुझसे भी रोये बिना नहीं रहा गया।

सानफ्रानसिस्को। पहले यहाँ रेतीली धरती थी, किन्तु इस समय एक सभृद्धिशाली नगर बसा हुआ है। धन्य है यूरोपियन लोगों का उत्साह और उद्यम। यहाँ आकर उन्होंने मरुभूमि के ऊपर अच्छी मिट्टी बिठलाई और उसे एक उपजाऊ भूमि बना दिया है। केलीफोर्निया का जल-वायु इटली के जल-वायु से मिलता जुलता है, इसी से इटली के बहुत से आदमी यहाँ आकर बसते जाते हैं। सन् १८५० में तीन बार नगर जल जाने से ७५ लाख डालर के लगभग सम्पत्ति विनष्ट हो गई। उसके बाद यह नया नगर बना है। यहाँ की वर्तमान जन-संख्या चार लाख के लगभग है।

रास्ते शिकागो के ऐसे सीधे हैं । यहाँ के टकसाल, पर्मिट, टाउन हाल, फ्रोमिशन-मन्दिर, आमहाउस, ७ थियेटर, कई एक बड़े बड़े होटल, ११ स्कायर, तीन मील लम्बा और आध मील चौड़ा (३,००० बीघे से अधिक) पार्क और उसके अन्तर्गत काच-गृह में रखे हुए शोषण-प्रधान देशों के विचित्र विचित्र वृक्ष और लताये, १०० गिर्जे, १५ दान-पमितियाँ, ६१ फ्री स्कूल, १८ साधारण पुस्तकालय, विश्वविद्यालय, होमियोपैथिक और एलोपैथिक मेडिकल कालेज आदि स्थान देखने योग्य हैं । मैं जिस होटल (Palace Hotel) में ठहरा था उसमें १,२०० आदमियों के ठहरने की व्यवस्था थी । छठे खण्ड में सुन्दर 'प्रमानड' बना था । सब जगह विजली की रोशनी और पुष्प वृक्ष सुशोभित थे । यह भी होटल देखने योग्य है । समुद्रतट पर एक रेस्टरा (Restaurant) है । वहाँ दिन में अनेक बार गाना-नजाना हुआ करता है । उसके सामने के समुद्र-खण्ड में छोटे पहाड पर बहुत सी सील मछलियाँ (Seal) रहती हैं । बहुत से दर्शक लोग उक्त रेस्टरा के बरामदे में बैठकर सील मछलियों की कलोलें और तैरना देखा करते हैं । उक्त स्थान के निकट ही सुट्रो (Sutro) नामक एक इटलियन करोडपती का सुविस्तृत मनोहर बाग और विलास-भवन आदि भी देखने योग्य है । बहुत सा धन खर्च करके उक्त धनी ने यह बाग की जगह निकाली है । इस नगर में बहुत से चीना रहते हैं । उनके रहने के लिए स्थान अलग ही है । इस प्रदेश में जब पहले सोने की खान निकली तब सब चीजें बड़ी महँगी हो गई । रहनेवालों ने यह निश्चय कर लिया था कि ताँबे और चाँदी का व्यवहार उठाकर सब सिक्के सोने के ही चलावेंगे । उस समय एक बालर से कम में जूते परे ब्रुश तक नहीं फिरता था । लेकिन कुछ ही दिनों में इस

पागलपन का कुफल फलते देखकर, अन्यान्य प्रदेशों के उपदेश के अनुसार, स्थानीय व्यवस्थापकों को फिर लाचार होकर पुरानी प्रथा स्वीकार करनी पड़ी। साल में चार करोड़ डालर का सोना अब भी यहाँ उठ जाता है। अखबारों की धूम राज्य में सब जगह एक सी है। पहले दिन सन्ध्या के समय होटल में बैठे पत्र-वगैरह लिख रहा था। इसी समय दो अखबारों के रिपोर्टरों ने मेरे पास 'कार्ड' भेज कर बातचीत करने के लिए प्रार्थना की। मैंने सुन रक्खा था कि उन लोगों से अगर कोई आदर के साथ नहीं मिलता तो वे रूठ कर उस मनुष्य के देश भर की निन्दा अखबार में छाप देते हैं। इसी से पत्र लिखना बन्द करके उनसे बातचीत करने लगा। उन्होंने पहले भारतवर्ष के सम्बन्ध में अनेकानेक प्रश्न करके बहुत सी बातें पूछीं और उसके बाद मेरे भ्रमण-वृत्तान्त की कुछ बात लिख कर वे विदा हुए। दूसरे दिन सवेरे देखा, दोनों अखबारों में सारी बातचीत छपी हुई है। केलीफोर्निया-उपकूल में अत्यन्त मनोहर तरह तरह की सेवार देख पड़ती है। कोई कोई सेवार तो ऐसी विचित्र होती है कि विविध वर्ण के रेशम से बनी जान पड़ती है। यात्री लोगों के हाथ-वेचने के लिए वेचनेवाले सुखा कर उसे रख छोड़ते हैं। कई साल हुए यह नगर हालेडोले में नष्ट हो गया था। किन्तु अब पहले से भी अच्छा नगर बन गया है। यहाँ के निवासी ऐसे ही धनी हैं।

अमेरिका की साधारण अवस्था। यद्यपि सारे देश का नाम अमेरिका है, परन्तु यूनाइटेड स्टेट्स के लोग अपने को ही 'अमेरिकन' कहते हैं। यूरोप में अमेरिका कहने से यूनाइटेड स्टेट्स ही समझा जाता है। अनेक जाति के लोग यहाँ आकर बसे हैं। उनके मेल से एक नई ही प्रकृति की जाति का सगठन हो रहा है। इस कारण

इस देश की किसी बात पर “एक मत” नहीं प्रकाशित किया जा सकता । यह विशाल राज्य घेरे में सार यूरोप के बराबर है । न्यूयार्क और सानफ्रानसिस्को के ‘समय’ में तीन घटे का अन्तर है, किन्तु दोनों जगह की भाषा और सिक्का एक है । यह कम गौरव की बात नहीं है । जुद्ध जुद्ध प्रदेशों के आईन कानून और रस्म-रवाजे भिन्न भिन्न हैं । केवल सर्वसाधारण के लिए जरूरी बातों का निश्चय वाशिगटन की प्रधान सभा करती है । कहां पर स्त्री और पुरुष दोनों को राज-कर्मचारिया के पद मिल सकते हैं, और कहीं पर यह नियम नहीं है । दक्षिण-अमेरिका में कृष्णकाय निग्रो लोगों पर जैसा अत्याचार होता है वैसा अत्याचार उत्तर-अमेरिका में नहीं होता । दक्षिण-अमेरिका में ये लोग गोरों के साथ न एक गाड़ी में बैठ सकते हैं और न होटल में रह सकते हैं । यहां तक कि सड़क पर वे किसी गोरों से बात नहीं कर सकते । इस धारे में अमेरिकन लोग कहते हैं कि “हम लोगों को सभ्य हो चुके आदिम-निवासियों के साथ खान-पीने में कोई आपत्ति नहीं, किन्तु निग्रो लोगों के साथ हमको धृणा होती है । उसका कारण यह है कि गुलामी की नीचता अभी तक उन लोगों के हृदय से दूर नहीं हुई । रास कर स्त्रियों के सतीत्व के सम्बन्ध में उनका बड़ा ही हीन भाव है ।” अमेरिकनो में अधिकांश लोग अँगरेजों की सन्तान हैं । तथापि अब उनमें और अँगरेजों में बड़ा अन्तर हो गया है । अहङ्कार और व्यर्थ का आडम्बर करना उनके स्वभाव में दाखिल हो गया है । इस सम्बन्ध में एक अँगरेज सज्जन लिखते हैं— “Indeed that form of self-conceit which is content with a supreme confidence in one's own merits is an English rather than an

American quality John Bull has for so long been taught to consider himself as the salt of the earth, and so thoroughly believes the fact, that he is quite satisfied on his own country's merits being admired"

—*Sir H T Wood* अमेरिकन लोगो का कहना है—

"We do brag, but any how we don't cant" ।

इंग्लैंडवासी लोग (स्काच और आयरिशों को छोड़ कर) विशेष प्रतिपत्तिशालिनी जाति होने पर बुद्धि के तीक्ष्ण होने के सम्बन्ध में वे यगस्वी नहीं हैं । एक अँगरेज न खुद लिखा है—

"I need not say that, in real sound stupidity the English are unrivalled In fact what we approbriously call stupidity, though not an enlivening quality in common society, is nature's favourite resource for preserving steadiness of conduct and consistency of opinion It enforces concentration, people who learn slowly learn only what they must The best security for people's doing their duty is that they should not know anything else to do, the best security for fixedness of opinion is that people should be incapable of comprehending what is to be said on the other side" * किन्तु अमेरिकन लोग, अँगरेज-वशज होने पर भी, मुझे प्रखर बुद्धिशाली जान पड़ें । अमेरिका में और पासिफिक

एम्सर्न लिखते हैं कि जर्मनी में घूमते समय राइन नदी के ऊपर स्टीमर पर एक जर्मन-युवती ने एक अँगरेज यात्रियों के दल को फारेनर (विदेशी) कहा । इस पर उस दल की एक लेडी ने कुद्द होकर कहा था कि 'No, we are not foreigners, we are English, it is you that are foreigners' "अर्थात् "इतनी बड़ी स्पर्धा । हम विदेशी हैं ? हम अँगरेज हैं, तुम्हीं विदेशी हो" । इसका कारण यह है कि इंग्लैंड अँगरेज लोग

जहाज पर भिन्न भिन्न स्थानों के अमेरिकनो के साथ तीन सप्ताह तक मुझे रहना पडा, मगर कभी कोई मोटी बुद्धि की बात देखने मे नहीं आई। इनकी जान-पहचान और बात-चीत का ढग पूर्वी ढग से मिलता-जुलता है। य खुलकर मिलते हैं। यह बात अँगरेजों की प्रकृति के ठीक विपरीत है। बात-चीत मे फ्रेंच लोगो की तरह ये बहुत से शब्द खर्च कर डालते हैं। इनके धनोपार्जन के सम्बन्ध मे पहले ही कहा जा चुका है कि इस काम मे कोई जाति इनकी बराबरी नहीं कर सकती। एक कहावत है कि एक स्काचलेडी ने अपने पुत्र का विदेश भेजत समय कहा था—“ Make money, my boy make money honestly if you can, but make money ” (जिस तरह हो धनोपार्जन करो, अच्छे उपाय से मिले तो अच्छी ही बात है, नहीं तो जिस उपाय से हो रुपया पैदा करना चाहिए।) यह उक्ति इस समय अमेरिका पर पूरी तरह से लागू हो रही है। वहाँ रुपये के लिए लोग क्या नहीं करते ? अमेरिकन लोगों के लिए यह भी कम निन्दा की बात नहीं है कि वहाँ अगर नौकरी खाली होती है तो उसके नोटिस मे लिख दिया जाता है कि “कनाडियन प्रार्थी आदर के साथ स्वीकृत होगा।” इसका कारण यही है कि देश में स्वदेशी युवको की ईमानदारी पर उतना विश्वास नहीं किया जाता। अमेरिकनो के धन के

जर्मन, फ्रेंच आदि सत्र जातियो को साधारणतः कारेनर कहते हैं। केवल शब्दार्थ के अलावा इस शब्द से कुछ व्यङ्ग्य या उपेक्षा का भाव भी प्रकट होता है। इसी से यहाँ पर वह अगरेज-महिला ‘कारेनर’ शब्द से इतनी चिढ़ी। किन्तु यह उसकी समझ मे नहीं आया कि पृथ्वी के सभी भिन्न देशाय व्यक्तियों को स्थानीय लोग परदेगी कह सकते हैं। यह कोई गाली नहीं है। इस पर प्रिग-दना स्थूल बुद्धि का ही लक्षण या प्रमाण है।

समग्र* और व्यय के सम्बन्ध में पहले ही लिखा जा चुका है । वाल्ट-रबिल्ट के न्यूयार्कवाले महल के गृहप्रवेशोत्सव के दिन ६,००० पौण्ड खर्च हुए थे । १,००० पौण्ड के तो केवल फूल ही खर्च हुए थे । इस महल के अन्तर्गत वाग में २५,००० पौण्ड की लागत का एक मकान बना हुआ था । वह मकान केवल कुछ फूलों की क्यारियाँ बनाने के लिए खोद डाला गया । हम लोग जैसे यहाँ दूकानों में सस्ती चीज खोजते हैं वैसे यहाँ के लोग दूकानों पर बढ़िया चीज खोजते और पूछते हैं—“Nothing more expensive?” (इससे अधिक दाम की नहीं है ?) । राज्य में बहुत सा धन होने के कारण सब चीजें बहुत महँगी हैं । इंग्लैण्ड से चलते समय मेरे इष्ट-मित्रों ने किराये की गाड़ी करने के लिए मना कर दिया था । नायेगारा में गाड़ी करके देर लिया । १४ नील घूमने के लिए १० डालर किराया और एक डालर ‘वकसीस’ देनी पड़ी । पाश्चात्य लोग धनोपार्जन में इतने व्यस्त हैं कि कोई कोई रविवार तक को छुट्टी नहीं मनाते । गृथ्वी के अन्यान्य देशों में लोग साल में कम से कम एक महीने की छुट्टी लेकर आराम कर लेते हैं । किन्तु अमेरिका में यह नियम नहीं है । अगर कोई छुट्टी ले भी लेता है और दिल-बहुलाव में समय बिताता है तो सर्वसाधारण उसका नाम धरते हैं । किन्तु ये सब दोष एक गुण से ढक गये हैं । जन्म

वर्तमान समय में ऐसे सौ से ऊपर आदमी हैं जिनमें से हर एक की सम्पत्ति २० लाख पौण्ड से भी अधिक है । पहले कहा जा चुका है कि राक फ़ेलर की आमदनी एक करोड़ डालर के ऊपर है । अमेरिका में ऐसा ही सुना था । किन्तु पीछे विश्वस्त सूत्र से मालूम हुआ कि उनकी सम्पत्ति हर साल डेढ़ करोड़ डालर के हिसाब से बढ़ती जाती है । अमेरिका का रुपया इंग्लैण्ड की अपेक्षा दूने हिसाब से बढ़ता जाता है । आस्टर (Astori) की सम्पत्ति राकफ़ेलर की सम्पत्ति से कुछ अधिक होगी, किन्तु आमदनी कम है ।

भर जी-तोड़ परिश्रम से बहुत सा धन जमा करके वह धन अपनी सन्तान की वावूगीरी के लिए न रख कर उसका अधिक अश सर्वसाधारण के हित के कामों में दे देना, शायद अमेरिका ने ही सत्कार को पहले-पहल दिखलाया है । इसलिए अमेरिकन लोग अतृप्त के धन्यवाद के योग्य हैं । इन लोगों ने इस बात को अच्छी तरह समझ लिया है कि “घराने की इज्जत” “वश-मर्यादा” आदि शान्ति की सेवा के लिए धन-संग्रह करके यह समझना कि उसके द्वारा पुत्र-पौत्र आदि के प्रति हम अपने कर्तव्य का पालन कर रहे हैं, सरासर भूल है । जमा किया हुआ आवश्यकता से अधिक धन अर के ढेर रोगों का कारण बन जाता है । उत्तराधिकार में भारी धन पाकर सारे अनर्थों की जड़ आलस्य के शिकार बन कर लोग सत्कार का और अपना भी घोर अकल्याण करते हैं । अमेरिकनेट्स कहना है—“Idle is the worst thieves that plague and infect the community” अर्थात् पीढी दर पीढी यह आलस्य का प्रवाह जारी रहा तो शरीर और मन का नुकसान होना अनिवार्य है । यह बतलाना न होगा कि हृदय में बल होने से किस प्रकार की नीच श्रेणी की कायरता आ जाती है । शारीरिक हीनता का फल है लडका गोद लेना । लडका गोद कर वश-रक्षा की चेष्टा करना घोर मूर्खता है । किसी गरीब के लडके को मूर्खता, आलस्य, भोग विलास और प्रबल पराक्रमी काम-धर्म आदि छ शत्रुओं के बीच में हाथ-पैर बाँध कर छोड़ देना अत्यन्त घोर महापाप है । यूरोप अमेरिका आदि पाश्चात्य देशों में कितने ही धन-कुबेरों के सन्तान न होने पर अन्त समय वे अपनी सारी सम्पत्ति लोक-सेवा के लिए अर्पण कर गये हैं । सभ्यता के इसी मार्ग पर चलने के कारण वहाँ करोड़ों रुपया सर्व-

साधारण की उन्नति के कामों में लगा हुआ है। स्त्री-पुरुषों की शिक्षा के लिए न्यूनाधिक ४०० विश्वविद्यालय और उच्च श्रेणी के कॉलेज राज्य में हैं। इनके सिवा अनेक विषयों के छोटे-बड़े स्कूल असंख्य हैं। अमेरिका में विलकुल ही गरीब का लडका भी अपनी प्रतिभा के बल से राज्य के प्रधान का पद पा सकता है। गारफील्ड, लिंकन आदि गरीब ही के लडके थे। एक दिन लन्दन के किसी काफीखाने में एक अमेरिकन और एक अंगरेज से इस बात पर तर्क-वितर्क हो रहा था कि इंग्लैण्ड श्रेष्ठ है या अमेरिका। उसमें इसी बात का उल्लेख करके ब्रादर जोनाथान (Brother Jonathan) ने जानबुल (John Bull) को चुप कर दिया था। केवल विद्या-बुद्धि के बल से कोई कहीं राजा नहीं हो सकता।

अखबारों को तो इस देश की खुराक समझना चाहिए। केवल न्यूयार्क स्टेट में दोनो ब्रिटिश द्वीपों से अधिक अखबार छपते और प्रकाशित होते हैं। इंग्लैण्ड में एक प्रवाद प्रचलित है कि अमेरिका के किसी गिर्जे में एक दिन पादरी साहब 'उपदेश' में नरक का वर्णन कर रहे थे। क्रमशः श्रोता सब सोने लगे। यह देखकर उनको जगाने के लिए पादरी साहब ने तीव्रभाव से नरक-यन्त्रणा का वयान करना शुरू किया। लेकिन उनकी यह चेष्टा सफल नहीं हुई। अन्त को जब वह उच्च स्वर से कह उठे कि "There is no newspaper in hell"—(नरक में अखबार भी नहीं हैं) तब सब चौंक कर जाग पड़े और बोले—“No newspaper in hell!”—(नरक में अखबार नहीं हैं!)। अखबारों को उन्नति के लिए जी रोल कर रुपया खर्चना तो एक साधारण बात है। सवाद-समग्र की चेष्टा और व्यग्रता भी यहाँ अद्भुत देख पड़ती है। नया गाँव बसते ही उसके साथ ही स्थानीय अखबार भी

होना चाहिए । गाँव की उन्नति के साथ साथ उस पत्र की भी माहक-सख्या और पूँजी बढ़ती है । गाँवों में स्थानीय अखबारों के दफ्तर देखने लायक होते हैं । यहाँ के अखबारों में यही एक बड़ा भारी दोष है कि इतने बड़े राज्य में एक भी ऐसा अखबार नहीं जिसमें सारे देश के स्वार्थ की बात रहती हो । सभी अपने अपने नगर और प्रदेश के स्वार्थ पर ध्यान रखते हैं । बिना अखबार के एडीटर भी इस देश में हैं । मैंने देखा है कि मात आठ सौ आदमियों की सख्यावाले एक छोटे गाँव में (उस समय तक वहाँ से कोई अखबार नहीं निकलता था) एक आदमी डाकघर के बाहर एक कोने में एक कुर्सी डाले बैठा रहता था । वही उसका दफ्तर था । सवेरे गाँव के चारों ओर घूम कर, खबरें प्राप्त कर, आफिस के सामने एक पीपे पर रखे होकर, हर एक श्राता से पाँच सेन्ट दक्षिणा लेकर, वह सब खबरें सुनाता था । दिन में तीन चार बार ऐसे ही खबरें सुना कर वह एक डालर के लगभग कमा लेता था । रेल का हाल पहले ही लिखा जा चुका है । रेल का सब प्रबन्ध बहुत ही उत्तम है । स्टेशन का नाम पुराने का ढङ्ग जुदा है । “ऋण्डाकूर” हर एक गाड़ी में जाकर निकटस्थ और उसके आगे के स्टेशन का नाम पुराना जाता है । न्यूयार्क से पश्चिम ओर ४,००० मील लम्बी (६० घण्टे के लगभग समय की राह) अनेक लाइनें निकली हैं । उनमें से एक लाइन में चार जेम्बो पटरियाँ ओर-ओर तक बिछी हुई हैं । पृथ्वी की और किसी लाइन में चार जोड़ी पटरियाँ अभी तक नहीं बिछाई गईं । किसी किसी नगर में बिजली से चलनेवाली ट्रामगाडियाँ हैं । साधारणतः सर्वत्र बिजली की ट्राम चलने में अभी विलम्ब था । नायेगारा-जलप्रपात की शक्ति को मनुष्य सेवा में लगाने के लिए जो चेष्टा हो रही है

उससे कैसा भारी परिवर्तन होगा, यह अभी कुछ कहा नहीं जा सकता । अमेरिका सब प्रकार की स्वाधीनता की लीला-भूमि है । यहाँ राजनैतिक, सामाजिक और गृहस्थी की, सब तरह की स्वतन्त्रता देखने में आती है । घर का मालिक, मालकिन, पुत्र, कन्या, सबका अपना अपना ढङ्ग है । कोई किसी के काम में दस्तन्दजी नहीं करता । एक यूरोपियन महिला ने इस सम्बन्ध में लिखा है—“ Each has his friends, his Social duties, his separate existance, and disposes of his time as seems best to himself ” इससे अच्छाई भी है, बुराई भी है । उक्त प्रकार की स्वाधीनता से बहुत सी औरतें पुरुषों के समान उन्नत होकर समाज और देश की शिरोमणि बन गई हैं । और, कोई कोई गृहस्थी के प्रति, समाज के प्रति, ससार के प्रति उदासीन हो गई हैं । अनेक यात्रियों ने इस बात पर लक्ष्य किया है कि वहाँ बड़े बूढ़ों के प्रति सन्तान, शिष्य, भृत्य इत्यादि समुचित श्रद्धा-भक्ति नहीं दिखाते । यहाँ की भाषा में भी क्रमशः अनेक परिवर्तन हो रहे हैं । जैसे—Railway-station की जगह depot, Boots की जगह Shoes, Shoes की जगह Slippers, Jug की जगह Pitcher, Ship-captain की जगह Skipper, Zed की जगह Zee इत्यादि । इसके सिवा नकी सुर (Nasal twang) और “ guess, ” “ calculate, ” “ Slogdologisc, ” “ Skedaddle ” आदि अमेरिकनपना Americanism) तो है ही । लिन्च (Lynch) प्रथा इस देश का एक भयानक व्यापार है । निम्न लोगों के लिए ही इसका अधिक प्रयोग होता है । इसका खुलासा वृत्तान्त यह है कि गाँव या नगर के बहुत से लोग मिलकर अपराधी को बलपूर्वक हाजत से निकाल लाते हैं और बिना

विचार के ही उसकी जान ले लेते हैं। स्त्रियो से सम्बन्ध रखने-वाले अपरोध में ही—खास कर जिस जगह आईन के विचार से दोगी व्यक्ति के छूट जाने की आशङ्का होती है—प्राय ऐसी घटना होते देखा जाता है। आदिमनिवासियो में से अधिकांश के लिए एक खास प्रदेश नियत कर दिया गया है। वहाँ ये लोग सरकारी वृत्ति पाते हैं। ये लोग रेल पर भी बिना किराया दिये यात्रा कर सकते हैं। किन्तु गाडी के भीतर नहीं बैठने पाते। अमेरिका की गाडियो में आस-पास दरवाजे नहीं होते, दोनों सिरो पर होते हैं। उन्हीं दरवाजों के बरामदे में बैठ कर ये लोग यात्रा करते हैं। यहाँ की शासन-प्रणाली सम्पूर्णरूप से प्रजा के हाथ में है। हर एक प्रदेश अपने अपने यहाँ की व्यवस्था कर लेता है। सारे राज्य का अध्यक्ष एक प्रेसीडेण्ट तीन साल के लिए चुन लिया जाता है। प्रेसीडेण्ट को सालाना ५०,००० डालर वेतन मिलता है। जब की बात में लिख रहा हूँ तब मेकिन्ले (Mackinley) प्रेसीडेण्ट थे। यहाँ के सिक्के का नाम डालर है। यह सोने, चाँदी और कागज का (नोट) होता है। सबकी कीमत बराबर है। सोने की दर के अनुसार यहाँ का सब काम होता है। किसी किसी माल टकसाल से आठ नव करोड डालर के सोने के सिक्के जारी होते हैं। ताँबे के सिक्के को सेन्ट कहते हैं। एक डालर के सौ सेन्ट होते हैं। पाँच सेन्ट के निकल के सिक्के को डाइम (Dime) कहते हैं। अफसरो को मिलाकर ३०,००० से अधिक सेना न होगी। जल-सेना १२,००० के लगभग है। जड़ों जहाजों में छ पालदार जहाज हैं। इनको देख कर यूरोप को सीखना चाहिए। सारे यूरोप के बराबर के राज्य की रक्षा के लिए इतनी थोड़ी सेना है। ये लोग कहते हैं कि केवल बीच

बीच में आदिमनिवासियों का किया उपद्रव शान्त करने ही के लिए इतनी भी सेना रखनी पड़ती है। जिस वर्ष में वहाँ था उसके पहले साल ३२ करोड़ डालर के लगभग आमदनी थी और खर्च उससे चार-पाँच करोड़ अधिक हुआ था। ऋण भी एक सौ करोड़ डालर के लगभग था। इस राज्य का घेरा ३५,८१,४४५ वर्ग-मील का है। जन-संख्या १० करोड़ के लगभग है। उनमें १२ करोड़ के लगभग कृष्णकाय निग्रो (सन् १७६० में केवल ७२ लाख थे। निम्न श्रेणी की सेवा और नौकरी ये ही लोग करते हैं।) और तीन लाख आदिमनिवासी ('रिजर्वेशन' में एक लाख से अधिक, उसके बाहर भी उतने और ६०,००० के लगभग सभ्य हो गये) हैं। यूरोप के अनेक देशों से कितने ही प्रकार के निम्नश्रेणी के लोग हर साल झुण्ड के झुण्ड यहाँ आकर बसते जाते हैं। आश्चर्य तो यही है कि इन हीन श्रेणी के लोगों में समय समय पर कितने ही अच्छे अच्छे आदमी निकल आते हैं। देश में प्रवेश करते समय हर एक से कह दिया जाता है कि "यहाँ आकर तुम सम्पूर्ण स्वाधीन हो गये। इस समय तुम अपने कर्ता, शासक, पुलिस, मजिस्ट्रेट सब कुछ हो। यह समझ कर शान्त-भाव से उन्नाते की चेष्टा में जीवन लगाओ। इत्यादि।" इस मन्त्र से वे जैसे नवजीवन प्राप्त कर पहले के चरित्र और अभ्यास आदि को भूल कर शान्त कामकाजी नागरिक बन जाते हैं। जैसा यह सुविस्तृत देश है वैसे ही यहाँ की आवहवा, जीव-जन्तु और वृक्ष आदि भी तरह तरह के हैं। दक्षिण-अमेरिका में चावल और आम पैदा होते हैं। उत्तर-अमेरिका के दारुण शीत में वैसे ही फल और अन्न आदि पैदा होते हैं। उत्तर और दक्षिण-अमेरिका के आदिमियों की शकल-सूरत भी अलग-अलग है। ओधी आदि का उपद्रव कभी कभी बड़ा ही

भयानक होता है । स्थानिक पदार्थ आदि चारों ओर खूब पैदा होते हैं । कितने ही प्रदेशों में ऐसी प्राकृतिक गैस पैदा होती है कि वहाँ जलाने की गैस बनानो नहीं पड़ती । अनेक लोग समझते हैं कि अमेरिका के लोग धर्म के सम्बन्ध में उदासीन हैं । किन्तु वास्तव में यह बात नहीं है । यद्यपि सारवान् ईसाई धर्म का प्रभाव ब्रिटिश-द्वीप और अमेरिका में ही देखा पड़ता है । स्वार्थी चिन्ता का प्रवाह बिना किसी रुकावट के जारी होने के कारण एकेश्वरवादी क्रिस्तान धर्म (Unitarianism and Universalism) का प्रादुर्भाव और उन्नति सी राज्य में विशेषरूप से देख पड़ती है । धर्मयाजक लोग सालाना ग्रीक पन्द्रह हजार डालर तक वेतन पाते हैं । अमेरिका में और एक महान् और विराट् व्यापार शुरू हुआ है । ओरेगन (Oregon) देश के सलेम (Salem) नगर में एक सार्वभौमिक सभा* स्थापित । पृथ्वी के अनेक देशों के लोग उसके सभ्य बनाये जाते हैं । सभा नियमानुसार हर एक महीने की २७ तारीख को हर एक सभ्य के काम छोड़कर १२ से १२½ बजे तक आध घंटे, जो जहाँ होता वहाँ, सारे सभ्य की शान्ति और उन्नति के लिए ईश्वर की प्रार्थना करनी पड़ती है । इसी लिए सलेम में जब १२ बजते हैं तब

*"Whole world Soul-Communion —The 27th day of each month, and from 12 p m to half past 12 p m being the fixed and inspirationally communicated through THE WORLD'S ADVANCE-THOUGHT for Soul-Communion of all love their fellow-men REGARDLESS OF RACE AND COLOR—The object being to invoke, through co-operation of thought and unity in spiritual aspiration, the blessings of universal peace and higher spiritual light

पृथ्वी के अन्यान्य स्थानों की घड़ियों का समय ठीक करके उसकी सूचना दे दी जाती है । इसमें कोई सदेह नहीं कि किसी समय अमेरिका एक अद्भुत देश हो जायगा ।

के चिह्न रहने पर भी भारत सम्पूर्ण रूप से व्यक्तित्व-प्रधान देश होगया है । आज-कल यहाँ अपने ही अपने स्वार्थ पर सबकी दृष्टि देर पडती है । और यूरोप में, सब तरह की सोलहो आना व्यक्तिगत स्वाधीनता के साथ आवाल-वृद्ध-त्रनिता सबके अपने पैरों के बल खडे रहने पर भी, समाज के लिए, देश के लिए, यहाँ तक कि समय समय पर पृथ्वी की दूसरी सीमा पर स्थित पर-देशी जन-समाज के हित के लिए बहुत से लोग प्राण तक देने को तैयार रहते हैं । सारी मनुष्य जाति का, या अधिकाश मनुष्यों का, न हो सके तो खाली अपने देश का या अपने समाज का कल्याण करने की चेष्टा करना हर एक मनुष्य के जीवन का प्रधान उद्देश्य होना चाहिए । सरल ज्ञान और विवेचना के अनुसार यथाशक्ति इसी मार्ग पर चलना हम सबका कर्तव्य है । अनंके लोग कहते हैं कि धर्म (Formulated religion) के शासन बिना मनुष्य अपनी अपनी पाशव प्रवृत्ति के अनुसार यथेच्छाचारी हो जायँगे, एक दूसरे का गला काटने में कुछ भी सकोच न करेगा । अतएव चाहे जिस तरह हो, एक धर्म का भय होना ही चाहिए । उसके बिना समाज को सुशृङ्खला से ठीक रखना असम्भव ही है । दूसरी ओर बहुत से समाजतरबवेत्ता पण्डितों का मत है कि अनैमर्गिक अमानुषी (Superhuman) शक्ति की कल्पना द्वारा शासन करने की कोई आवश्यकता नहीं देख पडती । कठोर प्राकृतिक नियम का अनुयायी समाज अपना प्रबन्ध आप कर लेगा । जो लोग सर्वसाधारण की हानि करके या अशान्ति पैदा करके अपनी निकृष्ट स्वार्थपरता चरितार्थ करने में कुछ भी सकोच नहीं करते (या चेष्टा करते हैं) उनका दमन या उन्हें दूर करना अवश्यभावी है । ये लोग कहते हैं कि केवल पुण्य के प्रताप से जातीय समुन्नति होती है । जिस समाज में असद्भाव,

अविश्वास, हिंसा द्वेष है, जहाँ सर्वसाधारण के हित के लिए किसी मामूली स्वार्थ का त्याग करने के लिए कोई तैयार नहीं, ऐसे कायर-हीन और जड़न्य स्वार्थपरता के दुर्गन्धमय अन्धकूप-रूप आत्मघाती समाज का विनाश अनिवार्य है । यदि कहीं इस तरह का अत्यन्त दूषित कर्तव्य समाज विद्यमान देखा जाय तो निश्चय जानना चाहिए कि उसके द्वारा अलक्षित भाव से विश्व-ससार का कोई शुभ उद्देश्य सिद्ध हो रहा है । अगर ऐसा न होता तो वह समाज कब का नष्ट हो जाता । चोर को भी न्याय और कर्तव्य का ज्ञान है । नित्य नर-रक्त से हाथ कलंकित करनेवाले महापापग्रस्त दस्युरत्नाकर (पीछे से वाल्मीकि) के ऋठिन पापाणसदृश हृदय में भी माता-पिता के प्रति कर्तव्य का ज्ञान ऐसा सुदृढ था कि केवल उन्हीं के लिए ऐसा घोर कर्म वह करता था । अन्य किसी के साथ पूरी तीर से सम्बन्ध न रहने की निर्लिप्त अवस्था में ऐसा होना असंभव है । हमारे ऊपर जिनका दावा है, ऐसे कुछ लोगों के साथ सम्बन्ध विना पूर्ण स्वतन्त्र भाव में व्यक्तित्व की सम्यक् उपलब्धि सर्वथा असंभव है । ईश्वर * के सिवा सब कुछ अपेक्षा रखनेवाला है । अतएव अन्य के साथ तुलना या सम्बन्ध के अलावा किसी भी विषय का निर्देश नहीं पाया जाता । यह स्वीकार करना ही पड़ेगा कि मत-विश्वास का धर्म ससार से विलकुल उठ जाय तो कुछ परिवर्तनों का होना अवश्यम्भावी है । अनेक ऐसे विषय,

शास्त्रकार लोग कहते हैं कि ईश्वर ने अपने को व्यक्त करने के लिए विशेष सृष्टि की है । जब वह अकेले थे तब व्यक्तित्वहीन अव्यक्ततावस्था थी । वह अपने आनन्द में आप मग्न हो रहे थे । जीव को साथी और हिस्सेदार बनाकर वह सुखी हुए । यद्यपि इस मत में अनेक तर्क किये जा सकते हैं; किन्तु इन बातों में गभीर सत्य या उपदेश निहित हैं ।

जिन्हें हम अब दृढ संस्कारवश घृणा की दृष्टि से देखते हैं, उस समय निर्दोष जान पड़ेंगे । जिस काम से किसी की कोई बुराई या किसी को कोई कष्ट नहीं होता, किन्तु केवल अन्धविश्वास या भ्रान्त मत के कारण वह काम अब दोषजनक जान पड़ता है, उस काम में तब किसी को आपत्ति न होगी । बल्कि अनेक समय वह प्रयाजनीय जान पड़ेगा । ध्रुव, प्रह्लाद, ईसा, पाल, नानक, चैतन्य आदि को उनके जगत्पूज्य महोद्य पद से नीचे घसीटने का कोई कारण न होगा । किन्तु बुद्ध, कपिल, मिल, कोम्ट, ब्रूनो, स्पिनोजा आदि को नास्तिक कहकर ससार जिस दृष्टि या भाव से देखता है उससे कहीं अधिक उन्नत और पूजा योग्य समझने या स्वीकार करने में जरा भी सोच-विचार न होगा । जो कुछ हो, केवल सामाजिक हित (The greatest good for the largest number) के सम्बन्ध में उपयोगिता के अनुसार समान रूप से सब कामों का विचार बहुत ही आवश्यक होगया है । जो लोग समाज में अशुभ या अहित काम करें उनके सशोधन की चेष्टा पहले और पोछे समाज की मर्यादा और जीवन की रक्षा के लिए, चाहे जिस उपाय से हो, अच्छी तरह शासन समुचित है । अच्छी तरह देखा गया है कि जिस जाति या समाज के द्वारा ससार में बराबर अमंगल बुलाया जा रहा हो उसका अन्तिम परिणाम विनाश है । हजार सफ़ा धर्ममत हो और चाहे जितना उसमें व्रत नियम याग-यज्ञ आदि बाहरी अनुष्ठानों की धूम हो, किन्तु किसी तरह वह उस समाज की रक्षा नहीं कर सकता । क्योंकि एक आदमी के लिए दस आदमी नहीं भोग सकते । यह उत्तम नियम तब से यह पृथ्वी बनी है तब से बराबर अपना काम करता आ रहा है । हमारे यहाँ के अनेक धर्मप्रचारक और धर्मयाजक इस लोक

को छोड़कर परलोक के लिए व्यस्त धर्मव्रतधारी महोदय कहते हैं कि ईश्वर-पूजा अर्थात् केवल ध्यान-धारणा, जप-तप आदि ही हमारा प्रथम और प्रधान कर्तव्य है। उसे करके अवकाश मिलने पर मनुष्य-सेवा, जीव-प्रेम आदि कम आवश्यकीय विषयो पर मन लगाया जा सकता है। आत्मा की मुक्ति के लिए इन सब छोटे छोटे कामों के करने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु भगवान् ने अपने प्रिय साधु-सन्तानो के द्वारा बारम्बार ससार में इस सत्य का प्रचार किया है कि “जीवदया, भगवान् के नाम में रुचि और मनुष्य-सेवा, ये तीनों वाते एक साथ होनी चाहिए”, “जो भगवान् की इन चूद्र सन्तानो में से निपट साधारण सन्तान के प्रति भी किसी प्रकार की त्रुटि हो तो उसे भगवान् के प्रति हुई त्रुटि ही जानना चाहिए”, “जो कोई अपने उस भाई को, जिसे वह चर्मचक्षु से देखता है, प्यार नहीं कर सकता वह उस ईश्वर पर प्रेम कैसे करेगा जिसे उसने कभी देखा ही नहीं।” इन सब वाक्यों के द्वारा स्पष्ट प्रतीत होता है कि ईश्वर की आराधना और मनुष्य की सेवा एक ही चीज है। जो भगवद्भक्ति ऊपर से उतरकर नरलोक की सेवा में नहीं नियुक्त होती वह असम्पूर्ण असार और अलीक है। और जो भ्रातृ-सेवा पृथ्वी पर से ऊँचे उठकर स्वर्गीय पिता की आराधना में परिणत नहीं होती वह भी अपूर्ण, भ्रान्त और अशुद्ध है। परितृप्त अथच असन्तुष्ट भोगविलास की तलाश करनेवाले पुरुष और जाड़ा-गर्मी-वर्षा सहनेवाले त्यागी सन्यासी के मुख से ही यह बात अच्छी मालूम पडती है कि यह जीवन निष्फल है। प्रथम प्रकार के पुरुष कहते हैं कि विलास अच्छा है, किन्तु बहुत ही शीघ्र चुक जाता है। सुख तो भाग में पारे की तरह उड़ जाता है, केवल दुख ही दुख हाथ लगता है।

अतएव यह जीवन असुख और अमंगल का कारण है । और विरक्त लोग भोगी की ये सब बातें सुनकर और स्वीकार करके कहते हैं कि इस शरीर से जब वासना-वृत्ति की कोई सम्भावना नहीं है तब इसे कष्ट देकर भविष्यत् की आशा रखना ही युक्तिसङ्गत है । किन्तु क्षुद्रतावश व्यक्तित्व के तग धेरें से बाहर देखने की सामर्थ्य न होने के कारण दोनो का ऐसा सकुचित और असगत मत है । इस पर दोनो का ही लक्ष्य नहीं है कि छोटी बड़ी सब तरह की वासनाओं का सम्बन्ध जन-समाज के साथ है, एक व्यक्ति के साथ नहीं । इस समय हममें दधीचि की ऐसी सहानुभूति का होना तो दूर रहा एक महल्ले के मनुष्यो से दूसरे महल्ले के मनुष्यो की सहानुभूति भी नहीं पाई जाती । किन्तु यूरोप इस ओर बहुत कुछ अग्रसर हुआ है । अतएव इस समय इस बात में हमें उम्मी को अपना आदर्श बनाना चाहिए ।

स्थूल दृष्टि से देखने में तो ससार में सुख की अपेक्षा दुख ही अधिक जान पड़ेगा । इसी से कवि ने कहा है—

“ Count o’ver the joys thine hours have seen ,

“ Count o’er the days from anguish free ,

“ And know whatever thou hast been ,

“Tis something better not to be ”

कवि ही क्यों, चिन्ताशील मनुष्य-मात्र दैनिक घोर परिश्रम के बाद विश्राम के समय चारों ओर देखकर अपने स आप ही प्रश्न करते हैं कि “इतना परिश्रम करने से क्या लाभ हुआ ?” प्रतिध्वनि हमका स्पष्ट उत्तर देती है कि “कुछ भी नहीं । सभी पोला, मुलम्मा है । मनुष्य केवल हवा के पीछे ही दौड़ता है ।” प्राचीन ममय से ही यह प्रश्न होता चला आता है । भारत के दर्शन-शास्त्र आदि

में तो इसका पिष्टपेण ही हुआ है किन्तु कर्मप्रधान पाश्चात्य जगत् में भी इस पर ऊहापोह कम नहीं हुआ * । किन्तु यह सब हताश का व्यक्तिगत विलापमात्र है । निराशा से सन्देह की उत्पत्ति होती है और सशय को बहुत समय तक बनाये रखने से वह अन्त को अशिववाद (Pessimism) और नास्तिकता में लेकर डाल देता है । इस भयङ्कर प्रवृत्त प्रवाह में, बिना जाने, अपने को डाल देने से Schopenhauer, Hume, Lenin, Von Hart-

अत्यन्त प्राचीन काल में मिडास राजा (Midas King of Phrygia) के प्रश्न के उत्तर में वन-देवता सिलिनस (Satyr Silenus) ने कहा था कि पृथ्वी पर जन्म न होना ही श्रेष्ठ है । और अगर जन्म हो ही तो जितना ही शीघ्र मोत आजाय उतना ही अच्छा । वर्तमान युग में कवि वायरन ने आदम के लडके ईश्वरद्रोही केइन (Cain) की दुहाई देकर जीवन के सम्बन्ध में विशेष दुःख प्रकाशित किया है । —

“————— I was unborn
I sought not to be born, nor love the state
To which that birth has brought me
* * * * *
They have but one answer to all question, “ ’Twas
his will,
And he is good ” How know I that ? Because
He is all-powerful, must all-good too follow ?
I judge but by the fruits—and they are bitter—
Which I must feed on for a fault not mine ”

इसके पहले मेनफ्रेड (Manfred) के मुख से कहला चुके हैं—
“ But grief shall be the instructor of the wise,
sorrow is knowledge ” इसके द्वारा समझना होगा कि “ The
gloomy heat of unbounded and exuberant despair
becomes at last oppressive to us ” (घोर निराशा का
असीम अन्धकार हमारी बुद्धि को दक लेता है) । वायरन के सम्बन्ध में गेट
की यह उक्ति बहुत ही ठीक है ।

man, Byron, Chateaubriand आदि कितने ही देशों के कितने ही असाधारण धीशक्तिसम्पन्न महामहोपाध्यायगण ने हिस्-जन्तुपूर्ण, घोर तिमिराच्छन्न, अभावायुताडित, विपत्सकुल, अविश्वास-सागर में पडकर निरवच्छिन्न अमङ्गल की विभीषिका के सिवा और कुछ भी नहीं देख पाया । मनुष्य-समाज की क्रमोन्नति और नरलोक का दुःख दूर करने के लिए सभ्य जगत् में जिन उपायों का अवलम्बन किया जाता है उनकी उपलब्धि यदि ये लोग कर सकते तो फिर निराशा का कोई कारण न था । हो सकता है कि सुख (कम से कम प्रयत्न के द्वारा) अप्राप्य सामग्री है । परन्तु केवल इसी बात से दुःख को दूर या कम करने की चेष्टा का भी किसी अंश में दूषित या हानिकारक नहीं कह सकते । मेरी समझ में हमारे यहाँ के पढ़े लिखे समझदार लोग यथाशक्ति और भाइयों के दुःख दूर करने के स्वार्थत्याग का आदर्श यदि बन जाय, मानव-प्रेम के साथ ईश्वर की आराधना करना सीख लें तो फिर उन्हें यह जीवन कभी असार और दुःखमय न जान पड़े ।

ससार में इस मोहजनित स्वार्थपरता के कारण ही बहुत सी उन्नति रुकी हुई है । चाहे जिस तरह देखिए पराये हित के लिए चेष्टा करने के अलावा मनुष्य अपनी यथार्थ सत्ता की उपलब्धि में सर्वथा असमर्थ है । इसी से हजार मोह-मूढ होने पर भी मनुष्य सोचता है कि “मेरे न रहने पर इन लडके-बालों का क्या होगा ?” यह परार्थ-भावना का बीज अपने परिवार में उत्पन्न होता है और अभ्यास बढ़ाने से सारे विश्व में विस्तृत हो जाता है । जितना ही आप इस भावना को विश्व के प्रति बढ़ा सकेंगे उतना ही आपको जीवन सुखमय जान पड़ेगा । उदार परोपकारनिरत और सकुचित-चेता छुद्रस्वार्थ पर के हृदय के भीतर देखने का अवकाश मिलने

से ऊपर लिखे सिद्धान्त की सचाई स्पष्ट देख पडती है । तब सम्भ्रम आता है कि "The happiest life is one which is largely concerned with the life of others, one in which a man's thoughts are taken away from himself and fastened upon the needs and interests of those about him" केवल सुख दुख की बात नहीं है । आचार्यों के मत में अगर वैसा न कर सके तो महापाप होता है । यहाँ तक कि केवल अपने आत्मा की रक्षा के लिए अत्यन्त व्यस्त रहने के कारण जो कोई पराई भलाई सोचने या करने का अवकाश नहीं पाता वह भी अपराधी है । भूत, भविष्य, वर्तमान के सारे जीव हमारे हैं और हम इस जीव-समष्टि का एक सामान्य अंश मात्र हैं— इस मुक्तिदायक महामन्त्र में दीक्षित हुए बिना रक्षा कहाँ हो सकती है ? क्षुद्र परमाणु से प्रकाण्ड ब्रह्माण्ड तक, सबसे हमको यह शिखा प्राप्त करनी चाहिए कि—

"To cut the link of brotherhood, by which
One common maker bound me to the kind"

अर्थात् ससार से अलग होना अस्वाभाविक है और इसी से सर्वथा दुख और विपत्ति का कारण है । "Fellowship is heaven, and lack of fellowship is hell fellowship is life, and lack of fellowship is death"—यही हमारा मूलमन्त्र होना चाहिए ।

अपना भरोसा और पराया उपकार । पाश्चात्य जगत् के ये दो गुण हमारे लिए अवश्य अनुकरणीय हैं । त्रिभुवनपालक परमपिता परमेश्वर ने अपनी सृष्टि के हर एक जीव को प्रयोजन के माफिक शक्ति दी है । उसके द्वारा वे सुख से, स्वस्थ-शरीर होकर, स्वच्छन्द मन से अपनी जीविका चलाते हैं । उस शक्ति के उपयोग से स्वाधीन

भाव का अवलम्बन ही जीव का धर्म है । जो लोग पैतृक धन-सम्पत्ति न पाने के कारण अपने को अभागा समझते हैं वे ईश्वर की अकृतज्ञ विद्रोही सन्तान हैं । वे ईश्वर की दी हुई शक्ति के अपव्यवहार से नाश को प्राप्त होते हैं और अपने जीव को पराधीन बनाकर व्यर्थ दुःखभागी बनते हैं ।

सर्वं परवश दुःख सर्वमात्मवश सुखम् ।

एतद्विद्यात्समासेन लक्षणं सुखदुःखयोः ॥

यह हमारे शास्त्र की बात है । किन्तु हम ऐसे सुन्दर वाक्य का पूर्ण रूप से अनादर करके चलते हैं । सर्वदा आवश्यक कामों में सोलहो आने पराये ऊपर निर्भर करके अकर्मण्य जडपिण्ड की तरह जिन्दगी बिताना धार विडम्बना है । इसका अनुभव करके भी इस ओर हम ध्यान नहीं देते । उधर यूरोप की ओर देखिए । इंग्लैण्ड का भावी सम्राट् लडकपन से जहाज के खलासियों के साथ परिश्रम करके शरीर को ऐसा सवन स्वस्थ बना लेता है कि उसे, हज़ारों अनुचरो के रहते भी, किसी काम के लिए किसी का मुँह ताकना न पड़े ।

हम लोग नाम पैदा करने के बड़े शौकीन हैं । अतएव मैं प्रार्थना करके कहता हूँ कि काम के बिना नाम कभी नहीं होता, यह कुञ्जी हमको कभी न भूलनी चाहिए । प्रातःस्मरणीय महा-पुरुषगण केवल धनोपार्जन करके ही अपना नाम नहीं अमर कर गये हैं । हमारे शास्त्र का शासन-वाक्य है कि स्वार्थपर और कृपण का नाम भी न लेना चाहिए । स्वार्थपरता न्याय की जड में कुठागघात करती है । जो कुछ न्याय और कर्त्तव्य के विरुद्ध है वह क्षणस्थायी है । स्वार्थपर और कृपण के मामने चाहे कोई कुछ भी कहे, लेकिन पीछे लोग गालियाँ ही देते हैं । जिन्दगी भर यह दशा रहती है,

उसके बाद मरने पर मायूली जानवरो की तरह घडी भर मे सारा ससार उसे भूल जाता है । जो लाग महान् हैं उनका मूलमन्त्र है— My fellowmen first, myself second अर्थात् मनुष्य मण्डली, उसके पीछे मैं । ऐसे जो नामी महापुरुष हो गये हैं वे किसी सासारिक विषय मे लिप्त न थे । मनुष्य लोक के मामलो में आवश्यकता भर मन लगाकर वे कीडे, आग और चोरो की शक्ति से नष्ट या विकृत न होनेवाले अक्षय अजर अमर प्रेम के प्रचार के लिए अपना जीवन अर्पण कर गये हैं । ऐसे ही पुरुष, जिन्होंने ससार का आध्यात्मिक बल बढ़ाया है, ससार के पूजनीय हो रहे हैं—मरने पर भी उनका नहीं मरा । अतएव “महाजनेो यन गत स पन्था ” इस वाक्य को स्मरण कर पहले के साधु महात्मा लोगो के पदाङ्क का अनुसरण करते हुए ज्ञानापार्जन के साथ ही साथ मन-बाणी काया से पराये हित मे लगे रहना ही इस जीवन का असल काम है । इससे इस लोक मे विमल सुख, परलोक मे स्वर्ग और ससार में अनन्त काल तक कीर्ति प्राप्त होती है । मनुष्य-जन्म सफल हो जाता है ।

स्त्री स्वाधीनता आदि । पहले कहा जा चुका है कि स्त्रियो के सम्बन्ध मे हमे कुछ बातें यूरोपियनों से सीखनी हेर्गी । हमारा शास्त्र कहता है, “कन्याप्येव पालनीया रक्षणीयातियन्नत ।” किन्तु इसका पालन प्राचीन समय मे हुआ करता था । इस समय कहीं कहीं स्त्रियो को स्वाधीन बनाने, पर्दा उठाने और लिखाने-पढाने की कोशिश होने लगी है । कही कहीं “अल्पविद्या भयङ्करी” के अनुसार कुछ कुफल भी फला है । किन्तु क्या किया जाय ? स्त्रियों की स्वाधीनता का अपव्यवहार भी कहीं कहीं पर जोर शोर से होने लगा है । शरीर का रोग और समाज की कोई व्याधि एक ही चीज

है । आँखों में उँगली डालकर दिखाये बिना प्रतीकार की विलकुल आशा नहीं है । बँधे हुए जानवर को एकाएक छोड़ देने से वह अवश्य यथेच्छ व्यवहार की चेष्टा करेगा । अतएव यथासम्भव स्वाधीनता देकर ज्ञान-दानपूर्वक स्त्रियों को आदर की दृष्टि से देखना इस समय हमारा कर्त्तव्य है । याद रखाए, समुद्र मथने से पहले हलाहल किन्तु पीछे अमृत निकला था । कुछ कुदृष्टान्तों के कारण उन्नति के मार्ग में काँटे रूँधना कभी बुद्धिमानों नहीं है । पाश्चात्य जातियों से स्त्रियों को समुचित सम्मान देकर और सम्मान पाने योग्य बनाकर हमें उन्नति के मार्ग में अग्रसर होना चाहिए । यथेष्ट पढ़ने-लिखने पर स्त्रियाँ कभी लक्ष्यभ्रष्ट नहीं हो सकती ।

विवाह । विवाह के विषय में भी हमें पाश्चात्य जगत् के दिखाये मार्ग पर चलना चाहिए । सुप्रसिद्ध ग्रन्थकार शाटेनरियाँ ने अपने एक ग्रन्थ में व्यग्य के तौर पर लिखा है—“घूमते घूमते पूर्वाश्वलस्थ भारतवर्ष नामक देश में पहुँचा । वहाँ दुखी सुखी, गरीब अमीर सब व्याह्रे हुए हैं । व्याह्र न करना महापाप गिना जाता है । जातीय धर्म के अनुशासन से हर एक को व्याह्र करना पड़ता है । इस कारण, मैंने भी एक व्याह्र कर लिया, इत्यादि ।” इस व्यग्य का मतलब यही है कि पृथ्वी पर ऐसा विचित्र देश उन्होंने कहीं नहीं देखा कि जहाँ भरण-पोषण के लिए कुछ ठिकाना या जीविका चलाने की योग्यता हो या न हो, किन्तु एक व्याह्र करना जरूरी समझा जाता हो । यह बात तो किसी को समझानी ही नहीं पड़ेगी कि असमर्थ होने पर भी व्याह्र करने से सर्वदा व्यक्तिगत झगडा उठकर सारे समाज को घोर विपत्ति में डाल देता है । प्रसिद्ध समाज-तत्त्व-वेत्ता और चिकित्सा विद्या विशारद ऐकून साहय कहते हैं—“Marriage often interferes with

work and success in life, and its result is that the poor man never reaches the bodily health or social happiness he might otherwise have reasonably expected"—*W Acton* पाश्चात्य जगत् का हर एक भद्रपुरुष इस बात को अन्धी तरह समझता है कि विवाह के द्वारा अनेकों शरीर और मन की और उसके द्वारा समाज की उन्नति में विशेष विघ्न उपस्थित होता है । हमारे देश की दुर्दशा और दुःख-दारिद्र्य-अभाव आदि का एक मूल कारण असमर्थ विवाह भी है । इस बारे में बहुत शास्त्र सावधान हो जाना ही हमारे लिए श्रेयस्कर है । इसमें अलावा यूरोप और अमेरिका में जो स्त्री पुरुष अविवाहित रहते हैं उन्हें अधिकतर परापकारी समाजसेवक देख पड़ते हैं । उन्हीं को ही यूरोप और अमेरिका का इस उन्नति का प्रधान सहायक कहना चाहिए । सभी अगर स्त्री-पुत्र-परिवार लेकर भगड़े में पड जायें तो फिर समाज और देश की ओर कौन ध्यान देगा ? पाश्चात्य अविवाहित नर नारी-गण केवल स्वदेश की सेवा ही नहीं करते, वे पृथ्वी के अन्य अनेक देशों में भी लोकसेवा कर रहे हैं । चण्डिक सुख की सामग्री विवाह से वञ्चित होने की बात सुन कर मुझ पर बहुत से लोग खड़कहस्त हो सकते हैं, किन्तु कुछ दिन के सामान्य उपभोग की घात छोड़ कर, सकीर्ण-स्वार्थपरता-शून्य हृदय से ऊपर की ओर दृष्टि कर, जरा सोच कर देखने से अनायास ही समझा जा सकता है कि उससे—विवाह न करके लोकसेवा और ईश्वराराधन में लगे रहने से—कैसा पवित्र और निर्मल सुख मिलता है । आश्चर्य की बात तो यह है कि हमारे देश के अनेक शिष्टि भाई भी दूरदर्शिता को तिलाञ्जलि देकर अचम पुत्र को व्याह के बन्धन में बाँधते कुछ भी सकोच नहीं करते । अनेक लोग कहते

मे पहुँचकर पूर्वी रङ्ग ढङ्ग देखकर यं तो जैसे सन्नाटे मे आ गये । ये लोग कभी कल्पना भी नहीं कर सके थे कि एक समुद्र के उस पार इतना परिवर्तन देखने को मिलेगा ।

जापान ।

या
 कोहामा । अमेरिका छोड़न के बाद अठारहवें दिन सुबेरे
 ५,२०० मील का समुद्र पार होकर जापान के प्रधान
 बन्दरगाह याकोहामा में पहुँचा । जापानी उपकूल के
 पास पसिफिक सागर ५६ मील गहरा है । पश्चिमी ओर अनेक प्रकार के
 पूर्वी जहाजों से भरा हुआ यह बन्दरगाह खूब गुनजार है । मछली पक-
 डनेवाले छोटे जहाज और 'डॉड' तथा 'पाल' से चलनेवाले जेब-जहाज
 एक नई ही चीज थी । 'शम्पेन' नाम पर किनारे पहुँच कर आदमी के
 द्वारा खींचा जानेवाला जिनी रिकशा गाड़ी पर चढ़कर नगर देखने
 निकला । इस गाड़ी को एक ही आदमी बड़े वेग से घसीट ले जाता
 है । अगर अधिक मेहनत करनी पडती है तो बाच बीच में शराब
 पी लेता है । ये मनुष्य घोड़े तली में नरम घास-दार एक तरह का
 जूता या मोजा पहनते हैं । सन् १८५३ में याकोहामा एक
 छोटी सी मछुओं का बस्तो थी । इस समय सुन्दर नगर बस गया
 है । जनसंख्या ७०,००० के लगभग है । अमेरिकियों की आवाजाही
 खर रहने के कारण इस नगर में एक प्रकार की मिश्रित जाति पैदा
 हो गई है । इस जाति के लोग सभ सुन्दर और सुडौल होते हैं ।
 नगर में निम्नलिखित दृश्य प्रधान हैं । समुद्र का वेग कम करने के
 लिए बर (Breakwater), शहर की तरहटी से कानागावा तक पा
 नील का बाध (Causeway), जल की कल (Waterworks),

विदेशी लोगों की ब्लफ (Bluff) नाम की बस्ती, सरकारी बाग, आस-नल, बेकार गरीबों के लिए कारखाना और आश्रम (Workhouse), कई एक देव-मन्दिर और छोटे से पहाड पर बना हुआ घन्टा-टावर, (इस घन्टे से नगर भर की घड़ियाँ मिलाई जाती हैं। आग लगने की सूचना भी इसी घन्टे से दी जाती है।) नगर में सात विदेशी वैद्व और पाँच अस्पताल हैं। अस्पतालों में एक देशी है। पाँच जापानी थियेटरो में एक उत्कृष्ट श्रेणी का है। सरकारी बाग के पास सवेरे से दोपहर तक एक बाजार लगता है। तीसरे पहर भी सागपात विकते और नीलाम होता है। नगर के 'मत्सुकागेगाको' स्कूल को देखने गया। वहाँ के शिक्षको से वात्चीत करके बड़ी प्रसन्नता प्राप्त हुई। स्कूल में लडके और लडकियाँ एक साथ पढते हैं। देशी भाषा के अलावा साधारण अँगरेजी भी सिखलाई जाती है। विद्यार्थी लडके और लडकियाँ पतले कागज़ (Tissue Paper) पर कूची से लिखते हैं। शिक्षक की आज्ञा से एक बालक और एक बालिका ने मेरे सामने लिखकर दो कागज मुझे दिये। लिखने का ढँग फारसी की तरह उल्टा और ऊपर से नीचे की ओर है। याकोहामा में मसान और कबरिस्तान दोनो हैं। मसान का खर्च धनी, गरीब और मध्यवित्त सबसे भिन्न भिन्न निर्दिष्ट हिसाब से लिखा जाता है। दाह के बाद चिता की भस्म वहाँ गाड दिया करते हैं। कोई कोई मुर्दे का दाँत घर ले आते हैं। शव बैठा ही बैठा गाडा जाता है। इसी से कबरिस्तान में समाधियाँ खूब पास ही पास हैं। इसके सिवा विदेशी क्रिस्तान-जातियो के लिए अलग कबरिस्तान है। नगर में बहुत से चाया अर्थात् चाय पीने के अड्डे हैं। इन सब स्थानों में औरतें ही दूकानदारी करती हैं। इन औरतों का चाल-चलन वैसा अच्छा नहीं जान पडता। यहाँ का सबसे बढकर कुत्सित दृश्य है

‘जानकिनो’ नाच । इसमें एक स्त्री बैठकर सितार ऐसा एक बाजा बजाती है और तीन औरतें नाचती हैं । ये नाचनेवालिया धीरे-धीरे कपड़े बगैरह उतार कर मिलकुल नग्न हो जाती हैं । भद्रपुरुषों के सामने जैसा यह अश्लील दृश्य दिखाया जाता है वैसा पृथ्वी की सभ्य या असभ्य किसी भी जाति में नहीं देख पड़ता । इस बीभत्स व्यापार का सम्बन्ध काफी पीने के अर्द्धों से होने के कारण विदेशी भद्रपुरुष विना जाने नाच देखने लगते हैं, किन्तु पीछे यह दृश्य देखकर स्त्रीभर उठ जाते हैं । रेल-स्टेशन पर यात्रियों की काठ की तली-वाली चट्टियों की खटखटाहट के मारे कान नहीं दिया जाता । स्त्री, पुरुष और धर्मयाजकों की विचित्र पोशाकें देखने में बड़ा मजा आता है । स्टेशनों के सब कर्मचारी भद्र और भव्य हैं ।

टोकिया । रेल की पटरी के दोनों किनारे गाँव, अन्न के खेत और मनोहर पुष्प-शोभित वृक्ष आदि देखत देखते १८ मील का रास्ता तय करके याकोहामा से वर्तमान राजधानी टोकियो में पहुँचा । यही जापान की पहली रेल है । सन् १८७३ में यह लाइन खोली गई थी । स्टेशनों के नाम अँगरेजी और जापानी भाषा में लिखे रहते हैं । टोकियो का पुराना नाम है जेदो । इसका घेर १६ वर्ग-मील और आबादी चौदह लाख के लगभग है । सन् १८६८ में * प्राचीन प्रथा उठ जाने पर सम्राट् साइकिमो † से यहाँ आये

* इस समय के पहले ‘शोगुन’ अर्थात् सैन्याध्यक्ष ही राज्य के इच्छा-कर्ता-निधाता बन बैठे थे और इंग्लैण्ड की प्राचीन फ्यूडल-प्रथा (Feudal System) की ऐसी व्यवस्था हा उठी थी । सम्राट् तो एक प्रकार से न होने के बराबर थे ।

† प्राचीन राजधानी क्यूटो का नाम साइकिमो रख दिया गया था । इसका अर्थ है पश्चिमी राजधानी ।

और तभी से इनका नाम टोकियो (अर्थात् पूर्वी राजधानी) रक्क गया । राजधानी समतल भूमि के ऊपर है । बीच बीच में ५० : १०० फुट तक ऊँचे छोटे छोटे पहाड़ भी देख पड़ते हैं । नगर के भीतर से एक नदी और कई नहरें निकली हैं । नदी के ऊपर लकड़ के बने पाँच पुल हैं । नगर के केन्द्रस्थ “निहोनवाशी” या “सूर्योदय सेतु” से चारों ओर की दूरी का शुमार किया जाता है । थोड़े दिनों पहले टोकियो में विदेशियों पर दारुण अत्याचार होते थे अब उनके लिए अलग सुरक्षित बस्ती बना दी गई है । रास्ते बहुत सीधे नहीं हैं । कुछ एक तो बहुत ही तंग हैं । प्रधान सड़क का नाम है गिञ्जा । उसके किनारे अनेक ईंटों के मकान हैं । नहीं तो साधारणतः सब लकड़ी के बने घर हैं । इसी रास्ते में ट्रामगाडी चलती है । यहाँ की सड़क पर कभी कभी बैलगाडो या टट्टू देख पड़ते हैं । चार बड़े पार्क हैं, उनमें से एक में विस्तृत जलाशय है । दूसरे में दयादेवी का मन्दिर और सुन्दर पुष्प-शोभित अनेक ‘सुकारा’ या ‘चेरी’ के पेड़ हैं । तीसरे का नाम है शिवा । यह ३६० बीघे में है । यहाँ शिवा का मन्दिर है । आँगन में बहुत से कसौटी के पत्थर फैले हुए हैं । वहाँ रक्खा हुआ जूता पहन कर और अपना जूता वहाँ छोड़ कर भीतर प्रवेश करना पड़ता है । वहाँ जाकर देखिए, धर्मयाजक लोग एकत्र बैठे हुए धर्मग्रन्थ पढ़ते हैं और उपासक लोग सामने बैठे भक्ति के साथ सुनते हैं । सम्राट् का उपासना का कमरा और उपासना का एक लिपटा हुआ कागज दिखाया गया । नगर के बीच में सम्राट् का, काठ का, महल है । उसका हाता १,५०० बीघे से अधिक है । तेहरे भारी भारी पत्थरो से बनी दीवार है । और चौड़ी खाई चारों ओर है । पहले दो दीवारों के बीच की जगह में उमरा लोग आकर साम्राज्य की प्रथा के अनुसार साल में छ.

महीने के हिसाब से रहते थे । शेष छ महीने साम्राज्य की शान्ति के लिए जामिन के तौर पर उनका परिवार अटक रक्खा जाता था । अब वहाँ सरकारी आफिस प्रगैरह हैं । विलकुल भीतर मिकोडोका महल और वाग हैं । राजधानी में एक विश्वविद्यालय और ७०० के लगभग सरकारी तथा वेसरकारी स्कूल हैं । इनमें दस हजार के लगभग शिक्षक काम करते हैं । इस काम में राजकोष से सोलह लाख 'पेन' सालाना खर्च किया जाता है । नगर की शान्ति रक्षा के लिए ५,००० और भाग बुझाने के लिए २,००० पुलिस है । शहर का स्वास्थ्य बुरा नहीं है । यहाँ १,००० के करीब साधारण इम्माम हैं, उनमें नित्य तीन लाख के लगभग आदमी स्नान करते हैं । नहाने में बहुत ही गर्म पानी का इस्तेमाल किया जाता है । स्नान करनेवाले को कवल एक 'सेन' देना पडता है । वह भी देने में जो असमर्थ हैं वे सूर्यास्त के समय घर के सामने सबक पर स्नान कर लेते हैं । लेकिन पुलिस देख लेती है तो पकड ले जाती है । नवीन आईन के अनुमार या नहाना निषिद्ध है । स्नान के साथ ही देह दवाने का भी चलन है । अन्धे लोगो की यही जीविका है । पहले इन सब स्थानो में स्त्री और पुरुष विलकुल नङ्गे होकर एक ही जगह स्नान करते थे । इसमें किसी प्रकार का सकोच कैसा, लज्जा को ही वे अस्वाभाविक समझते थे । अब आईन बनाकर यह प्रथा रोक दी गई है । वेश्याओं के लिए "गाङ्कुरो" नाम की एक अलग बस्ती है । वेश्याओं से टेक्स लिया जाता है और उन्हें अनुमति-पत्र (गर्म लोहे की सलाक से लिया हुआ 'फण्डा' या टिकट) दिया जाता है । यह वेश्याओं की बस्ती चारों ओर खाई से घिरी हुई है । उस खाई के बाहर वेश्यावृत्ति करने से उन्हें अदालत से रुठिन दण्ड भोगना पडता है । सन् १८५५ में

इस नगर में १८ दिन तक भूकम्प हुआ था। उसके साथ ही आग भी लगी थी। इसमें अगणित जीव मर गये और नगर का अधिकांश नष्ट हो गया। दारुण शीत के समय बराबर मैदान में कष्ट भोग कर लोगों ने अपने प्राण बचाये थे।

जापान की साधारण अवस्था। विगत रूस-जापान-युद्ध में जापान ने पृथ्वी भर को सन्नाटे में डाल दिया है। केवल तीस बत्तीस बरस में इतनी उन्नति जापान के सिवा और किसी देश के इतिहास में नहीं देख पड़ती। सैन्य-आदि की सुव्यवस्था, लड़ाई के मैदान में शूरवीरता, दया-दाक्षिण्य आदि सद्गुणों से काम लेना, अभ्युदय के समय अविचलित चित्त बने रहना, स्वदेश-प्रेम, अप्रतिहत उद्यम, उत्साह और परिश्रम, विवेचना और दूरदर्शिता आदि दिखाकर जापान ने यूरोप तक को विस्मित बना दिया है। वह अभी इटली और एशिया के समकक्ष हो रहा है, भविष्यत् में कौन कह सकता है कि जापान भी इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी आदि बड़ी शक्तियों के बराबर की शक्ति न बन जायगा। एक अँगरेज़ का मन्तव्य नीचे उद्धृत किया जाता है—

In the arts of peace, not less than in those of war, has this Island Empire rushed to the front in the short space of thirty years. While it has astonished the world by the efficiency and perfection of its naval and military organisation, it has not less charmed the world by its humanity in battle, and by its moderation in the hour of victory. Success has not for a moment caused it to lose its head. It has shown wisdom and forethought as well as grit and dash, and looking to the patriotism of the people, the able character of their rulers, the unflagging national industry, the resources of the country and the methods by which its present position has been attained, it seems certain that Japan will continue the course of her

marvellous advance, and will speedily become one of the most important factors in the fashioning of the world's history. Already she may be said to have mounted to the level of Italy and Russia, she will not, we may be sure, fail to attain the higher level occupied by Great Britain, France, Germany and the United States"—

JOSEPH WHITAKER, F. S.

जापान को स्थानीय लोग 'दाई निप्पन' कहते हैं। निप्पन शब्द का अर्थ है सूर्य का उत्पत्तिस्थान। चीनी लोग इस देश को "जि-पेन" (उनके मतानुसार जहाँ से सूरज आते हैं) कहते थे। इसी शब्द के अनुसार पश्चिमी लोग इसे जापान कहने लगे। चार बड़े द्वीपों ४,००० से अधिक छोटे छोटे टापुओंवाले इस साम्राज्य का घेरा १५ लाख वर्ग-मील के लगभग होगा। यह दोनों ब्रिटिश-द्वीपों के अपेक्षा कुछ बड़ा है। यहाँ पाँच करोड़ के लगभग आदमी बसते हैं। जापान इस पृथ्वी का बहुत पुराना साम्राज्य है। जापान का २,५०० वर्ष का लिखा हुआ इतिहास है और मिकाडो अर्थात् सम्राट् की १२१ पीढियाँ अभी से बराबर सिंहासन पर बैठी आती हैं। जापान के वर्तमान सम्राट् सन् १८१२ में सिंहासन पर बैठे थे। हमारे यहाँ के सूर्य-वशी चन्द्रवशी नरपतियों की तरह मिकाडो के भी आदि-पुरुष देवता थे। टर्की के सुल्तान को जैसे यूरोपियन लोग "सब्लाइम पोर्ट" अर्थात् "महिमान्वित फाटर" कहते हैं वैसे ही जापानी लोग मिकाडो को "महोच्च द्वार" कहते हैं। डेढ़ करोड़ पाँण्ड के लगभग राजकर वसूल होता है। सर्च इससे कुछ कम होता है। ऋण चार करोड़ पाँण्ड के लगभग था। शान्ति के समय ८०,००० सेना रहती है, किन्तु युद्ध के समय २१ लाख तक जमा कर ली जा सकती है। जहाजी सेना १०,००० है। जमी जहाज ३१ हैं।

उनमें एक लौहयान है । यहाँ भी हर एक प्रजा को बाध्य होकर कुछ दिन फौज का काम सीखना पड़ता है । अगर कोई चाहे तो वह एक निर्दिष्ट रकम देकर छुटकारा भी पा सकता है । स्थलयुद्ध और जलयुद्ध की शिक्षा के लिए पाँच स्कूल हैं । रोजगारी जहाज़ सभ मिलाकर ७५० हैं । इनमें २०० से अधिक स्टीमर, ८० जहाज और बाकी जक-श्रेणी के जलयान हैं । जापान के रुपये को येन कहते हैं । आकार में यह अमेरिकन डालर के समान होता है । पहले इसका मूल्य कुछ निश्चित न था, एक्सचेंज के हिसाब से चलता था । किन्तु अब सुना जाता है कि सोने की दर पर इसका चलन निश्चित हो गया है । पैसे को सेन कहते हैं । सेन के $\frac{1}{100}$ को 'रिन' कहते हैं । यहाँ भी दाशमिक प्रथा प्रचलित है । यूरোपियन जातियों की तरह जापानिया ने भी अपने यहाँ के निपट दरिद्र, असहाय, बे-मा-बाप के, स्वजनहीन व्यक्तियों के भरण-पोषण के लिए विशेष व्यवस्थाएँ कर दी हैं । इस कार्य के लिए प्रादेशिक सरकार के खजान और साम्राज्य के धनभाण्डार से तो सहायता मिलती ही है, उसके अलावा जमींदारों के ऊपर सालाना टेक्स भी लगा है । इसमें एक करोड़ 'येन' से अधिक जमा हो जाता है । इस व्यवस्था के द्वारा साल में ३० । ३२ लाख गरीबों का भरण-पोषण हुआ करता है । साम्राज्य भर में १३५ बड़े बैंक हैं । उनके सिवा उनकी शाखाएँ (Branches), ६०० से अधिक सेविंग बैंक और छोटे बैंक हैं । इंग्लैंड के रथचाइल्ड-परिवार की तरह यहाँ भी ३०० वर्ष का प्राचीन एक धनी परिवार है । उनके हाउस का नाम 'मिस्तुर्ड कम्पनी' है । इन्होंने पहले एक तरह की शराब (साके) बनाकर और बेचकर बहुत रुपया पैदा कर लिया । अन्यान्य बड़े रोजगारों में इनका एक प्रधान बैंक और

३० शारा बैंक हैं । उनमें १,००० से ऊपर कुर्क काम करते हैं । ३०० वर्ष से यह सारा परिवार एक ही में रहता है । सारी सम्पत्ति में सबका समान अधिकार है । लाभ-हानि के साथ किसी का नम्यन्ध नहीं है । परिवार का हर एक आदमी एक निर्दिष्ट मासिक वृत्ति पाता है । भाषा के बारे में जापान की प्रशंसा नहीं की जा सकती । कम से कम यह तो जरूर ही कहना पड़ेगा कि ऐसे विकट शब्दों का व्यवहार शायद ही किसी देश की भाषा में होता हो । पाठकों को जानकारों के लिए कुछ शब्द यहाँ पर लिखे जाते हैं । मैं = वाताकुशी, हम लोग = वाताकुशी दोमां, एक = हितोत्सू, अस्तित्व = गोजारिमास, करना = कोशिरा-येंमास, कल्सी = मिदजुसाशी । छोटे छोटे शब्द भी हैं, किन्तु सरया में ऐसे लम्बे लम्बे शब्द ही अधिक हैं । छोटे शब्द भी कुछ उद्धृत किये जाते हैं । चित्र = ए, याली = सारा, मुवर्ण = किन्, चादी = गिन्, कुर्सी = ईसु, कागज = कामी, फलम = पेन, रोशनाई = इक, जापानी स्याही = सुमि, ओवर-कोट = काप्पा, सूर्य = हि, प्रात काल = आपा, दस = तो, हजार = सेन, दस हजार = मान, दस लाख = ओकू, लिखने की कलम = फूदे इत्यादि । अन्यान्य भाषाओं की तरह जापानी भाषा में भी पेन, इक आदि अनेक अँगरेजी शब्द चल गये हैं । जापानी भाषा में कसम का प्रतिशब्द नहीं है । यह उनके लिए कम प्रशंसा की बात नहीं है । नर्म कागज या कपड़े से मढा हुआ लकड़ी का टुकड़ा ही जापानियों का तकिया होता है । वह छोटा इतना होता है कि केवल गर्दन उस पर रहती है, सिर नीचे लटका करता है । स्त्री पुरुष दोनों की पोशारू विचित्र है । सिर ढकने की कोई चीज किसी के नहीं रहती । केवल पुलिस के सिर पर टोपी देख पड़ती है । उनके सिवा सब बगालियों की तरह सिर

खाले रहते हैं। बाल सँवारने का स्त्री और पुरुष दोनों को बड़ा शौक है। रमणियाँ खूब लम्बे घने बालों में तेल लगाती हैं। स्थाने लोगो के सिर के बाल तीन जगह से मुँडे होते हैं। बीच में टापुओं की तरह तीन घोटियाँ देख पडती हैं। आज-काल अनेक स्त्री-पुरुष यूरोपियनो की पोशाक पहनने लगे हैं। राजकर्मचारियों को यूरोपियन पोशाक अवश्य ही पहननी पडती है। स्त्रियों देखने में सब सुन्दरी होती हैं। किन्तु व्याह के बाद दाँत काले करके और भौंहे मुँडाकर वे अपने सौन्दर्य को बहुत कुछ नष्ट कर डालती हैं। वर्तमान मम्राट् की माता के दाँत सफेद ही रहे, उन्होंने काला मसाला दाँतों पर कभी नहीं मला। उनकी देखादेखी अब शहरों में रहनेवाली भद्रमहिलायें दाँत काले नहीं करतीं। किन्तु देहातो में अभी दाँत काले करने का वैसा ही चलन है। स्त्रियाँ मुँह में पाउडर और ओठों में लाल रंग लगाती हैं। तीन साल तक के बच्चों के सिर मुडे रहते हैं। सिर खुले रखने के अलावा जापानी लोग बहुत कुछ हिन्दुस्तानियों से मिलते जुलते हैं। वहाँ उच्च और नीच दोनों श्रेणी के लोगो की आकृति और प्रकृति में विशेष अलगाव देख पडता है। निम्नश्रेणी के लोग गर्मियों में केवल कमर तक ढके रहते हैं। जापानी लोग हमारी तरह भोजन को 'भातखाना' कहते हैं और "धूम-पान" शब्द का व्यवहार करते हैं। ये लोग बगालियों की तरह मछली-भात खाकर जिन्दगी बिताते हैं। जापान में भात मिलना कठिन है। बौद्ध साधक लोग यहा चाय पीकर रात को जागते थे। वे ही इस देश में चाय लाये थे। अब तो देश में चाय की बड़ी ही भरमार है। चीना लोगों की तरह जापानी भी चाय पीते हैं। इस राज्य में भी पहले यूरोपियनों में से पोर्च्युगीज लोग ही आये थे। वे सन् १६०० में यहाँ अपने साथ तम्बाकू

लाये थे । परन्तु सम्राट् की आज्ञा के अनुसार उसका खाना-पीना निषिद्ध था । पीछे से सन् १८५१ मे उस समय के मिकाडो की अनुमति से तम्बाकू पीने का चलन होगया और अब हमारे देश की तरह आने वाले की खातिर तम्बाकू से की जाती है । यह विश्वास भी भारत ही के समान जापान मे है कि पारलौकिक कल्याण के लिए पुत्र का होना परम आवश्यक है । स्त्रियों के लिए भी यह नियम है कि वे लडकपन मे मा बाप के, जवानी में स्वामी के और रँडापे मे पुत्र के अधीन रहे । पूर्व पुरुषों का वार्षिक श्राद्ध भी होता है । स्त्रियाँ भारत की तरह सम्पूर्ण रूप से पुरुषों के अधीन होने पर भी वे “गृहलक्ष्मी” कहलाती हैं । १६ बरस के लडके के साथ १२ बरस की लडकी का व्याह कर दिया जाता है । लडकीवाले को बहुत खर्च करना पडता है । जापानी लोग व्याह के बाद कन्या के गोत्र बदल जाने को उसके मरने के समान मानते हैं । मरने पर जैसे घर की सफाई होती है वैसे ही सफाई कन्या का व्याह हो जाने पर की जाती है । यहाँ की तरह वहाँ भी व्याह के दलाल हैं । वे ही दोनों पक्ष के बीच मे पडकर व्याह की बातचीत पकी करते हैं । छः साल छ महीने छ दिन की अवस्था में बालक को विद्यारभ कराया जाता है । पहले यहा डोलियों (कागो) और पालकियों (नरीमन) का चलन था और उच्च श्रेणी के आदमियों के सामने नीच जाति के आदमी घोडे पर चढकर नहीं निकल सकते थे । जापान में, दोनों जानुओं पर दोनों हाथ रखकर नमस्कार और पृथ्वी पर पडकर प्रणाम करने की रीति प्रचलित थी । घर की मालकिन घर में जब लौट कर आती है तब चाकर-वाकर और सन्तान-गण दरवाजे पर जाकर भूमिष्ठ होकर उसे प्रणाम करते हैं । दूकान-दारो को समाज में उतनी श्रद्धा से नहीं देखते । जापान के कई

आचार और रीतियाँ कुछ कुछ हमारी ऐसी हैं । पैदा होने के सातवें दिन बच्चे का नामकरण होता है । एक महीने के बाद सिर मूँडकर नहला कर सँवार सिद्धार कर बच्चे को उसकी माता स्थानीय मन्दिर में ले जाती और इष्ट-देवता की पूजा करती है । बच्चों को पाँच वर्ष की अवस्था तक दूध पीने देते हैं । बच्चे लडकपन से ही पिता-माता के प्रति यथोचित भक्ति-श्रद्धा दिखलाना सीखते हैं । जैन आदि कई सम्प्रदायों की तरह श्वेत वस्त्र का व्यवहार जापानियों का शोक-चिह्न है । साम्राज्य के आईन के अनुसार मा-बाप के मरने पर सन्तानों को अवश्य शोक-चिह्न धारण करना पड़ता है । टोकियो के विश्वविद्यालय और युद्ध-शिल्प आदि अनेक विषयों के सौ से ऊपर स्कूलों के अलावा जुदी जुदी श्रेणियों के ३०,००० से अधिक स्कूलों में ८०,००० हजार के लगभग अध्यापक और अध्यापिकायें २५ लाख के लगभग छात्रों और १० लाख छात्रियों को पढ़ाती हैं । पहले-पहल ५०० के लगभग अध्यापक और कुछ अध्यापिकायें यूरोप और अमेरिका से मँगवाई गई थीं । उनमें अमेरिकन आधे के लगभग थे । इस समय भी अनेक विदेशी अध्यापक और अध्यापिकायें हैं । इसके अलावा बहुत से छात्र शिल्प, विज्ञान, दर्शन आदि सीखने के लिए सरकारी खर्च से यूरोप और अमेरिका में भेजे जाते हैं । राजनीति और शिक्षा से संबन्ध रखनेवाली अनेक बातों में विशेष रूप से जर्मनी, फ्रांस और अमेरिका का ढङ्ग पकड़ा जाता है । इस राज्य में छोटे-बड़े सब मिलाकर २० साधारण पुस्तकालय हैं । सन् १८६२ में २०,००० से अधिक पुस्तकें (इनमें ७,००० के ऊपर भौतिक ग्रन्थों के प्रथम संस्करण थे), ८०० सवादपत्रों की २४१ करोड़ के लगभग कापियाँ प्रकाशित हुई थीं । हाथीदाँत, चीनी मिट्टी के बर्तन, लाख

(Lacquer), मोना और कागज को कारीगरी के लिए जापान प्रसिद्ध है । जापानी लोग दरवाजे के किवाड़े से लेकर हाथ के रुमाल तक का काम कागज से ही निकालते हैं । जापान में अमन्द, सेब, चेरी, कौले आदि के फल-फूलवाले वृक्ष बहुत हैं ।

जापान में विकृत बौद्धधर्म प्रचलित है । देव-देवी, भूत-प्रेत, दानव-दैत्य आदि का भी अभाव नहीं है । यहाँ के पहाड़ भील आदि प्राकृतिक दृश्यों के साथ एक न एक अद्भुत पौराणिक कहानी का सम्बन्ध है । मन्दिर आदि में, हमारे देश के जैनो का ऐसा श्रोषा (एक तरह की बुहारी) और आईना रक्खा रहता है । यहाँ के ये बौद्ध मासभक्षण करते हैं । केवल घी-दूध आदि गोरस को नहीं छूते ।

साधारण पहाड़ और ज्वालामुखियों के लिए जापान प्रसिद्ध है । ज्वालामुखी पहाड़ों में १०० से अधिक तो अब चुम्क गये हैं । शेष २० पहाड़ों से इस समय भी धुआँ और आग में गली हुई धातुओं की धारा बाहर निकलती है । इन ज्वालामुखियों के उत्पात से बीच बीच में बहुत से प्राणियों और मकानों का विनाश हो जाता है । भूकम्प जापान की नित्य की घटना है । साल में ५०० बार के लगभग वहाँ भूकम्प होता है । पृथ्वी भर पर और कहीं भूकम्प की इतनी अधिकता नहीं देख पड़ती । सौभाग्य की बात यही है कि इस साधारण हालेडॉले से उतनी हानि नहीं होती । महाविघ्न रूप भारी भूकम्प बीस बरस में एक बार होता है । बहुत से ज्वालामुखी पहाड़ों और गर्म झरना के होने के कारण यहाँ इतना अधिक भूकम्प हुआ करता है । भूकम्प के सम्बन्ध में हमारे यहाँ जैसे बहुत सी किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं वैसे तो जापान में भी आपानियों का विश्वास है कि पृथ्वी एक बड़े भारी सो ।



सिक्तापुर के वन्यरागाह—पृ० ७८६



(Lacquer), मीना और कागज की कारीगरी के लिए जापान प्रसिद्ध है। जापानी लोग दरवाजे के किवाड़े से लेकर हाथ के रुमाल तक का काम कागज से ही निकालते हैं। जापान में अमरुद, सेब, चेरी, कौले आदि के फल फूलवाले वृक्ष बहुत हैं।

जापान में विकृत बौद्धधर्म प्रचलित है। देव-देवी, भूत-प्रेत, दानव-दैत्य आदि का भी अभाव नहीं है। यहाँ के पहाड़ भील आदि प्राकृतिक दृश्यों के साथ एक न एक अद्भुत पौराणिक कहानी का सवन्ध है। मन्दिर आदि में, हमारे देश के जैनों का ऐसा ओघा (एक तरह की बुहारी) और आईना रक्खा रहता है। यहाँ के ये बौद्ध मासभक्ष्य करते हैं। केवल घी-दूध आदि गोरस को नहीं छूते।

साधारण पहाड़ और ज्वालामुखियों के लिए जापान प्रसिद्ध है। ज्वालामुखी पहाड़ों में १०० से अधिक तो अब चुम्क गये हैं। शेष २० पहाड़ों से इस समय भी धुआँ और आग में गली हुई धालुओं की धारा बाहर निकलती है। इन ज्वालामुखियों के उत्पाद से बीच बीच में बहुत से प्राणियों और मकानों का विनाश हो जाता है। भूकम्प जापान की नित्य की घटना है। साल में ५०० बार के लगभग वहाँ भूकम्प होता है। पृथ्वी भर पर और कहीं भूकम्प की इतनी अधिकता नहीं देख पड़ती। सीमागत की बात नहीं है कि इस साधारण हालेडोले से उतनी हानि नहीं होती। महाविप्लव रूप भारी भूकम्प बीस बरस में एक बार होता है। बहुत से ज्वालामुखी पहाड़ों और गर्म झरना के क्षेत्रों के कारण यहाँ उतना अधिक भूकम्प हुआ करता है। भूकम्प के सम्बन्ध में हमारे यहाँ जैसे बहुत सी किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं वैसे वे जापान में भी। जापानियों का विश्वास है कि पृथ्वी एक घड़े भारी सो रह मन्द

के ऊपर रक्खी है । वह मच्छ जब जग कर अपने पक्ष फटफटाता है तब भूकम्प होता है ।

पहले कहा जा चुका है कि इतने घाडे समय में इतनी बडो उन्नति करके जापान ने सारी पृथ्वी को विस्मित कर दिया है । मुझे देखने से यह तो नहीं मालूम पडा कि वे नैतिक भाव से उन्नत होकर एक भारी जाति बन गये हैं । ऐसा विश्वास नहीं होता कि पूर्वी जातियों के सब दोष उनसे दूर हो गये हैं । क्योंकि अभी तक निम्न श्रेणी के जापानियों में घोर कुसस्कारग्रस्त और अन्धकार में पडे हुए आदमी बहुतायत से पाये जाते हैं । हाँ, यह बात अवश्य स्वीकार करने योग्य है कि निम्नश्रेणी को उन्नत बनाने के लिए वहाँ विशेष यत्न किया जा रहा है और समय पाकर वे लोग अवश्य उन्नत हो जायेंगे । किसी बातल में कार्क लगा कर समुद्र में चिरकाल तक छोड रखिए तो भी उसमे एक बूँद पानी नहीं जायगा और साधारणतः मुँह खोल कर पानी में डाल दीजिए, थोडी ही देर में वह भर जायगी । सरल मन से किसी का मुँह न ताक कर सत्य को प्राप्त करने और उसका पालन कर दृढ प्रतिज्ञा करने से ही स्थायी उन्नति हस्तगत हो सकती है । प्रोफेसर टिण्डल ने एक जगह पर कहा है—“The first condition of success as an honest receptivity and a willingness to abandon all preconceived notions, however cherished, if they be found to contradict the truth”—*Tyndall* प्राण-प्रिय पूर्व सस्कार सत्य के विरोधी हो तो उसी घडी उन्हे छोड देना ही उचित है । उन्नति का प्रथम और प्रधान उपाय यही है । जापानी लोग इस सत्य को समझ कर इसी मार्ग में अग्रसर हुए हैं । उनके यहाँ किसी अन्य जाति से खुलकर हेलमेल

पैदा करने में कोई रुकावट नहीं है। वे अन्य जातियों के उत्कृष्ट ग्रन्थों का अपनी भाषा में अनुवाद करके 'सत्य' समझ करते हुए उन ग्रन्थों के भावों को अपना लेने में जरा भी नहीं हिचकते। यही कारण है कि इतनी फुर्ती युगयुगान्तर का कूड़ा हटा कर उन्नति के मार्ग को उन्होंने साफ कर लिया है। एक देशदर्शिता और अकेले रहने का भाव सदा से सर्वनाश का कारण होता आया है। सभ्य जगत् के सब लोग इस समय हेलमेल करने के लिए बाध्य हैं, इसके सिवा और गति नहीं है। क्योंकि यह विधाता की इच्छा नहीं है कि मनुष्य मनुष्य में विद्वेष भाव रहे। परस्पर को न जानना न समझना ही विद्वेष का कारण है। अच्छी तरह जानने और समझने से विद्वेष कभी रह ही नहीं सकता। जापान में निम्नश्रेणी के लोगों को उच्च श्रेणी के पुरुषों के समान राजनैतिक अधिकार देकर सर्वसाधारण को उन्नति करने का अवकाश दिया गया है। सन् १६६७ के विप्लव के पहले की सब व्यवस्थाएँ बदल देने में जापान ने जरा भी देर नहीं की। सम्राट् को देवता (एक पुतले के समान जडपिण्ड) बनाकर शोगुन लोगों ने सब अधिकार अपने हाथ में कर रक्ते थे। उन्नतिशील देशहितैषियों ने मिक्काडो को उस अवस्था से निकाल कर राज्य का सब भार उनके ऊपर रख दिया। यूरोपियन प्रथा की शासन-प्रणाली स्थापित करने में किसी ने कोई आपत्ति नहीं की। इस समय दो विभागवाली नियमबद्ध पार्लियामेन्ट सभा के द्वारा सब राज-काज होता है। इस तरह डारीकारी*, अपराधी को

पहले सत्र भले आदमी—खास कर राजकर्मचारी—मदा दो घुरे अपने पास रखते थे। एक तो किमी के द्वारा अपमानित होने पर उसे मारने के लिए और दूसरा प्राणदण्ड होने पर जहाद की तरवार पड़न से पहले अपने मार लेने के लिए।

दोष स्वीकार कराने के लिए यातना देना * आदि निन्दित प्रथायें उठा दी गईं । जिन दोषों के कारण हम कुछ कर नहीं पाते वे दोष उनमें नहीं हैं । हमको भी इस समय अपनी उन्नति का ध्यान आया है और हमारा देश भी जापानकी उन्नति देखकर उसे आदर्श मानने लगा है । अतएव मेरा निवेदन यही है कि “The world is ruled in the long run by fact and not by chimera” कार्लाइल के इस वाक्य को याद रखने से हमारे लिए अच्छा होगा । कार्लाइल ने और एक जगह लिखा है—“Him that is loyal to wisdom, wisdom will reward and him only” सच्चे ज्ञान के अनुसरण विना किसी प्रकार के सुफल की आशा नहीं की जा सकती । केवल कार्यहीन लम्बी चौड़ी सतेज वक्तृताओं से तो यही प्रकाशित होता है कि “दुर्बले सबला नाडी सा नाडी प्राणघातिका ।”



पहले आईन था कि उत्तम प्रमाण रहते भी असामी जब तक आप अपना अपराध न कबूल करे तब तक उसे दण्ड न दिया जाय । इसी कारण विचार के बाद अनेक यत्रणायें पहुँचा कर अपराध कबुलवाया जाने लगा था ।

चीन ।

गकांग । जापान से हागकांग जाने के दिन सबेरे होटल
 हां से विदाई की भेंट करने के लिए अमेरिकन यात्री
 लोग जहाज के कप्तान, अफसर और मुक्तसे मिलने
 आये थे । उससे बाद फारमूसा-टापू के यात्री एक अँगरेज को और
 मुक्तको लेकर जहाज चीन देश की ओर चला । चार दिन में
 हागकांग पहुँचे । वहाँ दूसरे जहाज के लिए तीन दिन ठहरना
 पडा । यहाँ का स्थानीय नाम है हियांग कियांग अर्थात् मीठा
 सोता । चीन-साम्राज्य के अन्तर्गत कागटग प्रदेश के सम्मुखस्थ
 ३० वर्ग-मील का यह टापू और उपकूल की कुछ जमीन, सन्
 १८४२ में, अँगरेजों ने चीनियों से पाई थी । उस समय यहाँ कई
 एक घर बन थे और मछुओं तथा समुद्री डाकुओं के सिवा और
 कोई नहीं रहता था । सन् १८५१ में, आस्ट्रेलिया में, सोने की
 खान निकलने के बाद चीनी कुली यहाँ से आस्ट्रेलिया को जाने
 लगे । वही से हागकांग की उन्नति होने लगी । सारे उपनिवेश की
 जन-सख्या पौने चार लाख के लगभग है । इनमें गोरे ११,०००,
 फिरङ्गी और हिन्दुस्तानी ३,०००, स्थानीय और गोवा-प्रदेश के
 पोर्चुगीज १,००० और बाकी चीनी हैं । राजधानी 'विकोरिया'
 में ही २१ लाख आदमी रहते हैं । बन्दरगाह की शेम्पिन-
 नौकाओं पर भी २५,००० के लगभग लोग रहते हैं । इन नौकाओं

पर रहनेवाले भौंभी लोग जन्म भर सपरिवार पानी पर ही रहते हैं । विक्टोरिया की सड़कें साफ-सुथरी हैं । गैस और विजली की रोशनी से नगर जग-मग हुआ करता है । रात को सामने समुद्र पर से नगर की शोभा बड़ी विचित्र—ग्राव्योपन्यास के अद्भुत दृश्य की तरह—देख पड़ती है । यहाँ नागरिक नियम के अनुसार (हैट-कोट-धारी जीवों के अतिरिक्त) नेटिप्र लोग आठ बजे के बाद बिना पास के घर के बाहर नहीं निकल सकते । इस नगर की छतों पर सुन्दर बाग ऐसे वृक्ष-लता-शोभित बड़े बड़े बरामदे शोभा-यमान हैं । नगर पहाड पर बसा हुआ है । अनेक जगह सीढियों के समान ऊँची-नीची जगह पर तह की तह बागो और मकानों की निराली ही शोभा देख पड़ती है । सवारियों में सीडनचेयर (Sedan-chair) का खूब चलन है । गाड़ियाँ बहुत कम हैं । समुद्र-तट पर भारी दीवार के द्वारा प्रधान सड़क सुरक्षित है । यहाँ कई एक सरकारी बाग, गवर्नमेन्ट-हाउस, गिर्जा, विशप का महल, टाउनहाल और म्यूजियम, ये प्रधान दृश्य हैं । शिक्षा के लिए गवर्नमेन्ट विशेष यत्न करती है । ११० सरकारी स्कूल हैं । १६ स्कूलों में केवल चीनी भाषा सिखाई जाती है । ६,००० के लगभग यहाँ विद्यार्थी पढ़ते-लिखते हैं । इसके सिवा कई वेसरकारी स्कूल भी हैं । उनमें २,५०० विद्यार्थी पढ़ते हैं । विक्टोरिया में १० बैंक हैं । सात अखबार भी यहाँ से निकलते हैं । उनमें पाँच अँगरेजी के (दो दैनिक, तीन साप्ताहिक आदि), एक चीनी भाषा का (एक दिन अन्तर देकर निकलता है) और एक पोर्च्युगीज भाषा का (साप्ताहिक) है । अधिकांश यूरोपियन राजधानी में ही रहते हैं । आज-कल कुछ यूरोपियन उपकूल में भी जाकर रहने लगे हैं । वहाँ पर भी सुन्दर सुन्दर महल मकान वगैरह बनने लगे हैं ।

यहाँ को वाजोगर प्रसिद्ध हैं । वे हमारे देश को वाजीगरों से बहुत कुछ मिलते-जुलते हैं । इस टापू में "आर्माडिलो" और स्थलरुच्छप देखने को मिलते हैं । खाने की सामग्री यहाँ बहुत ही थोड़ी होती है, सब कुछ बाहर ही से आता है । राजधानी को जिस हिस्से में चीनी रहते हैं वह उतना साफ नहीं है । सन्ध्या के समय हर एक घर के सामने घटा बजाकर धूप धूम के साथ आरती होती है । विक्टोरिया पहाड़ की चोटी १,८२५ फुट ऊँची है । चोटो पर चढने के लिए 'फुनीक्यूलर'-रेल्वे है । कुछ दूर चढ कर बादलों के बीच से जब गाड़ी जाती है उस समय एक नये प्रकार की अभिज्ञता प्राप्त होती है । ऊपर कई एक उद्यान, विलासभवन और होटल हैं । हांगकांग ब्रिटिश-साम्राज्य में प्रधान और पासिफिक सागर का एक श्रेष्ठ बन्दरगाह है । बहुत से जहाज यहाँ आते जाते हैं । १० वर्ग-मील तक बने हुए हार्बर बहुत ही सुरक्षित हैं । यहाँ के रुपये को डालर कहते हैं । इसका मूल्य ४ शिलिंग २ पेनी है । पैसे को सेन्ट कहते हैं । यहाँ भी दशमिक प्रथा प्रचलित है । पासिफिक के किनारे के अन्यान्य स्थानों की तरह मेक्सिको डालर यहाँ भी चलता है । यहाँ एक गवर्नर है । उसको सालाना ३२,००० डालर की वृत्ति मिलती है । २५ लाख डालर के लगभग राजकर वसूल होता है । खर्च कभी कभी उतने से अधिक होता है । ऋण ३१ लाख पौण्ड के लगभग है ।

चीन की साधारण अवस्था । इस भारी राज्य की सच्ची खबर पाना बहुत ही कठिन है । तथापि यूरोपियन यात्रियों और राज-नैतिक पुरुषों ने यथाशक्ति चेष्टा करके अनेक बातें प्रकाशित की हैं । इस साम्राज्य के १८ प्रदेश हैं । राज्य का घेरा ३५ लाख वर्ग-मील के लगभग है । जन-संख्या ४० करोड के लगभग है । उसमें

११ लाख ईसाई और ३ करोड मुसल्मान हैं । जो बन्दरगाह विदेशियों के लिए खुले हैं उनमें ४,००० के लगभग ब्रिटिश-प्रजा, १,००० से अधिक अमेरिकन, १,००० के लगभग जापानी, ७०० के लगभग जर्मन, ५०० फ्रेंच और ४०० स्पेनिश रहते हैं । सेना ७ लाख के लगभग है । उसमें ७,००० के लगभग उच्च पद के कर्मचारी हैं । सिपाहियों का वेतन पाँच से दस शिलिंग तक है । सवार लोग एक पौण्ड के लगभग पाते हैं । उसमें घोड़े की खुराक भी है । पैसे को कैश कहते हैं । २२ कैश की एक पेनी होती है । चाँदी के सिक्के कई तरह के हैं । दो एक यूरोपियन ढग के भी हैं । हागकाग बन्दरगाह में चीनी पैसा बहुत है । चाँदी का सिक्का भी थोड़ा बहुत है । एक प्रकार से माधारण शिक्षा का प्रचार अवश्य है, लेकिन अभी अधिकांश लोग निरक्षर ही हैं । गत युद्ध में हारने से चीन की आँखें कुछ खुली हैं । अब पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान के ग्रन्थों का अनुवाद भी होने लगा है । युद्धविद्या के स्कूलों की ओर भी विशेष रूप से ध्यान दिया जाने लगा है । राज्य और धर्म दोनों का ही मालिक सम्राट् समझा जाता था । अब चीन में प्रजा-पर-तन्त्र-शासन-प्रणाली प्रचलित है ।

प्रणाली-उपनिवेश ।

(Straits Settlements)

*** यात्रा । हागकाग में तीन दिन रह कर चौथे दिन दोंपहर
 *** यात्रा को स्टीमर पर चढ़ कर, जहाज के कमरे में सामान
 *** रखकर यात्रा के झुम्कों से निश्चिन्त होगया ।
 भारतवर्ष की आबहवा में पहुँचने का आभास मुझे जहाज पर ही
 मिला गया । कमरा ठीक करके डेक के ऊपर टहलते टहलते कप्तान
 के कमरे की तरफ गया तो उन्होंने रग से मुझे फिरगी समझा
 और एकाएक दफ्तर से बाहर आकर कड़े स्वर में मुझसे बोले —
 तुम क्या मुझसे मिलना चाहते हो ?

मैंने कहा—नहीं, इस समय मुझे आपसे कोई प्रयोजन
 नहीं है ।

कप्तान—तब तुम यहाँ क्यों आये ? अपने दर्जे में जाओ ।

मैं—क्यों ? मैं एक पहले दर्जे का यात्री हूँ Why? I am as
 good a first class passenger as anybody else) ।

साथ ही पाकेट से टिकट निकाल कर दिखाया । अप्रतिभ
 होकर परिचय पूछने पर कप्तान ने जब जाना कि मैं यूरोप से आ रहा
 हूँ तब वह कुछ अपनी करतूत पर सकुच गये ।

चीना डाकुओं के भय से स्टीमर पर अनेक प्रकार के भस्त्र शस्त्र
 रखे हुए थे । जहाज के नीकर-चाकर सब चीनी थे । खाने के

समय पंखा खिंचने का प्रबन्ध था। कमरे पर गर्मी मालूम पडने के कारण बहुत रात गये तक वहाँ बिताना पडता था। इस मार्ग में एक जल स्तम्भ (Waterspout) देख पडा। समुद्र भील की तरह बराबर शान्त ही रहा।

सिङ्गापुर। आठवें दिन तीसरे पहर विषुव रेखा के अत्यन्त निकटवर्ती स्थान सिङ्गापुर (इसका असल नाम सिंहपुर है। शायद हिन्दुओं का बसाया हुआ यह नगर है) के बन्दरगाह में जहाज पहुँचा। यहाँ सब भारत का रङ्ग-ढङ्ग है। २७ मील लम्बे और १४ मील चौड़े एक छोटे टापू के उपकूल पर स्थित कई एक छोटे पहाड़ों पर नगर बसा हुआ है। समुद्र के जल तक पहाड़ पर उज्ज्वल हरे रङ्ग की लतायें और वृक्ष शोभायमान हैं। हरियाली की ऐसी बहार और कहीं नहीं देखने को मिली। इस देश में सीलन बडी है और घने जङ्गल भी बहुत हैं। बेंत और बाँस के ही जङ्गल अधिक हैं। चारों ओर बड़े बड़े नारियल के बाग हैं। नगर में काका-तुआ और “हीरामन” तोते आदि जानवर अनेक जगह बिकते देख पडे। बन्दरगाह से दूर पर सुमात्रा बोर्नियो का उपकूल देख पडता है। राजधानी में एक लाख से अधिक मनुष्य रहते हैं (उन्नीसवों शताब्दी के आरम्भ में सारे द्वीप में कुल १५० आदमी रहते थे।) उनमें अधिकांश मलय, मुसलमान, चीनी, मद्रासी, यूरोपियन हैं। फिरङ्गी भी बिलकुल कम नहीं हैं। हिन्दुओं के मन्दिरो, मुसलमानों की मसजिदों और चीनियों के जास-भवनों की सख्या बराबर ही होगी। समुद्र-तट पर मनोहर मकानात घने हुए हैं। उनमें सरकारी महल और कार्यालय आदि देखने योग्य हैं। देसी जलयानों के अलावा साल में १०,००० के लगभग जहाज इस बन्दरगाह में लङ्गर डालते हैं। प्रधान द्वीप के अन्तर्गत ७० छोटे छोटे साधारण टापू हैं।

सन् १८२४ में यह सम्पत्ति 'जोहोर' के सुलतान से १३,५०० पाँडों की खरीदी गई थी । सुलतान को उसके लिए ५,४०० पाँडों सालाना वृत्ति भी मिलती है ।

पिनाग । यह नगर भी १५ मील लम्बे और ५ मील चौड़े एक टापू पर बसा हुआ है । यहाँ २३ लाख लगभग आदमी बसते हैं । उनमें नागरिक प्रजा एक लाख के लगभग है । पिनाग सब बातों में सिङ्गापुर के समान है । अदन की तरह यहाँ भी स्थानीय बालक और युवक जहाज के सामने के समुद्रजल में गोता लगाकर दुअन्नो-चवन्नो तक निकाल लाते हैं । इस तरह जल में डूबे रहने पर भी इनके बीमारी नहीं होती, यही आश्चर्य की बात है । सिङ्गापुर में और यहाँ मैंगोस्टिन-नामक एक फल खाकर बड़ी प्रसन्नता प्राप्त हुई । सन् १७८५ में कप्तान लाइट नामक एक अँगरेज ने उपकूलस्थ केदारराज्य की राजकुमारी से ब्याह करके यह टापू दहेज में पाया था । तभी से यहाँ बस्ती हुई । पहले यह स्थान जन-शून्य था । उनके मरने के बाद सन् १८०० में अँगरेजों ने उपकूल पर की कुछ जगह राजा से खरीद कर धीरे धीरे उपनिवेश स्थापित कर लिया और समुद्री डाकुओं को शान्त करने के लिए एक किला भी बनवा दिया ।

प्रणाली-उपनिवेश की साधारण अवस्था । हांगकांग प्रदेश की तरह यह भी एक ब्रिटिश-उपनिवेश है और वहाँ का ऐसा सिके आदि का भी चलन है । सिङ्गापुर में एक गवर्नर रहता है उसका वार्षिक वेतन ३३,८८० डालर है । वह कई टापुओं और मलय-उपद्वीप के कुछ अंश का शासक होता है । सब मिलाकर यहाँ का घेरा १,४७२ वर्ग मील है । साल में ४० लाख डालर के लगभग राजस्व बसूल होता है । खर्च उससे कुछ कम है । इसलिए श्रेष्ठ बिलकुल नहीं

है। विलायती और स्थानीय आईन के द्वारा 'विचार' का कार्य होता है। इस देश में अनेक प्रकार के फल मिलते हैं। उनमें मँगोस्टिन फल बहुत अच्छा होता है। अनानास और चकोतरे भी अच्छे होते हैं। एक प्रकार का कटहल की जाति का कटीला डुरियेन नामक फल यह होता है। उसे लोग सूब खाते हैं। उसमें प्याज़ की ऐसी तीव्र गन्ध आती है।

स्वदेश-दर्शन। पिनाग बन्दर में दो दिन जहाज ठहरा। वहाँ से रवाना होकर सात दिन में कलकत्ते पहुँच गया। बङ्गोपसागर में जहाज पर से केवल अंडमन-टापू देख पड़े थे। पहुँचने के दिन प्रातःकाल भोजन करने के समय एक स्काच भद्रपुरुष के साथ मैं बात-चीत कर रहा था। उसमें भी कप्तान की कुछ भद्रता देखने को मिली। सुनिए—

भद्रपुरुष—मिस्टर सेन, तुम अब देश में पहुँच कर शायद कई दिन तक अपना देसी भोजन विशेष आग्रह के साथ खाओगे।

मैं—देसी भोजन नये कैसे। यह मछली-भात ही तो हमारा खास भोजन है।

कप्तान—गर्हीं—नहीं, उनके प्रश्न का मतलब यह है कि तुम अपने लोगों में जाकर वर्तमान सभ्यभाव से रहोगे या अपनी पुरानी असभ्य-अवस्था में लौट जाओगे ?

कप्तान के यो कहने पर वह भद्रपुरुष बहुत ही अप्रतिभ होकर बारम्बार मुझसे क्षमा-प्रार्थना करते हुए कहने लगे—“मेरा अभिप्राय यह कभी न था। बहुत दिनों के बाद घर जाकर हम लोग जैसे पारिज (Porridge) आदि स्काच-भोजन को बड़े ही आग्रह और प्रसन्नता के साथ खाते हैं, इसी अभिप्राय से मैंने यह प्रश्न किया था।” यह भद्रपुरुष एक धर्मभोरु सचै ईसाई थे। जहाज पर सदा

परमेश्वर का नाम लिया करते थे । इसके लिए घोर स्वेच्छाचारी नास्तिक कप्तान उनको सुना सुना कर ईसा की निन्दा और ईश्वर की अवहेला किया करता था । डायमन्डहार्बर के बाद कप्तान के अनुकरण पर एक अति धृष्ट आस्ट्रेलियन युवक (Adventurer) भी जहाज के माफिया को दिखाकर मुझसे कहने लगा—“इन लोगों में शायद तुम्हारे अनेक बाल्य-बन्धु और सहपाठी होंगे ।” इत्यादि ।

जहाज से उतर कर वेलेव्यू-होटल में कई दिन ठहरा । पहली रात को इतने दिनों के अभ्यासवश जो कुछ रेजगारी और रुपये ऊपर थे उन्हें तकिये को नीच रखकर सो गया । जिस होटल में ठहरा वहाँ इस तरह रख लेता था, परन्तु कहीं एक पैसा भी नहीं गया । किन्तु यहाँ सवेरे उठकर देखा, रुपया पैसा सब नदारत । पृथ्वी के अन्य स्थानों के और भारत के नौकर चाकरों में इतना प्रन्तर है ।

भू-प्रदक्षिण समाप्त हो गया । कलकत्ते से पश्चिम ओर यात्रा करके बराबर पश्चिम ओर चलकर फिर कलकत्ते में आकर उपस्थित हो गया । पृथ्वी अण्डे के समान गोल न होती तो ऐसा होना असम्भव था । जो कुछ हो, कई शताब्दी पहले ऐसी परिक्रमा करना असम्भव था* । धन्य है यूरोपियों की विद्या, बुद्धि, विज्ञान,

एक पण्डित कहते थे कि शुकदेवजी ने एक बार पृथ्वी की प्रदक्षिणा की । इसके प्रमाण में पण्डितजी ने यह श्लोक सुनाया था—

“मेरोर्दरेद्वे वर्षे वै वर्षे ईमवत् तत ।

क्रमण्येव सम्रागम्य भारत वर्षमामहत् ॥

स दृष्ट्वा विविधान् देशान् चीनहृद्यनिपेतान् ॥”

भू-प्रदक्षिण ।

क्षमता और साहस कि उन्होंने इस कठिन काम को सहज बना दिया । भोरु कह कर बदनाम बङ्गाली भी यह काम कर सकते हैं । दोपहर के समय सेक्सटेन्ट (Sextant) के द्वारा समय-निरूपण तो सहज बात है, जहाज के मॉभी लोग तूफान में आन्दोलित अनन्त समुद्र के भीतर घोर अँधेरी रात को भी यह बतला सकते हैं कि जहाज किस समय कितनी डिग्री लाट्यूड (Latitude) लाङ्ग्यूड (Longitude) पर है । सारा समुद्र इनके निकट ऐसा ही नख-दर्पण-सदृश हो रहा है ।
